॥ ग्रन्थमालोत्पादकेभ्यः श्रीधर्मविजयगुरुभ्यो नमः ॥

अर्हम्

श्रीजैनयशोविजयग्रन्थमाला [१०]



श्रीगुणरत्नसूरिविरचितः

क्रियारत्नसमुच्चयः ।

उद्धृत्य ये व्याकरणाम्बुराशितो विलोड्य बुद्धिप्रसरामराद्रिणा ।
शुद्धक्रियारत्नसमुच्चय सतामाश्चर्यभूत विबुधालये ददु ॥ १ ॥
[श्रीमुनिसुन्दरसूरय]

जैनश्वेताम्बरश्रीसङ्घकलिकाता-
साहाय्येन
काशीस्थन्यायविशारदश्रीयशोविजयनामाङ्कितजैनपाठशालातः
प्राकाश्य नीतः ।
सोऽय
काश्यां
चन्द्रप्रभायन्त्रालये
मुद्रितः

वीर सवत् २४३४ ।

॥ अर्हम् ॥

* भूमिका *

प्रियवर !

समय भी क्याही अपूर्व पदार्थ है; देखिये, एक समय वह था जब इसी भारतवर्ष में जैनधर्म, सीमा को उल्लङ्घन कर सपूर्ण देशो में पूर्ण रूप से छाया हुआ था और अनेक जैनाचार्यों ने उद्भट असङ्ख्य ग्रन्थ जैन-दर्शन पर निर्माण किये थे जिनका देखना क्या श्रवणगोचर होना भी इस समय अति दुर्लभ होगया है अब न तो लोगों में विद्यानुरागिता रह गई और न बल बीर्य का उद्भव है तब प्रतिभा जो सार पदार्थ विद्वानों का है कहाँ से आवे । हा ! भारतवर्ष की कैसी दुर्दशा होगई कि अब एक भी वैसा विद्वान् नहीं और न होने के लिये कोई प्रयत्न करता है फिर जैनधर्म की वृद्धि का उपाय क्या रह गया ? क्योंकि सभी धर्मों की स्थिति शुद्ध विद्याही पर निर्भर है यदि कोई विद्याभ्यास न करे तो वादी के मत का खण्डन कर अपने मत का मण्डन नहीं कर सकता । तथापि "यावद् बुद्धिबलोदयम्" हमलोग अपने कर्तव्य में कटिबद्ध हैं हमलोगों का मुख्य कर्तव्य यही है कि किसी तरह विद्यार्थियों को विद्याभ्यास में सुलभता हो । इसलिये पाठशाला खोलना, प्राचीन पुस्तकों को छपवाकर सुलभ करना, और जैनधर्मानुरागियों को इस विषय में उत्तेजना देना, आये हुए विद्यार्थियों को संमान पूर्वक रखना आदि यथाशक्य किया जाता है। सब से मुख्य कार्य यही समझा गया कि उत्तम २ उपयोगी प्राचीन व्याकरण, न्याय, साहित्य और धर्म आदि सम्बन्धी ग्रन्थ छापे जायँ अतएव श्रीमुनिराज धर्मविजयजी के उपदेश से श्रीजैनयशोविजयग्रन्थमाला कतिपय वर्षों से छपवाकर प्रकाशित की जाती है जिसमें श्रीसिद्धहेमव्याकरण लघुवृत्ति वगैरह सहित, हैमलिङ्गानुशासन, व्याकरणग्रन्थ, प्रमाणनयतत्त्वालोकालङ्कार, रत्नाकरावतारिका टिप्पण पञ्जिका सहित, न्यायग्रन्थ, कुमुदचन्द्रप्रकरण साहित्य ग्रन्थ, स्तोत्रसंग्रह दो

भाग, गुर्वावली वगैरह धर्मग्रन्थ कई एक छपकर निकल चुके हैं; अब यह श्रीगुणरत्नसूरिविरचित क्रियारत्नसमुच्चय व्याकरण का अपूर्व ग्रन्थ छपवाकर निकाला गया है। प्राय सभी विद्वानों को क्रिया के रूपों में कुछ न कुछ सन्देह बना ही रहता है इस ग्रन्थ के रचने से इस अभाव को श्रीगुणरत्नसूरी जी ने मिटा दिया। यह ग्रन्थ प्राय: सर्वमतानुयायियों को अपने पास रखना चाहिये विशेषकर हैमव्याकरण के पढनेवालों को उपयोगी है।

श्रीहैमशब्दागमपाठकाना महोपकारी जयतात् सदैपः।
ग्रन्थः क्रियारत्नसमुच्चयाख्यो विद्वमणेः श्रीगुणरत्नसूरेः॥ १॥

श्रीगुणरत्नसूरी जी ने अपने स्थिति का समय स्वय इसी ग्रन्थ की प्रशस्ति भाग में दिया है—

लिखा है कि श्रीविक्रमादित्य से सवत् १४६६ व्यतीत होने पर गुरूजी के आज्ञावश अपना और ससार का उपकार समझकर बुद्धिहीन भी मैंने इस ग्रन्थ को रचा, विना कारणही उपकार करनेवाले साधु विद्वान जन इस को शुद्ध करलें—

"काले षड्रसपूर्व १४६६ वत्सरमिते श्रीविक्रमार्काद्गते
गुर्वादेशवशाद्विमृश्य च सदा स्वान्योऽपकार परम्।
ग्रन्थ श्रीगुणरत्नसूरिरतनोत्प्रज्ञाविहीनोऽप्ययम्
निर्हेतूपकृतिप्रधानजननैः शोध्यस्त्वय धीधनैः॥ ६३॥"

इनके बनाये हुए क्रियारत्नसमुच्चय, षड्दर्शनसमुच्चय की बृहद्वृत्ति आदि ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं—यह बात कल्पकिरणावली प्रवचनपरीक्षा आदि ग्रन्थ के कर्ता श्रीधर्मसागरोपाध्यायकृत तपागच्छपट्टावली से भी विदित होती है जो कि इस ग्रन्थ की सस्कृतभूमिका मे विस्तार पूर्वक लिखी गयी है उसका यहाँ लिखना आवश्यक नहीं है आपलोग उसी में देखलें, और इनके गुणों का भी पूर्णरूप से वर्णन है। लिखा है कि "श्रीगुणरत्नसूरी जी अपूर्व विद्वान् थे और अहङ्कार, क्रोध, विकथादि के नियम अर्थात् दमन करने में उनका लोकोत्तर प्रभाव था, तथा उनके चरित्र आदि के निर्मलता से मुक्तिरूपी लक्ष्मी दासीभूत थीं" इत्यादि।

विक्रम सवत् १४६६ में मुनिसुन्दरसूरी की बनाई हुई गुर्वावली से भी श्रीगुणरत्नसूरी जी का पण्डितशिरोमणि, प्राभाविकधुरन्धर आदि होना स्पष्ट निश्चित होता है।

इस परमोपयोगी ग्रन्थ के छपवाकर प्रकाशित करने में पूर्ण सहायता देनेवाले सुकार्यतत्पर परम उदार श्रीजैनश्वेताम्बरकलिकातासङ्घ का धन्यवाद पूर्वक हमलोग परम उपकार मानते हैं।

चार पुस्तकों के आधार पर परम परिश्रम से यह पुस्तक शुद्ध कर छापी गई और पीछे से शुद्धिपत्र भी दिया गया है। यदि अब भी दृष्टिदोप से कहीं कोई अशुद्धि रह गई हो तो आप लोग कृपाकरके शुद्ध करलें।

कई कारणों से इस नम्बर के निकलने में विलम्ब हुआ है किन्तु अब शीघ्र २ निकलने का पूरा प्रबन्ध किया गया है।

इस ग्रन्थमाला के उत्पादक श्रीमुनिराज धर्मविजयजी महाराज का चित्र (फोटो) देना उचित है किन्तु वे इस बात को स्वीकार नहीं करते इस लिये उक्त मुनिराज के गुरू परमोपकारी शान्तमूर्ति श्रीवृद्धिचन्द्रजी महाराज का चित्र और उन्हीं का स्तुतिरूप गुर्वष्टक भी दिया गया है।

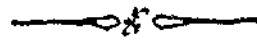
शास्त्र नाम समुच्चयान्तमनघ चक्रु' क्रियारत्नमा-
बाल सत्वरबोधकारणमिद सर्वप्रमोदप्रदम्।
ये बुद्धाखिलशास्त्रसुन्दरकलास्सर्वक्रियायाः पद
ते श्रीमद्गुणरत्नसूरिपतयः सन्तु प्रबोधाय वः॥ १॥

निवेदक
श्रीजैनयशोविजयपाठशालाव्यवस्थापक।





श्रीगुणरत्नसूरय ।



श्रीहैमशब्दागमपाठकाना महोपकारी जयतात्सदैप ।
ग्रन्थ क्रियारत्नसमुच्चयाख्यो विद्वन्मणे श्रीगुणरत्नसूरे ॥ १ ॥

अखण्डितपण्डामण्डनमण्डितपण्डितमण्डलाकाण्डितचण्डाहङ्कारान्धकारवारनिवारणेऽप्रतिमप्रतिभाप्रकर्षप्रखरप्रभप्रभाकरानुकारिणश्चञ्चच्चारुचातुरीचर्चितचेतश्चिचेतश्चमत्कारकारिकृतान्तसङ्घाता, श्रीगुणरत्नसूरय, कदा कतम क्षमामण्डल मण्डयाम्बभूवुरिति जिज्ञासायामनेकग्रन्थपर्य्यालोचने प्रवृत्ते—

श्रीगुणरत्नसूरीणामसाधारणनियम । तदुक्तम्—
" जगदुत्तरो हि तेषां नियमोऽवष्टम्भरोपविकथानाम् ।
आसन्ना मुक्तिरपा वदति चरित्रादिनिर्मलयात् ॥ " इति
तत्कृताश्च ग्रन्था: क्रियारत्नसमुच्चयषड्दर्शनसमुच्चयवृहद्वृत्त्यादय

इति कल्पकिरणावलीप्रवचनपरीक्षादिग्रन्थसार्थग्रन्थितृतपागणगगनाङ्गणगगनाध्वगायमानश्रीधर्म्मसागरोपाध्यायविहिततपागच्छपट्टावलीत.—

देवसुन्दरगुरुत्रमपद्मो-
पास्तिविस्तृतसमस्तगुणा ये ।
तद्विनेयवृषभा विजयन्ते
कीर्त्तयामि ततकीर्त्तिततांस्तान् ॥ १ ॥

आद्या जयन्ति गुणरत्नमुनीन्द्रचन्द्राः
सूरीश्वराः सुगुणरत्नविभूषणैर्ये ।
सा काऽप्यथापि सुभगत्वरमा यया तान्
श्लिष्यन्ति सर्वबुधमानसवृत्तिनार्य्य ॥ २ ॥

तेषां निर्जितवादिराजिकुपशोजम्बालजालाविले
भ्रान्त्वा भूवलयेऽखिलेऽथ चलिता स स्वर्गदण्डाध्वना ।
श्रान्ती श्रान्तिहतीन्छपन्दुमरासि स्वैर सुधाशीकरान्
कीर्त्तिर्यान् विकिरत्यमी प्रतिनिश दृश्या महादिग्ज्लात् ॥ ३ ॥

यज्जाता हिमभूभृत पशुपतेः पत्नीति कः मत्यय-
स्तत्कीर्त्तिर्जनिताऽमुनेति तु सतां नून मतीतेः पथः।
एषा यच्छिशिराऽर्जुनाऽपि जनयेत् म्लानिं जवाद्वादिनां
वक्राम्भोजगणेषु निर्दहाति च मोद्दामदर्प्पद्रुमान् ॥ ४ ॥
ग्रन्थेषु येषु न परस्य धियां प्रवेशोऽ
प्येतेष्वपि प्रसरतीह तदीयबुद्धिः।
येभाययत्यपि तदाश्रितमन्यमब्धि-
र्यः सोऽपि दैत्यरिपुणा किमु नो ममन्थे ॥ ५ ॥
जगदुत्तरो हि तेषां नियमोऽवष्टम्भरोपाविकथानाम्।
आसन्नां मुक्तिरमा वदाति चरित्रातिनैर्मल्यात् ॥ ६ ॥
सिद्धत्वात् सार्ववैद्यस्य ते सिद्धपुरुषोत्तमाः।
तदाप्ततत्कणाः शिष्या यद्वशीकुर्वते जगत् ॥ ७ ॥
सर्वव्याकरणावदातहृदयाः साहित्यसत्यासवो
गम्भीरागमदुग्धसिन्धुलहरीपानैकपीताब्धयः।
न्यायेज्योतिषनिस्तुषा मदधतस्तर्केषु चाचार्यक
वादे तेऽत्र जयन्त्यशेषविदुषां त्रैवैद्यदर्प्पोष्मलान् ॥ ८ ॥
उत्कल्लोल दिशि दिशि बुधाः कर्णपात्रैः पिबन्तः
स्फीत गीत सुकृतिततिभिस्तद्यशःक्षीरपूरम्।
तेषां शुद्धां चरणकमलां बिभ्रतां श्रीगुरूणां
सृष्ट्या सृष्टा जगदुपकृत मन्यते साम्मत वै ॥ ९ ॥
परमेष्ठिमन्त्रतत्त्वाम्नायस्मरणेन दैवतादेशैः।
पारत्रिकैहिकीस्ते प्रायो जानन्ति कार्यगतीः ॥ १० ॥
स्वदर्शने वा परदर्शनेषु वा
ग्रन्थ स विद्यासु चतुर्दशस्वपि।
समीक्ष्यते नैव सुदुर्गमेऽप्यहो
यत्र प्रगल्भा न तदीयशेमुषी ॥११॥
या ज्ञानाद्युधमप्रौढिर्या च नित्याऽप्रमादिता।
या चैषा स्मरणा शक्ति साऽन्यत्र श्रूयतेऽपि न ॥१२॥
चक्षुष्टीकाशलाकां ते षड्दर्शनसमुच्चये।
ज्ञाननेत्राञ्जनायेव सतां तत्त्वार्थदेशिनीम् ॥१३॥
उद्धृत्य ये व्याकरणाम्बुराशितो
विलोड्य बुद्धिप्रसरामराद्रिणा।

शुद्धक्रियारत्नसमुच्चय सता-
 माश्चर्यभूत विबुधालये ददुः ॥१४॥
लोकोत्तरां सचरणाभिप मुदा
 सदा भजन्तश्च सरस्वतीं प्रियाम् ।
कुष्कर्मदैत्यव्यथका जयन्तु ते
 गुरुमेचकाः पुरुषोत्तमाश्चिरम् ॥१५॥ (युग्मम्)

इति वादिगोकुलषण्ढकालीसरस्वत्याद्यनेकबिरुदधारकसहस्राभिधानधर्तृ-श्रीमुनिसुन्दरसूरिभी रसरसमनुमिते १४६६ विक्रमाब्दे विरचिताद् श्रीगुर्वावली-नामकग्रन्थाच्च सहृदयहृदयहृदयङ्गमग्रन्थितनिर्ग्रन्थागण्यगुणगणाकृष्टोत्कृष्टदुष्टा-निष्टकष्टदारिष्टपटलानामुक्तसूरीणा दृप्यद्दुर्मदवद्वादिवारणनिवारणोल्लसद्द्विरद-कर्दनत्व चातुर्वैद्यवैशारद्य प्रामाविकधुरन्धरत्वञ्च स्फुटमेव निश्चीयते ।

पूज्याचार्य्यवर्य्याणा चैतेषां १४६६ वैक्रमिक सत्तासमय इति ग्रन्थप्र-शस्तिगतश्लोकेन प्रकटमेव प्रतीयते ।

अस्य पुन सिद्धहेमचन्द्रव्याकरणाध्येतॄणां महोपयोगिनो ग्रन्थस्य सर्व्वतो मुद्रणादिव्ययदातु' सुकार्य्यलीनपरमोदारश्रीकलिकाताजैनश्वेताम्बरसङ्घस्यातीव धन्यवादपुरस्सर परमोपकारं मन्यामहे ।

पुस्तकचतुष्काधारेणातीवायासतः शोधितमुद्रिते दत्तशुद्धिपत्रेऽप्यस्मिन् ग्रन्थे दृष्टिदोषाद् यत्र क्वचनाशुद्धिः स्थिता जाता वा ता कृपा विधाय सहृदयहृदया' शोधयिष्यन्तीति—

यतः

गच्छत' स्खलन क्वापि भवत्येव प्रमादत. ।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जना ॥ इति

निवेदकाः
श्रीयशोविजयजैनपाठशालाव्यवस्थापकाः ।

॥ भूमिका ॥



जैन–साहित्यनी उन्नति तथा प्रचारना विषयमा काशीस्थ श्रीमद्‌यशोविजयजी जैन पाठशाला, तथा श्रीजैनयशोविजयग्रन्थमालाअे आपेलो फाळो केवो अपूर्व तथा आनन्दप्रद छे, ते सम्बन्धी अभिप्राय उचारवानो अमोने अधिकार नथी. परन्तु हरकोई व्यक्ति पछी भले ते उक्त संस्थानो शुभेच्छक होय के शत्रु होय, पण जो तेना आतर् चक्षुओ खुलेला हशे; तो तेने पक्षापक्षना तोफानी प्रवाह्मा तणाती आ संस्थानी मुश्केलीनो ख्याल आव्या वगर रहेशे नहीं पाठशालाना सम्बन्धमां आ स्थाननो उपयोग करवो अे अधर्म्य होवाथी पाठशालाना प्रश्नने अेक बाजु पर राखी, ग्रन्थमालाना विषयमाज अत्र बोलीशु. पांच वरस दरमीयान प्रस्तुत ग्रन्थमालाने पण अेवा अनेक संकटो नड्या छे! अेम छतां अमारा जैन-साहित्य-प्रिय वांचनाराओना हाथमा दशम रत्न, जरा विलम्बथी पण मुकवा शक्तिवान् नीवड्या छीअे; ते अमारा माटे ओछा सन्तोषनी वात तो नज कहेवाय. उपस्थित दशमरत्न जन समाजने केटलुवधु उपयोगी तथा जैनाचार्यनी सरल अने कोमल कृतिनुं आदर्श छे, ते तेना अधिकारी अभ्यासी सिवाय सपूर्णतः समजी शकाय अेम नथी, तदपि ग्रन्थना अन्तिम भागमा स्वय कर्त्ताअेज आपेली प्रशस्ति उपरथी आ वाततो स्पष्ट रीते प्रकाशी नीकळे छे के, ग्रन्थकार-श्रीमद् **गुणरत्नसूरि** महाराजे, श्रीसिद्धहेम-व्याकरणना अभ्यासीओने धातुना तथा कृदन्तना प्रयोगो सम्बन्धी अनेकशः नडती मुश्केलीओ दूर करवाना अति उच्च उद्देशथीज आ ग्रन्थनी रचना विक्रम सम्वत् १४६६ मा करीछे धातुओना कालना अने कृदन्तना विविध रूपाख्यानो के जेमा उद्भट कहेवरावता आधुनिक वैयाकरणो पण घणी वार गोथु खाइ बेसे छे, तेवा क्लिष्ट रूपाख्यानोनुं स्पष्टीकरण आपवामां उक्त आचार्य महाराज अेटले बधे दरज्जे सफलता पाम्या छे के, अमो अेम खात्री पूर्वक कहेवाने तत्पर थया छीअे के तेओश्रीना गमे

ते स्थले रहेला पवित्रात्माने, **क्रियारत्नसमुच्चयना** अभ्यासको अनन्त आशीर्वादथी वधावी लीधा वगर रही शकशे नहीं. आ आचार्य महाराजश्रीअे आ ग्रन्थ उपरान्त पण अन्य अनेक ग्रन्थोनी रचना करी छे ते उपरथी तेओश्रीनी प्रतिभा किंवा अप्रतिबद्ध बुद्धिनुं सहज अनुमान थइ आवे अेम छे ग्रन्थकारनी स्तुति करता सुप्रसिद्ध आचार्य श्रीमुनिसुन्दरसूरि पण कहेछे के.—

आद्या जयन्ति गुणरत्नमुनीन्द्रचन्द्रा' सूरीश्वराः सुगुणरत्नविभूषणैर्यैः ।
सा काऽप्यवापि सुभगत्वरमा यया तान् श्लिष्यन्ति सर्वबुधमानसवृत्तिनार्यः ॥

अर्थात्–मुनीन्द्रोने विषे चन्द्र समान श्रीगुणरत्नसूरीश्वर जयवन्ता वर्त्तेछे सद्‌गुण रूपी रत्नना आभूषण रूप जे गुरु ते वडे कोइपण अेवी सौभाग्य श्री प्राप्त करवामा आवी के जे स्त्रीने लइने सर्व शाणा पुरुषोनी मानसिक वृत्ति रूपी नारीओ तेमने आलिङ्गन करेछे. सारांश के विद्वान् पुरुषोनी मनोवृत्ति तेमना प्रति आकर्षाया विना रही शक्तीज नथी आ उपरान्त ग्रन्थकारना यशोगान अथवा गुणानुरागमा मुनिसुन्दरसूरि अेटला बधा पृष्ठो रोके छे के, ते सर्वनो उल्लेख अत्र अशक्य थइ पडेछे परन्तु प्रस्तुत ग्रन्थ क्रियारत्न समुच्चयनी अपूर्वता तथा सुन्दरतानु वर्णन तो आप्या विना आ प्रसग पसार करी शकीशु नहीं तेओश्री लखेछे के –

उद्धृत्य ये व्याकरणाम्बुराशितो विलोड्य बुद्धिममरामराद्रिणा ।
शुद्ध–" क्रियारत्नसमुच्चय " सतामाश्चर्यभूत विबुधालये ददु' ॥

अर्थात्-जेओअे बुद्धिना विस्तार रूपी अमराचल-कनकाद्रि वडे व्याकरणरूप समुद्रमाथी, चिरान्दोलन करीने सज्जनोने आश्रयभूत अेवा शुद्ध **क्रियारत्नसमुच्चयने** करवा साथे तेने पडितोना आवासमा समर्पण कर्यो' इत्यादि. आ बधा निरूपण पछी अेम समजाववानी कदाचज जरूर पडशे के, सस्कृत विद्यार्थीओना मार्गमा गमे ते प्रकारे सरलता आणवानोज अेकमात्र उद्देश आ ग्रन्थरत्नमा समायेलो छे मात्र धातुओना रूपाख्यानोज आपीने बेसी नहीं रहेता, नाम तथा सौत्र धातुओना सर्व रूपाख्यानोनी पण विस्तारथी समज

आपवा उपरांत, कयो काल केवे प्रसंगे वापरवो जोइअे ? तेनी अेवी तो असरकारक समज आपी छे के अेकदर रीते विद्यार्थी-वर्गने आ ग्रन्थ आशीर्वाद रूप थइ पड्या वगर रहे नहीं. जे जे स्थले काइक कठिन स्थल-विशेष कर्त्तीने मालूम पड्यु छे; त्यां त्या पोतानी (प्राचीन) गुजराती भाषामां पण समजाववानु कर्त्तव्य विसरी गया नथी.

सौभाग्यनो विषय छे के आवा अनेक ग्रन्थ रत्नोना प्रतापे श्रीजैनयशोविजय ग्रन्थमाला लोकादर सपादन करवाने दिनानुदिन अधिकतर शक्तिवती थती जाय छे. टुक समयमांज अनेक सुप्रतिष्ठित नरो तेनी मुक्त कंठथी प्रशंसा करवाने ललचाया छे. खुद हिंदी सरकारे पण आ ग्रन्थमालानु प्रथम रत्न-**प्रमाणनयतत्त्वालोकालंकार** कलकत्ता युनिवर्सिटीमा M A नी परीक्षामा दाखल करी, आपणा जैन साहित्यने इन्साफ आपी तेना प्रवर्त्तकोने उत्तेजित कर्या छे. तात्पर्य अे छे के आ प्रमाणे ग्रन्थमालानु भविष्य मूलबीज तेजस्वि छे. तेने वधारे तेजस्वि बनावी साहित्यना प्रचारमा सहायक थवु अे आपणु सर्वनु कर्त्तव्य छे आ कर्त्तव्यनो पार पामवा जो अमारा पूज्य मुनिवरो तथा श्रीमानो अमने योग्य सहाय आपी ग्रन्थमालानो पायो सुदृढ करवानी पोतानी फरज विचारशे तो अमने आशा नही पण विश्वास छे, के जैनाचार्योंनी शब्द-प्राचुर्य किंवा खण्डन मण्डन रहित, हृदयगम अने सरल कृति जन समाजने मोहित कर्या वगर रहेशे नहीं ॥

प्रस्तुत ग्रन्थ प्रगट करवामा आर्थिक सहाय अर्पनार श्रीकलकत्ताना सघनो अत्र आभार मानीअे छीअे, अने आवा ज्ञानप्रचारना अनेक कार्योमा पुनः पुन उजमाल थाय अेम इच्छीअे छीअे ॥

आ नानी भूमिका समाप्त करता अन्ते प्रार्थिशु के अेक त्यागी, वैरागी अने प्रभाविक मुनिवरना पवित्र अने प्रबल प्रयत्न द्वारा स्थापित थयेली श्री यशोविजय जैनपाठशाला तथा तदन्तर्गत श्रीजैनयशोविजय ग्रन्थमाला, समस्त प्राणीओना समुल्लासने अर्थे "यावच्चन्द्रदिवाकरौ" रहो ?

व्यवस्थापक—श्रीयशोविजयजैनग्रन्थमाला ।

PREFACE.[1]

The 'Kriyāratna samuccaya' is a very useful supplement to the Sanskrit grammar (Siddha Hema Śabdānuśāsana) of Hema Candra Sūri, containing as it does the paradigms of almost all Sanskrit verbs (roots) arranged under different *gaṇas*, classes, as *Bhvādi*, *Adādi*, etc[2] Guṇaratna Sūri, who wrote this work, is well known as the author of another work—a commentary on the Saddarśana samuccaya named Saddarśana samuccaya vṛtti or Tarka rahasya dīpikā[3] In this latter work Guṇaratna has mentioned Śauddhodani, Dharmottarācārya, Dharmakīrti, Prajñākara, Dignāga, and other Buddhist authors, as well as numerous Brāhmana authors such as Akṣapāda, Vātsyāyana, Udyotakara, Vācaspati, Udayana, Śrīkantha, Abhayatilakopādhyāya and Jayanta

Guṇaratna belonged to the Tapāgaccha of the Śvetāmbara sect, and was a pupil of Devasundara who attained the exalted position of Sūri in Anahillapattana in Samvat 1420 or A D 1363, as is evident from Ratna śekhara Sūri's Śrāddha pratikramaṇa sūtra vṛtti[4] composed in Samvat 1496 or A D 1439 Devasundara Sūri, teacher of Guṇaratna, was a contemporary of Munisundara Sūri, the famous author of the Gurvāvali,[5]

---

[1] This preface was written at our request by Mahāmahopādhyāya Dr Satis Chandra Vidyābhuṣaṇa M A, Ph D, Professor of Sanskrit and Pali, Presidency College, Calcutta and Jt Philological Secretary, Asiatic Society of Bengal —EDITOR

[2] श्रीहेमचन्द्रसूरीशकृतव्याकरणादिह ।
बहूपयोगिधातूनां क्रियारत्नसमुच्चयम् ॥ २ ॥
श्रीदेवसुन्दराभिख्यसुगुरूणां निदेशतः ।
सूरि श्रीगुणरत्नोऽय कुरुते सत्त्वतुष्टये ॥ ३ ॥ (क्रियारत्नसमुच्चय)

[3] The Ṣaddarsana samuccaya vṛtti has been published by the Asiatic Society of Bengal under the editorship of Dr Suali of Bologna, Italy

[4] विख्याततपेत्याख्या जगति जगच्चन्द्रसूरयोऽभूवन् ।
श्रीदेवसुन्दरगुरूत्तमाश्च तत्पट्टक्रमाद्विदिता ॥
पञ्च च तेषां शिष्यास्तेष्वाद्या ज्ञानसागरा गुरवः ।
कुलमण्डना द्वितीयाः श्रीगुणरत्नास्तृतीयाश्च ॥
षड्दर्शनवृत्तिक्रियारत्नसमुच्चयविचारनिचयसृजः ।
एषां श्रीसुगुरूणां प्रसादतोऽब्दे षडङ्कविश्वमिते ।
श्रीरत्नशेखरगणिर्वृत्तिमिमामकृत कृतितुष्टेः ॥ (श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्रवृत्ति)

[5] रसरसमनुमितवर्षे १४६६ मुनिसुन्दरसूरिणा कृता पूर्वम्
मध्यस्थैरवधार्या गुर्वावलीयं जयश्रीदा ॥ ९६ ॥ (गुर्वावली, पृ १०९) ।

composed in Samvat 1466 or A D 1409 These facts show that Gunaratna lived between 1363 A D and 1489 A D Gunaratna himself says that his *Kriyāratna samuccaya* was composed in Samvat 1466 or A D 1409[1] This fixes his date with an absolute certainty

Regarding the merits of the works which are being published in the series called the Jaina yaśo vijaya granthamālā, I need not add any note as they are well known to the scholars of the East and West

PRESIDENCY COLLEGE,
CALCUTTA
The 26th May, 1908

SATIS CHANDRA VIDYABHUSANA.

---

[1] काले षड्रसपूर्व १४६६ वत्सरमिते श्रीविक्रमार्काद्गते
गुर्वादेशवशाद्विमृश्य च सदा स्वान्योपकारं परम् ।
ग्रन्थं श्रीगुणरत्नसूरिरतनोत् प्रज्ञाविहीनोऽप्यमुं
निर्हेतूपकृतिप्रधानजननैः शोध्यस्त्वयं धीधनैः ॥ ६३ ॥

(क्रियारत्नसमुच्चय, पृ ३०९)।

क्रियारत्नसमुच्चयग्रन्थस्य विषयानुक्रमः ।

इति ।

॥ अर्हम् ॥

शिष्टाचरिताचरणविजिताजेयकरणगणस्याद्वादसमुद्रोल्लासनचन्द्रपरमपूज्यशान्तरसैकनिधि
शान्तमूर्त्तिश्रीवृद्धिचन्द्रसद्गुर्वष्टक स्तुतिरूपम् ।

वाच वाच प्रभुगुणगणं लब्धकीर्त्तिर्जने यो-
बोधं बोध विषमविबुध जातपूज्यप्रभावः ।
वेदं वेदं सकलसमयं प्राप्तशान्तस्वभावः
स्वर्गस्थोऽसौ विलसति सुख मद्गुरुर्वृद्धिचन्द्रः ॥ १ ॥

स्नाय स्नाय सुपवितवपु. सार्ववाचामृतेन
ह्राय ह्राय कुमतकपटं विश्ववन्द्यप्रतापः ।
घात घातं सुभटपदवीं प्राप दुष्कर्मवृन्द
स्वर्गस्थोऽसौ विलसति सुख मद्गुरुर्वृद्धिचन्द्रः ॥ २ ॥

पाव पाव मुनिजनपथ कृत्यकार्येषु लीनः
स्ताव स्ताव गुणिगुणगण शुद्धसम्यक्त्वधारी ।
नावं नाव जिनवरवर नीतपुण्यप्रकर्षे
स्वर्गस्थोऽसौ विलसति सुख मद्गुरुर्वृद्धिचन्द्र' ॥ ३ ॥

दाय दाय स्वभयमतुल प्राणिषु प्रीतिपुञ्ज
धाय धायं सुमतिमहिला कलृप्तकल्याणपोत' ।
भाय भाय प्रवचनवचो वीरदेवाभिमानः
स्वर्गस्थोऽसौ विलसति सुख मद्गुरुर्वृद्धिचन्द्र. ॥ ४ ॥

मारं मार रतिपतिभट त्यक्तमोहादिदोषो-
धार धारं यतिपतिपद कृत्तकर्मादिवर्गः ।
वार वार कुपथगमन जैनगच्छान्तरक्त'
स्वर्गस्थोऽसौ विलसति सुख मद्गुरुर्वृद्धिचन्द्र ॥ ५ ॥

द्वेप द्वेष कपटपटुक निह्नव न्यायमुक्त
पेषं पेप कुशलविकल कर्मवार प्रभूतम् ।

शान्तमूर्ति श्रीवृद्धिचन्दजी महाराज



वृद्धिसिद्धिप्रदाने य द्विगुणशक्तिः प्रवर्तते ।
चन्द्रतुल्यः स शान्तात्मा वृद्धोऽस्य जगतो गुरुः ॥ १ ॥



श्रीगुणरत्नसूरि-
विरचितः

क्रियारत्नसमुच्चयः।

जयति जिनवर्द्धमानो नवो रविर्नित्यकेवलालोकः।
अपहतदोषोत्पत्तिर्गतसर्वतमाः सदाऽभ्युदित ॥ १॥
श्रीहेमचन्द्रसूरीशकृतव्याकरणादिह।
बहुप्रयोगिधातूना क्रियारत्नसमुच्चयम् ॥ २ ॥
श्रीदेवसुन्दराभिख्यसुगुरूणा निदेशत.।
सूरिः श्रीगुणरत्नोऽय कुरुते तज्ज्ञतुष्टये ॥ ३ ॥ (युग्मम्)

इह सदोपयोगिनां क्रियारत्नाना प्रयोगप्रकारं बुभुत्सूनामुपकाराय वर्त्तमानादिदशविभक्तीनां सदादिकालत्रयविषय. प्रयोगविभाग' पूर्वं तावन्निरूप्यते—

"त्रीणि त्रीण्यन्ययुष्मदस्मदि"।३।३।१७॥ सर्वासा विभक्तीनां त्रीणि २ वचनानि अन्यस्मिन्नर्थे युष्मदर्थेऽस्मदर्थे चाभिधेये क्रमाद्भवन्ति। तत्राप्येकस्मिन्नर्थे एकवचनम्। द्वयोरर्थयोर्द्विवचनम्। बहुष्वर्थेषु बहुवचनम्। अत्र अन्यत्व युष्मदस्मदपेक्ष सन्निधानात्। युष्मच्छब्दवाच्योऽर्थो युष्मदर्थ। तेन भवच्छब्देनोच्यमानो न युष्मदर्थः॥ स जयति। तौ जयत.। ते जयन्ति॥ स विजयते। तौ विजयेते। ते विजयन्ते॥ भवान् जयति। भवन्तौ जयत। भवन्तो जयन्ति इत्यादि॥ युष्मदि; त्व जयसि। युवा जयथ.। यूयं जयथ ॥ त्व विजयसे। युवा विजयेथे। यूय विजयध्वे॥ अस्मदि; अह जयामि। आवा जयाव'। वय जयाम'॥ अह विजये। आवा विजयावहे। वय विजयामहे॥ एव सर्वासु। द्वययोगे त्रययोगे च शब्दस्पर्द्धात् पराश्रयमेव वचन भवति। स च त्व च जयथ। स चाह च जयाव।

त्वचाह च जयाव । स च त्व चाह च जयाम ॥ व्यस्तनिर्देशेऽपि परमेव । अह च स च जयाव । अह च त्व च जयाव । अह त्व स च जयाम ।

॥ तदुक्तम् ॥

अन्ययुष्मदस्मदर्थाः सहोक्तौ स्युर्यथापरम् ।
यथा ज्ञौ त्व स च स्यात ज्ञा स्याम त्वमह स च ॥१॥ इति ॥

अथ वर्त्तमाना ॥ "सति "।५।२।१९॥ वर्त्तमानकाले वर्त्तमाना ॥ स चतुर्द्धा ।

प्रवृत्तोपरतश्चैव १ वृत्ताविरत एव च २ ।
नित्यप्रवृत्त ३ सामीप्यो ४ वर्त्तमानश्चतुर्विध ॥ १ ॥

सम्प्रति जीवघात न करोति । परमर्माणि न जल्पति । परदारान् परिहरति । सुरापान वर्जयति । इति प्रवृत्तोपरतो वर्त्तमान ॥१॥ इह कुमारा क्रीडन्ति । इह श्राद्धा पर्वणि पौषध गृह्णते । इह च्छात्रा अधीयते । अरण्ये किराता वस्त्राण्या ददते । इति वृत्ताविरत ॥२॥ आचन्द्रार्क नदी वहति । तिष्ठन्ति पर्वता । तरणिस्तमासि तिरस्कुरुते । द्वे सागरोपमे शक्र साम्राज्य कुरुते । हरिप्रेरणया ब्रह्मा सृष्टिं रचयति । असुरा सदा वेदमार्ग विलुम्पन्ति । इति नित्यप्रवृत्त ॥ कथ तर्हि तस्थु स्थास्यन्ति गिरय इति । उच्यते । भूतभाविना भरतकल्किप्रभृतीना राज्ञा या क्रियास्तदवच्छेदेन पर्वतादिक्रियाणामप्यतीताऽनागतत्वोपपत्तेर्न भूतभाविप्रत्ययानुपपत्तिदोष ॥३॥ कदा मैत्राऽऽगतोऽसि । अयमागच्छामि । कदा मैत्र गमिष्यसि । एष गच्छामि । इति सामीप्य । अय च "सत्सामीप्ये सद्वद्वा " इत्यत्र विकल्पेन वक्ष्यते ॥४॥१॥

अथ भूते वर्त्तमाना विवक्षुर्लाघवार्थं ह्यस्तन्यादित्रय प्राह॥"वाद्यतनी पुरादौ"। ५।२।१५॥ पुरादय पुरा तदा अथ यावद् ह शश्वदादय प्रयोगतो गम्या । भूतानद्यतने पुरादियोगेऽद्यतनी वा । पक्षे अपरोक्षे ह्यस्तनी । परोक्षे परोक्षा च । अवात्सुरिह पुरा च्छात्रा । पुराशब्दोऽत्र चिरातीते । अवसन्निह पुरा च्छात्रा । ऊषुरिह पुरा च्छात्रा । तदाऽभाषिष्ट राघव । तदाऽभाषत राघव । बभाषे राघवस्तदा॥२॥ अथ भूते वर्त्तमाना॥ 'स्मे च वर्त्तमाना"।५।२।१६॥ स्मे पुरादौ चोपपदे भूतानद्यतने वर्त्तमाना । इति स्मोपाध्याय कथयति । पृच्छति स्म पुरोधसम् । स्मशब्दोऽतीतकालद्योतकश्चादि । वस-

न्तीह पुरा च्छात्रा'। भापते राघवस्तदा। अथाह वर्णी विदितो महेश्वरः। क्रोध प्रभो संहर सहरेति यावद्गिरः खे मरुता चरन्ति ॥ एव च पुरादियोगेऽद्यतनीह्यस्तनीपरोक्षावर्त्तमानाश्चतस्रो विभक्तय' सिद्धा'। स्मेन सहिते तु पुरादौ परत्वाद् वर्त्तमानैव। नटेन स्म पुराऽधीयते। इतिह स्मोपाध्याय कथयति। हशब्दोऽत्र स्मृत्यर्थे। इतिह इत्यव्ययसमुदायो वा सम्प्रदाये। शश्वदधीते स्म वटुः ॥३॥ "ननौ पृष्टोक्तौ सद्वत्"।५।२।१७॥ननावुपपदे पृष्टस्य प्रतिवचने भूतेऽर्थे सद्वद्भवति। सद्वद्वचनाद्वर्त्तमाना शत्रानशौ च भवन्ति। किमकार्षीश्चैत्र कटम्। ननु करोमि भो'। ननु कुर्वन्त कुर्वाण मा पश्य। किमवोच' किंचिच्चैत्र। ननु ब्रवीमि भो। ननु ब्रुवन्त ब्रुवाण मा पश्य ॥ ४ ॥ "नन्वोर्वा"।५।२।१८॥ननुशब्दयोर्योगे भूतेऽर्थे सद्वत्। किमकार्षी' कट चैत्र। न करोमि भो'। न कुर्वन्त न कुर्वाण मा पश्य। नाकार्षम्। कस्तत्रावोचत्। अह नु ब्रवीमि। ब्रुवन्त ब्रुवाण नु मा पश्य। अह न्ववोचम् ॥५॥ अथ भविष्यति वर्त्तमाना। "पुरायावतोर्वर्त्तमाना"।५।३।७॥ पुरायावतोरुपपदयोर्वर्त्स्यति वर्त्तमाना॥ चैत्र शीघ्र भुङ्क्ष्व पुरा ग्राम गच्छसि। पश्चाद्गमिष्यसीत्यर्थ। पुराशब्दोऽत्र भविष्यदासन्ने। भो' सत्वर पुस्तक गृहाण पुराऽध्यापक आगच्छति। अय यावद्भुङ्क्ते तावत्प्रतीक्षस्व। कदा राजभवन प्रयास्यति। मित्र यावद्भोज्य भवति। अय कियन्त कालमध्येष्यते। यावत्पाणिग्रहण सम्पद्यते। भविष्यदनद्यतनेऽपि परत्वाद्वर्त्तमानैव। पुरा श्वो भुङ्क्ते। यावच्छ्वो व्रजति। यावच्छब्दोऽत्रावध्यर्थे। परिमाणार्थे तु न स्यात्। यावद्दास्यते तावद्भोक्ष्यते। यत्परिमाणमित्यर्थ ॥६॥ "कदाकर्ह्योर्नवा"।५।३।८॥ अनयोर्योगे वर्त्स्यति वा वर्त्तमाना। पक्षे भविष्यन्तीश्वस्तन्यावपि। कदा भुङ्क्ते। कदा भोक्ष्यते। कदा भोक्ता। कर्हि भुङ्क्ते। कर्हि भोक्ष्यते। कर्हि भोक्ता। भूते तु नित्य परोक्षादय। कदा बुभुजे। कदा भुक्तवान् ॥ कर्हि बुभुजे भुक्तवान् वा ॥७॥ "किंवृत्ते लिप्सायाम्"।५।३।९॥ विभक्त्यन्तस्य डतरडतमान्तस्य च किमो वृत्त किंवृत्तमिति वैयाकरणसमयस्तेन कितरा कितमामिति न किंवृत्त, तस्मिन्नुपपदे प्रष्टुर्लब्धुमिच्छाया गम्याया वर्त्स्यति वा वर्त्तमाना। पक्षे भविष्यन्तीश्वस्तन्यावपि।

१ पुरेति क्रियाविशेपण कालविशेषणे वा सप्तमी, कालाध्व-।२।२।२३॥ इति कर्मसज्ञायामम् वा, कर्तृविशेपणे प्रथमा वा।

२ वर्त्स्यतीत्यस्य भविष्यदर्थ इत्यर्थ ।।

को भवता भिक्षां ददाति दास्यति दाता वा। के भवन्तो भोजयन्ति भोजयिष्यन्ति भोजयितारो वा। कतरो भवतोर्भिक्षां ददाति दास्यति दाता वा। कतमो भवतां भिक्षां ददाति दास्यति दाता वा। लिप्साया अभावे तु, कः पिण्डं दास्यति॥८॥ "लिप्स्यसिद्धौ"।५।३।१०॥ लब्धुमिष्यमाण ओदनादिर्लिप्स्यस्तस्मात्सिद्धौ स्वर्गाद्यवाप्तिलक्षणायां गम्यायां वर्त्स्यति वा वर्त्तमाना। पक्षे भविष्यन्तीश्वस्तन्यावपि। अकिंवृत्तार्थोऽयमारम्भः । यो भिक्षां ददाति दास्यति दाता वा स स्वर्गं याति यास्यति याता वा। अत्रोभयोरप्यनयोर्लिप्स्यसिद्धिरवगम्यते। तेनोभयत्राप्यनेनैव वर्त्तमाना सिद्धा । लिप्स्याद्दत्तात् स्वर्गसिद्धिमाचक्षाणो हि दातारं प्रोत्साहयति ॥९॥ "पञ्चम्यर्थहेतौ"।५।३।११॥ पञ्चम्यर्थः प्रैषानुज्ञाऽवसराः। न्यक्कारपूर्वा प्रेरणा प्रैषः। कामचारानुमतिरनुज्ञा। अवसरः कर्त्तव्यकालप्राप्तिः। तस्य प्रैषादेर्हेतुर्निमित्तमुपाध्यायागमनादि, तस्मिन्नर्थे वर्त्स्यति वा वर्त्तमाना। पक्षे भविष्यन्तीश्वस्तन्यावपि। उपाध्यायश्चेदागच्छति आगमिष्यति आगन्ता वा, अथ त्वं सूत्रमधीष्व, अथ त्वमनुयोगमादत्स्व। अत्र भविष्यदुपाध्यायागमनं प्रैषादेर्हेतुर्भवति ॥ १० ॥ "सप्तमी चोर्ध्वमौहूर्त्तिके"।५।३।१२॥ ऊर्ध्वं मुहूर्त्ताद्भव ऊर्ध्वमौहूर्त्तिकः। उत्तरपदवृद्धिरस्मादेव निर्देशात्। पञ्चम्यर्थहेतौ वर्त्स्यति ऊर्ध्वमौहूर्त्तिके वर्त्स्यति सप्तमीवर्त्तमाने वा। पक्षे भविष्यन्तीश्वस्तन्यावपि। ऊर्ध्वं मुहूर्त्तात्, उपरि मुहूर्त्तस्य, परं मुहूर्त्तादुपाध्यायश्चेदागच्छेत् आगच्छति आगमिष्यति आगन्ता वा, अथ त्वं तर्कमधीष्व, अथ त्वं सिद्धान्तमधीष्व ॥ ११ ॥ अथ भूतभविष्यतोर्वर्त्तमाना॥ "सत्सामीप्ये सद्वद्वा"।५।४।१॥ सतो वर्त्तमानस्य सामीप्ये भूते भविष्यति चार्थे सद्वत्प्रत्यया वा भवन्ति। कदा मैत्रागतोऽसि, अयमागच्छामि आगच्छन्तमेव मां विद्धि। वा वचनाद्यथाप्राप्तं च। अयमागमम्, एषोऽस्म्यागतः। कदा मैत्र गमिष्यसि, एष गच्छामि गच्छन्तमेव मां विद्धि। पक्षे एष गमिष्यामि गन्तास्मि गमिष्यन्तमेव मां विद्धि। असामीप्ये तु न सद्वत्। परुदगच्छत्। वर्षेण गमिष्यति॥१२॥ अथ पुनर्भविष्यति सा॥ "भूतवच्चाशंस्ये वा"।५।४।२॥ अनागतप्रियोऽर्थः प्राप्तुमिष्यमाण आशंस्यः, तस्मिन्नर्थे भूतवत्सद्वच्च प्रत्यया वा भवन्ति। आशंस्यस्य भविष्यत्वादयमतिदेशः। वा ग्रहणाद्यथाप्राप्तं च। उपाध्यायश्चेदागमत्

एते तर्कमध्यगीष्महि । अत्र स्थानद्वयेऽप्यनेनैव भूतप्रत्ययः। उभयत्राप्याशंस्यस्य विद्यमानत्वाद्विशेषस्यानतिदेशात् । उपाध्यायश्चेदागतः एतैस्तर्कोऽधीतः । उपाध्यायश्चेदागच्छति एते तर्कमधीमहे । पक्षे । उपाध्यायश्चेदागमिष्यति एते तर्कमध्येतास्महे । सामान्यातिदेशे विशेषस्याऽनतिदेशात् ह्यस्तनीपरोक्षे न भवतः । आशस्यादन्यत्र, गुरुरागमिष्यति तर्कमध्येष्यते मैत्रः ॥ १३ ॥ अथ कालत्रये वर्त्तमाना । "क्षेपेऽपिजात्वोर्वर्त्तमाना"।५।४।१२। क्षेपो गर्हा, तस्मिन् गम्ये वर्त्तमाना सर्वेषु कालेषु। अपि तत्रभवान् जन्तून् हिनास्ति । जातु तत्रभवान् अनृतं भाषते। धिग्गर्हामहे ॥ १४॥ "कथमि सप्तमी च वा"।५।४।१३। क्षेपे गम्ये सर्वेषु कालेषु सप्तमी वर्त्तमाने वा भवतः । कथ नाम तत्रभवान् मांसं भक्षयेत, मांसं भक्षयति । धिग्गर्हामहे । अन्याय्यमेतत् । पक्षे ह्यस्तन्यादय आशीर्वर्जाः सर्वा अपि । कथ नाम तत्रभवान् मांसमभक्षयत् अबभक्षत् भक्षयाचकार भक्षयिता भक्षयिष्यति अभक्षयिष्यत् वा । अत्र सप्तमीनिमित्तमस्तीति भूते क्रियातिपतने वा क्रियातिपत्तिरप्युदाहारि । भविष्यति तु क्रियातिपतने क्रियातिपत्तिरेवैका नत्वन्या । कथ नाम तत्रभवान् मांसमभक्षयिष्यत । क्षेपादन्यत्र। कथं नाम तत्रभवान् साधून् अपूपुजत् । एवं यथाप्राप्त वर्त्तमानादयोऽप्युदाहार्या. ॥ १५ ॥ इति वर्त्तमानाख्याति ।१।

अथ सप्तमी ॥ "विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसप्रश्नप्रार्थने"।५।४।२८॥ विध्यादिषु षट्सु सर्वप्रत्ययापवादौ सप्तमीपञ्चम्यौ । विधिरप्राप्ते नियोगः क्रियाया प्रेरणेत्यर्थः। अज्ञातज्ञापनमित्येके। कटं कुर्यात, करोतु भवान्। प्राणिनो न हिंस्यात्, न हिनस्तु भवान्। प्रेरणायामेव यस्या प्रत्याख्याने प्रत्यवायस्तन्निमन्त्रणम्। इच्छामन्तरेणापि नियोगत· कर्त्तव्यमिति यावत। द्विसन्ध्यमावश्यकं कुर्यात् करोतु भवान्। सामायिकमधीयीत, अधीतां भवान्। यत्र प्रेरणायामेव प्रत्याख्याने कामचारस्तदामन्त्रणम्। इहासीत आस्ता भवान्। इह शयीत शेतां भवान्, यदि रोचते। प्रेरणैव सत्कारपूर्विकाऽधीष्टम्। अध्येषणं तत्वज्ञानम्। न. प्रसीदेयुः प्रसीदन्तु गुरुपादा । तत्वज्ञान कर्मतापन्नं नोऽस्मभ्य प्रसादपूर्वक दद्युरित्यर्थ । व्रत रक्षेत् रक्षतु भवान्॥ संप्रश्न संप्रधारणा॥ किं नु खलु भो व्याकरणमधीयीय

अध्ययै, उत सिद्धान्तमधीयीय अध्ययै ॥ प्रार्थने याञ्चा ॥ प्रार्थना मे व्याकरणमधीयीय अध्ययै, तेन स्या नाथवानित्यादि ॥१६॥ "सम्भावनेऽलमर्थे तदर्थानुक्तौ" ।५।४।२२॥ अलमर्थ सामर्थ्यम् । तद्विषये सम्भावने श्रद्धाने गम्येऽलमर्थस्यानुक्तौ सप्तमी । सर्वविभक्त्यपवाद. । शक्यसम्भावने । अपि मासमुपवसेत। अपि पुण्डरीकाध्यायमह्नाऽधीयीत । अशक्यसम्भावने । अपि शिरसा पर्वत भिन्द्यात् । अपि समुद्र दोर्भ्यां तरेत् । अलमर्थोक्तौ तु न । वसति चेत्सुराष्ट्रेषु वन्दिष्यतेऽलमुज्जयन्तम् । शक्तश्चैत्रो धर्मं करिष्यति ॥ १७ ॥ "किंवृत्ते सप्तमीभविष्यन्त्यौ" ।५।४।२४॥ किंवृत्ते उपपदे क्षेपे गम्ये सप्तमीभविष्यन्त्यौ। सर्वविभक्त्यपवाद। किं तत्रभवाननृत ब्रूयात् वक्ष्यति वा । को नाम कतरो नाम कतमो नाम यस्मै तत्रभवान् अनृत ब्रूयात् वक्ष्यति वा ॥१८॥"अश्रद्धाऽमर्षेऽन्यत्रापि"।५।४।१४॥ अन्यत्र अकिंवृत्तेऽपिशब्दात्किंवृत्ते चोपपदेऽश्रद्धाऽमर्षयोर्गम्ययो. सप्तमीभविष्यन्त्यौ । सर्वविभक्त्यपवाद । अश्रद्धाया। न श्रद्दधे, न सम्भावयामि, नाऽवकल्पयामि, तत्रभवान्नामादत्त गृह्णीयात ग्रहीष्यति । किंवृत्तेऽपि । न श्रद्दधे. न सम्भावयामि, किं तत्रभवानदत्तमाददीत, आदास्यते । अमर्षे । न मर्षयामि न क्षमे धिग् मिथ्या नैतदस्ति तत्रभवान्नामादत्तं गृह्णीयात् ग्रहीष्यति । किंवृत्तेऽपि । न क्षमे किं तत्रभवानदत्त गृह्णीयात, ग्रहीष्यति । अत्राश्रद्धामर्षयोर्गम्यत्व पदै प्रयोगेणैव ज्ञेयम्। एतच्चास्मिन्नेव सूत्रे ज्ञातव्य नान्यसूत्रेषु यत "शेषे भविष्यन्त्ययदौ "। इत्यत्र। चित्र यदि सोऽधीयीत। अत्राश्रद्धाप्यस्तीति कथयिष्यति ॥१९॥ 'जातुयद्यदायदौ सप्तमी"।५।४।१७॥ अश्रद्धामर्षयोर्गम्ययो सप्तमी। पूर्वसूत्रप्राप्ताया भविष्यन्त्या अपवाद । न श्रद्दधे न क्षमे जातु यत् यदा यदि वा तत्रभवान् सुरा पिबेत। न श्रद्दधे यत् तत्रभवानस्मानाक्रोशेत् । एव जातु यदा यद्युपपदेऽपि ॥२०॥ अथ भविष्यति सप्तमी ॥ "क्षिप्राशंसार्थयोर्भविष्यन्तीसप्तम्यौ" ।५।४।३॥ क्षिप्रार्थे आशमार्थे चोपपदे आशस्येऽर्थे यथासख्य भविष्यन्तीसप्तम्यौ। 'भूतवच्चाशस्ये वा"। इत्यस्यापवाद । उपाध्यायश्चेदागच्छति आगमत् आगमिष्यति आगन्ता क्षिप्रमाशुत्वरितमरशीघ्रमेते सिद्धान्तमध्येष्यामहे । श्वस्तनीविषयेऽप्येतद्वचनबलाद्भविष्यन्त्येव । उपाध्यायश्चेच्छ्

शीघ्रमागमिष्यति एते श्व· क्षिप्रमध्येष्यामहे । आशसार्थे, उपाध्यायश्चेदा-गच्छति, आगमत् आगमिष्यति आगन्ता आशंसेऽवकल्पये सम्भावये युक्तोऽधीयीय। द्वयोस्तूपपदयोः सप्तम्येव। शब्दतः परत्वात्। आशसे क्षिप्रमधीयीय॥२१॥ "वर्त्स्यति हेतुफले"।५।४।२५॥ हेतुः कारणम्। फल कार्यम् । हेतुभूते फलभूते च वर्त्स्यति सप्तमी वा। यदि गुरूनुपासीत शास्त्रान्त गच्छेत्। यदि गुरूनुपासिष्यते शास्त्रान्त गमिष्यति। अत्र गुरूपासन हेतु। शास्त्रान्तगमनं फलम्। वर्त्स्यतोऽन्यत्र तु न सप्तमी। दक्षिणेन चेद्याति न शकटं पर्याभवति। केचित् तु सर्वेषु कालेषु सर्वविभक्त्यपवादं सप्तमीं वा मन्यन्ते । दक्षिणेन चेद्यायात् याति अयासीत् यास्यति वा न शकट पर्याभवेत् पर्याभवति पर्याभूत् पर्याभविष्यति वा। क्रियातिपत्तिस्तु स्वस्थाने दर्शयिष्यते । हनिष्यतीति पलायिष्यते । वर्षिष्यतीति धाविष्यतीत्यत्र हेतुफलभावस्येतिशब्देनैव द्योतितत्वात सप्तमी न भवति ॥२२॥

अथ सति सप्तमी॥"सतीच्छार्थात्"।५।४।२४॥ सति वर्त्तमाने इच्छार्थात् धातोः सप्तमी वा पक्षे तु वर्त्तमानैव। चैत्र· सुखमिच्छेत् इच्छति। उश्यात् वष्टि। कामयेत कामयते । वाञ्छेत्, वाञ्छति। "क्षेपेऽपिजात्वोर्वर्त्तमाना" । इत्यादावपि पर-त्वादयमेव विकल्पः ।अपि संयत सन्नकल्प्य सेवितुमिच्छेत् इच्छति धिग्गर्हा-महे॥२३॥ "इच्छार्थे सप्तमीपञ्चम्यौ"।५।४।२७॥इच्छार्थे धातावुपपदे प्रयोक्तु कामोक्तौ गम्याया सप्तमीपञ्चम्यौ । सर्वविभक्त्यपवाद । इच्छामि भुञ्जीत भुङ्क्ता वा भवान्। कामये प्रार्थये अभिलषामि वश्मि । अधीयीत भवान् अधीता वा ॥ २४ ॥ इति सप्तमीव्याप्ति २ ॥

अथ पञ्चमी । सा च विध्याद्यर्थषट्के प्राग् सप्तम्यासहोदाहारि ॥ "प्रैषानुज्ञावसरे कृत्यपञ्चम्यौ" ।५।४।२९। प्रैषादिषु कृत्याः पञ्चमी च भवन्ति । न्यक्कारपूर्विका प्रेरणा प्रैषः । अनुज्ञा कामचारानुमति. । अवसर· प्राप्तकालता । भवता खलु कट कार्यः कर्त्तव्य· करणीय· कृत्य । भवान् हि प्रेषितोऽनुज्ञातो-भवतोऽवसर कटकरणे । कृत्या हि प्राक्सामान्येन भावकर्मणोर्विहिता. सर्व-प्रत्ययापवादभूतया पञ्चम्या बाध्येरन्निति पुनर्विधीयन्ते। पञ्चमी प्रैषे । भवान् कटं करोतु। रे ग्रामं याहि। अनुज्ञायाम्। स्वयं गन्तुमिच्छन्त गन्तुं प्रवृत्त वा कश्चिदाह

ग्राम गच्छ । एव शास्त्रमधीष्व । क्षुल्लोऽय पुस्तकान् वाचयतु । राजा भवतु धार्मिक । अवसरे। काले वर्षतु पर्जन्यः सुप्रभूतेन वारिणा। अथ त्व कुरु। अथ तत्र कर्तुमवसर इत्यर्थ. । प्रस्तावे भवतु कार्यम् ॥ २५ ॥ आशिषि पञ्चमी आशी-स्थाने वक्ष्यते ॥ कश्चित्तु समर्थनाया पञ्चमीमिच्छति । परैरशक्यस्य वस्तुनोऽध्यवसाय. समर्थना। कश्चिदाह, समुद्रः शोषयितुमशक्य । स प्राह, समुद्रमपि शोषयाणि । पर्वतमप्युत्पाटयानि । सत्पुरुष. पृथ्वीमपि भ्रमितु नतु क्लेशमाप्नोति। दिन प्रति ग्रन्थसहस्र लिखानि। मूर्ध्ना भिन्दानि गिरिम्। पादप्रहारेण भूमिं विदारयाणि। बाहुभ्यामब्धि तराणि ॥२६॥ "भृशाभीक्ष्ण्ये हिस्वौ यथाविधि तध्वमौ च तद्युष्मदि"।५।४।४२॥ भृशत्वे आभीक्ष्ण्ये च सर्वकाले धातो सर्वविभक्तिसर्ववचनविषये पञ्चम्या हिस्वौ भवत. यथाविधि धातो सम्बन्धे। यत एव धातोर्यस्मिन्नेव कारके हिस्वौ विधीयेते तस्यैव धातोस्तत्कारकविशिष्टस्यैव सम्बन्धेऽनुप्रयोगे सति । तथा तध्वमौ। तयोस्तध्वमो' सम्बन्धी बहुत्वविशिष्टो युष्मद्, तस्मिन्नभिधेये भवत। चकारात् हिस्वौ च यथाविधि धातो सम्बन्धे । लुनीहि लुनीहीत्येवाय लुनाति । भृश पुन पुनर्वा लुनातीत्यर्थ.। लुनीहि लुनीहीत्येवेमौ लुनीत । लुनीहीलुनीहीत्येवेमे लुनन्ति। एव त्व लुनासीत्यादीनि सर्वविभक्तीना सर्वाणि ९० परस्मैपदवचनानि। लुनीष्वलुनीष्वेत्येवाय लुनीते। इमौ लुनाते। इमे लुनते । इत्यादीन्यात्मनेपदवचनानि च ९० अनुप्रयोज्यानि। अनुप्रयोगात्कालवचनभेदोऽभिव्यज्यते। एव अधीष्वाधीष्वेत्येवायमधीते । इमावधीयाते। इमेऽधीयते इत्यादि यावत्। अधीष्वाधीष्वेत्येवायमध्येष्यामहे । एव देहिदेहीति ददामि । देहिदेहीत्यदात् । आदत्स्वादत्स्वेत्येवाददीध्वम्। भृशमभीक्ष्ण वा गृह्णीध्वमित्यर्थ॥ इत्यादि ॥ एव भावकर्मणोरपि । शय्यस्व २ इत्येव शय्यते अशायि शायिष्यते भवता । लूयस्वलूयस्वेत्येव लूयते अलावि लविष्यते केदार । अधीयस्व २ इत्यधीयते अध्यगायि अध्यगायिष्यते शास्त्र भवता । हन्यस्व २ इत्येव रिपुर्जघ्ने । अत्यर्थमभीक्ष्ण वा हत इत्यर्थ ॥ तध्वमौ च तद्युष्मदि । लुनीत २ इत्येव यूय लुनीथ । अधीध्वमधीध्वमित्येव यूयमधीध्वे । हिस्वौ च । लुनीहि लुनीहीति यूय लुनीथ । अधीष्वाधीष्वेत्येव यूयमधीध्वे । एव तिष्ठत २ इति स्थेयास्त ।

अधीध्वमधीध्वमित्येव यूयमध्यैढ्वं, अध्यगीढ्वं वा । एवं युष्मदर्थे बहुत्वेऽन्यसर्व-विभक्तिष्वप्युदाहार्यम् ॥ लुनीहि लुनीहीत्यादौ च भृशाभीक्ष्ण्ये द्विर्वचनम् । इतिशब्दश्च सम्बन्धोपादानार्थोऽन्यथाऽसत्त्वभूतार्थवाचिनोराख्यातयोः परस्परेण सम्बन्धो नावगम्यते॥२७॥ "प्रचये नवा सामान्यार्थस्य"।५।४।४३॥ प्रचयः समुच्चयः, स्वतः साधनभेदेन वा भिद्यमानस्य एकत्रानेकस्य धात्वर्थस्याध्यावाप इत्यर्थः, तस्मिन् गम्ये सामान्यार्थस्य धातोः सम्बन्धे सति हिस्वौ तध्वमौ च तद्युष्मदि वा भवतः । व्रीहीन् वप, लुनीहि, पुनीहीत्येव यतते, चेष्टते, समीहते, यत्यते, चेष्ट्यते, समीह्यते । पक्षे, व्रीहीन् वपति, लुनाति, पुनातीत्येव यतते, यत्यते । देवदत्तोऽद्धि, गुरुदत्तोऽद्धि, जिनदत्तोऽद्धीत्येव भुञ्जते, भुज्यते । पक्षे, देवदत्तोऽत्ति, गुरुदत्तोऽत्ति, जिनदत्तोऽत्तीत्येव भुञ्जते, भुज्यते । सूत्रमधीष्व, निर्युक्तिमधीष्व, भाष्यमधीष्वेत्येवाऽधीते, पठति, अधीयते, पठ्यते । पक्षे, सूत्रमधीते, निर्युक्तिमधीते, भाष्यमधीते इत्येवाऽधीते, पठति, अधीयते, पठ्यते । तध्वमौ च तद्युष्मदि, त, व्रीहीन् वपत, लुनीत, पुनीतेत्येव यतध्वे, चेष्टध्वे । हि, व्रीहीन् वप, लुनीहि, पुनीहीत्येव यतध्वे, चेष्टध्वे । पक्षे, व्रीहीन् वप, लुनीथ, पुनीथेत्येव यतध्वे, चेष्टध्वे । ध्व, सूत्रमधीध्व, निर्युक्तिमधीध्वं, भाष्यमधीध्वमित्येवाध्वीध्वे, पठथ । स्व, सूत्रमधीष्व, निर्युक्तिमध्वीष्व, भाष्यमधीष्वेत्येवाधीध्वे, पठथ । पक्षे सूत्रमधीध्वे, निर्युक्तिमधीध्वे, भाष्यमधीध्वे इत्येवाधीध्वे, पठथ । पक्षे, सूत्रमधीध्वे, निर्युक्तिमधीध्वे, भाष्यमधीध्वे इत्येवाधीध्वे, पठथ । एवमन्य-विभक्तिष्वपि ॥ २८ ॥ इति पञ्चमी व्याप्ति ॥३॥

अथ ह्यस्तनी ॥ "अनद्यतने ह्यस्तनी"।५।२।७॥ आन्याय्यादुत्थानात् आन्याय्याच्च संवेशनादहरुभयतः सार्द्धरात्रं वाऽद्यतनकालः, तस्मिन्नसति भूतेऽर्थे ह्यस्तनी । अकरोत्, अहरत् । अद्य तु, अकार्षीत् ॥२९॥ "ख्याते दृश्ये"।५।२।८। लोकविज्ञाते दृश्ये प्रयोक्तुः शक्यदर्शने भूते ऽनद्यतनेऽर्थे ह्यस्तनी । परोक्षापवादः । अरुणत्सिद्धराजोऽवन्तीम् । अख्याते तु, परोक्षा । चकार कटं वटुः । अदृश्येऽपि सा । जघान कंसं किल वासुदेवः । अद्यतने तु, उदगादद्यादित्यः ॥३०॥ "हशश्वद्युगान्तः प्रच्छ्ये ह्यस्तनी च"।५।२।१३॥ पञ्चवर्षं युगम्, तस्यान्तर्मध्यं तत्र पृच्छ्यते यः स युगान्तः प्रच्छ्यः,

हशश्वद्योगे युगान्तप्रष्टव्ये च भूतानद्यतने परोक्षेऽर्थे ह्यस्तनी परोक्षा च । इतिह अकरोत् । इतिहशब्दो निपातसमुदाय प्रवादपारपर्य्ये वर्त्तते । यद्वा । इति एतत्, ह इति वास्यालङ्कारे । शश्वदकरोत, चकार वा । प्रच्छये, किमगच्छस्त्व मथुराम् । किं जगन्थ त्व मथुराम् ॥३१॥ "अविवक्षिते" ।५।२।१४॥ भूताऽनद्यतने परोक्षे परोक्षत्वेनाविवक्षिते ह्यस्तनी । अभवत्सगरो राजा । अहन् कस वासुदेव. ॥३२॥

इति ह्यस्तनी व्याप्ति ॥ ४ ॥

अथाद्यतनी ॥ "अद्यतनी" ।५।२।४॥ भूतेऽर्थेऽद्यतनी । अकार्षीत् ऋषभो वार्षिक तपः । अद्य व्यहार्षीत ॥३३॥ "विशेषाविवक्षाव्यामिश्रे" ।५।२।५॥ अनद्यतनादिविशेषस्याविवक्षाया व्यामिश्रणे च सति भूतेऽर्थे ऽद्यतनी । अगमाम घोषान् । अपाम पय· । अजैषीज्जैत्रोऽय हूणान् । रामो वनमगमत् । सतोऽप्यत्र विशेषस्याविवक्षा । व्यामिश्रे, अद्य ह्यो वाऽभुक्ष्महि । तत प्रभृत्यद्य यावद्वय सुखमेवासिष्महि । विशेषविवक्षाया तु, अगच्छाम घोषान् । अपिबाम पय । अजयज्जैत्रो हूणान् । रामो वन जगाम । ह्यस्तन्यादिविषयेऽप्यद्यतन्यर्थं वचनम् ॥३४॥ "रात्रौ वसोऽन्त्ययामास्वप्तर्यद्य" ।५।२।६॥ रात्रौ भूतेऽर्थे वस्धातोर्ह्यस्तन्यपवादोऽद्यतनी, तत्कर्त्ता चेद्रात्रेरन्त्ययामे स्वप्ता न भवति । रात्रावन्त्ययाम यावत् स्वप्ता न भवतीति तु पाणिनीया । अद्य अद्यतने चेत्प्रयोगो भवति । रात्रेरन्त्ययामे कश्चित्पथिक कश्चिदाह, क भवानुषित । स आहामुत्रावात्समिति । अन्त्ययामे तु मुहूर्त्तमपि स्वापे ह्यस्तन्येव । अमुत्रावसमिति ॥ ३५ ॥ 'माङ्यद्यतनी" ।५।४।३९॥ माङ्युपपदेऽद्यतनी । सर्वविभक्त्यपवाद । मा कार्षीदधर्मम् । मा हार्षीत् परस्वम् । मा द । मा गम । अह मा स्थाम् । कथ मा कुरु, मा कुरुष्व, मा करिष्यासि, मा भवतु, तस्य पाप मा भूयात्, मा भविष्यतीति असाधव एवैते । केचिदाहु । अङितो माशब्दस्यैते प्रयोगा । स्वमते ऽप्यङिन्माशब्दस्य प्रयोगोऽस्ति किंतु क्रियायोगे तस्य प्रयोगो नेष्यते अतः केचिदाहुरित्युक्तम् ॥३६॥ "सस्मे ह्यस्तनी च" ।५।४।४०॥ स्मसहिते माङ्युपपदे ह्यस्तनी । चकारादद्यतनी च । मास्म करोत् । अत्र माशब्देन निषेध उच्यते स्मशब्देन च स एव द्योत्यते । एव मास्म कार्षीत् । व्यवधानेऽपि । मा चैत्र स्म हर· परद्रव्यम् । मा चैत्र स्म हार्षी· परद्रव्यम् ॥३७॥ "तौ माङ्याक्रोशेषु" ।५।२।२१॥

माङ्योगे आक्रोशे तौ शत्रानशौ सति स्याताम्, बहुवचनादसत्यपि। तेन ये केचित्सत्यसति वा आक्रोशास्तेषु शत्रानशौ भवतः। मा कुर्वन्, मा कुर्वाणः, मा ददानः, मा पचन् वृषलो ज्ञास्यति। मा पचमानोऽसौ मर्तुकाम.॥ तथा च माघः॥ मा जीवन्यः परावज्ञा दुःखदग्धोऽपि जीवति । शत्रानशोरनुवृत्तावपि तौ ग्रहणमवधारणार्थम् । तेनाक्रोशे माङ्योगे ऽद्यतनी न भवतीत्यपि कश्चित् ॥ ३८ ॥

"सम्भावने सिद्धवत्" ।५।४।४॥ हेतो. शक्ति श्रद्धान सम्भावनं, तस्मिन् विषये ऽसिद्धेऽपि वस्तुनि सिद्धवत्प्रत्यया भवन्ति।

समये चेत्प्रयत्नोऽभूदुदभूवन् विभूतयः ।
इषे चेन्माधवोऽवर्षीत् समपत्स्यन्त शालयः ॥ १ ॥

जातश्चाय मुखेन्दुश्चेद् भ्रकुटिप्रणयी तत ।
गत च वसुदेवस्य कुल नामावशेषताम् ॥ २ ॥ ३९ ॥

इत्यद्यतनी व्याप्तिः ॥ ५ ॥

अथ परोक्षा। "परोक्षे" ।५।२।१२॥ भूतानद्यतने परोक्षेऽर्थे परोक्षा॥ जघान कंसं कृष्णः। धर्मं दिदेश तीर्थकरः। एव च परोक्षानद्यतने विवक्षावशात् ह्यस्तन्यद्यतनीपरोक्षास्तिस्रो विभक्तय. सिद्धा । परोक्षत्वेनानद्यतनत्वेन चाविवक्षिते "विशेषाविवक्ष"-इत्यनेनाद्यतनी। परोक्षत्वेन त्वविवक्षिते "अविवक्षिते" इत्यनेन ह्यस्तनी। उभयसद्भावविवक्षाया तु "परोक्षे" इत्यनेन परोक्षा॥ तथा च रामायणे॥ न्यक्षिपच्चाङ्गद तदा। अन्वनैषीत्ततो वाली। सुग्रीव प्रोचे सद्भावमागत॥ महाभारते तु॥ सैन्य समस्त सोऽयुयुत्सयत्। राक्षसेन्द्रस्ततोऽभैषीत्। स्वयं युयुत्सयांचक्रे॥

॥ तथा ॥

अभूवन् तापसाः केचित् पाण्डुपत्रफलाशिनः ।
पारिव्रज्य तदाऽऽदत्त मरीचिश्च तृषार्दितः ॥ १ ॥ ४० ॥

"कृतास्मरणातिनिह्नवे परोक्षा" ।५।२।११॥ कृतस्यापि व्यापारस्यास्मरणेऽत्यन्तनिह्नवे वा भूते ऽनद्यतनेऽर्थे परोक्षा। अपरोक्षकालार्थ आरम्भ । सुप्तोऽहं किल विललाप। चिन्तयन् किलाह शिरः कम्पयाम्बभूव। अति-

निह्नवे, कश्चिदाह त्वया कलिङ्गेषु ब्राह्मणो हत । न कलिङ्गेषु ब्राह्मणमहं महनम् ॥ ४१ ॥ इति परोक्षा ष्यादि' ॥ ६ ॥

अथाशी ॥ 'आशिष्याशी·पञ्चम्यौ" ।५।४।३८॥ शिष्योऽयं मर्ते सिद्धान्तं पठ्यात्, शत्रूणा क्षय क्रियात। पुत्रोऽय विद्याना पार यायात। एते दुष्टा मृषीरन्। लक्ष्मीवानह भूयासम ॥ उक्त च॥ श्रुतस्य यायादयमन्तमर्भकस्तथा परेषा युधि-चेति पार्थिव ॥ तथा च ॥ क्रियादधाना मघवा विभातम। पञ्चमी॥ एष नन्दतात। एतौ नन्दताम् ॥ एते नन्दन्तु । स श्रियेऽस्तु॥ ४२ ॥ इत्याशीर्ष्यादि' ॥ ७ ॥

अथ श्वस्तनी ॥ "अनद्यतने श्वस्तनी' ।५।३।५॥ न विद्यते ऽद्यतनो यत्र तस्मिन् वर्त्स्यति श्वस्तनी। कर्त्ता, श्व कर्त्ता। अनद्यतनइति बहुव्रीहितो व्यामिश्रे माभूत। अद्य श्वो वा गमिष्यति। कथ श्वो गमिष्यति। प्रागुधात्वर्थे भविष्यन्ती पश्चात श्व · शब्देन योग ॥४३॥ "परिदेवने" ।५।३।६॥ परिदेवनमनुशोचनम्, तस्मिन् गम्ये वर्त्स्यति श्वस्तनी। अननद्यतनार्थ आरम्भ । इय तु कदा गन्ता, यैव पादौ निद धाति। अय तु कदाऽध्येता, य एवमनभियुक्त। विशेषविधानात् कदाकर्ह्योर्गलक्षणा विभाषा बाध्यते॥४४॥ "नानद्यतन प्रबन्धासत्त्यो "।५।४।५॥ प्रबन्ध सातत्य, आसत्ति सामीप्य कालत, धात्वर्थस्य प्रबन्धे आसत्तौ च गम्याया ना-नद्यतन । न अद्यतनोऽनद्यतनः तद्विहित' प्रत्ययो न स्यादित्यर्थ ।भूतानद्यतने ह्यस्तनी, भविष्यदनद्यतने च श्वस्तनी, तयो प्रतिषेध । यावज्जीवं भृशमन्नम-दात्, ददौ, दत्तवान्। यावज्जीव भृशमन्न दास्यति, यावज्जीव युक्तो ऽध्याप-यिष्यति । आसत्तौ, येय पौर्णमास्यतिक्रान्ता एतस्या जिनमह प्रावर्त्तिष्ट, प्रववृते, प्रवृत्त । येय पौर्णमास्यागामिनी अस्या जिनमह प्रवर्त्तिष्यते। द्वौ प्रति-षेधौ यथाप्राप्तस्याभ्यनुज्ञानाय ॥४५॥ "एष्यत्यवधौ देशस्याऽर्वाग्भागे" ।५।४।६॥ देशस्यावधावुपपदे देशस्यैवार्वाग्भागे एष्यति नानद्यतन । एष्यतीति वचनात् श्वस्तन्या एव प्रतिषेध । योऽयमध्वा गन्तव्य आशत्रुञ्जयात् तस्य यदवर वलभ्या-स्तत्र द्विर्मोक्ष्यामहे॥४६॥ "कालस्यानहोरात्राणाम्" ।५।४।७॥ कालस्यावधावुपपदे कालस्यैवार्वाग्भागे एष्यत्यर्थे ऽनद्यतनो न स्यात्, न चेत्सोऽर्वाग्भागोऽहोरात्राणा सम्बन्धी भवति । यत्राह.शब्दो रात्रिशब्दो वा प्रयुज्यते तत्राहोरात्रत्वम्। योऽ-

यमागामी संवत्सरस्तस्य यदवरमाग्रहायण्यास्तत्र जिनपूजां करिष्यामः । अहोरात्रप्रयोगे तु, योऽयं त्रिंशद्रात्रआगामी तस्य योऽवरः पञ्चदशरात्रस्तत्र युक्ता अध्येतास्महे ॥४७॥ "परे वा" ।५।४।८॥ कालस्यावधौ कालस्यैव परस्मिन् भागे एष्यति नानद्यतनः स्यात् । आगामिनः संवत्सरस्य आग्रहायण्याः परस्ताद्विःसूत्रमध्येष्यामहे, अध्येतास्महे वा । कालादन्यस्य परभागे तु, आशत्रुञ्जयाद्गन्तव्येऽस्मिन्नध्वनि वलभ्याः परस्ताद्द्विरोदनं भोक्तास्महे ॥ ४८ ॥

इति श्वस्तनी व्याप्तिः ॥ ८ ॥

अथ भविष्यन्ती ॥ "भविष्यन्ती" ।५।३।४॥ वर्त्स्यति भविष्यन्ती । गमिष्यति, स भोक्ष्यते ॥४९॥ क्षिप्राशंसार्थयोर्भविष्यन्ती सप्तमीस्थानेऽभाणि ॥ अथ भूते भविष्यन्ती । "अयदि स्मृत्यर्थे भविष्यन्ती" ।५।२।९॥ स्मृत्यर्थे धातावुपपदे भूतेऽर्थे भविष्यन्ती, यच्छब्दश्चेत्क्रियाविशेषणं न प्रयुज्यते । यस्मादर्थे तु भविष्यन्त्येव । स्मरसि भो महापुरुष लघुत्वे बहुमूल्यानि वासांसि परिधास्यामः, अश्वानारोक्ष्यामः, मिष्टान्नभोजनं भोक्ष्यामहे च । अभिजानासि देवदत्त कश्मीरेषु वत्स्यामः । स्मरसि साधो स्वर्गे स्थास्यामः । एवं बुध्यसे, चेतयसे, अध्येषि, अवगच्छसि चैत्र कलिङ्गेषु गमिष्यामः ॥

॥ तथा च माघः ॥

स्मरस्यदो दाशरथिर्भवन् भवानमुं वनान्ताद्वनिताऽपहारिणम् ।
पयोधिमाबद्धचलज्जलाविलं विलङ्घ्य लङ्कां निकषा हनिष्यति ॥१॥

अत्र जघानेत्यस्य स्थाने हनिष्यतीत्युक्तम् ॥ यच्छब्दप्रयोगे तु ह्यस्तनी । अभिजानासि मित्र यत्कलिङ्गेष्ववसाम । यद्वसनं तत्स्मरसीत्यर्थः ॥ ५० ॥ "वा काङ्क्षायाम्" । ५ । २ । १० ॥ स्मृत्यर्थे धातावुपपदे यद्ययदि वा प्रयुज्यमाने प्रयोक्तुः क्रियान्तराकाङ्क्षायां भूतानद्यतने वा भविष्यन्ती, पक्षे ह्यस्तनी ॥ स्मरसि मित्र काश्मीरेषु वत्स्यामस्तत्रौदनं भोक्ष्यामहे, पास्यामः पयांसि च । स्मरसि मित्र कश्मीरेष्ववसाम, तत्रौदनमभुञ्ज्महि । स्मरसि मित्र यत्कश्मीरेषु वत्स्यामो यत् तत्रौदनं भोक्ष्यामहे । स्मरसि यत्कश्मीरेष्ववसाम । यत्तत्रौदनमभुञ्ज्महि । अत्र वासो लक्षणं, भोजनं पानं च लक्ष्यमिति लक्ष्यलक्षणयोः सम्बन्धे प्रयोक्तुराकाङ्क्षा भवति ॥ ५१ ॥ "शेषे भविष्यन्त्ययदौ" ।

५।४।२०॥ शेषे यच्चयत्राभ्यामन्यस्मिन्नुपपदे चित्रे गम्ये कालस्यानिर्देशादिषु का- लेषु भविष्यन्ती, अयदौ, यदिश्चेन्न प्रयुज्यते । सर्वविभक्त्यपवाद । चित्रमा- श्चर्यमद्भुतम्, अन्धो नाम पर्वतमारोक्ष्यति, बधिरो नाम व्याकरण श्रोष्यति, मूको नाम धर्मं कथयिष्यति ।यदि प्रयोगे तु । आश्चर्यं यदि स भुञ्जीत । चित्र यदि सोऽधी यीत । अत्र श्रद्धाप्यस्ति न केवल यदिशब्दयोग इति ॥ "जातुयद्यदा"-इत्यनेन सप्तमी ॥ ५२ ॥ "वा हेतुसिद्धौ क्त."।५।३।२॥ वर्त्स्यदर्थे धात्वर्थस्य हेतु कारण, तस्य सिद्धौ सत्या वा क्तः ।किं ब्रवीषि वृष्टो देवः, सम्पन्नास्तर्हि शालय', संपत्स्यन्ते वा । प्राप्ता नौ,स्तीर्ण्णा तर्हि नदी, तरिष्यते वा ॥५३॥ "किंकिलास्त्यर्थयोर्भवि- ष्यन्ती"।५।४।१६॥ किंकिलेति शब्देऽस्त्यर्थे चोपपदेऽश्रद्धामर्षयोर्गम्ययोर्भविष्यन्ती । सप्तम्यपवाद' । न श्रद्दधे न मर्षयामि, किं किल नाम तत्रभवान् परदारानुपकरि- ष्यते।"गन्धन"-इति सूत्रेण साहसे आत्मनेपदम् । अस्त्यर्था ,अस्तिभवतिविद्यतय । न श्रद्दधे न मर्षयामि, अस्ति नाम, भवति नाम, विद्यते नाम, तत्रभवान् परदारा- नुपकरिष्यते ॥ ५४ ॥ "धातो' सम्बन्धे प्रत्यया '।५।४।४१॥ धातुशब्देन धात्वर्थउच्यते, धात्वर्थाना सम्बन्धे विशेषणविशेष्यभावे सति अयथाकालमपि कृत्तद्धितादय. प्रत्यया. साधवो भवन्ति । तत्र स्याद्यन्तो विशेष्य , कृत्तद्धिता- द्यन्तो विशेषणम् । विश्वदृश्वाऽस्य पुत्रो भविता । कृत' कट. श्वो भविता । भावि कृत्यमासीत् । विश्वदृश्वेति भूतकाल प्रत्ययो भवितेति भविष्यत्कालेन प्रत्ययेना- भिसबध्यमानः साधुर्भवति । एव कृत कट श्वो भवितेति । भाविकृत्यमासी दित्यत्र तु भावीति भविष्यत्काल प्रत्यय आसीदिति भूतकालेन प्रत्ययेन सबन्ध्य- मान. साधु ।एव तद्धिता अपि । गोमानासीत् । धनवान् भविता ॥ अस्तिविवक्षाया हि मतुरुक्तः स कालान्तरे न स्यादिति । तथा त्याद्यन्तमपि यदा पर त्याद्यन्तं प्रतिविशेषणत्वेनोपादीयते तदा तस्यापि समुदायवाक्यार्थापेक्षया कालान्यत्व भवत्येव ॥

साटोपमुर्वीमनिश नदन्तो यै. प्लावयिष्यन्ति सम ततोऽमी ।
तान्येकदेशान्निभृत पयोधे सो ऽम्भासि मेघान् पिबतो ददर्श ॥ १ ॥

अत्र प्लावयिष्यन्तीति भविष्यदर्थस्य विशेषणस्य ददर्शेति विशेष्येण सह

संबन्धाद्भूतार्थानुगमः कवेरभिप्रायः। तेन यैः प्लावितवन्त इति गम्यमानोऽर्थः। कृदन्तस्य तु विशेष्यस्यान्यकालभव त्याद्यन्त विशेषणं दुष्टमेव ॥ यथा साटोपमित्यत्रैव ददर्शेति स्थाने दृष्टवानिति प्रयोगे प्लावयिष्यन्तीति दुष्टमेव। यतस्त्याद्यन्त साध्यात् धात्वर्थाद्विधीयमानं प्रधानं। प्रधान च कथमप्रधानस्य कृतोऽनुयायि स्यात् ॥ ५५ ॥ इतिभविष्यन्ती व्याप्तिः ॥ ९॥

अथ भविष्यति क्रियातिपत्ति.॥'सप्तम्यर्थे क्रियातिपत्तौ क्रियातिपत्तिः"।५। ४।९॥ सप्तम्या अर्थो निमित्तं हेतुफलकथनादिका सामग्री। कुतश्चिद्वैगुण्यात् क्रियाया अतिपतनमनभिनिवृत्तिः क्रियातिपत्तिः, तस्या सत्यामेष्यत्यर्थे धातोः सप्तम्यर्थे क्रियातिपत्ति.॥ दक्षिणेन चेदयास्यन्न शकट पर्याभविष्यत् । यदि कमलकमाह्वास्यन्न शकट पर्याभविष्यत् । अत्र दक्षिणगमन कमलकाह्वान च हेतुः। अपर्याभवन फलम् । तयो. कुतश्चित्प्रमाणाद्भविष्यन्तीमनभिनिवृत्तिमवगम्यैव प्रयुङ्क्ते । एवमभोक्ष्यत् भवान् घृतेन यदि मत्समीपमागमिष्यत्। स यदि गुरूनुपासिष्यत् शास्त्रान्तमगमिष्यत् । अत्र "वत्स्र्यति हेतुफल" इत्यनेन सप्तम्यर्थः ॥ ५६॥ अथ भूते क्रियातिपत्तिः॥"भूते"।५।४।१०॥ भूतेऽर्थे क्रियातिपत्तौ सत्यां सप्तम्यर्थे क्रियातिपत्ति.। सप्तम्यर्थश्च "विधिनिमन्त्रण"-इत्यादिना प्रागेव भणितोऽस्ति। यद्यय दानमदास्यत् ततो विश्वेऽपि यशः प्रासरिष्यत्। यदि ग्राममगमिष्यत् तदा चौरा द्रव्य नाहरिष्यन्। दृष्टो मया भवतः पुत्रोऽन्नार्थी चङ्क्रम्यमाणः अपरश्चातिथ्यर्थी यदि स तेन दृष्टोऽभविष्यत् । उताभोक्ष्यत, अप्यभोक्ष्यत॥ ननु दृष्टोऽन्येन पथा गत इति न भुक्तवान् । अत्र उतापिशब्दौ बाढार्थौ । ननु

पुष्प प्रवालोपिहित यदि स्यान् मुक्ताफल वा स्फुटविद्रुमस्थम् ।
ततोऽनुकुर्याद्विशदस्य तस्य ताम्रौष्ठपर्यस्तरुच' स्मितस्य ॥ १ ॥

तथा। लज्जातिरश्चा यदि चेतसि स्यादसशय पर्वतराजपुत्र्या. ॥ इत्यत्र कथ न क्रियातिपत्ति.। सत्य, क्रियातिपत्तेर्भवने भूतकालो निरीक्ष्यते अत्र तु श्रीकालिदासकविना वर्त्तमानो विवक्षित. । प्राक्तनसूत्रे भविष्यत्काले इह च भूतकाले सप्तम्यर्थे क्रियातिपत्तिरभ्यधायि । वर्त्तमानकाले तु विवक्षिते क्रियातिपत्ति' क्वापि नस्यादिति तात्पर्यम् ॥ ५७ ॥ इति क्रियातिपत्तिव्याप्ति. ॥ १० ॥

अथ बालानामवबोधाय प्राकृतवार्त्ताभिर्विभक्तिविभागो वर्ण्यते ॥ विभक्ति १० ॥ काल ३ ॥ तत्र वर्त्तमानकालिविभक्ति ३, वर्त्तमाना, सप्तमी, पञ्चमी । एउ करइ, लिअइ, दिअइ, जायइ, आवइ, जागइ, सुअइ, ए घणा करइ, लिइ । तू कॅर, लिॲ, दिअँ । तुम्हे करउ, लिअउ, दिअउ । हू करउ, लिउ, दिउ । अम्हे करउ । इत्यर्थे कर्त्तरि वर्त्तमाना । एष करोति । लाति । ददाति । याति । आपतति । जागर्त्ति । स्वपिति इत्यादि । तथा देवदत्तइ तइ मइ हुईअइ, सुईअइ, बइसीअइ इत्यादि । अकर्मकधातूक्तौ भावे अन्यदर्थीयमात्मनेपदैकवचनम् । देवदत्तेन त्वया मया वा भूयते । शय्यते । आस्यते इत्यादि । कीजइ, लीजइ, दीजइ । कीजइ, लीजइ, दीजइ । तू कीज, तुम्हे कीजउ, हू कीजउ इत्यर्थे कर्माणि वर्त्तमाना । कट क्रियते, लायते । कटा क्रियन्ते । त्व क्रियसे । यूय क्रियध्वे । अहं क्रिये इत्यादि ॥ तथा स्मयोगेऽतीते वर्त्तमाना ॥ सेहि आवश्यकु पढिउ । शैक्ष आवश्यक पठतिस्म । पुरायावतोर्यो भविष्यति वर्त्तमानो । देवदत्त वहिलउ जिमि । पाछइ गाम जाइसि । देवदत्त क्षिप्र भुक्ष्व, पुरा ग्राम गच्छसि । कदाय राजभवनं प्रयास्यति, यावन्मित्र भोज्य भवति । तातो गच्छति । अय कियन्त कालमध्येष्यते, यावत्पाणिग्रहण सपद्यते ॥१॥ वर्त्तमानकाल एव "विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाभीष्टसम्प्रश्नप्रार्थने"।५।४।२८॥ इति वचनात्करेवउ, लेवउ, देवउ तथा करिजो, लेजो, देजो । तू करिजे, लेजे, देजे । तुम्हे करिजो । हू अम्हे करिजउ, लेजउ, देजउ । तथा करत, लेअत, देअत इत्यर्थे विध्यादिप्रधानाया उक्तौ कर्त्तरि सप्तमी । श्रावकइ विनउ जिनरहइ करिवउ । जन्मनउ फल लेजउ । देजउ । दानुदेनउ । श्राद्धो विनय जिनस्य कुर्यात् कुर्वीत वा । जन्मन फल गृह्णीयात् गृह्णीत वा । दद्यात् ददीत वा दानम् ॥ यदुक्त योगशास्त्रे । ब्राह्मे मुहूर्त्ते उत्तिष्ठेत् ॥ नाश्नीयात्पिपिगित सुधी ॥ तथा अम्हे भीख जिमवी । जूनउ वस्त्र पहिरवउ । इत्याद्युक्तौ ।

भुञ्जीमहि वय भैक्ष जीर्णं वासो वसीमहि ।
शयीमहि महीपीठे कुर्वीमहि किमीश्वरै ॥ १ ॥

गुरि अणुजाणिउ चेलउ व्याकरण पढत । गुरुभिरनुज्ञातः क्षुल्लकोऽपि व्याकरणमधीयीत। त्वमपि सिद्धान्तं वाचयेः । अहमपि अनुयोगं गृह्णीय। एव लघुरपि वाचनां दद्यात् । सोऽपि तपः कुर्वीत। तू करिजे, त्वं कुर्याः । हूं करिजउ, अहं कुर्याम् ॥ यदुक्तं ॥ तेन स्यां नाथवास्तसै स्पृहयेयं समाहितः, इत्यादि। कर्मणि, तीणई कीजइत, तेन क्रियेत । एवं त्वया क्रियेत, मया क्रियेत इत्यादि। भावे, हुईअत, तेन त्वया मया वा भूयेत॥२॥ करउ, लिउ, दिउ, हुउ। तूं करि, लइ, दइ, जा, आवि, पढि, गुणि इत्यर्थे अनुमतौ कर्त्तरि पञ्चमी। करोतु, कुरुता वा । लातु, ददातु, भवतु । त्व कुरु इत्यादि । कर्मणि तु, कीजउ, लीजउ ॥ क्रियता, लायता । तथा आशिषि पञ्चमी । एउ राज्य करउ । अयं राज्य करोतु। एहना वइरी मरउ। अस्य वैरिणो म्रियन्ताम्। दुःखानि क्षयं यान्तु। जिनः श्रियेऽस्तु ॥ ३॥ अतीतकालिविभक्तिः ४ । ह्यस्तनी, अद्यतनी, परोक्षा, क्रियातिपत्तिः ॥ अतीतस्त्रिविधः ॥ आजनउ अतीतअद्यतनः १ । कालनउ ह्यस्तनः २ । तेह पहिलउ तत्प्राक्तनः ३। तत्राद्यतने, आजु कीधउ, आजु लीधउ, आजु दीधउं, इत्यर्थे अद्यतनी, अद्याकार्षीत्, अलासीत्, अदासीत्। ह्यस्तने, कालि कीधउं, कालि लीधउ, इत्यर्थे ह्यस्तनी, ह्योऽकरोत्, अलात्। तत्प्राक्तनो द्विधा॥ प्रत्यक्षः१, परोक्षश्च २। प्रत्यक्षे ह्यस्तनी । अयमकरोत्। परोक्षे सामान्यतः परोक्षा। दिदेश धर्मं जिनः। अहं चकर बाल्ये क्रीडाम्। परोक्षेऽपि लोकप्रसिद्धे द्रष्टुं शक्ये ऽर्थे ह्यस्तन्येव। अभनग् मुद्गलपतिर्योगिनीपुरम्। अरुणत्सिद्धराजोऽवन्तीम्॥ अथवा सामान्यतोऽतीतकाले, आगइ करतउ, आगइ लेतउ, आगइ करता, आगइ लेता, इत्यर्थे कर्त्तरि । आगइ कीधउं, आगइ लीधउ, आगइ दीधउं, इत्यर्थे कर्मणि च ह्यस्तनी, अद्यतनी, परोक्षास्तिस्रोऽपि भवन्ति क्तवत्वादयश्च ॥ तथा हि अतीते कर्त्तरि उक्तौ। लहुड पणि दिहाडी प्रति हूँ बि करस घी जिमतु। एउ पॉच जोअण भूमि चालतउ। तू दिहाडी प्रति ५० श्लोकव्याख्यानि भणतउ। लघुत्वे दिन प्रति अहं घृतस्य द्वौ कर्षौ अभुञ्जि, अभुङ्क्षि, बुभुजे, भुक्तवान्, भुक्तो वा । अय पञ्च योजनानि भूमिमचलत्, अचालीत्, चचाल, चलितवान् वा । त्व दिनम्प्रति ५० श्लोकानभणः, अभाणीः, बभणिथ, भणितवान् वा । आगइ

ए चेला दिहाडी प्रति बि सहस्र सज्झाय गुणता । तुम्हे त्रिन्नि सइं ग्रन्थ लिखता । अह्मे सउ श्लोक पढता । पूर्वमेते क्षुल्ला दिन प्रति स्वाध्यायस्य द्वे सहस्रे अगुणयन्, अजुगुणन्, गुणयाम्बभूवुः, गुणितवन्तो वा । यूय ग्रन्थस्य त्रीणि शतानि अलिखत, अलेखिष्ट, लिलिख, लिखितवन्तो वा । वय शत श्लोकानपठाम, अपठिष्म, पेठिम, पठितवन्तो वा । एउ गामि गिउ । एष ग्राममगच्छत्, अगमत्, जगाम, गतवान् वा । कर्मणि उक्तौ तु, ईणइ धर्मु कीधउ । अनेन धर्मोऽक्रियत, अकारि, चक्रे, कृतो वा । ईणइ पुरुषइ दस ग्राम पाम्या । अनेन पुरुषेण दश ग्रामा. प्राप्यन्त, प्राप्सत, प्रापिरे, प्राप्ता वा । ईणइ वस्त्र वीक्या । अनेन वस्त्राणि व्यक्रीयन्त, व्यक्रेषत, विचिक्रियरे वा । एवमन्यत्रापि ज्ञेयम् । तथा स्मरणार्थे धातावुपपदेऽतीतेऽपि भविष्यन्ती । सॉरॅ हो सङ्घ सायइ श्रीशत्रुजइ श्रीगुरु चालिआ । स्मरसि भो सघेन सह श्रीशत्रुञ्जये श्रीगुरवो विहरिष्यन्ते । जाणँ हो मित्र अहे दिहाडे आपणि जलकेलि करता । स्मरसि भो मित्र एषु वासरेषु वयं जलक्रीडा विधास्यामः । जाणॅ हो आपणि देवपणइ तीणइ विमानि वसता । चेतयसे भो वय देवत्वे तस्मिन् विमाने वत्स्याम ॥ तथा मकरे, मकरिजे, मकरिसि, मदिइ, मदेजे, मदेसि । मजा मरहि जिउ । इत्यर्थे माङयोगेऽद्यतनी । मा कार्षी । मा दाः । मा गम । मा स्थामह । केचित्तु अङिन्माशब्दस्य योगे पञ्चम्याद्यपीच्छन्ति । मा कुरु, मा करिष्यसि, मा कुरुष्वाऽत्र सन्देहमित्यादि ॥ आक्षेपपूर्वमुक्तौ ॥ आक्रोशे गम्ये म कीधु, म लीधु, म दीधु, म जईउ, रखेजीवतउ, रखेजातउ, रखेकरतउ इत्यर्थे माङयोगे शत्रानशौ । मा कुर्वन्, मा कुर्वाण । मा ददत्, मा ददान, इत्यादि ॥ रखे जीवतउ जे परावज्ञाइ छतीइं जीवइ । मा जीवन् य परावज्ञायामपि सत्या जीवति ॥ जइ किमइ अमुक करत, लिअत, दिअत । तउ अमुकं हुयत, इत्यर्थे ऽतीतकाले क्रियातिपतने क्रियातिपत्ति । यद्यहमकरिष्य तत कार्यमभविष्यत् । चेद्ग्राममगमिष्य तदा भव्यमभविष्यत् । यद्यय दानमदास्यत्तत सर्वे प्रीतिरभविष्यदित्यादि ॥ ४ । ५ । ६ । ७ ॥ भविष्यकालिविभक्ति ३ । श्वस्तनी, भविष्यन्ती, आशी ॥ भविष्यास्त्रिविध ॥ आजनउ अद्यतनः १, कालनउ श्वस्तन २, तेहपरहउ तत्परतस्तनश्च ३ । अद्यतने

भविष्यन्ती। अद्य साय कार्यं भविष्यति। श्वस्तने श्वस्तनी। श्वोभविता। तत्परतस्तने तु करिसिइं, लेसिइ, देसिइ। तूं करिसिइ, लेसिइ, देसिइ। तुम्हे करिसिउ। हूं करिसु। अम्हे करिसिउं, इत्यर्थे श्वस्तनी, भविष्यन्ती वा। आश्विन्या पौर्णमास्या चन्द्रादमृत स्रोता, स्रोष्यति वा। अथवा सामान्यतो भविष्यत्काले भविष्यन्ती। अय ग्राम गमिष्यति ॥ ८ । ९ ॥ करिज्यउ, पढिज्यउ, मरिज्यउ, हुज्यउ इत्यर्थे, आशिषि आशीः, पुत्रोऽय सङ्घपतीभूय तीर्थयात्रा क्रियात्, पूर्वाणि पठ्यात्, शत्रुर्म्रियात्, भूयाज्जिनः श्रेयसे ॥ १० ॥

इति तपागच्छेशश्रीदेवसुन्दरसूरिशिष्यश्रीगुणरत्नसूरिविरचिते क्रियारत्नसमुच्चये विभक्तिप्रयोगविभागः ॥१॥



भ्वादिगणः ।

भू सत्तायाम्। भू इति निर्विभक्तिको निर्देश· सान्तरान्तशङ्कानिरासार्थः। एव सर्वत्र। वर्णसमाम्नायक्रमेण स्वरान्तव्यञ्जनान्तधातूपदेशप्रतिज्ञानेऽपि प्रथममस्य पाठो वृद्धसमयानुवर्त्तनार्थं मङ्गलार्थं च। एवमदाद्यादिगणेष्वप्याद्याना निर्देशे प्रयोजनमभ्यूह्यम्॥ आदौ वर्त्तमाना॥ शेषात्कर्तरि परस्मैपदे शवि गुणे च। भवति, भवत., भवन्ति, भवसि, भवथ., भवथ, भवामि, भवाव., भवाम·। "क्रियाव्यतिहारेऽगति-"।३।३।२३॥ इत्यात्मनेपदे व्यतिभवते। व्यतिभवेते। व्यतिभवन्ते॥ अत्र "स्वरस्य परे-"।७।४।११०॥ इति प्राच. परस्मिन्नपि विधौ कर्त्तव्ये "लुगस्य-"।२।१।११३॥ इत्यल्लुकः स्थानित्वात् "अनतोऽन्त-"।४।२।११४॥ इत्यन्न भवति। व्यतिभवसे, व्यतिभवेथे, व्यतिभवध्वे, व्यतिभवे, व्यतिभवावहे, व्यातिभवामहे। भावे औत्सर्गिकमेकवचनमेव। भूयते, व्यतिभूयते। कर्मणि तु सर्वाण्यपि। केवलस्य कर्माभावादनुपूर्वकोऽय दर्श्यते॥ अनुभूयते सुखम्, अनुभूयेते, अनुभू७यन्ते, यसे, येथे, यध्वे, ये, यावहे, यामहे। अत्राऽनुभू इति पद यन्ते इत्यादिषु सप्तसु स्थानेषु योज्यम्। कथम्। अनुभूयन्ते, अनुभूयसे,

अनुभूयेथे इत्यादि । एवमन्यत्रापि पूर्वखण्डं अङ्कतुल्यैरुत्तरखण्डैः सयोज्यम् ॥ सप्तमी ॥ भवेत्, भवेताम्, भवेयुः, भवेः, भवेतम्, भवेत, भवेयम्, भवेव, भवेम। व्यतिभवेत, व्यतिभवे८ याताम्, रन्, थाः, याथाम्, ध्वम्, य, वहि, महि। भावे, भूयेत, व्यतिभूयेत । कर्मणि, अनुभूयेत, अनुभूये ८ याताम्, रन्, थाः, याथाम्, ध्वम्, य, वहि, महि॥ पञ्चमी ॥ भवतु, भवतात्, भवताम्, भवन्तु, भव, भवतात्, भवतम्, भवत, भवानि, भवाव, भवाम । व्यतिभवताम्, व्यतिभवेताम्, व्यतिभ ७ वन्ताम्, वस्व, वेथाम्, वध्वम्, वै, वावहै, वामहै । भावे, भूयताम्, व्यतिभूयताम् । कर्मणि तु । अनुभूयताम्, अनुभूयेताम्, अनुभूयन्ताम्, अनुभू ६ यस्व, येथाम्, यध्वम्, यै, यावहै, यामहै ॥ ह्यस्तनी ॥ अभवत्, अभवताम्, अभवन्, अभवः, अभवतम्, अभवत, अभवम्, अभवाव, अभवाम । व्यत्यभवत, व्यत्यभवेताम्, व्यत्यभ ७ वन्त, वथाः, वेथाम्, वध्वम्, वे, वावहि, वामहि । भावे । अभूयत, व्यत्यभूयत ॥ कर्मणि तु ॥ अन्वभूयत, अन्वभू ८ येताम्, यन्त, यथाः, येथाम्, यध्वम्, ये, यावहि, यामहि ॥ ४ ॥ अद्यतनी॥ "पिबैति-" । ४ । ३ । ६६॥ इति सिचो लुपि न चेटि "भवतेः सिज्लुपि" ।४।३।१२॥ इति न गुणे च । अभूत्, अभूताम्, अभूवन्। अत्र "सिज्विदोऽभुवः" । ४ । ३ । ९२ ॥ इति अन पुसादेशाभावे उवि "भुवो वः-" । ४ । २ । ४३ ॥ इत्युपान्त्ये ऊत् । अभूः, अभूतम्, अभूत, अभूवम्, अभूव, अभूम। व्यत्यभविष्ट, व्यत्यभविषाताम्, व्यत्यभविषत, व्यत्यभविष्ठाः, व्यत्यभविषाथाम्, ध्वमि । "सो धि वा" । ४ । ३ । ७२ ॥ इति वा सिचोलुकि व्यत्यभविध्वम् । "हान्तस्थाञ्ञी-" । २ । १ । ८१ ॥ इति वा धस्य ढत्वे । व्यत्यभविढ्वम् । सिचोलोपाभावपक्षे "नाम्यन्तस्थ-"।२।३।१५॥ इति स षत्वे "तृतीयस्तृतीय" । १ । ३ । ४९ ॥ इति डत्वे "तवर्गस्य" । १ । ३ । ६०॥ इति धो ढत्वे च । व्यत्यभविड्ढ्वम् । अन्यत्रापि ध्वमोरूपत्रय यत्र स्यात्तत्रैवमेव साध्यम् । व्यत्यभविषि, व्यत्यभविष्वहि, व्यत्यभविष्महि ॥ भावे ञिचि ।अभावि। कर्मणि ञिचि। अन्वभावि । "स्वरग्रह-"।३।४।६९॥ इति वा ञिटि । अन्वभाविषाताम् । पक्षे इटि । अन्वभविषाताम्, अन्वभाविषत, अन्वभविषत, अन्वभाविष्ठाः, अन्वभविष्ठाः, अन्वभाविषाथाम्, अन्वभविषाथाम्, अन्वभाविध्वम्, अन्वभाविढ्वम्, अन्वभाविड्ढ्वम्,

अन्वभविध्वम्, अन्वभविढ्वं, अन्वभविड्ढ्वम्, अन्वभाविषि, अन्वभविषि, अन्वभाविष्वहि, अन्वभविष्वहि, अन्वभाविष्महि, अन्वभविष्महि ॥ परोक्षा ॥ बभूव, द्वित्वे वृद्धौ आवि "भुवो व-"।४।२।४३॥ इत्युपान्त्य ऊति "भूस्वपो-"।४।१।७०॥ इति पूर्वस्य अः सर्वत्र । बभूवतु', बभूवुः । "स्कसृवृ-"।४।४।८१॥ इति व्यञ्जने इटि बभूविथ, बभूवथुः, बभूव, णवो वा णित्वे आवि अवि च कृते उपान्त्य ऊति एकमेव रूपम्। बभूव, बभूविव, बभूविम । व्यतिबभूवे, व्यतिबभूवाते, व्यतिबभू८विरे, विषे, वाथे, विध्वे, विढ्वे, वे, विवहे, विमहे॥ भावे ॥ बभूवे ॥ कर्मणि ॥ अनुबभूवे । अनुबभू९वाते, विरे, विषे, वाथे, विध्वे, विड्ढ्वे, वे, विवहे, विमहे, केचित्तु कर्त्तर्येव भुवो द्वित्वे पूर्वस्याकारमिच्छन्ति, न भावकर्मणोः, तन्मते बुभूवे, अनुबुभूवे इत्याद्येव भवति॥ आशीः ॥ भूयात्, भूयास्ता, भूयासुः, भूया', भूयास्तं, भूयास्त, भूयासं, भूयास्व, भूयास्म । व्यतिभविषीष्ट, व्यतिभवि९षीयास्ता, षीरन्, षीष्ठाः, षीयास्था, षीध्वम्, षीड्ढ्वम्, षीय, षीवहि, षीमहि ॥ भावे वा ञिटि भाविषीष्ट, भविषीष्ट, कर्मणि ञिटि अनुभावि१० षीष्ट, षीयास्ताम्, षीरन्, षीष्ठाः, षीयास्थाम्, षीध्वम्, षीढ्वम्, षीय, षीवहि, षीमहि ॥ इटि तु अनुभवि१० षीष्ट, षीयास्ताम्, षीरन्, षीष्ठा', षीयास्थाम्, षीध्वम्, षीढ्वम्, षीय, षीवहि, षीमहि॥ श्वस्तनी ॥ भविता, भवितारौ, भवितारः, भवितासि, भवितास्थ', भवितास्थ, भवितास्मि, भवितास्व', भवितास्मः । व्यतिभविता, व्यतिभवि८तारौ, तारः, तासे, तासाथे, ताध्वे, ताहे, तास्वहे, तास्महे । ॥ भावे ॥ भविता, भाविता । कर्मणि इटि अनुभवि९ता, तारौ, तार', तासे, तासाथे, ताध्वे, ताहे, तास्वहे, तास्महे । ञिटि अनुभावि९ता, तारौ, तार', तासे, तासाथे, ताध्वे, ताहे, तास्वहे, तास्महे ॥ भविष्यन्ती ॥ भविष्यति, भविष्यतः, भविष्यन्ति, भविष्यसि, भविष्यथ , भविष्यथ, भविष्यामि, भविष्याव', भविष्याम' । व्यतिभविष्यते, व्यतिभवि८ष्येते, ष्यन्ते, ष्यसे, ष्येथे, ष्यध्वे, ष्ये, ष्यावहे, ष्यामहे ॥ भावे ॥ भविष्यते, भाविष्यते । कर्मणि इटि अनुभविष्यते, अनुभवि८ष्येते, ष्यन्ते, ष्यसे, ष्येथे, ष्यध्वे, ष्ये, ष्यावहे, ष्यामहे । ञिटि तु अनुभावि९ष्यते, ष्येते, ष्यन्ते, ष्यसे, ष्येथे, ष्यध्वे, ष्ये, ष्यावहे, ष्यामहे ॥

क्रियातिपत्ति ॥ अभविष्यत्, अभविष्यताम्, अभविष्यन्, अभविष्य., अभविष्यतम्, अभविष्यत, अभविष्यम्, अभविष्याव, अभविष्याम । व्यत्य भविष्यत, व्यत्यभवि८ष्येताम्, ष्यन्त, ष्यथा', ष्येथाम्, ष्यध्वम्, ष्ये, ष्यावहि, ष्यामहि ॥ भावे ॥ अभविष्यत, अभाविष्यत ॥ कर्मणि ॥ अन्वभविष्यत, अन्वभविष्येताम्, अन्वभवि७ष्यन्त, ष्यथा', ष्येथाम्, ष्यध्व, ष्ये, ष्यावहि, ष्यामहि । अन्वभावि९ष्यत, ष्येताम्, ष्यन्त, ष्यथा', ष्येथाम्, ष्यध्वम्, ष्ये, ष्यावहि, ष्यामहि ॥१०॥ एव प्राद्युपसर्गपूर्वकोऽपि भू सर्वविभक्तिषूदाहार्य्य' ॥ तत्र, प्रभवतीति स्वाम्यर्थ प्रथमत उपलम्भश्च । पराभवति, परिभवति, अभिभवतीति तिरस्कार । पर्याभवतीति स्वयभङ्ग । सम्भवतीति जन्यार्थ' प्रमाणानतिरेकेण धारण च । अनुभवतीति सवेदनम् । विभवतीति व्याप्ति' । आभवतीति भागागतिः । उद्भवतीत्युद्भेदः । प्रतिभवतीति लग्नकत्वमिति । एव-मुपसर्गवशाद् यथास्वमन्यस्यापि धातोरनेकोऽर्थ प्रकाशते इति ज्ञानीयम् ॥ अत्र कर्त्तरि शवूप्रत्ययान्तो भावकर्मणो क्यप्रत्ययान्तश्च भूधातुर्यथा वर्त्तमाना-दिविभक्तिचतुष्टये न्यदर्शी, तथैवान्येऽपि शवन्ताः क्यप्रत्ययान्ताश्च सर्वे धातव उदाहरणीया, अतएवाग्रे तेषा शवूक्यान्ताना रूपमात्रमेव दर्शयिष्यते नतु विभ-क्तिचतुष्टयवचनविस्तर', तथा सर्वस्मात्सकर्मकाद्धातोः "एकधातौ-"॥३।४।८६॥ इति सूत्रेण ञिक्यात्मनेपदविधानात् वर्त्तमानादिदशविभक्तिषु कर्मण्युक्तानि सर्वाणि वचनानि कर्मकर्त्तर्य्यपि भवन्ति यथाऽत्रैव । अभिभवति शत्रुश्चैत्र । पुन. शत्रो. सुजेयत्वेन कर्तृत्वे अभिभूयते, अभिभूयेत, अभिभूयताम्, अभ्यभूयत; "स्वर-दुहो वा"॥३।४।९०॥ इति वा ञिचि अभ्यभावि, पक्षे इटि अभ्यभविष्ट, अभिबभूवे। इटि अभिभाविता । ञिटि अभिभाविता, अभिभाविषीष्ट, अभिभाविषीष्ट । अभि भविष्यते, अभिभाविष्यते, वा शत्रु स्वयमेव । क्रियातिपत्तिरल्पविषयत्वान्नादर्शि ॥ एव विभक्तीना कर्मगतानि द्वित्वबहुत्वविषयाण्यपि वचनानि कर्मकर्त्तरि दर्शनी-यानि; एव सकर्मस्वन्यधातुष्वपि, विशेषस्तु स्वस्वस्थाने वक्ष्यते ॥ अथ प्रत्यया ॥ भवन् । व्यतिभवमान । "श्यशव "॥२।१।११६॥ इति अन्ति, भवन्ती, भवत; । भाविष्यन् । भविष्यन्ती । भविष्यती । अत्र "अवर्णादश्न "।२।१।११५। इति वा अन्त् ।

एव नवस्वप्यादिषु सर्वधातुषु स्त्रिया स्ये प्रत्यये सति शतुर्वाऽन्त् वाच्य । भाविष्यत्॥ अनुभूयमानम्। "न ख्याग्"।२।३।९०॥ इति णत्वाभावे प्रभूयमानम्। एव परिपरा-पूर्वोऽपि । इटि अनुभविष्यमाणम्। ञिटि अनुभाविष्यमाणम् । अनुबभूवानम् । बभूवान्, बभूवांसौ । शसि बभूवुष. । टाया बभूवुषा । भ्यामि "स्रसुध्वस्-"।२।१।६८। इति दत्वे बभूवद्भ्याम्। सुपि बभूवत्सु। स्त्रियां तु बभूवुषी। नपुसके बभूवत, बभू-वुषी, बभूवांसि ॥ भूत'; भूतवान् । अत्र किति "उवर्णात्"।४।४।५८। इति नेट्॥ भावे तु अनुभूतमनेन। एवमन्यत्रापि भावे क्त' परिभाव्य ॥ भूतिः, भूत्वा; अनु-भूय । "स्वाङ्गतश्च्व्यर्थनानाविनाधार्थेन भुवश्च" ॥५।४।८६॥ इति भुव' कृगश्च क्त्वाणमौ ॥ पार्श्वतोभूय, पार्श्वतोभूत्वा, पार्श्वतोभावमास्ते । "तृतीयोक्त वा" ॥३।१।५०॥ इति तत्पुरुषविकल्पनात् पक्षे क्त्वो यप्नभवति । एव पार्श्वतः कृत्य, पार्श्वत' कृत्वा, पार्श्वतःकार शेते । अनाना नानाभूत्वा नानाभूय, नानाभूत्वा, नानाभावम्। विनाभूय, विनाभूत्वा, विनाभावम् । द्विधाभूय, द्विधाभूत्वा, द्विधाभावमास्ते। "तूष्णीमा"।५।४।८७॥ तूष्णींभूय, तूष्णींभूत्वा, तूष्णींभावमास्ते । तूष्णींशब्दो मौने तद्वति च वर्त्तते ॥ "आनुलोम्येऽन्वचा"॥ ५। ४। ८८ ॥ अन्व-ग्भूय, अन्वग्भूत्वा, अन्वग्भावमास्ते । भविता, भवितुः; भवितव्य, भव-नीय । भावे ये भव्यमनेन । आवश्यके घ्यणि भाव्यम् । अवश्यभाव्यमनेन "कृत्येऽवश्यम-"।३।२।१३८॥ इति मो लुक्। "भुवो वा" (उणादि-९२२) इति णिनि भावी । णित्वाभावे भवी वर्त्स्यति साधू ॥ "कृभ्वस्तिभ्या कर्मकर्तृभ्या प्रागतत्तत्त्वे च्विः"॥७।२।१२६॥ इति कृगा योगे कर्मतश्च्वि. । भ्वस्तिना च कर्तृत' । अशुक्ल शुक्ल करोति शुक्लीकरोति पटम् । शुक्लीक्रियते पटः । शुक्ल्यकार्षीत् । शुक्लीचकार । शुक्लीचक्रे । शुक्लीकरिष्यति । शुक्लीकृत्येत्यादि । अशुक्लः शुक्लः सम्पद्यते शुक्लीभवति । शुक्लीभूयते । शुक्ल्यभवत् । शुक्ल्य-भूत् । शुक्लीबभूव । शुक्लीभविता । शुक्लीभविष्यति । क्त्वि शुक्लीभूयेत्यादि । एव शुक्लीस्यात्; शुक्ल्यभूदित्यादि । एवं कारकीकरोति चैत्रम्, कारकीभवति, कारकीस्याच्चैत्र. । सङ्घीकरोति गाः, सङ्घीभवन्ति, सङ्घीस्युर्गावः । घटीकरोति मृद, घटीभवति, घटीस्यान्मृत् । "नोऽपदस्य"।७।४।६१॥ इति नलुकि, भसी-

करोति, भस्मीभवति, भस्मीस्यात्। मालीकरोति, मालीभवति, मालीस्यात्। एषु "ईश्च्वाववर्ण-"।४।३।१११॥ इति ईः, अव्ययस्य तु न ई । दिवाभूता रात्रिः । दोषाभूतमहः । शुचीकरोति, शुचीभवति, शुचीस्यात्। पटूकरोति, पटूभवति, पटूस्यात् । बहूकरोति, बहूभवति, बहूस्यात् । एषु "दीर्घश्च्वि-" ॥ ४ । ३ । १०८ ॥ इति दीर्घ । पित्रीकरोति, पित्रीभवति, पित्रीस्यात् । मात्रीकरोति, मात्रीभवति, मात्रीस्यात् । एषु "ऋतो री." ॥ ४ । ३ । १०९ ॥ इति रीः । कर्मकर्तृभ्यामन्यत्र तु न च्विः । प्रागगृहे इदानीं गृहे करोति भवति वा । कथ समीपीभवति दूरीभवति अभ्याशीभवति, अत्राप्युपचाराचत्तद्ये द्रव्ये वर्त्तमानात्समीपादीनां कर्तृत्वम्। अनरु. अरु.करोति अरूकरोति, अरूभवति, अरूस्यात्। मनीकरोति, मनीभवति, मनीस्यात्। एवमुन्मन. सुमनः शब्दावपि। मा उन्मनीभू'। चक्षूकरोति, चक्षूभवति, चक्षूस्यात्। चेतीकरोति, चेतीभवति, चेतीस्यात् । विचेतीकरोति, विचेतीभवति, विचेतीस्यात् । रहीकरोति, रहीभवति, रहीस्यात् । रजीकरोति, रजीभवति, रजीस्यात् । विरजीकरोति, विरजीभवति, विरजीस्यात् । एषु, "अरुर्मनश्चक्षुश्चेतोरहोरजसा लुक् च्वौ"॥७।२।१२७॥ इति सोलुक्। 'इसुसोर्बहुलम्"॥७।२।१२८॥ इति सोलुकि, सर्पीकरोति नव नीतम्, सर्पिर्भवति, धनूभवति वश , धनुर्भवति। बहुलग्रहण प्रयोगानुसरणार्थम्॥ बहुल व्यञ्जनान्तस्य ई'। दृषदीभवति शिला, दृषद्भवति। समिधीभवति काष्ठम्, समिद्भवति। अत्र भूप्रसङ्गेन कृग् अस्तिश्च लाघवार्थमत्रक्षाताम्॥ "भूङ प्राप्तौ" ।३।४।१९॥ इति वा णिङि भावयते प्राप्नोतीत्यर्थ' । पक्षे भवते, एव भावयेते, भवेते, भावयन्ते, भवन्ते। भावयसे, भवसे०॥ भावे॥ भाव्यते, भूयते॥ कर्मणि॥ भाव्यते, भूयते । भाव्येते, भूयेते । भाव्यन्ते, भूयन्ते । इत्यादिना सर्वविभक्तिषु द्वे द्वे रूपे वाच्ये। नवर णिङन्तो वक्ष्यमाणणिगन्तभूवत् आत्मनेपदे वाच्य । केवलस्तु व्यतिपूर्वकभूवत् । भूङ् इति ङ्निर्देशो णिङभावेऽप्यात्मनेपदार्थ. । प्राप्त्यभावेऽपि क्वचिदात्मनेपदमिष्यते ॥ यथा ॥ याचितारश्च न सन्तु दातारश्च भवामहे । आक्रोष्टारश्च न सन्तु क्षन्तारश्च भवामहे इति ॥ प्राप्तावपि परस्मैपदमित्यन्ये । सर्वं भवति, प्राप्नोतीत्यर्थ ॥ अथ सन् ॥ वर्त्तमाना ॥ भवितु-

मिच्छति बुभूषति। अत्र "ग्रहगुहश्च-"।४।४।५९॥ इति उवर्णान्तान्नेट् । "नामिनोऽनिट्"४।३।३३इति सन् कित्, तेन न गुणः। बुभूषतः, बुभूषन्ति, बुभूषसि, बुभूषथः, बुभूषथ, बुभूषामि, बुभूषावः, बुभूषाम.। व्यतिबुभूषते,व्यतिबुभूषेते, व्यतिबुभूषन्ते, व्यतिबुभूष६षसे, षेथे, षध्वे, षे, षावहे, षामहे ॥ भावे बुभूष्यते । कर्मणि तु अनुबुभूष्यते, अनुबुभूष्येते, अनुबुभूष्यन्ते, अनुबुभू६ष्यसे, ष्येथे, ष्यध्वे, ष्ये, ष्यावहे, ष्यामहे ॥ सप्तमी ॥ बुभूषेत्, बुभू८षेताम, षेयुः, षेः, षेतम्, षेत, षेयम्, षेव, षेम ॥ व्यतिबुभूषेत, व्यतिबुभू८षेयाताम्, षेरन्, षेथाः, षेयाथाम्, षेध्वम्, षेय, षेवहि, षेमहि ॥ भावे बुभूष्येत ॥ कर्मणि तु अनुबुभूष्येत, अनुबुभू८ष्येयाताम्, ष्येरन्, ष्येथाः, ष्येयाथाम्, ष्येध्वम्, ष्येय, ष्येवहि, ष्येमहि ॥ पञ्चमी ॥ बुभूषतु, बुभूषतात्, बुभूषताम्, बुभू८षन्तु, ष, षतात, षतम्, षत, षाणि, षाव, षाम। व्यतिबुभूषताम्, व्यतिबुभू८षेताम्, षन्ताम्, षस्व, षेथाम्, षध्वम्, षै, षावहै, षामहै ॥ भावे बुभूष्यताम् । कर्मणि अनुबुभूष्यताम्, अनुबुभू ८ ष्येताम्, ष्यन्ताम्, ष्यस्व, ष्येथाम्, ष्यध्वम्, ष्यै, ष्यावहै, ष्यामहै॥ ह्यस्तनी ॥ अबुभूषत्, अबुभू ८ षताम्, षन्, षः, षतम्, षत, षम्, षाव, षाम । व्यत्यबुभूषत, व्यत्यबुभू८षेताम्, षन्त, षथाः, षेथाम्, षध्वम्, षे, षावहि, षामहि॥ भावे अबुभूष्यत ॥ कर्मणि अन्वबुभूष्यत, अन्वबुभू८ष्येताम्, ष्यन्त, ष्यथाः, ष्येथाम्, ष्यध्वम्, ष्ये, ष्यावहि, ष्यामहि ॥ अद्यतनी ॥ अबुभूषीत्, इटि ईति सिचो-लुक् । अबुभू८षिष्टाम्, षिषुः, षीः, षिष्टम्, षिष्ट, षिषम्, षिष्व, षिष्म। व्यत्यबुभूषिष्ट, व्यत्यबुभूषि४षाताम्, षत, ष्ठाः, षाथाम्, "सो धि वा" ॥ ४ । ३ ।७२॥ इति वा सिच्लुकि, व्यत्यबुभूषिध्वम्, पक्षे सिचो "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति षत्वे डत्वे "तवर्ग-"॥ १ । ३ । ६० ॥ इति धो ढे व्यत्यबुभूषिड्ढ्वम्, व्यत्यबुभूषि३षि, ष्वहि, ष्महि । सर्वत्र इटि, "अतः"॥ ४ । ३ । ८२ ॥ इति सनोऽल्लुक् ॥ भावे अबुभूषि ॥ कर्मणि अन्वबुभूषि, इटि ञिटि वा सदृशरूपत्वे, अन्वबुभूषि९ षाताम्, षत, ष्ठाः, षाथाम्, ध्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि॥ परोक्षा॥ बुभूषाचकार, बुभूषा ९ चक्रतुः, चक्रुः, चकर्थ, चक्रथुः, चक्र, चकर, चकार, चकृव, चकृम। व्यतिबुभूषाचक्रे, व्यतिबुभूषाचक्राते, चक्रिरे, चकृषे, चक्राथे, चकृढ्वे, "नाम्यन्त-"

॥२।१।८०॥ इति ढ । चक्रे, चकृवहे, चकृमहे॥ बुभूषाबभूव, बुभूषाबभू८वतु, वु:, विथ, वथु:, व, व, विव, विम । व्यतिबुभूषाबभूव, व्यतिबुभूषाबभू८वतुः, वु, विथ, वथु:, व, व, विव, विम ॥ बुभूषामास, बुभूषामा८सतु:, सु, सिथ, सथु:, स, स, सिव, सिम। "धातोरनेकस्वर-"॥३।४।४६॥ इत्यत्राऽस्तेर्विधानबलादेवास्तेर्भूर्न भवति । एवमन्यत्रापि । व्यतिबुभूषामास, व्यतिबुभूषामासतु, व्यतिबुभूषामा-७सु:, सिथ, सथु:, स, स, सिव, सिम । अत्र व्यतिबुभूषाबभूवेत्यादौ, व्यति-बुभूषामासेत्यादौ च, सन्नन्तधातोरात्मनेपदेऽपि भ्वस्तिधात्वोर्यत् परस्मैपदमभ्य-धायि तदा "आम कृगः" ॥ ३ । ३ । ७५ ॥ इत्यत्र कर्त्तरि कृग एव धातुसदृश पदं, भ्वस्त्योस्तु परस्मैपदमेवेति भणनात् ॥ भावे बुभूषाचक्रे । बुभूषाबभूवे । बुभूषामाहे । परोक्षाया एकारे हकार नेच्छन्त्येके । बुभूषामासे । एवमग्रेऽपि परमत सर्वत्र । कर्मणि अनुबुभूषाचक्रे, अनुबुभूषाच८क्राते, क्रिरे, कृषे, क्राथे, कृढ्वे, क्रे, कृवहे, कृमहे। अनुबुभूषाबभूवे, अनुबुभूषाबभू९वाते, विरे, विषे, वाथे, विढ्वे, विध्वे, वे, विवहे, विमहे । अनुबुभूषामाहे । अनुबुभूषामा८साते, सिरे, सिषे, साथे, सिध्वे, हे, सिवहे, सिमहे ॥ आशी ॥ बुभूष्यात्, बुभू८ ष्यास्ताम्, ष्यासु:, ष्या:, ष्यास्तम, ष्यास्त, ष्यासम्, ष्यास्व, ष्यास्म। व्यतिबुभूषि-षीष्ट । व्यतिबुभूषि८षीयास्ताम्, षीरन्, षीष्ठा, षीयास्थाम्, षीध्वम्, षीय,-षीवहि, षीमहि॥ भावे बुभूषिषीष्ट॥ कर्मणि अनुबुभूषिषीष्ट, अनुबुभूषि८षीयास्ता, इत्यादि कर्तृवत् ॥ श्वस्तनी ॥ बुभूषिता, बुभूषि८तारौ, तार, तासि, तास्थ, तास्थ, तास्मि, तास्व, तास्म । व्यतिबुभूषिता, व्यतिबुभूषि८तारौ, तार, तासे, तासाथे, ताध्वे, ताहे, तास्वहे, तास्महे॥ भावे बुभूषिता ॥ कर्मणि अनुबुभूषिता, अनुबुभूषि८तारौ, तार, तासे, तासाथे, ताध्वे, ताहे, तास्वहे, तास्महे ॥ भविष्यन्ती॥ बुभूषिष्यति, बुभूषि ८ ष्यत, ष्यन्ति, ष्यसि, ष्यथ, ष्यथ, ष्यामि, ष्याव:, ष्याम ॥ व्यतिबुभूषिष्यते, व्यतिबुभूषि ८ ष्येते, ष्यन्ते, ष्यसे, ष्येथे, ष्यध्वे, ष्ये, ष्यावहे, ष्यामहे ॥ भावे बुभूषिष्यते ॥ कर्मणि अनुबुभूषिष्यते, अनुबुभूषि८ ष्येते, ष्यन्ते, ष्यसे, ष्येथे, ष्यध्वे, ष्ये, ष्यावहे, ष्यामहे ॥ क्रियातिपत्तिः ॥ अनुभूषिष्यत्, अनुभूषि८ष्यताम्, ष्यन्, ष्य, ष्यतम्, ष्यत, ष्यम्, ष्याव, ष्याम,

व्यत्यबुभूषिष्यत, व्यत्यबुभूषि८ष्येता, ष्यन्त, ष्यथाः, ष्येथाम्, ष्यध्वम्, ष्ये, ष्यावहि, ष्यामहि ॥ भावे अबुभूषिष्यत ॥ कर्मणि अन्वबुभूषिष्यत, अन्वबुभूषि८ष्येताम्, ष्यन्त, ष्यथा, ष्येथाम्, ष्यध्वम्, ष्ये, ष्यावहि, ष्यामहि ॥ कर्मकर्त्तरि सर्वस्मात्सन्नन्ताद्धातोः "एकधातौ कर्म-"॥३।४।८६॥ इति ञिक्यात्मनेपदेषु प्राप्तेषु "भूषार्थसन्-"॥३।४।९३॥ इति ञिक्यनिषेधात् केवलमात्मनेपदमेव भवति। अनुबुभूषति विषयसुख चैत्र'। स एव विवक्षिते, नाहमनुबुभूषामि। किंतु अनुबुभूषते, अनुबुभूषेत, अनुबुभूषताम्, अन्वबुभूषत, अन्वबुभूषिष्ट, अनुबुभूषाचक्रे, अनुबुभूषाबभूवे, अनुबुभूषामाहे, अनुबुभूषिषीष्ट, अनुबुभूषिता, अनुबुभूषिष्यते, वा विषयसुख स्वयमेव। एवमात्मनेपदीयानि द्विवचनादीन्यपि कर्मकर्त्तर्युदाहार्याणि ॥ बुभूषन्। बुभूषिष्यन्। व्यतिबुभूषमाण, व्यतिबुभूषिष्यमाणः। अनुबुभूष्यमाणम्, अनुबुभूषिष्यमाणम्। बुभूषा३चक्रुवान्, बभूवान्, आसिवान् वा। व्यतिबुभूषा३चक्राणः, बभूवान्, आसिवान् वा। भावकर्मणोः। अनुबुभूषां३चक्राणम्, बभूवानम्, आसान वा। बुभूषि२तः, वान्। बुभूषित्वा। अनुबुभूष्य। अनुबुभूषि२ता, तुम्। सेटामनिटा वा स्वरान्ताना व्यञ्जनान्ताना च सर्वेषा धातूना सनि यानि रूपाणि भवेयुस्तानि सर्वविभक्त्यादिषु सन्नन्तभूवज्ज्ञातव्यानि। अतएवाग्रे सनि धातूना रूपमात्र प्रकटयिष्यते न पुनर्विभक्तिविस्तरः। पर स्वरादिसन्नन्तधातूना ह्यस्तन्यद्यतनीक्रियातिपत्तिषु वृद्धिरादौ वाच्या ॥ यथा, ईक्षि, ऐचिक्षिषत। ऐचिक्षिषिष्ट। ऐचिक्षिषिष्यत। एवमन्यत्रापि ॥ अथ यङ्। "व्यञ्जनादेरेकस्वर-"॥३।४।९॥ इति वा याङि बोभूयते, पक्षे भृश पुनः २ वा भवतीति वाक्यम्। भव भवेत्येवाय भवतीत्यादिक वा स्यात्। एवमग्रतोऽपि सर्वत्र ज्ञेयम्। बोभूयेते, बोभूयन्ते, बोभूयसे, बोभू५येथे, यध्वे, ये, यावहे, यामहे ॥ भाक ॥ अत्र ग्रन्थे भावकर्मणोर्भाकेति सज्ञा ॥ अनुबोभूय्यते "अतः"॥४।३।८२॥ इति यङोऽलुक्। अनुबोभूय्येते, अनुबोभूय्यन्ते, य्यसे, य्येथे, य्यध्वे, य्ये, य्यावहे, य्यामहे ॥ सप्तमी ॥ बोभूयेत, बोभू८येयाताम्। येरन्, येथा, येयाथाम्, येध्वम्, येय, येवहि, येमहि ॥ भाक ॥ अनुबोभूय्येत। अनुबोभू८य्येयाताम्; य्येरन्, य्येथा, य्येयाथाम्, य्येध्वम्, य्येय, य्येवहि, य्येमहि ॥ पञ्चमी ॥ बोभूयताम्, बोभू८येताम्, यन्ताम्

यस्व, येथाम्, यध्वम्, यै, यावहै, यामहै ॥ भाक ॥ अनुबोभूय्यताम्, अनु-
बोभू८य्येताम्, य्यन्ताम्, य्यस्व, य्येथाम्, य्यध्वम्, य्यै, य्यावहै, य्यामहै ॥
ह्यस्तनी ॥ अबोभूयत, अबोभू८येताम्, यन्त यथा', येथाम्, यध्वम्, ये,
यावहि, यामहि ॥ भाक ॥ अन्वबोभूय्यत, अन्वबोभू८य्येताम्, य्यन्त, य्यथा,
य्येथाम्, य्यध्वम्, य्ये, य्यावहि, य्यामहि ॥ अद्यतनी ॥ सिचि इटि च परे
यडोऽल्लोपः सर्वत्र ॥ अबोभूयिष्ट, अबोभूयिषाताम्, अबोभूयिषत, अबोभूयि८
ष्ठा', षाथाम्, ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि ॥ भाक ॥ जिचि अन्व-
बोभूयि, अन्वबोभूयिषाताम्, अन्वबोभूयि९षत, ष्ठाः, षाथाम्, ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्,
षि, ष्वहि, ष्महि ॥ परोक्षा ॥ बोभूयाचक्रे, बोभूयांच८क्राते, क्रिरे, कृषे, क्राथे, कृढ्वे,
क्रे, कृवहे, कृमहे ॥ बोभूयाबभूव, बोभूयाबभू८वतु', वु, विथ, वथु. व, व, विव,
विम । बोभूयामास, बोभूयामा८सतु., सु', सिथ, सथुः, स, स, सिव, सिम ।
बोभूयाचक्रे इत्यादौ "आमः कृग "॥३।३।७५॥ इति नियमादाम' परात् कृग एव
कर्त्तर्यात्मनेपद न त्वस्तिभ्याम् ॥ भावे बोभूयांचक्रे, बोभूयाबभूवे, बोभूयामाहे ।
कर्मणि अनुबोभूयाचक्रे, अनुबोभूयाच८क्राते, क्रिरे, कृषे, क्राथे, कृढ्वे, क्रे,
कृवहे, कृमहे ॥ अनुबोभूयाबभूवे, अनुबोभूयाबभू९वाते, विरे, विषे, वाथे, विढ्वे,
विध्वे, वे, विवहे, विमहे ॥ अनुबोभूयामाहे, अनुबोभूयामा८साते, सिरे, सिषे,
साथे, सिध्वे, हे, सिवहे, सिमहे ॥ आशी ॥ बोभूयिषीष्ट, बोभूयि९षीयास्ताम्,
षीरन्, षीष्ठा., षीयास्थाम्, षीढ्वम्, षीध्वम्, षीय, षीवहि, षीमहि ॥ भाक ॥
अनुबोभूयिषीष्ट, अनुबोभूयिषीयास्तामित्यादि ॥ एतत्कर्तृवत् ॥ श्वस्तनी ॥
बोभूयिता, बोभूयि८तारौ, तार, तासे, तासाथे, ताध्वे, ताहे, तास्वहे, तास्महे ॥
भाक ॥ अनुबोभूयिता, अनुबोभूयि८तारौ, तार, तासे, तासाथे, ताध्वे, ताहे,
तास्वहे, तास्महे ॥ भविष्यन्ती ॥ बोभूयिष्यते, बोभूयि८ष्येते, ष्यन्ते, ष्यसे, ष्येथे,
ष्यध्वे, ष्ये, ष्यावहे, ष्यामहे ॥ भाक ॥ अनुबोभूयि९ष्यते, ष्येते, इत्यादि कर्तृ-
वत् ॥ क्रियातिपत्ति ॥ अबोभूयिष्यत, अबोभूयि८ष्येताम्, ष्यन्त, ष्यथाः,
ष्येथाम्, ष्यध्वम्, ष्ये, ष्यावहि, ष्यामहि ॥ भाक ॥ अन्वबोभूयिष्यत, अन्व-
बोभूयि८ष्येताम्, ष्यन्त, ष्यथा, ष्येथाम्, ष्यध्वम्, ष्ये, ष्यावहि, ष्यामहि ॥

अत्राशीःप्रभृतिषु ४ विभक्तिषु कर्त्तरि कर्मणि च रूपाणि सदृशान्येव भवन्ति॥ कर्मकर्त्तरि "एकधातौ-"॥३।४।८६॥ इत्यनेन स्वयमेव सुखमनुबोभूय्यते इत्यादिना दशविभक्तीना कर्मवचनानि सर्वाणि वाच्यानि । बोभूयमानः; बोभूयिष्यमाणः ॥ भाक ॥ अनुबोभूय्यमानम्; अनुबोभूयिष्यमाणम् । बोभूयांश्चक्राणः, बभूवान्, आसिवान् वा ॥ भाक ॥ अनुबोभूयाश्चक्राणम्, बभूवानम्, आसानम्, वा। बोभूयिश्तः, वान्। बोभूयित्वा, अनुबोभूय्य। बोभूयिश्ता, तुम्।एवं सर्वेषा स्वरान्ताना धातूनां यङि स्वानि २ यानि रूपाणि जायन्ते तानि यङन्तभूवन्निर्विशेषमभ्यूह्यानि॥ अथ यङ्लुप् ॥ बोभवीति, बोभोति, बोभूतः, बोभुवति, बोभवीषि, बोभोषि, बोभूथः, बोभूथ, बोभवीमि, बोभोमि, बोभूवः, बोभूमः ॥ भाक ॥ क्ये; अनुबोभूयते, अनुबोभूयेते, अनुबोभूयन्ते, अनुबोभूय्यसे, येथे, यध्वे, ये, यावहे, यामहे ॥ सप्तमी ॥ बोभूयात्, बोभूयाताम्, बोभूयुः, बोभूय्याः, यातम्, यात, याम्, याव, याम ॥ भाक ॥ अनुबोभूयेत, अनुबोभूय्येयाताम्, येरन्, येथाः, येयाथाम्, येध्वम्, येय, येवहि, येमहि ॥ पञ्चमी ॥ बोभवीतु, बोभोतु, बोभूतात् । ङित्त्वेन वित्त्वस्य बाधनान्नात्र गुणः । बोभूताम्, बोभुवतु, बोभूहि, बोभूतात्, बोभूतम्, बोभूत, बोभवानि, बोभवाव, बोभवाम ॥ भाक ॥ अनुबोभूयताम्, अनुबोभूय्येताम्, यन्ताम्, यस्व, येथाम्, यध्वम्, यै, यावहै, यामहै ॥ ह्यस्तनी ॥ अबोभवीत्, अबोभोत्, अबोभूताम्, अबोभवुः । अत्र "द्व्युक्तजक्ष-"॥४।२।९३॥ इति अनः पुस् "पुस्पौ"॥४।३।३॥ इति गुणः। अबोभवीः, अबोभोः, अबोभूतम्, अबोभूत, अबोभवम्, अबोभूव, अबोभूम ॥ भाक ॥ अन्वबोभूयत, अन्वबोभूय्येताम्, यन्त, यथाः, येथाम्, यध्वम्, ये, यावहि, यामहि ॥ अद्यतनी ॥ प्रकृतिग्रहणे यङ्लुबन्तस्यापि ग्रहणमिति न्यायात् "पिबैति-" ॥४।३।६६॥ इति सिचोलुप्, नचेट्, सिचोलुब्विधानाच्च न वृद्धिः, किन्तु "भवतेः सिज्लुपि"॥४।३।१२॥ इत्यत्र तिव्निर्देशाद् यङ्लुपि गुण.। अबोभोत, अबोभोताम्, अबोभूवन्। अत्र "सिज्विदोऽभुवः"॥४।२।९२॥ इति निषेधान्न पुस्। गुणेऽवादेशे च "भुवो व-"॥४।२।४३॥ इति ऊत्। अबोभोः, अबोभोतम्, अबोभोत, अबोभूवम्, अबोभोव, अबोभोम ॥ भाक ॥ ञिचि अन्वबोभावि ।

ञिटि, अन्वबोभानिपाताम्, अन्वबोभाविष्पत, ष्ठाः, पाथाम्, ध्वम्, ढ्वम्, ङ्द्वमे, पि, प्वहि, प्महि । इटि तु अन्वबोभविपाताम्, अन्वबोभविष्पत, ष्ठा, पाथाम्, ध्वम्, ढ्वम, इढ्वम्, पि, प्वहि, प्महि ॥ परोक्षा॥ "वेचेः कित्"॥३।४।५१॥ इत्यत्र आमः परोक्षावद्भावनिषेधाद् "भुवो व· प-"॥४।२।४३॥ इति न उ । बोभवाञ्चकार, बोभवाञ्च ९क्रतु', क्रु., कर्थ, क्रथु, क्र, कर, कार, कृव, कृम । बोभवानभूव, बोभवानभू ८ वतु., वु', विथ, वथु, व, व, विव, विम । बोभवामास, बोभवामा८सतु., सु, सिथ, सथु', स, स, सिव, सिम ॥ भावे बोभवाचक्रे, बोभवांनभूवे, बोभवामाहे ॥ कर्मणि अनुबोभवाचक्रे, अनुबोभवां८चकाते, चक्रिरे इत्यादि ॥ अनुबोभवां ९ बभूवे, बभूवाते इत्यादि ॥ अनुबोभवा९माहे, मासाते इत्यादि ॥ आशीःप्रभृतिषु ४ विभक्तिषु कर्त्तरि परस्मैपदे भावकर्मणोश्चात्मनेपदे भूधातोः केवलस्य यानि रूपाणि तान्येवात्रापि, तथापि तद्दिग्मात्रमुच्यते ॥ आशी ॥ बोभूयात्, बोभूयास्तां० ॥ भाक ॥ ञिटि अनुबोभाविषीष्ट । इटि अनुबोभविषीष्ट० ॥ श्वस्तनी ॥ बोभविता, बोभवितारौ० ॥ भाक ॥ ञिटि अनुबोभावि९ता, तारौ, तार ० ॥ इटि अनुबोभवि९ता, तारौ, तार.० ॥ भविष्यन्ती ॥ बोभविष्यति, बोभवि८ष्यतः० ॥ भाक ॥ अनुबोभावि९ष्यते, ष्येते० ॥ अन्वबोभवि९ष्यते, ष्येते, ष्यन्ते० ॥ क्रियातिपत्ति' ॥ अबोभवि९ष्यत्, ष्यताम्० ॥ भाक ॥ अन्वबोभावि९ष्यत, ष्येताम् ० ॥ अन्वबोभवि९ष्यत, ष्येताम्, ष्यन्त, ष्यथा'०॥ अत्रापि कर्मकर्त्तरि सुखं स्वयमेवानुबोभूयते इत्यादिना सर्वविभक्तीनां सर्वकर्मवचनानि दर्शनीयानि । बोभुवत्, अत्र द्व्युक्तात्परस्यान्तो नस्य लुक् । स्यप्रत्ययेन व्यवहितस्य तु न । बोभविष्यन् । अनुबोभूयमानम्, अनुबोभविष्यमाणम्, अनुबोभाविष्यमाणम् । बोभवा३चकृवान्, बभूवान्, आसिवान् ॥ भाक॥ अनुबोभवा३चकाणम्, बभूवानम्, आसानम् । "क्त्वा"॥४।३।२९॥ इति सेट् क्त्वा न कित् बोभविला, अनुबोभूय । बोभुवि२त, वान् । बोभवि३ता, तुम्, तव्यम्, एवमन्येऽपि उद्धन्ता । स्तु, पूङ्प्रभृतयो धातव सर्वेऽपि यङ्लुबन्तभूवद् अद्यतनीकर्तृवर्जं विज्ञातव्या ॥ उच्चारस्त्वेवम् —तोष्टवीति, तोष्टोति, तोष्टुत इत्यादि । पोपवीति, पोपोति, पोपूत इत्यादि ॥ अद्यतन्या कर्त्तरि पुनरेवम् '-अतोष्टावीत्, अतोष्टावि-

ष्टाम्, अतोष्टाविषुः, अतोष्टावीः, अतोष्टाविष्टम्, अतोष्टाविष्ट, अतोष्टाविषम्, अतोष्टाविष्व, अतोष्टाविष्म। एवं अपोपावीत्, अपोपाविष्टामित्याद्यपि। अत्र सर्वत्र सिचि इटि, "सिचि परस्मै-"॥४।३।४४॥ इति वृद्धिः ॥ एवमुदूदन्तान्यधातुष्वपि ॥ किञ्च अनुस्वारेतोऽननुस्वारेतो वा धातवः सनि यङि यङ्लुपि णिगि च सति बहुस्वरत्वेन सर्वेऽपि सेट एव जायन्ते, "एकस्वरात्-"॥४।४।५६॥ इत्यनेन इटो निषेधाभावात्। नवरं कृतै नृतै चृतै प्रभृतीना अल्पीयसां यङ्लुप्यपि क्तादौ यदनिट्त्व सम्भवि तत् स्वस्थाने वक्ष्यते॥ अथ णिगन्तः॥ भवन्तं प्रयुङ्क्ते भावयति, करोतीत्यर्थः। भावयत्यनित्यता ध्यायतीत्यर्थः। भावयत., भावयन्ति, भावयसि, भाव५ यथः, यथ, यामि, यावः, यामः । णित्त्वादात्मनेपदमपि । भावयते, भाव८येते, यन्ते, यसे, येथे, यध्वे, ये, यावहे यामहे ॥ भाक ॥ भावकर्मणोर्दर्श्यत इत्यर्थः॥ भाव्यते, भाव्येते, भा ७ व्यन्ते, व्यसे, व्येथे, व्यध्वे, व्ये, व्यावहे, व्यामहे ॥ सप्तमी ॥ भावयेत्, भाव८येताम्, येयुः, येः, येतम्, येत, येयम्, येव, येम । भाव९येत, येयाताम्, येरन्, येथाः, येयाथाम्, येध्वम्, येय, येवहि येमहि ॥ भाक ॥ भाव्येत, भाव्ये८याताम्, रन्, थाः, याथाम्, ध्वम्, य, वहि, महि ॥ पञ्चमी ॥ भाव १८ यतु, यताम्, यन्तु, य, यतम्, यत, यानि, याव, याम । यताम्, येताम्, यन्ताम्, यस्व, येथाम्, यध्वम्, यै, यावहै, यामहै ॥ भाक ॥ भा९व्यताम्, व्येताम्, व्यन्ताम्, व्यस्व, व्येथाम्, व्यध्वम्, व्यै, व्यावहै, व्यामहै ॥ ह्यस्तनी ॥ अभावयत्, अभाव८यताम्, यन्, यः, यतम्, यत, यम्, याव, याम॥ अभाव९यत, येताम्, यन्त, यथाः, येथाम्, यध्वम्, ये, यावहि, यामहि ॥ भाक॥ अभाव्यत, अभा८व्येताम्, व्यन्त, व्यथाः, व्येथाम्, व्यध्वम्, व्ये, व्यावहि, व्यामहि॥ अद्यतनी॥ भूणिग् भावि, दि ङे णौ यत्कृत तत्सर्वं इति न्यायात् भूद्वित्वं ह्रस्वः "उपान्त्यस्यास"॥४।२।३५॥ ह्रस्वः । "असमानलोप-"॥४।१।६३॥ इति सन्वद्भावात् "ओर्जान्तस्था-"॥४।१।६०॥ ओः इ., "लघोर्दी-"॥४।१।६४॥ अबीभवत्, अबीभवताम्, अबीभवन्, अबीभवः, अबीभवतम्, अबीभवत, अबीभवम्, अबीभवाव, अबीभवाम ॥ अबीभवत, अबीभवेताम्, अबीभवन्त, अबीभवथा, अबीभवेथाम्, अबीभवध्वम्, अबीभवे, अबीभवावहि, अबीभवा-

महि ॥ भाक ॥ ञिन्ति अभावि, ञिटि णेर्लुकि अभाविपाताम्, अभावि९ पत, ष्ठाः, पाथाम्, ध्वम्, ढ्वम्, इढ्वम्, पि, प्वहि, प्महि ॥ इटि अभावयि१०पाताम्, पत, ष्ठा, पाथाम्, ध्वम्, ढ्वम्, इढ्वम्, पि, प्वहि, प्महि ॥परोक्षा॥ "आमन्ताल्व" ॥४।३।८५॥ इति अयि भावयाञ्चकार, भावयाञ्चकतुः, भावयाञ्च८क्रुः,कर्थ, क्रथुः, क्र, कर, कार, कृव, कृम। आत्मनेपदे भावयाञ्चक्रे, भावयाञ्च८क्राते, क्रिरे, कृषे, क्राथे, कृढ्वे, क्रे, कृवहे, कृमहे ॥ भावयाम्बभूव, भावयाम्ब भू८वतुः, वुः, विथ, वथुः, व, व, विव, विम । णिगन्ताद्धातोरात्मनेपदेऽनु प्रयुज्यमानाच्च परस्मैपदे भावयाम्बभू९व, वतुः, वुः, विथ, वथु., व, व, विव, विम। भावयामास, भावयामा७सतु., सु, सिथ, सथु., स, स, सिव, सिम ॥ भाक॥ भावयाञ्चक्रे, भावयाञ्च८क्राते, क्रिरे, कृषे, क्राथे, कृढ्वे, क्रे, कृवहे, कृमहे ॥ भावयाम्बभूवे, भावयाम्बभू९वाते, विरे, विषे, वाथे, विध्वे, विढ्वे, वे, विवहे, विमहे । भावयामाहे, भावयामा८साते, सिरे, सिषे, साथे, सिध्वे, हे, सिवहे, सिमहे ॥ आशी॰ ॥ भाव्यात्, भा८व्यास्ताम्, व्यासुः, व्याः, व्यास्तम्, व्यास्त, व्यासम्, व्यास्व, व्यास्म ॥ भावयिषीष्ट, भावयि९षीयास्ताम्, षीरन्, षीष्ठाः, षीयास्थाम्, षीध्वम्, षीढ्वम्, षीय, षीवहि, षीमहि ॥ भाक ॥ ञिटि णेर्लुकि भाविषीष्ट, भावि९षीयास्ताम्, षीरन्, षीष्ठा, षीयास्थाम्, षीध्वम्, षीढ्वम्, षीय, षीवहि, षीमहि। इटि भावयिषीष्ट, भावयि९षीयास्ताम्, इत्यादि ॥ श्वस्तनी ॥ भावयिता, भावयि८तारौ, तार, तासि, तास्थः, तास्थ, तास्मि, तास्वः, तास्म ॥ भावयि९ता, तारौ, तारः, तासे, तासाथे, ताध्वे, ताहे, तास्वहे, तास्महे ॥ भाक ॥ ञिटि भाविता, भावि८तारौ, तार, तासे, तासाथे, ताध्वे, ताहे, तास्वहे, तास्महे । इटि भावयिता, भावयि८तारौ इत्यादि ॥ भविष्यन्ती ॥ भावयिष्यति, भावयिष्यत., भावयि१६ष्यन्ति, ष्यसि, ष्यथ, ष्यथ, ष्यामि, ष्याव., ष्याम । ष्यते, ष्येते, ष्यन्ते, ष्यसे, ष्येथे, ष्यध्वे, ष्ये, ष्यावहे, ष्यामहे ॥ भाक ॥ भाविष्यते, भावि८ष्येते, ष्यन्ते, ष्यसे, ष्येथे, ष्यध्वे, ष्ये, ष्यावहे, ष्यामहे ॥ भावयिष्यते, भावयि८ष्येते इत्यादि ॥ क्रियातिपत्ति. ॥ अभावयिष्यत्, अभावयि १६ष्यताम्, ष्यन्, ष्य, ष्यतम्, ष्यत, ष्यम्, ष्याव, ष्याम । ष्यत,

ष्येताम्, ष्यन्त, ष्यथा, ष्येथाम्, ष्यध्वम्, ष्ये, ष्यावहि, ष्यामहि ॥ भाक ॥ ञिटि अभाविष्यत, अभावि८ष्येताम्, ष्यन्त, ष्यथाः, ष्येथाम्, ष्यध्वम्, ष्ये, ष्यावहि, ष्यामहि । इटि अभावयिष्यत, अभावयि८ष्येताम्, ष्यन्त, ष्यथाः, ष्येथाम्, ष्यध्वम् इत्यादि । कर्मकर्त्तरि सर्वस्मात् ण्यन्ताद्धातोः "एकधातौ कर्म-" ॥३।४।८६॥ इति ञिच्ञिट्क्यात्मनेपदेषु प्राप्तेषु "णिस्तुश्र्य-" ॥३।४।९२॥ इति ञिचो निषेधनेन ञिटो विधानात्, "भूषार्थसन्-" ॥ ३ । ४ । ९३ ॥ इति क्यस्य निषेधाच्च, ञिट् आत्मनेपद च स्याताम् । अनुभवति विषयसुखं चैत्रः त मैत्रः प्रयुङ्क्ते अनुभावयति विषयसुख चैत्रेण मैत्रः । स एव विवक्षते नाहमनुभावयामि किन्तु अनुभावयते विषयसुख स्वयमेव । यदि वा स्वयमनुभूयमान विषयसुख स्व प्रयुङ्क्ते अनुभावयते विषयसुख स्वयमेव। एवमनुभावयेत, अनुभावयताम्। अन्वभावयत। अन्वबीभवत। इटि अनुभावयिषीष्ट। ञिटि अनुभाविषीष्ट। अनुभावयिता, अनुभाविता। अनुभावयिष्यते, अनुभाविष्यते, वा विषयसुख स्वयमेव। एव द्विवचनादीन्यपि निदर्शनीयानि । भावयन् । भावयन्ती । भावयत्। भावयिष्यन् । भावयिष्यन्ती । भावयिष्यती । भावयिष्यत् । भावयमानः । भावयिष्यमाणः ॥ भाक ॥ भाव्यमानम् । इटि भावयिष्यमाणम् । ञिटि भाविष्यमाणम् । भावयाञ्चक्राणः। भावयां३चकृवान्, बभूवान्, आसिवान् ॥ भाक ॥ भावया३चक्राणम्, बभूवानम्, आसान वा । भावयि३ता, त्वा, तुम् । यपि अनुभाव्य । "सेट्क्तयोः" ॥४।३।८४॥ इति णेर्लुकि भावितः, २ वान्। एव सर्वे णिगन्ताः णिजन्ताश्च चौरादिका नामधातवोऽपि च सर्वे सर्वविभक्तिषु कर्मकर्त्तरि शत्रादिप्रत्ययेषु च णिगन्तभूवन्निर्विशेष निरूपणीयाः । नवरमद्यतन्यां कर्त्तरि ङे क्वचन यो विशेषः सम्भवी सोऽग्रे वक्ष्यते । अत एवाग्रे णिगृणिजन्तधातूना यथा स्वस्थान रूपमात्रम्, ङप्रत्यये रूपविशेषश्चाविष्करिष्यते न पुनः शेषविभक्तिविस्तर इति ज्ञेयम् । यङन्तात् सनि बोभूयिषते।"पुनरेकेषाम्"॥४।१।१०॥ इति पुनर्द्वित्वे बुबोभूयिषते। यङ्लुबन्तात्सनि बोभविषति। अनेकस्वरत्वात् "ग्रहगुहश्च-" ॥४।४।५९॥ इति इट्निषेधो न भवति णिगन्तात्सनि बिभावयिषति, ते । अत्र णौ यत्कृतम्

इति भूद्वित्वे "ओर्जान्तस्थ-" ॥ ४ । १ । ६० ॥ इति इः । सन्नन्ताण्णिगि बुभूषयति, ते । यङन्ताण्णिगि बोभूययति, ते । यङ्लुबन्ताण् णिगि बोभुवत प्रयुङ्क्ते बोभावयति, ते । णिगन्ताण् णिगि, भावयति, ते । अत्र "णेरनिटि"॥४।३।८३॥ इति आद्याणिग्लुक् । अतत्सन इति वचनादिच्छासन्नन्तात् सन्नास्ति, यङ् च सन्यङ्यङ्लुबन्तेभ्यो बहुस्वरत्वेन नागच्छति, "व्यञ्जनादेरेकस्वरात्-"॥३।४।९॥ इति भणनात् । एव सर्वधातुषु सन्णिगादिसयोगा. स्वय वेदितव्याः ॥ १ ॥

अथ तृवर्जा. २४ अनिटोऽनुस्वारेत्त्वात् ॥ पां पाने ॥ वर्त्तमाना ॥ पिबति, पिबत , पिबन्ति । "श्रौति-"॥४।२।१०८॥ इति पिबादेशस्यादन्तत्वान्न शवि गुण. । व्यतिपि९बते, बेते, बन्ते०॥ भाक ॥ "ईर्व्यञ्ज "॥४।३।९७॥ ई । पीयते, पीयेते, पीयन्ते इत्यादि ॥ सप्तमी ॥ पिबेत, पि८बेताम्, बेयु , बे:, बेतम् बेत, बेय, बेव, बेम । व्यातिपिबेत०॥ भाक ॥ पीयेत, पीये८याताम्, रन् , था , याथाम्, ध्वम्, य, वहि, महि ॥ पञ्चमी ॥ पिबतु, पिबतात्, पिबताम्, पिबन्तु, पिब, पिबतात्, पिबतम्, पिबत, पिबानि, पिबाव, पिबाम । व्यतिपिबताम् ॥ भाक ॥ पीयताम्, पीयेताम्, पीयन्ताम्॥ ह्यस्तनी ॥ अपिबत्, अपि८बताम्, बन्, ब , बतम्, बत, बम्, बाव, बाम ॥ व्यत्यपिबत ॥ भाक ॥ अपी ९ यत, येताम्, यन्त, यथा., येथाम्०॥ अद्यतनी ॥ "पिबैति-"॥४ । ३ । ६६ ॥ इति सिचो लुप् । अपात्, अपाताम्; " सिज्विद- " ॥ ४ ।२। ९२ ॥ इति पुसि अपु , अपा , अपातम् , अपात, अपाम्, अपाव, अपाम । व्यत्यपा ५ स्त, साताम्, सत, स्था , साथाम् । "सो धि वा"॥४।३।७२॥ इति वा सो लुकि, पक्षे "तृतीयस्तृतीय-"॥१।३।४९॥ इति सो दत्वे व्यत्यपा५ध्वम्, द्ध्वम्, सि, स्वहि, स्महि ॥ भाक ॥ "आत ऐ -"॥४।३।५३॥ अपायि । वा ञिटि अपायिषाताम्, अपायि ९ षत, ष्ठा , षाथाम्, ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि । पक्षे अपासाताम् , अपा ८ सत, स्था , साथाम्, द्ध्वम्, ध्वम् , सि, स्वहि, स्महि ॥ परोक्षा ॥ पपौ, "इडेत्पुसि च-"॥४।३।९४॥ इति आल्लुकि, पपतु:, पपु , पपाथ, पपिथ, "सृजिदृशि-"॥४।४।७८॥ इति वेट्, पपथु , पप, पपौ, पपिव, पपिम ॥ भाक ॥ पपे, पपाते, पपिरे, पपिषे, पपाथे, पपिध्वे,

पपे, पपिवहे, पपिमहे ॥ आशीः ॥ पेयात्, पेयास्ताम्, पेयासुः, पेयाः, पेयास्तम्, पेयास्त, पेयासम्, पेयास्व, पेयास्म ॥ भाक ॥ पायि १० षीष्ट, पीयास्ताम्, षीरन्, पीष्ठाः, षीयास्थाम्, पीध्वम्, पीढ्वम्, पीय, षीवहि, षीमहि ॥ पक्षे, पा९सीष्ट, सीयास्ताम्, सीरन्, इत्यादि ॥ श्वस्तनी ॥ पाता, पातारौ, पातारः, पातासि० ॥ भाक ॥ पाता, पायिता, पातारौ, पायितारौ० ॥ भविष्यन्ती ॥ पास्यति, पास्यतः, पास्यन्ति, पास्यसि० ॥ भाक ॥ पास्यते, पायिष्यते, पास्येते, पायिष्येते, पास्यन्ते, पायिष्यन्ते० ॥ क्रियातिपत्ति ॥ अपा९स्यत्, स्यताम्, स्यन्, स्य:, स्यतम्० ॥ भाक ॥ अपा१८स्यत, यिष्यत, स्येताम्, यिष्येताम्, स्यन्त, यिष्यन्त० ॥ आशीरादिषु ४ भावकर्मणोर्ञिट् सर्वत्र विकल्प्यः ॥ सनि, पिपासति ॥ भाक ॥ पिपास्यते । यङि पेपीयते, अत्र प्राक् तु स्वरे इत्यधिकारात् "ईर्व्यञ्जन-"॥४।३।९७॥ इति प्राग् ई पश्चात्तु द्वित्वम्, यङोव्यञ्जनादित्वात्, एवमग्रेऽपि ॥ भाक ॥ पेपीय्यते । शेषं सन्यङ्ङन्तभूवदित्युक्त पुराऽपि लुपि पापेति, पापाति । "श्रौति-"॥४।२।१०८॥ इति प्रकृतिग्रहणेन प्राप्तोऽपि अत्यादावित्यधिकारान्न पिबादेशः। शतरि तु पापेतीति वाक्ये द्वित्वापन्नस्य पिबादेशे पिबत् इति स्यात् । एव घ्राध्मोरपि । क्ते, पापि२त', वान्। पापि३त्वा, तुम्, ता, लुपि शेष स्थास्थाने ऽतिदेक्ष्यते, णिगि, "पाशा-"॥४।२।२०॥ इति ये, पाययति । फलवति "चल्याहार-"॥३।३।१०८॥ इति परस्मैपदे प्राप्तेऽपि "परिमुह-"॥३।३।९४॥ इत्यात्मनेपदे, पाययते बटुम्॥ अद्यतनी ॥ "ङे पिबः पीप्य्"॥४।१।३३॥ इति पीप्यः। अपीप्यत्, अपी८प्यताम्, प्यन्, प्य', प्यतम्, प्यत, प्यम्, प्याव, प्याम। अपी९प्यत, प्येताम्, प्यन्त०॥ भाक॥ अपायि, अपायिषाताम्, अपाययिषाताम्, अपायिषत, अपाययिषत०॥ "ङे पिब -"॥४।१।३३॥ इत्यत्र लुप्ततिव्निर्देशात् यङ्लुपि न पीप्य । अपापयत्, शेष भूवत्। पिबन्। पीयमानम् । पास्यन् । पास्यमानम्, पायिष्यमाणम्। पपिवान्। पपानम्। पी२त', वान्। पीत्वा । निपाय। निपीय इति तु पीङो भविष्यति। पातुम्। पाता। पेयम्। पातव्यम्। पानीयम्॥ २ ॥

घ्रा गन्धोपादाने॥ "श्रौति-"॥४।२।१०८॥ इति जिघ्र.। जिघ्रति, जिघ्रतः०॥ भाक॥ घ्रायते, घ्रायेते॥ अद्यतनी ॥ "ट्धेघ्राशा-"॥४।३।६७॥ इति वा सिचूलुप्। अ-

लोपे च 'यमिरमिनम्यात-' ॥४।४।८६॥ इति इट् सोऽन्तश्च, अघ्रात्, अघ्रासीत्, अघ्राताम्, अघ्रासिष्टाम्, अघ्रु, अघ्रासिषु, अघ्राम, अघ्रासिष्म ॥ भाक ॥ अघ्रायि, अघ्रासाताम्, अघ्रायिषाताम्० ॥ परोक्षा ॥ जघ्रौ, जघ्रिथ, जघ्राथ, जघ्रिम ॥ भाक ॥ जघ्रे० ॥ आशी. ॥ "संयोगादेर्वाशिष्येः" ॥४।३।९५॥ इति वा ए, घ्रेयात्, घ्रायात्, घ्रेयास्म, घ्रायास्म । शेषासु पावत् । सनि जिघ्रासति । यङि व्यञ्जनादित्वेन "घ्राध्मो -" ॥४।३।९८॥ इति द्वित्वात् प्राग् ई, जेघ्रीयते । लुपि तु न ई, जाघ्रेति, जाघ्राति, जाघ्रीत । अत्र "एषामी -" ॥४।२।९७॥ इति ई. ॥ अन्ये तु यङ्लुप्यपि "घ्राध्मो." ॥४।३।९८॥ इति ईत्वमिच्छन्ति । जेघ्रीत । एव ध्मोऽपि, देध्मीत । शतरि तु जिघ्रत्, धमत् । शेष यङ्लुपि श्रैङ्वत् । णौ विशेषबोधार्थत्वात् "गतिबोध-" ॥२।२।५॥ इत्यणिक्कर्तु कर्मत्वे चैत्रो मैत्रं गन्ध घ्रापयति । ये तु दृशेरन्यस्य विशेषबोधार्थस्य नेच्छन्ति तन्मते घ्रापयति मैत्रेण चैत्र ॥ भाक ॥ घ्राप्यते । ङे, "जिघ्रतेरि" ॥४।२।३८॥ इति उपान्त्यस्य वा इ, अजिघ्रपत्, अजिघ्रिपत् । "जिघ्रते." ॥४।२।३८॥ इति तिवृनिर्देशात् यङ्लुपि णौ न इ अजाघ्रपत् । जिघ्रन् । घ्रास्यन् । घ्रायमाणम् । "ऋह्री-" ॥४।२।७६॥ इति वा नत्वे, घ्राण, वान्, घ्रातः, वान्, घ्राता, तुम्, त्वा । आघ्राय । घ्रातव्यम् । घ्रेयम् ॥ ३ ॥

ध्मां शब्दाग्निसंयोगयो । शब्दे मुखादिना चाऽग्निसंयोगे "श्रौति-" ॥४।२।१०८॥ इति धमादेशे, शङ्खमङ्गारान् वा धमति ॥ भाक ॥ ध्मायते । अद्यतनी ॥ अध्मासीत्, सिष्टाम्, सिषु ० ॥ भाक ॥ अध्मायि, अध्मासाताम्, अध्मायिषाताम् ॥ सनि दिध्मासति । यङि देध्मीयते । णौ ध्मापयति । ङे, अदिध्मपत् । ध्मात २, वान् । शेष घ्रावत ॥ ४ ॥

ष्ठा गतिनिवृत्तौ ॥ वर्त्तमाना ॥ "श्रौति-" ॥४।२।१०८॥ इति तिष्ठादेशे, तिष्ठति । "अधे शीङ्स्थास" ॥२।२।२०॥ इत्याधारस्य कर्मत्वे, गृहमधितिष्ठति, प्रतितिष्ठति, अनुतिष्ठति ॥ तिष्ठत., तिष्ठन्ति, तिष्ठसि०, तिष्ठाम । "देवार्चामैत्री-" ॥३।३।६०॥ इत्यनेनोपात्कर्त्तर्यात्मनेपदे जिनेन्द्रमुपतिष्ठते, रथिकानुपतिष्ठते, गङ्गा यमुनामुपतिष्ठते, अय पन्था सुघ्नमुपतिष्ठते, ऐन्द्या गार्हपत्यमुपतिष्ठते । "वा लिप्सायाम्" ॥३।३।६१॥ भिक्षुर्दातृकुलमुपतिष्ठते, ति वा । "उदोऽनूर्द्ध्वेहे" ॥३।३।६२॥

मुक्तावुत्तिष्ठते। "संविप्रावात्"॥३।३।६३॥ संतिष्ठते, प्रतिष्ठते इत्यादि ॥ "ज्ञीप्सा-स्थेये"॥३।३।६४॥ तिष्ठते कन्या च्छात्रेभ्यः, "श्लाघह्नुस्था-"॥२।२।६०॥ इति चतुर्थी। सशय्य कर्णादिषु तिष्ठते यः । "प्रतिज्ञायाम्" ॥३।३।६५॥ तदतदात्मक तत्त्व-मातिष्ठते। "उपात्स्थः"॥३।३।८३॥ इति कर्मण्यसति, भोजने उपतिष्ठते, प्रतिष्ठते, प्रतिष्ठेते, प्रतिष्ठन्ते० ॥ भावे, "ईर्व्यञ्ज-"॥४।३।९७॥ ईः, स्थीयते, उत्थीयते । कर्मणि, केवलस्य कर्माभावत् अनुपूर्वो दर्श्यते। "स्थासेनि-"॥ २ । ३ । ४०॥ इति षत्वे अनुष्ठी९यते, येते, यन्ते, यसे० ॥ सप्तमी ॥ तिष्ठेत्, तिष्ठेताम्, तिष्ठेयु, तिष्ठेः० ॥ प्रतिष्ठेत, प्रतिष्ठेयाताम्, प्रतिष्ठेरन्० ॥ भावे, स्थीयेत ॥ कर्मणि, अनुष्ठी९येत, येयाताम्, येरन्० ॥ पञ्चमी॥ तिष्ठतु, तिष्ठताम्, तिष्ठन्तु, तिष्ठ, तिष्ठानि । प्रति९ष्ठताम्, ष्ठेताम्, ष्ठन्ताम्, ष्ठस्व, ष्ठेथाम्० ॥ भावे, स्थीयताम् । कर्मणि, अनुष्ठी९यताम्, येताम्, यन्ताम् ॥ ह्यस्तनी ॥ अति-९ष्ठत्, ष्ठताम्, ष्ठन्० ॥ प्रातिष्ठत, प्राति८ष्ठेताम्, ष्ठन्त, ष्ठथाः० ॥ भावे, अस्थीयत ॥ कर्मणि अन्वष्ठी९यत, येताम्, यन्त, यथा॰, येथाम्, यध्वम्, ये०॥ अद्यतनी॥ "पिबैति-"॥४।३।६६॥ इति सिचो लुप्, अस्थात् । "स्थासेनि" ॥२।३।४०॥ इति अड्व्यवधानेऽपि पत्ते अध्यष्ठात्, प्रत्यष्ठात्, अस्थाताम्, अस्थुः, 'सिज्विदो-"॥४।२।९२॥ इति पुस् । अस्था॰, अस्थातम्, अस्थात, अस्थाम्, अस्थाव, अस्थाम । प्रास्थित, "इश्च स्थादः"॥ ४ । ३ । ४१ ॥ इति इः, सिच् किच्च, "धुट्ह्रस्व-" ॥ ४ । ३ । ७० ॥ इति सिच्लुक् । प्रास्थिपाताम्, प्रास्थिषत, प्रास्थि७था, षाथाम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि ॥ भावे, अस्थायि । कर्मणि ञिचि, अन्वष्ठायि । "स्वरग्रह-"॥३।४।६९॥ इति वा ञिटि, अन्वष्ठायि-षाताम्, अन्वष्ठिषाताम्, अन्वष्ठायिषत, अन्वष्ठिषत, अन्वष्ठायिष्ठाः, अन्वष्ठि-था॰, अन्वष्ठायिषाथाम्, अन्वष्ठिषाथाम्, अन्वष्ठायि३ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम् । अत्र "सो धि-"॥४।३।७२॥ इति वा सिच्लुक् "हान्त-"॥२।१।८१॥ इति वा ढश्च, पक्षे सिचः षलडले धो ढः, अन्वष्ठिरढ्वम्, ड्ढ्वम् । "इश्च-"॥४।३।४१॥ इति पत्ते, "सो धि"॥४।३।७२॥ इति वा सिच्लुकि, "नाम्यन्त-"॥२।१।८०॥ इति नित्य ढः । पक्षे सिचो "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति षत्वे "तृतीय-"॥१।३।४९॥

इति डत्वे "तवर्गस्य-"॥१।३।६०॥ इति घो ढः। अन्वष्ठायिषि, अन्वष्ठिषि, अन्वष्ठायिष्वहि, अन्वष्ठिष्वहि, अन्वष्ठायिष्महि, अन्वष्ठिष्महि ॥ परोक्षा ॥ तस्थौ। "स्थासेनि"॥२।३।४०॥ इति द्वित्वेऽपि षत्वे, अधितष्ठौ, तस्थतुः, तस्थुः। "घुजिद्दशि" ॥४।४।७८॥ इति वेटि, तस्थिथ, तस्थाथ, तस्थथुः, तस्थ, तस्थौ, तस्थिव, तस्थिम। प्रत९स्थे, स्थाते, स्थिरे, स्थिषे, स्थाथे, स्थिध्वे, स्थे, स्थिवहे, स्थिमहे॥ भावे तस्थे। कर्मणि अनुत९ष्ठे, ष्ठाते, ष्ठिरे, ष्ठिषे, ष्ठाथे, ष्ठिध्वे, ष्ठे, ष्ठिवहे, ष्ठिमहे ॥ आशीः ॥ स्थेयात्, स्थेयास्ताम्, स्थेयासुः, स्थेयाः, स्थेयास्तम्, स्थेयास्त, स्थेयासम्, स्थेयास्व, स्थेयास्म ॥ प्रस्था९सीष्ट, सीयास्ताम्, सीरन्, सीष्ठाः, सीयास्थाम्, सीध्वम्, सीय, सीवहि, सीमहि ॥ भावे ॥ स्थायिषीष्ट, स्थासीष्ट ॥ कर्मणि वा ञिटि अनुष्ठायि१०षीष्ट, षीयास्ताम्, षीरन्, षीष्ठाः, षीयास्थाम्, षीध्वम्, षीढ्वम्, षीय, षीवहि, षीमहि ॥ पक्षे, अनुष्ठा९सीष्ट, सीयास्ताम्, सीरन् इत्यादि ॥ श्वस्तनी ॥ स्थाता, स्थातारौ, स्थातारः० ॥ प्रस्थाता, प्रस्थातारौ, प्रस्थातारः, प्रस्थातासे० ॥ भावे स्थायिता, स्थाता । कर्मणि अनुष्ठा९ता, तारौ, तारः, तासे इत्यादि । अनुष्ठायि९ता, तारौ, तारः, तासे इत्यादि ॥ भविष्यन्ती ॥ स्थास्यति, अधिष्ठास्यति, प्रतिष्ठास्यति, स्थास्यत० ॥ प्रस्थास्यते, प्रस्थास्येते, प्रस्थास्यन्ते० ॥ भावे स्थायिष्यते, स्थास्यते ॥ कर्मणि अनुष्ठायिष्यते, अनुष्ठास्यते, अनुष्ठायिष्येते, अनुष्ठास्येते, अनुष्ठायिष्यन्ते, अनुष्ठास्यन्ते०॥ क्रियातिपत्तिः॥ अस्थास्यत्, अध्यष्ठास्यत्। अस्था८स्यताम्, स्यन्, स्यः०॥ प्रास्था९स्यत, स्येताम्, स्यन्त, स्यथाः०॥ भावे अस्थायिष्यत, अस्थास्यत। कर्मणि वा ञिटि, अन्वष्ठायि९ष्यत, ष्येताम्, ष्यन्त०॥ पक्षे अन्वष्ठा९स्यत, स्येताम्, स्यन्त इत्यादि। सनि, तिष्ठासति; संतिष्ठासते, अवतिष्ठासते। यङि, तेष्ठीयते। यङ्लुपि, तास्थेति। "श्रौति-"॥४।२।१०८॥ इत्यत्रात्वादावित्यधिकाराच्च तिष्ठः, तास्थाति, तास्थीत, एषाम् "ईर्व्यञ्ज" ॥४।३।९७॥ ई। तास्थति, "श्नश्चात-"॥४।२।९६॥ इति आलोपः। तास्थेषि, तास्थासि, तास्थीथ, तास्थाथ, तास्थेमि, तास्थामि, तास्थीवः, तास्थीम ॥ भाक ॥ क्ये, अनुताष्ठीयते, अनुताष्ठी८येते, यन्ते, यसे, येथे, यध्वे, ये, यावहे, यामहे॥ सप्तमी ॥ तास्थी९यात्, याताम्, युः, याः, यातम्, यात, याम्, याव, याम ॥ भाक ॥

अनुताष्ठी९येत, येयाताम्, येरन्, येथाः, येयाथाम्, येध्वम्, येय, येवहि, येमहि ॥ पञ्चमी ॥ तास्थेतु, तास्थातु, तास्थीतात्, तास्थीताम्, तास्थतु, तास्थीहि, तास्थीतात्, तास्थीतम्, तास्थीत, तास्थानि, तास्थीव, तास्थीम ॥ भाक ॥ अनुताष्ठी९यताम्, येताम्, यन्ताम्, यस्व, येथाम्, यध्वम्, यै, यावहै, यामहै ॥ ह्यस्तनी ॥ अतास्थेत्, अतास्थात्, अतास्थीताम्, अतास्थुः, अतास्थेः, अतास्थाः, अतास्थीतम्, अतास्थीत, अतास्थाम्, अतास्थीव, अतास्थीम ॥ भाक ॥ अन्वताष्ठीयत, अन्वताष्ठी८येताम्, यन्त, यथाः, येथाम्, यध्वम्, ये, यावहि, यामहि । अद्यतनी ॥ अतास्थात्, "पिबैति-"॥४।३।६६॥ इति सिच्लुप् नेट् च । अतास्थीताम्, अतास्थुः, अता८स्थाः, स्थातम्, स्थात, स्थाम्, स्थाव, स्थाम ॥ भाक ॥ अन्वताष्ठायि । ञिटि अन्वताष्ठायि १० षाताम्, षत, ष्ठाः, षाथाम्, ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि ॥ परोक्षा ॥ तास्थांचकारेत्यादि९ । तास्थाबभूवेत्यादि९। तास्थामासेत्यादि ९ ॥ भाक ॥ अनुताष्ठाचक्रे ९ । अनुताष्ठाबभूवे ९ । अनुताष्ठामाहे ९, मासाते, मासिरे ९ ॥ आशीः ॥ तास्थे९यात्, यास्ताम्, यासुः, याः, यास्तम्, यास्त, यासम्, यास्व, यास्म । "गापास्थासा-"॥४।३।९६॥ इति एः ॥ भाक ॥ अनुताष्ठायि १० षीष्ट, षीयास्ताम्, षीरन्, षीष्ठाः, षीयास्थाम्, षीढ्वम्, षीध्वम्, षीय, षीवहि, षीमहि । अनुताष्ठि९षीष्ट, षीयास्ताम्, षीरन्, षीष्ठाः, षीयास्थाम्, षीध्वम्० ॥ श्वस्तनी । इटि तास्थि९ता, तारौ, तारः, तासि० ॥ भाक ॥ अनुताष्ठायि९ता, तारौ, तारः, तासे, तासाथे० ॥ अनुताष्ठि९ता, तारौ, तारः, तासे, तासाथे० ॥ भविष्यन्ती ॥ तास्थि९ष्यति, ष्यतः, ष्यन्ति० ॥ भाक ॥ अनुताष्ठायि ९ ष्यते, ष्येते, ष्यन्ते, ष्यसे० ॥ अनुताष्ठि ९ ष्यते, ष्येते, ष्यन्ते ॥ क्रियातिपत्तिः ॥ अतास्थि९ष्यत्, ष्यताम्, ष्यन्, ष्यः, ष्यतम्० ॥ भाक ॥ अन्वताष्ठायि ९ ष्यत, ष्येताम्, ष्यन्त, ष्यथाः० । अन्वताष्ठिष्यत, ष्येताम्० ॥ क्ते, तास्थितः, २ वान् । तास्थित्वा । प्रतास्थाय । तास्थितुम् । शतरि तु "श्रौतिकृवु-" ॥४।२।१०८॥ इत्यत्र प्रकृतिग्रहणात्तिष्ठादेशे तिष्ठत् । यङ्लुबन्तात् सनि तास्थिषति । "पुनरेकेषाम्"॥४।१।१०॥ इति पुनर्द्वित्वे तितास्थिषति । एवं "गापास्थासा-"॥४।३।९६॥ इति सूत्रोक्ता हाक् वर्जाः पञ्चदश धातवो यङ्लुपि

स्थावदभ्यूहनीयाः ॥ तत्र पिवने सर्वं स्थातुल्यम् । दासंज्ञानां तु पण्णां यः शिति विशेषः सम्भवी स स्वस्थानेऽग्रे वक्ष्यते । गादीनां तु पुनरष्टानां स्थासकाशादय विशेष यदुताद्यतनी पदस्मैपदे सिचि "यमिरमिनम्यातः-" ॥४।४।८६॥ इत्यनेन इट् सोन्तश्च स्यात् नतु सिचो लुप्, गाङ् गै वा ॥ अजागासीत्, अजागासिष्टाम्, अजागासिषु, अजागासीः, अजागासिषम्, अजागासिष्म । एवं पैं, अपापासीत् । सों सें वा, अवासासीत् । माङ् माङ् मेङ् वा, अमामासीत्, अमामासिष्टामित्यादि । तथा शतरि "श्नश्च-"॥४।२।९६॥ इति आ लुकि जागत्, पापत्, अवसासत्, मामत्, इति स्यात्; शेष स्तेषां स्थातुल्यम् । उक्तेभ्योऽन्ये तु सर्वेऽप्याकारान्ता त्रैङ स्थाने वक्ष्यन्ते । अथ णिग् । स्थापयति, स्थापयत० ॥ भाक ॥ स्थाप्यते, स्थाप्येते० ॥ अद्यतनी ॥ अतिष्ठिपत्, अतिष्ठिपताम्, अतिष्ठिपन्०, "तिष्ठते"॥४।२।३९॥ इत्युपान्त्यस्य इ । तिव्निर्देशात् यङ्लुपि णौ न इ, अतास्थपत् । णिगन्तात्सनि, तिष्ठापयिषति । णिगन्ताण्णिगि, स्थापयति द्रव्य सखेन । तिष्ठन् । तिष्ठन्ती । प्रतिष्ठमानः । स्थास्यन् । प्रस्थास्यमानः । स्थीयमानम्, प्रस्थीयमानम् । स्थास्यमानम्, स्थायिष्यमाणम् । तस्थिवान्, तस्थुषी, तस्थिवत् । प्रतस्थान । स्थित्वा । प्रस्थाय । उत्थाय । स्थित, २ वान् । उत्थित;२ वान् । "श्लिषशीङ्-"॥५।१।९॥ इति वा कर्त्तरि क्ते, उपस्थितो गुरु शिष्य । पक्षे कर्मणि, उपस्थितो गुरुः शिष्येण ॥ भावे उपस्थित शिष्येण, अत्र "दोसोमा-"॥४।४।११॥ इति इ । अनुष्ठित; अत्र "स्थासेनि-"॥२।३।४०॥ इति षत्वम् । सुस्थितो दुस्थित इत्यादौ तु उपसर्गप्रतिरूपका निपाता एते, इत्युपसर्गाभावान्न षत्वम् । स्थाऽता, तुम्, तव्यम् । स्थेयम् । स्थानीयम् । "प्रात्स्थ" (उणादि–९२४) इति णिनि प्रस्थास्यते, प्रस्थायी भविष्यति साधु । "ग्रहादिभ्यो णिन्"॥५।१।५३॥ स्थायी ॥५॥

म्ना अभ्यासे । "श्रौति-"॥४।२।१०८॥ इति मन, आमनति, आमनत, आमनन्ति० ॥ भाक ॥ आम्नाऽयते, येते, यन्ते०, शेष ध्मावत् । यङि तु विशेषः, आमाम्नायते ॥ ६ ॥

दाम् दाने । "श्रौति-"॥४।२।१०८॥ इति यच्छ, यच्छति धनम्, प्रयच्छति,

यच्छतः, यच्छन्ति०॥ भाक॥ "ईर्व्यञ्जने-"॥४।३।९७॥ ई', दीयते, दीयेते, दीयन्ते०॥ सप्तमी ॥ यच्छेत्, यच्छेताम्०॥ भाक ॥ दीयेत०॥ पञ्चमी॥ यच्छतु, यच्छताम्०॥ भाक ॥ दीयताम्० ॥ ह्यस्तनी ॥ अयच्छत्० ॥ भाक ॥ अदीयत० ॥ डुदांग्क्, धातोरद्यतन्यादिषु सन्यङ्णिगादिषु च यानि रूपाणि वक्ष्यन्ते तान्येवास्यापि वक्तव्यानि । नवरं परस्मैपदमेव कर्त्तरि वाच्यमत्राव्यतिपूर्वं चात्मनेपदमपि । दास्या सम्प्रयच्छते । "दामः सम्प्रदानेऽधर्म्ये आत्मने च"॥२।२।५२॥ इति सम्प्रदानात्तृतीया आत्मनेपदं च ॥ ७ ॥

जि ज्रि अभिभवे । अयं जिर्द्वेधा । जयति जिन इति अकर्मकः; जयति शत्रूनिति सकर्मकः ॥ वर्त्तमाना ॥ जयति, जयतः, जयन्ति० ॥ "परावेर्जेः", ॥३।३।२८॥ इत्यात्मनेपदे, पराजयते, विजयते, विजयेते, विजयन्ते० ॥ भाक ॥ जीयते, जीयेते, जीयन्ते, जीयसे० एवं सप्तम्यादिषु ॥ अद्यतनी ॥ "सिचि परस्मै-" ॥४।३।४४॥ इति वृद्धिः, "सः सिज-"॥४।३।६५॥ इति ईश्च, अजैषीत्, अजैष्टाम्, अजैषुः, अजैषीः, अजैष्टम्, अजैष्ट, अजैषम्, अजैष्व, अजैष्म । सिचो लुकः परत्वेऽपि नित्यत्वात् प्रागेव गुणे व्यजेष्ट, व्यजेषाताम्, व्यजे८षत, ष्ठाः, षाथाम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि ॥ भाक ॥ अजायि, अजायि१०षाताम्, षत, ष्ठा, षाथाम्, ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि ॥ अजे९षाताम्, षत, ष्ठाः, षाथाम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि ॥ परोक्षा ॥ "जेर्गिः सन्-" ॥४।१।३५॥ इति गि, जिगाय, जिग्यतुः, जिग्युः, "योऽनेकस्वरस्य"॥२।१।५६॥ इति यत्वम् । जिगयिथ, जिगेथ, "सृजि-"॥४।४।७८॥ इति वेट् । जिग्यथुः, जिग्य, जिगय, जिगाय, जिग्यिव, जिग्यिम ॥ विजिग्ये, विजिग्याते, विजिग्यिरे। "हान्तस्थ-"॥२।१।८१॥ इति वा ढे विजिगिढ्वे, ध्वे० ॥ भाक ॥ जिग्ये, जिग्याते, जिग्यिरे, जिग्यिषे, "स्कसृ-" ॥४।४।८१॥ इतीट् । जिग्याथे, जिग्यिढ्वे, जिग्यिध्वे, जिग्ये, जिग्यिवहे, जिग्यिमहे ॥ आशी. ॥ जीयात्, जीयास्ताम्, जीयासुः, जीयाः० ॥ विजे९षीष्ट, षीयास्ताम्, षीरन्, षीष्ठाः० ॥ भाक ॥ जायिषीष्ट, जेषीष्ट, जायिषीयास्ताम्, जेषीयास्ताम्० ॥ श्वस्तनी ॥ जेता, जेतारौ, जेतारः० ॥ विजेता९, तारौ, तारः० ॥ भाक ॥ जायिता, जेता,

स्थावदभ्यूहनीयाः ॥ तत्र पिबते सर्वं स्थातुल्यम् । दासंज्ञानां तु पण्णां य' शिति विशेषः सम्भवी स स्वस्थानेऽग्रे वक्ष्यते । गादीनां तु पुनरष्टाना स्थासकाशादय विशेषः यदुताद्यतनी पदसैपदे सिचि "यमिरमिनम्यातः-" ॥४।४।८६॥ इत्यनेन इट् सोन्तश्च स्यात् नतु सिचो लुप्, गाङ् गे वा ॥ अजागासीत्, अजागासिष्टाम्, अजागासिषु, अजागासीः, अजागासिषम्, अजागासिष्म। एवं पैं, अपापासीत् । सों सै वा, अवासासीत् । माक् माङ् मेङ् वा, अमामासीत्, अमामासिष्टामित्यादि। तथा शतरि "श्नश्च-"॥४।२।९६॥ इति आ लुकि जागत्, पापत्, अवसासत्, मामत्, इति स्यात्, शेष लेषा स्थातुल्यम् । उक्तेभ्योऽन्ये तु सर्वेऽप्याकारान्ता त्रैङ' स्थाने वक्ष्यन्ते । अथ णिग् । स्थापयति, स्थापयत.० ॥ भाक ॥ स्थाप्यते, स्थाप्येते० ॥ अद्यतनी ॥ अतिष्ठिपत्, अतिष्ठिपताम्, अतिष्ठिपन्०, "तिष्ठतेः" ॥ ४ । २ । ३९ ॥ इत्युपान्त्यस्य इ । तिव्निर्देशात् यङ्लुपि णौ न इः, अतास्थपत् । णिगन्तात्सनि, तिष्ठापयिषति । णिगन्ताण्णिगि, स्थापयति द्रव्य सत्येन । तिष्ठन् । तिष्ठन्ती । प्रतिष्ठमान. । स्थास्यन् । प्रस्थास्यमान. । स्थीयमानम्, प्रस्थीयमानम् । स्थास्यमानम्, स्थायिष्यमाणम् । तस्थिवान्, तस्थुषी, तस्थिवत् । प्रतस्थान. । स्थित्वा । प्रस्थाय । उत्थाय । स्थित, २ वान् । उत्थित, २ वान् । "श्लिषशीङ्-"॥५।१।९॥ इति वा कर्त्तरि क्ते, उपस्थितो गुरु शिष्य. । पक्षे कर्मणि, उपस्थितो गुरु' शिष्येण ॥ भावे उपस्थित शिष्येण, अत्र ' दोसोमा "॥४।४।११॥ इति इ । अनुष्ठित, अत्र "स्थासेनि-"॥२।३।४०॥ इति षत्वम्। सुस्थितो दुस्थित इत्यादौ तु उपसर्गप्रतिरूपका निपाता एते, इत्युपसर्गाभावान्न षत्वम् । स्थाऽता, तुम्, तव्यम् । स्थेयम् । स्थानीयम् । "प्रात्स्थ" (उणादि–९२४) इति णिनि प्रस्थास्यते, प्रस्थायी भविष्यति साधु' । "ग्रहादिभ्यो णिन्"॥५।१।५३॥ स्थायी ॥५॥

म्ना अभ्यासे । "श्रौति-"॥४।२।१०८॥ इति मन', आमनति, आमनत, आमनन्ति०॥ भाक ॥ आम्नाऽयते, येते, यन्ते०, शेष ध्मावत्। यङि तु विशेष', आमाम्नायते ॥ ६ ॥

दाम् दाने । " श्रौति-"॥४।२।१०८॥ इति यच्छ, यच्छति धनम्, प्रयच्छति,

यच्छत', यच्छन्ति०॥ भाक ॥ "ईर्व्यञ्जने-"॥४।३।९७॥ ई', दीयते, दीयेते, दीयन्ते०॥ सप्तमी ॥ यच्छेत्, यच्छेताम्०॥ भाक ॥ दीयेत०॥ पञ्चमी ॥ यच्छतु, यच्छताम्०॥ भाक ॥ दीयताम्० ॥ ह्यस्तनी ॥ अयच्छत्० ॥ भाक ॥ अदीयत० ॥ डुदांग्क्, धातोरद्यतन्यादिषु सन्यङ्णिगादिषु च यानि रूपाणि वक्ष्यन्ते तान्येवास्यापि वक्तव्यानि । नवरं परस्मैपदमेव कर्त्तरि वाच्यमत्राव्यतिपूर्वे त्वात्मनेपदमपि । दास्या संप्रयच्छते । "दामः सम्प्रदानेऽधर्म्ये आत्मने च" ॥२।२।५२॥ इति सम्प्रदानात्तृतीया आत्मनेपदं च ॥ ७ ॥

जि ज्रि अभिभवे । अय जिर्द्वेधा । जयति जिन इति अकर्मकः; जयति शत्रूनिति सकर्मकः ॥ वर्त्तमाना ॥ जयति, जयत', जयन्ति० ॥ "परावेर्जेः", ॥३।३।२८॥ इत्यात्मनेपदे, पराजयते, विजयते, विजयेते, विजयन्ते० ॥ भाक ॥ जीयते, जीयेते, जीयन्ते, जीयसे० एव सप्तम्यादिषु ॥ अद्यतनी ॥ "सिचि परस्मै-" ॥४।३।४४॥ इति वृद्धि, "सः सिज-"॥४।३।६५॥ इति ईश्च, अजैषीत्, अजैष्टाम्, अजैषु', अजैषी, अजैष्टम्, अजैष्ट, अजैषम्, अजैष्व, अजैष्म । सिचो लुकः परत्वेऽपि नित्यत्वात् प्रागेव गुणे व्यजेष्ट, व्यजेषाताम्, व्यजे८षत, ष्ठा., षाथाम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि ॥ भाक ॥ अजायि, अजायि१०षाताम्, षत, ष्ठा', षाथाम्, ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि ॥ अजे९षाताम्, षत, ष्ठाः, षाथाम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि ॥ परोक्षा ॥ "जेर्गिः सन्-" ॥४।१।३५॥ इति गि', जिगाय, जिग्यतु., जिग्यु', "योऽनेकस्वरस्य"॥२।१।५६॥ इति यत्वम् । जिगयिथ, जिगेथ, "सृजि-"॥४।४।७८॥ इति वेट् । जिग्यथुः, जिग्य, जिगय, जिगाय, जिग्यिव, जिग्यिम ॥ विजिग्ये, विजिग्याते, विजिग्यिरे । "ह्यान्तस्थ-"॥२।१।८१॥ इति वा ढे विजिगिढ्वे, ध्वे० ॥ भाक ॥ जिग्ये, जिग्याते, जिग्यिरे, जिग्यिषे, "स्क्रसृ-" ॥४।४।८१॥ इतीट् । जिग्याथे, जिग्यिढ्वे, जिग्यिध्वे, जिग्ये, जिग्यिवहे, जिग्यिमहे ॥ आशी ॥ जीयात्, जीयास्ताम्, जीयासु', जीया'० ॥ विजे९षीष्ट, षीयास्ताम्, षीरन्., षीष्ठा० ॥ भाक ॥ जायिषीष्ट, जेषीष्ट, जायिषीयास्ताम्, जेषीयास्ताम्० ॥ श्वस्तनी ॥ जेता, जेतारौ, जेतार'० ॥ विजेता९, तारौ, तार० ॥ भाक ॥ जायिता, जेता,

जायितारौ, जेतारौ० ॥ भविष्यन्ती ॥ जेष्यति, जेष्यतः, जेष्यन्ति० ॥ विजेऽ-ष्यते, ष्येते, ष्यन्ते० ॥ भाक ॥ जायिष्यते, जेष्यते इत्यादि ॥ क्रियातिपत्तिः ॥ अजेऽष्यत्, ष्यताम्, ष्यन्० । व्यजेऽष्यत, ष्येताम्, ष्यन्त०॥ भाक ॥ अजा-यिष्यत, अजेष्यत, अजायिष्येताम्, अजेष्येताम्० ॥ सनि, जिगीषति, विजि-गीषते । यङि, जेजीयते ॥ भाक ॥ जेजीय्यते० । यङ्लुपि जेजयीति, जेजेति, जेजितः, जेज्यति, "योऽनेकस्वरस्य"॥२।१।५६॥ इति यत्वम्, जेजयीषि, जेजेषि, जेजिथ.० ॥ "परावेर्जेः"॥३।३।२८॥ इत्यत्र प्रकृतिग्रहणे यङ्लुबन्तस्यापीति न्याया-दात्मनेपदे, विजेजिते, विजेज्याते, विजेज्यते० ॥ भाक ॥ जेजीयते, जेजीयेते० ॥ सप्तमी ॥ जेजियात्० । विजेज्यीत० ॥ भाक ॥ जेजीयेत० ॥ पञ्चमी ॥ जेज-यीतु, जेजेतु, जेजितात्, जेजिताम्, जेज्यतु० ॥ विजेजिताम्०॥ भाक ॥ जेजी-यताम्०॥ ह्यस्तनी ॥ अजेजयीत्, अजेजेत्, अजेजिताम्, अजेजयु, "द्व्युक्त-" ॥४।२।९३॥ इति पुस् "पुस्पौ"॥४।३।३॥ गुणः । व्यजेजित० ॥ भाक ॥ अजेजीयत० ॥ अद्यतनी ॥ "सिचि परस्मै-"॥४।३।४४॥ वृद्धौ, अजेजा-यीत्, अजेजायिष्टाम्, अजेजायिषुः, अजेजायीः, अजेजायिषम्० ॥ व्यजे-जयिष्ट० ॥ भाक ॥ अजेजायि, अजेजायिषाताम्, अजेजयिषातामित्यादि ॥ परोक्षा ॥ जेजयांचकार, जेजयाम्बभूव, जेजयामासेत्यादि २७ । विजेजयाञ्चक्रे, बभूव, आस इत्यादि २७ ॥ भाक ॥ जेजयांचक्रे इत्यादि २७ ॥ आशी ॥ जेजीयात्, जेजीयास्ताम्० ॥ भाक ॥ जेजायिषीष्ट, जेजयिषीष्टेत्यादि ॥ श्वस्तनी ॥ जेजयिता० ॥ भाक ॥ जेजायिता, जेजयिता० ॥ भविष्यन्ती ॥ जेजयिष्यति० । विजेजयिष्यते० ॥ भाक ॥ जेजायिष्यते, जेजयिष्यते० ॥ क्रियातिपत्तिः ॥ अजेजयिष्यत्० ॥ भाक ॥ अजेजायिष्यत, अजेजयिष्यते-त्यादि, भावकर्मणोर्ञिटिटौ सर्वत्र विकल्प्यौ । जेज्यितः । जेजयित्वा । जेज-यितुम् । जेज्यत् । एवं चि, नी प्रभृतय ईदीदन्ता ... यङ्लुपि जिवदवगन्तव्या । नवरं श्रि क्षि प्रभृतयो ... स्युस्तेषां अञिति शिति स्वरे "सयोगात्" ॥ २ ।... नतु यत्वम् । यथा—शेश्रियति, शे...

एवमन्यधातुष्वपि। णिगि "णौ क्रीजीङः"॥४।२।१०॥ इत्यात्वे जापयति०। ङे, अजीजपत्। शेष भूवत्॥ णिगन्तात्सनि, जिजापयिषति। यङन्ताण्णिगि जेजीययति, ते। यङ्लुबन्ताण्णिगि जेजापयति, ते। ङे, अजेजपत्। यङ्लुबन्तात्सनि जेजयिषति। णिगि सनि च जिजापयिषति। जयन्। जयन्ती। विजयमानः। जेष्यन्। जेष्यन्ती। विजेष्यमाणः॥ भाक॥ जीयमानम्। जेष्यमाणम्। ञिटि जायिष्यमाणम्। जिगिवान्। विजिग्यानः। जितः२, वान्। जित्वा। विजित्य। जेता। जेतुम्। जेतव्यम्। "क्षय्यजय्य-"॥४।३।९०॥ इति निपातनाज्जेतुं शक्यो जय्यः शत्रुः। शक्यं जेतु जय्य राज्ञा। शक्तेरन्यत्रार्हे जेयोऽन्यः। जयनीयम्॥ अत्र ञिस्त्यक्तः। अन्ये तु ञिस्थाने जृं इति ऋकारान्तं पठन्ति। जरति। ञियते। अजार्षीत्। जजार। जज्ञे। जर्त्ता। जरिष्यति। जरन्। शेष कृग्वत्॥८॥

क्षि क्षये॥ क्षयति। कर्मकर्त्तरि तु क्षीयते। कथं क्षयति देवदत्तः पदार्थं, स एव विवक्षते नाहं क्षयामि, स्वयमेव क्षीयते। अपक्षीयते। उपक्षीयते॥ परोक्षा॥ चिक्षाय, चिक्षियतु, चिक्षियुः, चिक्षयिथ, चिक्षेथ, चिक्षियिम०, शेषं जिवत्, परं गिरादेशो न कार्यः। तथा कर्त्तरि क्ते "क्षेः क्षीच-"॥४।२।७४॥ इति क्तस्य नः, क्षीणः, क्षीणः२, वान् मैत्रः। अधिकरणे, इदमेषां क्षीणम्॥ भावे क्ते तु, क्षितमनेन। क्त्वि, क्षित्वा। "क्षेः क्षी"॥४।३।८९॥ इति क्षीः, प्रक्षीय, उपक्षीय। "क्षय्यजय्यौ-"॥४।३।९०॥ इति निपातनात् शक्यः क्षेतुम् क्षय्यो व्याधिः। शक्यं क्षेतु क्षय्यं बटुना। शक्तेरन्यत्र त्वर्हे क्षेयम्॥९॥

इ दु द्रु श्रुं स्रु गतौ। इ। अयति, उदयति०॥ भाक॥ ईयते॥ ह्यस्तनी॥ आयत्, आयताम्, आयन्०॥ भाक॥ ऐयत, ऐयेताम्०॥ अद्यतनी॥ ऐषीत्, ऐष्टाम्, ऐषु०॥ भाक॥ आयि, आयिषाताम्, ऐषाताम्०। ध्वमि, ऐड्ढ्वम्, ऐढ्वम्, आयिध्वम्, आयिढ्वम्, आयिड्ढ्वम्। सर्वत्र "स्वरादेस्तासु"॥४।४।३१॥ इति वृद्धि॥ परोक्षा॥ इयाय, इयतु, अत्र "योऽनेकस्वरस्य"॥२।१।५६॥ इति द्वित्वे सति यत्वम्, इयुः, इययिथ, इयेथ, इयथुः, इय, इयाय, इयय, इयिव, इयिम॥ भाक॥ इये०॥ आशीः॥ ईयात्०॥ भाक॥ आयिषीष्ट, एषीष्ट०॥ श्वस्तनी॥ एता॥ भाक॥ आयिता, एता॥ भविष्यन्ती॥ एष्यति, आ एष्यति "उपसर्गस्यानिणे-"

॥१।२।१९॥ इति आङ्लोपे, एष्यति, समेष्यति ॥ भाक ॥ आयिष्यते, एष्यते ॥ क्रियातिपत्तिः ॥ ऐष्यत ॥ भाक ॥ आयिष्यत, ऐष्यतेत्यादि । "नामिनोऽनिट्" ॥४।३।३३॥ इति सन. कित्त्वे "स्वरहन-"॥४।१।१०४॥ इति दीर्घे "स्वरादेः-" ॥४।१।४॥ इति पस्य द्वित्वे "सन्यस्य"॥४।१।५९॥ इति ई. । उदीषिपति । णौ. आययति । डे, आयीयत् । उदयन् । ईयिवान् । इत्वा । आ इत्वा, एत्य । उदित्य । उदित.२, वान् । एता । आ एता एता । एतुम्, एतव्यम् । एयम् । अयनीयम् ॥ द्रुशू गतौ । द्रु । द्रवति, विद्रवति, उपद्रवति० ॥ भाक ॥ द्रूयते० ॥ अद्यतनी ॥ "णिश्रि-"॥३।४।५८॥ इति डे, अदुद्रुवत, अदुद्रुवताम्, वन्० ॥ वाम ॥ भाक ॥ अद्रावि, अद्राविषाताम्, अद्रोषाताम्० ॥ परोक्षा ॥ दुद्राव, दुद्रुवतु । "स्कसृ-"॥४।४।८१॥ इत्यत्र द्रुवर्जनान्नेट्, दुद्रोथ, दुद्रुव, दुद्रुम ॥ भाक ॥ दुद्रुवे । द्रोता । द्रोष्यति । दुद्रूषति । दोद्रूयते । दोद्रवीति, दोद्रोति, अग्रे भूवत् । अद्यतन्यां तु प्रकृतिग्रहणाण् "णिश्रि-" ॥ ३ । ४ । ५८ ॥ इति डे, अदोद्रुवत् । णौ "चल्याहारार्थ-"॥३।३।१०८॥ इति फलवत्कर्त्तर्यपि परस्मैपदे द्रावयत्यय.। णौ डे, "असमानलोपे-"॥४।१।६३॥ इति सन्वद्भावात् "श्रुस्रुद्रु-"॥४।१।६१॥ इति सनीव वा इ', अदिद्रवत्, अदुद्रवत्। णौ सनि "श्रुस्रु-"॥४।१।६१॥ इति पूर्वस्योतो वा इ., दिद्रावयिषति, दुद्रावयिषति । द्रुत । द्रुत्वा । उपद्रुत्य । द्रोता । द्रोतुम् । एव स्रुरपि साध्य । स्रवति, प्रस्रवति ॥ भाक ॥ स्रूयते ॥ अद्यतनी ॥ "णिश्रि-"॥३।४।५८॥ इति डे, असुस्रुवत् ॥ भाक ॥ अस्रावि ॥ परोक्षा ॥ सुस्राव, सुस्रुवतु, सुस्रोथ, सुस्रुव, सुस्रुम ॥ भाक ॥ सुस्रुवे । स्रोता । स्रोष्यति । सनि, सुस्रूषति । कुटिलार्थेति यङि, सोस्रूयते । सोस्रवीति, सोस्रोति । यङ्लुपि सनि, सोस्रविषति । णौ "चल्य-"॥३।३।१०८॥ इति परस्मैपदे, स्रावयति तैलं चैत्र । णौ डे वा इ, असिस्रवत्, असुस्रवत् । णौ सनि "श्रुस्रु-"॥४।१।६१॥ इति वा इ , सिस्रावयिषति, सुस्रावयिषति॥१०॥११॥१२॥

सुं प्रसवैश्वर्ययो. । गतावप्येके । सवति । सूयते । असौषीत् । अपोपदेशान्नपत्व, सुसाव । सोता । सोष्यति। शेष पुवत्, पर न पत्वम्॥ १३ ॥

स्मृ चिन्तायाम् । "स्मृत्यर्थ-"॥२।२।११॥ इति वा कर्मत्वे मातुर्मातर वा

सारति, स्मरत । वि, सु, अप, अनु, स, पूर्वोऽप्येवम् ॥ भाक ॥ क्ये, "क्ययङा॰ शीर्ये" ॥४।३।१०॥ इति गुणः, सर्यते, सर्येते॰॥ ह्यस्तनी ॥ असरत् ॥ भाक ॥ असर्यत ॥ अद्यतनी ॥ असार्षीत्, असार्ष्टाम्, असार्षुः ॥ भाक ॥ असारि, ञिटि असारिषाताम्, "सयोगादृतः" ॥४।४।३७॥ इति वेटि अस्मरिषाताम्, अस्मृषाताम्, अत्र "ऋवर्णाद्" ॥४।३।३६॥ इति अनिट् सिच् कित् । असारिषत, असरिषत, अस्मृषत, असारिष्ठाः, अस्मरिष्ठाः, अस्मृथा ॰, असारिध्वम्, असारिढ्वम्, असारिड्ढ्वम्, असरि३ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम् । अस्मृ२ढ्वम्, ड्ढ्वम्, ॥ परोक्षा ॥ सस्मार । "सयोगादृदर्त्तेः" ॥४।३।९॥ इति गुणे, सस्मरतुः, सस्मरुः, सस्मर्थ, "ऋतः" ॥४।४।७२॥ इति थवि नेट्, सस्मरथुः, सस्मर, सस्मार, सस्मर, सस्मरिव, सस्मरिम । सस्मर१०रे, राते, रिरे, रिषे, रिढ्वे, रिध्वे॰॥ आशी॰ ॥ स्मर्यात्, ९ स्ताम्, सु ॰॥ भाक ॥ स्मारिषीष्ट । "सयोगादृत" ॥४।४।३७॥ इति वेटि, स्मरिषीष्ट । "ऋवर्णाद्" ॥४।३।३६॥ इति कित्त्वे, स्मृषीष्ट । एव षीयास्तामित्यादावपि त्रीणि२ रूपाणि ॥ श्वस्तनी ॥ स्मर्त्ता, स्मर्त्तारौ॰॥ भाक ॥ स्मारिता, स्मर्त्ता॰॥ भविष्यन्ती । "हन्नृत-" ॥४।४।४९॥ इति, इटि, स्मरिष्यति॰॥ भाक ॥ स्मारिष्यते, स्मरिष्यते॰॥ क्रियातिपत्तिः ॥ अस्मरिष्यत् ॥ भाक ॥ वा ञिटि, अस्मारिष्यत, अस्मरिष्यत॰॥ सनि, "स्मृदृश" ॥३।३।७२॥ इत्यात्मनेपदे, सुस्मूर्षते । यङि, सास्मर्यते । सरी, रि, र्३, स्मरीति, अत्र रीरिरां३पृथक्योजनेनोदाहरणत्रय ज्ञातव्यम्, एवमग्रेऽन्यत्र च । सरी, रि, र्३, स्मर्त्ति । शेष यङ्लुबन्तकृग्वत् । पर "क्ययङाशीर्ये" ॥४।३।१०॥ इत्यनेन क्ये, आशीर्येव गुण॰ सरीस्मर्यते । सरीस्मर्यादित्यादि । तथा "सयोगादृत" ॥४।४।३७॥ इत्यनेन वा इट् भणनादद्यतन्याशिषोरात्मनेपदे यथा ऽय स्मृधातुरभिहितस्तथैव यङ्लुबन्तोऽप्यय भणितव्य॰ ॥ णौ, स्मारयति, विस्मारयति । आध्याने घटादित्वात् ह्रस्वे, स्मरयति । ङे, "स्मृदृत्वर-" ॥४।१।६५॥ इति पूर्वस्य अ॰, असस्मरत् । णौ सनि सिस्मारयिषति । अषपाठाच्च षः । स्मरति कोकिलो वनगुल्मम् । स्मरयत्येन वनगुल्म॰ । "अणिक्कर्मणिक्कर्तृकाण्णिगो-" ॥३।३।८८॥ इति स्मृत्यर्थवर्जनान्नात्मनेपदम् । स्मरन् । स्मर्यमाणम् । स्मरिष्यन् । स्मरिष्यमाणम् । स्मारिष्यमाणम् । सस्मृवान् । सस्म्रुषी । सस्म्राणम् । स्मृत २, वान् । स्मृत्वा । विस्मृत्य । स्मर्त्ता । स्मर्त्तुम् । स्मर्त्तव्यम् । स्मरणीयम् । स्मारणीयम् । स्मार्य्यम् ॥ १४ ॥

॥१।२।१९॥ इति आङ्लोपे, एष्यति, समेष्यति ॥ भाक ॥ आयिष्यते, एष्यते ॥ क्रियातिपत्ति• ॥ ऐष्यत ॥ भाक ॥ आयिष्यत, ऐष्यतेत्यादि । "नामिनोऽनिट्" ॥४।३।३३॥ इति सनः कित्त्वे "स्वरहन-"॥४।१।१०४॥ इति दीर्घे " स्वरादेः-" ॥४।१।४॥ इति षस्य द्वित्वे 'सन्यस्य"॥४।१।५९॥ इति ई । उदीषिषति । णौ, आययति । ङे, आयियत् । उदयन् । ईयिवान् । इत्वा । आ इत्य, एत्य । उदित्य । उदित २, वान् । एता । आ एता एता । एतुम्, एतव्यम् । एयम् । अयनीयम् ॥ द्रुश् गतौ । द्रु । द्रवति, विद्रवति, उपद्रवति० ॥ भाक ॥ द्रूयते०॥ अद्यतनी ॥ "णिश्रि-"॥३।४।५८॥ इति ङे, अदुद्रुवत, अदुद्रु८वताम्, यन्० ॥ वाम ॥ भाक ॥ अद्रावि, अद्राविपाताम्, अद्रोषाताम्० ॥ परोक्षा ॥ दुद्राव, दुद्रुवतु' । "स्कसृ-"॥४।४।८१॥ इत्यत्र द्रुवर्जनात्त्वेट्, दुद्रोथ, दुद्रुव, दुद्रुम ॥ भाक ॥ दुद्रुवे । द्रोता । द्रोष्यति । दुद्रूषति । दोद्रूयते । दोद्रवीति, दोद्रोति, अग्रे भूवत् । अद्यतन्यां तु प्रकृतिग्रहणाण् "णिश्रि-" ॥ ३ । ४ । ५८ ॥ इति ङे, अदोद्रुवत् । णौ "चल्याहारार्थ-"॥३।३।१०८॥ इति फलवत्कर्त्तर्यपि परस्मैपदे द्रावयत्यय । णौ ङे, "असमानलोपे-"॥४।१।६३॥ इति सन्वद्भावात् "श्रुस्रुद्रु-"॥४।१।६१॥ इति सनीव वा इ', अदिद्रवत्, अदुद्रवत् । णौ सनि 'श्रुस्रु-"॥४।१।६१॥ इति पूर्वस्योतो वा इ, दिद्रावयिषति, दुद्रावयिषति । द्रुतः । द्रुत्वा । उपद्रुत्य । द्रोता । द्रोतुम् । एव स्रुरपि साध्य' । स्रवति, प्रस्रवति ॥ भाक ॥ स्रूयते ॥ अद्यतनी ॥ "णिश्रि-"॥३।४।५८॥ इति ङे, असुस्रुवत् ॥ भाक ॥ अस्रावि ॥ परोक्षा ॥ सुस्राव, सुस्रुवतु, सुस्रोथ, सुस्रुव, सुस्रुम ॥ भाक ॥ सुस्रुवे । स्रोता । स्रोष्यति । सनि, सुस्रूषति । कुटिलार्थेति यङि, सोस्रूयते । सोस्रवीति, सोस्रोति । यङ्लुपि सनि, सोस्रविषति । णौ "चल्य-"॥३।३।१०८॥ इति परस्मैपदे, स्रावयति तैलं चैत्र । णौ ङे वा इ, असिस्रवत्, असुस्रवत् । णौ सनि "श्रुस्रु-"॥४।१।६१॥ इति वा इ, सिस्रावयिषति, सुस्रावयिषति ॥१०॥११॥१२॥

सुं प्रसवैश्वर्ययो । गतावप्येके । सवति । सूयते । असौषीत् । अपोपदेशान्न षत्व, सुसाव । सोता । सोष्यति । शेष पुवत्, परं न षत्वम् ॥ १३ ॥

स्मृ चिन्तायाम् । "स्मृत्यर्थे-"॥२।२।११॥ इति वा कर्मत्वे मातुर्मातर वा

स्मरति, स्मरत.। वि, सु, अप, अनु, स, पूर्वोऽप्येवम् ॥ भाक ॥ क्ये, "क्ययङा-शीर्ये"॥४।३।१०॥ इति गुणः, स्मर्यते, स्मर्येते०॥ ह्यस्तनी ॥ अस्मरत्॥ भाक ॥ अस्मर्यत ॥ अद्यतनी ॥ अस्मार्षीत्, अस्मार्ष्टाम्, अस्मार्षुः ॥ भाक ॥ अस्मारि, ञिटि अस्मारिषाताम्, "संयोगादृतः" ॥४।४।३७॥ इति वेटि अस्मरिषाताम्, अस्मृषाताम्, अत्र "ऋवर्णाद्"॥४।३।३६॥ इति अनिट् सिच् कित्। अस्मारिषत, अस्मरिषत, अस्मृषत, अस्मारिष्ठाः, अस्मरिष्ठाः, अस्मृथाः०, अस्मारिध्वम्, अस्मारिढ्वम्, अस्मारिड्ढ्वम्, अस्मरि३ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्। अस्मृ२ढ्वम्, ड्ढ्वम्, ॥ परोक्षा ॥ सस्मार। "संयोगादृदर्त्तेः"॥४।३।९॥ इति गुणे, सस्मरतुः, सस्मरुः, सस्मर्थ, "ऋतः"॥४।४।७९॥ इति थवि नेट्, सस्मरथु, सस्मर, सस्मार, सस्मर, सस्मरिव, सस्मरिम।सस्मर१०रे, राते, रिरे, रिषे, रिढ्वे, रिध्वे०॥ आशीः॥ स्मर्यात्, ९ स्ताम्, सुः०॥ भाक ॥ स्मारिषीष्ट। "संयोगादृतः"॥४।४।३७॥ इति वेटि, स्मरिषीष्ट।"ऋवर्णाद्"॥४।३।३६॥ इति कित्त्वे, स्मृषीष्ट। एव षीयास्तामित्यादावपि त्रीणि२ रूपाणि॥ श्वस्तनी॥ स्मर्त्ता, स्मर्त्तारौ०॥ भाक॥ स्मारिता, स्मर्त्ता०॥ भविष्यन्ती। "हनृत-"॥४।४।४९॥ इति इटि, स्मरिष्यति०॥ भाक॥ स्मारिष्यते, स्मरिष्यते०॥ क्रियातिपत्तिः॥ अस्मरिष्यत्॥ भाक॥ वा ञिटि, अस्मारिष्यत, अस्मरिष्यत०॥ सनि, "स्मृदृश"॥३।३।७२॥ इत्यात्मनेपदे, सुस्मूर्षते। यङि, सास्मर्यते। सरी, रि, र्३, स्मरीति, अत्र रीरिरां३पृथक्-योजनेनोदाहरणत्रय ज्ञातव्यम्, एवमग्रेऽन्यत्र च। सरी, रि, र्३, स्मर्त्ति। शेषं यङ्लुबन्तकृवत्। पर "क्ययङाशीर्ये"॥४।३।१०॥ इत्यनेन क्ये, आशीर्येव गुणः सरीस्मर्यते। सरीस्मर्यादित्यादि। तथा "संयोगादृत"॥४।४।३७॥ इत्यनेन वा इट् भणनादद्यतन्याशिषोरात्मनेपदे यथा ऽय स्मृधातुरभिहितस्तथैव यङ्लुबन्तो ऽप्यय भणितव्य ॥ णौ, स्मारयति, विस्मारयति। आध्याने घटादित्वात् ह्रस्वे, स्मरयति। ङे, "स्मृदृत्वर-"॥४।१।६५॥ इति पूर्वस्य अः, असस्मरत्। णौ सनि सिस्मारयिषति। अपपाठाञ्च प। स्मरति कोकिलो वनगुल्मम्। स्मरयत्येन वनगुल्म। "अणिक्कर्मणिक्कर्तृकाण्णिगो-"॥३।३।८८॥ इति स्मृत्यर्थवर्जनान्नात्मनेपदम्। स्मरन्। स्मर्यमाणम्। स्मरिष्यन्। स्मरिष्यमाणम्। स्मारिष्यमाणम्। सस्मृवान्। सस्मुषी। सस्माणम्। स्मृत २, वान्। स्मृत्वा। विस्मृत्य। स्मार्त्तं। स्मर्त्तुम्। स्मर्त्तव्यम्। स्मरणीयम्। स्मारणीयम्। स्मार्य्यम्॥ १० ८

सृं गतौ । सरति, प्रसरति, अनुसरति, उपसरति, अपसरति, ससरति, निःसरति, अभिसरति । अत्यादौ शिति "वेगे सर्त्तेर्धाव्"॥४।२।१०७॥ धावति ॥ भाक॥ क्ये, स्रियते । अद्यतनी ॥ "सर्त्यर्त्तेर्वा"॥३।४।६१॥ इति वा अङ्, असरत्, सरताम्, रन्०॥ पक्षे असार्षीत्, असार्ष्टाम्० ॥ भाक॥ असारि, असारिषाताम्, असृषाताम्० ॥ परोक्षा ॥ ससार, सस्रतु. । "स्क्रसृ-"॥४।४।८१॥ इत्यत्र सृवर्जनान्नेट्, ससर्थ, सस्रव, सस्रम ॥ भाक ॥ सस्रे । सर्त्ता । सरिष्यति । सनि, सिसीर्षति । यङि, सेस्रीयते । सरी, रि, र्‌३, सरीति, सरी, रि, र्‌३, सर्त्ति० ॥अद्यतनी ॥ असरिसारीत्। शतरि, सरी, रि, र्‌३, स्रत्। णौ, सारयति । णौ, सनि, सिसारयिषति, षोपदेशाभावान्न षः । अद्यतनीशित्कर्तृवर्जं सर्वं स्तृ कृग्वत् । पर शतरि, सरन् । सरन्ती ॥ १५ ॥

ऋ प्रापणे च, चात् गतौ च। "श्रौति-"॥४।२।१०८॥ इति ऋच्छ, ऋच्छति, ऋच्छन, ऋच्छन्ति० ॥ "समोगमि-"॥३।३।८४॥ इति कर्मण्यसत्यात्मनेपदे, समृच्छते, च्छेते, च्छन्ते॥ भाक ॥ "क्ययङा-"॥४।३।१०॥ इति गुण, अर्यते, अर्येते, अर्यन्ते० ॥ ह्यस्तनी ॥ "स्वरादेस्तासु"॥४।४।३१॥ इति वृद्धि, आर्च्छत्, आर्च्छताम्, आर्च्छन्०॥ समार्च्छत, समार्च्छेताम्० ॥ भाक॥ क्ये, आर्यत, आर्येताम्, आर्यन्त०॥ अद्यतनी ॥ "सर्त्यर्त्तेर्वा"॥३।४।६१॥ इति वा अङि, "ऋवर्णदृशोऽङि"॥४।३।७॥ इति गुणे "स्वरादे -"॥४।४।३१॥ इति वृद्धिः आर् । आरत्, निरारत्, आरताम्, आरन्०॥ पक्षे, आर्षीत्, आर्ष्टाम्, आर्षु० ॥ समारत, समार्ष्ट०, सिच्लोपात् प्रागेव नित्यत्वाद् वृद्धि. ॥ भाक ॥ आरि, आरिषाताम्, आर्षाताम, आरिषत, आर्षत, आरिष्ठा , आर्ष्ठा०॥ परोक्षा॥ द्वित्वे वृद्धौ च आर। "संयोगादृदर्त्तेः"॥४।३।९॥ इति गुणे, आरतुः, आरुः। "ऋवृव्ये"॥४।४।८०॥ इति इटि, आरिथ, आरथु , आर२, आरिव, आरिम। समारे, समाराते०॥ भाक॥ आरे, आराते, आरिरे०॥ आशी ॥ अर्यात्, अर्यास्ताम्, अर्यासु०। समृषीष्ट०॥ भाक ॥ ऋषीष्ट, "ऋवर्णात्"॥४।३।३६॥ इति कित्त्वम् । आरिषीष्ट । ऋषीयास्ताम्, आरिषीयास्ताम्० ॥ श्वस्तनी ॥ अर्त्ता, अर्त्तारौ० ॥ समर्त्ता, समर्त्तारौ० ॥ भाक ॥ अर्त्ता, आरिता, अर्त्तारौ, आरितारौ० ॥ भविष्यन्ती ॥ अरिष्यति, "हन्नृत -"॥४।४।४९॥

इतीट् । अरिप्यत० । समरिप्यत० ॥ भाक ॥ आरिप्यते, अरिप्यते, आरिप्येते, अरिप्येते० ॥ क्रियातिपत्तिः ॥ आरिप्यत्, आरिप्यताम्०। समारिप्यत० ॥ भाक ॥ आरिप्यत, आरिप्येताम्०, अत्र ञिटिटोर्वृध्या रूपसादृश्यम् । सनि, "ऋस्मि-" ॥४।४।४८॥ इति इटि, अरिरिषति । ननु अत्र प्राक्तुस्वरे इति वचनात्कथं न गुणात्प्राग् द्वित्वम्, उच्यते । स्वरादित्वाद्धातोर्द्वितीयांशस्येटो द्वित्वे कर्त्तव्ये द्वित्वनिमित्तस्य स्वरस्याभावात् द्वित्वात् प्राग् गुण एव। भृश पुनः२ र्वा ऋच्छति, "अत्यर्त्ति-"॥३।४।१०॥ इति यङि, "क्ययङा-"॥४।३।१०॥ इति गुणे "स्वरादेर्द्वितीयः"॥४।१।४॥ इति यस्य द्वित्वे व्यञ्जनस्यानादेर्लुकि, "आ गुणा-"॥४।१।४८॥ इति आत्वे, अरार्यते । अर्त्तेर्यङ्लुपि द्वित्वे ऋतोऽति "रिरौ च लुपि"॥४।१।५६॥ इति रागमे अर् इति रूप स्यात। रि री आगमे तु "पूर्वस्यास्वे-"॥४।१।३७॥ इति इयि, अरियृ इति रूपं स्यात् । एके ळियादेशं नेच्छन्ति, तन्मते "इवर्णादेरस्व-"॥१। २।२१॥ इति यत्वे अर्यृ इति रूप स्यात् । तदेव अर् १ अरियृ २ अर्यृ ३ इति ऋधातो रूपत्रयं जातम् । आद्यं रूप विभक्तिषु प्रथमं संचार्य्यते, अररीति, अरर्ति, अरृतः, "इवर्णादेः" ॥ १ । २ । २१ ॥ इति रत्वे रोरे लुकि पूर्वस्य दीर्घत्वे च आरति, अररीषि, अरर्षि, अरृथ०, अरृथ, अररीमि, अरर्मि, अरृवः, अरृमः ॥ भाक॥ क्ये "सयोगाद्दर्त्ते"॥४।३।९॥ इत्यत्र तिव्निर्देशात् "क्ययङ-"॥४।३।१०॥ इति गुणाभावे "रिः शक्या-"॥४।३।११०॥ इति रि आदेशे रोरे लुकि, पूर्वस्य दीर्घत्वे, आरियते, आरियेते, आरियन्ते० २१ ॥ सप्तमी ॥ अरृयात्, अरृयाताम्, अरृयु०॥ भाक ॥ क्ये रित्वादौ, आरियेत, आरियेयाताम्, आरियेरन्० १८ ॥ पञ्चमी ॥ अररीतु, अरर्तु, अरृतात्, अरृताम् । रत्वे, रोरेलुक्दीर्घयो० । आरतु, अरृहि, अरृतात्, अरृतम्, अरृत, अरराणि० ॥ भाक ॥ आरियताम्, आरियेताम्०२१॥ ह्यस्तनी ॥ "स्वरादेस्तासु"॥४।४।३१॥ इति वृद्धौ, आररीत् । गुणे "व्यञ्जनादे-" ॥४।३।७८॥ इति दिव्लोपे, आर०, आरृताम्, "द्व्युक्त-"॥४।२।९३॥ इति पुसि "पुस्पौ"॥४।३।३॥ इति गुणे आररु०, आररी , आरः। "से स्दृधाम्"॥४।३।७९॥ इति सिव्लुक् । आरृतम्, आरृत, आररम्, आरृव, आरृम॥ भाक॥ आरियत, आरियेताम्० २०॥ अद्यतनी॥ सिचि इटि ईति "सिचि परस्मै-"॥४।३।४४॥ इति वृद्धौ

इट ईति सिचोलुपि आरारीत्, आरारिष्टाम्, आरा०रिपु, री, रिष्टम्, रिष्ट, रिषम्, रिष्व, रिष्म ॥ भाक ॥ ञिचि आरारि । ञिटिटोः आरारिषाताम्, आररिषाताम्, आरारिषत, आररिषत, आरारि३ध्वम्, ढ्वम्, इढ्वम्, आररि३ध्वम्, ढ्वम्, इढ्वम्,० ३० ॥ परोक्षा ॥ आमि परोक्षाकार्याभावात् गुणे, अरराञ्चकारेत्यादि १० । अरराबभूवेत्यादि ९ । अररामासेत्यादि ९ ॥ भाक ॥ अररांचक्रे इत्यादि ९ । अरराबभूवे इत्यादि ९ । अररामाहे इत्यादि ९ । एव ५५ ॥ आशी ॥ रिः शक्य इति रि', रोरे लुकुदीर्घो, आरियात्, आरियास्ताम्० ॥ भाक ॥ वा ञिटि अरारिषीष्ट । इटि अररिषीष्ट, अरारिषीयास्ताम्, अररि-षीयास्ताम् । अरारि२षीध्वम्, षीढ्वम् ० २९ ॥ श्वस्तनी ॥ अररि९ता, तारौ, तार ० ॥ भाक ॥ अरारिता, अररिता इत्यादि २७ ॥ भविष्यन्ती ॥ अररि९ ष्यति, ष्यत, ष्यन्ति०॥ भाक ॥ अरारिष्यते, अररिष्यते० २७ ॥ क्रियातिपत्ति ॥ आररिष्यत्० ॥ भाक ॥ आरारिष्यत, आररिष्यतेत्यादि २७ ॥ एव अर् इत्यस्य रूपाणि २७५॥ एव तदपरस्पयोरपि, तदेवं यङ्लुपि ऋरूपाणि ८२५ स्यु ॥ अथ द्वितीय रूप दर्श्यते। अरियरीति, अरियर्त्ति, अरियृत, अरियृति इत्यादि॥ भाक॥ क्ये रि' । अरिय्रियते, अरिय्रियेते० ॥ ह्यस्तनी ॥ आरियरीत्, आरिय', आरि-यृताम्० ॥ भाक ॥ आरिय्रियत० ॥ अद्यतनी ॥ आरियारीत्, आरियारिष्टाम्०॥ भाक ॥ आरियारि, आरियारिषाताम्, आरियरिषाताम्० ॥ परोक्षा ॥ अरियरा-चकारेत्यादि ५५ ॥ आशी ॥ अरिय्रियात् ० ॥ भाक ॥ अरियारिषीष्ट, अरिय-रिषीष्ट०, शेष प्रागुक्तानुसारेण २ ॥ अथ अर्यृरूपमुच्यते ॥ अर्यरीति, अर्यर्त्ति, अर्यृत, अर्यृति० ॥ भाक ॥ अर्य्रियते० ॥ पञ्चमी ॥ अन्तु, अर्यृतु० ॥ भाक ॥ अर्य्रियताम्० ॥ ह्यस्तनी ॥ आर्यरीत्, आर्य'० ॥ भाक ॥ आर्य्रियत०॥ अद्यतनी ॥ आर्यारीत्, आर्यारिष्टाम्० ॥ भाक ॥ आर्यारि, आर्यारिषाताम्, आर्यरिषाताम्० ॥ परोक्षा ॥ अर्यराञ्चकारेत्यादि ॥ आशी ॥ अर्य्रियात्०, शेषं सुगमम्॥"समोगमृच्छि-"॥३।३।८४॥ इत्यत्रार्त्तेस्तिव्निर्देशाद्यङ्लुपि नात्मनेपदम्। समरर्त्ति, समररीति१। समरियर्त्ति, समरियरीति २। समर्यर्त्ति, समर्यरीति ३॥ अर्त्ते-र्यङ्लुपि अर्त्तीति वाक्ये शतरि द्वित्वे पूर्वस्याले रागमे धातोश्च रत्वे "रो रे लुग्-"

॥१।३।४१॥ इति रलोपे पूर्वदीर्घत्वे च । आरत्, अरियृत्, अर्यृत् । णिगि, "अर्त्तिरी-"॥४।२।२१॥ इति पौ "पुस्पौ"॥४।३।३॥ इति गुणे, अर्पयति ॥भाक॥ अर्प्यते, अर्प्येते० ॥ अद्यतनी ॥ डे र पश्चाद्द्वित्वेऽप्य "स्वरादे.-"॥४।१।४॥ इति पिद्वित्वे णेर्लुकि, आर्पिपत्, आर्पिपताम्, आर्पिपन्० ॥ भाक ॥ आर्प्पि, आर्पिपाताम्, आर्पयिपाताम्०। "स्वरग्रह-"॥३।४।६९॥ इति वा ञिटि, "अर्त्तिरी-"॥४।२।२१॥ इत्यत्र तिव्निर्देशाद्यङ्लुपि णौ न पु । अरारयति, अरियारयति, अर्यारयति । ऋच्छन्। समृच्छमानः। अर्यमाणम्। अरिष्यन्। आरिष्यमाणम्, अरिष्यमाणम्। क्वसौ एकस्वरत्वमन्ते भावि इति कृत्वा द्वित्वात्प्रागेव परत्वेन "घसेकस्वर-"॥४।४।८२॥ इति इटि पश्चाद्द्वित्वे, "ऋतोऽत्" ॥४।१।३८॥ इत्यत्वे "अस्यादे.-" ॥४।१।६८॥ इत्यात्वे एकस्य स्थाने भवन् अल्पाश्रितो रत्वादेश इति "अवर्णस्ये-"॥१।२।६॥ इत्यर बाधित्वा "इवर्णादे-" ॥ १ । २ । २१ ॥ इति रत्वे आरिवान् । आराणम् । क्ते, "ऋह्री-" ॥४।२।७६॥ इति वा नत्वे, ऋण अधमर्णदेयम् । ऋत सत्यम् । ऋत्वा । अर्त्ती । अर्तुम् ॥ १६ ॥

तॄ प्लवनतरणयो । तरति, वितरति, अवतरति, उत्तरति, निस्तरति, तरत, तरन्ति०॥ भाक ॥ तीर्यते, तीर्येते, तीर्यन्ते०॥ सप्तमी ॥ तरेत्, तरेताम्, तरेयुः, तरे०॥ भाक ॥ तीर्येत, तीर्येयाताम्०॥ पञ्चमी ॥ तरतु, तरतात्, तरताम्, तरन्तु, तर, तरतात्, तरतम्, तरत, तराणि०॥ भाक ॥ तीर्यताम्, तीर्येताम् ०॥ ह्यस्तनी ॥ अतरत्, अतरताम्, अतरन्, अतर.० ॥ भाक ॥ अतीर्यत, अतीर्येताम्०॥ अद्यतनी ॥ अतारीत्, अतारिष्टाम्, अतारिषु, अतारीः, रिष्टम्, रिष्ट, रिषम्, रिष्व, रिष्म ॥ भाक ॥ अतारि, "स्वरग्रह-" ॥ ३ । ४ । ६९ ॥ इति वा ञिटि, "इट्सिजाशिषोरा-" ॥ ४ । ४ । ३६ ॥ इति वेटि "वृतो नवा-" ॥ ४ । ४ । ३५ ॥ इति इटो वा दीर्घत्वे "ऋवर्णात्" ॥ ४ । ३ । ३६ ॥ इत्यनिटो. सिजाशिषो' कित्त्वे च चातूरूप्यम् । अतारिषाताम्, अतरिषाताम्, अतरीषाताम्, अतीर्षाताम् ४। अतारिषत, अतरिषत, अतरीषत, अतीर्षत ४। अतारिष्ठा, अतरिष्ठाः, अतरीष्ठा, अतीर्ष्ठा.४। अतारिषाथाम्, अतरिषाथाम्, अतरीषाथाम्, अतीर्षाथाम् ४। अतारिध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, अतरिध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, अतरीध्वम्,

द्वम्, इद्वम्; अतीर्ढ्वम्, इढ्वम्, ४ इत्यादि ॥ परोक्षा ॥ ततार, प्राक्तुस्वरे इति भणनात्पूर्वं द्वित्वे 'स्कृच्छृतोऽकि-'॥४।३।८॥ इति गुणे "तृत्रप-" ॥४।१।२५॥ इति अत एत्वे न च द्वि. इति वचनात् कृतमपि द्वित्व निवर्त्तते । तेरतु, तेरु, तेरिथ, तेरथु', तेर, ततर, ततार, तेरिव, तेरिम ॥ भाक ॥ तेरे, तेराते, तेरिरे, तेरिपे, तेराथे, तेरिध्वे, ढ्वे, तेरे, तेरिवहे, तेरिमहे ॥ आशी. ॥ तीर्यात, तीर्यास्ताम्० ॥ भाक ॥ "वृतो नवा-" ॥४।४।३५॥ इत्यत्राशिपि इटो दीर्घत्वनिषेधात्, तारिषीष्ट, तरिपीष्ट, तीर्षीष्ट इत्यादि ३।३। तारिषीध्वम्, तारिषीढ्वम्, तरिपी २ द्वम्, ध्वम्, तीर्षीढ्वम् ॥ श्वस्तनी ॥ तरिता, तरीता, तरितारौ, तरीतारौ०॥ भाक ॥ तारिता, तरीता, तरितेत्यादि ३।३॥ भवि० ॥ तरिष्यति, तरीष्यति० ॥ भाक ॥ तारिष्यते, इटो वा दीर्घे, तरीष्यते, तरिष्यते०। एव क्रियातिपत्तावपि । अत्र सर्वविभक्तिषु यान्येव कर्मणि रूपाणि तान्येव कर्मकर्त्तर्यपि, नवरमद्यतन्या कर्मकर्त्तरि ते "स्वरदुहो वा"॥३।४।९०॥ इति वा ञिचि, पक्षे वा ञिटि, तत्पक्षे वेटि, इटो वा दीर्घत्वे च पाञ्चरूप्यम्। अतारि, अतारिष्ट, अतरिष्ट, अतरीष्ट, अतीर्ष्ट ५ । अतारिपातामित्यादि तु, शेष सर्वं कर्मवत् । सनि, "इवृध-" ॥४।४।४७॥ इति वेटि "वृतो नवा-" ॥४।४।३५॥ इति वा दीर्घत्वे च, तितरिपति, तितरीपति, तितीर्षति०, अत्र "नामिनोऽनिट् ॥४।३।३३॥ इति सन क्त्विाद् इर् ॥ यङि, तेतीर्यते, तेतीर्येते, तेतीर्यन्ते० ॥ भाक ॥ क्ये "अत "॥४।३।८२॥ इति यङोऽल्लोपे "योऽशिति "॥४।३।८०॥ इति य्लोपे च, तेतीर्येते, तेतीर्येते० ॥ अद्यतनी ॥ अतेतीरिष्ट । सिचि इटि च सति, अतो यश्च लोपौ प्राग्वत् । अतेतीरिपाताम्, अतेतीरिपत०॥ भाक॥ अतेतीरि । अतेतीरिषाताम् । अतेतीरिपत० ॥ परोक्षा ॥ तेतीराञ्चक्रे, तेतीराञ्चक्राते । इत्यादि २७ ॥ भाक ॥ तेतीराञ्चक्रे इत्यादि २७ ॥ आशी ॥ तेतीरिषीष्ट० ॥ श्वस्तनी॥ तेतीरिता०॥ भवि०॥ तेतीरिष्यते०॥ क्रियाति०॥ अतेतीरिष्यत०। तेतीरित्वा। अवतेतीर्य। तेतीरित । तेतीरितुम्। तेतीर्यमाण । यङ्लुपि, तातर्त्ति, तातरीति। "ऋता क्ङितीर्"॥४।४।११६॥ इतीर् तातीर्च, तातिरति, तातरीपि, तातर्षि, तातीर्थ, तातीर्थ, तातरीमि, तातर्मि, तातीर्व, तातीर्म ॥ भाक॥ क्ये, तातर्यिते,

तातीर्येते०॥ सप्तमी ॥ तातीर्यात्०॥ भाक ॥ तातीर्येत०॥ पञ्च०॥ तातरीतु। तातर्त्तु०॥ भाक ॥ तातीर्यताम्० ॥ ह्यस्तनी ॥ अतातरीत्, अतातः० ॥ भाक ॥ अतातीर्यत० ॥ अद्यतन्यामाशी.प्रभृतिपु विभक्तिपु च यथाऽस्यैव केवलस्य तॄधातो रूपाणि प्रोक्तानि तथैवात्रापि ज्ञेयानि; उच्चारस्त्वेवम् । अतातारीत्, अतातारिष्टाम्, अतातारिपुरित्यादि ॥ परोक्षा ॥ तातराचकार ९ । बभूव ९ । आस ९॥ भाक॥ तातराचक्रे ९। बभूवे ९। आहे ९॥ आशीः॥ तातीर्यात्०॥ भवि०॥ तात १८ रिष्यति, रीष्यति० ॥ क्रियातिपत्तिः ॥ अतात १८ रिष्यत्, रीष्यत्० ॥ तात २ रित्वा, रीत्वा। अवतातीर्य । अनेकस्वरात्, क्तस्य विहितत्वेन "ऋवर्णश्र्यू-"॥४।४।५७॥ इति इड्निषेधाभावे, इरि वा दीर्घे च, तात २ रितः, रीत । तात २ रितुम्, रीतुम्। तातिरत् ॥ एव कॄ पॄ मॄ शॄ स्तॄ प्रभृतयोऽपि सर्वे ॠदन्ता यङ्लुपि ज्ञातव्या., नवर पॄ मॄ प्रभृतीना क्ङिति परे "ओष्ठ्यादुर्" ॥४।४।११७॥ इति उरादेशः कार्य । यथा तसि, पापूर्त्त । अन्ति, पापुरति। क्ये, पापूर्यते। आशीर्ये, पापूर्यादित्यादि । णिगि, तारयति, प्रतारयति, सारयत.० ॥ भाक ॥ तार्यते, विप्रतार्यते, तार्येते० ॥ अद्यतनी ॥ ङे, अतीतरत्, अतीतरताम्, अतीतरन्० ॥ भाक ॥ अतारि, अतारिषाताम्, अतारयिपातामित्यादि भूवत् ॥ तरन् । तीर्यमाणम् । तरिष्यन्, तरीष्यन् । तरिष्यमाणम्, तरीष्यमाणम्, तारिष्यमाणम् । वितितीर्वान् । विततिराणम् । काने पूर्व द्वित्व पश्चात् इरादेश., स्वरविधित्वात् । "ऋवर्णश्र्यू-"॥४।४।५७॥ इति किति नेट्, तीर्त्वा। "ॠल्वादे -" ॥४।२।६८॥ इति तो न.। तीर्ण॰ २ वान्। तरि २, ता, तुम्। तरी २ ता, तुम्। तार्यम् ॥ १७ ॥

ट्धें पाने । धयति, धयत॰, धयन्ति०॥ भाक॥ "ईर्व्यञ्जने-"॥४।३।९७॥ ई । धीयते, धीयेते०॥ अद्यतनी॥ "ट्धेश्वेर्वा"॥३।४।५९॥ इति ङे, अदधत्, अदधताम्। अदधन्०॥ पक्षे "ट्धेघ्राशा-"॥४।३।६७॥ इति वा सिचूलुक्। अधात्, अधाताम्, अधु, अधा, अधातम्०॥ सिचोऽलोपे च "यमिरमिनम्यात "॥४।४।८६॥ इति इट् सोऽन्तश्च। अधासीत, अधासिष्टाम्, अधासिपु, अधासी, अधासिष्टम्०॥ भाक ॥ अधायि, अधायिपाताम, अधिषाताम, अत्र इश्वस्थाद इ । अधायिषत,

अधिपत, अधायिषाताम्, अधिषाताम्, अधायिपाथाम्, अधिपाथाम्, अधायि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्; अधिढ्वम्० । परोक्षादिषु दधावित्यादि सर्वं पानार्थपाधातुवत् । पर, सनि, "मिमी-" ॥४।१।२०॥ इति इत् । धित्सति । याङि, देधीयते । लुपि, दाधेति । दाधाति । "श्नश्च-" ॥४।२।९६॥ इति आलुकि, "अधश्चतुर्थ-"॥२।१।७९॥ इत्यत्र धावर्जनेनास्यापि वर्जनात् तथोर्धत्वाभावे, दात्तः । दाधति । शेष यङ्लुबन्तधाग्वत् । णिगि, धापयति, धापयत०॥ भाक ॥ धाप्यते । ङे, अदीधपत् । "चल्याहार-" ॥ ३ । ३ । १०८ ॥ इत्यनेन फलवत्यपि परस्मैपदे प्राप्ते "परिमुह-" ॥३।३।९४॥ इत्यात्मनेपदे, धापयते शिशु माता ॥ १८ ॥

दैव् शोधने । वकारो "अवौ दाधौ दा"॥३।२।४॥ इति दासज्ञानिषेधार्थ । दायति । गुणइति सान्वयसज्ञासमाश्रयणादत्र न गुण ऐकारादेकारस्य हीनत्वात् । एवमग्रेऽपि । क्ये, निदायन्ते भाजनानि । अदासीत् । ददौ । ददे । दाता । दास्यति । दिदासति । दादायते । दादेति, दादाति, दादीत । "एषाम्"॥४।२।९७॥ इति ई । दादति । दात्वा । अवदाय । अवदात मुखम् । अशिति शेष याक्वत् ॥ १९ ॥

ध्यैं चिन्तायाम् । मातुर्ध्यायति, मातर ध्यायति । "स्मृत्यर्थ-"॥२।२।११॥ इति वा कर्म । निध्यायति, विध्यायति, अनुध्यायति ॥ भाक ॥ अनुध्यायते०॥ सप्तमी ॥ ध्यायेत् ॥ भाक ॥ ध्यायेत० ॥ अद्यतनी ॥ अध्यासीत्, अध्यासिष्टाम्, अध्यासिषु ० ॥ भाक ॥ अध्यायि, अध्यायिषाताम्, अध्यासाताम्० ॥ ध्वमि, अध्या २ द्ध्वम्, ध्वम्, अध्यायि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम् ॥ परोक्षा ॥ दध्यौ, दध्यतु, दध्याथ दध्यिथ, दध्यिम ॥ भाक ॥ दध्ये, दध्याते०॥ आशी ॥ "सयोगादेर्वा-" ॥४।३।९५॥ इति वा ए । ध्येयात्, ध्यायात्, ध्येयास्ताम्, ध्यायास्ताम्०॥ भाक॥ ध्यायिषीष्ट । ध्यासीष्ट० ॥ श्वस्तनी ॥ ध्याता, ध्यातारौ० ॥ भाक ॥ ध्यायिता, ध्याता, ध्यायितारौ, ध्यातारौ० ॥ भविष्यन्ती ॥ ध्यास्यति० । भाक । ध्यायिष्यते, ध्यास्यते०॥ क्रियातिपत्ति ॥ अध्यास्यत्०॥ भाक॥ अध्यायिष्यत, अध्यास्यत० ॥ सनि, दिध्यासति॥ यङि, दाध्यायते, दाध्येति, दाध्याति०। णौ, ध्यापयति०। ङे, अदिध्यपत्। ध्यायति वनगुल्म कोकिल । ध्यापयत्येन वनगुल्म । अत्र "अणिकर्म "॥३।३।८८॥ इति स्मृत्यर्थवर्जनान्नात्मनेपदम्। "व्यञ्जनान्तस्थ-"॥४।२।७१॥

इति ध्यावर्जनात्क्तयोर्न नः। ध्यातः २ वान्। ध्यात्वा। ध्यातुम्। ध्याता। ध्येयम्। दध्यिवान् ॥ २० ॥

ग्लै हर्षक्षये। हर्षक्षयो धात्वपचय। म्लै गात्रविनामे। विनाम कान्तिक्षय। द्रै स्वप्ने। घ्रै तृप्तौ। एते ध्यैवत्। णिगन्तेषु तु विशेषोऽपि। ग्लै। ग्लायति। सनि, जिग्लासति। यङि, जाग्लायते। णौ, "ज्वलह्वल-"॥४।२।३२॥ इत्यनुपसर्गस्य वा ह्रस्वे ग्लपयति, ग्लापयति। सोपसर्गस्य तु न ह्रस्वः। प्रग्लापयति। अग्लपि। अग्लापि। प्राग्लापि। "व्यञ्जनान्तस्थ-"॥४।२।७१॥ इति क्तयोर्नः। ग्लानः,२ वान्। म्लै। म्लायति। सनि, मिम्लासति। यङि, माम्लायते। म्लानः। द्रै। निद्रायति; विद्रायति। निद्राण. २ वान्। निदद्रिवान्। घ्रै। घ्रायति "ऋह्रीघ्रा"॥४।२।७६॥ इति क्तयोर्वा न। घ्राण २, वान्। घ्रात २, वान्। दघ्रिवान् ॥२१॥२२॥२३॥२४॥

कै गै रै शब्दे ॥ गै, गायति, गायतः०। भाक ॥ "ईर्व्यञ्ज-"॥४।३।९७॥ ई। गीयते, गीयेते इत्यादि॥ सप्त०॥ गायेत्, गायेताम्०॥ भाक ॥ गीयेत, गीयेताम्०॥ पञ्चमी ॥ गायतु० ॥भाक॥ गीयताम्०॥ ह्यस्त०॥ अगायत्०॥ भाक ॥ अगीयत०॥ अद्यतनी॥ "यमिरमिनम्यात-"॥४।४।८६॥ इति इटि सेऽन्ते च। अगासीत्, अगासिष्टाम्, अगासिषु०॥ भाक॥ अगायि, अगायिषाताम्, अगासाताम्, अगायिषत, अगासत०, अगा२ध्वम्, द्ध्वम्, अगायि३ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्। परोक्षा ॥ जगौ, जगतु, जगु, जगिथ, जगाथ, जगथु, जग, जगौ, जगिव, जगिम ॥ भाक ॥ जगे, जगाते, जगिरे०॥ आशी ॥ गापा इति ए। गेयात०। भाक ॥ गायिषीष्ट, गासीष्ट०॥ गायि २ षीध्वम्, षीढ्वम्, गासीध्वम्०। श्वस्तनी। गाता, गातारौ० ॥ भाक ॥ गायिता, गाता०, ॥ भविष्यन्ती ॥ गास्यति० ॥ भाक ॥ गायिष्यते, गास्यते० ॥ क्रिया० ॥ अगास्यत् अगास्यताम्० ॥भाक॥ अगायिष्यत, अगास्यत० ॥ सनि, जिगासति। यङि, जेगीयते०। लुपि, जागेति, जागाति। शेष स्थास्थाने। णौ, गापयति। ङे, अजीगपत्, अजीगपताम्। गायन्। गास्यन्। गीयमानम्। गास्यमानम्, गायिष्यमाणम्। जगिवान्। गीत. २ वान् ॥ गा२ता, तुम्। गीत्वा, प्रगाय। गेयम्। गातव्यम् ॥ २५ ॥

पैं शोषणे । अथ गैवत् । णिगि तु पाययति केशान्, शोषयतीत्यर्थः । डे, अपीपयत् ॥ २६ ॥

अथ यत्रानिट्त्वं वेट्त्वं वा न वक्ष्यते ते सर्वेऽपि सेट एव ज्ञेयाः । उखेति दण्डके, रिखु इखु वल्ग रिगु तगु लिगु गतौ, वल्गवर्जा उदितः । उदनुबन्धस्तु "उदितः स्वर" ॥४।४।९८॥ इति नागमार्थः । एवमन्यत्रापि ज्ञेयम् । रिङ्खति । अरिङ्खीत् । रिरिङ्ख । रिङ्खिता । रिङ्खन् ॥ इङ्खति । प्रेङ्खति । प्रेङ्खाञ्चकार, प्रेङ्खन्, शाने "स्वरात्" ॥ २ । ३ । ८५ ॥ इति णे, प्रेङ्खमाण । वल्गति० । अवल्गीत्, अवल्गिष्टाम्० । ववल्ग० । ववल्गे० । वल्गिष्यति० । वल्गन् । रङ्गति । रङ्गन् । तगु स्खलने रूढः । लिङ्गति । आलिङ्गति, आलिङ्ग्यते । आलिङ्गीत्, आलिङ्गिष्टाम्० । आलिङ्गि, आलिङ्गिषाताम्० । आलिलिङ्ग । आलिलिङ्गिमहे ॥ आलिङ्ग्यात्० । आलिङ्गिषीष्ट० । आलिङ्गिता० । आलिङ्गिष्यति० । आलिलिङ्गिषति० । आलेलिङ्ग्यते० । आलेलिङ्गीति, आलेलिङ्क्ति । आलिङ्गयति । उल्लिङ्गयति । डे, आलिलिङ्गत् । आलिङ्गन् । आलि ५ ङ्गिता, तुम्, त, २ वान्, तव्यम् । आलिङ्ग्य ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

शिघु आघ्राणे, गन्धोपादाने, नेऽन्ते । शिङ्घति; निशिङ्घति । यङ्लुपि, शेशिङ्क्ति । शेष णिदु कुत्सायामित्यस्येव ॥ ३२ ॥

लघु शोषणे, नेऽन्ते । लङ्घति० । लङ्घ्यते० । अलङ्घीत्० । ललङ्घ० । लङ्घिता० । लालङ्क्ति । लङ्घि २ ला, त २, वान्, शेष टुनदुवत् ॥ ३४ ॥

शुच शोके । शोचति । क्ये, शुच्यते । सप्तमी । शोचेत्० क्ये, शुच्येत० ॥ ह्यस्तनी ॥ अशोचत्० ॥ भाक ॥ अशुच्यत ॥ अद्यतनी ॥ अशोचीत्, अशोचिष्टाम्० । भाक ॥ अशोचि, अशोचिषातामित्यादि ॥ परोक्षा ॥ शुशोच, शुशुचतु, शुशोचिथ, शुशुचिम ॥ भाक ॥ शुशुचे, शुशुचाते० ॥ आशी ॥ शुच्यात्० ॥ भाक ॥ शोचिषीष्ट० ॥ श्वस्तनी ॥ शोचिता० ॥ भाक ॥ शोचिता, शोचितारौ० ॥ भवि० ॥ शोचिष्यति० ॥ भाक ॥ शोचिष्यते० ॥ क्रियातिपत्ति ॥ अशोचिष्यत्० ॥ भाक ॥ अशोचिष्यत० ॥ "वौ व्यञ्ज-" ॥४।३।२५॥ क्त्वासनोर्वा कित्त्वे, शुशुचिषति ।

शोशुच्यते, शोशोक्ति । णौ, शोचयति । डे, अशूशुचत् । शुचितः । शुचित्वा, शोचित्वा । शोचि २ ता, तुम् । शोचितव्यम् ॥ ३५ ॥

कुञ्च कौटिल्याल्पीभावयोः । सङ्कुञ्चति, आकुञ्चति । कुच्यते । अकुञ्चीत्० । चुकुञ्च० । चुकुञ्चे० । सङ्कुच्यात्० । कुञ्चिष्यति० । सङ्कुचितः । "नो व्यञ्जन-"॥४।२।४५॥ इति न लुक् । सङ्कुच्य । सङ्कुञ्चि२ता, तुम्, तव्यम् ॥ ३६ ॥

लुञ्च अपनयने । अनुपयुक्तापासने । लुञ्चति, लुच्यते । अलुञ्चीत्, अलुञ्चिष्टाम्० । अलुञ्चि० । लुलुञ्च० । लुच्यात्० । लुञ्चिषीष्ट० । लुञ्चिष्यति० । लुलुञ्चिषति० । लोलुच्यते० । लोलुञ्चीति, लोलुङ्क्ति, लोलुक्त', लोलुचति० । लुञ्चयति । अलुलुञ्चत् । लुञ्चन् । लुञ्चिष्यन्, लुच्यमानम । कित्त्वान्न लुकि, लुलुच्वान् । लुलुचानम् । "ऋत्तृष-"॥४।३।२४॥ इति वा कित्त्वे, लुञ्चित्वा लुचित्वा । लुञ्चि२ता, तुम्, तव्यम् । लुचित., २ वान् । लुञ्चित इत्यप्यन्ये ॥ ३७ ॥

अर्च पूजायाम् ॥ अर्चति; अभ्यर्चति० ॥ क्ये, अर्च्यते ॥ ह्यस्तनी । आर्चत्० । भाक ॥ आर्च्यत० ॥ अद्यतनी ॥ आर्चीत्, आर्चिष्टाम्, आर्चिषुः, आर्चीः, आर्चिष्टम्, आर्चिष्ट, आर्चिषम्, आर्चिष्व, आर्चिष्म ॥ भाक ॥ आर्चि, आर्चिषाताम्, आर्चिषत, आर्चिष्ठाः, आर्चिषाथाम्, आर्चिड्ढ्वम्, आर्चिध्वम्, आर्चिषि, आर्चिष्वहि, आर्चिष्महि॥ परोक्षा॥"अनातो नश्चान्त-"॥४।१।६९॥ इति पूर्वस्य आ, नोऽन्तश्च । आनर्च, आनर्चतु, आनर्चु । "स्क्रस-"॥४।४।८१॥ इति इटि, आनर्चिथ, आनर्चथु' आनर्च, आनर्च, आनर्चिव, आनर्चिम ॥ भाक ॥ आनर्चे, आनर्चाते, आनर्चिरे, आनर्चिषे०॥ आशी ॥ अर्च्यात्, अर्च्यास्ताम्०॥ भाक ॥ अर्चिषीष्ट, अर्चिषीयास्ताम्०॥ श्वस्तनी ॥ अर्चिता, अर्चितारौ०॥ भाक ॥ अर्चिता, अर्चितारौ० ॥ भविष्यन्ती ॥ अर्चिष्यति० ॥ भाक ॥ अर्चिष्यते, ष्येते, ष्यन्ते० ॥ क्रियातिपत्ति. ॥ आर्चिष्यत्० ॥ भाक ॥ आर्चिष्यत०, आर्चिष्यन्त ॥ सनि, अर्चिचिषति० । णिगि, अर्चयति । डे, आर्चिचत् । णौ सनि, अर्चिचयिषति ॥ आनर्च्वान् । आनर्चानम् । अर्चितः, २ वान् । अर्चित्वा ॥ ३८ ॥

अञ्चू गतौ च, चात्पूजायाम् । अञ्चति, अञ्चत., अञ्चन्ति ॥ क्ये, अञ्च्यते, इत्यादि । सर्वं पूजाया नलोपाभावादर्चवद्वक्तव्यम् । नवरं क्तक्तवतुक्त्वासु, "लुभ्यञ्चे.-"

।४।४।४४।। इतीटि, अञ्चिता अस्य गुरव । अञ्चितवान् गुरून्। शिरोऽञ्चित्वेन तरहन्।। गतौ त्वेवम्-अञ्चति, उदञ्चति, अन्वञ्चति, अञ्चत.०।। क्ये, अच्यते०।। "अञ्चोऽनर्चे-"।।४।२।४६।। इति क्ङिति न लुक्।। अद्यतनी।। आञ्चीत्, आञ्चिष्टाम्०।। परोक्षा।। आनञ्च ।"इन्ध्यसयोग-"।।४।३।२१।। इति किन्त्वाभावे, आनञ्चतु ०, आनाञ्चिम।। भाक।। आनञ्चे।। आशी।। अच्यात्, अच्यास्ताम्०।। भाक।। अञ्चिषीष्ट०।। श्वस्तनी।। अञ्चिता०।। भविष्यन्ती। अञ्चिष्यति०। क्रियातिपत्ति। आञ्चिष्यत्०। सनि, अञ्चिचिषति। णौ, अञ्चयति। ङे, आञ्चिचत्। क्तसौ कित्त्वान्न लुकि, आचिवान्। "ऊदितो वा"।।४।४।४२।। इति क्त्वाया वेटि, अक्त्वा, अञ्चित्वा। उदक्तमुदक कूपात्।। ३९।।

वञ्चू चञ्चू गतौ।। वञ्चति, वञ्चत०।। क्ये।। वच्यते।। अद्यतनी।। अवञ्चीत्, अवञ्चिष्टाम्०।। परोक्षा।। ववञ्च, ववञ्चिरथ,म।। वच्यात्०। वञ्चिष्यति०। विवञ्चिषति०। यङि, "वञ्चस्रंस-"।।४।१।५०।। इति न्यागमे वनीवच्यते। यङ्लुपि, वनीवञ्चीति०, वनीवङ्कि, वनीवक्त, वनीवचति। णौ, "चल्याहारार्थे-"।।३।३।१०८।। इति परस्मैपदे, अहिं वञ्चयति, गमयतीत्यर्थ। णिगन्तात्तु प्रलम्भेन वर्त्तमानात् "प्रलम्भे गृधिवञ्चेः"।।३।३।८९।। इत्यात्मनेपदम्, बाल वञ्चयते।। उदित्वात् क्त्वाया वेट्, वक्त्वा। इटि "क्तृप-"।।४।३।२४।। इति क्त्वो वा कित्त्वे, वचित्त्वा, वञ्चित्त्वा। वेट्त्वात् क्तयोर्नेट्, वक्त। वक्तवान्। वञ्चित इति तु वञ्चिण् प्रलम्भने इत्यस्य।। ४०।।

लाछु लक्षणे। लाञ्छति। लक्षयतीत्यर्थ, अङ्कयतीति वा। अलाञ्छीत्०। ललाञ्छ०। यङ्लुपि, लालाष्टि०। शेष वाछुवत्।। ४१।।

वाछु इच्छायाम्। वाञ्छति। क्ये, वाञ्छयते। अद्यतनी। अवाञ्छीत्, अवाञ्छिष्टाम्०।। भाक।। अवाञ्छि, अवाञ्छिषाताम्०।। परोक्षा।। ववाञ्छ, ववाञ्छतु, ववाञ्छि२थ,म।। भाक।। ववाञ्छे, ववाञ्छाते०।। आशी।। वाञ्छ्यात्०।। भाक।। वाञ्छिषीष्टेत्यादि। विवाञ्छिषति। वावाञ्छ्यते। वावाञ्छीति। छस्य शत्वे "यज-"।।२।१।८७।। इति षत्वे, वावाष्टि, वावाष्ट, वावाछ्ञ्छति, छीषि, ष्ठ, छीमि, श्मि। वस्य विकल्पेनानुनासिकत्वात् "अनुनासिके चञ्छ्व -"।।४।१।१०८।। इति छ. शत्वे

वावाँश्च । पक्षे, वावांच्छ्र । वावाश्म ॥ भाक ॥ वावाञ्छ्यते । हौ छस्य शत्वे षत्वे "हृधुट-" ॥४।२।८३॥ इति हेधौ "तृतीय-" ॥१।३।४९॥ इति षस्य डत्वे "तवर्गस्य-"॥१।३।६०॥ इति ढिः । वावाढि० ॥ ह्यस्तनी ॥ अवावाञ्छीत् । छस्य शत्वे "व्यञ्जनादे "॥४।३।७८॥ इति दिवः "पदस्य"॥ २ । १ । ८९ ॥ इति शस्यं च लुकि । अवावान्, अवावाष्टाम्, अवावाञ्छु, अवावाञ्छीः, अवावान् ॥ भाक ॥ अवावाञ्छ्यत०॥ अद्यतनी ॥ अवावाञ्छीत्, अवावाञ्छिष्टाम्० ॥ भाक ॥ अवावाञ्छि, अवावाञ्छिषाताम्०॥ परोक्षा ॥ वावाञ्छाचकारेत्यादि ॥ आशीः ॥ वावाञ्छ्यात्०॥ भाक ॥ वावाञ्छिषीष्ट० ॥ भविष्यन्ती ॥ वावाञ्छिष्यति० । णौ, वाञ्छयति । ङे, अववाञ्छत् ॥ ४२ ॥

मुर्छा मोहसमुच्छ्राययोः । मूर्छति । मूर्छ्यते ॥ अद्यतनी ॥ अमूर्छीत्, अमूर्छिष्टाम्० ॥ भाक ॥ अमूर्छि, अमूर्छिषाताम्०॥ परोक्षा ॥ मुमूर्छ, मुमूर्छतुः, मुमूर्छिर थ, व ॥ भाक ॥ मुमूर्छे०॥ आशी ॥ मूर्छ्यात्० । मूर्छिषीष्टेत्यादि । मुमूर्छिषति० । मोमूर्छ्यते० । मोमूर्छीति । "राल्लुक्" ॥४।१।११०॥ इति धुडादौ छस्य लुकि "लघो "॥४।३।४॥ इति गुणे, मोमोर्चि, मोमूर्त्त, मोमूर्छति ॥ क्ये, मोमूर्छ्यते ॥ ह्यस्तनी ॥ अमोमूर्छीत् । "राल्लुक्" ॥ ४ । १ । ११० ॥ इति छस्य लुकि "व्यञ्जनादेः-" ॥ ४ । ३ । ७८ ॥ इति दिवूलुकि उपान्त्यगुणे च, अमोमोः, अमोमूर्त्ताम्०॥ अद्यतनी ॥ अमोमूर्छीत्, अमोमूर्छिष्टाम्०॥ भावे ॥ अमोमूर्छि० । णौ, मूर्छयति । ङे, अमुमूर्छत् । आदित्वात् क्तयोरिडभावे मूर्त्तः, २ वान् । मूर्छति तु भिदादित्वादङि, मूर्च्छा मजाताऽस्येति तारकादित्वात् इते, मूर्छितः । "नवा भावारम्भे "॥४।४।७२॥ इति वेडभावे मूर्च्छित मूर्त्तमनेन, प्रमूर्त्तः । प्रमूर्छितः ॥ ४३ ॥

व्रज गतौ । व्रजति, प्रव्रजति । प्रव्रज्यते ॥ अद्यतनी ॥ प्राव्राजीत्, अत्र 'वदव्रज-"॥४।३।४८॥ इति वृद्धिः । प्राव्राजिष्टाम्, प्राव्राजिषु ॥ भावे ॥ प्राव्राजि ॥ परोक्षा ॥ प्रवव्राज । "स्कसृ-"॥४।४।८१॥ इतीटि, प्रवव्रजिरथ, म । व्रज्यात् । व्रजिता। व्रजिष्यति । अव्रजिष्यत् । प्रविव्राजिषति । वाव्रज्यते । वाव्र २ जीति, क्ति, वाव्रक्त, वाव्रजति । वाव्र८जीषि, क्षि, क्थः, क्थ । जीमि, ज्मि, ज्व, ज्मः । क्ये, वाव्रज्यते

॥ सप्तमी ॥ वाव्रज्यात्०॥ पञ्चमी ॥ ईौ, वाव्रजिष ॥ ह्यस्तनी ॥ अवाव्रजीत्, अवाव्रक्, अवाव्रक्ताम्, अवाव्रजुः ॥ अद्यतनी ॥ अवाव्राजीत्, अवाव्राजिष्टा- म्, अवाव्राजिषु. ॥ परोक्षा ॥ वाव्रजाञ्चकार३ । वाव्रज्यात् । वाव्रजिष्यति । णौ, प्रव्राजयति । प्रव्राज्यते । ङे, प्राविव्रजत् । व्रजन् । व्रजिष्यन् । वव्रज्वान् । वव्रजानम् । व्रजित, २ वान् । व्रजित्वा । व्रजितुम् ॥ ४४ ॥

अज क्षेपणे च । चाद्गतौ । अजति । "क्रियाव्यति-"॥३।३।२३॥ इति गत्यर्थवर्जनाद्गतौ नात्मनेपदम्, व्यत्यजन्ति ग्रामम् । क्षेपणे त्वात्मनेपदमेव, व्यत्यजन्ते । अशिति, "अघञ्क्यप्-"॥४।४।२॥ इति वीं, प्रवीयते । अवैषीत् । विवाय । वीयात् । प्रविवीषति । वेवीयते । वीत्वा । प्रवीय । प्रवीत. । "त्रने वा"॥४।४।३॥ इति वा वीं प्रवेता, प्राजिता । शेष अशिति णींग्वत् । अयुव्यञ्जने वा वीमिच्छन्त्यन्ये, तन्मते प्राजिता।प्राजिष्यति प्राजिजिषति । प्राजित इत्याद्यपि भवति ॥ ४५ ॥

अर्ज अर्जने । अर्जति, । अर्ज्यते । आर्जीत् । "अनात-"॥४।१।६९॥ इति पूर्वस्यात्वे नागमे च, आनर्ज । आनर्जे । अर्ज्यात् । अर्जिष्यति, "अयिर "॥४।१।६। इति रस्य द्वित्वाभावे, अर्जिजिषति । अर्जयति । ङे, आर्जिजत् । अर्जित आर्जि ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ ४६ ॥

एजृ कम्पने । एजति । ऐजीत् । आमि, एजाञ्चकार । ऋदित्वात् "उपान्त्य स्य-"॥४।२।३५॥ इति ह्रस्वाभावे, माभवानेजिजत् । शेष ओणृवत् ॥ ४७ ॥

टुओस्फूर्जा वज्रनिर्घोषे । स्फूर्जति । क्ये, स्फूर्ज्यते ॥ अद्यतनी ॥ अस्फूर्जीत् । परोक्षा ॥ पुस्फूर्जे ॥आशी ॥स्फूर्ज्यात्॥ भवि०॥ स्फूर्जिष्यति । यङि, पोस्फूर्ज्यते । लुपि, पोस्फूर्जीति, पोस्फूर्क्ति । पोस्फू१०र्क्तः, र्जति. र्जीषि, र्क्षि, र्क्थ ,र्क्थ र्जीमि, र्ज्मि, र्ज्वे , र्ज्मः ॥ह्यस्त०॥ दिवि "रात्स "॥२।१।९०॥ इति नियमात् सयोगान्तलुगभावे, अपोस्फू११र्क्, र्जीत्, र्क्ताम्० ॥ अद्य० ॥ अपोस्फूर्जीत् अपोस्फूर्जिष्टामित्यादि । स्फूर्जि ३ त्वा, ता, तुम् । उदित्वात् क्त्वोस्तस्य नत्व आदित्त्वाच्चेडभावे णत्वे च स्फूर्ग्ण, स्फूर्ग्णवान् । "नवा भावारम्भे"॥४।४।७२

इति वेडभावे, स्फूर्णम्, स्फूर्जितमनेन । प्रस्फूर्ण., प्रस्फूर्जितः । "भ्वादेर्नामिन-"॥२।१।६३॥ इति दीर्घे सिद्धे दीर्घोच्चारणं भ्वादेरिति दीर्घत्वस्यानित्यत्वज्ञापनार्थम्, तेन कुर्दते, कुर्दनः इत्यपि सिद्धम् ॥ ४८ ॥

कूज गुजु अव्यक्ते शब्दे । कूजति पक्षी । अकूजीत् । चुकूज । कूजितम् । गुजु । गुञ्जति सिंहः । जुगुञ्ज । गुञ्जितम् । शेष द्वयो स्फूर्जावत् ॥४९॥५०॥

तर्ज भर्त्सने । तर्जति । अतर्जीत् । ततर्ज । शेष गर्जवत् ॥ ५१ ॥

गर्ज शब्दे । गर्जति । गर्ज्यते । अगर्जीत् । जगर्ज, जगर्जिम । जगर्जे । गर्जिष्यति । जिगर्जिषति । जागर्ज्यते । बहुलमेतन्निदर्शनमिति वचनात् चुरादित्वात् णिचि, गर्जयति । अजगर्जत् । क्ते, गर्जितम् ॥ ५२ ॥

ह्वावनिटौ । त्यज हानौ, त्यागे । त्यजति, परित्यजति । क्ये, त्यज्यते ॥ अद्यतनी ॥ "व्यञ्जनानामनिटि" ॥४।३।४५॥ इति वृद्धौ, अत्याक्षीत् । "धुड्ह्रस्वात्-" ॥४।३।७०॥ इति सिज्लुकि, अत्याक्ताम्, अत्याक्षुः, अत्या६क्षीः, क्तम्, क्त, क्षम्, क्ष्व, क्ष्म ॥ भाक ॥ अत्याजि, अत्यक्षाताम्, अत्यक्षत, अत्यक्था० ॥ परोक्षा ॥ तत्याज, तत्यजतुः, तत्यजुः । "सृजि-" ॥४।४।७८॥ इति वेटि, तत्यजिथ, तत्यक्थ, तत्यजथुः, तत्यज२, तत्याज, "स्क्रसृ-"॥४।४।८१॥ इतीटि तत्यजि २ व, म ॥ भाक ॥ तत्यजे । त्यज्यात् । त्यक्षीष्ट । त्यक्ता । त्यक्ष्यति, ते । सनि, तित्यक्षति । यङि, तात्यज्यते । लुपि, तात्यजीति, तात्य११क्ति, जति०, ॥ ह्यस्तनी ॥ अतात्यजीत्, अतात्य१०क्, क्ताम्, जुः, जीः, क्० ॥ अद्यतनी ॥ "व्यञ्जनादेर्वोपान्त्य-" ॥ ४ । ३ । ४७ ॥ इति वा वृद्धौ, अतात्यजीत्, अतात्याजीत् । तात्यजाचकार । तात्याजिष्यति । क्ते, तात्यजितः । णौ, त्याजयति । डे, अतित्यजत् । त्यजन् । त्यक्ष्यन् । तत्यज्वान् । तत्यजानम् । त्यक्तवान् । त्यक्त्वा । सन्त्यज्य । त्यक्ता । त्यक्तुम् । घ्याणि, 'त्यज्यज-"॥४।१।११८॥ इति गत्वनिषेधे, त्याज्यम् ॥ ५३ ॥

षञ्ज सङ्गे । "दशसञ्ज शवि"॥४।२।४९॥ इति न लोपे, सजति; प्रसजति; व्यासजति, "स्थासेनि" ॥ २ । ३ । ४० ॥ इति षे, अभिषजति । क्ये, सज्यते ॥ ह्यस्तनी ॥ अभ्यषजत् ॥ अद्यत० ॥ "व्यञ्जनानामनिटि" ॥ ४ । ३ । ४५ ॥ इति

वृद्धौ, असाक्षीत्, असा८क्ताम्, क्षु॰, क्षी॰, क्तम्, क्त, क्षम्, क्त्व, क्ष्म ॥ भाक ॥ असञ्जि, असङ्क्षाताम्, असङ्क्था॰ ॥ परोक्षा ॥ ससञ्ज । अभिषष्ञ्ज । "इन्ध्यसयोग-"॥४।३।२१॥ इति किक्त्वाभावान्नस्यालोपे, ससञ्जतु॰, ससञ्जिथ, ससङ्क्थ, ससञ्जिम ॥ भाक ॥ ससञ्जे ॥ आशी ॥ सज्यात् । सङ्क्षीष्ट ॥ श्वस्तनी ॥ सङ्क्ता ॥ भविष्य॰ ॥ सङ्क्ष्यति, ते ॥ क्रिया॰ ॥ असङ्क्ष्यत् । षणि, "णिस्तोरेव-"॥२।३।३७॥ इति नियमान्न षत्वे, सिसङ्क्षति । "स्थासेनि"॥२।३।४०॥ इति उपसर्गात् द्वित्वेऽपि, अट्यपि पत्वे, अभिषिषङ्क्षति । अभ्यषिषङ्क्षत् । यङि, सासज्यते । अनुपासज्यते । असासाजिष्ट । लुपि, सासञ्जीति, सासङ्क्ति, सासक्त, सासजति । हौ, सासग्धि । सासञ्जाञ्चकार । णौ, सञ्जयति । ङे, अससञ्जत्, ञ्जताम्, ञ्जन्॰ ॥ सञ्जयाञ्चकार । षोपदेशाण्णौ सनि "सञ्जेर्वा" ॥२।३।३८॥ इति वा षत्वे, सिषञ्जयिषति, सिसञ्जयिषति । सजन् । सजन्ती । सङ्क्ष्यन् । कसुकानयो परोक्षावद्भावादेव कित्त्वे सिद्धे कित्करण सयोगान्तधात्वर्थम्, तेन सयोगान्तात् परोक्षाया कित्त्वनिषेधेऽपि अनयोः कित्त्वान्न लुकि "अनादे"॥४।१।२४॥ इत्येत्त्वे, सेजिवान् । सेजानम् । सङ्क्ता । सङ्क्तुम् । प्रसक्त, २ वान् । प्रसक्तव्यम् । क्ते ऽनिट्त्वाद् घ्याणि गत्वे, प्रसङ्ग्य । "जनशोनि"॥४।३।२३॥ इति क्त्वो वा कित्त्वे, सक्त्वा, सङ्क्त्वा । यादे क्त्वो नित्य कित्त्वे, आसज्य, प्रसज्य ॥ ५४ ॥

कटे वर्षावरणयो । वृष्टौ आवरणे चार्थे । कटति । प्रकटति । एदित्वाद् "नश्वि-" ॥४।३।४९॥ इति न वृद्धौ, अकटीत् । चकाट, चकटु । ण्यन्तस्य त्वस्य अद्यतन्यामेव प्रयोगो दृश्यते, तेन णौ ङे, प्राचीकटत् ॥ ५५ ॥

शट रुजाविशरणगत्यवसादनेषु । चतुर्ष्वर्थेषु । शटति । शट्यते ॥ शटेत् । शटतु । अशटत् ॥ अद्य॰॥ "व्यञ्जनादेर्वोपा-"॥४।३।४७॥ इति वा वृद्धौ, अशाटीत्, अशटीत्, अशाटिष्टाम्, अशटिष्टाम्॰॥ भाक ॥ अशाटि, अशाटियाताम्॰ ॥ परोक्षा ॥ शशाट, शेटतु, शेटि२थ, म । शेटे ॥ आशी ॥ शट्यात् । शटिष्यति । अशटिष्यत् । शिशटिषति । शाशट्यते । णौ, शाटयति । ङे, अशीशटत् ॥५६॥

खिट उत्त्रासे । उत्त्रासो भयोद्भूति उच्चासन च । गा खेटति । खिट्यते । अखेटीत् । चिखेट । णौ, खेटयति । अचीखिटत् ॥ ५७ ॥

णट नृत्तौ । नताविल्यन्ये । हिंसायामप्येके । नटति । णपाठात् "अदुरुप-"॥२। ३।७७॥ इति णत्वे, प्रणटति । नाय णोपदेश इत्येके । प्रनटति । नेटतुः, नेटु । णौ नतौ घटादित्वात् ह्रस्वे, नटयति शाखाम् । नृत्तौ हिंसाया च न ह्रस्वः, नट नाटयति, प्रणाटयति, नर्त्तयतीत्यर्थः । चौरस्य चौरं वा उन्नाटयति । अत्र हिंसार्थत्वात्परमतेन "जासनाट-"॥२।२।१४॥ इति कर्मणो वा कर्मत्वम् । शेष सर्व पठिवत् ॥ ५८ ॥

लुट विलोटने । लोटति । अलोटीत् । लुलोट । लोटिष्यति । "वौ व्यञ्ज-" ॥४।३।२५॥ इति वा कित्त्वे, लुलोटिषति, लुलुटिषति । लोलुट्यते । लोलुटीति, अत्र "इयुक्तोपान्त्य-"॥४।३।१४॥ इति न गुणः । लोलोट्टि । "भ्राजभास-"॥ ४।२।३६॥ इति ङे वा ह्रस्वे, अलूलुटत्, अलुलोटत् । लुटित्वा, लोटित्वा । लोटित्वा, तुम्, तः ॥ ५९ ॥

अट पट कट गतौ । अटति, पर्यटति । अट्यते । आटत् ॥ अद्यतनी ॥ आटीत्, आटिष्टाम्० ॥ भाक ॥ आटि, आटिषाताम् ॥ परोक्षा ॥ द्वित्वे पूर्वस्य अस्य "अस्यादेः-"॥ ४।१।६८॥ इति आः, आट, आटतु, आटिम । आटे । अट्यात् । अटिष्यति । आटिष्यत् । सनि, अटिटिषति । "अट्यर्ति-"॥ ३।४।१०॥ इति यङि, अटाट्यते । णौ, आटयति । ङे, प्राक्तुस्वरे स्वरविधेः इत्यधिकारात् प्रागेव टेर्द्वित्वे पश्चाण्णेर्लुकि, आटिटत् । ओणेऋदित्करणज्ञापकात् "उपान्त्यस्य-"॥४। २।३५॥ इति ह्रस्वे कृते द्वित्वे च, माभवानटिटत् । पट । पटति । शेषं पठवत् । णौ, पाटयति । ङे, अपीपटत् । कट । कटति । "व्यञ्जनादेर्वो"॥४ ३।४७॥ इति वा वृद्धौ प्राकाटीत्, प्राकटीत् । ण्यन्तस्य तु प्रपूर्वस्य प्रयोगोऽद्यतन्यामेव दृश्यते, प्राचीकटत् ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥

लुट स्तेये । नेऽन्ते । लुण्टति । अलुण्टीत् । लुलुण्ट, लुलुण्टतु । लुण्टित ॥ ६३ ॥

स्फट स्फुट्ट विशरणे । स्फटति वस्त्रम् । अस्फाटीत्, अस्फटीत् । भावे । अस्फाटि । पस्फाट, पस्फटतु । णौ, स्फाटयति । ङे, अपिस्फटत् । क्ते, स्फटितम् । स्फुट्ट । स्फोटति । क्ये, स्फुट्यते । "ऋदिच्छ्वि-"॥३।४।६५॥ इति वा अङ्, अस्फुटत् ।

अस्फोटीत्॥ परोक्षा॥ पुस्फोट, पुस्फुटतु। स्फुट्यात्। स्फोटिष्यति। अस्फोटिष्यत्। सनि "वौ व्यञ्जनादे.-"॥४।३।२५॥ इति वा किस्त्वे, पुस्फोटिषति, पुस्फुटिषति। यङि, पोस्फुट्यते । णौ, स्फोटयति। अपुस्फुटत्। स्फुटिला, स्फोटिला। स्फुटित ॥६४॥६५॥

रट परिभाषणे। अय शटवत्। यङ्लुपि, रारटीति, 'तवर्गस्य"॥१।३।६०॥ इति तस्य टत्वे रारट्टि, रारट्ट, रारटति, रारटीषि, "सस्य शषौ"॥१।३।६१॥ इति षे रारट्षि, रारट्ठ, रारट्ठ, रारटीमि, रारट्मि, रारट्व, रारट्मः। क्ये, रारट्यते ॥सप्तमी॥ रारट्यात्॥ पञ्चमी॥ हौ, रारड्ढि, अत्र 'हुधुटो-"॥४।२।८३॥ इति धि, "तवर्गस्य" ॥१।३।६०॥ इति ढि, "तृतीयस्तृतीय"॥१।३।४९॥ इति टस्य ड ॥ ६६ ॥

पठ व्यक्तायां वाचि ॥ पठति, पठत.। शब्दार्थनिषेधात् क्रियाव्यतिहारेप्यनात्मनेपदे, व्यतिपठन्ति। पठ्यते। पठेत्। पठतु, पठतात्। अपठत् ॥ अद्यतनी॥ "व्यञ्जनादेर्वो-"४।३।४७॥ इति वा वृद्धौ, अपाठीत्, अपा८ठिष्टाम्, ठिषु, ठी, ठिष्टम्, ठिष्ट, ठिषम्, ठिष्व, ठिष्म। पक्षे, अपठीत्, अपठिष्टा इत्यादि। अपाठि, अपठि९षाताम्, पत, ष्ठा, पाथाम्, ध्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि ॥ परोक्षा॥ पपाठ, क्रियाव्यतिहारे, व्यतिपपाठ, पेठतु, पेठु, पेठिथ, पेठथु, पेठ, अह पपाठ, पपठ, पेठिव, पेठिम। पेठे। पठ्यात्। पठिषीष्ट। पठिता २ ॥ पठिष्यति। अपठिष्यत्। सनि, पिपठिषति। अपिपठि९षीत्, पिष्टाम्, पिषु ०॥ क्विपि, पिपठीः। अत्र "णषम्-"॥२।१।६०॥ इति षस्यासत्त्वात् सौ रुर्भवति "पदान्ते"॥२।१।६४॥ इति दीर्घश्च॥ यङि, पापठ्यते। अपापठिष्ट। पापठाञ्चक्रे३। लुपि, पापठीति, पापट्टि, पापट्ट, पापठति, पापठीषि, पापट्षि, पापट्ठ, पापट्ठ, पापठीमि, पापट्मि, पापट्व, पापट्म ॥ हौ पापड्ढि ॥ ह्यस्त०। अपापठीत्, अपापट्। अद्यतनी॥ अपापठीत्, अपापाठीत्, अपापठिष्टाम्, अपापाठिष्टाम्। पापठाञ्चकार३॥ पापठ्यात्। पापठिता। णौ, पाठयति॥ क्ये, पाठ्यते। अपीपठत्। पाठया चकार३। णिगन्ताण् णिगि, अपीपठत् माणवकमुपाध्यायेन। पठन्। पठिष्यन्। पेठिवान्। पेठानम्। पठित। पठितवान्। पठि३ त्वा, तुम्, तव्यम्॥ ६७॥

हठ बलात्कारे। हठति। जहाठ, जहठतु.। शेष पठवत् ॥ ६८ ॥

क्रीड़ृ विहारे । क्रीडति, "क्रीडोऽकूजने"॥३।३।३३॥ इत्यात्मनेपदे, सक्रीडान्ति शकटानि ।"अन्वाङ्परेः"॥३।३।३४॥ अनुक्रीडते, आक्रीडते, परिक्रीडते ॥ अद्यतनी॥ अक्रीडीत्, अक्रीडिष्टाम्॥ परोक्षा ॥ चिक्रीड । सनि, चिक्रीडिषति । चेक्रीड्यते । लुपि, चेक्रीडीति, चेक्रीट्टि, चेक्रीट्टः, चेक्रीडति, चेक्रीडीषि, चेक्रीट्षि, चेक्रीट्ठः, चेक्रीट्ठ, चेक्रीडीमि, चेक्रीड्मि, अत्र लघोरभावान्न गुणः । चेक्रीड्वः, चेक्रीड्मः । क्ये, चेक्रीड्यते । हौ, चेक्रीड्ढि ॥ ह्यस्तनी ॥ अचेक्रीडीत्, अचेक्रीट्, अचेक्रीट्टाम्, अचेक्रीडुः, अचेक्रीडीः, अचेक्रीट् । शेष पठवत् । णौ, क्रीडयति । ऋदित्त्वान् ङे न ह्रस्वः, अचिक्रीडत् । क्ते, क्रीडितम् ॥ ६९ ॥

लड विलासे । लडति । लले, लर्लति, उल्ललति । लड्यते । "वदव्रज-" ॥४।३।४८॥ इति वृद्धौ, अलालीत् । ललाड, लेलुः । ललिता । णौ, लाडयति चित्रम् । लालयति बालम् । अलीललत् । ललितः ॥ ७० ॥

अदृ्ड् अभियोगे । दोपान्त्यः।"तवर्गस्य-"॥१।३।६०॥ इति दस्य डत्वे, अड्डति, अभ्यड्डति । आड्डीत्, आड्डिष्टाम्०॥ "अना-"॥४।१।६९॥ इति इत्यात्वे ने च, आनड्ड, आनड्डतुः। अड्डिष्यति । सनि, "न बदनम्-"॥४।१।५॥॥ इति दस्य द्वित्वाभावे, अड्डिडिषति । अन्ये तु डोपान्त्य मन्यन्ते, "न बदनम्-"॥४।१।५॥ इति प्रतिषेधाभावात् डि इत्यस्य द्वित्वे, अडिड्डिषति । णौ, अड्डयति । ङे, आड्डिडत् । अड्डितः ॥ ७१ ॥

रण भण कण क्वण शब्दे । शब्द शब्दक्रिया । रणति नूपुरम् । रराण, रेणतुः, रेणुः । णौ, राणयति । "भ्राज-"॥४।२।३६॥ इति ङे वा ह्रस्वे, अरराणत, अरीरणत् । शेष भणवत् । भण । भणति । क्ये, भण्यते । अभणीत्, अभाणीत् । अभाणि, अभणिषाताम्०। बभाण, बभणतुः, बभणु, बभणिथ, बभणथुः, बभण, बभाण, बभण, बभणिव, बभणिम । भण्यात् । भणिषीष्ट । भणिता । भाणिष्यति । अभणिष्यत् । बिभणिषति । बिभणिष्यते । यङि, बम्भण्यते । अबम्भणिष्ट । बम्भणाञ्चक्रे । लुपि, बम्भणीति, बम्भण्टि । "अहन्पञ्चम-"॥४।१।१०७॥ इति दीर्घत्वे, बम्भाण्ट, बम्भणति, बम्भणीपि, बम्भाण्षि, बम्भाण्ठः, बम्भाण्ठ, बम्भणीमि, बम्भण्मि, बम्भण्व, बम्भण्म । क्ये, बम्भण्यते । हौ, बम्भाण्हि ॥ णौ, भाणयति । भाण्यते । "भ्राजभास-" ॥ ४ । २ । ३६ ॥ इति ङे वा ह्रस्वे, अबभाणत्, अबीभणत् ।

टुनदु समृद्धौ। नेऽन्ते। नन्दति। नोपदेशान्न ण , प्रनन्दति । क्ये, नन्द्यते। नन्दतु, नन्दतात्०॥ अद्यतनी ॥ अनन्दीत्, अनन्दिष्टाम्, अनन्दिषु.०। भाक। अनन्दि। नन्द्यात्। नन्दिष्यति। निनन्दिषति। नानन्द्यते। नान १२ न्दीति, न्ति, न्तः, दति०॥ ह्यस्तनी ॥ अना११नन्, नन्दीत्, नन्ताम्, नन्दु०॥ अद्यतनी ॥ अनानन्दीत् । णौ, नन्दयति । डे, अननन्दत् । नन्दित , २ वान् ॥ ९० ॥

क्रदु रोदनाऽऽह्वानयो । नेऽन्ते । क्रन्दति, आक्रन्दति । चक्रन्द । शेष नन्दतिवत् ॥ ९१ ॥

स्कन्दृ गतिशोषणयो । अनिट् । स्कन्दति। "वे स्कन्दोऽक्तयो"॥२।३।५१॥ इति वा पक्षे, विष्कन्दति, विस्कन्दति। "परे "॥२।३।५२॥ इति वा पे, परिष्कन्दति; परिस्कन्दति। आस्कन्दति। क्ये, स्कद्यते। ऋदित्वाद्वाऽडि "नो व्यञ्जन-"॥४।२।४५॥ इति नलुकि, अस्कदत्, अस्कदतामित्यादि । पक्षे, अस्कान्त्सीत्, अस्कान्ताम्, अस्का ७ त्सु, त्सी , त्तम्; त्त, त्सम् , त्व , त्स्म॥ भाक॥ अस्कन्दि, अस्क ९ त्साताम्, त्सत, त्था , त्साथाम्, द्ध्वम , द्ध्वम्, त्सि, त्स्वहि, त्स्महि। चस्कन्द, चस्कन्दतु, चस्कन्दु , चस्कत्थ, चस्कन्दिथ । स्कन्ता । स्कन्त्स्यति । चिस्कन्त्सति । यडि, " वञ्चस्रंस "॥ ४ । १ । ५० ॥ इति न्यागमे, चनीस्कद्यते। चनीस्कन्दीति, चनीस्कन्ति, चनीस्कन्त , चनीस्कन्दति। स्कन्दयति । अचस्कन्दत् । स्कन्दत् । चस्कद्वान् । स्कन्न । स्कन्नवान् । क्तयोर्न प, विस्कन्न , २ वान् । "परे " ॥ २ । ३ । ५२ ॥ इति क्तयोरपि वा पक्षे, परिस्कन्न , परिष्कण्ण । ' स्कन्दस्यन्द '॥ ४ । ३ । ३० ॥ इति क्त्वः किन्त्वाभावे, स्कन्त्वा । प्रस्कन्द्य । यप कित्त्वमित्यन्ये, प्रस्कद्य । स्कन्त्वा । स्कन्तुम् । सर्वधातूना बहुल वेडित्यन्ये । आस्कन्दिषम्, आस्कात्सम् । आस्कन्तव्यम्, आस्कन्दितव्यमित्यादि । एवमन्यधातुष्वपि । पक्ता, पचिता । पट्टा, पटिता इत्यादि । इद च मत "धूगौदित" ॥४।४।३८॥ इत्यत्र व्यवस्थितविभाषाविज्ञानादागमशास्त्रमनित्यमिति न्यायाच्च स्वमतेऽपि सगृहीत द्रष्टव्यम् ॥ ९२ ॥

पिधू गत्याम्। सेधति। "गतौ सेध "॥२।३।६१॥ इति न पक्षे, अभिसेधति । अनुसेधति गा । अभिगच्छति, अनुगच्छतीत्यर्थ । असेधीत् । सिषेध । सेधि-

ष्यति । "णिस्तोरेव-"॥२।३।३७॥ इति नियमेन षत्वाभावे; सिसेधिषति, सिसेधिषति । सेषिध्यते । सेधयति । असीषिधत् । सिषेधयिषति । "ऊदितो वा"॥४।४।४२॥ इति क्त्वि वेटि, "वौ व्यञ्जन-"॥४।३।२५॥ इति वा किव्त्त्वे च । सिद्ध्वा, सेधित्वा, सिधित्वा । क्त्वि वेट्त्वात् क्तयोर्नेट् । सिद्धः । सिद्धवान् । एवमभ्यनुपूर्वोऽपि । अनेकार्थत्वेन गतेरन्यत्र तु, "स्थासेनि-"॥२।३।४०॥ इति अड्यपि द्वित्वेऽपि, उपसर्गात्परस्य सस्य षत्वे, निषेधति । प्रनिषेधति । न्यषेधत् । न्यषेधीत् । "नाम्यन्तस्थ-"॥२।३।१५॥ इति षत्वे, निषिषेध, निषिषिधिम । निषेधिष्यति । निषिषिधिषति, निषिषेधिषति । प्रत्यषिषिधिषत्, प्रत्यषिषेधिषत् । निषेषिध्यते । निषेषिधीति । निषेषिधयति । न्यषीषिधत् । निषिषेधयिषति । निषिध्य । निषिद्धः ॥ ९३ ॥

ध्वन स्वन शब्दे ॥ ध्वनति, प्रतिध्वनति । अध्वनीत्, अध्वानीत् । दध्वान । ध्वनिता । ध्वनिष्यति । दन्ध्वन्यते । दन्ध्वनीति, दन्ध्वन्ति । शब्दे घटादित्वाण् णौ ह्रस्वे, ध्वनयति । अन्यत्र ध्वानयति । डे, अदिध्वनत् । ध्वनित., २ वान् ॥ स्वन । स्वनति । अस्वानीत्, अस्वनीत् । सस्वान । "जॄभ्रम-"॥४।१।२६॥ इति वा एत्वे, स्वेनु सस्वनु । स्वनिता । स्वनितो मृदङ्ग. । "व्यवात्स्वनोऽशने"॥२।३।४३॥ इति द्वित्वेऽपि अड्यपि षत्वे, विष्वणति; अवष्वणति । व्यष्वणत् । अवाष्वणत् । व्यष्वाणीत्, व्यष्वणीत् । अवाष्वाणीत्, अवाष्वणीत् । विषष्वाण । अवषष्वाण । विषष्वणतु । विष्वणिता । विषिष्वणिषति । अवषिष्वणिषति । विषष्वण्यते । अवषष्वण्यते । विष्वाणयति । व्यषिष्वणत् । अवाषिष्वणत् । विष्वणित. । अशनादन्यत्र तु न षत्वम्, अवास्वनत् गज । विसस्वान मेव. ॥ ९४ ॥ ९५ ॥

गुपौ रक्षणे । "गुपौधूप-"॥३।४।१॥ इति स्वार्थे आय । गोपायति । "अशवि ते वा"॥३।४।४॥ इति वाऽऽये, गोपाय्यते, गुप्यते । अद्यतनी ॥ अगोपायीत् । औदित्वात् । "धूगौदित"॥४।४।३८॥ इति वेटि, "व्यञ्जनानामनिटि"॥४।३।४५॥ इति वृद्धौ, अगौप्सीत् । अगोपीत् । अगोपायि, अगोपि, अगोपायिषाताम् । "सिजाशिष-"॥४।३।३५॥ इति कित्त्वे अगुप्साताम्, अगोपि-

पाताम् । ध्वमि, अगोपायि ३ ध्वम्, ढ्वम्, इढ्वम्, अगुब्ध्वम्, अगुब्ध्वम्, अगोपि २ ध्वम्, इढ्वम् । गोपायाचकार, जुगोप । गोपायांचक्रतु., जुगुपतु । गोपाय्यात्, गुप्यात् । गोपायिषीष्ट, गुप्सीष्ट, गोपिषीष्ट । गोपायिता, गोप्ता, गोपिता । एवमन्यत्रापि । जुगोपायिषति । "उपान्त्ये"॥४।३।३४॥ इति किस्त्वे, जुगुप्सति । "वो व्यञ्जन "॥४।३।२५॥ इति वा किस्त्वे, जुगोपिषति, जुगुपिषति। जोगुप्यते । जोगुपीति, जोगोप्ति । औनिर्देशात् यङ्लुपि न आयः । गोपाययति, गोपयति । आयस्यादन्तत्वेन "उपान्त्य-"॥ ४ । २ । ३५ ॥ इति ह्रस्वाभावे, अजुगोपायत्, अजूगुपत् । गोपायन् । गोपायिष्यन् । गोपायित, २ वान् । वेट्त्वात्, "वेटोऽपत "॥४।४।६२॥ इति नेटि, गुप्तः, २ वान् । गोपायित्वा, गुप्त्वा, गोपित्वा, गुपित्वा । गोपायिता, गोप्ता, गोपिता । गोप्यम् ॥ ९६ ॥

तप धूप सन्तापे । आद्योऽनिट् । तपति । "निसस्तप-"॥२।३।३५॥ इति षत्वे, निष्टपति स्वर्णम्, सकृदग्नि स्पर्शयतीत्यर्थ । आसेवायां तु न ष । पुन २ करणमासेवा । निस्तपति, पुनः २ तपतीत्यर्थ । "व्युदस्तप "॥३।३।८७॥ इत्यात्मनेपदेऽकर्मणि, वितपते, उत्तपते रवि, दीप्यते इत्यर्थ । स्वाङ्गे कर्मणि, वितपते, उत्तपते पृष्ठम्, तापयतीत्यर्थ । क्ये, तप्यते । अताप्सीत्, अताप्ताम्, अताप्सु. । अतापि, अतप्साताम्, अतप्सत, अत ७ प्थाः, प्साथाम्, ब्ध्वम्, ब्द्ध्वम्, प्सि, प्स्वहि, प्स्महि । तताप, तेपतु, तेपु, तेपिथ, ततप्थ, तेपथुः, तेप, तताप, ततप, तेपिव, तेपिम । तेपे, तेपाते, तेपिरे, तेपिषे । तप्यात् । तप्सीष्ट । तप्ता, २। तप्स्यति । "तपेस्तप कर्मकात्"॥३।४।८५॥ इति कर्त्तर्यात्मनेपदम्, क्यश्च । तप्यते तपः साधु । तेपे तपांसि साधु । तपिरत्र करोत्यर्थे । "तप कर्त्रनु-"॥३।४।९१॥ इति न ञिच् । तेन कर्मकर्त्तरि, अन्ववातप्त कितव स्वयमेव । कर्त्तरि, अतप्त तपांसि साधु । अनुतापग्रहणाद्भावे कर्मणि च अन्वतप्त चैत्रेण, पश्चात्ताप कृत इत्यर्थ. । अन्ववातप्त पाप पापेन, पश्चात्ताप कारित इत्यर्थ' । तितप्सति । तातप्यते । तात१२पीति, प्ति, प्त, पति० ॥ शत्रूनिर्देशात् यङ्लुपि न ष, निस्तात २ प्ति, पीति । तातपत् । तातपती । तातपित । तातपित्वा । तापयति । अतीतपत् । तपन्, तप्यमानम् । तप्स्यन् । तप्स्यमानम् । तेपिवान् । तेपानम् । तप्त । निष्टप्ता अरातय

इत्यत्र सदप्यासेवन न विवक्ष्यते, तेन पत्व सिद्धम् । तप्ता । तप्त्वा । तप्तुम् । धूप । धूपायति । धूपाय्यते । धूप्यते । अधूपायीत्, अधूपीत्, अधूपायिष्टाम्, अधूपिष्टाम्, अधूपायि, अधूपि । धूपयाञ्चकार । दुधूप, दुधूपतुः, दुधूपुः । धूपाय्यात्, धूप्यात् । धूपायिता, धूपिता । धूपायिष्यति, धूपिष्यति । दुधूपायिषति, दुधूपिषति । दोधूप्यते । दोधूपीति, दोधूप्ति । धूपाययति, धूपयति । आयस्याऽऽदन्तत्वेन, अदुधूपायत्, अदूधुपत । धूप्यमानम्, धूपाय्यमानम् । धूपायाञ्चकृवान्, दुधूप्वान् । धूपायाञ्चक्राणम् । दुधूपानम् ॥ ९७ ॥ ९८ ॥

लप जल्प व्यक्ते वचने । लपति । आ, प्र, वि, सम्, उद्, अप, अभिपूर्वोऽपि । अय सर्वः पठिवत्, पर यङ्लुपि, लालपीति, लालप्ति, लालप्तः, लाल ९ पति, पीषि, प्सि, प्थः, प्थ, पीमि, प्मि, प्वः, प्मः । "हुधुटो-" ॥४।२।८३॥ इति धिः, "तृतीयस्तृ-"॥१।३।४९॥ इति बः । लालब्धि । दिवि, अलाल ३ पीत्, प्, ब् । "भ्राजभास-" ॥ ४ । २ । ३६ ॥ इति डे, वा ह्रस्वे । अलीलपत्, अललापत् । "भ्राज-" ॥ ४ । २ । ३६ ॥ इति सूत्रे लपामिति बहुवचनं शिष्टप्रयोगानुसारेणान्येषामपि णौ डे वा ह्रस्वार्थ, तेन अबिभ्रसत्, अबभ्रासदित्यादिसिद्धम् । जल्प । जल्पति । "क्रियाव्यतिहारेऽगति-"॥३।३।२३॥ इत्यत्र शब्दार्थवर्जनाज्ञात्मनेपदम्, व्यतिजल्पति । अजल्पीत् । जजल्प । यङि, जाजल्प्यते । शेष वाछतिवत् ॥ ९९ ॥ १०० ॥

जप मानसे च । मनोनिर्वर्त्ये वचने । चाद्व्यक्ते वचने । जपति । जजाप, जेपतुः, जेपुः, जेपिथ । जपिता । जपिष्यति । यङि, गर्हित जपति जञ्जप्यते, अत्र "जपजभ-" ॥ ४ । १ । ५२ ॥ इति मुरन्तः । भृशाभीक्ष्ण्ययोस्तु वाक्यमेव । "श्वसजप-"॥४।४।७५॥ इति क्तयोर्वा नेट् । जप्त, २ वान् । जपित, जपितवान् । जप्यम् । जाप्यम् । शेष पठिवत् ॥ १०१ ॥

सृप्लृ गतौ । अनिट् । सर्पति, उपसर्पति, उत्सर्पति । क्रियाव्यतिहारे गत्यर्थवर्जनादात्मनेपदाभावे, व्यतिसर्पन्ति । क्ये, सृप्यते । लृदित्त्वादङि, असृपत् । असर्पि, असृप्साताम्, असृब्ध्वम्, असृब्द्ध्वम् । ससर्प, ससृपतु, ससृपु । सृप्यात् । सृप्सीष्ट । सर्प्स्यति । सिसृप्सति । कुटिल सर्पति, सरीसृप्यते । सर्पयति ।

"ऋद्वर्णस्य"॥४।२।३७॥ इति वा ऋः। असीसृपत्, अससर्पत्। णौ सनि, सिसर्पयिषति । सर्ता । सृप्त्वा । सर्प्तुम् । सृप्त ॥ १०२ ॥

चुप मन्दायाम्। गताविलनुवर्त्तते, चोपति, किंचिच्चलतीत्यर्थ.। अचोपीत्। चुचोप। चोपिता। णौ चल्यर्थत्वात्परस्मैपदे, चोपयति शाखाम्। अचूचुपत्॥१०३॥

चुबु वक्त्रसंयोगे । नेऽन्ते । चुम्बति, विचुम्बति । अचुम्बीत् । चुचुम्ब । चुम्बितुम् ॥ १०४ ॥

चमू जिमू अदने । चमति; विचमति । आङ्पूर्वस्य "ष्ठिवूक्लम्व-"॥ ४।२। १०९॥ इति शिति दीर्घत्वे, आचामति। क्ये, आचम्यते । "नश्वि"॥४।३।४९॥ इति वृध्द्यभावे, आचमीत् । ' मोऽकमि-"॥ ४ । ३ । ५५॥ इति चमो न वृद्धि । अचमि । आचमेस्तु स्यात् । आचामि, आचामिषाताम्। आचचाम, आचेमतु, आचेमु, आचेमिथ । आचेमे । आचम्यात् । आचामिष्यति । आचिचमिषति । आचञ्चम्यते । चञ्चमीति, चञ्चन्ति, चञ्चान्त, चञ्चमति, चञ्चमीषि, चञ्चंसि । "शिड्हे-"॥१।३।४०॥ इत्यनुस्वारः, चञ्चा २ न्थ, न्थ चञ्च ४ मीमि, न्मि, न्वः, न्मः । अत्र " मो नो म्वोश्च "॥ २ । १ । ६७॥ इति मस्य न' ॥ हौ " अहन्पञ्चम-"॥४।१।१०७॥ इति दीर्घे "शिड्हे-"॥१।३।४०॥ इत्यनुस्वारे च, आचञ्चाहि ॥ अद्यतनी ॥ "नश्वि-'॥४।३।४९॥ इति न वृद्धौ, अचञ्चमीत्। शेष यङ्लुबन्तपचिवत्। "अमोऽकम्य-"॥४।२।२६॥ इति णौ ह्रस्वाभावे, आचामयति । आचीचमत्।आचामि । आचामन् । आचमिष्यन्। आचेमिवान्। आचेमानम्। ऊदित्त्वात् क्त्वि वेट्, चान्त्वा, चमित्त्वा । आचम्य। वेट्त्वात् क्तयोर्नेट्। आचान्त ,२ वान् । आचामितुम् । आचामिता । जिम । जेमति । क्ये, जिम्यते । अजेमीत्, अजेमिष्टाम्। अजेमि, अजेमिषाताम्। जिजेम, जिजिमतु, जिजिमु, जिजेमिथ, जिजिमथु, जिजिम, जिजिमिम।जिम्यात्। जेमिता। जेमिष्यति। जिजिमिषति, जिजेमिषति। जेजिम्यते। जेजिमीति, जेजेन्ति, जेजीन्त, जेजिमति, जेजिन्व, जेजिन्म, हौ, जेजींहि ॥ ह्यस्तनी ॥ अजेजिमीत् । "मो नो"॥२।१।६७॥ इति पदान्ते न ॥ अजेजेन्, अजेजीन्ताम्, अजेजिमु ॥ अद्यतनी ॥ अजेजेमीत् । जेजेमामास । जेजिम्यात् । जेजेमिष्यति। जेजिमिर्त । जेजेमित्वा, जेजिमित्वा ।

जेजेमितुम्। जेमयति। अजीजिमत्। जेमितः। जेमन्। जेमिष्यन्। जिम्यमानम्। जिजिन्वान्, अत्र "मो नो-"॥२।१।६७॥ इति नः। जिजिमानम्। जेमिता। जेमि २ तुम्, तव्यम्। ऊदित्वादेटि "अहन्पञ्चम-"॥४।१।१०७॥ इति दीर्घे, जीन्त्वा। पक्षे, "वौ व्यञ्जन-"॥४।३।२५॥ इति वा कित्त्वे, जिमित्वा, जेमित्वा। वेट्त्वान्नेटि, जीन्तः, २ वान् ॥१०५॥१०६॥

क्रमू पादविक्षेपे। पदन्यासे। "क्रमो दीर्घः-"॥४।२।१०९॥ इति दीर्घे, क्रामति; "भ्रासम्लास-"॥३।४।७३॥ इति कर्त्तरि, वा श्ये, क्राम्यति, "क्रमोऽनुपसर्गात्" ॥३।३।४७॥ इत्यात्मनेपदे, वा श्ये च, क्रमते, क्रम्यते। एवं ४ रूपाणि। उपसर्गात्तु परस्मैपदे, प्रतिक्रामति, प्रतिक्राम्यति। एवं, सम् निरति अभिपूर्वोऽपि। "वृत्तिसर्ग-" ॥३।३।४८॥ इत्यात्मनेपदे, ऋच्वस्य क्रमते बुद्धिः, न प्रतिहन्यत इत्यर्थः। युद्धाय क्रमते, उत्सहत इत्यर्थः। प्राज्ञे शास्त्राणि क्रमन्ते, स्फीतीभवन्ति। "परोपात्" ॥३।३।४९॥ पराक्रमते, परावृत्त्या क्रामति, शौर्यं वा कुरुते इत्यर्थः। उपक्रमते, समीपे गच्छतीत्यर्थः। वा श्ये। पराक्रम्यते। उपक्रम्यते। एवमन्यत्रापि॥ "वेः स्वार्थे"॥३।३।५०॥ पादन्यासे। साधु विक्रमते हस। स्वार्थादन्यत्र तु, विक्रामति, उत्सहत इत्यर्थः। "प्रोपादारम्भे"॥३।३।५१॥ प्रक्रमते, उपक्रमते भोक्तुम्। "आङो ज्योतिरुद्गमे"॥३।३।५२॥ आक्रमते नभोऽर्कः। ज्योतिरुद्गमादन्यत्र तु आक्रामति धूमो नभः। क्ये, क्रम्यते। हौ, क्राम। क्राम्य। सङ्क्राम। सङ्क्राम्य॥ अद्य०॥ "नश्वि-"॥४।३।४९॥ इति वृद्ध्यभावे, अक्रमीत्, मिष्टाम्, मिषुः०॥ "क्रमः"॥४।४।५३॥ इत्यात्मनेपदे नेट्। अक्रस्त, प्राक्रस्त, उपाक्रस्त, अक्रसाताम्०॥ भाक॥ "मोऽकमि-"॥४।३।५५॥ इति न ञिचि वृद्धिः, अक्रमि। आत्मने नेटि, अक्रसाताम्, अक्रसत, अक्रस्थाः, अक्रध्वम् अक्रद्ध्वम्०॥ परोक्षा॥ चक्राम, चक्रमतुः, चक्रमि २ थ, म। चक्रमे, चक्रमिध्वे। क्रम्यात्। क्रंसीष्ट, प्रक्रंसीष्ट; उपक्रंसीष्ट। क्रमिता। क्रन्तासे। क्रमिष्यति। क्रंस्यते। अक्रमिष्यत्, अक्रम्यत्। प्राक्रंस्यत, उपाक्रंस्यत। सनि, चिक्रमिषति। अनुपसर्गस्य चात्मने चिक्रमते। प्रचिक्रंसते, उपचिक्रंसते, आचिक्रंसते। अचिक्रंसिष्ट। प्राचिक्रंसिष्ट। प्रचिक्रमिष्यते। उपचिक्रंसिष्यते। कुटिल क्रामति चङ्क्रम्यते। "अत"॥४।३।८२॥ इति अल्लुकि "योऽशिति"॥४।

३।८०॥ इति यलुकि, अचङ्क्रमि ९ष्ट, पाताम्०॥ चङ्क्रमा चक्रे३ । चङ्क्रमिपीष्ट। चङ्क्रमिष्यते। लुपि, चङ्क्र २ मीति, न्ति, चङ्क्रान्त , चङ्क्रमति॥ अद्यतनी॥ अचङ्क्रमीत्। चङ्क्रमामास ३। भृशाभीक्ष्ण्ये तु वाक्यमेव, न तु यङ्। भृशमभीक्ष्णं वा क्रामतीति, गत्यर्थाद्भृशाभीक्ष्ण्ये कुटिलयुक्त एव यङ्, न केवले, इति केचित्। एव "गृलुप-"॥३।४।१२॥ इति सूत्रोक्तेरपि परमतम्॥ णौ, "अमोऽकम्यमि-"॥४।२। २६॥ इति ह्रस्वे, क्रमयति। अचिक्रमत्। ञिणम् परे तु वा ह्रस्वे, अक्रामि, अक्रमि। क्रमयाञ्चकार। क्रामन्। क्रममाणः । आक्रामन् धूम । कथ जगदाक्रममाणस्येति, शानेन भविष्यति । क्रम्यमाणम् । क्रंस्यमाणम्। चक्रन्वान् । "क्रमोऽनुप-"॥३।३। ४७॥ इति वात्मनेपदे विषयत्वे "तु."॥४।४।५४॥ इत्यनेनात्मनेपदविषयत्वान्नेट् । क्रन्ता, प्रक्रन्ता, उपक्रन्ता, आक्रन्ता। अनात्मने विषयत्वे तु, क्रमिता, निष्क्रमिता। ऊदित्वात् क्त्वि वेटि "क्रम क्त्विवा"॥४।१।१०६॥ इति वा दीर्घे, क्रन्त्वा, क्रान्त्वा, क्रमित्वा। वेट्त्वान्नेट्, क्रान्तः। क्रान्तवान्। क्रमितुम्। क्रमितव्यम् ॥ १०७ ॥

अथ द्वावनिटौ। यमू उपरमे। यच्छति। "यम स्वीकारे"॥३।३।५९॥ इत्युपादात्मनेपदम्, उपयच्छते कन्याम्। "आङोयमहन स्वेऽङ्गे च"॥३।३।८६॥ आयच्छते पाणिम्, दीर्घीकरोतीत्यर्थः। "समुदाङो यमे-"॥३।३।९७॥ सयच्छते व्रीहीन्। उद्यच्छते भारम्। आयच्छते वस्त्रम्। "पदान्तरगम्ये वा"॥३।३।९९॥ स्वान् व्रीहीन् सयच्छते, सयच्छति वा। क्ये, यम्यते॥ अद्यतनी॥ "यमिरमिनम्य" ॥४।४।८६॥ इति सोऽन्त, इट् च । अयसीत्, अयसिष्टाम्, अयमिषु । आयस्त कूपाद्रज्जुम्, उद्धृतवानित्यर्थः । "यम सूचने"॥४।३।३९॥ इति सिच किस्वे, "यमिरमि-"॥४।२।५५॥ इति मलुकि, उदायत, उदायसाताम्, उदायसत। "वा स्वीकृतौ"॥४।३।४०॥ उपायत, उपायस्त महास्त्राणि, कन्यां वा । मोपयध्व भयम्। उपा २ यध्वम्, यद्ध्वम्॥ भाक॥ "मोऽकमि-"॥४।३।५५॥ इति अनिषेधाद् वृद्धि। अयामि, अयसाताम्। ध्वमि, अयन्ध्वम्, अयन्द्ध्वम्॥ परोक्षा॥ ययाम, येमतु, येमु, येमिथ, ययन्थ, येमिम। येमे। यम्यात्। यसीष्ट। यियमति। ययम्यते। ययमित्वा। ययमित। यंयस्यमान। लुपि, यय २ मीति, न्ति। "यमिरमिनमि-"॥४।४।८६॥ इति मलुकि। ययत.,

यंयमति । हौ, यंयहि ॥ ह्यस्तनी ॥ अयंयन् । अयय १० मीत्, ताम्, मुः, न्, मीः० ॥ अद्य० ॥ अययसीत् । शतरि तु, ययच्छत् । णौ, "यमोऽपरि-"॥४।२।२९॥ इति ह्रस्वे यमयति केशान् । परिवेषणे तु, यामयत्यतिथीन् । "अणिगि प्राणि-"॥३।३।१०७॥ इत्यस्यापवाद., "परिमुह-"॥३।३।९४॥ इत्यात्मनेपदम्, आयामयते सर्पम् । परमतेनात्र न ह्रस्व' । स्वमतेन तु भवत्येव । आयमयते । अयीयमत् । अयामि । अयमि । परिवेषणे तु, अयामि । यच्छन् । यंस्यन् । येमिवान् । यतः, २ वान् । यन्ता । ऊदित्वात् क्त्वि वेटि, यत्वा, यमित्वा । यपि "वाम." ॥४।२।५७॥ इति वाऽन्तलोपे, प्रयम्य, प्रयत्य ॥ १०८ ॥

णम प्रह्वत्वे, नम्रत्वे । नमति । णपाठात् "अदुरुपसर्ग-'॥२।३।७७॥ इति ण', प्रणमति । परिणमति । क्ये, नम्यते । अनसीत्, "यमिरमिनम्यात-" ॥४।४।८६॥ इति सोऽन्त इट् च । अनसिष्टाम्, अनसिषु. । "मोऽकमि-'॥४।३।५५॥ इति अनिषेधाद् वृद्धौ, अनासि, अनसाताम्, अनस्था ; अनध्वम्, अनंद्ध्वम् ॥ परोक्षा ॥ ननाम । प्रणनाम । अत्र परे द्वित्वे कार्ये णत्वशास्त्रस्यासत्त्वात् द्वित्वे कृते णत्वम् । एवमन्यत्रापि । नेमतु', नेमुः, नेमिथ, ननन्थ; नेमथु', नेम, ननाम, ननम, नेमिव, नेमिम । नेमे, नेमिध्वे । नम्यात् । नसीष्ट । नंस्यति ॥ कर्मकर्त्तरि "एकधातौ-" ॥ ३ । ४ । ८६ ॥ इत्यात्मनेपदे अनसीद्दण्ड दण्डी । अनस्त नमते वा दण्डः स्वयमेव । परिणमति मृदं कुलालः । परिणमते मृत् स्वयमेव । अत्र "भूषार्थ-"॥३।४।९३॥ इति निषेधात् क्यो ञिश्च न भवत' ननु नम् अकर्मकस्तत्कथमस्य कर्मस्थक्रियत्वम् । उच्यते । अन्तर्भूतण्यर्थत्वेन सकर्मकत्वाद्दण्डस्य कर्मकर्तृत्वम् । यत्र तु ण्यर्थो नास्ति तत्र कर्तृत्वैव, यथा नमति पल्लवो वातेन । एवमन्यत्रापि । निनमति । प्राग् णत्वे पश्चात् द्वित्वे, प्रणिणसति । ननम्यते । नंनमीति, न्ति । 'यमिरमिनमि" ॥४।२।५५॥ इति मस्य लुकि, ननतः, ननमति, नंनमीषि, ननमि, नंनथ, थ, मीमि, न्मि न्व, न्म', "मो नो-"॥२।१।६७॥ इति मस्य न् । हौ, ननहि । अद्य० ॥ अननसीत् । शेष पठिवत् । क्ते, ननमित' । "ज्वलह्वल-"॥४।२।३२॥ इत्यनुपसर्गस्य णौ वा ह्रस्वे, नमयति, नामयति । सोपसर्गस्य तु, 'अमोऽकम्यमि- ॥४।२।२६॥

इति नित्य ह्रस्वे, प्रणमयति। उन्नमयति। अनीनमत्। प्राणीनमत्। "ज्वलह्वल-" ॥४।२।३२॥ इत्यनेन वा ह्रस्वविधानात्, ञिणम्परे इति नानूद्यते, ततो "अमोऽकम्य"॥४।२।२६॥ इत्यनेनैव निरुपसर्गस्य सोपसर्गस्य वा ञिणम्परे णौ वा दीर्घे सिद्ध एव। अनामि, अनमि। प्राणामि, प्राणमि । नमन्। नस्यन्। नम्यमानम्। नस्यमानम्। नेमिवान् । नत । नत्वा । यपि "वाम-"॥४।२।५७॥ इति वाऽन्तलुपि, प्रणत्य, प्रणम्य। नन्तुम् । नन्ता। नन्तव्यम् ॥ १०९ ॥

अम शब्दभक्त्यो:; भक्तिर्भजनम्। अमति। प्रपूर्वोऽय भ्रात्तावपि, प्रामति। अम्यते । "नश्वि-"॥४।३।४९॥ इति वृद्धिनिषेधेऽपि "स्वरादेस्तासु"॥४।४।३१॥ इति वृद्धौ, आमीत्, आमिष्टाम्। "मोऽकमि-"॥४।३।५५॥ इति वृद्धिनिषेधेऽपि "स्वरादे-"॥४।४।३१॥ इति वृद्धौ, आमि, आमिषाताम्।आम, आमतु, आमु । अमिता।अमिष्यति। अमिमिषति। "अमोऽकमि-"॥४।२।२६॥ इत्यत्र वर्जनान्न ह्रस्वे, आमयति । आमिमत्। आमि । आम २। प्रामम् २। अमन्। अमिष्यन् । "श्वसजप-"॥४।४।७५॥ इति क्तयोर्वा नेटि, अम्यान्त, अम्यमित. । अमि३ता, तुम्, त्वा। प्राम्य ॥ ११० ॥

अम, गम्लृ गतौ । अमिरुदाहृत एव, अर्थभेदार्थ तु पुन पाठ । गम्। अनिट्। गच्छति। "क्रियाव्यतिहार-"॥३।३।२३॥ इति गत्यर्थनिषेधान्नात्मनेपदे, व्यतिगच्छति मिथुनम्। अकर्मणि "समो गमृच्छि-"॥३।३।८४॥ इत्यात्मनेपदे, सङ्गच्छते। कर्मणि तु सति, सङ्गच्छति सुहृदम्। क्ये, गम्यते । सङ्गम्यते ॥ ह्यस्तनी ॥ अगच्छत्। समगच्छत ॥ अद्यतनी ॥ "लृदिद्द्युतादि-"॥३।४।६४॥ इत्यङि, अगमत्, अग८मताम्, मन्, म, मतम्, मत, मम्, माव, माम । "गमो वा"॥४।३।३७॥ इति सिजाशिषोरात्मने वा किच्चे "यमिरमि-"॥४।४।८६॥ इत्यन्तलोपे, "धुड्ह्रस्व-"॥४।३।७०॥ इति सिच्लुकि च, समगत, समगस्त, समगसाताम्, समगसाताम्०॥भाक॥ "मोऽकमि-"॥४।३।५५॥ इति अनिषेधाद्वृद्धौ, अगामि । समगामि। अगसाताम्, अगसाताम्, अगसत, अगसत, अगथा, अगस्था., अगसाथाम्, अगसाथाम् । सिचो वा किच्चे मस्य लुकि, "सो धि"॥४।३।७१॥ इति सिचो वा लुकि च, अगध्वम्, अगद्ध्वम्,

अगन्ध्वम्, अगन्द्ध्वम्, अगसि, अगसि, अगस्वहि, अगस्वहि, अगस्महि, अगस्महि॥ परोक्षा॥ जगाम "गमहन-"॥४।२।४४॥ इत्युपान्त्यलुकि, जग्मतुः, जग्मुः। "सृजूदृशि-"॥४।४।७८॥ इति थवि वेट्, जगमिथ, जगन्थ, जग्मथुः, जग्म, जगाम, जगम। "स्क्रसृ-"॥४।४।८१॥ इतीटि, जग्मिव, जग्मिम। सञ्जग्मे, सञ्जग्माते, सञ्जग्मिरे, सञ्जग्मिषे॥भाक॥ जग्मे; जग्मिध्वे। गम्यात्। सङ्गसीष्ट, सङ्गंसीष्ट, चैत्रः॥ भाक॥गसीष्ट, गसीष्ट। गन्ता। सङ्गन्तासे। "गमोनात्मने"॥४।४।५१॥ इतीटि, गमिष्यति। आत्मनेपदे तु नेटि, सङ्गस्यते वत्सो मात्रा॥ भाक॥ गस्यते ग्रामः। अगमिष्यत्। समगस्यत। अगस्यत। जिगमिषति। जिगमिषिष्यति। जिगमिषि ३ ता, तुम्, तः। आत्मनेपदविषयस्यात्मनेपदाभावे इटि, सञ्जिगमिषि ३, ता, त., तव्यम्। आत्मनेपदे तु नेटि, जिगस्यते ग्रामः। "स्वरहन्गमो."॥४।१।१०४॥ इत्यत्र गमुग्रहणाद्गमो न दीर्घ.। सञ्जिगंसते वत्सो मात्रा। साञ्जिग३ स्यते, सिष्यते, समान.। जङ्गम्यते। अजङ्गमि ९ ष्ट, षाताम्, षत०॥ जङ्गमाचक्रे। जङ्गमिष्यते। जङ्गमिता। जङ्गमित.। यङोऽलुकः स्थानित्वाद् "गमहन"॥४।२।४४॥ इत्युपान्त्यलोपो न स्यात्। लुपि, जङ्गमीति। त्यादौ तु, न छः। जङ्गन्ति, जङ्गतः, जङ्ग्मति, जङ्गमीषि, जङ्गसि, जङ्ग २ थ, थ. जङ्ग ३ न्मि, न्व., न्म॥ "समो गमृच्छ"॥३।३।८४॥ इत्यत्र प्रकृतिग्रहणात् यङ्लुप्यात्मनेपदमेव, सजङ्गते, सञ्जङ्ग्माते, सञ्जग्मते। हौ, जङ्गहि॥ह्यस्तनी॥ "मो नो म्वोश्च"॥२।१।६७॥ इति पदान्ते नः, अजङ्ग ९ न्, मीत्, ताम्, मुः, न्, मी०॥ अद्यतनी॥ "लृदिद्युतादि-"॥३।४।६४॥ इत्यत्र लृदनुबन्धनिर्देशाद्यङ्लुपि नाऽङ्; अजङ्ग ३ मीत्, मिष्टाम्, मिषुः। अजङ्गामि, अजङ्गसाताम्, अजङ्गसाताम्। आत्मनेपदे नेट्। "गमोऽनात्मने"॥४।४।५१॥ इत्यत्र प्रकृतेर्ग्रहणात्, जङ्गमाञ्चकारेत्यादि। आशीःप्रभृतिषु प्राग्वत्। शतरि तु "गमहन-"॥४।२।४४॥ इत्युपान्त्यलोपे "गामिपद्-"॥४।२।१०६॥ इति मश्छत्वे "अघोषे-"॥१।३।५०॥ इति गस्य कत्वे, जक्छत्। णिगि "अमोऽकम्यमि-"॥४।२।२६॥ इति ह्रस्वे, गमयति मैत्रम्, अत्र फलवत्कर्त्र्यपि "अणिगि प्राणि"॥३।३।१०७॥ इति परस्मैपदम्। सकर्मकत्वविवक्षाया तु, गमयति, गमयते वा मैत्र ग्रामम्। अत्र गति पादविहरण, चलन तु

स्थितस्यैव पदार्थस्येति "चल्याहारार्थ-"॥३।३।१०८॥ इति न परस्मैपदमेवैकम्, अवगमयति, गुरु शिष्य धर्मम् । त्रिष्वपि "गतिबोध"॥२।२।५॥ इत्यणिक्कर्तुः कर्मत्व, णिगि कर्त्ता तु न कर्म, गमयति चैत्रो मैत्रम्, तं परः प्रयुङ्क्ते, गमयति चैत्रेण मैत्र जिनदत्त. । "गमे. क्षान्तौ"॥३।३ ५५॥ इत्यात्मनेपदे, आगमयते गुरून्, किञ्चित्काल प्रतीक्षत इत्यर्थ. । आगमयस्व तावत्, किञ्चित्काल सहस्वेत्यर्थ । क्षान्तेरन्यत्र तु, आगमयति विद्या॥, गृह्णातीत्यर्थः । ङे, अजीगमत्, त ॥भाक॥ ञिणम्परे तु वा दीर्घः, अगामि, अगमि । अवागामि, अवागमि । गाम २, गम २ । गच्छन् । गमिष्यन् । सङ्गच्छमान । सगस्यमानः। गम्यमानम्।गस्यमानम्।"गमहन-"॥४।४।८३॥ इति क्सौ वेटि, जग्मिवान्, जगन्वान्। "गत्यर्थ-"॥५।१।११॥ इतिवा कर्त्तरि क्ते, गतो ग्राम चैत्र.। पक्षे, कर्मणि, गतो ग्रामश्चैत्रेण। भावे, गतमनेन। "अयर्थाचाधारे"॥५।१।१२॥ इदमेषांगतम्। "क्तयोरसद-"॥२।२।९१॥ इत्याधारवर्जनात् कर्तरि षष्ठी । क्तौ, गतिः । गत्वा । आगत्य, आगम्य । गन्तुम्। गन्ता । गन्तव्यम् । गमनीयम् ॥ १११ ॥

ईर्ष्य ईर्ष्यार्थे । ईर्ष्यति । छात्रायेर्ष्यते, अत्र कर्माभावाद्भावे आत्मनेपदम्। ऐर्ष्यीत्। ईर्ष्याञ्चकार। ईर्ष्यात्। "यि सन्वेर्ष्य"॥४।१।११॥ इति ये. सनो वा द्विर्त्वे, ईर्ष्यियिषति, ईर्ष्यिषिषति । णौ ङे, येर्द्वित्वे, ऐर्ष्यियत्। ईर्ष्यित ॥११२॥

चर भक्षणे च, चाद्गतौ । चरति, आचरति । एव प्र, सम, वि, परि, उप, अति, व्यभि, अभ्यनु पूर्वोऽपि क्रियाव्यतिहारे गतिनिषेधाद्गतौ नात्मनेपदम्, व्यतिचरन्ति ग्रामम् । भक्षणे तु स्यात्, व्यतिचरन्ते चारिम् । "उदश्चर"॥३।३।३१॥ इत्यात्मनेपदे, गुरुवच उच्चरते, अनुवर्त्तत इत्यर्थ । गेहमुच्चरते, उल्लङ्घयतीत्यर्थ । साप्याद्वित्येव, धूम उच्चरति । "समस्तृतीयया"॥३।३।३२॥ अश्वेन सञ्चरते । क्ये, चर्यते । "वदव्रजलू-"॥४।३।४८॥ इति वृद्धौ, अचारीत्, अचारिष्टाम् । अचारि, अचरिषाताम् । चचार, चेरु, चेरि २ थ, म । चर्यात्। चरिता। चरिष्यति। चिचरिषति । अश्वेन सञ्चिचरिषते। "गृलुप-"॥३।४।१२॥ इति यङि, गर्हित चरति चञ्चूर्यते । अत्र "तिचोपान्त्य"॥ ४।१।५४॥ इत्यत उ । द्वित्वे सतीत्यधिकारान्न पूर्वमुत्वम्। 'चरफलाम्'॥४।१।५३॥ इति

मुरन्तः । गर्ह्यादन्यत्र तु न यङ्; भृशं कुटिलं वा चरति ॥ ह्यस्तनी ॥ अचञ्चूर्यत ॥ अद्यतनी ॥ अतो यश्च लुकि, अचञ्चूरिष्ट । लुपि, चञ्चूर्त्ति, चञ्चुरीति, चञ्चूर्तः, चञ्चुरति, चञ्चुरीपि, चञ्चूर्षि, चञ्चूर्थः, चञ्चूर्थ, चञ्चुरीमि, चञ्चूर्मि, चञ्चूर्वः, चञ्चूर्मः । आच ४ ञ्चूः, चुरीत्, चूर्त्ताम्, चुरुः । आचञ्चु ३ रीत, रिष्टाम्, रिषुः । णौ, विचारयति । उच्चारयति । व्यचीचरत् । चेरिवान् । चरि ३ ता, त्वा, तुम् । आचर्य । चरित', २ वान् । कथं, चीर्ण., २ वान् इति । चॄ इति धात्वन्तरं चरति समानार्थम्, क्तक्तवतुविषयमामनन्ति ॥ ११३ ॥

दल, ञिफला विशरणे । दलति । अदालीत् । ददाल, देलतुः, देलु. । णौ; उद्दालयति । केचिदेनं घटादौ मन्यन्ते, दलयति । दलिता । दलितुम् । ञिफला । फलति । प्रतिफलति । शेषं फलनिष्पत्तावित्यस्येव, परम् "अनुपसर्गाः क्षीवोल्लाघ-"॥४।२।८०॥ इति क्ते निपातनात्, फुल्ल । फुल्लमनेन । उत्फुल्ल';सफुल्लः॥ सोपसर्गस्य तु प्रफुल्ला लता । अत्र ञीत्त्वाद् "ज्ञानेच्छा-"॥५।२।९२॥ इति सति क्त., क्तवतौ निपातनाभावात्, प्रफुल्तवान् । उत्फुल्तवान् । सफुल्तवान् । अन्येतु क्तवतावपी च्छन्ति, फुल्लवानित्यादि । आदित्वात् "नवा भावारम्भे"॥४।४।७२॥ इति क्तयोर्वा नेटि, प्रफुलितमनेन । प्रफुल्लमनेन । प्रफुलितः । प्रफुल्त' ॥ ११४ ॥ ११५ ॥

मील निमेषणे, सङ्कोचे । मीलति । उन्मीलति । प्रनिसम्पूर्वोऽपि । अमीलीत् । मिमील । मीलिष्यति । मिमीलिषति । मेमील्यते, मेमी १२ ल्ति, लीति, ल्त', लति०॥ णौ ङे, "भ्राजभास-"॥४।२।३६॥ इति वा ह्रस्वे, अमीमिलत् । अमिमीलत् । णौ क्ते, मीलित. । मीलित्वा । मीलयित्वा । निमील्य ॥११६॥

मूल प्रतिष्ठायाम् । मूलति । अमूलीत् । मुमूल । णौ उन्मूलयति केशान् । उदमूमुलत् । मूलयाञ्चकार । क्ते, उन्मूलितः ॥ ११७ ॥

फल निष्पत्तौ, सिद्धौ । फलति । प्रतिफलति । "वदव्रज-"॥४।३।४८॥ इति वृद्धौ, अफालीत् । पफाल । "तॄत्रप-"॥४।१।२५॥ इत्येत्वे, फेलतु, फेलु, फेलिथ । फलिता । फलिष्यति । पिफलिषति । "तिचोपान्त्य"॥४।१।५४॥ इत्यत उ', पंफुल्यते । "ह्यक्तोपान्त्य-"॥४।३।१४॥ इति न गुणे, पफुलीति । "तिचो-

पान्त्य-"॥४।१।५४॥ इत्यत्र अनोदिति वचनाद्गुणाभावे, पफु ११ रित, त्त., लति, लीषि, प्ति ० । णौ, फालयति । अपीफलत् । फलित', २ वान् ॥ ञिफलेस्तस्य तु, फुल्ल ॥ ११८ ॥

फुल्ल विकसने । फुल्लति । अफुल्लीत् । पुफुल्ल, पुफुल्लतु', पुफुल्लु' । फुल्लिता । फुल्लित', २ वान् ॥ ११९ ॥

वेल्ल, खेल्ल, स्खल, चलने । वेल्लति । उद्वेल्लति । विवेल । वेल्लिता । णौ, उद्वेल्लयति । ङे, ऋदित्त्वाद् "उपान्त्य-"॥४।२।३५॥ इति ह्रस्वाभावे, अविवेल्लत् । खेलति । अखेलीत् । चिखेल । चिखेलिषति । चेखेल्यते । ऋदित्त्वात्, अचिखेलत् । स्खलति । चस्खाल । णौ सनि, चिस्खालयिषति । स्खलिता ॥ १२० ॥ १२१ ॥ १२२ ॥

गल, चर्व अदने । गलति । "वदव्रज-"॥४।३।४८॥ इति वृद्धौ, अगालीत् । जगाल । गलिष्यति । स्रवणेऽप्ययमनेकार्थत्वात्, गलत्युदक कुण्डिकाया.॥ चर्वति । "बहुलमेतन्निदर्शनम्" इति चुरादित्वे । चर्वयति ॥ १२३ ॥ १२४ ॥

गर्व दर्पे । गर्वति । अगर्वीत् । जगर्व । गर्वित ॥ १२५ ॥

ष्ठिवू निरसने । "प सो"॥ २।३।९८॥ इत्यत्र ष्ठिवो वर्जनान्न प. स । 'ष्ठिवूक्लम्व-"॥४।२।११०॥ इति दीर्घे, ष्ठीवति । निष्ठीवति । क्ये, "भ्वादे"॥२।१।६३॥ इति दीर्घे, ष्ठीव्यते । अष्ठेवीत्, अष्ठेविष्टाम्, "तिर्वा ष्ठिव."॥४।१।४३॥ इति पूर्वस्य वा तित्वे, तिष्ठेव, टिष्ठेव । "इवृध-"॥४।४।४७॥ इति सनि वेटि, तिष्ठेविषति । टिष्ठेविषति । पक्षे, "उपान्त्ये"॥४।३।३४॥ इति सन किस्त्वे ऊटि द्वित्वे "तिर्वा ष्ठिव"॥४।१।४३॥ इत्यत्र तेरिकारस्योच्चारणार्थत्वात् वा ठस्य तत्वे च, तुष्ठ्यूषति, टुष्ठ्यूषति । तेष्ठीव्यते, टेष्ठीव्यते । "ष्ठिवूक्लम्व-"॥४।२।११०॥ इत्यत्र अत्यादावधिकाराचङ्लुपि त्यादौ न दीर्घ । तेष्ठेति, अत्र "व्यो-"॥४।४।१२१॥ इति व्लुक् । तेष्ठिवीति, तेष्ठ्यूतः, तेष्ठिवति । एवं टेष्ठेतीत्याद्यपि । शतरि तु, "ष्ठिवू-"॥४।२।११०॥ इति ऊदिन्निर्देशाद्यङ्लुपि न दीर्घ, तेष्ठिवत् । टेष्ठिवत् । ष्ठेवि २, ता, तुम् । ऊदित्त्वात् क्त्वि वेट्, ष्ठ्यूत्वा, ष्ठेवित्वा । निष्ठीव्य । वेट्त्वान्नेट्, निष्ठ्यूत, २ वान् । "ष्ठिवूसिवोऽनटि वा"॥४।२।११२॥ इति वा दीर्घ, निष्ठीवनम्, निष्ठेवनम् ॥ १२६ ॥

जीव प्राणधारणे। जीवति। उपजीवति। जीवतु, जीवतात्; जीव, जीवतात्। अजीवीत्, अजीविष्टाम्। अजीवि। उपाजीविषाताम्, उपाजीवि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्। जिजीव, जिजीवतुः; जिजीविथ। जिजीवे। उपजिजीविध्वे, ढ्वे। जीव्यात्। उपजीवि १० षीष्ट। षीढ्वम्, षीध्वम्०॥ जीविता। जीविष्यति। जिजीविषति। जेजीव्यते। जेजीवीति। जेज्योति। द्विले कृते "अनुनासिके च-"॥४।१।१०८॥ इति ऊट्, जेज्यूतः, जेजीवति, जेजीवीषि, जेज्योषि, जेज्यूथः, जेज्यूथ, जेजीवीमि, जेज्योमि। वस्य विकल्पेनानुनासिकत्वाद् "अनुनासिके चच्छ्व-"॥४।१।१०८॥ इत्यूटि, जेज्यूवः। निरनुनासिकत्वे तु, "य्वो. प्वय्-"॥४।४।१२१॥ इति वलुकि, जेजीवः, जेज्यूमः। क्ये, जेजीव्यते। हौ, जेज्यूहि। ह्यस्तनी॥ वे। अजेज्यूव, अजेजीव। जेजीवि ३ त्वा, ता, त। जीवयति। "भ्राजभास-"॥४।२।३६॥ इति डे, वा ह्रस्वे, अजीजिवत्; अजिजीवत्। "य्वो.-"॥४।४।१२१॥ इति वलुकि, जिजीवान्। जिजीवानम्। जीवि ३ त्वा, तुम्, तः। सञ्जीव्य ॥ १२७ ॥

अव रक्षणगतिकान्तिप्रीतितृप्त्यवगमनप्रवेशश्रवणस्वाम्यर्थयाचनक्रियेच्छादीप्त्यवाप्त्यालिङ्गनहिंसादहनभाववृद्धिषु, १९ अर्थेषु। अवति। आव, आवतुः, आवुः। अविता। शेष यङ्वर्जम्, अटवत् ॥ १२८ ॥

अथ द्वावनिटौ। दृशूं, प्रेक्षणे। पश्यति। कर्माभावे, "समो गम्-"॥३।३।८४॥ इत्यात्मनेपदे, सपश्यते। व्यतिपश्यते। क्ये, दृश्यते ॥ अद्य० ॥ ऋदित्वाड्डि, "ऋवर्णे-"॥४।३।७॥ इति गुणे च, अदर्शत्, अदर्शताम्, अदर्शन्; अदर्शाम ॥ पक्षे सिचि, "अ. सृजि-"॥४।४।१११॥ इति अ, "व्यञ्जनानामनिटि"॥४।३।४५॥ इति तद्वृद्धिश्च, अद्राक्षीत्, अद्राष्टाम्, "धुट्ह्रस्व-"॥४।३।७०॥ इति सिच्लुकि, अद्राक्षुः, अद्राक्षीः, अद्राष्टम्, अद्राष्ट, अद्राक्षम्, अद्राक्ष्व, अद्राक्ष्म। "सिजाशिष-"॥४।३।३५॥ इति सिच किरवे, समदृष्ट, समदृक्षाताम्, क्षत, ष्ठाः ॥ भाक ॥ अदर्शि, "स्वरग्रह-"॥३।४।६९॥ इति वा ञिटि, अदर्शिषाताम्, अदृक्षाताम्, अदर्शिष्ठाः, अदृष्ठाः, अदर्शिध्वम्, अदर्शिड्ढ्वम्। "यज-"॥२।१।८७॥ इति शः षे, "सो धि-"॥४।३।७२॥ इति वा सिच्लुकि, "तृतीय-"॥१।३।४९॥ इति डे, धो ढे च, अदृड्ढ्वम्। "यज-"॥२।१।८७॥ इति शः

षे, "षढो.-"॥२।१।६२॥ इति षः के, "नाम्यन्त"॥२।३।१५॥ इति सः षे, डत्वे, धो ढत्वे च, अदृग्डढ्वम्, अदर्शिषि, अदृक्षि, अदर्शिष्वहि, अदृक्ष्वहि अदर्शिष्महि, अदृक्ष्महि ॥ परोक्षा ॥ ददर्श, ददृशतुः, ददृशुः । "सृजिदृशि-" ॥४।४।७८॥ इति वा नेटि, दद्रष्ठ, ददर्शिथ, ददृशथुः, ददृश, ददर्श । "स्क्रसृ-" ॥४।४।८१॥ इति इटि, ददृशिव, ददृशिम । ददृशे, ददृशाते, ददृशि २ षे, ध्वे । दृश्यात् । "सिजाशिष-"॥४।३।३५॥ इति कित्त्वान्न अः, दृक्षीष्ट । दर्शिषीष्ट । द्रष्टा२। दर्शिता । द्रक्ष्य२ति, ते, दर्शिष्यते । अद्रक्ष्य २ त, तः अदर्शिष्यत । "उपान्त्ये-" ॥४।३।३४॥ इति सन. कित्त्वाद्गुणाभावे, "स्मृदृश.-"॥३।३।७२॥ इत्यात्मनेपदे, दिदृक्षते । दरीदृश्यते । शेष पचिवत् । लुपि,"द्युक्तो"॥४।३।१४॥ इति न गुणे, दर्री, रि, र् ३ दृशीति । धुडादौ अकिति अदागमे । दरी, रि, र् ३द्रष्टि, दर्दृष्ट, दर्दृशति, दर्दृशीषि, दर्द्रक्षि, दर्दृष्ठः, दर्दृष्ठ, दर्दृशीमि, दर्दर्श्मि, दर्दृश्व, दर्दृश्म । "समो गम्-" ॥३।३।८४॥ इत्यत्र प्रकृतिग्रहणेन यङ्लुबन्तस्यापि ग्रहणादात्मनेपदे, सन्दरीद्रष्टे, सन्दरीदृशाते ॥ ह्यस्तनी ॥ अदर्दृशीत्, अदर्द्रग् । आदेशादागम इति न्यायेन दिवो लोपात् प्रागेवादागमः, "ऋत्विज्-"॥२।१।६९॥ इति शो ग । अदर्द्रष्टाम्, अदर्दृशु, अद ७ दृशी, द्रग्, द्रष्टम्, द्रष्ट, दृशम्, दृश्व, दृश्म ॥ अद्यतनी ॥ ऋदित्वनिर्देशात् यङ्लुपि नाऽङ्, अदरिद ९ र्शीत्, र्शिष्टाम्, र्शिषु ०॥ ददर्शाचकार । दर्दृश्यात् । दर्दर्शिष्यति । दर्दृशत् । "शौ वा"॥४।२।९५॥ इति वाऽन्तोऽत; दरिदृशति, दरिदृशन्ति, वा कुलानि । दरिदृशित, "क्त्वा"॥४।३।२९॥ इति सेट्क्त्वा न कित, दरिदर्शि ३ त्वा, ता, तव्यम् । णौ, दर्शयति । डे, "ऋद्दवर्णस्य"॥४।२।३७॥ इति वा ऋत्, अदीदृशत । पक्षे गुण, अददर्शत् । "अणिकर्म-"॥३।३।८८॥ इत्यात्मनेपदे, पश्यन्ति राजानं भृत्या, दर्शयते राजा भृत्यान्, भृत्यैर्वा । अत्र "दृश्यभिवदो -"॥२।२।९॥ इति वाऽणिकर्त्तुर्णिगि कर्मत्वम् । पश्यन् । द्रक्ष्यन् । दृश्यमान, द्रक्ष्यमाणम् । "गमहन-"॥४।४।८३॥ इति वेटि, ददृशिवान्, ददृश्वान् । ददृशानम् । द्रष्टा । "दृश क्वनिप्"॥५।१।१६६॥ मेरुदृश्वा । स्त्रिया "णस्वराघोषाद्-"॥२।४।४॥ इति नस्य रे, तत्वदृश्वरी । दृष्ट, २ वान् । दृष्ट्वा । सदृश्य । द्रष्टुम् । द्रष्टव्यम् ॥ १२९ ॥

दंश दशने। "दशसञ्जः-"॥४।२।४९॥ इति नलुकि, दशति। क्ये, दश्यते। अद्यतनी॥ "यजसृज-"॥२।१।८७॥ इति षः, "षढोः-"॥२।१।६२॥ इति कः, "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति षः। अदाङ्क्षीत्, अदाष्टाम्, अदाङ्क्षुः, अदाङ् ६ क्षीः, ष्टम्, ष्ट, क्षम्, क्ष्व, क्ष्म॥ अदशि, अद ९ क्षाताम्, क्षत, ष्ठाः, ड्ढ्वम्, ग्ड्ढ्वम्, क्षि०॥ ददंश, ददं ९ शतुः, शुः, शिथ, ष्ठ, शथुः, श, श, शिव, शिम। ददशे। दश्यात्। दङ्क्षीष्ट। दष्टा। दङ्क्ष्यति। दिदङ्क्षति। गर्हितं दशति "गृलुप-"॥३।४।१२॥ इति यङि, दन्दश्यते। लुपि, "गृलुप-"॥३।४।१२॥ इति कृतनलोपस्य निर्देशान्नो लुकि, दन्दशीति, दन्दष्टि, दन्द १० ष्टः, शति, शीषि, क्षि, ष्ठः, ष्ठ, शीमि, श्मि, श्व, श्म॥ ह्यस्तनी॥ अदन्द ११ शीत्, ट्, ष्टाम्, शुः, शीः, ट्, ष्टम्, ष्ट, शम्, श्व, श्म। दशयति। अददशत्। दशन्। दशन्ती। दष्टः, २ वान्। दष्ट्वा। प्रदश्य। दष्टा। दष्टुम्॥ १३०॥

घुषू शब्दे। घोषति, उद्घोषति। ऋदित्वाद्वाऽङि, अघुषत्, अघोषीत्। जुघोष। घोषिता। घोषिष्यति। जुघोषिषति, जुघुषिषति। जोघुष्यते। घोषयति। अजूघुषत्। घोषित्वा, घुषित्वा। घोषितुम्। "घुषेरविशब्दे"॥४।४।६८॥ इतीट्निषेधात्, घुष्टा रज्जुः, सम्बद्धावयवेत्यर्थः। विशब्दने तु, घुषितं वाक्यम्, नानाशब्दैर्भाषितमित्यर्थः॥ १३१॥

तूष तुष्टौ। तूषति। अतूषीत्। तुतूष। तूषिता। तूषितुम्॥ १३२॥

लुष स्तेये। लोषति। अलोषीत्। लुलोष। लोषिता। लुषितः॥१३३॥

कृष विलेखने, हलोत्कर्षणे, अनिट्। कर्षति। आङ्प्रापोदाविपूर्वोऽपि। कृष्यते। "स्पृशमृश-"॥३।४।५४॥ इति वा सिचि, अकार्षीत्, अकार्ष्टाम्, अकार्क्षुः। "स्पृशादि-"॥४।४।११२॥ इति वा अकारागमे, अक्राक्षीत्, अक्राष्टाम्, अक्राक्षुः। पक्षे, अनिट्त्वात्, "हशिट-"॥३।४।५५॥ इति सकि, अकृक्षत्, अकृक्षताम्, अकृक्षन्, अकृक्षम्, अकृक्षाम॥ भाव॥ अकर्षि। सिचि "सिजाशिष-"॥४।३।३५॥ इति कित्त्वान्न अ, अकृक्षाताम्, अकृक्षत, अकृष्ठाः, अकृक्षाथाम्, अकृड्ढ्वम्, अकृग्ड्ढ्वम्, अकृ ३ क्षि, क्ष्वहि, क्ष्महि। सकि तु "स्वरेत-"॥४।३।७५॥ इत्यल्लुकि, अकृक्षाताम्। अल्लुकः स्थानित्वात् अन्तो

ऽदभावे, अक्रु ७ क्षन्त, क्षथाः, क्षाथाम्, क्षध्वम्, क्षि, क्षावहि, क्षामहि ॥ परोक्षा ॥ चकर्ष, चकृषु., चकर्षिथ, चकृषिम । चकृषे । कृष्यात् । कृक्षीष्ट । कर्ष्टा, क्रष्टा । कर्क्ष्यति, क्रक्ष्यति । चिकृक्षति । चरीकृष्यते । चरी, रि, र् ३ कृषीति । चरि, री, र् ३ कर्ष्टि । चरि, री, र् ३ क्रष्टि । चरि १४ कृष्ट', क्रष्टः, कृषति, कृषीषि, कर्क्षि, क्रक्षि, कृष्ठ , क्रष्ठः, कृष्ठ, क्रष्ठ, कृषीमि, कर्ष्मि, कृष्व., कृष्म । हौ, चरिकृड्ढि, चरिकड्ढि ॥ ह्यस्तनी ॥ अचरि १६ कृषीत्, कर्ट्, क्रट्, कृष्टाम्, क्रष्टाम, कृषु, कृषी, कर्ट्, क्रट्० ॥ अद्य० ॥ अचरिकर्षीत् । णौ, कर्षयति, उत्कर्षयति । "ऋद्वर्णस्य"॥४।२।३७॥ इति ङे वा ऋत्, अचीकृषत्, अचकर्षत् । चकृष्वान् । कृष्ट्वा । कृष्ट, २ वान् । क्रष्टुम् । कर्ष्टुम् ॥१३४॥

भष भर्त्सने, कुत्सितशब्दकरणे । भषति श्वा, बुक्कतीत्यर्थः । भषति भषकः, पैशुन्येम वक्तीत्यर्थ । भष्यते । अभाषीत्, अभषीत् । बभाष । भषिता । भषिष्यति । भषित' । भषित्वा ॥ १३५ ॥

विषू, वृषू सेचने । वेषति, परिवेषति । अवेषीत । विवेष । वेषिता । वेषिष्यति । "वौ व्यञ्जन-"॥४।३।२५॥ इति क्त्वासनोर्वा कित्त्वे, परिविवेषिषति, परिविविषिषति । ऊदिलात् क्त्वि वेट्, विषित्वा, वेषित्वा, विष्ट्वा । विष्ट । वृषू । वर्षति मेघः । वृष्यते । अवर्षीत् । अवर्षि । ववर्ष, ववृषु' । वृष्यात् । वर्षिषीष्ट । वर्षिता २ । वर्षिष्यति । विवर्षिषति । वरीवृष्यते । वरि, री, र् ३ वृषीति । वरि, र्, री ३ वर्ष्टि । वरि २ वृष्ट., वृषति । ववृषत् । ववर्षिता । वर्षयति । ङे, अवीवृषत्, अववर्षत् । ववृष्वान् । वृष्ट्वा, वर्षित्वा । ऊदिलात् क्त्वि वेट्, वेट्त्वात् क्तयोर्नेटि, वृष्ट, २ वान् । वर्षिता ॥ १३६ ॥ १३७ ॥

मृषू सहने च, चात् सेचने । मर्षति । अमर्षीत् । ममर्ष, ममृषु । मर्षिता । ऊदिलात् क्त्व वेटि, "ऋत्तृष "॥४।३।२४॥ इति वा कित्वम्, मृष्ट्वा, मृषित्वा, मर्षित्वा । मृष्ट, २ वान् ॥ १३८ ॥

उषू, प्लुषू दाहे । ओषति । औषीत्, औषिष्टाम् । 'जागुष-'॥३।४।४९॥ इति वा आमादेशे, ओषाञ्चकार, चकतु, चक्रुः० उवोष, ऊषतु, ऊषु ०॥ ओषिता । ओषिषिषति । ऊदित्वात् वेटि, ओषित्वा, उष्ट्वा । उष्ट., २ वान् । ओषिता ।

प्लुष् । प्लोषति । अप्लोषीत् । पुप्लोष, पुप्लुषुः । प्लोषिता । पुप्लुषिषति । पुप्लोषिषति । वेट्त्वात् नेट्, प्लुष्टः २ वान् । प्लोषि २ ता, तुम् । प्लुष्ट्वा, प्लोषित्वा, प्लुषित्वा ॥ १३९ ॥ १४० ॥

घृषू सघर्षे । घर्षति । अघर्षीत् । जघर्ष । घर्षिता । ऊदित्वात्, घृष्ट्वा, घर्षित्वा । वेट्त्वात्, घृष्टः, २ वान् ॥ १४१ ॥

पुष पुष्टौ । पोषति । पुष्यते । पोषेत् । पोषतु । अपोषत् । अपोषीत् । पुपोष, पुपुषुः । पोषिता । शेष पुषश् वत् ॥ १४२ ॥

भूष अलङ्कारे । भूषति । अभूषीत् । बुभूष । भूषिता । भूषितः ॥१४३॥

रस शब्दे । रसति । अरसीत्, अरासीत् । ररास, रेसतुः, रेसुः । रेसे । रसिता । रसितुम् ॥ १४४ ॥

लस श्लेषणक्रीडनयोः । लसति; उल्लसति, अभ्युल्लसति, विलसति । लस्यते । व्यलसीत्, व्यलासीत् । विललास, लेसतुः, लेसुः । लसिता । विलिलसिषति । लालस्यते । व्यलीलसत्, त । लसित्वा । विलस्य । लसितम् ॥ १४५ ॥

हसे हसने । हसति, प्रहसति, विहसति, उपहसति । क्रियाव्यतिहारे हस वर्जनान्नात्मनेपदे, व्यतिहसन्ति । "नश्वि-"॥४।३।४९॥ इति वृद्धिनिषेधे, अहसीत्, अहसिष्टाम् । जहास, जहसतुः, जहसुः । हसिता । जिहसिषति । जाहस्यते । जाह १२ सीति, स्ति, स्तः, सति, सीषि, स्सि० । हौ, जाह २ धि, द्धि । "सोधि-"॥४। ३।७२॥ इति वा स्लुक् दिवि "धुटस्तृतीय-"॥२।१।७६॥ इति द्, अजाह ३ द्, त्, सीत् ॥ अद्य० ॥ अजाहासीत्, अजाहसीत् । "नश्वि-"॥४।३।४९॥ इत्यत्रैदिता यङ्लुपि न वृद्धिनिषेधः, हासयति । अजीहसत् । हसिता ॥१४६॥

शसू स्तुतौ च, चाद्धिंसायाम् । प्रशसति । क्ये, प्रशस्यते । अशंसीत् । शशास, शशासतुः, शशासुः । शसिता । ऊदित्वात्, शस्त्वा, शसित्वा । प्रशस्य । शस्तः, २ वान् । "कृवृषि-"॥५।१।४२॥ इति वा क्यपि, प्रशस्यम् । पक्षे, घ्यणि प्रशास्यम् । शेषं सञ्जवत् ॥ १४७ ॥

दह भस्मीकरणे । अनिट् । दहति । दह्यते । अधाक्षीत् । अत्र "व्यञ्जनानाम्-"॥४।३।४५॥ इति वृद्धौ, "भ्वादे -"॥२।१।६३॥ इति घे "गडदबा-"॥२।१।७७॥ इति आदेशे "अघोषे प्र-"॥१।३।५०॥ इति कि "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति ष । अदाग्धाम् । अत्र "धुट्ह्रस्व-"॥४।३।७०॥ इति सिच्लुक्स्थानित्वेन वृद्धि । "अधश्च-"॥२।१।७९॥ इति ध. । "तृतीय"॥१।३।४९॥ इति गः । अत्र हि सकारे परे आदेशश्चतुर्थे धे कर्त्तव्ये वर्णविधित्वेन सिचो न स्थानित्वम्, तेन आदेर्दस्य न घ । ननु तर्हि वृद्धो कार्याया कथ मिचः स्थानित्वमिति चेत्, उच्यते । 'धुट्ह्रस्व-"॥४।३।७०॥ इत्यत्र लुबधिकारेऽपि लुग्ग्रहण वृद्धौ कर्त्तव्याया सिच स्थानित्वार्थम्, तेन सा भवति । एवमन्यत्रापि । अधाक्षु, अधाक्षी, अदाग्धम्, अदाग्ध, अधाक्षम्, अधाक्ष्व, अधाक्ष्म । अदाहि, अध २ क्षाता, क्षत, अदग्धा, अध ६ क्षाथाम्, ग्ध्वम्, ग्ड्ढ्वम्, क्षि, क्ष्वहि, क्ष्महि । ददाह, देहतु, देहुः, देहिथ, ददग्ध, देहथु, देह, ददाह, ददह, देहिव, देहिम। देहे । "हान्त"॥२।१।८१॥ इति वा ढे, देहि २ ध्वे, ढ्वे। दह्यात्। धक्षीष्ट, धक्षीध्वम् । दग्धा । धक्ष्यति । दिधक्षति । दन्दह्यते । दन्द ५ हीति, ग्धि, ग्ध, हति, हीपि । दन्धक्षि, दन्द ६ ग्ध, ग्ध, ह्मि, हीमि, ह्व, ह्म । हौ, दन्दग्धि । दाहयति । अदीदहत् । दहन् । धक्ष्यन् । देहिवान् । दग्ध, २ वान् । दग्ध्वा । अत्र धत्वस्यासत्वाद् "गडदबा-"॥२।१।७७॥ इति आदेर्न चतुर्थ । दग्धुम्। दग्धा। दग्धव्यम् ॥१४८॥

वृहु शब्दे च, चाद् वृद्धौ, नेऽन्ते। वृहति गज । उद्वृहति । क्ये, वृह्यते । अवृहीत्, अवृहिष्टाम्। ववृह। ववृहे। वृहिता। विवृहिषति । वरीवृह्यते । उपवृहयति। उपाववृहत्। वृहन् । वृंहिता । वृहित गजस्य ॥ १४९ ॥

अर्ह, मह पूजायाम् । अर्हति । आनर्ह । शेष अर्चवत् । अय पूजाया चुरादिरपि । अर्हयति, पूजायाम् । अन्यत्र तु योग्यत्वादौ न णिच्, अर्हति । अर्जिहिषति । णिगि, अर्हयति । डे, आर्जिहत् ॥ मह । महति । क्ये, मह्यते । "नश्वि-"॥४।३।४९॥ इति न वृद्धि, अमहीत् । ममाह । मेहे । महित ॥१५०॥१५१॥

उक्ष सेचने । उक्षति । उक्ष्यते । औक्षत् ॥ अद्यतनी ॥ औक्षीत्, औक्षिष्टाम्।

उक्षाञ्चकार। उपसर्गस्य क्रियाविशेषकत्वादव्यवधायकत्वे, उक्षाप्रचकुरित्यादि भवत्येव। एवमन्यत्राप्याम्युपसर्गे सति भवति। उक्ष्यात्। उक्षिता। औक्षिष्यत्। उचिक्षिषति। उक्षयति। औचिक्षत्। उक्षाञ्चकृवान्। उक्षि २ त, त्वा, तुम् ॥ १५२ ॥

रक्ष पालने, चौराद्रक्षति। अरक्षीत्। ररक्ष। रक्षिता। णौ, रक्षयति। अररक्षत्। रिरक्षिषति। रक्षित. ॥ १५३ ॥

तक्षौ तनूकरणे, कार्श्ये।"तक्ष. स्वार्थे वा"॥३।४।७७॥ इति वा श्नुः, तक्ष्णोति। तक्षति। स्वार्थग्रहण ज्ञापक धातवोऽनेकार्था इति, तेन स्वार्थादन्यत्र, तक्षति वाग्भिः शिष्यम्, निर्भर्त्सयतीत्यर्थ। औदित्वात्' धूगौदित. "॥४।४।३८॥ इति वेटि, अतक्षीत्। इडभावे तु सिचि ईति, "व्यञ्जनानामनिटि-"॥४।३।४५॥ इति वृद्धौ "सयोगस्यादौ-"॥२।१।८८॥ इति क् लुकि, "षढो' क -"॥२।१।६२॥ इति षस्य कत्वे सिच' षत्वे च, अताक्षीत्। ततक्ष। तष्टा; तक्षिता। तक्ष्यति, तक्षिष्यति। तितक्षिषति। तातक्ष्यते, क्षीति, ष्टि। णौ ङे, अततक्षत्। तष्ट्वा, तक्षित्वा। तष्टुम्, तक्षितुम्। वेट्त्वान्नेट्, तष्ट, २ वान् ॥ १५४ ॥

काक्षु काङ्क्षायाम्, नेऽन्ते। काङ्क्षति, आकाङ्क्षति। अकाङ्क्षीत्। चकाङ्क्ष। चिकाङ्क्षिषति। चाकाङ्क्ष्यते। ङे, अचकाङ्क्षत् ॥ १५५ ॥

इति परस्मैपदिन.।

अथात्मनेपदिनो वर्णक्रमेण वक्ष्यन्ते।

तत्र, डीङ्, पूङ् वर्जा नवाऽनिट। गाङ्गतौ।"इङित.-"॥३।३।२२॥ इत्यात्मनेपदम्, गाते, गाते, गाते, गासे, गाथे, गाध्वे। "इडेत्-"॥४।३।९४॥ इति आलुकि, गे, गावहे, गामहे। क्ये, "ईर्व्यञ्जने"॥४।३।९७॥ इति ईत्वे, गीयते ॥ सप्तमी ॥ गेत, गेयाताम्, गेरन् ॥ पञ्चमी ॥ गाताम्, गाताम्, गाताम्, गास्व, गाथाम्, गाध्वम्, गै, गावहै, गामहै ॥ ह्यस्तनी ॥ अगात, अगाताम्, अगात ॥ अद्यतनी ॥ अगास्त, अगासाताम्, अगाध्वम्, अगाद्ध्वम् ॥ भाक ॥ अगायि। "स्वरग्रह-"॥३।४।६९॥ इति वा ञिटि, अगा-

यिपाताम्, अगासाताम् । जगे, जगाते, जगिरे, जगिषे । गासीष्ट ॥ भाक ॥ गायिषीष्ट, गासीष्ट । गास्यते ॥ भाक ॥ गास्यते, गायिष्यते । जिगासते । जेगीयते । जागेति, जागाति । शेष स्थारथाने । गापयति । अजीगपत् । आनाशि, गान. । जगान. । *गीत*, २ *वान्* । *गीत्वा* । *गाता, गातुम्* ॥ १५६ ॥

ष्मिङ् ईषद्धसने । विस्मयते । क्ये, स्मीयते । स्मयेत । स्मयताम् । अस्मयत । अस्मेष्ट, अस्मेषाताम् ॥ भाक ॥ अस्मायि, अस्मायिपाताम्, अस्मेषाताम् । पपाठात् "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति प । सिष्मिये, सिष्मियाते, सिष्मियिरे, सिष्मियिषे, सिष्मियिढ्वे, ध्वे ॥ भाक, कर्तृवदेव ॥ स्मेषीष्ट २, स्मायिषीष्ट । स्मेता २, स्मायिता । स्मेष्यते २, स्मायिष्यते । "ऋस्मि-"॥४।४।४८॥ इतीटि, सिस्मयिषते । सेष्मीयते । सेष्मयीति, सेष्मेति । शेष जिवत् । णौ "स्मिङ प्रयोक्तु-"॥३।३।९१॥ इत्यात्त्वम्, आत्मने च । मुण्डो विस्मापयते । डे, व्यसिष्मपत । व्यस्मापि । करणेन तु विस्मयभावे, रूपेणैन विस्माययति । डे, असिष्मयत् । णौ सनि, सिष्माययिषति । "स्मिङः-"॥ ३।३।९१॥ इत्यत्र ङिन्निर्देशाद्यङ्लुपि णौ, नात्मनेपदम्, सेष्माययति । स्मयमान । स्मेष्यमाण । स्मीयमानम् । सिष्मियाण । स्मित, २ वान् । स्मित्वा । स्मेता । स्मेतुम् ॥ १५७ ॥

डीङ् विहायसाङ्गतौ । डयते, उड्डयते । क्ये, डीयते । अडयिष्ट, अडयिपाताम्, अडायिपाताम् । डिड्ये, डिड्याते, निडिड्यिरे । डयिता । डयिष्यते । डिडयिषते । डेडीयते । डेडयीति, डेडेति, डेडीत, डेड्यति । "न डीङ्-"॥४।३।२७॥ इत्यत्र ङिन्निर्देशाद्यङ्लुपि क्तयो कित्त्वमेव । डेड्यित, २ वान् । उड्डाययति । उददीडयत् । "न डीङ्शी "॥४।३।२७॥ इति क्ते किलनिषेधात्, डयित २ वान् । डीङ् च गताविलस्य तु, डीन., २ वान्, डयि ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ १५८॥

कुङ् शब्दे । कवते । कूयते । अकोष्ट, अकोषाताम् । अकावि । चुकुवे । कोता । चुकूषति । "न कवतेर्यङ-"॥४।१।४७॥ इति कस्य न च', कोकूयते खर । लुपि तु तिव्निर्देशाच्च स्यात्, चोकवीति, चोकोति, चोकु २ त', वति, कोतुम् ॥ १५९॥

च्युङ्, ज्युङ्, प्लुङ् गतौ । च्यवते । च्यूयते । नित्यत्वात् सिचो लोपात् प्रागेव

गुणे, अच्योष्ट । अच्यावि, अच्योपाताम्, अच्याविषाताम् । च्योषीष्ट २, च्याविषीष्ट । चुच्यूयते । चोच्यूयते । चोच्यवीति, चोच्योति, चोच्यु २ त', वति चोच्यवित्वा, चोच्युवित. । णौ, च्यावयति । णौ सनि, "श्रुस्रु-"॥४।१।६१॥ इति वा उः इ'; चिच्यावयिषति, चुच्यावयिषति । डे सन्वद्भावात्, अचिच्यवत्, अचुच्यवत् । च्युत' । प्रच्युत्य । च्योता । च्योतुम् । एवं प्रुप्लृङ् अपि । पुप्लूयते । पोप्लूयते । पोप्लवीति, पोप्लोति । पिप्लावयिषति, पुप्लावयिषति । डे, अपिप्लवत्, अपुप्लवत् ॥ १६० ॥ १६१ ॥ १६२ ॥

पूङ् पवने । पवते । पूयते । अपविष्ट । अपावि, अपाविषाताम् । अपविषाताम् । पुपुवे । पविषीष्ट २ । पाविषीष्ट । पविता २ । पाविता । पविष्यते २ । पाविष्यते । अपविष्यत २ । अपाविष्यत । "ऋस्मि-"॥४।४।४८॥ इतीटि, "ओर्जे-"॥४।१।६०॥ इति उः इ. । पिपविषते । पोपूयते । पोपोति, पोपवीति । शेष भूवत् । पर " न डीङ्शीङ्पूङ्-"॥४।३।२७॥ इत्यत्र ङिन्निर्देशात् क्तयोर्यङ्लुपि किवे, पोपुवित', २ वान् । अत्रानेकस्वरत्वात् "उवर्णात्"॥४।४।५८॥ इति नेट्निषेधः । "पूङ्क्लिशि "॥४।४।४५॥ इति विकल्पोऽपि न, तिवाशवेति न्यायात् । पावयति । अपीपवत् । "ओर्जे-"॥४।१।६०॥ इति उः इ , पिपावयिषति । पवमान. । पूयमानम् । " पूङ्क्लिशि-"॥४।४।४५॥ इति क्तक्त्वामादौ वेटि "न डीङ्"॥४।३।२७॥ इति क्तयो. "क्त्वा-"॥४।३।२९॥ इति क्त्वायाश्च कित्वाभावाद्गुण' । पवितः, २ वान् । पूतः, २ वान् । पवित्वा, पूत्वा । प्रपूय । पवितुम् ॥ १६३ ॥

मेंङ् प्रतिदाने, प्रत्यर्पणे । मयते । "नेर्ङ्गदा-"॥२।३।७९॥ इति णत्वे, प्रणिमयते । "ईर्व्यञ्जन "॥४।३।९७॥ इतीत्वे, मीयते । अमास्त । अमायि । ममे । "गापास्था-"॥४।३।९६॥ इति ए', मेयात् । माता । मास्यते । "मिमीमादा-"॥४।१।२०॥ इति इद् नच द्विः, मित्सते । मेमीयते । मामेति, मामाति, माता । मातुम् । "दोसोमास्थ इ"॥४।४।११॥ मित', २ वान् । मित्वा । यपि, "मेङो वा मित्"॥४।३।८८॥ अपमित्य, अपमाय वा याचते ॥१६४॥

देंङ्, त्रैंङ् पालने । दयते पुत्रम् । " ईर्व्य०-"॥४।३।९७॥ ई', दीयते । अदित, अदिषाताम् । अदायि, अदायिषाताम्, अदिषाताम् । "देर्दिगिः"॥४।१।३२॥

दिग्ये, दिग्याते, दिग्यिपे । दासीष्ट २ । दायिषीष्ट ।एव स्यते इत्यादावपि। दित्स ते। देदीयते । दादेति। दापयति । अदीदपत्। "नेर्ङ्गादा-"॥२।३।७९॥ इति णि', प्रणिदातुम्। दत्त , २ वान्। दत्वा। दाता ॥ त्रैङ् । त्रायते, परित्रायते । क्ये, त्रायते। अत्रास्त, अत्रासाताम्। अत्रायि, अत्रायिषाताम्, अत्रासाताम्। "सोधि-" ॥४।३।७२॥ इति त्रा सलुकि, अत्रा २ ध्वम्, ढ्ध्वम् । "ह्रान्त-"॥२।१।८१॥ इति वा ढे, अत्रायिध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्। तत्रे, तत्राते, तत्रिरे, तत्रि२, पे, ध्वे, अत्र 'स्क्रसृ-'॥४।४।८१॥ इति इटि "इडेत्पुसि-"॥४।३।९४॥ इति आलुक् । त्रासीष्ट २। त्रायिषीष्ट । त्राता २ । त्रायिता । त्रास्यते २ । त्रायिष्यते । तित्रासते । तित्रास्यते। सर्वे णिगन्ता सन्नन्ता यङन्ताश्च स्वरान्ता धातवस्तत्वदन्त-भूवद्वाच्या इत्युक्त प्रागपि, तथाऽप्यय यङन्त उक्तस्मृतये दर्श्यते । तात्रायते । क्ये, तात्राय्यते। तात्रायेते। क्ये, तात्राय्येते। तात्रायताम्॥ भाक ॥ तात्राय्यताम् । अतात्रायत ॥ भाक ॥ अतात्राय्यत ॥ अद्यतनी ॥ अतात्रायिष्ट, अतात्रायिषाता, अतात्रायिषत ॥ भाक ॥अतात्रायि, अतात्रायिषातामित्यादि ॥ परोक्षा॥ तात्राया ३ चक्रे, बभूव, आस ।अत्र धातोरात्मनेपदेऽपि "आम कृग–"॥३।३।७५॥ इत्यत्र कृग्ग्रहणादस्तिभुवो परस्मैपदमेव ॥ भाक ॥ तात्राया ३ चक्रे, आहे, बभूवे । तात्रायिषीष्ट॥ भाक ॥ तात्रायिषीष्ट। एव तात्रायिष्यते२। अतात्रायिष्यत । तात्रायमाण । तात्रायिष्यमाण ॥ भाक ॥ तात्राय्यमाणम् । तात्रायिष्यमाणम्। तात्राया ३ चक्राण, बभूवान्, आसिवान्। "आम कृग-' ॥३।३।७५॥ इत्यत्र भ्वस्तिभ्या परस्मैपदस्याभिधानादत्र कसु. ॥ भाक॥ तात्राया३ चक्राणम्, बभूवानम्, आसानम् । तात्रायि ५ त्वा, ता, तुम, त , २ वान्॥ एव सर्वेऽपि स्वरान्ता यङि, त्रैङ्वदवगन्तव्या ॥ यङ्लुपि तु, तात्रेति, तात्राति । "एषाम्-"॥४।२।९७॥ इति ई , तात्रीतः । "श्नश्च-"॥४।२।९६॥ इति आलुकि, तात्रति, तात्रेषि, तात्रासि, तात्रीथ , तात्रीथ, तात्रेमि, तात्रामि, तात्रीव , तात्रीम । क्ये, तात्रायते। तात्रायात्॥ भाक ॥ तात्रायेत । तात्रेतु, तात्रातु, तात्रीताम्, तात्रतु, तात्रीहि ॥ भाक ॥ तात्रायताम् ॥ ह्यस्तनी ॥ अतात्रेत, अतात्राव्, अतात्रीताम्, अतात्रु, अता७-त्रे , त्रा , त्रीतम्, त्रीत, त्राम्, त्रीव, त्रीम ॥ भाक ॥ अतात्रा ९ यत, येता०॥

अद्यतनी ॥ सिचि "यमिरमिनम्य-"॥४।४।८६॥ इति इट् सोऽन्तश्च, अतात्राऽ सीत्, सिष्टाम्, सिषुः, सीः०, सिष्म ॥ भाक ॥ अतात्रायि । ञिटि इटि च, अतात्रायिषाताम्, अतात्रिषाताम्, अतात्रायिषत, अतात्रिषत ॥ परोक्षा ॥ तात्राचकारेत्यादि ॥ भाक ॥ तात्राञ्चक्रे इत्यादि ॥ आ० ॥ "संयोगादेर्वाशिष्ये"॥४।३।९५॥ इति वा एः, तात्रेयात्, तात्रायात्, तात्रेयास्ताम्, तात्रायास्ताम्० ॥ भाक, ञिटिटोः॥ तात्रायिषीष्ट, तात्रिषीष्ट ॥ श्वस्तनी ॥ तात्रिता ॥ भाक ॥ तात्रायिता, तात्रिता०। ॥ भविष्य०॥ तात्रिष्यति॥ भाक ॥ तात्रायिष्यते, तात्रिष्यते ॥ क्रिया० ॥ अतात्रिष्यत् ॥ भाक ॥ अतात्रायिष्यत, अतात्रिष्यत । तात्रत् । तात्रिष्यन्॥ भाक॥ तात्रायमाणम् । तात्रिष्यमाणम् । ञिटि, तात्रायिष्यमाणम् । तात्रा३ चकृवान्, बभूवान्, आसिवान् वा ॥ भाक ॥ तात्रा ३ चक्राणम्, बभूवानम्, आसानम् वा । तात्रि ५ त्वा, ता, तुम्, तः २, वान् । अस्य स्थाधातोश्च यङ्लुबन्तस्य क्ये, परस्मै सिचि आशीर्ये च स्थानत्रय एव विशेषोऽस्ति नान्यत्र । यथैवायं त्रैङभिहितस्तथैव घ्रा, ध्मा, म्ना, ग्लै, म्लै, स्नाकादयः संयोगादिकाः, हाक्, हाङ्, पांक्, या, ला, वा, रा, छों, शोंच् दाब्, दैंबादयश्चासंयोगादिकाः सर्वेऽप्याकारान्ता यङ्लुपि त्रैङ्वत् ज्ञातव्याः । नवरं, हाक्, हाडादीनामसंयुक्तादिकानामाशीर्यकारे एकारो न स्यात् । हाक् । जहायात्, जहायास्ताम् ॥ हाङ् । जाहायात्, जाहायास्ताम् । पाक् । पापायात्, पापायास्ताम् । एवं याकादिष्वपि । "गापास्थासा-"॥४।३।९६॥ इति सूत्रोक्तास्त्वादन्ता हाक्वर्जाः १५ स्थास्थाने ऽभिहिताः सन्ति । णिगि, त्रापयति । डे, अतित्रपत् । त्रायमाणः । त्रास्यमानः। तत्राणम्। "ऋह्री-"॥४।२।७६॥ इति वा न, त्राणः, २ वान् । त्रात, २ वान् । व्यवस्थितविभाषेयम्, तेन सञ्ज्ञाया न नत्वम्, त्रात । देवत्रातः । अन्यत्र तु नत्वम्, त्राण. । उभयमित्येके । त्राता । त्रात्वा । परित्राय ॥ १६५ ॥ १६६ ॥

लोकृङ् दर्शने । लोकते । एवं वि, आङ्, अव पूर्वोऽपि । लोक्यते । अलोकिष्ट, अलोकिषाताम् । ध्वमि, अलोकिध्वम्, ड्ढ्म् । अलोकि । लुलोके । लोकिषीष्ट । लोकिता । लोकिष्यते । लुलोकिषते । लोलोक्यते । लोलो ४ कीति, क्ति, क्तः, कति । लोकयति । ऋदित्वात् "उपान्त्य"॥४।२।३५॥ इति ह्रस्वाभावे, अलु-

लोकत् । लोकमान॰ । लोक्यमानम् । लुलोकानम् । लोकितः,२ वान् । लोकित्वा । विलोक्य । लोकि २ ता, तुम् ॥ १६७ ॥

रेकृङ्, शकुङ् शङ्कायाम् । शङ्का सन्देह., पूर्वस्याऽर्थ ; द्वितीयस्य त्रासश्च । आरेकते । आरेकिष्ट । आरेकि । आरिरेके । आरेकिता । आरेकिष्यते । ऋदित्वात् ङे न ह्रस्व॰, आरिरेकत् । शकु । नेऽन्ते । शङ्कते । आशङ्कयते । अशङ्किष्ट, अशङ्किषाताम् । अशङ्कि । शशङ्के, शशङ्काते । शङ्किता । शिशङ्किषते । शाशङ्कयते । शाशङ् १२ क्ति, कीति॰ । शङ्कि ३ त्वा, ता, तुम ॥ १६८ ॥१६९॥

चकि तृप्तिप्रतिघातयो । चकते । चक्यते । अचकिष्ट, अचकिषाताम् । अचाकि । चेके, चेकाते । चकिष्यते । उक्तार्थयोर्घटादित्वात् णौ ह्रस्वे, चकयति । अचीचकत् । ञिणम् परे तु वा दीर्घे, अचाकि, अचकि । चाक २, चक २ । चकित २, वान् । चकि ३ त्वा, ता, तुम् ॥ १७० ॥

ढौकृङ्, त्रौकृङ्, टीकृङ्, लघुङ्, गतौ । ढौकते । ढौक्यते । अढौकिष्ट । अढौकि, अढौकिषाताम् । डुढौके, डुढौकिरे । ढौकिता २ । डुढौकिषते । डोढौक्यते । डोढौ १२ कीति, क्ति, क्त॰, कति॰ । ढौकयति । ऋदित्वात् ङे न ह्रस्व., अडुढौकत् ॥ त्रौकृङ् । त्रौकते । तुत्रौके । त्रौकिता ॥ टीकृङ् । आटीकते । आटिटीके । टीकिता । ऋदित्वात् ङे, न ह्रस्व, अतुत्रौकत् । अटिटीकत् । लघुङ् । नेऽन्ते । लङ्घते, उल्लङ्घते । अलङ्घिष्ट, अलङ्घिषाताम् । अलङ्घि । ललङ्घे, ललङ्घाते । लङ्घिता । लिलङ्घिषते । लालङ्घ्यते । लाल २ ङ्घीति, ग्धि । उल्लङ्घ्य । लङ्घि ४ त्वा, ता, तुम्, तः । लङ्घिर्भोजननिवृत्त्यर्थोऽपि । नवज्वरो लङ्घनीय ॥ १७१ ॥ १७२ ॥ १७३ ॥ १७४ ॥

श्लाघृङ् कत्थने, उत्कर्षाऽऽख्याने । "श्लाघह्नुस्था-"॥२।२।६०॥ इति चतुर्थ्यां, मैत्राय श्लाघते । श्लाघ्यते । अश्लाघिष्ट, अश्लाघिषाताम् । अश्लाघि । शश्लाघे, शश्लाघाते, शश्लाघिरे, शश्लाघिषे । श्लाघिषीष्ट । श्लाघिता । श्लाघिष्यते । शिश्लाघिषते । शाश्लाघ्यते । शाश्ला१२ घीति, ग्धि॰ । श्लाघयति । अशश्लाघत् । श्लाघमान । श्लाघ्यमानम् । श्लाघि ४ त्वा, त, ता, तुम् ॥ १७५ ॥

लोचृङ् दर्शने । आलोचते । लुलोचे । ङे, अलुलोचत् । शेषं लोकृङ्वत् ॥ १७६ ॥

पचुङ् व्यक्तीकरणे । नेऽन्ते । प्रपञ्चते । पञ्च्यते । अपञ्चिष्ट, अपञ्चिषाताम् । अपञ्चि । पपञ्चे, पपञ्चाते, पपञ्चिरे । पञ्चिष्यते । पिपञ्चिषते । ङे, अपपञ्चत् । पञ्चि ३ ता, तुम्, तः । प्रपञ्च्य । पचुण् विस्तारे इत्यस्य तु, पञ्चयति ॥ १७७ ॥

भ्राजि दीप्तौ । भ्राजते । अभ्राजिष्ट । बभ्राजे । भ्राजिता । बिभ्राजिषते । बाभ्राज्यते । "यजसृज-"॥२।१।८७॥ इत्यत्र राजिसहचरितस्यैव भ्राजेर्ग्रहणादस्य षत्वाभावे यङ्लुपि, बाभ्राक्ति । तस्य तु बाभ्राष्टि इति स्यात् । बाभ्राक्त., बाभ्राजति । णौ ङे, "भ्राजभास-"॥४।२।३६॥ इति वा ह्रस्वे, अबिभ्रजत्, अबभ्राजत् ॥ १७८ ॥

ऋजि गतिस्थानार्जनोर्जनेषु । ऊर्जनम्, प्राणनम् । अर्जते । "ऋत्यारुपसर्गस्य"॥१।२।९॥ इत्यारि, उपार्ज्यते । आर्जिष्ट, आर्जिषाताम् । आर्जे । "अनात-"॥४।१।६९॥ इति पूर्वस्यात्वे ने च, आनृजे । अर्जिता । अर्जिष्यते । सनि, इट् द्वित्व प्रति न निमित्तम्, तेन द्वित्वात् प्रागेव स्वरस्य गुणे "अयिर-"॥४।१।६॥ इति रनिषेधनेन जिरेव द्विः, अर्जिजिषते । णौ, अर्जयति । ङे, आर्जिजत् । ऋजितः । अर्जि ३ त्वा, ता, तुम् ॥ १७९ ॥

भृजैङ् भर्जने; पाकप्रकारे । भर्जते । अभर्जिष्ट, अभर्जि । बभृजे । बिभर्जिषते । णौ, भर्जयति । ङे, "ऋद्वर्णस्य"॥४।२।३७॥ इति वा ऋ., अबीभृजत्, अबभर्जत् । ऐदित्वात् क्तयोर्नेट्, भृक्त॰ २, वान् । भर्जित्वा ॥१८०॥

तिजि क्षमानिशानयो', निशानं, तीक्ष्णीकरणम् । "गुप्तिज-"॥३।४।५॥ इति क्षान्तौ, स्वार्थे सनि "स्वार्थे"॥४।४।६०॥ इति नेटि, तितिक्षते कोपम्; तिति ८ क्षेते, क्षन्ते० ॥ भाक ॥ तितिक्ष्यते । अतितिक्षिष्ट । तितिक्षाचक्रे । तितिक्षि ३ षीष्ट, तासे, ष्यते । अतितिक्षिष्यत । तितिक्षमाणः । तितिक्ष्यमाणम् । तितिक्षाचकाण. । तेजने तु, णिगादिप्रत्ययान्तरमेवाभिधीयते, न तु प्रायेण त्यादय । णौ, तेजयति । अतीतिजत् । एव "गुप्तिजो-"३।४।५॥ इत्यादि

सूत्रत्रयोक्तानां गुपादीनामपि सूत्रोक्तार्थाभावे ज्ञेय, प्रायोग्रहणात् । गोपमानम्, तेजमानम्, केनन्त वा प्रयुङ्क्ते इत्यादि णिगि वाक्यम् । गोपते, तेजते, केतति, वधते, इत्याद्यपि च कश्चन भवति ॥ १८१ ॥

चेष्टि चेष्टायाम्, चेष्टा, ईहा । आचेष्टते । चेष्ट्यते । अचेष्टिष्ट, अचेष्टिषाताम् । अचेष्टि । चिचेष्टे, चिचेष्टाते । चेष्टिता । चेष्टिष्यते । चिचेष्टिषते । चेचेष्ट्यते । चेचेष्टीति । "धुटो धुटि-"॥१।३।४८॥ इति वा ट्लुकि, चेचे ४ ष्टि, ष्टि, ष्ट', ष्ट्. । हौ, "हुधुट्-"॥४।२।८३॥ इति धिः, "तवर्गस्य-"॥१।३।६०॥ इति ढि, "धुटो धुटि-"॥१।३।४८॥ इति वा ट्लुकि, "तृतीय-"॥१।३।४९॥ इति षो ड, चेचे २ ड्ढि, ड्ड्ढि । दिवि, अचेचे २ ट्, ष्टीत् । चेष्टयति । ङे, "वा वेष्टचेष्ट"॥४।१।६६॥ इति पूर्वस्य वा अ, अचचेष्टत्, अचिचेष्टत् । चेष्टमान । चेष्ट्यमानम् । चेष्टि ४ त', ता, त्वा, तुम् ॥ १८२ ॥

वेष्टि वेष्टने, वेष्टनम्, ग्रन्थनम्, लोटनम्, परिहाणिश्च । आवेष्टते । सर्वं चेष्टिवत् ॥ १८३ ॥

अथ चत्वार उदितः । कठुङ् शोके, शोकोऽत्राध्यानम् । उत्कण्ठते । उत्कण्ठ्यते । उदकण्ठिष्ट, अकण्ठिषाताम् । अकण्ठि । उच्चकण्ठे । उत्कण्ठिष्यते । उच्चाकण्ठ्यते । उत्कण्ठि ३ त, ता, तुम् ॥ १८४ ॥

पिडुङ् सङ्घाते । पिण्डते । अपिण्डिष्ट । अपिण्डि, अपिण्डिषाताम् । पिपिण्डे । पिण्डिता । पिण्डिष्यते । पिपिण्डिषते । पिण्डि ४ त्वा, ता, तुम्, त । पिडुण् सङ्घाते । पिण्डयति ॥ १८५ ॥

खडुङ् मन्थे । खण्डते । अखण्डिष्ट । चखण्डे । खण्डिता । खडुण् भेदे । खण्डयति ॥ १८६ ॥

भडुङ् परिभाषणे । भण्डते । बभण्डे । भण्डिता ॥ १८७ ॥

हेडृङ् अनादरे । हेडते । लत्वे, अवहेलते । अहेडिष्ट । जिहेडे । हेडिता । जिहेडिषते । णौ, अवहेडयति, ते । ऋदित्वान्न ह्रस्व, अवाजिहेडत् । अवहेडि ५ त, त्वा, ता, तुम, तव्यम् ॥ १८८ ॥

हिडुङ् गतौ च, चादनादरे। नेऽन्ते, हिण्डते। अहिण्डिष्ट। अहिण्डि। जिहिण्डे। हिण्डिता। जेहिण्ड्यते। जेहिण्डीति। "तवर्गस्य-"॥१।३।६०॥ इति तः टः, "धुटो धुटि-"॥१।३।४८॥ इति वा ड् लुकि, जेहि २ टि, ट्टि। हिण्डित्वा। हिण्डितः॥ १८९॥

घुणि, घूर्णि भ्रमणे। घोणते। अघोणिष्ट। जुघुणे। घोणिता॥ घूर्णते। अघूर्णिष्ट। जुघूर्णे। घूर्णिता॥ १९०॥ १९१॥

पणि व्यवहारस्तुत्योः। "गुपौधूप-"॥३।४।१॥ इत्याये, आयान्तस्य इडित्वाभावात् परस्मै, पणायति। "विनिमेयद्यूत-"॥२।२।१६॥ इति वा कर्मत्वे शेषे षष्ठ्या च, शत शतस्य वा पणायति, "अशवित्ते वा"॥३।४।४॥ इति वा आये, अपणायीत्। अपणिष्ट। पणायाचकार। पेणे। पणायिता, पणिता। पम्पण्यते। शेष पनिवत्॥ १९२॥

यतैङ् प्रयत्ने। यतते। अयतिष्ट, अयतिषाताम्। अयाति। येते। यतिष्यते। यियतिषते। ऐदित्त्वात् क्तयोर्नेट्, यत्त., २ वान्। आयत्त.। यत्नम्॥१९३॥

नाथृङ् उपतापैश्वर्याशी षु च, चाद्याचने; उपताप उपघातः। सर्पिषो नाथते, सर्पिर्नाथते, सर्पिर्मे भूयादित्याशास्ते। "नाथ."॥२।२।१०॥ इति वा अकर्मत्वम्। "आशिषि नाथः"॥३।३।३६॥ इति आशिष्येवात्मनेपदनियमात्, अर्थान्तरे परस्मैपदमेव, रिपुं नाथति, उपतपति। स्वामी नाथति ईष्टे। नृप नाथति याचते, एष्वात्मनेपदाभावात्, "नाथः"॥२।२।१०॥ इति वा अकर्मकत्वाभावात् "कर्मणि"॥२।२।४०॥ इति द्वितीयैव। नाथ्यते। अनाथीत्। अनाथिष्ट। अनाथि। ननाथ, ननाथतु.। ननाथे, ननाथाते। नाथ्यात्। नाथिषीष्ट। नाथिता २। नाथिष्य, २ ति, ते। निनाथिषति, ते। नानाथ्यते। नाना २ थीति, त्ति। द्वौ, नानाद्धि। नाथयति। ऋदित्वान्न ह्रस्वे, अननाथत्। नाथन्। नाथमान। नाथि २ ष्यन्, ष्यमाणः। नाथित, २ वान्। नाथि २ त्वा, तुम्॥ १९४॥

अथ त्रय उदित॥ ग्रथुङ् कौटिल्ये, कौटिल्य कुसृति, बन्धश्च। ग्रन्थते। ग्रन्थ्यते। शेष सर्वं ग्रन्थश् वत्। पर क्ङिति न नस्य लुक्॥ १९५॥

वदुङ् स्तुत्यभिवादनयोः, स्तुतिर्गुणैः प्रशंसा, अभिवादनं पादयोः प्रणिपातः । वन्दते देवान्, स्तौतीत्यर्थः । वन्दते गुरून्, अभिवादयत इत्यर्थः । क्ये, वन्द्यते । अवन्दिष्ट, अवन्दि९ षाताम्, षत, ष्ठाः, षाथाम्, ध्वम्, ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि । अवन्दि । ववन्दे, ववन्दाते, ववन्दिषे । वन्दिषीष्ट । वन्दिता । वन्दिष्यते । अवन्दिष्यत । विवन्दिषते । "सन्भिक्षाशंसेरुः"॥५।२।३३॥ इति उः, विवन्दिषुः । क्विपि परे स्त्वे षत्वस्यासत्त्वात् "सो रुः"॥२।१।७२॥ इति रुत्वे, "पदान्ते"॥२।१।६४॥ इति दीर्घे, विवन्दीः, विवन्दिषौ, विवन्दिषः, विवन्दीर्भिः । एवं सन्नन्तेऽन्यत्रापि ज्ञेयम् । वावन्द्यते । वाव १२ न्दीति, न्ति, न्त, दति, दीषि, त्सि, त्थः, त्थ, दीमि, द्मि, द्वः, द्म । द्धि, वावन्द्धि ॥ ह्यस्तनी ॥ अवाव११न्दीत्, न्, न्ताम्, न्दुः, न्दीः, न्०॥ अद्यतनी ॥ अवाव ९ न्दीत, दिष्टा० । वन्दयति । अववन्दत् । अवन्दि । ञिटि, अवन्दिषाताम्, इटि, अवन्दयिषाताम्, अवन्दिध्वम्, ढ्वम्, अवन्दयिध्वम्, ढ्वम्, ढ्वम् । वन्दमानः । वन्द्यमानः । वन्दिष्यमाणः । ववन्दानः । वन्दि ३ त्वा, तः, तुम् ॥ १९६ ॥

स्पदुङ् किञ्चिच्चलने । स्पन्दते, परिस्पन्दते । स्पन्द्यते । अस्पन्दिष्ट । अस्पन्दि । पस्पन्दे, पस्पन्दाते । स्पन्दिष्यते । पिस्पन्दिषते । पास्पन्द्यते । स्पन्दयति । अत्र "चल्याहार-"॥३।३।१०८॥ इति फलवत्यपि परस्मैपदम् । ङे, अपस्पन्दत् । स्पन्दमानः । पस्पन्दानः । स्पन्दि २ त्वा, तः । प्रस्पन्द्य ॥१९७॥

मुदि हर्षे । अकर्मकोऽयम् । मोदते । मुद्यते । अमोदिष्ट, अमोदि१० षाता०, ष्महि । अमोदि, अमोदिषाताम् । मुमुदे, मुमुदाते । मोदिषीष्ट । मोदिता । मोदिष्यते । अमोदिष्यत । "वौ व्यञ्जन-"॥४।३।२५॥ इति वा किल्वे, मुमुदिषते । मुमोदिषते । मोमुद्यते । "व्युक्तोपान्त्य-"॥४।३।१४॥ इति गुणाभावे, मोमुदीति, मोमोत्ति, मोमुत्तः, मोमुदति । अभ्वि, अमोमुदम् । णौ, प्रमोदयति चैत्रम्, अत्र "अणिगि"॥३।३।१०७॥ इति फलवत्यपि परस्मैपदम्, "गतिबोध-"॥२।२।५॥ इत्यणिक्कर्तुः कर्मत्वं च । अनुमोदयामि । ङे, अमूमुदत । अमोदि । इटि, अमोदयि१०षाताम्, षत, ष्ठाः, षाथाम्, ध्वम्, ढ्वम्, ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि । ञिटि, अमोदि ९ षाताम्, षत, ष्ठाः, षाथाम्, ध्वम्, ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि ।

शेषं णिगन्तभूवत्। मोदमानः। मुधमानम्। मुमुदानः। मुदित्वा, मोदित्वा। मुदितः, २ वान्। "उतिशव-"॥४।३।२६॥ इति भावे, आरम्भे च वा कित्त्वे, मुदितम्, मोदितमनेन। प्रमुदितः २, वान्। प्रमोदितः, २ वान्॥ १९८॥

ददि दाने। ददते, ददेते, ददन्ते। दद्यते। अददिष्ट, अददिषाताम्, अदादि। "न शसदद"॥४।१।३०॥ इत्येत्त्वनिषेधात्। दददे। ददिता। दिददिषते। दादद्यते॥ १९९॥

हृदि पुरीषोत्सर्गे। अनिट्। हदते। "धुड्हूस्व-"॥४।३।७०॥ इति सिच्लुक्; अहत्त, अहत्साताम्, अह२द्ध्वम्, द्ध्वम्। अहादि। जहदे। हत्स्यते। जिहत्सते। हत्त्वा। हत्ता। हन्नः। हत्तुम्॥ २००॥

ष्वदि, स्वादि आस्वादने; जिह्वया लेहे। चैत्राय स्वदते। स्वद्यते। अस्वदिष्ट। अस्वादि। सस्वदे। स्वदिता। स्वदिष्यते। "णिस्तोरेव"॥२।३।३७॥ इति नियमात् षत्वाभावे, सिस्वदिषते। णौ, स्वादयति। षपाठात्षः, असिष्वदत्। णिस्तोरेवेत्यत्र वर्जनात् ण्यन्तस्य षत्वाभावे, सिस्वादयिषति। स्वादि। स्वादते। सस्वादे। स्वादिता। अषपाठान्न ष.। सिस्वादिषते। असिस्वदत्॥२०१॥२०२॥

कुर्दि क्रीडायाम्। "भ्वादे-"॥२।१।६३॥ इति दीर्घे, कूर्दते। अकूर्दिष्ट। चुकूर्दे। कूर्दिता। यङ्लुपि दिवि, अचोकू २ र्दीत्, र्द्। सिवि, अचो ३ कूः, कूर्द्, कूर्दीः॥ २०३॥

ह्लादैङ् सुखे च, चाच्छब्दे। आह्लादते। आह्लादिष्ट। आह्लादि। जह्लादे। ह्लादिषीष्ट। ह्लादिता। ह्लादिष्यते। जिह्लादिषते। जाह्लाद्यते। जाह्ला२दीति, त्ति। आह्लादयति। अजिह्लदत्। क्ते, आह्लादितः। ऐदित्वान्नेट्। 'ह्लादो ह्लद्"॥४।२।६७॥ इति ह्लद्, तो नश्च, प्रह्लन्नः २, वान्। ह्लादि ३ त्वा, ता, तुम्॥ २०४॥

पर्दि कुत्सिते शब्दे, पायुध्वनौ। अन्ये त्वशब्देऽघोवाते इत्याहु। पर्दते। पर्द्यते। अपर्दिष्ट। अपर्दि। पपर्दे। पर्दिता। पर्दिष्यते। पिपर्दिषते। यङ्लुपि, दिवि, अपाप २ र्दीत्, र्द्। सिवि, अपापा., अपाप३र्दी., र्द्, र्त्॥२०५॥

एधि वृद्धौ। अकर्मकः, सोपसर्गस्तु साप्योऽपि। एधते। "उपसर्गस्याऽनि-

ण्"॥१।२।१९॥ इत्यत्रैधिवर्जनान्नालुक् । प्रैधते । एध्यते । ऐधिष्ट, ऐधिषाताम् । ऐधि । एधाचक्रे । एधिषीष्ट । एधिता । एधिष्यते । ऐधिष्यत । एदिधिषते । एधयति । ऐदिधत् । ओणेर्ऋदित्करणान्नित्यमपि द्वित्व ह्रस्वो बाधते, तेन ह्रस्वे द्वित्वे च, मा भवानिदिधत् । एधमान । एधि ३ त., त्वा, तुम् ॥ २०६ ॥

स्पर्द्धि सङ्घर्षे, सङ्घर्षः पराभिभवेच्छा । अकर्मकोऽयम् । स्पर्द्धते । अस्पर्धिष्ट, अस्पर्द्धिषाताम् । अस्पर्धि । पस्पर्धे, पस्पर्द्धाते, पस्पर्धिरे । स्पर्द्धिषीष्ट । स्पर्द्धिता । स्पर्द्धिष्यते । पिस्पर्धिषते । पास्पर्ध्यते । पास्प १२ र्द्धीति, र्द्धि, र्द्ध , र्द्धति, र्द्धीषि, त्सि०।हौ, पास्पर्द्धि ॥ ह्यस्तनी॥ अपास्प३र्त्, र्द्, र्द्धीत्, अपास्पर्द्धाम्, अपास्पर्द्धुः, "से स्द्धाम्"॥४।३।७९॥ इति सिवूलुकि, धस्य रुत्वे,"रोरे-"॥१।३।४१॥ लुकि, दीर्घे च। अपास्पाः, अपास्प ३ र्त्, र्द्, र्द्धीः, अपास्प५ र्द्धम् , र्द्ध, र्धम्, र्ध्व, र्ध्म ॥ अद्यतनी ॥ अपास्प २ र्द्धीत्, र्द्धिष्टाम् । स्पर्द्धयति मैत्रमित्यत्र "अणिगि-"॥३।३।१०७॥ इति फलवत्यपि परस्मै, "गतिबोध-"॥२।२।५॥ इत्याणिक्कर्त्तुः कर्मत्व च । ङे, अपस्पर्द्धत् । स्पर्द्धमान । स्पर्द्धिष्यमाण । स्पर्द्धि ५ त्वा, ता, तुम्, त० २ वान् ॥ २०७ ॥

बाधृङ् रोटने, प्रातिघाते । बाधते । अबाधिष्ट, अबाधिषाताम् । अबाधि । बबाधे, बबाधाते । बाधिषीष्ट । बाधिता । बाधिष्यते । बाबाध्यते । बाबा ५ ५ धीति, द्धि, द्ध , धति, धीषि । "गडद-"॥२।१।७७॥ इति बो भत्वे, बाभात्सि । हौ, बाभाद्धि ॥ ह्यस्तनी ॥ पदान्ते भत्वे, अबाभा २ द्, त्, अबाबा ३ धीत्, द्धा, धु । अबा ३ भा, भात्, भाद् । अबाबा ६ धी , द्धम्, द्ध, धम्, ध्व, ध्म । बाधयति । ऋदित्वाद् ङे न ह्रस्व , अबबाधत् । बाध्यमानम् । बाधि ३ त्वा, त , तुम् ॥ २०८ ॥

दधि धारणे । दधते । अदधिष्ट । अदाधि । देधे । दधिता । दादध्यते । दाद २ धीति, द्धि । णौ ङे, अदीदधत् ॥ २०९ ॥

वधि बन्धने । "शान्दान्-"॥३।४।७॥ इति वैरूप्ये सनीतो दीर्घ च, बीभत्सते । "स्वार्थे"॥४।४।६०॥ इति नेट्, अबीभत्सिष्ट, अबीभत्सिषाताम् । अबीभत्सि । बीभत्साचक्रे । बीभत्सिषीष्ट । बीभत्सिता । बीभत्सिष्यते । इच्छा सनि तु, बीभत्सिषते । बीभत्समान. । बीभत्स्यमानम् । बीभत्साचकाण० । अर्थान्तरे

तु प्रत्ययान्तरं स्यान्नतु प्रायेण त्यादयः प्रायोग्रहणात्, बधते । "न जनबध-"॥ ॥४।३।५४॥ इति वृद्ध्यभावे, अवधि; हिंसित इत्यर्थः ॥ २१० ॥

पनि स्तुतौ । जिन पनायति । अत्रायान्तस्येङित्त्वाभावात्परस्मैपदम् । पनेरिदित्त्वादात्मनेपदमित्यन्ये; पनायते जिनम् । एवं पणेरपि । पणायते । "अशविते वा"॥३।४।४॥ इति वा आये, पनाय्यते । पन्यते । अपनायीत् । अपनिष्ट । पनायांचकार । पेने, पेनाते । पनायिष्यति । पनिष्यते । पिपनायिषति । पिपनिषते । पम्पन्यते । पम्प २ नीति, न्ति, पम्पान्तः, पम्पनति । पनाययति । पानयति । आयस्यादन्तत्वे, अपपनायत् । अपीपनत् । पनायि, २ त्वा, त । पनि २ त्वा, तः ॥ २११ ॥

मानि पूजाया विचारे । "शान्दान्मान्-"॥३।४।७॥ इति सनीतौ दीर्घे च, मीमांसते धर्मम् । शेषं गर्हासन्नन्तगुपिवत् । अर्थान्तरे तु त्यादिवर्जं प्रत्ययान्तरमेव स्यात् । यङि, मामान्यते, अत्रातः परस्यानुनासिकस्याभावात् "मुरत-"॥४।१।५१॥ इति पूर्वस्य मुरन्तो न भवति । येत्वत इति पूर्वस्य विशेषणं प्रतिपन्नास्तन्मते मौ, ममान्यते । णिगि, मानयति । अमीमनत् । मानि ३ त', तुम्, तव्यम् ॥ २१२ ॥

टुवेपृङ्, कपुङ् चलने । वेपते, प्रवेपते । अवेपिष्ट । अवेपि । विवेपे, विवेपाते । वेपिता । वेवेप्यते । वेवे १२ प्ति, पीति, प्तः, पति० । वेपयति । ऋदित्वाद् ङे, अविवेपत् । कपुङ् । नेऽन्ते । कम्पते । अकम्पिष्ट, अकम्पिषाताम् । अकम्पि । चकम्पे । कम्पिता । कम्पिष्यते । "चल्याहार-"॥३।३।१०८॥ इति फलवत्यपि परस्मैपदे, "गतिबोध-"॥२।२।५॥ इत्यणिक्कर्तुः कर्मत्वे च, कम्पयति शाखाम् । अचकम्पत् । "लङ्गिकम्प्यो-"॥४।२।४७॥ इति नलुकि, विकपित. । अङ्गविकृतेरन्यत्र तु, कम्पित ॥ २१३ ॥ २१४ ॥

त्रपौषि लज्जायाम् । त्रपते । अत्रपिष्ट । औदित्त्वाद्वेट्; अत्रप्त, अत्रपिषाताम्, अत्रप्साताम् । अत्रापि । "तॄत्रप-"॥४।१।२५॥ इत्येत्त्वे, त्रेपे । त्रप्ता, त्रपिता । त्रप्स्यते, त्रपिष्यते । तित्रपिषते । तित्रप्सते । वेट्त्वान्नेट्; त्रप्त, २ वान् ॥ २१५ ॥

गुपि गोपनकुत्सनयोः । गर्हायां सनि, "स्वार्थे"॥३।४।६०॥ इति नेटि, जुगुप्सते, जुगुप्सेते । क्ये, जुगुप्स्यते । अजुगुप्सिष्ट ॥ भाक ॥ अजुगुप्सि, अजुगुप्सिषाताम् ॥ परोक्षा ॥ जुगुप्सा ३ चक्रे, बभूव, आस वा ॥ भाक ॥ जुगुप्सा ३ चक्रे, बभूवे, आहे वा । आ॰ ॥ जुगुप्सिषीष्ट ॥ भाक ॥ जुगुप्सिषीष्ट । श्वस्तनी ॥ जुगुप्सिता ॥ भाक ॥ जुगुप्सिता ॥ भविष्यन्ती । जुगुप्सिष्यते ॥ क्रिया॰ ॥ अजुगुप्सिष्यत ॥ भाक ॥ अजुगुप्सिष्यत । जुगुप्सितुमिच्छति इतीच्छा सनि, जुगुप्सिषते । गर्हाया अन्यत्र तु प्रायेण त्यादयो नाभिधीयन्ते, तेनार्थान्तरे णौ, गोपयति । अजूगुपत् । क्तो, गुप्तिः ॥ ननु तितिक्षते, मीमासते, जुगुप्सते, इत्यादौ कथ सन्व्यवधानेऽप्यात्मनेपदम् । उच्यते, तिजादीनामर्थविशेषेषु केवलानामप्रयोगात्सन्नन्तसमुदायार्थमेवानुबन्धाविधानम्, तेन सन्व्यवधानेऽपि आत्मनेपदम् ॥ २१६ ॥

लबुङ् अवस्रसने च, चाच्छब्दे । नेऽन्ते । लम्बते, प्रलम्बते; अवलम्बते, आलम्बते, उल्लम्बते, विलम्बते; इत्यनेकार्थत्वमुपसर्गद्योतितमन्यत्राप्युदाहार्यम् । अलम्बिष्ट, अलम्बिषाताम्। अलम्बि । ललम्बे । लम्बिषीष्ट । लम्बिता । लिलम्बिषते । लम्बयति । अललम्बत् ॥ २१७ ॥

कवृङ् वर्णे । वर्णो वर्णनम्, शुक्लादिश्च । कवते । अकविष्ट । अकावि। चकवे । कविता । ऋदित्त्वाद् डे, अचकावत्, अय वान्तोऽपि वृद्धोक्तत्वाद्वान्तेषु मोक्त ॥ २१८ ॥

अथ त्रय उदित । लभुङ् शब्दे । उपालम्भते । अलम्भिष्ट । ललम्भे । लम्भिता । णौ, लम्भयति । अललम्भत् । क्ते, लम्भित' ॥ २१९ ॥

ष्टभुङ् स्तम्भे, क्रियानिरोधे । स्तम्भते । "अवाच्चाश्रय-"॥२।३।४२॥ इति षत्वे, अवष्टम्भते दण्डम् । अवस्तम्भते शूर' । "उद स्था-"॥१।३।४५॥ इति स्लुकि, उत्तम्भते पताकाम् । स्तम्भ्यते । अस्तम्भिष्ट । तस्तम्भे । स्तम्भिता । तिष्टम्भिषते । तास्तम्भ्यते । स्तम्भयति । अतस्तम्भत् । णौ सनि षत्वे, तिष्टम्भयिषते । टपरः षकारोऽयमित्येके तन्मते, टाष्टम्भ्यते । टिष्टम्भयिषते ॥ २२० ॥

जृभुङ् गात्रविनामे । जृम्भते; विजृम्भते । जृम्भ्यते । अजृम्भिष्ट, अजृम्भिषाताम् । अजृम्भि । जजृम्भे । जृम्भिता । जृम्भिष्यते । जृम्भितः २, वान् । जृम्भित्वा ॥ २२१ ॥

अथ द्वावनिटौ, रभि राभस्ये, कार्योद्यमे । आरभते; सरभते; परिरभते । आरभ्यते । आरब्ध, आर ९ प्साताम्, प्सत, ब्धाः, प्साथाम्, ब्ध्वम्, ब्द्ध्वम्, प्सि, प्स्वहि, प्स्महि । "रभोऽपरोक्षा-"॥४।४।१०२॥ इति स्वरे ने, आरम्भि, आरप्साताम् । आरेभे, आरेभाते । आर २ प्सीष्ट । आरब्धासे । आरप्स्यते । सनि, आरिप्सते । "रभलभ-"॥४।१।२१॥ इति इर्नच द्विः, रार ३ भ्यते, म्भीति, ब्धि । "रभोऽपरोक्षा-"॥४।४।१०२॥ इति स्वरे ने, आरम्भयति । आरम्भ्यते । आररम्भत् । आरभमाण. । आरभ्यमाणम् । आरेभाणः । आरब्ध., २ वान् । रब्ध्वा । आरभ्य । आर २ ब्धा, ब्धुम् । आरम्भणीयम् । आरभ्यम् । "ख्णम्चाभीक्ष्ण्ये" ॥५।४।४८॥ इति ख्णमि, आरम्भमारम्भ याति ॥ २२२ ॥

डुलभिष् प्राप्तौ । लभते, आलभते, उपालभते । लभ्यते । अलब्ध, अलप्साताम्, अल ८ प्सत, ब्धाः, प्साथाम्, ब्ध्वम्, ब्द्ध्वम्, प्सि, प्स्वहि, प्स्महि । "ञिख्णमोर्वा"॥४।४।१०६॥ इति वा ने, अलाभि, अलम्भि । "उपसर्गात्खल्-" ॥४।४।१०७॥ इति ने, उपालम्भि; प्रालम्भि, अवाप्ति इत्यर्थ. । लेभे, लेभाते, लेभिरे, लेभिषे । लप्सीष्ट । लब्धा । लप्स्यते । सनि "रभ-"॥४।१।२१॥ इति इर्नच द्वि', लिप्सते । लालभ्यते । "लभ."॥४।४।१०३॥ इति शव्परोक्षावर्जे स्वरे ने, लाल१२म्भीति, ब्धि, ब्धः, म्भति, म्भीषि, प्सि, ब्ध., ब्ध, म्भीमि, म्भि, भ्व, भ्मः । प्रतिलम्भयति । लम्भ्यते । अललम्भत् । लभमानः । लभ्यमानम् । लप्स्यमानः । लेभानः । लब्धः २, वान् । आलब्धा । लब्धा । लब्धुम् । ख्णमि, लाभ२, लम्भ २ । " आङो यि "॥४।४।१०४॥ इति नेऽन्ते, आलम्भ्या गौ । आङोऽन्यत्र, लभ्य' । "उपात् स्तुतौ"॥४।४।१०५॥ इति नेऽन्ते, उपलम्भ्या विद्या भवता । स्तुतेरन्यत्र उपलभ्या वार्त्ता । उपलभ्यमस्मात् ॥ २२३ ॥

क्षमौषि सहने । क्षमते, क्षमेते । क्षमताम् । अक्षमत । क्षम्यते । औदित्वाद् "धूगौदितः"॥४।४।३८॥ इति वेटि, अक्षमिष्ट; अक्षंस्त, अक्षमिषाताम्, अक्ष-

सातात् । "मोऽकमियमि-"॥४।३।५५॥ इति न वृद्धिः, अक्षमि । चक्षमे, चक्षमाते, चक्षमिरे । क्षमिषीष्ट, क्षंसीष्ट । क्षमिता, क्षन्ता । क्षमिष्यते, क्षस्यते । चिक्षमिषते, चिक्षसते । चङ्क्षम्यते । अचङ्क्षमिष्ट । लुपि, चङ्क्ष २ मीति, न्ति, चङ्क्षान्त , चङ्क्षमति, चङ्क्षमीषि, चङ्क्षसि, चङ्क्षान् २ थ , थ । चङ्क्ष ४ न्मि, मीमि, न्व', न्म' । क्ये, चङ्क्षम्यते । चङ्क्षम्यात् । चङ्क्षाहि, अत्र "शिड्हे"॥१।३।४०॥ इत्यनुस्वारः॥ ह्यस्तनी॥अचङ् ११क्षत्, क्षमीत्, क्षान्ताम्, क्षमु , क्षन् , क्षमी , क्षान्तं, क्षान्त, क्षमम्, क्षन्व , क्षन्म' ॥ अद्य०॥ "नाश्वि-"॥ ॥४।३।४९॥ इति न वृद्धौ, अचङ्क्षमीत । शेषं पचिवत् । यत औदित्त्वेन यङ्लुपि न वेट्त्वं किंतु सेट्त्वं नित्यं, औदित इत्यनुबन्धनिर्दिष्टस्य यङ्लुप्यप्राप्ते । एवमन्यत्रापि । क्षमयति । अचिक्षमत् । अक्षामि, अक्षमि । क्षममाण । क्षम्यमाण. । क्षम्यमाणम् । चक्षमाण । वेट्त्वान्नेट्, क्षान्त , २ वान्, क्षान्त्वा, क्षमित्वा । क्षमि २ ता, तुम् । क्ष २ न्ता, न्तुम् ॥ २२४ ॥

कमूङ् कान्तौ । कान्तिरभिलापः । "कमेर्णिङ्"॥३।४।२॥ कामयते । अकामयत । "अशविते वा"॥३।४।४॥ इति वा णिङि, कम्यते, काम्यते । णिङभावे "णिश्रि-"॥३।४।५८॥ इति ङे, अचकमत । णिङि, अचीकमत । "मोऽकमियमि-"॥४।३।५५॥ इति अनिषेधाद् वृद्धौ, अकामि । णिङ्यपि, अकामि, अकमिषाताम् । "अमोऽकम्य-"॥४।२।२६॥ इति न ह्रस्व , अकामयिषाताम् । चकमे । कामयाचक्रे । कमिषीष्ट, कामयिषीष्ट । कमिता, कामयिता । कमिष्यते, कामयिष्यते । अकमिष्यत, अकामयिष्यत । चिकमिषते । चिकामयिषते । चङ्कम्यते । लुपि चमूवत् । णिङन्तस्य तु वाक्यमेव न यङ् । णिगि, "अमो-"॥४।२।२६॥ इति न ह्रस्वे, कामयति । अचीकमत् । अकामि । कामयमान । कम्यमानम् । काम्यमानम् । चकमान । कामयाञ्चकाणः । "ऊदितो वा" ॥४।४।४२॥ इति वेट्, कान्त्वा, कमित्वा । कामयित्वा । वेट्त्वान्नेट्, कान्त । णिङि, कामित । कमि २ ता, तुम् । कामयि २ ता, तुम् । कम्यम्, काम्यम् ॥२२५॥

अयि गतौ । अयते । "उपसर्गस्यायौ"॥२।३।१००॥ इति लः, पलायते,

पल्ययते, प्लुलयते । पलाय्यते । पलायिष्ट, पलायिपाताम्, पलायि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम् । पलायि । "दयायास्-"॥३।४।४७॥ इत्यामि, अया ३ चक्रे, बभूव, आस वा । पलाया ३ चक्रे । ३ । पलायि ३ षीष्ट, षीढ्वम्, षीध्वम् । पलायिष्यते । पलायिष्यत । पलायियिषते । णौ, पलाययति । पलायियत् । पलायमान । पलाय्यमानम् । पलायाञ्चकाणः । पलायि ४ ता, तुम्, त, वान् । पलाय्य ॥ २२६ ॥

दयि दानगतिहिंसादहनेषु च । चाद्रक्षणे । "स्मृत्यर्थदयेशः"॥२।२।११॥ इति वा कर्मत्वे, दानस्य दानं वा दयते । क्ये, दय्यते । अदयिष्ट । "दयाय-" ॥३।४।४७॥ इत्यामि, "वेत्तेः कित्"॥३।४।५१॥ इत्यत्र कित्त्वभणनेन आमः परोक्षात्वाभावाद् "अनादेशादे-"॥४।१।२४॥ इति न ए, दयाञ्चक्रे । दयिता । दिदयिषते । यलवानां वाऽनुनासिकत्वे दन्दय्यते । दादय्यते । दन्दयीति । दादयीति । "य्वो-"॥४।४।१२१॥ इति यूलुकि, दादति, दादत, दादयति, दादयीषि, दादसि, दाद २ थ, थ । यो लुकि, "मव्यस्या"॥४।२।११३॥ इत्याकारे च, दादामि, दादाव, दादाम ॥ अद्य० ॥ "नश्वि-"॥४।३।४९॥ इति न वृद्धौ, अदादयीत् । एवं दन्दय्यरूपाण्यपि । दाययति । अदीदयत् । दयि ३ त, त्वा, तुम् ॥२२७॥

ऊयैङ् तन्तुसन्ताने । ऊयते, प्रोयते, व्यूयते । क्ये, व्यूय्यते । औयिष्ट । औयि, औयिपाताम् । "गुरुनाम्य-"॥३।४।४८॥ इत्यामि, ऊयाञ्चक्रे । ऊयिता । ऊयिष्यते । औयिष्यत, ऊयियिषते । ऊययति । ऐदित्वात् क्तयोर्नेट्, "य्वोः-"॥४।४।१२१॥ इति यूलुक् च, ऊत २, वान् । ऊयित्वा ॥ २२८ ॥

स्फायैङ्, ओप्यायैङ् वृद्धौ । स्फायते । स्फायताम् । अस्फायत । अस्फायिष्ट ॥ परोक्षा ॥ पस्फाये । स्फायिता । पिस्फायिषते । पास्फाय्यते । पास्फायीति, पास्फाति । "य्वो-"॥४।४।१२१॥ इति यूलुक्, पास्फात, पास्फायति । णौ, स्फाय स्फाव्, स्फावयति । पारायणिकाना तु, स्फाययतीत्यपि । ङे, अपिस्फवत्, अपिस्फयत् । ऐदित्वान्नेट् क्तयो, स्फात २, वान् । "स्फाय स्फीर्वा"॥४।१।९४॥ स्फीत २, वान् । प्यायैङ् । आप्यायते । प्याय्यते । "दीपजन-"॥३।४।६७॥ इति कर्त्तरि वा ञिचि तलुकि, अप्यायि, अप्यायिष्ट, अप्यायिपाताम्, अप्यायि ॥ परोक्षायङो "प्याय पी"॥४।१।९१॥ आपिप्ये, आपिप्याते । प्यायिता । पिप्यायिषते ।

अभासिष्ट । अभासि । बभा २ से, साते । भासिता । बिभासिषते । बाभास्यते । बाभासीति, बाभास्ति । हौ, बाभाद्धि । "भ्राज-"॥४।१।३६॥ इति वा ह्रस्वे, अबीभसत्, अबभासत् । भासि ५ ता, त्वा, तुम्, त, २ वान् ॥२४३॥

आङ् शसुङ् इच्छायाम् । आङः पर एवाय प्रयुज्यते, नान्योपसर्गात्, नापि केवलः । नेऽन्ते । आशसते । आशस्यते । आशसिष्ट । आशशंसे । आशसिषीष्ट । आशसिता । आशसिष्यते । आशिशसिषते । आशाशस्यते, सीति, स्ति । आशसयति । आशशसत् । आशसि ३ तुम्, त', २ वान् । आशंस्य ॥ २४४ ॥

ग्रसूङ् अदने । ग्रसते । ग्रस्यते । अग्रसिष्ट । अग्रासि । जग्रसे । ग्रसिता । ग्रसिष्यते । जिग्रसिषते । जाग्रस्यते । जाग्र२सीति, स्ति । ग्रासयति । अजिग्रसत् । ऊदित्वात्, ग्रस्त्वा, ग्रसित्वा । ग्रसितुम् । वेट्त्वान्नेट्, ग्रस्त २, वान् ॥ २४५ ॥

ईहि चेष्टायाम्, ईहते । ईह्यते । ऐहिष्ट । ईहाञ्चक्रे । अत्र कृग उभयपदित्वेऽपि "आम' कृग "॥३।३।७५॥ इत्यात्मनेपदमेव न परस्मै । ईहाञ्चभूव, ईहामास, भ्वस्तिभ्या परस्मैपदमेव । एवमन्यत्रापि । ईजिहिषते । ईहयति । ऐजिहत् । ईहमान । ईहाञ्चकाण । ईहि ४ ता, त्वा, त २, वान् ॥२४६॥

गर्हि कुत्सने । गर्हते । गर्ह्यते । अगर्हिष्ट । जगर्हे । गर्हिता । जिगर्हिषते । जागर्ह्यते । जाग ४ र्हीति, र्ढि, र्ढ , र्हति । क्ते, जागर्हित । गर्हयति । अजगर्हत् । गर्हमाण । गर्ह्यमाणम् । गर्हि ५ त्वा, ता, तुम्, त , २ वान् । क्विपि, सुघर्ट् ॥ २४७ ॥

द्राहङ् निक्षेपे । निद्राक्षेप इत्येके । द्राहते । अद्राहिष्ट । दद्राहे । द्राहिता । ऋदित्त्वान् ङे, अदद्राहत् ॥ २४८ ॥

ऊहि तर्के । तर्क, उत्प्रेक्षा । ऊहते । 'उपसर्गादस्य-" ॥३।३।२६॥ इति वाऽऽत्मनेपदे, समूहति २, ते, अपोहति, ते, व्यपोहति, ते । ऊह्यते । "उपसर्गाद्दूह-"॥४।३।१०६॥ इति क्ङिति यहूस्वे, अभ्युह्यते, समुह्यते । आऊह इति ऊकारप्रश्लेषात् आ उह्यते, ओह्यते । समोह्यत इत्यत्र न ह्रस्व । अपोह् २ त्, त।

समौह्यत, अत्र प्राग्वन्न ह्रस्वः औहिष्ट। समौहीत्। समौहिष्ट। ऊहाञ्चक्रे।समूहा २ ञ्चकार, चक्रे वा। समुह्यात्। समूहिषीष्ट। ऊजिहिषते। ऊहयति। औजिहत्। ऊहि ४ ता, त्वा, तुम्, तः। समुह्य ॥ २४९ ॥

गाहौङ् विलोडने; परिमलने।गाहते, अवगाहते। औदित्त्वाद्वेट्, अगाढ, अगाहिष्ट, अघा २ क्षाताम्, क्षत, अगाहि २ षाता, षत, अगाढा, अगाहिष्ठाः, अघाक्षाथाम्, अगाहिषाथाम्, अघा २ ग्ढ्ढुम्, ढ्वम्, अगाहि ३ ढ्ढम्, ढ्वम्, ध्वम्, अघाक्षि, अगाहिषि, अघाक्ष्वहि, अगाहिष्वहि, अघाक्ष्महि, अगाहिष्महि ॥ भाक ॥ अगाहि । शेष कर्तृवत ॥ परोक्षा ॥ जगाहे; जगाहि ३ षे, ध्वे, ढ्वे। घाक्षीष्ट, गाहिषीष्ट। गाढा, गाहिता। घाक्ष्यते; गाहिष्यते। जिघाक्षते; जिगाहिषते। जागाह्यते। जागाहीति, जागाढि, जागाढः, जागाहति, जागाहीषि, जाघाक्षि, जागाढः, जागाढ, जागा २हीमि, ह्मि। गाहयति। अजीगहत्। वेट्त्वान्नेट्, गाढः २, वान्। गाढ्वा, गाहित्वा। अवगाह्य। गा २ ढा, ढुम्। गाहि २ ता, तुम ॥ २५० ॥

धुक्षि सन्दीपनक्लेशनजीवनेषु। धुक्षते; सन्धुक्षते। अधुक्षिष्ट। दुधुक्षे। धुक्षिता। क्ते, सन्धुक्षित। क्विपि, सुधुट्। "सयोगस्यादौ-"॥२।१।८८॥ इति क्लुक् ॥२५१॥

- शिक्षि विद्योपादाने। शिक्षते। शिक्ष्यते। अशिक्षिष्ट। शिशिक्षे। शिक्षिता। शिशिक्षिषते। शेशिक्ष्यते। शेशिक्षीति, शेशिष्टि। गुणे कर्त्तव्ये क्लुकोऽसत्त्वान्न गुणः। क्ते, शेशिक्षित.। शिक्षयति। अशिशिक्षत्। णौ सनि, शिशिक्षयिषति। शिक्षमाण.। शिक्ष्यमाणम्। शिक्षि ३ त्वा, तुम्, त. ॥२५२॥

भिक्षि याच्ञायाम्। भिक्षते गा राजानम्। बिभिक्षे। शेष शिक्षिवत् ॥२५३॥

दीक्षि मौण्ड्येज्योपनयननियमव्रतादेशेषु। मौण्ड्य वपनम्। इज्या यजनम्। उपनयन मौञ्जीबन्ध'। नियम सयम.। व्रतादेशः सस्कारादेश'। दीक्षते। दिदीक्षे। शेषं शिक्षिवत् ॥ २५४ ॥

ईक्षि दर्शने। ईक्षते। उप, प्रति, परि, प्र, अप, सम्, वि, नि' पूर्वोऽपि। ईक्ष्यते। ऐक्षत। ऐक्ष्यत ॥ अद्य० ॥ ऐक्षि १० ष्ट, षाताम्, षत, ष्ठा,

पाथाम्, ध्वम्, ढ्ढ्वम्, पि, प्वहि, प्महि । ऐक्षि । ईक्षाञ्चक्रे । ईक्षामास । ईक्षाम्बभूव । "आम. कृगः" ॥३।३।७५॥ इत्यत्र कृग्ग्रहणादस्तिभुवोः परस्मैपदमेव । ईक्षि २ षीष्ट, षीध्वम् । ईक्षिता । ईक्षिष्यते । ऐक्षिष्यत । "यद्वीक्ष्ये-राधीक्षी"॥२।२।५८॥ इति चतुर्थ्यी, मैत्रायेक्षते । ईक्षितव्य परस्मिन्य. । ईचिक्षिषते । क्ते, ईचिक्षिषित.। ईक्षयति। ऐचिक्षत्; त । ईक्षमाण. । ईक्ष्यमाणम् । ईक्षा ३ चकाण., बभूवान्, आसिवान् वा । ईक्षि ४ त्वा, ता, तुम्, त.। वीक्ष्य ॥ २५५ ॥

इत्यात्मनेभाषा ।

अथोभयपदिनः ।

श्रिग् सेवायाम् । श्रय२ ति, ते; आश्रय २ ति, ते । "अघोषे-"॥१।३।५०॥ इति दत्वे "तवर्ग-"॥१।३।६०॥ इति तश्चे "प्रथमादधुटि-"॥१।३।४॥ इति वा शश्छे उच्छ्रयति, ते, उच्छ्श्रयति, ते । एव समुच्छ्रयति, ते; समुच्श्रयति, ते। अत्युच्छ्रयति, ते, अत्युच्श्रयति, ते, निश्रयति, ते । क्ये, श्रीयते ॥ अद्य० ॥ "णिश्रि"॥३।४।५८॥ इति ङे, द्वित्वे "सयोगात्-"॥२।१।५२॥ इति इयि च, अशिश्रि १८ यत्, यताम्, यन्, य, यतम्, यत, यम्, याव, याम । यत, येताम्, यन्त, यथा, येथाम्, यध्वम्, ये, यावहि, यामहि ॥ भाक ॥ अश्रायि । ञिटि, अश्रायि १० षाताम्, षत, ष्ठा, षाथाम्, ध्वम्, ढ्वम्, ढ्ढ्वम्, पि, प्वहि, प्महि । एव इट्यपि, अश्रयिषातामित्यादि १० ॥ परोक्षा ॥ शिश्राय, शिश्रियतु', शिश्रियु, शिश्रयिथ। शिश्रिये, शिश्रियाते० ॥ भाक ॥ शिश्रिये०। ॥ आशी ॥ श्रीयात् । श्रयिषीष्ट ॥ भाक॥ इट्ञिटो, श्रयिषीष्ट, श्रायिषीष्ट । एवमग्रेऽपि । श्रयिता २ । श्रायिता । श्रयिष्यति, ते । श्रायिष्यते । अश्रयिष्यत्, त । अश्रायिष्यत । "णिस्नुश्र्या-"॥३।४।९२॥ इति ञिचो "भूषार्थ-"॥३।४।९३॥ इति क्यस्य च निषेधात् कर्मकर्त्तरि, उच्छ्रयति दण्ड दण्डी, उच्छ्रयते। उदशिश्रियत। उच्छ्रयिता। उच्छ्रयिष्यते दण्ड' स्वयमेव । ञिच्निषेधात् ञिट् तु स्यादेव। उच्छ्रायिता। उच्छ्रायिष्यते दण्ड स्वयमेव। "इवृध-"॥४।४।४७॥ इति वेटि, शिश्रीषति, ते। शिश्रयिष२ति, ते। शेश्रीयते। शेश्रयीति, शेश्रेति, शेश्रित', शेश्रियति। क्त्यो-

रनेकस्वराद्विहितत्वेन "ऋवर्णश्र्यूर्णुग."॥४।४।५७॥ इति इड्निषेधाभावे, "सयोगात्-"॥२।१।५२॥ इति इयि च, शिश्रियित'२ वान्। क्त्वोऽकित्त्वाद्गुणे, शेश्रयि ४त्वा, तुम्,ता, तव्यम्। श्राययति। अशिश्रयत्, अत्रोपान्त्यह्रस्वे कृते पश्चाद्द्वित्वे पूर्वस्य सन्वद्भाव. । आश्राययाञ्चकार । श्रयन् । श्रयिष्यन् । श्रयमाणः । श्रयिष्यमाणः । श्रीयमाणम् । श्रयिष्यमाणम् । शिश्रिवान् । शिश्रियाण' । "ऋवर्णश्र्यूर्णुगः कितः"॥४।४।५७॥ इति इडभावे, श्रित्वा । आश्रित्य । श्रितः २, वान् । श्रयि २ ता, तुम् ॥ २५६ ॥

अथ पञ्चानिट.। णीग् प्रापणे । अजा नयति, नयते वा ग्रामम्, प्रापयतीत्यर्थ. ॥ एवं अनु, अप, आङ्, अभि, पूर्वोऽपि । णपाठाद् "अदुरुपसर्ग"-॥२।३।७७॥ इति ण', परिणयति, ते । पराणयति, ते । प्रणयति, ते । निर्णयति, ते । "पूजाचार्यक-"॥३।३।३९॥ इत्यात्मनेपदे, नयते विद्वान् स्याद्वादे, युक्तिभि' स्थिरीकृत्य प्रज्ञापयतीत्यर्थ. । बटुमुपनयते, अध्ययनाय स्वान्तिकं नयतीत्यर्थ' । कर्मकरानुपनयते, वेतनेनात्मसमीप प्रापयतीत्यर्थः । शिशुमुदानयते, उत्क्षिपतीत्यर्थ । नयते तत्वार्थे, तत्र प्रमेय निश्चिनोतीत्यर्थ. । ऋण विनयन्ते, दानेन शोधयन्तीत्यर्थः । शत विनयते, व्ययते इत्यर्थः । "कर्तृस्था-"॥३।३।४०॥ इत्यात्मनेपदे, क्रोध विनयते । अकर्तृस्थमूर्त्तयोस्त्वाप्ययो' परस्मैपदमेव; चैत्रो' मैत्रस्य क्रोध विनयति । गड्डु विनयति । अत्र च सूत्रे शमयत्यर्थादेव नयतेरात्मनेपदं दृश्यते न प्रापणार्थात्; तेन कोप शम नयति, प्रज्ञा वृद्धिं नयतीत्यादौ परस्मैपदमेव । क्ये, नीयतेऽजा ग्रामम् ॥ अद्य० ॥ अनैषीत्, अनैष्टा, अनैषु, अनैषी । अनेष्ट, अनेषाताम्, अनेषत, अने ७ ष्ठा, षाथाम्, ढ्वम्, इढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि ॥ भाक ॥ अनायि, अनेषाताम्, अनायिषाताम्०, अने २ ढ्वम, इढ्वम्; अनायि ३ ध्वम्, ढ्वम, इढ्वम् ॥ परोक्षा॥ निनाय, निन्यतु', निन्यु, निनयिथ, निनेथ, निन्यथु', निन्य, निनाय, निनय, निन्यि- २ व, म । निन्ये, निन्याते, निन्यिरे, निन्यिषे, निन्यि ३ ढ्वे, ध्वे, महे ॥ भाक ॥ निन्ये इत्यादि तदेव । नीयात् । नेषी २ ष्ट, ढ्वम्, नायिषी ३ ष्ट, ढ्वम्, ध्वम्। नेता २ । नायिता । नेष्यति, ते । नायिष्यते । सनि, निनीषति, ते । प्रणि-

नीयति, ते । पूर्वं धातोरुपसर्गयोगे तु णत्वे कृते पश्चाद्द्वित्वे, प्रणिणीयति, ते । नेनीयते । नेनयीति, नेनेति, नेनीत., नेन्यति । शेष जिवत्, पर नेनीयेत्यादौ नीर्वाच्यो नतु नि ॥ क्ते, नेन्यित' । नेनयि ३ त्वा, ता, तुम् । "गतिबोध" ॥२।२।५॥ इत्यत्र नीवर्जनादणिकर्तुर्कर्मत्वाभावे, नाययति भार ग्राम मैत्रेण । अनीनयत् । णौ सनि, निनाययिषति । नयन् । नयमान । नीयमानम् । नेष्यमाणम् । नी ३ त्वा, त, वान् । आनीय । ने २ ता, तुम् । नेतव्यम् । नेयम् । आनेयम् ॥ २५७ ॥

हृग् हरणे । हरति, ते । अथ अभ्यव, व्यव, सम्प्र, व्याङ्, आङ्, प्र, उद् पूर्वोऽपि । प्रादीना चापश्चभ्य प्रायेण प्रयोगो भवति । आहरति, व्याहरति, अभिव्याहरति, समभिव्याहरति, प्रसमभिव्याहरति, ते । "विनिमेय- ॥२।२।१६॥ इति वा अकर्मत्वे, शतस्य शत वा व्यवहरते । "हृगोगत- ॥३।३।३८॥ इत्यात्मनेपदे, पैतृकमश्वा अनुहरन्ते, पितुरागत गुणाविषयं क्रियाविषय वा सादृश्यमविकलं शीलयन्तीत्यर्थ । अथवा पितुरागत गमनमविच्छेदेन शीलयन्तीत्यर्थ', यतो गत सादृश्यमनुकरणमिति यावत् । अथवा गत गमनं तयोस्ताच्छील्यम्, उत्पत्तितो नाश यावत् तत्स्वभावता । एव पितुः पितर वाऽनुहरते । गत–ताच्छील्यादन्यत्र रूपेण पितरमनुहरति ॥ क्ये, ह्रियते । अहार्षीत्, अहार्ष्टाम्, अहार्षु, अहार्षी । अहृत, अहृषाताम्, अहृषत ॥ भाक ॥ अहारि, अहृषाताम्, अहारिषाताम्० ॥ जहार, जह्रतु, जह्रु, "ऋत "॥४।४।७९॥ इति नेटि, जहर्थ, जह्रथु, जह्र, जहार, जहर, जह्रिव जह्रिम । जह्रे, जह्राते । एव कर्मण्यपि । ह्रियात् । हृषीष्ट । हारिषीष्ट । हर्ता २ । हारिता । हरिष्यति, ते । हारिष्यते । जिहीर्षति, ते । जेह्रीयते । जरि री र् ३ हरीति, जरि री र् ३ हर्त्ति । णौ, "हृक्रोर्नवा"॥२।२।८॥ इत्याणिकर्तुर्वा कर्मत्वम् । अकर्मकत्वे, हरति मैत्र, हारयति मैत्र मैत्रेण वा चैत्र । अभ्यवहरति मैत्र, अभ्यवहारयति मैत्र मैत्रेण वा चैत्र । सकर्मकत्वे तु, हरति द्रव्य चोर, हारयति द्रव्य चौर चौरेण वा चैत्र. । हरति भारं चैत्र, हारयति भार चैत्र चैत्रेण वा मैत्र । ङे, अजीहरत् । सनि, जिहारयिषति । हरन् । हरिष्यन् । हरमाणः । ह्रियमाणम् ।

हरिष्यमाणम् । जह्वान् । जह्राण. । हृत , २ वान् । हृत्वा । हर्त्तुम् । संहृत्य । हार्यम् । शेषमद्यतन्यादौ स्सट्वर्जं कृग्वत् ॥ २५८ ॥

भृग् भरणे । भरति, ते । भ्रियते । अभार्षीत् । अभृत । अभारि । बभार; "स्कसृवृभृ-"॥४।४।८१॥ इति भृनिषेधाद् इडभावे, बभर्थ, बभृ-२ व, म । बभ्रे; बभृषे । भरिष्यति, भारिष्यते । सनि, "इवृध-"॥४।४।४७॥ इति वेटि "नामिनोऽनिट्" ॥४।३।३३॥ इति कित्त्वे, बुभूर्षति, ते । बिभरिषति, ते । बिभ्रीयते । बरी, रि, र् ३ भरीति । बरि, री, र् ३ भर्ति । "इवृध-"॥४।४।४७॥ इत्यत्र भर इति शवा निर्देशो यङ्लुपो निवृत्यर्थः, तेन यङ्लुबन्तात्सनि नित्यमिट् नतु वेट् । बर्भरिषति । भारयति । अबीभरत् । शेष, अशिति कृग्वत् ॥ २५९ ॥

धृग् धरणे । धरति, ते । दधार । दध्रे । उद्दिधीर्षति, ते । देध्रीयते । ङे, अदीधरत् । अयं सर्वो हृग्वत् । ॥ २६० ॥

डुकृग् करणे । "कृगुतनादेरु" ॥३।४।८३॥ करोति । "अत शित्युत्" ॥४।२।८९॥ इति पूर्वस्य उ , कुरुत , कुर्वन्ति, करोषि, कुरु २ थ., थ, करोमि, "कृगो यि च" ॥४।२।८८॥ इत्युलोपे कुर्व', कुर्म । कुरुते, कुर्व्वाते, कुर्व्वते, "अनतोऽन्तोऽद्-"॥४।२।११४॥ कुरुषे, कुर्वाथे, कुरुध्वे, कुर्वे, कुर्वहे, कुर्महे । "कृगो यि च" ॥४।२।८८॥ इत्युलुक्, कुर्यात्, कुर्याताम्० । कुर्वीत, कुर्वीयाताम्, कुर्व्वीरन्० ॥ करोतु, कुरु २ तात्, ताम्, कुर्वन्तु, कुरु, कुरु ३ तात्, तम्, त, करवा ३ णि, व, म । कुरुताम्, कुर्वाताम्, कुर्वताम्, कुरुष्व, कुर्वाथाम्, कुरुध्वम्, करवै, करवा २ वहै, महै । अकरोत्, अकुरुताम्, अकुर्वन्, अकरो, अकुरु २ तम्, त, अकरवम्, अकुर्व, अकुर्म । अकुरुत, अकुर्वाताम्, अकुर्वत, अकुरुथा, अकुर्वाथाम्, अकुरुध्वम्, अकुर्वि, अकुर्वहि, अकुर्महि । क्ये, क्रियते । क्रियेत । क्रियताम् । अक्रियतेत्यादि । "सिचि परस्मै-"॥४।३।४४॥ इति वृद्धौ, "स. सिज-"॥४।३।६५॥ इति ईति, अकार्षीत्, अकार्ष्टाम्, अकार्षु', अकार्षी, अकार्ष्टम्, अकार्ष्ट, अकार्षम्, अकार्ष्व, अकार्ष्म । अकृत, "धुट्ह्रस्व-"॥४।३।७०॥ इति सिच्लुक्, अकृषाताम्, अकृथा,

मा त्व कृथा, अकृषाथाम्; "सोधि-"॥४।३।७२॥ इति वा सिचूलुकि, "नाम्यन्त-"॥२।१।८०॥ इति ढे, अकृढ्वम्, अकृड्ढ्वम्, अत्र "नाम्यन्त-" ॥२।३।१५॥ इति सूप, तस्य ड । अकृषि, अकृष्वहि, अकृष्महि ॥ भाक ॥ अकारि, अकृषाताम्, इत्यादि कर्तृवत् । वा ञिटि तु, अकारिषाताम्, अकारिषत; "हान्त-"॥२।१।८१॥ इति वा ढे, अकारि ३ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम् ॥ परो०॥ चकार, चक्रतु, चक्रुः, चकर्थ, चक्रथुः, चक्र, चकार, चकर, चकृव, चकृम । चक्रे, चक्राते, चक्रिरे, चकृषे, चक्राथे, चकृढ्वे, चक्रे, चकृवहे, चकृमहे । 'स्कसृ" ॥४।४।८१॥ इत्यत्र सरसट् कृग्ग्रहणान्नात्र थवादौ इट् ॥ भाक ॥ चक्रे इत्यादि तदेव ॥ आशी॰ ॥ क्रियात् । कृषीष्ट; कृषीढ्वम् ॥ भाक ॥ कृषीष्ट । कारिषीष्ट; कारिषीध्वम्, कारिषीढ्वम् । कर्त्ता २ ॥ भाक ॥ कर्त्ता, कारिता । "हनृत स्यस्य"॥४।४।४९॥ इतीटि, करिष्यति, ते ॥ भाक ॥ करिष्यते, कारिष्यते । अकरिष्यत्, त ॥ भाक ॥ अकरिष्यत, अकारिष्यत॰ ॥ तनादिषु पाठमकृत्वाऽस्यात्र पाठ., "तन्भ्यो वा-" ॥४।३।६८॥ इति विकल्पनिषेधाद् "धुड्ह्रस्व"॥४।३।७०॥ इति सिचूलुगर्थे, शवर्थश्च । तेन करति, करते इत्यादौ शवपि भवति । एव न्या, प्रत्युप, निरा अपा, प्रति प्र, अप, अनु, उपादि पूर्वोऽपि वाच्य ॥ "परानो कृग"॥३।३।१०१॥ इति फलवत्यपि परस्मैपदे, पराकरोति, अनुकरोति । "गन्धन-"॥३।३।७६॥ इत्यात्मनेपदे, उत्कुरुते, द्रोहाभिप्रायेण सदोष प्रतिपादयतीत्यर्थ । अवचक्रे, कुत्सितवान्, निर्भर्त्सितवान्वेत्यर्थ । उपचक्रे, सिषेवे इत्यर्थ । परदारान् प्रचक्रिरे; अभिजग्मुरित्यर्थ. । एधोदकस्योपस्कुरुते, तत्र गुणान्तरमादधातीत्यर्थ । 'अधे प्रसहने ॥३।३।७७॥ अधिकुरुते शत्रुम्, अभिभवतीत्यर्थ ॥ "वे कृग -"॥३।३।८५॥ क्रोष्टा विकुरुते स्वरान् । विकुर्वते सैन्धवा । "तीयशम्ब-"॥७।२।१३५॥ इति कृषौ डाच् कृगा योगे, द्वितीयाकरोति क्षेत्र, द्वितीय वार कृषतीत्यर्थ । एव तृतीयाकरोति क्षेत्रम् । "सङ्ख्यादेर्गुणात्"॥७।२।१३६॥ डाच्, द्विगुण कर्षण करोति क्षेत्रस्य, द्विगुणाकरोति क्षेत्रम् । त्रिगुणाकरोति क्षेत्रम् । "समयाद्यापनायाम्"॥७।२।१३७॥ समयाकरोति । अद्य श्वो वा दास्ये, इति कालक्षेप करोतीत्यर्थ. ॥ "सपत्रनिष्पत्रादतिव्यथने"॥७।२।१३८॥ सपत्राकरोति वृक्ष वायु, पत्रशातने-

नातिव्यथयतीत्यर्थः । एवं निष्पत्राकरोति वृक्षं वायुः । "निष्कुलान्निष्कोषणे"॥७।२।१३९॥ निष्कुलङ्करोति, निष्कुलाकरोति दाडिमम्; निष्कुष्णातीत्यर्थः । एवं निष्कुलाकरोति पशुं चण्डालः॥ "प्रियसुखादानुकूल्ये"॥७।२।१४०॥ प्रियाकरोति गुरुम्, सुखाकरोति गुरुम्, आनुकूल्यकरणादाराधयतीत्यर्थः॥ "दुःखात्प्रातिकूल्ये"॥७।२।१४१॥ दुःखाकरोति शत्रुं, प्रातिकूल्येन पीडयतीत्यर्थः । "शूलात्पाके"॥७।२।१४२॥ शूलाकरोति मांसं, शूले पचतीत्यर्थः । "सत्यादशपथे"॥७।२।१४३॥ सत्याकरोति वणिग्भाण्डम्; स्वयमेव क्रयणाय द्रव्यदानेन निर्णयति। शपथे तु, सत्यकरोति; शपथेन प्रत्याययतीत्यर्थः । "मद्रभद्राद्वपने"॥७।२।१४४॥ मद्राकरोति शिरः । एवं भद्राकरोति; उभयत्र मुण्डयतीत्यर्थः । च्विस्तु भूस्थाने ऽवाचि ॥ सनि, "नामिनोऽनिट्"॥४।३।३३॥ इति कित्त्वे "स्वरहन्-"॥४।१।१०४॥ इति दीर्घे इरि द्विले च, चिकीर्षति, ते । चिकीर्षा। चिकीर्षुः । चिकीः, चिकीर्षौ। शेषं सन्नन्तभूवत् । यङो व्यञ्जनादित्वेन प्राक् तु स्वरे स्वर इत्यधिकारात् "ऋतोरीः"॥४।३।१०९॥ इति रीभावे कृते पश्चाद्विलम्, तेन ऋमत्त्वाभावान्न "ऋमता री"॥४।१।५५॥ चेक्रीयते। क्ये, चेक्रीय्यते। अग्रतो यङन्त त्रैङ्वद्भूवद्वा। अन्तरङ्गानपि विधीन् बहिरङ्गाऽपि लुब्बाधत इति न्यायात् प्राग् यङो लुपि द्विले, चरी रि र् ३ करीति, चरी रि र् ३ कर्त्ति । एवमग्रेऽपि री रि र् त्रयम्। चर्कृत, चर्कर्ति, चर्करीषि, चर्कर्षि, चर्कृथः, चर्कृथ। बहुलवचनान्न ईति, चर्कर्मि, चर्करीमीत्यप्यन्ये। चर्कृवः, चर्कृमः। क्ये, चर्क्रियते, चरिक्रियेते। सप्त०। चर्कृयात्। हौ, चरिकृहि॥ ह्यस्त०॥ अचर्करीत्, अचर्कः, अचर्कृताम्, अचर्करुः, अचर्करीः, अचर्कः ॥ अद्य० ॥ अचरिकारीत्, अचरिकारिष्टाम्, अचरिकारिषुः ॥ भाक ॥ अचर्कारि । ञिटिटोः, अचर्कारिषाताम्, अचर्करिषाताम्०॥ परो०॥ चर्कराचकार, चर्कराबभूव, चर्करामास ॥ भाक ॥ चर्करा ३ चक्रे, बभूवे, आहे ॥ आशीः ॥ चर्क्रियात् ॥ भाक ॥ चर्कारिषीष्ट, चर्करिषीष्ट ॥ श्वस्तनी ॥ चर्करिता ॥ भाक ॥ चर्कारिता, चर्करिता ॥ भवि० ॥ चर्करिष्यति ॥ भाक ॥ चर्कारिष्यते । चर्करिष्यते ॥ क्रिया० । अचर्करिष्यत् ॥ भाक ॥ अचर्कारिष्यत, अचर्करिष्यत । चर्कृत् । चरिकरिष्यन् । चरिक्रियमाणम् । इटि, चरिकरिष्यमाणम् । ञिटि,

चरिकारिष्यमाणम् । चरिकराञ्चकृवान् । च० बभूवान् । च० आसिवान् ॥ भाक ॥ चरिकरा ३ चक्राणम्, बभूवानम्, आसानम्, वा । एवं यङ्लुपि स्तृ, हृ, भृ, धृ, मृ, पृ, प्रभृतय ऋदन्ता सर्वेऽपि ज्ञेया ॥ णौ, कारयति । "हृक्रोर्नवा"॥२।२।८॥ इत्यणिक्कर्तुर्वा अकर्मत्वे, करोति कट चैत्र, कारयति कट चैत्र चैत्रेण वा मैत्र । "मिथ्या कृग-"॥३।३।९३॥ इत्यात्मनेपदे, पद मिथ्या कारयते, अत्र मिथ्येति पदसमानाधिकरण मिथ्याभूत पद करोति, उच्चरति कश्चित्तमन्य. प्रयुङ्क्ते, णिग्, स्वरादिदोषदुष्टमसकृदुच्चारयतीत्यर्थः। कार्यते । अचीकरत् । अकारि । ञिटिटोः, अकारिषाताम्, अकारयिषाताम् । कारयाञ्चकारेत्यादि णिगन्तभूवत् । कर्मकर्त्तरि ञिटि, अकारिषाता कटौ स्वयमेव । कारिष्यते कट स्वयमेव । क्रियते, क्रियमाणो वा कट. स्वयमेव । चक्रे, करिष्यते वा कट स्वयमेव । भावविवक्षाया च, क्रियते कटेन । एषु "एकधातौ-"॥३।४।८६॥ इति ञिट्क्यात्मनेपदानि । अकृत, अकारि कट स्वयमेवेत्यत्र तु, "स्वरदुहो वा"॥३।४।९०॥ इति वा न ञिच् । भूषार्थे, अलमकार्षीत्, कन्या चैत्र । अलमकृत कन्या स्वयमेव । एवमलकुरुते, अलङ्करिष्यते कन्या स्वयमेव । सन्नन्त, अचिकीर्षीत् कट चैत्र. । अचिकीर्षिष्ट, चिकीर्षते कट स्वयमेव । एषु "भूषार्थ-"॥३।४।९३॥ इति न ञिच्ञिट्क्या । ण्यन्त, कारयति कट चैत्रेण मैत्र । कटस्य सुकरत्वेन कर्तृत्वे, कारयते कटः स्वयमेव, अत्र "भूषार्थ-"॥३।४।९३॥ इति न क्य । अचीकरत् कट चैत्रेण मैत्र । अचीकरत कट स्वयमेव, अत्र "णिस्नुश्र्य-"॥३।४।९२॥ इति न ञिच् । णिरिन्वति पृथग् योगकरणेन ञिच् एव निषेधाद् ञिट् भवत्येव । कारिता, कारिषीष्ट कट स्वयमेव । कुर्वन् । कुर्वाण । क्रियमाणम् । करिष्यमाणम् । ञिटि, कारिष्यमाणम् । चकृवान् । चक्राण । कृत्वा । उपकृत्य । "कृगो नवा"॥३।१।१०॥ इति वा गतिसञ्ज्ञाया "तिरसो वा"॥२।३।२॥ इति वा रस्य सत्वे, तिरस्कृत्य, तिर कृत्य । गतित्वाभावे च "गतिक-"॥३।१।४२॥ इति समासाभावान्न यप्, तिर' कृत्वा । कृत , २ वान् । कर्त्ता । कर्तुम् । कर्त्तव्यम् । करणीयम् । कृत्यम् । कार्यम् । "सम्परेः कृग -"॥४।४।९१॥ इति स्सटि, सस्करोति, परिष्करोति । "स्सटि सम "॥१।३।१२॥ इति मस्य सत्वेऽनुस्वारानुनासिकयोश्च

पूर्वस्य, सरिस्क्रियते; सँस्स्क्रियते। कस्यादिरिति व्याख्यानेऽनुस्वारस्य व्यञ्जनत्वाद् "धुटो धुटि-"॥१।३।४८॥ इत्येकस्य सस्य वा लुकि तु, संस्क्रियते। "लुक्" ॥१।३।१३॥ इति मस्य लुकि, सरिक्रियते। एव रूपचतुष्टयं सम्योगे सर्वत्र ज्ञेयम्। परिष्क्रियते। समस्करोत्। "स्तुस्वञ्जश्चाटि- ॥२।३।४९॥ इति वा अटि षत्वम्; पर्यष्करोत्; पर्यस्करोत्। समस्कार्षीत्। पर्यष्कार्षीत्; पर्यस्कार्षीत्। समस्कृतेत्यादि सर्वं प्रागुक्तकृञ्वत्। परोक्षायां तु विशेष; सञ्चस्कार। परिचस्कार। "स्कृच्छृत-"॥४।३।८॥ इति गुणे सञ्चस्करतुः, सञ्चस्करुः, "सृजि दृशि-"॥४।४।७८॥ इति वेटि, सञ्चस्करिथ, सञ्चस्कर्थ०। "स्क्रसृ-"॥४।४।८१॥ इतीटि, सञ्चस्करिव, सञ्चस्करिम। सञ्चस्करे इत्यादि। पर्यस्कार्षीत् कन्यां चैत्रः; पर्यस्कृत। परिष्करिष्यते, परिष्कुरुते कन्या स्वयमेव। अत्र "भूषार्थ-"॥३।४।९३॥ इति ञिक्यनिषेधादात्मने, "उपाद्भूषा-"॥४।४।९२॥ इति स्सटि, कन्यामुपस्करोति, भूषयतीत्यर्थः। तत्र २ न उपस्कृतम्, समुदितमित्यर्थः। एधोदकस्योपस्कुरुते, तत्र प्रतियतत इत्यर्थ.। उपस्कृत भुङ्क्ते, ससक्तं धान्य भुङ्क्त इत्यर्थः। उपस्कृत जल्पति, अधीते वा; सवाक्याध्याहारमित्यर्थ.। सञ्चिस्कीर्षति; ते। परिचिस्कीर्षति, ते। उपचिस्कीर्षति, ते। सञ्चेस्कीयते। परिचेष्कीयते। उपचेस्कीयते। ङे स्सटि च, समचिस्करत्। पर्यचिस्करत्। "सपरेः कृग-"॥४।४।९१॥ इत्यत्र स्सडिति द्विसकारनिर्देशात् सञ्चिस्कीर्षतीत्यादौ समचिस्करदित्यादौ च षो न भवति। परिपूर्वस्य तु परिष्करोतीत्यादौ ङवर्ज "असोङसिवू-"॥२।३।४८॥ इति वचनाद्भवति। परिचस्कारेत्यादौ तु स्सटो व्यवहितत्वान्न षो, द्वित्वेऽपीत्यधिकारस्य निवृत्तत्वात्। सञ्चस्कृवान्। सञ्चस्काण.॥ २६१॥

डुयाचृग्याञ्चायाम्। याचति, ते। अयाचीत्, अयाचिष्ट। ययाच। ययाचे। याचिता। ऋदित्त्वान् ङे न ह्रस्व, अययाचत। याच २ न्, मानः। क्ते, याचित। याचि ३ ता, त्वा, तुम्॥ २६२॥

डुपचींष् पाके। अनिट्। पचति। पचते। "नेर्ङ्गादा-"॥२।३।७९॥ इति सूत्रोक्तधातून् कखादि षान्त च धातु वर्जयित्वा ऽन्यसर्वधातूना सर्वेषु शव् मिच्मन्नादिप्रत्ययेषु परेषु, "अकखाद्य"॥२।३।८०॥ इति नेर्वा णत्वे, प्रणि-

पचति, ते । प्रनिपचति, ते । एवमन्यधातुष्वपि नेर्णत्वं द्रष्टव्यम् । पच्यते । अपाक्षीत्, अपाक्ताम्, अपाक्षुः, अपाक्षीः, अपाक्तम, अपाक्त, अपाक्षम्, अपाक्ष्व, अपाक्ष्म । अपक्त, अपक्षाताम्, अपक्षत, अपक्थाः, अपक्षाथाम । "सो धि" ॥४।३।७२॥ इति वा सिचूलुकि, अपग्ध्वम् । पक्षे "चजः-"॥२।१।८६॥ इति के, "नाम्यन्त"॥२।३।१५॥ इति षे, 'तृतीयस्तृतीय-"॥१।३।४९॥ इति डे, 'तवर्गस्य-" ॥१।३।६०॥ इति ढे, अपग्ड्ढ्वम्, अपक्षि, अपक्ष्वहि, अपक्ष्महि ॥ भाक ॥ अपाचि, अपक्षातामित्यादि ॥ परोक्षा ॥ पपाच, पेचतुः, पेचुः, पेचिथ, पपक्थ, पेचथुः, पेच, पपाच, पपच, पेचिव, पेचिम । पेचे, पेचिषे, पेचिध्वे, पेचिमहे । पच्यात् । पक्षीष्ट । पक्ता २ । पक्ष्यति, ते । अपक्ष्यत्, त । पिपक्ष २ ति, ते । पिपक्षा । क्विपि, पिपक् ॥ यङि, पापच्यते । क्ये, "अत"॥४।३।८२॥ इत्यल्लुकि "योऽशिति"॥४।३।८०॥ इति यूलुकि च, पापच्यते । सप्त० ॥ पापच्येत । क्ये, पापच्येत ॥ पञ्च० ॥ पापच्यताम् । क्ये, पापच्यताम् ॥ ह्य० ॥ अपापच्यत । क्ये, अपापच्यत ॥ अद्य० ॥ प्राग्वद्यलोपे, अपापचिष्ट, अपापचिषाताम् ॥ भाक ॥ यङोऽल्लुक' स्थानित्वान्न वृद्धि, अपापचि ॥ परोक्षा ॥ पापचा ३ ञ्चक्रे, बभूव, आस वा ॥ भाक ॥ पापचा ३ ञ्चक्रे, बभूवे, आहे वा ॥ आशी ॥ पापचिषीष्ट ॥ श्वस्तनी ॥ पापचिता ॥ भवि० ॥ पापचिष्यते ॥ क्रिया० ॥ अपापचिष्यत ॥ आशी प्रभृतिषु भावकर्मणोरपि कर्तृसदृशमेव । पापच्यमान । पापचिष्यमाणः ॥ भाक ॥ पापच्यमानम् । पापचिष्यमाणम् । पापचा ३ चक्राण, बभूवान्, आसिवान् वा ॥ भाक ॥ पापचा ३ ञ्चकाणम्, बभूवानम्, आसान वा । पापचि ५ त्वा, ता, तुम्, त, २ वान् । एवं सर्वे व्यञ्जनान्ता यङि ज्ञातव्या, तत्र इत् उत् ऋत् उपान्त्यानामद्यतन्यादौ यङो यलुकि उपान्त्ये गुणो न कार्यो यङोऽल्लुक स्थानित्वेनाप्राप्ते । जिमू । अजेजिमिष्ट ॥ भाक । अजेजिमि । एवं मुदिः । अमोमु २ दिष्ट, दि । वृपू । अवरीवृ २ पिष्ट, पि, इत्यादिवत् । यङ्लुपि, पाप १२ चीति, क्ति, क्त, चति, चीषि, क्षि, क्थ, क्थ, चीमि, च्मि, च्व, च्म । क्ये, पापच्यते । सप्त० ॥ पापच्यात् । क्ये, पापच्येत । ॥ पञ्च० ॥ पाप १० चीतु, क्तु, क्ताम्, चतु, ग्धि, क्तम्, क्त, चानि, चाव, चाम । क्ये, पापच्यताम् ॥ ह्य० ॥ अपाप ११ चीत्, क्, क्ताम्, चुः, चीः, क्, क्तम्, क्त,

चम्, च्च, च्म । क्ये; अपापच्यत॥अद्य०॥ अपाप ३ चीत्, चिष्टाम, चिपुः । भाक ॥ अपापाचि, अपापचिपाताम् ॥ परोक्षा॥ पापचा ३ ञ्चकार, बभूव, आस वा । भाक ॥ पापचा ३ ञ्चक्रे, बभूवे, आहे वा ॥ आशी. ॥ पापच्यात ॥ भाक ॥ पापचिपीष्ट । श्व० ॥ पापचिता ॥ भाक ॥ पापचिता ॥ भवि० ॥ पापचिष्यति ॥ भाक ॥ पापचिष्यते ॥ क्रिया० ॥ अपापचिष्यत् ॥ भाक ॥ अपापचिष्यत । अन्तोनोलुकि, पापचत्। पापचती । पापचिष्यन् । भाक ॥ पापच्यमानम् । पापचिष्यमाणम् । पापचाञ्च ३ कृवान्, कृवत्, कुषी । पापचा बभू- ३ वान्, वत्, वुषी । पापचामा ३ सिवान्, सिवत्, सुषी । एते त्रयः शब्दास्त्रिपु लिङ्गेपु विद्वच्छब्दवत्सर्वविभक्तिपु स्वयमभ्यूह्या ॥ भाक ॥ पापचा ३ चकाणम्, बभूवानम्, आसान वा । पापचि ५ त्वा, ता, तुम्, त, २ वान् । पाप ३ चितव्यम्, चनीयम्, च्यम् । एव सर्वेऽपि व्यञ्जनान्ता धातवो यङ्लुप्यभिधानीयाः, नवरमद्यतन्यादिपु इत् उत् ऋदुपान्त्याना धातूनामाशीर्यवर्जं सर्वत्रोपान्त्ये गुण एत् ओत् अर् लक्षणो वाच्यः, सचैवम् । जिम् । अजेजेमीत्, अजेजेमिष्टाम्। अजेजेमि, अजेजेमिपाताम्। जेजेमाचकार, आमोऽकित्त्वाद्गुण.। जेजिम्यात्। जेजेमिपीष्ट। जेजेमिष्यति, ते। मुद्। अमोमोदीत्, अमोमोदिष्टाम् । अमोमोदि, अमोमोदिपाताम्। मोमोदाञ्चकार । मोमुद्यात्। मोमोदिपीष्ट । मोमोदिष्यति, ते । वृपू । अवरिव ४ र्पीत्, र्पिष्टाम्, र्पि, र्पिपाताम् । वरिवर्षाञ्चकार वरिवृष्यात् । वरिवर्षिपीष्ट । वरिवर्षिष्यति, ते । तथा इत् उत् ऋदुपान्त्याना क्त्वादिप्रत्ययेपु शतृक्यक्तवर्जेपु गुण. कार्य. । जेजेमि३त्वा, ता, तुम् । जेजेमाञ्चकृवान् । जेजेमाञ्चकाणम् । मोमोदि ३ त्वा, ता, तुम् । मोमोदाञ्चकृवान् । मोमोदाञ्चकाणम् । वरिवर्षि ३ त्वा, ता, तुम् । वरिवर्षाञ्चकृवान् । वरिवर्षाञ्चकाणम् । शत्रादौ तु न गुणः । जेजिमत्। जेजिम्यमानम्। जेजिमित । जेजिमितवान्। मोमुदत्। मोमुद्यमानम्। मोमुदित. । वरिवृषत । वरिवृष्यमाणम्। वरिवृषित । सस्ये तु शतरि गुणः स्यात्, जेजेमिष्यन् इत्यादि। ईत् ऊत् ॠदुपान्त्याना तु न गुण , उपान्त्ये लघोरभावेन गुणाप्राप्ते. । अमेमीलीत् । अदोधूपीत् इत्यादि। एवमन्यत्रापि। शिति तु येपा यो विशेष सम्भवी स स्वस्वस्थाने

वक्ष्यते । णिगि पाचयति, ते । अपीपचत्, त । पाचया २ ञ्चकार, चक्रे । णि-गन्ताण्णिगि, अपीपचत्, त । अथ कर्मकर्त्तरि, अपाच्योदनः स्वयमेव । पच्यते ओदनः स्वयमेव । अपक्त ओदनः स्वयमेव । पक्ष्यते ओदनः स्वयमेव । अत्र "पचिदुहे"॥३।४।८७॥ इति ञिच्क्यात्मनेपदानि । उदुम्बरः फलमपाक्षीद्वायुः । उदुम्बरः फलं पच्यते, पक्ष्यते वा स्वयमेव, अत्र कर्मणा योगे "न कर्मणा-"॥ ३।४।८८॥ इति न ञिच्, क्यात्मनेपदे तु भवत एव । उदुम्बर फलं पचति, पक्ष्यति वा वायुः । उदुम्बरः फलं पच्यते पक्ष्यते वा स्वयमेव । णिगि, अपीपचत् ओदनं चैत्रेण मैत्रः । तस्य सौकर्येण कर्तृत्वे, अपीपचतौदनः स्वयमेव । "णिस्नु-"॥३।४।९२॥ इति न ञिच् । ञिच्निषेधात् ञिट् भवत्येव, पाचिता, पाचिषीष्टौदनः स्वयमेव । पाचयतेऽन्नं स्वयमेव । अत्र "भूषार्थ-"॥३।४।९३॥ इति आत्मने नतु क्य, ञिट् पुनरनेन निषिद्धोऽपि णिस्नु इति पृथग्योगाद्भवत्येव, ञिच एव तत्र निषेधात्, तच्च प्रागेवादर्शि । पचन् । पक्ष्यन् । पचमानः । पक्ष्यमाणः । पेचिवान् । पेचुषी । पेचानम् । पक्त्वा, पक्त्वा, पक्तुम् । "क्षैशुषि-"॥४।२।७८॥ इति तो वः, पक्वः, २ वान् । घ्यणि "क्तेऽनिट्-"॥४।१।१११॥ इति कत्वे, पाक्यम् ॥ २६३ ॥

राजृग्, टुभ्राजि दीप्तौ । राजति, ते । राज्यते । अराजीत्, अराजिष्टाम् । अराजिष्ट, अराजिषाताम्, अराजि २ ध्वम्, ढ्ढम् । अराजि । रराज । "जृभ्रम-"॥ ४।१।२६॥ इति वैत्वे, रेजतुः, रराजतुः, रेजुः, रराजुः, रेजिथ, रराजिथ० । रराजे, रेजे । राज्यात् । राजिषीष्ट । राजिता २ । राजिष्यति, ते । रिराजिषते । राराज्यते । रारा-जीति, राराष्टि । राजयति, ते । ऋदित्त्वात् ङे, अरराजत् । राजन् । राजिष्यन् । राजमानः । राजिष्यमाणः । रराज्वान् । रेजिवान् । रराजानः, रेजानः । विराजितः । राजि ४ ता, तुम्, त्वा, तव्यम् । भ्राज् । भ्राजते । भ्राज्यते । अभ्राजिष्ट । अभ्रा-जि । "जृभ्रम-"॥४।१।२६॥ इति वैत्वे, भ्रेजे, बभ्राजे । भ्राजिषीष्ट । भ्राजिता । भ्राजिष्यते । बिभ्राजिषते । बाभ्राज्यते । बाभ्राजीति, भ्राजेरात्मनेपदिनोऽपि पुनरिहपाठो राजसाहचर्यप्रदर्शनार्थं, तेन "यजसृज-"॥२।१।८७॥ इत्यत्रास्यैव ग्रहणात्षत्वे, बाभ्राष्टि, बाभ्राष्ट, बाभ्राजति, बाभ्रा २ जीषि, क्षि । पूर्वस्य तु

भ्राजेर्बाभ्राक्ति इति स्यात् । यद्येवं फलमेव विकल्प्यता किं पुनः पाठेन । सत्यम् । अस्यात्मनेपदाव्यभिचारोपदर्शनद्वाराऽन्येषां यथादर्शनमात्मनेपदानित्यत्वज्ञापनार्थ. पुनः पाठ', तेन लभते, लभति, सेवते, सेवति, श्रोतारमुपलभति न प्रशंसितारम्; 'स्वाधीने विभवेऽप्यहो नरपतिं सेवन्ति किं मानिन.' इत्यादयः प्रयोगाः साधवः । भ्राजयति । "भ्राजभास-"॥४।२।३६॥ इति डे वा ह्रस्वे, अबिभ्रजत्, अबभ्राजत् । भ्राजि ५ ता, त्वा, तुम्, त. २ वान् ॥२६४॥२६५॥

अथानिटौ द्वौ । भर्जी सेवायाम् । भजति, ते । सविभजति, ते । भज्यते । अभाक्षीत्, अभाक्ताम्, अभक्त, अभक्षाताम्, अभक्षत, अभक्था' । अभाजि । बभाज । "तॄत्रप-"॥४।१।२५॥ इत्येत्वे, भेजतु , भेजु भेजिथ, बभक्थ, भेजथु., भेज, बभाज, बभज, भेजिव, भेजिम । भेजे । भज्यात् । भक्षीष्ट । भक्ता २ । भक्ष्यति, ते । बिभक्षति, ते । बाभज्यते । बाभ २ जीति, क्ति । शेष पचिवत् ॥ २६६ ॥

रञ्जी रागे । "अकद्रुघिनोश्च-"॥४।२।५०॥ इति नलुकि, रजति, ते । क्ये, रज्यते । अराङ्क्षीत्, अराङ्क्ताम्, अराङ्क्षु, अराङ्क्षीः, अराङ्क्षम् । अरङ्क्त, अरङ्क्षाताम् । अरञ्जि । ररञ्ज । "इन्ध्य-"॥४।३।२१॥ इति न कित्त्वे, ररञ्जतु', ररञ्जु, ररञ्जिथ, ररङ्क्थ, ररञ्जिम । ररञ्जे । रज्यात् । रङ्क्षीष्ट । रङ्क्ता, २ । रङ्क्ष्यति, ते । "कुपिरञ्जे -"॥३।४।७४॥ इति कर्मकर्त्तरि शिद्विषये वा परस्मैपदं तद्योगे श्यश्च । रजति वस्त्र रजक', रज्यति, रज्यते वा वस्त्र स्वयमेव । विरज्यति, विरज्यते वा भव्यो भोगेभ्यः स्वयमेव । शितोऽन्यत्र तु, अरञ्जि, रङ्क्षीष्ट, रङ्क्ष्यते वा वस्त्र स्वयमेव । रिरङ्क्षति, ते । रारज्यते । रार ४ ञ्जीति, ङ्क्ति, क्त. जति ॥ ह्यस्त० ॥ अरारञ्जीत् । अरारन् । रारजत् । "णौ मृग-"॥४।२।५१॥ इति नलुकि, "कगेवनू-"॥४।२।२५॥ इति ह्रस्वे, रजयति मृग व्याध. । डे, अरीरजत् । ञिपरे तु वा दीर्घ', अराजि, अरजि । मृगरमणादन्यत्र नस्यालोपे, रञ्जयति नटः सभाम् । रञ्जयति रजको वस्त्रम् । अररञ्जत् । अरञ्जि । क्ते, रञ्जित । रञ्जयित्वा । रजन् । रजमान । रङ्क्ष्यन् । रङ्क्ष्यमाण । कित्त्वान्नलुकि एत्वे च, रेजिवान् । रेजान । "जनशो- ॥४।३।२३॥

वक्ष्यते । णिगि पाचयति, ते । अपीपचत्, त । पाचया २ ञ्चकार, चक्रे । णिगन्ताण्णिगि, अपीपचत्, त । अथ कर्मकर्त्तरि, अपाच्योदनः स्वयमेव । पच्यते ओदन स्वयमेव । अपक्त ओदनः स्वयमेव । पक्ष्यते ओदनः स्वयमेव । अत्र "पचिदुहे"॥३।४।८७॥ इति ञिच्क्यात्मनेपदानि । उदुम्बर फलमपाक्षीद्वायु । उदुम्बर फलं पच्यते, पक्ष्यते वा स्वयमेव, अत्र कर्मणा योगे "न कर्मणा-"॥३।४।८८॥ इति न ञिच्, क्यात्मनेपदे तु भवत एव । उदुम्बर फल पचति, पक्ष्यति वा वायु । उदुम्बर फल पच्यते पक्ष्यते वा स्वयमेव । णिगि, अपीपचत् ओदन चैत्रेण मैत्र । तस्य सौकर्येण कर्तृत्वे, अपीपचतौदनः स्वयमेव । "णिस्नु"॥३।४।९२॥ इति न ञिच् । ञिच्निषेधात् ञिट् भवत्येव, पाचिता, पाचिषीष्टौदन स्वयमेव । पाचयतेऽन्न स्वयमेव । अत्र "भूषार्थ-"॥३।४।९३॥ इति आत्मने नतु क्य, ञिट् पुनरनेन निषिद्धोऽपि णिस्नु इति पृथग्योगाद्भवत्येव, ञिच एव तत्र निषेधात्, तच्च प्रागेवादर्शि । पचन् । पक्ष्यन् । पचमान । पक्ष्यमाणः । पेचिवान् । पेचुषी । पेचानम् । पक्त्वा, पक्त्वा, पक्तुम् । "क्षैशुषि-"॥४।२।७८॥ इति तो व, पक्, २ वान् । घ्यणि "क्तेऽनिट्-"॥४।१।१११॥ इति कत्वे, पाक्यम् ॥ २६३ ॥

राजृग्, टुभ्राजि दीप्तौ । राजति, ते । राज्यते । अराजीत्, अराजिष्टाम् । अराजिष्ट, अराजिषाताम्, अराजि २ ध्वम्, ड्ढ्वम् । अराजि । रराज । "जृभ्रम-"॥४।१।२६॥ इति वैत्वे, रेजतुः, रराजतु, रेजु, रराजुः, रेजिथ, रराजिथ० । रराजे, रेजे । राज्यात् । राजिषीष्ट । राजिता २ । राजिष्यति, ते । रिराजिषते । राराज्यते । राराजीति, राराष्टि । राजयति, ते । ऋदित्त्वान्ङे, अरराजत् । राजन् । राजिष्यन् । राजमान । राजिष्यमाण । रराज्वान् । रेजिवान् । रराजान, रेजानः । विराजित । राजि ४ ता, तुम, त्वा, तव्यम् । भ्राज् । भ्राजते । भ्राज्यते । अभ्राजिष्ट । अभ्राजि । "जृभ्रम-"॥४।१।२६॥ इति वैत्वे, भ्रेजे, बभ्राजे । भ्राजिषीष्ट । भ्राजिता । भ्राजिष्यते । बिभ्राजिषते । बाभ्राज्यते । बाभ्राजीति, भ्राजेरात्मनेपदिनोऽपि पुनरिहपाठो राजसाहचर्यप्रदर्शनार्थं, तेन "यजसृज-"॥२।१।८७॥ इत्यत्रास्यैव ग्रहणात्षत्वे, बाभ्राष्टि, बाभ्राष्ट, बाभ्राजति, बाभ्रा २ जीषि, क्षि । पूर्वस्य तु

भ्राजेर्वाभ्राक्ति इति स्यात्। यद्येवं पलमेव विकल्प्यतां किं पुनः पाठेन। सत्यम्। अस्यात्मनेपदाव्यभिचारोपदर्शनद्वाराऽन्येषां यथादर्शनमात्मनेपदानित्यत्वज्ञापनार्थः पुनः पाठः, तेन लभते, लभति; सेवते, सेवति; श्रोतारमुपलभति न प्रशासितारम्; 'स्वाधीने विभवेऽप्यहो नरपतिं सेवन्ति किं मानिनः' इत्यादयः प्रयोगाः साधवः। भ्राजयति। "भ्राजभास-"॥४।२।३६॥ इति ङे वा ह्रस्वे, अबिभ्रजत्, अबभ्राजत्। भ्राजि ५ ता, त्वा, तुम्, तः २ वान् ॥२६४॥२६५॥

अथानिटौ द्वौ। भजीं सेवायाम्। भजति, ते। संविभजति, ते। भज्यते। अभाक्षीत्, अभाक्ताम्; अभक्त, अभक्षाताम्, अभक्षत, अभक्थाः। अभाजि। बभाज। "तृत्रप-"॥४।१।२५॥ इत्येत्वे, भेजतुः, भेजुः, भेजिथ, बभक्थ, भेजथुः, भेज, बभाज, बभज, भेजिव, भेजिम। भेजे। भज्यात्। भक्षीष्ट। भक्ता २। भक्ष्यति, ते। बिभक्षति, ते। बाभज्यते। बाभ २ जीति, क्ति। शेषं पचिवत् ॥ २६६ ॥

रञ्जीं रागे। "अकट्घिनोश्च-"॥४।२।५०॥ इति नलुकि; रजति, ते। क्ये, रज्यते। अराङ्क्षीत्, अराङ्क्ताम्, अराङ्क्षुः, अराङ्क्षीः, अराङ्क्षम्। अरङ्क्त, अरङ्क्षाताम्। अरञ्जि। ररञ्ज। "इन्ध्य-"॥४।३।२१॥ इति न कित्त्वे, ररञ्जतुः, ररञ्जुः, ररञ्जिथ, ररङ्क्थ, ररञ्जिम। ररञ्जे। रज्यात्। रङ्क्षीष्ट। रङ्क्ता, २। रङ्क्ष्यति, ते। "कुषिरञ्जे-"॥३।४।७४॥ इति कर्मकर्त्तरि शिद्विषये वा परस्मैपदं तद्योगे श्यश्च। रजति वस्त्रं रजकः, रज्यति, रज्यते वा वस्त्रं स्वयमेव। विरज्यति, विरज्यते वा भव्यो भोगेभ्यः स्वयमेव। शितोऽन्यत्र तु, अरञ्जि, रङ्क्षीष्ट, रङ्क्ष्यते वा वस्त्रं स्वयमेव। रिरङ्क्षति, ते। रारज्यते। रार ४ ञ्जीति; ङ्क्ति, क्तः जति ॥ ह्यस्त०॥ अरारञ्जीत्। अरारन्। रारजत्। "णौ मृग-"॥४।२।५१॥ इति नलुकि, "क्गेवनू-"॥४।२।२५॥ इति ह्रस्वे, रजयति मृगं व्याधः। ङे, अरीरजत्। ञिपरे तु वा दीर्घे, अराजि, अरजि। मृगरमणादन्यत्र नस्यालोपे, रञ्जयति नटः सभाम्। रञ्जयति रजको वस्त्रम्। अरञ्जत्। अरञ्जि। क्ते, रञ्जित। रञ्जयित्वा। रजन्। रजमान। रङ्क्ष्यन्। रङ्क्ष्यमाण। कित्त्वान्नलुकि एत्वे च, रेजिवान्। रेजानः। "जनशो-"॥४।३।२३॥

इति वा कित्त्वे, रक्त्वा, रङ्क्त्वा। विरज्य। रक्तः। रङ्क्त्वा। रङ्क्तुम। रङ्क्तव्यम्। रञ्जनीयम्। रङ्ग्यम्॥ २६७॥

बुधृग् बोधने। बोधति, ते। बुध्यते। ऋदिलाद्वाऽङि, अबुधत्। अबोधीत्, अबोधिष्टाम्, अबोधिषु। आत्मनेपदेलङोऽसत्त्वे, अबोधिष्ट, अबोधिषाताम्॥ भाक॥ अबोधि। बुबोध, बुबुधुः, बुबोधिथ। बुबुधे। बुध्यात्। बोधिषीष्ट। बोधिता २। बोधिष्यति, ते। "वौ व्यञ्जनादे"॥४।३।२५॥ इति क्त्वासनो' सेटोर्वा कित्त्वे, बुबुधिषति, ते। बुबोधिषति, ते। बोबुध्यते। बोबोधीति, बोबोद्धि, बोबु २ द्ध, धति, बोबुधीषि, बोभोत्सि। शेष बुधिम्वृवत्। बोधयति। बोध्यते। अबूबुधत्। बोधयां २ चकार, चक्रे वा। बोधित्वा, बुधित्वा। बुधित, २ वान्। बोधि २ ता, तुम्॥ २६८॥

खनूग्, अवदारणे। खनति, ते। "ये नवा-"॥४।२।६२॥ इति वा आत्वे, खायते, खन्यते। अखनीत्, अखानीत्, अखनिष्टाम्, अखानिष्टाम्०। अखनिष्ट, अखनिषाताम्। अखानि। चखान। "गमहन-"॥४।२।४४॥ इत्यल्लुकि, चख्नतुः, चख्नु, चखनिथ, चख्नथु, चख्न, चखान, चखन, चख्निव, चख्निम। चख्ने, चख्नाते। "ये नवा"॥४।२।६२॥ इत्यत्र अकारान्तस्य यस्य ग्रहणात्तालम्, खन्यात्, खायादित्यन्ये। खनिषीष्ट। खनिता २। खनिष्यति, ते। चिखनिषति, ते। प्रतिचिखनिषत्। चाखायते, चङ्खन्यते। लुपि, चङ्खनीति, चङ्खन्ति। "आः खनि-"॥४।२।६०॥ इत्यात्वे, चङ्खात, चङ्खनति। चङ्खनत्। खानयति, ते। अचीखनत्। खनन्। खनिष्यन्। खनमान। खायमानम्, खन्यमानम्। खनिष्यमाणम्। चखन्वान्। चख्नान'। ऊदित्त्वाद्वेटि, खात्वा, 'आः खनि-" ॥४।२।६०॥ इति आत्वम्। खनित्वा। उत्खाय, उत्खन्य। खनि २ ता, तुम्। वेट्त्वान्नेटि, खात., २ वान्। "खेय-"॥५।१।३८॥ इति क्यपि, खेयम्॥२६९॥

दानी अवखण्डने। शानी तेजने, आर्जवे। "शान्दान्-"॥३।४।७॥ इति सनि, "स्वार्थे"॥४।४।६०॥ इति नेटि, दीदासति, ते। निशाने मनि, शीशासति, ते। शेष सन्नन्तभूवत्। इच्छासनि, दीदासिषति, ते। शीशासिषति, ते। अर्थान्तरे तु सनोऽभावेन प्रायो न विभक्तय, प्रत्ययान्तराणि तु भवन्ति॥२७०॥२७१॥

शपीं आक्रोशे, विरुद्धानुध्याने । अनिट् । शपति, ते । अनेकार्थत्वादुपा-लम्भनेऽपि । "शप उपलम्भने" ॥३।३।३५॥ इत्यात्मनेपदे, चैत्राय शपते । "श्लाघह्नु-ङ्स्था-" ॥२।२।६०॥ इति चतुर्थी, चैत्र कञ्चिदर्थं बोधयतीत्यर्थः । अथवा वाचा शपथं कुर्वन् चैत्रं प्रत्याययतीत्यर्थः । अशाप्सीत्, अशाप्ताम्, अशाप्सुः । अशप्त, अशप्साताम् । शशाप, शेपतुः, शेपुः, शेपिथ, शशप्थ, शेपिम । शेपे, शेपाते । शप्यात् । शप्सीष्ट, शप्ता २ । शप्स्यति, ते । शिशप्सति, ते । शाश ३ प्यते, पीति, प्ति । शेष पचिवत् । शापयति । अशीशपत् । शप्त्वा । शप्ता । शप्तुम् । शप्त, २ वान् ॥ २७२ ॥

धावूग् गतिशुद्ध्योः । धावति, ते । धाव्यते । अधावीत्, अधाविष्टाम् । अधाविष्ट, अधाविषाताम् । अधावि । दधाव, दधावतुः । दधावे, दधावाते । धाव्यात् । धाविषीष्ट । धाविता २ । धाविष्यति, ते । दिधाविषति, ते । दाधाव्यते । दाधावीति । "अनुनासिके च" ॥४।१।१०८॥ इति वस्योट्, "ऊटा-" ॥१।२।१३॥ इत्यौत्वे, दाधौ २ ति, तः, दाधावति । धावयति । अदीधवत् । ऊदित्त्वात् क्त्वि वेट्, धौत्वा, धावित्वा । प्रधाव्य । वेट्त्वात् क्तयोर्नेट्, धौत, २ वान् पादौ । कथं धावितः, २ वान्, सत्यपि वेट्त्वे गतौ क्तयोरिट्प्रतिषेधस्यानित्यत्वात् । धावि ३ ता, त्वा, तुम् । धौति ॥ २७३ ॥

लषी कान्तौ, कान्तिरिच्छा । "भ्रासम्लास-" ॥३।४।७३॥ इति वा श्ये, लष्यति, लषति, इच्छतीत्यर्थः । अभिलष्यति, ते, अभिलषति, ते । क्ये, अभिलष्यते । अभ्यलषीत्, अभ्यलाषीत्, अभ्यलषिष्टाम्, अभ्यलाषिष्टाम्० । अभ्यल २ षिष्ट, षिषाताम् । अभ्यलाषि । अभिललाष, अभिलेषतुः । अभिलेषे । अभिलष्यात् । अभिलषि ४ षीष्ट, ता, ष्यति, ष्यते । अभिलिलषिषति, ते । अभिलाल ३ ष्यते, षीति, ष्टि । अभिलाषयति । अभ्यलीलषत् । अभिलषि ५ ता, त्वा, तुम्, त २ वान् । अभिलष्य ॥ २७४ ॥

चषी भक्षणे । चषति, ते । अचाषीत्, अचषीत् । चचाष । चेषे । चषिता । क्ते, चषितम् । शेषं लषीवत् ॥ २७५ ॥

गुहौग् संवरणे । "गोह स्वरे" ॥४।२।४२॥ इत्यूत्वे, गूहति, ते । गुह्यते ।

औदित्वाद्वेटि गुणे सत्यूकारे कृते, अगूहीत्, अगूहि २ ष्टाम्, षु। पक्षे "हशिट-॥३।४।५५॥ इति सकि, अघुक्ष ३ त्, ताम्, न्। अत्र "हो धुट्-"॥२।१।८२॥ इति ढः, "षढो.-"॥२।१।६२॥ इति कः, "गडद-"॥२।१।७७॥ इति घः। "नाम्यन्त ॥२।३।१५॥ इति ष.। अत्र ढस्थानस्य कस्यासत्वात् चतुर्थान्तलक्षणो घो भव ति। "हशिट"॥३।४।५५॥ इति सकि, तथधदेषु परेषु, "दुहदिह"॥४।३।७४ इति वा सको लुकि वेटि च, अघुक्षत। अगूढ। अगूहिष्ट "स्वरेत"॥४।३।७५ इति सकोऽल्लुकि, अघुक्षाताम्, अगूहिषाताम्, अघुक्षन्त। अत्राल्लुक स्थानित्वाद् "अनतोऽन्त- ॥४।२।११४॥ इत्यत् न भवति। अगूहिषत, अघु क्षथा', अगूढाः, अगूहिष्ठाः, अघुक्षाथाम्, अगूहिषाथाम्, अघुक्षध्वम्, अघ्रु ढ्वम्, अगूहि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, अघुक्षि, अगूहिषि, अघुक्षावहि, अगुह्वहि अगूहिष्वहि, अघुक्षामहि, अगूहिष्महि। अगूहि। जुगूह, जुगुहतु.। "गोह-"॥४।२।४२॥ इति गुणनिर्देशान्नात्र ऊत्, जुगुहु, जुगूहिथ। जुगुहे, जुगुहाते गुह्यात्। गूहिषीष्ट। "सिजाशिष"॥४।३।३५॥ इति किस्त्वे, घुक्षीष्ट। गूहिता २ गोढा २। गूहिष्यति, ते। घोक्ष्यति, ते। एवं अव, नि पूर्वोऽपि। "ग्रहगु हश्च-"॥४।४।५९॥ इतीट्निषेधात्, "उपान्त्ये"॥४।३।३४॥ इति सन किस्त्वे जुघुक्षति, ते। जोगुह्यते। जोगुहीति, जोगोढि, जोगूढ, जोगुहति, जोगुहीपि जोघोक्षि ॥ ह्य० ॥ अजोगुहीत्। पदान्ते गो घत्वे, अजोघोट्, ड्, अजोगूढाम्, अजोगुहु, अजोगुही., अजोघोट्, ड्, अजोगूढम्, अजोगूढ, अजोगुहम्, अजोगुह्व, अजोगुह्म। निगूहयति। डे, न्यजूगुहत्। हूस्वाभावमते तु अजुगूहत्। निगूहन्। निगूहमान.। निगुह्यमानम्। "वेटो"॥४।४।६२॥ इति नेटि, गूढ', २ वान्। गूढि'। गूढ्वा, गूहित्वा। गोढा, गूहिता। गोढुम्, गूहितुम्। गूहनीयम्। "कृवृषि-"॥५।१।४२॥ इति वा क्यपि, गुह्यम्। पक्षे घ्यणि, गोह्यम्, गूहनम् ॥ २७६ ॥

भ्लक्षी भक्षणे। अय भक्षीत्यन्ये। भक्षति, ते। अभक्षीत्। अभाक्षिष्ट। बभक्ष। बभक्षे। भक्षि ४ त्वा, ता, तुम्, तम् ॥ २७७॥

इत्युभयपदिन ।

अथ द्युतादय आत्मनेपदिनः ।

द्युति दीप्तौ । द्योतते; विद्योतते । द्युत्यते ॥ अद्य० ॥ "द्युद्भ्योऽद्यतन्याम्"॥३।३।४४॥ इति वाऽऽत्मनेपदे; पक्षे, "लृदिद्द्युता-"३।४।६४॥ इत्यङि, अद्युतत्, अद्युतताम्, अद्युतन्, अद्यु ६ तः, ततम्, तत, तम्, ताव, ताम । अद्योतिष्ट, अद्योतिषाताम्; अद्योतिध्वम् । अद्योतिड्ढ्वम् ॥ भाक ॥ अद्योति । "द्युतेरिः"॥४।१।४१॥ इति पूर्वस्येत्वे; दिद्युते, दिद्युताते, दिद्युतिरे, दिद्युतिषे । द्योतिषीष्ट । द्योतिता । द्योतिष्यते । अद्योतिष्यत । दिद्युतिषते; दिद्योतिषते । देद्युत्यते । देद्युतीति, देद्योत्ति, देद्युत्त, देद्युतति । द्योतयति । अदिद्युतत् । सनि, दिद्योतयिषति । द्योतमानः । द्योतिष्यमाणः । दिद्युतानः । द्योति २ ता, तुम् । द्युतितः २ वान् । "उतिशवर्हा-"॥४।३।२६॥ इति भावारम्भे वा कित्त्वे; द्युतितम्; द्योतितमनेन । प्रद्युतितः २, वान् । प्रद्योतितः २, वान् । एवमन्यत्रापि । "वौ व्यञ्जन-"॥४।३।२५॥ इति क्त्वासनोर्वा कित्त्वे; द्युतित्वा, द्योतित्वा । प्रद्युत्य ॥ २७८ ॥

रुचि अभिप्रीत्या च, चाद्दीप्तौ । अभिप्रीतिरभिलाषः । "रुचिक्लृप्य-"॥२।२।५५॥ इति चतुर्थ्याः; मैत्राय रोचते दधि । रुच्यते । द्युतादित्वादङि, अरुचत् । अरोचिष्ट, अरोचिषाताम्, अरोचि २ ध्वम्, ढ्वम् । अरोचि । रुरुचे, रुरुचाते, रुरुचिरे, रुरुचिषे । रोचिषीष्ट । रोचिता २ । रोचिष्यते । अरोचिष्यत । "वौ व्यञ्जन"॥४।३।२५॥ इति वा कित्; रुरुचिषते, रुरोचिषते । "न गृणा-"॥३।४।१३॥ इति न यङ्, भृशं रोचते । "अणिगि प्राणि-"॥३।३।१०७॥ इति फलवति परस्मै प्राप्तावपि, "परिमुह-"॥३।३।९४॥ इत्यात्मनेपदे, चैत्राय मैत्रं परिरोचयते । अरूरुचत । रोचमानः । रोचिष्यमाणः । रुरुचानः । रुचितः २, वान् । "उतिशव-"॥४।३।२६॥ इति भावारम्भे वा कित्त्वे; रुचितम्, रोचितम् । प्ररुचितः, प्ररोचितः । रोचित्वा, रुचित्वा । रोचि ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ २७९ ॥

शुभि दीप्तौ । शोभते । शुभ्यते । अशुभत् । अशोभिष्ट, अशोभिषाताम् । अशोभि । शुशुभे, शुशुभाते । शोभि ३ षीष्ट, ता, ष्यते । शुशुभिषते, शुशोभिषते । भृशं शोभत इति वाक्यम् । शेषं रुचिवत् ॥ २८० ॥

औदित्वाद्वेटि गुणे सत्यूकारे कृते, अगूहीत्, अगूहि २ ष्टाम्, षु. । पक्षे "हशिट-" ॥३।४।५५॥ इति सकि, अघुक्ष ३ त्, ताम्, न् । अत्र 'हो धुट्-"॥२।१।८२॥ इति ढ, "षढो-"॥२।१।६२॥ इति क, "गडद-"॥२।१।७७॥ इति घ. । "नाम्यन्त" ॥२।३।१५॥ इति ष. । अत्र ढस्थानस्य कस्यासत्वात् चतुर्थान्तलक्षणो घो भवति । "हशिट"॥३।४।५५॥ इति सकि, तथधदेषु परेषु; 'दुहदिह'॥४।३।७४॥ इति वा सको लुकि वेटि च, अघुक्षत । अगूढ । अगूहिष्ट "स्वरेतः"॥४।३।७५॥ इति सकोऽन्लुकि, अघुक्षाताम्, अगूहिषाताम्, अघुक्षन्त । अत्राल्लुकः स्थानित्वाद् "अनतोऽन्त- ॥४।२।११४॥ इत्यत् न भवति । अगूहिषत, अघुक्षथा, अगूढा', अगूहिष्ठा, अघुक्षाथाम्, अगूहिषाथाम्, अघुक्षध्वम्, अघूढ्वम्, अगूहि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, अघुक्षि, अगूहिषि, अघुक्षावहि, अघुक्षहि अगूहिष्वहि, अघुक्षामहि, अगूहिष्महि । अगूहि । जुगूह, जुगुहतु । "गोह-"॥ ४।२।४२॥ इति गुणनिर्देशान्नात्र ऊत्, जुगुहुः, जुगूहिथ । जुगुहे, जुगुहाते । गुह्यात् । गूहिषीष्ट । "सिजाशिष"॥४।३।३५॥ इति किल्वे, घुक्षीष्ट । गूहिता २। गोढा २ । गूहिष्यति, ते । घोक्ष्यति, ते । एव अव, नि पूर्वोऽपि । "ग्रहगुहश्च-"॥४।४।५९॥ इतीट्निषेधात्, "उपान्त्ये"॥४।३।३४॥ इति सन. किल्वे, जुघुक्षति, ते । जोगुह्यते । जोगुहीति, जोगोढि, जोगूढ, जोगुहति, जोगुहीषि, जोघोक्षि ॥ ह्य० ॥ अजोगुहीत् । पदान्ते गो घत्वे, अजोघोट्, ड्, अजोगूढाम्, अजोगुहु, अजोगुही, अजोघोट्, ड्, अजोगूढम्, अजोगूढ, अजोगुहम्, अजोगुह्व, अजोगुह्म । निगूहयति । डे, न्यजूगुहत् । ह्रस्वाभावमते तु, अजुगूहत् । निगूहन् । निगूहमानः । निगुह्यमानम् । "वेटो"॥४।४।६२॥ इति नेटि, गूढ', २ वान् । गूढि' । गूढ्वा, गूहित्वा । गोढा, गूहिता । गोढुम्, गूहितुम् । गूहनीयम् । "कृवृषि-"॥५।१।४२॥ इति वा क्यपि, गुह्यम् । पक्षे घ्यणि, गोह्यम्, गूहनम् ॥ २७६ ॥

भ्लक्षी भक्षणे । अय भक्षीत्यन्ये । भक्षति, ते । अभक्षीत् । अभाक्षिष्ट । बभक्ष । बभक्षे । भक्षि ४ त्वा, ता, तुम्, तम् ॥ २७७ ॥

इत्युभयपदिन ।

अथ द्युतादय आत्मनेपदिनः ।

द्युति दीप्तौ । द्योतते; विद्योतते । द्युत्यते ॥ अद्य० ॥ "द्युद्भ्योऽद्यतन्याम्"॥३।३।४४॥ इति वाऽऽत्मनेपदे; पक्षे, "लृदिद्द्युता-"३।४।६४॥ इत्यङि, अद्युतत्, अद्युतताम्, अद्युतन्, अद्यु ६ तः, ततम्, तत, तम्, ताव, ताम । अद्योतिष्ट, अद्योतिषाताम्; अद्योतिध्वम् । अद्योतिड्ढ्वम् ॥ भाक ॥ अद्योति । "द्युतेरिः"॥४।१।४१॥ इति पूर्वस्येत्वे; दिद्युते, दिद्युताते, दिद्युतिरे, दिद्युतिषे। द्योतिषीष्ट । द्योतिता। द्योतिष्यते। अद्योतिष्यत । दिद्युतिषते; दिद्योतिषते। देद्युत्यते। देद्युतीति, देद्योत्ति, देद्युत्त., देद्युतति । द्योतयति। अदिद्युतत् । सानि, दिद्योतयिषति। द्योतमानः। द्योतिष्यमाणः। दिद्युतान. । द्योति २ ता, तुम् । द्युतित २ वान् । "उतिशवर्हा-"॥४।३।२६॥ इति भावारम्भे वा क्त्त्वे; द्युतितम्; द्योतितमनेन । प्रद्युतितः २, वान् । प्रद्योतित २, वान् । एवमन्यत्रापि । "वौ व्यञ्जन-"॥४।३।२५॥ इति क्त्वासनोर्वा कित्त्वे, द्युतित्वा, द्योतित्वा । प्रद्युत्य ॥ २७८ ॥

रुचि अभिप्रीत्या च; चाद्दीप्तौ । अभिप्रीतिरभिलाप । "रुचिक्लृप्य-"॥२।२।५५॥ इति चतुर्थ्याः; मैत्राय रोचते दधि । रुच्यते । द्युतादित्वादङि, अरुचत् । अरोचिष्ट, अरोचिषाताम्; अरोचि २ ध्वम्, ढ्वम् । अरोचि । रुरुचे, रुरुचाते, रुरुचिरे, रुरुचिषे । रोचिषीष्ट । रोचिता २ । रोचिष्यते। अरोचिष्यत । "वौ व्यञ्जन"॥४।३।२५॥ इति वा कित्, रुरुचिषते, रुरोचिषते। "न गृणा-"॥३।४।१३॥ इति न यङ्; भृश रोचते। "अणिगि प्राणि-"॥३।३।१०७॥ इति फलवति परस्मै प्राप्तावपि, "परिमुह-"॥३।३।९४॥ इत्यात्मनेपदे, चैत्राय मैत्र परिरोचयते । अरूरुचत । रोचमान । रोचिष्यमाण. । रुरुचानः। रुचित २, वान् । "उतिशव-"॥४।३।२६॥ इति भावारम्भे वा क्त्त्वे, रुचितम्, रोचितम् । प्ररुचितः, प्ररोचित. । रोचित्वा, रुचित्वा । रोचि ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ २७९ ॥

शुभि दीप्तौ। शोभते । शुभ्यते । अशुभत् । अशोभिष्ट, अशोभिषाताम् । अशोभि । शुशुभे, शुशुभाते । शोभि ३ षीष्ट, ता, ष्यते । शुशुभिषते, शुशोभिषते । भृश शोभत इति वाक्यम् । शेष रुचिवत् ॥ २८० ॥

क्षुभि सञ्चलने । रूपान्यथात्वे । क्षोभते । अक्षुभत् । अक्षोभिष्ट, अक्षोभिषाताम् । अक्षोभि। चुक्षुभे । क्षोभि ३ षीष्ट, ता, ष्यते । चोक्षुभ्यते । चोक्षुभीति, चोक्षोब्धि। क्षोभयति । अचुक्षुभत्। "क्षुब्ध"॥४।४।७०॥ इति निपातनात् क्षुब्धो मन्थः । क्षुभितोऽन्यः । अयमर्थ । मन्थरयानेकार्थत्वात् मन्थे, मथिते, मथ्यमानक्षोभिते वा । क्षुब्धः समुद्रः, मथित इत्यर्थ, मथ्यमानः सन् क्षोभङ्गमित इति वाऽर्थः। मन्थने।क्षुब्ध वल्लवेन, विलोडन कृतमित्यर्थः । मन्थादन्यत्र तु, क्षुभित समुद्रेण, सञ्चलितमित्यर्थ ।एव क्षुभित मन्थानकेन। क्षुभितः समुद्रो वातेन । शेषं रुचिरिव ॥ २८१ ॥

स्रम्भूङ् विश्वासे । दन्त्यादिः। विसम्भते । द्युताद्यङि, नलुकि च; अस्रभत् । अस्रम्भिष्ट । सस्रम्भे । विस्रम्भिषीष्ट । विस्रम्भिष्यते । विसिस्रम्भिषते । विसास्रम्भ्यते । विसास्र २ म्भीति, ब्धि । विस्रम्भयति । व्यससम्भत् । ऊदित्त्वादिट्, स्रब्ध्वा, स्रम्भित्वा ।"क्त्वा"॥४।३।२९॥ इति सेट्क्त्वा न कित्, तेन नलुक् न स्यात् । वेट्त्वादिटि, विस्रब्ध, २ वान् । विस्रम्भि ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ २८२ ॥

भ्रंशूङ्, स्रंसूङ् अवस्रंसने । आद्यस्तालव्यान्त ,परो दन्त्यादिः । "शिड्हे" ॥१।३।४०॥ इत्यनुस्वार । भ्रंशते। भ्रश्यते। अङि, अभ्रशत् । अभ्रंशिष्ट, अभ्रंशिषाताम्। अभ्रंशि। बभ्रंशे, बभ्रंशाते। "इन्ध्य-"॥४।३।२१॥ इति परोक्षा न कित्। भ्रंशि ३ षीष्ट, ता, ष्यते ॥ अभ्रंशिष्यत । बिभ्रंशिषते । बनीभ्रश्यते । बनी १२ भ्रंशीति, भ्रष्टि, भ्रष्ट , भ्रशति, भ्रंशीषि, भ्रक्षि, भ्रष्ठ , भ्रष्ठ, भ्रशीमि, भ्रश्मि, भ्रश्व , भ्रश्मः । भ्रंशयति । अबभ्रंशत् । भ्रंशमानः । भ्रंशिष्यमाणः । भ्रश्यमानम्। बभ्रंशानः । ऊदित्त्वादिट्, भ्रष्ट्वा, भ्रंशित्वा । प्रभ्रश्य । वेट्त्वात्, भ्रष्ट २, वान् । भ्रंशि २ ता, तुम्। भ्रंशनीयम्। भ्रंश्यम् ॥ स्रंसूङ् । स्रंसते। स्रस्यते । अस्रसत् । अस्रंसिष्ट। अस्रंसि । सस्रंसे । स्रंसि ३ षीष्ट, ता, ष्यते । अस्रंसिष्यत । सिस्रंसिषते । सनीस्रस्यते । सनी ४ स्रंसीति, स्रस्ति, स्रस्त , स्रसति । स्रंसयति । अससस्रत् । स्रस्त्वा, स्रंसित्वा । प्रस्रस्य । स्रस्त , २ वान् स्रंसि २ ता, तुम् ॥ २८३ ॥ २८४ ॥

ध्वंसूङ् गतौ च, चादवस्रंसने। ध्वसते; अवध्वसते; विध्वसते । ध्वस्यते । अङि, अध्वसत् । अध्वंसिष्ट, अध्वसिषाताम् । अध्वंसि । दध्वसे । ध्वंसि ३ षीष्ट, ता, ष्यते । दिध्वसिषते । दनीध्वस्यते । दनी ४ ध्वसीति, ध्वस्ति, ध्वस्तः, ध्वसति । ध्वसयति । अदध्वसत् । ध्वसयाचकार । दध्वसानः । ध्वस्त्वा, ध्वंसित्वा । प्रध्वस्य । ध्वस्तः, २ वान् । ध्वसि २ ता, तुम् । ध्वसनीयम् । ध्वसम् ॥ २८५ ॥

द्युताद्यन्तर्गणो वृतादिः पञ्चकः । वृतूङ् वर्त्तने। स्थितौ वर्त्तते । प्रवर्त्तते । अनु, वि, परि, नि, व्या, परा, आङ्, निर्, पूर्वोऽपि वाच्यः। वृत्यते। प्रावर्त्तत। द्युताद्यङि, अवृतत् । अवर्त्तिष्ट, अवर्त्तिषाताम्; अवर्त्तिष्ठाः; अवर्त्ति २ ध्वम्, ढ्वम् । अवर्त्ति । ववृते, ववृताते । वर्त्तिषीष्ट । वर्त्तिता । "वृद्भ्यः"॥३।३।४५॥ इति स्यसनोर्विषये वाऽऽत्मनेपदम्। आत्मनेपदाभावे च,"न वृद्भ्यः"॥४।४।५५॥ इति नेट्, वर्त्स्यति; वर्त्तिष्यते । अवर्त्स्यत्, अवर्त्तिष्यत । विवृत्सति; विवर्त्तिषते । अविवृत्सीत्, अविवर्त्तिषीष्ट । विवृत्साञ्चकार । ३ । विवर्त्तिषाञ्चक्रे । ३ । विवृत्सिष्यति । विवर्त्तिषिष्यते । स्यसनि वृतादीना श्वस्तन्या च क्लृपेर्विकल्पसद्भावात्परस्मैपदनिमित्तत्वमात्मनेपदनिमित्तत्वं चोभयमप्यस्ति, तेन सन्नन्तानां क्तादावपि उभयपदनिमित्तत्वात् इडभाव इट् चोभयमपि भवति ॥ विवृत्सि ५ तः, त्वा, ता, तुम्, तव्यम् । विवर्त्तिषि ५ त, त्वा, ता, तुम्, तव्यम् । प्रविवृत्स्य । प्रविवर्त्तिष्य । एव स्यन्दादिष्वपि । वरीवृत्यते । लुपि, वरीवृतीति, वरिवृतीति । रागमे बहुलवचनान्न ईत्, तेनात्र वृतीयो र् आगमो नोक्तः। वरीरि र् ३ वर्त्ति । वरी रि र् ३ वृत्तः । वरी रि र् ३ वृतति । वरि ८ वृतीषि, वर्त्सि, वृत्थ, वृत्थ, वर्त्मि, वृतीमि, वृत्वः, वृत्मः । हौ, वरिवृद्धि ॥ ह्य० ॥ अवरि ११ वर्त्, वृतीत्, वृत्ताम्, वृतुः, वृतीः, वर्त्, वृत्तम्, वृत्त, वृतम्, वृत्व, वृत्म । शेष पचिस्थानोक्तम् । वर्त्तयति । "ऋद्दवर्णस्य"॥४।२।३७॥ इति गुणापवादो वा ऋः; अवीवृतत्, अववर्त्तत् । वर्त्तयाञ्चकार । "वृत्तेर्वृत्तम्"॥४।४।६५॥ इति निपातनात्; णौ क्ते, वृत्तस्तर्कः, अभ्यासित इत्यर्थः । ग्रन्थादन्यत्र तु, वर्त्तित कुङ्कुमम् । अन्ये तु ग्रन्थेऽपि वर्त्तितमिति प्रयोगमाद्रियन्ते । वर्त्तमान । वर्त्स्यन्।

वर्तिष्यमाण । वृत्समानम् । वर्तिष्यमाणम् । ववृतान । ऊदित्त्वात्; वृत्त्वा, वर्तित्वा । प्रवृत्य । वेट्त्वात्, वृत्त , २ वान् । वृत्ति । वर्ति २ ता, तुम् ॥२८६॥

स्यन्दौङ् स्रवणे । स्यन्दते । "निरभ्यनोश्च स्यन्दस्याप्राणिनि"॥२।३।५०॥ इति वा षत्वे, निष्यन्दते, निस्स्यन्दते तैलम् । अभिष्यन्दते, अभिस्यन्दते । एवम् अनु, परि, नि, वि, पूर्वस्यापि वा षत्व वाच्यम् । प्राणिनि तु कर्त्तरि, परिस्यन्दते मत्स्य उदके । पर्युदासेन प्राणिन एव केवलस्य निषेधात्प्राण्यप्राणि- द्वयप्रयोगे तु षत्वविकल्प एव, अनुष्यन्देते मत्स्योदके, अनुस्यन्देते वा । स्य- द्यते । अङि, अस्यदत् । पर्यष्यदत्, पर्यस्यदत् । अस्यदिष्ट । औदित्त्वाद्वेट्, अस्यन्त, अस्यन्दि ९ षाताम्, षत, ष्ठा , षाथाम्, ध्वम्, ड्ढ्वम्, षि० । अस्य ९ न्त्साताम्, न्त्सत, न्त्था, न्त्साथाम्, द्ध्वम्, ध्वम्, त्सि० । अस्य- न्दि। सस्यन्दे । स्यन्दिषीष्ट, स्यन्त्सीष्ट । स्यन्दिता, स्यन्ता । "वृद्भ्यः स्यसनो" ॥३।३।४५॥ इति वाऽऽत्मने । आत्मनेपदाभावे "न वृद्भ्य" ॥४।४।५५॥ इति नेट् । आत्मनेपदे चौदित्त्वाद्वेट् । स्यन्त्स्यति; स्यन्दिष्यते, स्यन्त्स्यते। अस्यन्त्स्यत् ; अस्यन्दिष्यत, अस्यन्त्स्यत । सिस्यन्त्सति, ते। सिस्यन्दिषते। सास्यद्यते । सास्य- ४ न्दीति, न्ति, न्त, दति। स्यन्दस्येति शब्निर्देशाद्यङ्लुपि न षत्वम्। अभिसा- स्यन्दीति तैलम् । स्यन्दयति । असस्यन्दत् । सिस्यन्दयिषति । स्यन्दमान । स्यन्त्स्यन्। स्यन्दिष्यमाण । सन्त्स्यमान । सस्यदान । इडभावे "स्कन्दस्यन्द" ॥४।३।३०॥ इति न क्त्वा क्त्त् । इटि तु "क्त्वा"॥४।३।२९॥ इति न कित्, स्यन्त्वा, स्यन्दित्वा । यपि, प्रस्यन्द्य । तादिरेव न किदिति मते तु, प्रस्यद्य । वेट्त्वान्नेट्, स्यन्न , २ वान् । स्यन्दिता, स्यन्ता। स्यन्दितुम्, स्यन्तुम्। स्यन्द- नीयम् । स्यन्द्यम् ॥ २८७ ॥

वृधूङ् वृद्धौ । वर्धते । वृध्यते । अवृधत् । अवर्धिष्ट, अवर्द्धिषाताम् । अवर्द्धि। ववृधे, ववृधाते। वर्धिषीष्ट । वर्धिता । "वृद्भ्य -"॥३।३।४५॥ इति वाऽऽ- त्मनेपदाभावे "न वृद्भ्य"॥४।४।५५॥ इति नेट्, वर्त्स्यति। वर्धिष्यते। अवर्त्स्यत्। अवर्धिष्यत । विवृत्सति । विवर्धिषते । वरीवृध्यते । वरी रि १, ३ वृधीति, वरी रि १,३ वर्द्धि । वरी रि १, ३ वृद्ध , वरीरि १ ३ वृधति।वरि ८ वृधीषि,

वर्त्सि, वृद्ध', वृद्ध, वृधीमि, वर्ध्मि, वृध्व', वृध्मः । ह्यौ वरिवृद्धि । वरिवृधानि ॥ ह्य० ॥ अवरि १२ वर्त, वृधीत्, वृद्धाम्, वृधु, वृधीः, वाः, वर्त, वृद्धम्, वृद्ध, वृधम्, वृध्व, वृध्म । णौ, वर्धयति । अवीवृधत्; अववर्धत् । वर्धमान' । वृध्यमानम् । वर्त्स्यन् । वर्धिष्यमाणः । ववृधानः । ऊदित्त्वात्, वृध्वा, वर्धित्वा । वेट्त्वात्, वृद्ध', २ वान् । वृद्धिः । वर्धिता । वर्धितुम् ॥ २८८ ॥

शृधूङ् शब्दकुत्सायाम् । तालव्यादि' । शब्दकुत्सा पायुशब्दत्वात् । शर्धते । अशृधत् । अशर्धिष्ट । शशृधे । शर्त्स्यति । शर्धिष्यते । शिशृत्सति । शिशर्धिषते । शृध्वा; शर्धित्वा । शृद्ध., २ वान् । सर्वं वृधूङ्वत् ॥ २८९ ॥

कृपौङ् सामर्थ्ये । "ऋर-"॥२।३।९९॥ इति ल्वे, कल्पते; प्रकल्पते; विकल्पते; सङ्कल्पते । लृत्वे, क्लृप्यते । अङि, अक्लृपत् । [illegible] अकल्पि २ ष्ट, षाताम् । औक्लृप्त, अक्लृप्साताम्, अत्र "लिङ्सिचा-" [illegible] इति कित्त्वम् । अकल्पि । चक्लृपे, चक्लृपाते । कल्पिषीष्ट । "लिङ-" [illegible] इति कित्त्वे, क्लृप्सीष्ट । "कृपः श्वस्तन्याम्" [illegible] इति [illegible] ३।३।४५॥ इति च वाऽऽत्मनेपदम् । [illegible] "न वृद्भ्यः" [illegible] इति नेट् । आत्मनेपदेत्वौदित्त्वादिट्, कल्पिता । [illegible], [illegible] । [illegible] । कल्पिष्यते, कल्प्स्यते । अकल्प्स्यत-त । [illegible] । "ऊमन्तं" ॥४।३।३४॥ इत्यनिट् [illegible] ; [illegible] । [illegible] स्वर्णस्यापीति [illegible] ॥४।३।४॥ [illegible] । [illegible] । चलि [illegible] [illegible] कल्पयति । कल्पयते । [illegible] । "ऋदवर्णस्य" ॥४।१।३७॥ इति वा क' । [illegible] । कल्पमान । प्रक्लृप्यमानम्, अत्र लृमध्ये लकारस्य [illegible] [illegible] इति न ण, अलचेत्यधिकारात् । [illegible] । कल्पिता, कल्प्ता । कल्पितुम्, कल्प्तुम् । [illegible] [illegible] २ वान् । कल्पनीयम् । [illegible] [illegible] णौ वर्तितौ, समाप्तावित्यर्थः । [illegible]

[illegible]

अथ ज्वलादिः ।

ज्वल दीप्तौ । ज्वलति । ज्वल्यते । "वदव्रज-"॥४।३।४८॥ इति वृद्धौ, अज्वालीत्; अज्वालिष्टाम् । अज्वालि, अज्वालिषाताम् । जज्वाल, जज्वलतु, जज्वलिथ । जज्वले । ज्वल्यात् । ज्वलिषीष्ट । ज्वलिता २ । ज्वलिष्यति, ते । अज्वलिष्यत्, त । जिज्वलिषति । यवलाना वाऽनुनासिकत्वे, जञ्ज्वल्यँते; जाज्वल्यते । जञ्ज्व २ लीति, ल्ति । जाज्व २ लीति, ल्ति । णौ, घटादित्वात् ह्रस्वे, प्रज्वलयति । "ज्वलह्वल-"॥४।२।३२॥ इत्यनुपसर्गस्य वा ह्रस्वे; ज्वलयति, ज्वालयति । आजिज्वलत् । "ज्वलह्वल-"॥४।२।३२॥ इत्यत्र वा ह्रस्वविधानात्, "घटादेः"॥४।२।२४॥ इत्यनेनैव ञो वा दीर्घे, प्राज्वालि, प्राज्वलि । अज्वालि, अज्वलि । ज्वलन् । ज्वलिष्यन् । ज्वल्यमानम् । ज्वलिष्यमाणम् । जज्वल्वान् । ज्वलि ५ ता, त्वा, तुम्, त, २ वान् । प्रज्वल्य ॥ २९१ ॥

कुच सम्पर्चनकौटिल्यप्रतिष्टम्भविलेखनेषु । सम्पर्चन मिश्रता । प्रतिष्टम्भो रोधनम् । विलेखन कर्षणम् । सङ्कोचति । सङ्कुच्यते । अकोचीत् । अकोचि, अकोचिषाताम् । चुकोच । चुकुचे । कुच्यात् । कोचिषीष्ट । कोचिता । कोचिष्यति । चुकुचिषति, चुकोचिषति । चोकुच्यते । चोकोक्ति । चोकु ३ चीति, क्त, चति । सङ्कोचयति । अचूकुचत् । सङ्कोचन् । सङ्कुच्यमानम् । सङ्कुचित, २ वान् । कुचित्वा, कोचित्वा । सङ्कुच्य । कोचि २ ता, तुम् ॥२९२॥

पत्लृ, पथे गतौ । पतति । "नेर्ङ्मादा-"॥२।३।७९॥ इति णत्वे, प्रणिपतति । प्र, उद्, आ, नि, अनु पूर्वोऽपि वाच्य. । पत्यते । प्रण्यपतत् । अटो धात्वादित्वान्न व्यवधानम् । लृदित्त्वादङि, "श्वयत्स-"॥४।३।१०३ ॥ इति पप्तादेशे, अपप्त ३ त्, ताम्, न् । अपाति, अपतिषाताम् । पपात, पेततुः, पेतु, पेतिथ, पेतथु । पेते, पेताते, पेतिरे, पेतिषे । पत्यात् । पतिषीष्ट । पतिता २ । पतिष्यति, ते । अपतिष्यत्, त । "इवृध"॥४।४।४७॥ इति वेटि, पिपतिषति । पक्षे "रभलभ" ॥४।१।२१॥ इति इ, पित्सति । "वञ्च-"॥४।१।५०॥ इति नी, पनीपत्यते । पनीप ४ तीति, त्ति, त्त, तति । अप० ॥ लृदनुबन्धात्प्राप्तस्य अङो, यङ्लुप्यप्राप्ते,

अपनीपतीत्। पातयति । अपीपतत् । णिगन्ताण्णिगि, पातयत्याम्र चैत्रेण। पतन्। पतिष्यन् । पत्यमानम् । पतिष्यमाणम् । पेतिवान् । पेतानम्। पति ३ ता, त्वा, तुम्। उत्पत्य, "श्र्वेटोऽपतः"॥४।४।६२॥ इति पतो वर्जनात् इट्, पतितः,२ वान्। पथे धातुस्त्यक्त॰ ॥ २९३ ॥

मथे विलोडने । मथति । मथ्यते। एदित्त्वात् "नश्वि-"॥४।३।४९॥ इति न वृद्धिः, अमथीत्, अमथिष्टाम्। अमाथि, अमाथिषाताम्। ममाथ, मेथतुः, मेथुः, मेथिथ । मेथे । मथ्यात् । मथि ३ षीष्ट, ता, ष्यति । मिमथिषति । मामथ्यते । माम ३ थीति, त्ति, त्त, इत्यादि सर्व पचिवत् । यतोऽद्यतन्या एदिता यङ्-लुपि, " नाश्वि- "॥४।३।४९॥ इति न वृद्धिप्रतिषेधः, अमामाथीत्, अमामथीत्, इति स्यात् । प्रमाथयति । प्रामीमथत् । मथन् । मथिष्यन् । मथ्यमानम् । मथिष्यमाणम् । मेथिवान् । मेथानम् । मथि ५ ता, त्वा, तुम्, तः, २ वान् ॥ २९४ ॥

अथानिटौ द्वौ॥ षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु। विशरणं शटनम्। अवसादोऽनुत्साहः । "श्रौति-"॥४।२।१०८॥ इति सीदः, सीदति, प्रसीदति, उत्सीदति। "सदोऽप्रते -"॥२।३।४४॥ इति द्वित्वेऽपि अट्यपि षत्वे, निषीदति; विषीदति । प्रतेस्तु न षः, प्रतिसीदति । क्ये, सद्यते । न्यषीदत्; व्यषीदत् । लृदित्त्वादङि, आसद ३ त्, ताम्, न् । आसादि, आसत्साताम्। ससाद । परोक्षाया त्वादेरेव षः; निषसाद; विषसाद। आससाद, सेदतुः, सेदुः, सेदिथ, ससत्थ । सेदे, सेदाते, सेदिरे, सेदिषे। सद्यात् । निषत्सीष्ट। निषत्ता २। विषत्स्यति, ते। "नाम्यन्तस्था-"॥२।३।१५॥ इति षे, सिषत्सति, निषिषत्सति, विषिषत्सति; प्रतिसिषत्सति, उपविविक्षतीत्यर्थ.। "गृलुप-"॥३।४।१२॥ इति गर्ह्यार्थे यङि, सासद्यते; निषाषद्यते। सादयति; निषादयति। असीषदत्; न्यषीषदत्; व्यषीषदत्; प्रत्यसीषदत्, अत्राद्यस्य सस्य न षत्वम, द्वितीयस्य तु "नाम्यन्तस्था-"॥२।३।१५॥ इति षत्वम्। विषीदन् । विषीदन्ती। विषत्स्यन्। विषद्यमानम्। विषत्स्यमानम् । निषेदिवान्; आसेदिवान्; अस्य बहुलाधिकारात्कानो न स्यात् । सन्न॰, २ वान्। निषण्ण, २ वान् । सत्त्वा।निषद्य । सत्ता । सत्तुम् । आसत्तव्यम् । पद्लृत अवसा-

दने इत्यस्य तु शतरि अय विशेषः, सीदती, सीदन्ती स्त्री कुले वा । शेषं तुल्यम् ॥ २९५ ॥

शद्लृ शातने । तनूकरणे । "शदे शिति"॥३।३।४१॥ इत्यात्मनेपदे, "श्रौति-"॥४।२।१०८॥ इति शीयः, शीयते, शीयेते । क्ये, शद्यते । शीयेत । शीयताम् । अशीयत । शितोऽन्यत्र परस्मैपदे, लृदित्त्वादङि, अशदत् । अशादि, अशत्साताम् । शशाद, शेदतुः । शेदे । शद्यात् । शत्सीष्ट । शत्ता २। शत्स्यति, ते । शिशत्सति । "शदे शिति"॥३।३।४१॥ इत्यात्मनेपदं शिन्निमित्तं, नतु धातुनिमित्तम्, तेनात्र "प्राग्वत्"॥३।३।७४॥ इत्यात्मनेपदं न भवति । एवं मुमूर्षतीत्यादावपि ज्ञेयम् । शाशद्यते । णौ "शदिरगतौ शात्"॥४।२।२३॥ पुष्पाणि शातयति । गतौ तु गा शादयति । शीयमानः । शद्यमानम् । शन्नः । शत्त्वा । शत्ता ॥ २९६ ॥

बुध अवगमने । ज्ञापने । प्रतिबोधति । बुध्यते । अबोधीत्, अबोधिष्टाम्, अबोधिषुः । अबोधि, अबोधिषाताम् । बुबोध, बुबुधतुः । बोधिता २ । अनुस्वारेदयमित्येके तन्मते, अभौत्सीत् । बोद्धा । बुबुधिषति, बुबोधिषति । बोबुध्यते । लुपि, बुधिंचूवत् । णौ "गतिबोध-"॥२।२।५॥ इत्यणिक्कर्तुः कर्मत्वे, बोधयति शिष्यं धर्मम् । बुधित्वा, बोधित्वा ॥ २९७ ॥

टुवमू उद्गरणे । भुक्तस्योर्द्ध्वगतौ । वमति, उद्वमति । वमेत । वमतु । अवमत् । वम्यते । "नश्वि-"॥४।३।४९॥ इति न वृद्धिः, अवमीत्, अव २ मिष्टाम्, षुः । "मोऽकमि"॥४।३।५५॥ इति अनिषेधाद्वृद्धिः, अवामि, अवमिषाताम् । ववाम, "न शस"॥४।१।३०॥ इत्यप्राप्तावपि, "जृभ्रम-"॥४।१।२६॥ इति वा ए, वेमतुः ववमतुः, वेमुः, ववमुः, वेमिथ, ववमिथ । वेमे, ववमे । वम्यात् । वमिषीष्ट । वमिता २ । वमिष्यति, ते । अवमिष्यत्, त । विवमिषति । "तौ मुमो-"॥१।३।१४॥ इति स्वोऽनुनासिकः, वंवॅम्यते । अनुस्वारेतु, वंवम्यते । वंवमीति, वंवन्ति, वंवान्तः, वंवमति, वंवमीषि, वंवसि, वंवान्थः, वंवान्थ, वंव ४ मीमि, न्मि, न्वः, न्मः, "मो नो-"॥२।१।६७॥ इति नः ॥ अद्य० ॥ "नश्वि-"॥४।३।४९॥ इति यङ्लुप्यपि वृद्धिनिषेधात्, अवंवमीत् । णौ,

"अमोऽकमि"॥४।२।२६॥ इति ह्रस्वे, उद्वमयति । उदवीवमत् । ञिणम्परे तु वा दीर्घः, उदवामि, उदवमि । अवामि, अवमि । वामं २, वमं २ । "ज्वलह्वल-"॥४।२।३२॥ इत्यनुपसर्गस्य वा ह्रस्वे; वमयति, वामयति । अवीवमत्; "ज्वलह्वल-"॥४।२।३२॥ इत्यनेन वा ह्रस्व एव विधीयते, न पुनर्ञिणम्परे वा दीर्घः, अतः स प्रागुदाहारि। वमन् । वमिष्यन्। वम्यमानम्। वमिष्यमाणम् । ववन्वान् । वेमिवान् । वेमानम् । ववमानम् । वमि २ ता, तुम् । ऊदित्त्वात् क्त्वि वेट्, वान्त्वा, वमित्वा । वेट्त्वादप्राप्तौ, "श्वसजप-"॥४।४।७५॥ इति वेटि, वान्त, २ वान्; वमित, २ वान् ॥ २९८ ॥

भ्रमू चलने । भ्रमति । "भ्रासम्लास-"॥३।४।७३॥ इति वा श्ये, भ्रम्यति । क्ये, भ्रम्यते । "न श्वि"॥४।३।४९॥ इति न वृद्धिः, अभ्रमीत्, अभ्रमिष्टाम् । "मोऽकमि-"॥४।३।५५॥ इति न वृद्धिः; अभ्रमि, अभ्रमिषाताम् । बभ्राम । शेष सर्वं भ्रमूच्चल् । शतरि तु; भ्रमन्, भ्रम्यन् ॥ २९९ ॥

क्षर सञ्चलने । सकर्माऽकर्मा चायम् । क्षरति गौः, पयो मुञ्चतीत्यर्थः । क्षरति जलं, स्रवतीत्यर्थः । क्षर्यते । "वद-"॥४।३।४८॥ इति वृद्धौ, अक्षारीत्, अक्षारिष्टाम् । अक्षारि, अक्षरिषाताम् । चक्षार, चक्षरिम। चक्षरे । क्षर्यात्। क्षरिषीष्ट । क्षरिता २ । क्षरिष्यति, ते । चिक्षरिषति । चाक्षर्यते । क्षारयति । अचिक्षरत् । क्षरि ५ ता, त्वा, तुम्, त. २, वान् ॥ ३०० ॥

चल कम्पने। चलति। चल्यते । "वदव्रज-"॥४।३।४८॥ इति वृद्धौ; अचालीत्, अचालिष्टाम्। अचालि, अचलिषाताम्। चचाल, चेलतु, चेलिम। चेले। चल्यात्। चलिषीष्ट। चलिता २ । चलिष्यति, ते । चिचलिषति । यलवाना वाऽनुनासिकत्वे मुरन्तोऽपि वा, चञ्चल्यते, चाचल्यते । कम्पने घटादित्वाण् णौ ह्रस्वे, "चल्याहार-"॥३।३।१०८॥ इति फलवत्यपि परस्मैपदे च, चलयति शाखाम्। अन्यत्र, चालयति सूत्र सार्थं वा । चल्यते, चाल्यते । अचीचलत् । चलन् । चलिष्यन्। चेलिवान् । चेलानम् । चलि ५ ता, त्वा, तुम्, त., २ वान् ॥३०१॥

शल गतौ । तालव्यादिः । शलति, उच्छलति । उच्छल्यते । "वदव्रज-"॥४।३।४८॥ इति वृद्धौ, उदशालीत् । शशाल, शेलतुः । शलिता । शलिष्यति ।

उच्छिशलिषति । उच्छालयति । उदशीशलत् । शलन् । उच्छलि ३ तः, तुम्, त्वा । उच्छल्य । शलि चलने च, चात्संवरणे । शलते ॥ ३०२ ॥

क्रुश आह्वानरोदनयोः । अनिट् । आक्रोशति । आक्रुश्यते । "हशिट-"॥ ३।४।५५॥ इति सकि, अक्रुक्ष २ त्, ताम्, न् । अक्रोशि । "स्वरेऽतः" ॥ ४।३।७५॥ इति सकोऽल्लुकि; अक्रुक्षाताम्, अक्रु ७ क्षन्त०, क्षध्वम्०; क्षामहि । चुक्रोश, चुक्रुशतुः, चुक्रोशिथ; चुक्रुशिम । चुक्रुशे । क्रुश्यात् । क्रुक्षीष्ट । क्रोष्टा २ । क्रोक्ष्यति, ते । चुक्रुक्षति । चोक्रुश्यते । चोक्रुशीति, चोक्रोष्टि, चोक्रुष्ट, चोक्रुशति । हौ, चोक्रुड्ढि ॥ घ० ॥ अचोक्रोट्, ड्, अचोक्रु ३ शीत्, ष्टाम्, शुः, अचोक्रोट्, ड्, अचोक्रु ६ शीः, ष्टम्, ष्ट, शम्, श्व, श्म । आक्रोशयति । आचुक्रुशत् । आक्रोशन् । क्रुश्यमानम्, क्रोक्ष्यमाणम् । आक्रुष्टः, २ वान् । क्रुष्टि । क्रुष्ट्वा । आक्रुश्य । आक्रो २ ष्टा, ष्टुम् ॥ ३०३ ॥

कस गतौ । विकसति । कस्यते । अकासीत्, अकसीत्, अकासिष्टाम्, अकसिष्टाम् । अकासि, अकसिषाताम् । चकास, चकसतुः । चकसे । कस्यात् । कसिषीष्ट । कसिता २ । विचिकसिषति । "वञ्च-"॥४।१।५०॥ इति नीः, चनीकस्यते । चनीकसीति । णौ, निष्कासयति । निरचीकसत् । कसि ५ ता, त्वा, तुम्, त, २ वान् । विकस्य ॥ ३०४ ॥

अथ द्वावनिटौ । रुह जन्मनि । बीजजन्मनीत्यन्ये । रोहति । अकर्मका अप्युपसर्गसम्बन्धात्सकर्मका भवन्ति । *वृक्षमारोहति । स, प्र, अधि, अव, अभि* पूर्वोऽप्येवम् । क्ये, रुह्यते । साकि, अरुक्ष २ त्, ताम् । अरोहि, अरुक्षाताम्, अरुक्षन्त । रुरोह, रुरुहतुः, रुरोहिथ, रुरुहिम । रुरुहे । रुह्यात् । रुक्षीष्ट । रोढा २ । रोक्ष्यति, ते । अरोक्ष्यत्, त । रुरुक्षति । रोरुह्यते । रोरोढि, रोरुहीति, रोरूढ, रोरुहति, रोरोक्षि, रोरुहीषि, रोरूढः, रोरूढ, रोरुहीमि, रोरोह्मि, रोरु २ ह्व, ह्म ॥ ह्यस्त० ॥ अरोरुहीत्, अरोरोट्, ड्, अरोरूढाम्, अरोरुहु, अरोरुही, अरोरोट्, ड् । रोहयति, ते, रोपयति, ते वा वृक्षान् । आरोहयति, ते, आरोपयति, ते वा शकटे भारम् । "रुह प"॥४।२।१४॥ इति वा पः । अरूरुहत्, त, अरूरुपत्, त । कर्मकर्त्तरि, "अणिक्कर्म-"॥३।३।८८॥ इत्यात्मनेपदे, आरोहयते । ङे,

आरुरुहत । इटि, आरोहयिष्यते; ञिटि, आरोहिष्यते वा हस्ती स्वयमेव; एषु ण्यन्तात् "णिस्तु" ॥३।४।९२॥ इति ञिचो "भूषार्थ-"॥३।४।९३॥ इति क्यस्य च निषेधात् ञिट् आत्मने च भवतः; आरोहन्। आरोक्ष्यन्। रुह्यमाणम्। रोक्ष्यमाणम् । रुरुह्वान्। रुरुहाणम्। रूढः, २ वान् । रूढि । रूढ्वा। आरुह्य । रोढा। रोढुम् । रोढव्यम् । रोहणीयम् ॥ ३०५ ॥

रमिं क्रीडायाम् । रमते। "व्याङ्परे रमः"॥३।३।१०५॥ इति परस्मैपदे, विरमति, आरमति, परिरमति। "वोपात्"॥३।३।१०६॥ उपरमति, उपरमते वा सन्तापः। मैत्र उपरमति, ते वा। अन्तर्भूतण्यर्थोऽय सकर्मकः। रम्यते । "यमिरमि-"॥४।४।८६॥ इतीटि सेऽन्ते च, व्यर ९ सीत्, सिष्टाम्, सिषुः, सीः, सिष्टम्, सिष्ट, सिषम्, सिष्व, सिष्म। अरंस्त, अरसाताम्, अरसत; अरद्ध्वम्, अरध्वम् । "मोऽकमि-" ॥४।३।५५॥ इति अनिषेधात् वृद्धिः, अरामि, अरसाताम् । विरराम, विरेमतुः, विरेमु , विरेमिथ, विररन्थ, विरेमिव । रेमे, रेमाते, रेमिरे, रेमिषे । विरम्यात् । रंसीष्ट । विरन्ता, रन्ता। विरस्यति; रंस्यते । व्यरस्यत्, अरस्यत । विरिरंसति; रिरंसते। रंरम्यते । रंर २ मीति, न्ति । "यमिरमि-"॥४।२।५५॥ इति म्लुकि, ररतः, रंरमति, ररसि, रर ७ मीषि, थः, थ, मीमि, न्मि, न्वः, न्मः । हौ, ररहि ॥ अद्य० ॥ अररसीत् । रमयति । अरीरमत् । अरमि, अरामि, अरमयिषाताम् । सनि, रिरमयिषति । विरमन्। विरस्यन्। रममाणः । रस्यमानः । रम्यमाणम्। रंस्यमानम् । रेमाणः। रतः, २ वान् । विरतिः । रत्वा; एषु "यमि-"॥४।२।५५॥ इति म्लुक् । ऊदिद्‌यमित्येके; तन्मते, रत्वा, रमित्वा । "वामः"॥४।२।५७॥ इति वाम्लुकि; विरत्य, विरम्य । रन्ता। रन्तुम्। रन्तव्यम् ॥३०६॥

षहि मर्षणे। क्षमायाम्।सहते; उत्सहते, संसहते। सहेत। सहताम्। असहत। सह्यते। असहिष्ट, असहिषाताम् । ध्वमि, "हान्त-"॥२।१।८१॥ इति वा ढे; असहि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम् । असाहि। सेहे, सेहाते, सेहिरे, सेहिषे। सहिषीष्ट।सोढा । सहिष्यते।असहिष्यत। "असोङ-"॥२।३।४८॥ इति षत्वे, परिषहते; विषहते, निषहते । "स्तुस्वञ्जश्चाटि नवा"॥२।३।४९॥ पर्यषहत, पर्यसहत; व्यषहत, व्यसहत । न्यषहिष्ट, न्यसहिष्ट । परोक्षापि असहिष्टेत्यर्थे । सनि षत्वा-

पक्षे, "णिस्तोरेव-"॥२।३।३७॥ इति नियमात्षत्वाभावे, सिसहिषते। सासह्यते। सासहीति। "सहिवहे-"॥१।३।४३॥ इति ढ्लुक्, ओच्; सासो २ ढिः, ढः, सासहति, सासहीषि, सासक्षि, सासो २ ढः, ढ, सास ४ हीमि, ह्मि, ह्वः, ह्मः ॥ अद्य० ॥ "न श्वि-"॥४।३।४९॥ इति न वृद्धिः; असासहीत्। साहयति। "नाम्यन्तस्था-"॥२।३।१५॥ इति षत्वे, असीषहत्, पर्यसीषहत्। मा विषीसहः; अत्र "असोङ-"॥२।३।४८॥ इति वर्जनात्पूर्वस्य न षः; उत्तरस्य तु, "नाम्यन्त- ॥२।३।१५॥ इति स्यादेव। "णिस्तोरेव"॥२।३।३७॥ इत्यत्र ण्यन्तस्यापि सहेः वर्जनान्न षत्वम्; उत्सिसाहयिषति। सहमानः। सह्यमानम्। सेहानः। "दास्वत्साह्वद्-"॥४।१।१५॥ इति निपातनात्परस्मैपदे क्वसौ, साह्वान्, साह्वांसौ। "सहलुभ"॥४।४।४६॥ इटि तादावशिति वेटि; सोढा, सहिता। सोढ्वा, सहित्वा। सोढुम्, सहितुम्। वेट्त्वात्, सोढः, २ वान्। "असोङ-"॥२।३।४८॥ इति सो वर्जनात्षत्वाभावे, परिसोढ; निसोढ। सोढव्यम्, सहितव्यम्। परिसोढव्य; निसोढव्यः, विसोढव्य। सह्यम् ॥ ३०७ ॥

इति ज्वलादिः।

अथ यजादयो नव श्वि,वदवर्जा अनिटश्च।

यजीं देवपूजासङ्गतिकरणदानेषु। यजति, ते। यजेत्, त। यजतु, ताम्। अयजत, त। "यजादिवचे-"॥४।१।७९॥ इति य्वृति, इज्यते। अयाक्षीत, अयाष्टाम्, अयाक्षुः, अया ६ क्षीः, ष्टम, ष्ट, क्षम्, क्ष्व, क्ष्म। अयष्ट, अय ९ क्षाताम्, क्षत, ष्ठा, क्षाथाम्, ड्ढ्वम्, ग्ड्ढ्वम्, क्षि, क्ष्वहि, क्ष्महि। अयाजि, अयक्षाताम्०। "यजादिवश्-"॥४।१।७२॥ इति द्वित्वे कृते पूर्वस्य य्वृति, इयाज, "यजादिवचे-"॥४।१।७९॥ इति य्वृति, पश्चात् द्वित्वे समानदीर्घत्वे च, ईजतु, ईजुः, इयजिथ, इयष्ठ, ईजथुः, ईज, इयाज, इयज, ईजिव, ईजिम। ईजे, ईजाते, ईजिरे, ईजिषे, ईयाथे, ईजिध्वे, ईजे, ईजि २ वहे, महे। इज्यात्। यक्षीष्ट। यष्टा २। यक्ष्यति, ते। अयक्ष्यत्, त। यियक्षति, ते। यायज्यते। याय १२ जीति,

टि, टः, जति, जीपि, क्षि, ठ', ठ, जीमि, ज्मि, ज्व', ज्मः । याजयति । अयी-यजत् । यजन् । यजमानः । यक्ष्यन् । यक्ष्यमाणः । इज्यमानम् । ईजिवान् । ईजानः । यष्टा । यष्टुम् । इष्टः, २ वान् । इष्ट्वा । यष्टव्यम् । यज्यम् । "त्यज्यज-"॥४।१।११८॥ इति गत्वाभावे, याज्यम् ॥ ३०८ ॥

वेंग् तन्तुसन्ताने । वयति, ते । वयेत्, त । वयतु, ताम् । अवयत्, त । वये, य्वृति "दीर्घश्च्वि-"॥४।३।१०८॥ इति दीर्घे, ऊयते । "यमिरमि-॥४।४।८६॥ इति सेडन्ते, अवासीत्, अवा ८ सिष्टाम्, सिषुः, सीः सिष्टम्, सिष्ट, सिषम्, सिष्व, सिष्म । अवा १० स्त, साताम्, सत, स्थाः, साथाम्, ध्वम्, द्ध्वम्, सि, स्वहि, स्महि ॥ भाक ॥ अवायि, अवासाताम्; अवायिषातामित्यादि । "वेर्वय्"॥४।४।१९॥ इति वा वय् । पक्षे वे इति धातुरेव । वय् इत्यस्य, विति परोक्षायां; "यजादिवश्-"॥४।१।७२॥ इति पूर्वस्य य्वृति, उवाय । "न वयोय्"॥४।१।७३॥ इति य निषिध्य, "यजादिवचेः-"॥ ४ । १ । ७९ ॥ इति वस्य य्वृति, ततो द्वित्वे; ऊयतुः, ऊयुः । थवीव वयादेशस्य तृच्यभावात्; "सृजि-"॥४।४।७८॥॥ इत्यप्राप्तेः; "स्कस्-"॥४।४।८१॥ इति नित्यमिटि, उवयिथ, ऊयथुः, ऊय, उवाय, उवय, ऊयिव, ऊयिम । ऊये, ऊयाते, ऊयिढ्वे, ध्वे । वे इत्यस्य तु, "वेरय"॥४।१।७४॥ इति न य्वृत् । ववौ, ववतुः ववुः, "सृजि-दृशि-"॥४।४।७८॥ इति वा नेटि, वविथ, ववाथ, ववथुः, वव, ववौ, वविव, वविम । ववे, ववाते, वविरे, वविषे । वे इत्यस्यैव च, "अविति वा"॥४।१।७५॥ इति वा य्वृति द्वित्वे, "वार्णात्प्राकृतं बलीयः" इति पूर्वमुवादेशे, समानदीर्घे च, ऊवतुः; अत्र "य्वृत्सकृत्"॥४।१।१०२॥ इति न्यायात्पश्चाद्वकारस्य न य्वृत्, ऊवुः, ऊवथुः, ऊव, ऊविव, ऊविम । ऊवे, ऊवाते इत्यादि । ऊयात् । वासीष्ट, वायिषीष्ट । वाता २; वायिता । वास्यति, ते, वायिष्यते । अवास्यत्, त; अवायिष्यत । विवासति । वावायते । वावेति, वावाति, वावीतः, वावति । णौ, "पाशाच्छा-"॥४।२।२०॥ इति ये, वाययति । अवीवयत् । वाययिष्यति । वयन् । वयमानः । वास्यन् । वास्यमानः । ऊयमानम् । ऊयिवान् । वविवान् । ऊविवान् । ऊयानः । ववानः । ऊवानः । ऊतः, २ वान् । "दीर्घमवो-"॥

४।१।१०३॥ इत्यत्र त्रा वर्जनान्न दीर्घः, उत्ता। 'ज्यश्च यपि"॥४।१।७६॥ न य्वृत्; प्रवाय; उपवाय । वाता । वातुम् । वेयम् ॥ ३०९ ॥

व्येंग् संवरणे । आच्छादने । सव्ययति, ते । "यजादिवचे:-"॥४।१।७९॥ इति य्वृति, दीर्घे च, सवीयते । समव्यासीत्, समव्यासिष्टाम्, समव्यासिषु: । समव्यास्त, समव्यासाताम् । समव्यायि, समव्यासाताम्, समव्यायिपाताम्• । "व्यस्थव्णवि"॥४।२।३॥ इति न आः । द्विले, "यजादिवश्च-"॥४।१।७२॥ इति य्वृद्बाधनार्थं "जाव्ये-"॥४।१।७१॥ इति इकारस्यापि इ', अयादेशे उपान्त्यवृद्धिश्च, संविव्याय । "यजादिवचेः-"॥४।१।७९॥ इति य्वृति, "योऽनेकस्वरस्य"॥ २।१।५६॥ इति यत्वे च, सविव्यतु, सविव्यु । "ऋवृ-"॥४।४।८०॥ इतीटि, सविव्ययिथ, सविव्यथु, सवि ५ व्य, व्याय, व्यय, व्यिव, व्यिम । सविव्ये, सविव्याते, सविव्यिषे । सवीयात् । व्यासीष्ट, व्यायिपीष्ट । व्याता २; व्यायिता । व्यास्यति, ते, व्यायिष्यते । अव्यास्यत्, त, अव्यायिष्यत । सम्विव्यासति । "व्येस्यमो"॥४।१।८५॥ इति य्वृति, सम्वेवीयते । सम्वेवयीति, सम्वे ३ वेति, वीत', व्यति । "पाशा-"॥४।२।२०॥ इति ये, सम्व्याययति। समविव्ययत्। सम्व्ययन् । व्यास्यन् । सम्व्ययमान. । व्यास्यमानः सम्वीयमानम् । सम्विवीवान् । सम्विव्यान । वीत, २ वान् । वीत्वा । " व्य " ॥४।१।७७॥ इति न य्वृत्, उपव्याय । "सम्परेर्वा"॥४।१।७८॥ सम्व्याय, सम्वीय । सम्व्या ४ ता, तुम्, तव्यम्, नीयम् । सम्व्येयम् ॥ ३१० ॥

ह्वेंग् स्पर्द्धाशब्दयो । आह्वयति, ते । "ह्व. स्पर्द्धे"॥३।३।५६॥ इत्यात्मनेपदे, मल्लो मल्लमाह्वयते। "सन्निवे "॥३।३।५७॥ संह्वयते, निह्वयते, विह्वयते। "उपात" ॥३।३।५८॥ उपह्वयते । क्ये, "यजादिवचे –"॥४।१।७९॥ इति य्वृति, आहूयते । "ह्वालिप्-"॥३।४।६२॥ इत्यङि, आह्व ३ त, ताम्, न्। " वाऽत्मने "॥३।४।६३॥ आह्वत । आह्वास्त । आह्वायि, आह्वासाताम्, आह्वायिपाताम् ॥ "द्विले ह्वः" ॥४।१।८७॥ इति य्वृति, जुहाव, जुहुवतु, जुहुवुः । "सृजिदृशि-"॥४।४।७८॥ इति वा नेटि, जुहोथ, जुहविथ, जुहुवथु, जुहुव, जुहाव, जुहव, जुहुविव, जुहुविम । जुहुवे, जुहुवाते० । आहूयात् । ह्वासीष्ट, ह्वायिषीष्ट ।

ह्वाता २; ह्वायिता। ह्वास्यति, ते, ह्वायिष्यते। आह्वास्यत्, त; आह्वायिष्यत। जुहूषति, ते। जोहूयते। आजो १२ हवीति, होति, हूतः, हुवति, हवीषि, होषि, हूथः, हूथ, हवीमि, होमि, हूवः, हूमः॥ ह्य०॥ आजो ६ होत्, हवीत्, हूताम्, हवु, होः, हवीः॥ अद्य०॥ "ह्वालिप्-"॥३।४।६२॥ इत्यत्र प्रकृतिग्रहणादङि; आजोहुवत्॥ परोक्षा॥ आजोहवाञ्चकारेत्यादि। "पाशा-"॥४।२।२०॥ इति ये, आह्वाययति। क्ये, आह्वाय्यते। "णौ ङसनि"॥४।१।८८॥ इति णिविषयेऽपि य्वृति, "भ्राजभास-"॥४।२।३६॥ इति वा ह्रस्वे, आजुहावत्, आजूहवत्। आह्वाय्य। आजुहावयिषति। आह्वयन्। आह्वास्यन्। आह्वयमानः। ह्वास्यमानः। आहूयमानम्। आह्वास्यमानम्। जुहुवान्। जुहुवानः। आहूतः, २ वान्। आहूतिः। हूत्वा। आहूय। आह्वा ४ ता, तुम्, नीयम्, तव्यम्। आह्वेयम्॥ ३११॥

टुवपीं बीजसन्ताने। बीजानां क्षेत्रे विस्तारणे। वपति, ते। "नेर्ङ्मादा-" ॥२।३।७९॥ इति णत्वे, प्रणिवपते। वपेत्, त। वपतु, ताम्। अवपत्, त। "यजादिवचेः-"॥४।१।७९॥ इति य्वृति, उप्यते। उप्येत। उप्यताम्। औप्यत। "व्यञ्जनानामनिटि"॥४।३।४५॥ इति वृद्धौ, अवाप्सीत्, अवा ८ साम्, प्सुः, प्सीः, सम्, स, प्सम्, प्स्व, प्स्म। अवप्त, अव ९ प्साताम्, प्सत, प्थाः, प्साथाम्, ब्ध्वम्, ब्द्ध्वम्, प्सि०। अवापि, अवप्साताम्। "यजादिवश्-"॥४।१।७२॥ इति य्वृति, उवाप। "यजादिवचेः-"॥४।१।७९॥ इति य्वृति पश्चाद्द्वित्वे च; ऊपतुः, ऊपुः, उवपिथ, उवप्थ, ऊपथु, ऊप, उवाप, उवप, ऊपिव, ऊपिम। ऊपे, ऊपाते, ऊपिरे, ऊपिषे। उप्यात्। वप्सीष्ट। वप्ता २। वप्स्यति, ते। अवप्स्यत्, त। विवप्सति, ते। वावप्यते। वाव १२ पीति, प्ति०॥ वापयति। अवीवपत्। विवापयिषति। वपन्। वप्स्यन्। वपमानः। वप्स्यमानः। उप्यमानम्। ऊपिवान्। ऊपानः। उप्त, २ वान्। उप्तिः। उप्त्वा। वप्ता। वप्तुम्। वप्तव्यम्। वाप्यम्॥ ३१२॥

वहीं प्रापणे। भारं वहति, ते। सकर्मापि धातुरर्थान्तरे वर्तनादकर्मा भवति। यथाऽत्र नदी वहति, स्रवतीत्यर्थः। एवमन्यत्रापि। उद्वहति, ते।

नि, प्र, परि, सम्, आङ्, पूर्वोऽपि वाच्य. । "नेर्ङ्गादा-"॥२।३।७९॥ इति णि, प्रणिवहति । "प्राद्वह"॥३।३।१०३॥ "परेर्मृषश्च"॥३।३।१०४॥ इति फलवत्यपि परस्मैपदे, प्रवहति, परिवहति । उह्यते । वहेत्, त । उह्येत । वहतु, ताम् । उह्यताम् । अवहत्, त । आह्यत । अवाक्षीत् । पूर्वं वृद्धौ, एकदेशेति न्याया-द्हेरोत्वे, अवोढाम्, अवाक्षुः, अवाक्षीः, अवोढम्, अवोढ, अवा ३ क्षम्; क्ष्व, क्ष्म । अवोट, अवक्षाताम्, अवक्षत, अवोढाः, अवक्षाथाम्, अवोढ्वम् । अत्र "सोधि-"॥४।३।७२॥ इति वा सिच्लुकि, "हो धुट्-"॥२।१।८२॥ इति हो ढे, "तवर्गस्य"॥१।३।६०॥ इति धो ढे, "सहिवहेः-"॥१।३।४३॥ इति ढ्लुक् ओच । पक्षे सिजलुकि, "हो-"॥२।१।८२॥ इति ढे; "षढो-"॥२।१।६२॥ इति के, "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति षे, "तृतीयस्तृ-"॥१।३।४९॥ इति डे, गे च, "तवर्ग-"॥१।३।६०॥ इति धो ढे च, अवग्ड्ढ्वम्; अव ३ क्षि, क्ष्वहि, क्ष्महि । अवाहि, अवक्षाताम्० ॥ वर्षान्त् य्वृति । उवाह, ऊहतुः, ऊहुः, "सृजि-"॥४।४।७८॥ इति वेटि, उवहिथ, उवोढ, ऊहथुः, ऊह, उवाह, उवह, ऊहिव, ऊहिम । ऊहे, ऊहाते, ऊहिरे, ऊहिषे, ऊहि २ ध्वे, ढ्वे । उह्यात् । वक्षीष्ट । वोढा, २ । वक्ष्यति, ते । अवक्ष्यत्, त । विवक्षति, ते । वावह्यते । वावहीति, वावोढि, वावोढः, वावहति, वाव २ क्षि, हीषि, वावो २ ढ, ढ, वाव ४ हि, हीमि, ह्व, ह्म । "यजादि-"॥४।१।७९॥ इति गणनिर्देशान्न य्वृति, क्ये, वावह्यते । वावह्यात् । वावो २ ढु, ढाम्, वावहतु, वावोढि । अवाव ३ ट्, ड्, हीत् ॥ अद्य० ॥ "न श्वि"॥४।३।४९॥ इति न वृद्धौ, अवावहीत् । शेषं पचिवत् । वाहयति वाहम् । अवीवहत् । वहन् । वक्ष्यन् । वहमान । वक्ष्यमाण । उह्यमानम् । ऊहिवान् । ऊहान । ऊढ, २ वान् । ऊढि । ऊढ्वा । समुह्य । वोढा । वोढुम् । वोढव्यम् । वह्यम् । वाह्यम् ॥ ३१३ ॥

टुवोश्वि गतिवृद्ध्योः । श्वयति । श्वयेत् । श्वयतु । अश्वयत् । क्ये, "यजादि-वचेः-"॥४।१।७९॥ इति य्वृति, शूयते । शूयेत । शूयताम् । अशूयत ॥ अद्य० ॥ अङ्डसिचोऽत्र भवन्ति । "ऋदिच्छ्वि"॥३।४।६५॥ इति वा अङि, "श्वयत्यसू-"॥

४।१।९०॥ इति श्वादेशे, अश्वत्, अश्व २ ताम्, न्, अश्वः, अश्व २ तम्, त, अश्वम्, अश्वा २ व, म । “ह्वःश्वेः” ॥३।४।६१॥ इति वा ङे, अशिश्वि ९ यत्, यताम्, यन्, यः, यतम्, यत, यम्, याव, याम । पक्षे सिचि, “न श्वि-” ॥४।३।४९॥ इति वृद्धिनिषेधात्; अश्वयीत्, अश्व ८ यिष्टाम्, यिषुः, यीः, यिष्टम्, यिष्ट, यिषम्, यिष्व, यिष्म ॥ भाक ॥ अश्वायि । श्विश्वोः, अश्वायिषाताम्, अश्वयिषातामित्यादि । “वा परोक्षायङि” ॥४।१।९०॥ इति वा य्वृत्; शुशाव, शिश्वाय, शुशुवतुः, शिश्वियतुः, शुशुवुः, शिश्वियुः, शुशविथ, शिश्वयिथ; शुशुविम, शिश्वियिम । शुशुवे, शिश्विये । श्वयात् । श्वयिषीष्ट; श्वायिषीष्ट । श्वयिता २; श्वायिता । श्वयिष्यति, ते, श्वायिष्यते । शिश्वयिषति । शोशूयते, शेश्वीयते । लुपि, शोशवीति, शोशोति; शेश्वयीति, शेश्वेति । “दीर्घमवो-” ॥४।१।१०३॥ इति दीर्घे, शोशूतः, शेश्वितः । शोशुवति, शेश्वियति । अत्रनन्तु य्वृति दीर्घे शूरूपं भिन्नत्व यङ्लुपन्तभूजिघ्यालोत्वशूरूपे । अद्यतन्यां तु, “श्वयत्यसू-” ॥४।३।१०३॥ इत्यत्र निर्दिष्टाद् यङ्लुपि न श्वः । अङ् तु, “ऋदिच्छ्वि-” ॥३।४।६५॥ इत्यत्र प्रकृतिग्रहणात्स्यादेव । अशोशुवत्, अशेश्वियत् । पक्षे “ह्वः-श्वेर्वा” ॥३।४।५९॥ इति वा ङे, अशोशुवत्, अशेश्वियत् । तत्पक्षे सिचि, अशोशावीत्, अशेश्वयीत्; अत्र “न श्वि-” ॥४।३।४९॥ इति यङ्लुप्यपि न वृद्धिः । श्वाययति । श्वाय्यते । णौ ङ्यनुपरे; “श्वेर्वा” ॥४।१।८९॥ इति वा य्वृत्; अशूशवत्, अत्र नित्यत्वविज्ञानात्प्राग् य्वृति पश्चाद् वृद्धौ, आवादेशे उपान्त्यह्रस्वे णिकृतस्य स्थानित्वेन शुद्वित्वे प्राग्दीर्घः । य्वृदभावे श्विद्वित्वे तु; अशिश्वयत् । शुशावयिषति, शिश्वाययिषति । श्वयन् । श्वयिष्यन् । श्वयमानम् । श्वयिष्यमाणम् । शिश्विवान्, शुशुवान् । शिश्वियानम्, शुशुवानम् । ओदित्त्वात् “सूयत्यादि-” ॥४।२।७०॥ इति नः; “डीयश्वि-” ॥४।४।६१॥ इति नेट्; शूनः, २ वान् । शूति । “क्त्वा” ॥४।३।२९॥ इति क्त्वा न कित्; श्वयित्वा । प्रशूय । श्वयि ३ ता, तुम्, तव्यम् । श्वेयम् ॥ ३१४ ॥

वद व्यक्तायां वाचि । वदति । “दीप्तिज्ञान-” ॥३।३।७८॥ इत्यात्मनेपदे, वदते विद्वान् स्याद्वादे । वदन्; दीप्यत इत्यर्थः । “व्यक्तवाचां सहोक्तौ” ॥३।३।७९॥

सम्प्रवदन्ते द्विजाः । "विवादे वा"॥१।३।८०॥ विप्रवदन्ते, ति वा मौहूर्त्तिकाः । "अनोः कर्मण्यसति"॥१।३।८१॥ अनुवदते कठः कलापस्य । "वदोऽपात्"॥१।३। ९७॥ फलवतिः एकान्तमपवदते । अन्यत्र तु, अपवदति । "यजादिवचे "॥४। १।७९॥ इति य्वृति क्ये, उद्यते । वदेत् । उद्येत । वदतु । वदताम् । उद्यताम् ॥ ह्य० ॥ अवदत् । अवदत । औद्यत ॥ अद्य० ॥ "वदव्रज-"॥४।३।४८॥ इति वृद्धौ, अवादीत्, अवादिष्टाम् । आत्मने, अवदिष्ट । अवादि, अवदिषाताम्०; अवदि २ ध्वम्, ढ्ढ्वम्, अवदिषि । उवाद, "क्रियाव्यतिहार-"॥३।३।२३॥ इति परस्मैपदे, व्यत्युवाद, ऊदतुः, ऊदु, "स्क्रसृ-"॥४।४।८१॥ इतीटि, उवदिथ, ऊदिम । ऊदे, ऊदाते, ऊदिरे, ऊदिषे। उद्यात् । वदिषीष्ट । वदिता२। वदिष्यति, ते । अवदिष्यत्, त । विवदिषति । वावद्यते। वाव १२ दीति, त्ति, त्त, दति, दीषि, त्सि, त्थः, त्थ, दीमि, द्मि, द्व, द्म । णौ, "अणिगि प्राणि" ॥३।३।१०७॥ इत्यप्राप्तेऽपि, "परिमुह-" ॥३।३।९४॥ इत्यात्मनेपदे, वदति चैत्रः, वादयते चैत्र मैत्र, "गतिबोध-"॥२।२।५॥ इत्यणिकर्त्तु कर्मत्वम् । फलवतो ऽन्यत्र तु परस्मै, वादयति चैत्र मैत्र. । विसवादयति।अवीवदत् । णिगन्ताण्णिगि, वदति वीणा, ता परिवादकः प्रायुङ्क्त, तमप्यन्यः अवीवदत् वीणा परिवादकेन । यद्यप्यत्र णौ णेर्लोपोऽभूत्तथाऽपि न समानलोप, यतो णाविति जात्या एकवचनम् । ततश्च य कश्चित् णिग् सर्वोऽपि निमित्ततयोपात्तः, अत स लुप्तोऽपि निमित्त एव । एवमपीपठदित्यादावपि । विवादयिषति, ते । वदन्। वदिष्यन् । सम्प्रवदमान । उद्यमानम् । वदिष्यमाणम् । ऊदिवान् । ऊदानम् । उदित, २ वान्। उदितिः। उदित्वा । अनूद्य । वदि ३ ता, तुम्, तव्यम्। वाद्यम् ॥ ३१५ ॥

वसं निवासे । वसति, निवसति । "उपान्वध्याङ्वस "॥२।२।२१॥ इत्याधारस्य कर्मत्वे, ग्राममुपवसति । अनु, अधि, आङ् पूर्वोऽप्येवम् । एपूपादयो वासार्थे त्रिरात्रमुपवसति, अत्र भोजननिवृत्त्यर्थस्योपस्याधारस्त्रिरात्र कर्म । क्ये य्वृति, "घस्वसः"॥२।३।३६॥ इति षत्वे, उष्यते । "सस्त सि "॥४।३।९२॥ इति त, अवात्सीत् । विषयसप्तमीविज्ञानात्सिजुत्पत्तेः प्रागेव सस्य तत्वे सिचो लुकि स्थानित्वेन

वृद्धौ च, अवात्ताम्। "धुट्ह्रस्व-"॥४।३।७०॥ इत्यत्र हि लुबधिकारे लुग्ग्रहण सिज्लुप्यपि स्थानित्वेन तत्कार्यप्रतिपत्त्यर्थम्; तेनात्र वृद्धि सिजभावेऽपि सिद्धा । अवात्सु, अवा ६ त्सीः, त्तम, त्त, त्सम्, त्स्व, त्स्म । अवात्सि, अवत्साताम्, अवत्सत, अवत्थाः, अवत्साथाम्, अवद्ध्वम्, अवद्ध्वम्, अव ३ त्सि, त्स्वहि, त्स्महि । "यजादिवश्-"॥४।१।७२॥ इति पूर्वस्य य्वृति, उवास, "यजादिवचेः-"॥४।१।७९॥ इति य्वृति, "घस्वस."॥२।३।३६॥ इति षत्वे, ऊषतु., ऊषुः, "सृजिदृशि-"॥४।४।७८॥ इति वा नेटि; उवस्थ, उवसिथ; ऊषथु., ऊष, उवास, उवस, ऊषिव, ऊषिम । ऊषे, ऊषाते, ऊषिध्वे । उष्यात् । वत्सीष्ट । वस्ता २ । वत्स्यति, ते । अवत्स्यत्, त । विवत्सति । वावस्यते । वाव ४ सीति, स्ति, स्तः, सति । वावसि ३ त्वा, तः, २ वान् । अत्र गणानिर्देशाद् " यजादिवचे.- "॥४।१।७९॥ इति न य्वृत् । यङ्लुपि त्क्वादौ नास्येडित्यन्ये । वाव ३ स्त्वा, स्त', २ वान् । णिगि, निवासयति; उद्वासयति, प्रवासयति । फलवति तु, "अणिगि प्राणि-"॥३।३।१०७॥ इति परस्मैपदप्राप्तावपि, "परिमुह-" ॥३।३।९४॥ इत्यात्मनेपदे, वासयते चैत्र मैत्र ; "गतिबोध-" ॥२।२।५॥ इत्यणिक्कर्तु कर्मता । अवीवसत्, त । विवासयिषति, ते । वसन् । वत्स्यन् । उष्यमाणम् । वत्स्यमाणम् । "घसेक "॥४।४।८२॥ इतीटि, अनूषिवान् गुरु शिष्य । अध्यूषिवान्, बहुलाधिकारात्कानोऽस्मान्न भवति। "क्षुधवस-"॥४।४।४३॥ इतीटि, उषित', २ वान् । उषित्वा। उपोष्य । वस्ता । वस्तुम् । वासम् ॥३१६॥

इति यजादि ।

अथ घटादिः ।

घटिष् चेष्टायाम्। ईहायाम्। घटते । घटेत । घटताम् । अघटत। घट्यते। अघटिष्ट, अघटिषाताम् ॥ भाक ॥ अघाटि । जघटे, जघटाते, जघटिरे। घटि- ३ षीष्ट, ता, ष्यते। अघटिष्यत । जिघटिषते । जाघट्यते । जाघ ४ टीति, ट्टि, ट्ट, टति । णौ, "घटादेर्ह्रस्व-"॥४।२।२४॥ इति ह्रस्वे, घटयति । अजीघटत् ॥ भाक ॥ दीर्घस्तु वा ञिणम्परे ञिचि, अघाटि, अघटि । ञिटि, अघाटि-

पात्तां, अघटिपाताम् । इटि तु, अघटयिपाताम । एन घाटिष्यते, घटिष्यते, घटयिष्यते । घाट घाटम्; घट घटम्। घटादीनां पठितार्थेष्वेव घटादिकार्यविज्ञानम्। तेनार्थान्तरे तु, उद्घाटयति, प्रविघाटयति, उद्घाटित. कपाट इत्यादौ ह्रस्वो न भवति। विघटयतीति तु, अजन्तस्यादन्तस्य वा; "णिज् बहुल नाम्नः" ॥३।४।४२॥ इति करोत्यर्थे णिचि रूपम् । घटमानः । घटिष्यमाण । घट्यमानम्। जघटानः। घटितम्। घटित्वा। विघट्य। घटि २ ता, तुम्। घाट्यम॥३१७॥

व्यथिप् भयचलनयो.। दु खेऽप्यन्ये। व्यथते। व्यथ्यते। अव्यथिष्ट, अव्यथिपाताम्० ॥ अव्याथि । "ज्याव्येव्यधि-"॥४।१।७१॥ इति पूर्वस्येत्वे; विव्यथे, विव्यथाते, विव्यथिपे । व्यथिषीष्ट । व्यथिता । व्यथिष्यते । अव्यथिष्यत । विव्यथिपते । वाव्यथ्यते । वाव्य २ थीति, चि । व्यथयति । अविव्यथत् । अव्याथि, अव्यथि । व्यथमान । विव्यथान. । व्यथि ५ ता, त्वा, तुम्, त., २ वान्॥ ३१८॥

प्रथिप् प्रख्याने, प्रसिद्धौ । प्रथते । प्रथ्यते । अप्रथिष्ट, अप्राथिपाताम्, अप्राथिपत० । अप्राथि । पप्रथे, पप्रथाते, पप्रथिरे, पप्रथिपे। प्रथि ३ षीष्ट, ता, ष्यते । अप्रथिष्यत । पिप्रथिपते । पाप्रथ्यते । णौ, प्रथयति । ङे, "स्मृदृत्वर-" ॥४।१।६५॥ इति पूर्वस्य अ, अपप्रथत्। अप्राथि, अप्रथि। प्राथम् २, प्रथम् २। प्रथमान' । प्रथिष्यमाणः । प्रथ्यमानम् । पप्रथानः । प्रथित, २ वान् । प्रथि ३ ता, त्वा, तुम् ॥ ३१९ ॥

क्रदुङ् वैक्लव्ये । विक्लव कातरस्तस्य भावः कर्म वा वैक्लव्यम् । नेऽन्ते, आक्रन्दते । क्रन्द्यते । अक्रन्दिष्ट, अक्रन्दिपाताम् । अक्रन्दि । चक्रन्दे, चक्रन्दाते । क्रन्दि ३ षीष्ट, ता, ष्यते। चिक्रन्दिपते। चाक्रन्द्यते । चाक्र ४ न्दीति, न्ति, न्त', न्दति ।क्रन्दयति। अचक्रन्दत्। ञिणम्परे तु वा दीर्घ, अक्रान्दि, अक्रन्दि । क्रान्दम् २, क्रन्दम् २। क्रन्दि ४ ता, तुम्, त्वा, त ॥ ३२० ॥

ञित्वरिष् सम्भ्रमे, सम्भ्रमोऽत्राशुकारिता। त्वरते। त्वरेत। त्वरताम्। अत्वरत। त्वर्यते। अत्वरिष्ट, अत्वरिषाताम्०। अत्वारि, अत्वरिपाताम्०। तत्वरे,

तत्वराते, तत्वरिरे, तत्वरिषे० । त्वरि ३ षीष्ट, ता, ष्यते । अत्वरिष्यत । तित्वरिषते । तात्वर्यते । तात्वरीति; "मव्य-"॥४।१।१०९॥ इति वस्योपान्त्येन सहोटि, तातूर्त्ति, तातूर्त्तः, तात्वरति, तात्वरीषि, तातूर्षि, तातूर्थ, तातूर्थ, तात्वरीमि, तातूर्मि, वस्य वाऽनुनासिकत्वे, तातूर्वे, तात्वर्व., तातूर्मः । णौ, त्वरयति । "स्मृद्दृत्वर-"॥४।१।६५॥ इति पूर्वस्यात्वे, अतत्वरत् । अत्वारि, अत्वरि । त्वारम् २; त्वरम् २ । त्वरमाणः । त्वरिष्यमाणः । त्वर्यमाणम् । तत्वराण । ञीत्त्वात्, "ज्ञानेच्छा-"॥५।२।९२॥ इति सति क्ते, "श्वसजप-"॥४।४।७५॥ इति वा नेटि, "रदा" ॥४।२।६९॥ इति तो नत्वे, "मव्यवि-"॥४।१।१०९॥ इति सस्वरस्य वस्योटि च; तूर्णः, २ वान् । त्वरितः, २ वान् । त्वरि ३ त्वा, ता, तुम् ॥ ३२१ ॥

स्मृ आध्याने; उत्कण्ठायाम् । स्मरति । णौ घटादित्वात् ह्रस्वे, स्मरयति । आध्यानादन्यत्र, चित्तं स्मारयति, विस्मारयति । उक्तस्याप्याधाने घटादिकार्यार्थमिह पाठ. ॥ ३२२ ॥

दॄ भये । दरति । दीर्यते । णौ घटादित्वाद् ह्रस्वे, दरयति बालम् । भयादन्यत्र, काष्ठं दारयति । शेष दॄश् विदारणे इत्यस्येव ॥ ३२३ ॥

लगे सङ्गे । लगति, विलगति । लग्यते । एदित्वात् "न श्वि-"॥४।३।४९॥ इति न वृद्धि, अलगीत्, अलगिष्टाम् । अलागि । ललाग, लेगतु । लेगे । लग्यात् । लगिषीष्ट । लगि, २ ता, ष्यति । लिलगिषति । लालग्यते । लुपि तु पचिवत् । णौ, लगयति । अलीलगत् । अलागि, अलगि । लागम् २; लगम् २ । लगन् । लगिष्यन् । विलेगिवान् । लेगानम् । "क्षुब्ध-"॥४।४।७०॥ इति निपातनात्, लग्न. सक्तः । लगितोऽन्य । लगि ३ ता, त्वा, तुम् ॥ ३२४ ॥

ष्ठगे, स्थगे संवरणे, आच्छादने । ष्ठगे । स्थगति । स्थग्यते । एदित्त्वात्, "न श्वि"॥४।३।४९॥ इति न वृद्धि, अस्थगीत्, अस्थगिष्टाम् । अस्थागि । तस्थाग, तस्थगतु. । तस्थगे । स्थग्यात् । स्थगिता । णौ, स्थगयति । षोपदेशत्वात्षत्वे, अतिष्ठगत् । तिष्ठगयिषति । स्थगे । स्थगति । अस्थगीत् । तस्थाग । स्थगयति । षत्वाभावे, अतिस्थगत् । तिस्थगयिषति । यङ्तल्लुपो पचिवत् ॥ ३२५ ॥ ३२६ ॥

णट नतौ । नटति । णौ, नटयति शाखाम् । नृत्तौ तु, नाटयति ॥३२७॥

मदै हर्षग्लपनयो । णौ, मदयति गुरु शिष्यः हर्षयतीत्यर्थः । विमदयति शत्रुम्, ग्लपयतीत्यर्थः । अन्यत्र तून्मादयति, प्रमादयति । मदैच् हर्षे इत्ययमनयोरर्थयोर्घटादिकार्यार्थमिह पठित ॥ ३२८ ॥

ध्वन शब्दे । णौ, ध्वनयति । शब्दादन्यत्र तु, ध्वानयति । शेष प्रागुपठितवत् ॥ ३२९ ॥

चल कम्पने । णौ, चलयति । कम्पादन्यत्र, चालयति । शेष ज्वलादिपठितचलवत् ॥ ३३० ॥

ह्वल चलने । ह्वलति । ह्वलिता । णौ ह्रस्वे, विह्वलयति ॥ ३३१ ॥

ज्वल दीप्तौ च, चाच्चलने । प्रज्वलयति, सज्वलयति । "ज्वलह्वल-"॥४।२।३२॥ इत्यनुपसर्गस्य वा ह्रस्वे, ज्वलयति, ज्वालयति । चलज्वलौ ज्वलादौ पठितावप्येतौ घटादिकार्यार्थमिहाधीतौ । केचित्तु दलि, वलि, स्खलि, क्षपि, त्रपीणामपि घटादित्वमिच्छन्ति । तन्मते, दलयति, वलयति, स्खलयति, क्षपयति, त्रपयतीत्यपि भवति ॥ ३३२ ॥

इति घटादयः ।

इति तपाचार्यश्रीदेवसुन्दरसूरिशिष्यश्रीगुणरत्नसूरिविरचिते क्रियारत्नसमुच्चये भ्वादिगणः ।

अथादादिगणः ।

तत्रादौ १७ अनिट । अद, प्साक् भक्षणे । "कर्त्तर्यनद्भ्य-"॥३।४।७१॥ इत्यदादिवर्जनाच्छ्रभावे, अत्ति, अत्त, अदन्ति, अत्सि, अत्थ, अत्थ, अद्मि, अद्व, अद्म । "क्रियाव्यतिहार-"॥३।३।२३॥ इत्यात्मनेपदे, व्यत्यत्ते, व्यत्यदाते ॥ भाक ॥ अद्यते, अद्येते० । अद्यात् । व्यत्यदीत । क्ये, अद्येत । अत्तु, अत्ताम्, अदन्तु, अद्धि, अत्तम्, अत्त, अदानि० । व्यत्यत्ताम्० । क्ये,

अद्यताम्० । "अदश्चाट्"॥४।४।९०॥ इति दिस्योरादिरट्; आदत्, आत्ताम्, आदन्, आदः आत्तम्० । व्यत्यात्त । क्ये ॥ आद्यत० ॥ "घस्लृसन्-"॥४।४।१७॥ इति घस्लादेशे, लृदित्त्वादङि; अघस ३ त्, ताम्, न् । व्यत्यघत्त, व्यत्यघत्साताम् ॥ भाक ॥ अघासि, अघत्साताम्, अघत्सत, अघत्था., अघत्साथाम्, "सो धि-"॥४।३।७२॥ इति वा सिच्लुकि, अघद्ध्वम्, अघद्द्ध्वम्, अघत्सि, अघत्स्वहि, अघत्स्महि । "परोक्षायां नवा"॥४।४।१८॥ घस्लृ; जघास, "गमहन"॥४।२।४४॥ इत्युपान्त्यलुकि, "अघोषे-"॥१।३।५०॥ इति घके; "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति षत्वे, जक्षतुः, जक्षुः । थवीत्र घसादेशस्य तृव्यभावात् "सृजि-"॥४।४।७८॥ इत्यप्राप्तौ नित्यम् । "स्कृसृ-"॥४।४।८१॥ इतीटि, जघसिथ, जक्षथुः, जक्ष, जघास, जघस, जक्षिव, जक्षिम । जक्षे, जक्षाते०; जक्षिमहे । पक्षे, आद, आदतुः, आदुः, "ऋवृ-"॥४।४।८०॥ इतीटि, आदिथ, आदथुः, आद, आद, आदिव, आदिम । आदे, आदाते, आदिरे, आदिषे० । अद्यात् । अत्सीष्ट । अत्ता, २। अत्स्यति, ते । आत्स्यत्, त । जिघत्सति । णौ, "गतिबोध-"॥२।२।५॥ इत्यत्र वर्जनादणिक्कर्तुः कर्मत्वाभावे, आदयते पिण्डीं चैत्रेण; अत्र "चल्याहार-"॥३।३।१०८॥ इति परस्मैपदप्राप्तावपि, "परिमुह-"॥३।३।९४॥ इत्यात्मनेपदम् । क्ये, आद्यते । आदिदत् । अदन् । अदती । अत्स्यन् । अत्स्यन्ती, अत्स्यती । अद्यमानम् । अत्स्यमानम् । जक्षिवान् । आदिवान् । जक्षाणम् । आदानम् । "यपि चाद"॥४।४।१६॥ इति जग्धादेशे; जग्धः, २ वान् । "धुटो धुटि-"॥१।३।४८॥ इति धलुकि तु, जग्ध, २ वान् । जग्धिः । जग्ध्वा । प्रजग्ध्य । एकपदाश्रयत्वेनान्तरङ्गत्वाद्यबादेशात् प्रागेव जग्धादेशे सिद्धेऽपि, "यपि चाद-"॥४।४।१६॥ इत्यत्र यब्ग्रहणं तादौ क्त्वि यत्कार्यं तद् यपि न भवतीति ज्ञापनार्थम् । तेन प्रशम्य, पपृच्छ्य, प्रदीव्य, प्रगत्य, प्रग्याय, प्रपाय, प्रदाय, प्रधाय, प्रपठ्येत्यादौ, दीर्घत्व शत्वमूत्समात्वमित्वमदिं तूत्व हित्वमिद् च यपि न भवति । अनुबन्धकार्यन्तु भवत्येव । प्रतीर्य, अत्र कित्त्वाद् इट् । अत्वा । अत्तुम् । अत्तव्यम् । आद्यम् । प्सा । प्साति । प्सायात् । प्सेयात् । "संयोगादेर्वा-"॥४।३।९५॥ इति ए । शेषं ख्यावृत्त ॥ १ ॥ २ ॥

भाक् दीप्तौ । भाति, आभाति; विभाति, प्रतिभाति, भात, भान्ति । व्यति ९ भाते, भाते, भाते, भासे, भाथे, भाध्वे, भे, भावहे, भामहे । क्ये, भायते । भायात् । व्यति २ भेत, भातु । व्यति ९ भाताम्, भाताम्, भाताम्, भास्व० । अभात्, अभाताम्, अभान्। अभु, अभा । व्यत्य ९ भात, भातां, भात; भाथा ० । अभासीत् । अभासिष्टाम्० । व्यत्यभा ९ स्त, साताम्, सत०, ॥ भाक ॥ अभायि, अभासाताम्, अभायिषाताम् । अभा २ ध्वम्, द्ध्वम्, अभायि ३ ध्वम्, द्वम्, ड्ढ्वम्० । बभौ, बभतु, बभु, बभाथ, बभिथ, बभिम । बभे, बभिध्वे, बभिमहे । भायात् । भासीष्ट, भायिषीष्ट, भासीध्वम्, भायि २ षीध्वम्, षीढ्वम् । भाता २; भायिता । भास्यति, ते, भायिष्यते । अभास्यत्, त, अभायिष्यत । बिभासति । बाभायते । बाभाति, बाभेति । भापयति । अबीभपत् । भा ३ ता, त्वा, तुम्। प्रतिभाय । भात, २ वान् । भेयम्। भातव्यम् ॥ ३ ॥

याक् प्रापणे । याति, प्रयाति, उपयाति, प्रणियाति, यात, यान्ति, यासि, याथः, याथ, यामि, याव, याम । क्ये, यायते । यायात् । यातु । "अदुरुपसर्ग-"॥२।३।७७॥ इति णत्वे, प्रयाणि । अयात्, अयाता । "वा द्विष"४।२।९१॥ इति वा पुसि, अयान्, अयु, अया । अयायत । "यमिरमि"॥४।४।८६॥ इतीटि सेऽन्ते च, अयासीत्, अयासिष्टाम्, अयासिषु । अयायि, अयासाताम् । ञिटि, अयायिषाताम्, अयासत, अयायिषत, अया २ द्ध्वम्, ध्वम्, अयायि ३ ध्वम्, ड्ढ्वम्, द्वम् । ययौ, ययतु, "इडेत्-"॥४।३।९४॥ इति आलुक्, ययु, "सृजि-"॥४।४।७८॥ इति वेटि, ययाथ, ययिथ, ययथु, यय, ययौ, ययिव, "स्क्रस-"॥४।४।८१॥ इतीट्, ययिम । यये, ययाते, ययिरे, ययिषे, ययाथे, ययि ४ ध्वे, द्वे, वहे, महे । यायात् । यासीष्ट, यायिषीष्ट । याता २, यायिता । यास्यति, ते, यायिष्यते । अयास्यत्, त, अयायिष्यत । यियासति । यायायते । यायेति, यायाति । यायन् । यायितः । शेष त्रैङ्वत् । यापयति, "अर्त्तिरी-"॥४।२।२१॥ इति पु । याप्यते । अयीयपत्, यान् । "अवर्णादश्नः-"॥२।१।११५॥ इति वाऽन्त, यान्ती, याती । यायमानम् । "स्वरात्"॥२।३।८५॥ इति

णत्वे, प्रयायमाणम्; परियायमाणम् । यास्यन् । यास्यन्ती, यास्यती । यास्यमानम् यायिष्यमाणम् । ययिवान् । ययुषी । ययानम् । यातः २, वान् । प्रयाय । य ३ त्वा, ता, तुम् । येयम् । प्रयाणीयम् । परियाणीयम् । आदादिका आदन्त अनुस्वारेतः सर्वेऽपि याक्वद्रक्तव्या विशेषवचनं विना ॥ ४ ॥

वाक् गतिगन्धनयोः । वाति, निर्वाति । अवासीत् । ववौ । वाता । याक्वत्, परं णौ, "वो विधूनने-"॥४।२।१९॥ इति जे; पक्षकेणोपवाजयति । विधूननादन्यत्र, "अर्त्ति-"॥४।२।२१॥ इति पौ, वापयति केशान्, शोषयतीत्यर्थः । ङे, अवीवजत्, अवीवपत् । "निर्वाणमवाते"॥४।२।७९॥ इति निपातनात्तो नः; निर्वाणो भिक्षुः। निर्वाणो दीपः। वाते तु कर्त्तरि, निर्वातो वातः। निर्वातं वातेन ॥५॥

ष्णाक् शौचे । स्नाति । स्नायते । अस्नासीत् । सस्नौ । स्नाता । स्नात । सर्वं याक्वत्; परं आशीर्ये वा ए, स्नायात्, स्नेयात् । षोपदेशात् "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति षत्वे, सिष्णासति । णौ, "ज्वलह्वल-"॥४।२।३२॥ इत्यनुपसर्गस्य वा ह्रस्वे, स्नपयति, स्नापयति । सोपसर्गस्य तु न ह्रस्वः; प्रस्नापयति । असिष्णपत् । अस्नपि, अस्नापि, प्रास्नापि । सिष्णपयिषति, सिष्णापयिषति ॥ ६ ॥

द्राक् कुत्सितगतौ । कुत्सिता गतिः पलायनम्, स्वप्नश्च । द्राति, निद्राति; विद्राति । द्रायते । अद्रासीत् । दद्रौ । द्राता । निदिद्रासति । दाद्रायते । द्रापयति । द्रातुम् । द्रात्वा । निद्राय । "व्यञ्जनान्तस्था-"॥४।२।७१॥ इति नत्वे, द्राणः २, वान् । तृनि, द्राणशीलो द्राता ॥ ७ ॥

पाक् रक्षणे । पाति । "ईर्व्यञ्जने-"॥४।३।९७॥ इत्यत्र गास्थासहचरितस्य पिबतेर्ग्रहणात् क्ये ईर्न; पायते । अपासीत् । पपौ । पपे । पायात् । पाता । पिपासति । पापायते । एवं याक्वत्, परं णौ, "पातेः"॥४।२।१७॥ इति ले, पालयति । अपीपलत् । "पातेः"॥४।२।१७॥ इत्यत्र तिव्निर्देशाद्यङ्लुपि योऽन्त एव, पापाययति ॥ ८ ॥

लाक् आदाने । लाति, लातः, लान्ति । क्ये, लायते । लायात् । लातु । अलात्, अलाताम्, अलान्, अलुः, अला । व्यत्यलात् । व्यत्यले । क्ये, अलायत । अलासीत्, अलासिष्टाम्, अलासिषुः । अलायि, अलासाताम्, अला-

यिपाताम् । ललौ, ललतु, ललु:, ललाथ, ललिथ, ललिम । लले, ललिमहे । लायात् । लासीष्ट, लायिषीष्ट । लाता, २; लायिता । लास्यति, ते । अलास्यत्, त । लिलासति । लालायते । लालेति, लालाति, लालीत:, लालति । णौ, "लो लः" ॥४।२।१६॥ इति वा ले, घृतं विलालयति । पक्षे पौ, घृतं विलापयति । ङे, व्यलीललत्, व्यलीलपत् । लात. । ला ३ त्वा, ता, तुम् । लेयम् ॥ ९ ॥

राक् दाने । आदानेऽपीति कश्चित् । राति । रायते । रातु । अरासीत् । ररौ । राता । रारायते । रातुम् । एव याकृवत् ॥ १० ॥

दाक् लवने । वित्त्वान्न दासंज्ञा । दाति क्षेत्रम् । दायन्ते व्रीहय । अदासीत् । व्यत्यदास्त, व्यत्यदा २ साताम्, सत । ददौ । दाता । दिदासति । दादायते । दादेति, दादाति, दादीत, दादति०, दादीथ । सर्वो याकृवत् ॥ ११ ॥

ख्याक् प्रकथने । प्रकटन इत्यन्ये । ख्याति, आख्याति, व्याख्याति । ख्यायते । ख्यायात् । ख्यातु । अख्यात्, अख्याताम्, अख्यान्, अख्यु:, अख्याः । अद्य० ॥ "शास्त्यसू"॥३।४।६०॥ इत्यङि, आख्य ६ त्, ताम्, न्, :, तम्, त, आख्यम्, आख्या २ व, म । आख्यायि, आख्यासाताम्, आख्यायिषाताम्० । चख्यौ, चख्यतु, चख्यु, चख्याथ, चख्यिथ, चख्यिम । चख्ये, चख्याते । वा ए, ख्यायात्, ख्येयात् । ख्यासीष्ट, ख्यायिषीष्ट । ख्याता २, ख्यायिता । ख्यास्यति, ते, ख्यायिष्यते । व्याचिख्यासति । ख्यापयति । अचिख्यपत् । शेष याकृवत् ॥१२॥

माक् माने, मान वर्त्तनम् । माति पात्रम् । क्ये, मायते । अमात्, अमाताम्, अमान्, अमु ॥ अद्य० ॥ अमासीत् । ममौ । मायात् । मिमासति । प्रमिमासति । मामायते । मात २,वान्, इत्यादि सर्वं परमते याकृवद्वाच्य । स्वमते त्वेवम्, माति, निर्माति, प्रमाति, अनुमाति, मात, समान्ति । क्ये, मीयते, "ईर्व्यञ्जने-"॥४।३।९७॥ इति ई । मायात् । मीयेत । मातु । मीयताम् । ह्य० ॥ अमात्, अमाताम्, अमान, अमु, अमा, अमाम् । अमीयत । अमासीत, अमासिष्टाम् । अमायि, अमासाताम्, अमायिषाताम् । ममौ, ममतु, ममु., ममाथ, ममिथ, ममथु, मम, ममौ, ममि २ व, म । ममे, ममिमहे "ङ्गापा-" ॥४।३।९६॥ इति ए, मेयात्, मेयास्ताम् । मासीष्ट, मायिषीष्ट । माता २, मायिता ।

ास्यति, ते; मायिष्यते। "मिमी-"॥४।१।२०॥ इति इत्, मित्सति। "ईर्व्यञ्जने-" ।४।३।९७॥ ईः, मेमीयते। लुपि तु, साक्षात् क्ङिद्व्यञ्जनाभावात् न ईः, मामाति, मामेति। शेष त्रैङ्वत्। मापयति। अमीमपत्। मिमापयिषति। मान्। मान्ती, माती। मास्यन्। मास्यन्ती, मास्यती। मीयमानम्। "स्वरात्"॥२।३।८५॥ इति णत्वे, निर्मीयमाणम्। मास्यमानम्। ममिवान्। ममानम्। "दोसो-"॥४।४।११॥ इति इः; मितः, २ त्वान्। प्रस्थ स्थाल्या मित्वा। प्रमाय। मितिः। माता। मातुम्। निर्माणीयम्॥१३॥

इक् स्मरणे। इङिकावधिनैव प्रयुज्येते। "स्मृत्यर्थ-"॥२।२।११॥ इति वा कर्मण. कर्मत्वे; मातुर्मातरं वाऽध्येति, अधीतः, "इको वा"॥४।३।१६॥ इति वा यत्वे; अधियन्ति। पक्षे इयादेशे, अधीयन्ति, अध्येषि, अधी २ थः, थ, अध्येमि, अधी- २ व, म। क्ये, अधीयत। अधीयात्॥ प०॥ अध्येतु, अधीताम्, अधि- यन्तु, अधीयन्तु, अधी २ तम्, त, अध्यया ३ नि, व, म॥ ह्य०॥ अध्यैत्, अध्यैताम्। "इको वा"॥४।३।१६॥॥ इत्यनेन वा यत्वे, पक्षे इयि च प्राप्ते सति, यत्व बाधित्वा "एत्यस्तेः-"॥४।४।३०॥ इति वृद्धौ, अध्यायन्। पक्षे इया- देशे सति, "स्वरादेः-"॥४।४।३१॥ इति वृद्धौ, अध्यैयन्, अध्यै., अध्यै २ तम्, त, अध्यायम्, अध्यैव, अध्यैम। क्ये, अध्यैयत। अद्य०॥ "इणिको- र्गा"॥४।४।२३॥ इति गा; "पिबैति-"॥४।३।६६॥ इति सिज्लुप् च, अध्य३ गात्, गाता, गुः। व्यत्यध्यगा ३ स्त, साताम्, सत॥ भाक॥ अध्यगायि, अध्यगा २ साताम्, यिषाताम्। अधी ११ याय, यतु, यु, येथ, ययिथ, यथुः, य, याय, यय, यिव, यिम। अधीये, अधी ३ याते, यिरे, यिषे। अधीयात्। "आशिषीण."॥४।३।१०७॥ इत्यत्रेकोऽपि ग्रहणात् ह्रस्वे, अधियादित्यप्यन्ये। अध्येषीष्ट, अध्यायिषीष्ट। अध्येता २, अध्यायिता। अध्येष्य २ ति, ते, अध्या- यिष्यते। अध्यैष्य २ त्, त, अध्यायिष्यत। "सनीङश्च"॥४।४।२५॥ इति गमु, "गमोऽनात्मने"॥४।४।५१॥ इतीट्, अधिजिगमिषति मातु। आत्मनेपदे पुनर्नेट्, अधिजिगांस्यते माता। अधिजिगांसिष्यते। अत्र "स्वरहन्"॥४।१।१०४॥ इति दीर्घ, "णावज्ञाने गमु"॥४।४।२४॥ अधिगमयति प्रियम्। अध्यजीगमत्।

यविष्य २ ति, ते, याविष्यते । "इवृध-"॥४।४।४७॥ इति वेटि, "ओर्जान्त-"॥४।१।६०॥ इति पूर्वस्य इ', यियविषति, युयूषति । योयूयते । योयवीति । अहेरिति निषेधान्न औ', योयोति । यङ्लुबन्तस्यापि औरित्यन्ये, योयौति । यावयति । "असमान-"॥४।१।६३॥ इति इः, अयीयवत् । "ओर्जान्त-"॥४।१।६०॥ इति इः, यियावयिषति । युवन् । युवती । यूयमानम् । यविष्यन् । यविष्यमाणम् । युयुवान् । युयुवानम् । "उवर्णात्"॥४।४।५८॥ इति नेटि, युतः, २ वान् । युत्वा । यवि २ ता, तुम् ॥ १८ ॥

णुक् स्तुतौ । नौति । अन्ये तु युक्णुक्भ्या व्यञ्जनादौ विति शिति, ईतमपीच्छन्ति । यवीति, नवीति । "अदुरुपसर्ग"॥२।३।७७॥ इति णः, प्रणौति, परिणौति, नुत , नुवन्ति । "नुप्रच्छ"॥३।३।५४॥ इत्याङ्पूर्वादात्मनेपदे, आनुते सृगालः, आनु २ वाते, वते । क्ये, नूयते, प्रणूयते । शेष युकत् । "ग्रहगुहश्च-"॥४।४।५९॥ इति नेट्, नुनूषति । नोनूयते । नोनवीति, नोनोति । नावयति । अनूनवत् । नुवन् । नुवती । नविष्य २ न्, माणम् । नुनुवान् । नुनुवानम् । 'उवर्णात्"॥४।४।५८॥ इति नेट्, नुतः, २ वान् । नुत्वा । प्रणुत्य । नुतिः ॥ १९ ॥

क्ष्णुक् तेजने । क्ष्णौति, क्ष्णुत, क्ष्णुवन्ति । "सम. क्ष्णो"॥३।३।२९॥ इत्यात्मनेपदे, सक्ष्णुते शस्त्रम् । चुक्ष्णूषति । चोक्ष्णूयते । चोक्ष्णोति । शेष युकत् ॥ २० ॥

स्नुक् प्रस्रवणे, क्षरणे । स्नौति, स्नुत , स्नुवन्ति । क्ये, स्नूयते । प्रास्नावीत् । प्रसुस्राव । प्रस्नविता । प्रस्नविष्यति । एवं सर्वो युकवत्, पर "स्नो"॥४।४।५२॥ इत्यात्मनेपदाभाव एवेट्विधानादात्मनेपदे नेट् । प्रास्नोषाताम् । प्रस्नोषीष्ट । प्रस्नोतासे । प्रस्नोष्यते । कर्मकर्त्तरि, "एकधातौ-"॥३- त्मनेपदेषु प्राप्तेषु, "भूषार्थ-"॥३।४।९३॥ इति ञिक्यय प्रास्नोष्ट गौ स्वयमेव । अन्तर्भूतण्यर्थत्वेन तु ण्यर्थो नास्ति तत्र कर्त्तैव । यथा, प्र "ग्रहगुहश्च"॥४।४।५९॥ इति इट्प्रात सोस्नवीति ॥ २१ ॥

टुक्षु, रु, कुंङ्, शब्दे। क्षौति, क्षुत , क्षुवन्ति। चुक्षाव । क्षविता ।चुक्षूपति। चोक्षूयते । चोक्षोति, चोक्षवीति । क्षावयति । णौ यत्कृतमिति न्यायात् क्षुद्वित्वे; अचुक्षवत्। चुक्षावयिपति।"उवर्णात्"॥४।४।५८॥ इति नेटि, क्षुत्वा। क्षुतम्। क्षुत , २ वान् । क्षवि २ ता, तुम् । "य एच-"॥५।१।२८॥ इति ये, क्षव्यम् । "उवर्णादावश्यके"॥५।१।१९॥ इति घ्यणि, क्षाव्यमवश्यम्। रु । रौति; "यङ्तुरुस्तोः-"॥४।३।६४॥ इति ईति, रवीति, रुत, रुवन्ति। रुराव। रविता। रुरूपति। रोरूयते। रोरोति, रोरवीति। लुप्यपि "उत औ.-"॥४।३।५९॥ इति औरित्यन्ये, रोरौति। रावयति। "असमान-"॥४।१।६३॥ इति इः, अरीरवत् "ओजन्त-"॥४।१।६०॥ इति इः, रिरावयिपति । शेप द्वयोर्युकृवत्। कुङ्। अनिट् । कौति । चुकाव । कोता। चुकूपति।"न कवते.-"॥४।१।४७॥ इति भ्वादेरेव प्रतिषेधात् "कङश्च-"॥४।१।४६॥ इति पूर्वस्य च , चोकूयते । चोकोति, चोकवीति । कावयति। अचूकवत्। शेष पुकृवत्। कुङ्, कुङ्, कुङ्त् इत्येतेपा शब्दार्थत्वेऽप्यर्थभेदोऽस्ति । कुंङ् अव्यक्ते शब्दे ज्ञेयः, कुङ् शब्दमात्रे, कुङ्त् आर्त्तस्वरे ॥२२॥२३॥२४॥

अथान्तर्गणो रुदादि पञ्चकः ।

रुदृक् अश्रुविमोचने । "रुत्पञ्चकात्-"॥४।४।८८॥ इतीटि, रोदिति, रुदितः, रुदन्ति, रोदिषि, रुदिथ, रुदिथ, रोदिमि, रुदिव., रुदिमः । रुद्यते । रुद्यात् । रुद्याताम । रुद्येत । रोदितु, रुदिताम्, रुदन्तु, रुदि ३ हि, तम्, त, रोदा ३ नि, व, म । रुद्यताम् । "दिस्योरीट्"॥४।४।८९॥ अरोदीत् । "अदश्चाट्"॥ ४।४।९०॥ अरोदत्, अरुदिताम्, अरुदन्, अरोदी, अरोद, अरुदि २ त, त, अरोदम्, अरुदि २ व, म । अरुद्यत । अद्य० ॥ "ऋदिच्छ्वि-"॥३।४।६५॥ इति वाऽङि, अरुद ३ त्, ताम्, न् । पक्षे, अरो ३ दीत्, दिष्टाम्, दिषु । अरोदि, अरोदिपाताम्; अरोदि २ ध्वम्, ढ्वम्, अरोदिपि । रुरोद, रुरुदतु, रुरुदि २ व, म । रुरुदि २ ध्वे, महे। रुद्यात्। रोदिषीष्ट । रोदिता २ । रोदिष्यति, ते । अरोदिष्यत्, त । "रुदविद-"॥४।३।३२॥ इति क्त्वासनोः कित्त्वे, रुरुदिपति । रोरुद्यते । रोरुदीति, रोरोत्ति, रोरुत्त , रोरुदति । हौ, रोरुद्धि ।

ह्य० ॥ अरोरु २ दीत्, द् । अरोरु २ त्ताम्, दुः, अरोरोः, अरोरोत्, अरोरुत्तम् । अद्य० ॥ ऋदनुबन्धनिर्दिष्टत्वेन यङ्लुपि अङभावे, अरोरोदीत् । शेष पचिस्थानोक्तवत् । रोदयति । अरूरुदत् । रुदन् । रुदती । रोदि ३ ष्यन्, ष्यन्ती, ष्यती । रुद्यमानम् । रोदिष्यमाणम् । रुरुद्वान् । रुरुदानम् । रुदितः २, वान् । "उतिशवर्हाद्भ्यः-"॥४।३।२६॥ इति भावारम्भयोर्वा कित्त्वे, रुदितम्, रोदितमनेन । प्ररुदितः २, वान्, प्ररोदित २, वान् । रुदित्वा, रोदित्वा । रोदि २ ता, तुम् । रोद्यम् ॥ २५ ॥

ञिष्वपक् शये । अकर्माऽनिट् च । शिति व्यञ्जनादौ इटि, स्वपिति, स्वपितः, स्वपन्ति । "स्वपेर्यङ्ङे च"॥४।१।८०॥ इति य्वृति, सुप्यते । स्वप्यात । स्वपि २ तु, ताम् ॥ ह्य० ॥ अस्वपत्, अस्वपीत्, अस्व ९ पिताम्, पन्, पः, पी., पितम्, पित, पम्, पिव, पिम ॥ अद्य० ॥ अस्वा ९ प्सीत्, प्ताम्, प्सुः, प्सीः, प्तम्, प्त, प्सम्, प्स्व, प्स्म । अस्वापि । "भूस्वपो -"॥४।१।७०॥ इति पूर्वस्य उः, "नाम्यन्त"॥२।३।१५॥ इति षत्वे, सुष्वाप, "स्वपेर्यङ्-"॥४।१।८०॥ इति य्वृति, सुषुपतु । निर्दुःसुविपूर्वस्य, "अवः स्वपः"॥२।३।५७॥ इति षत्वे, निःषुषुपतु, दुःषुषुपतु, सुषुषुपतु, विषुषुपतु, सुषुपुः, सुष्वपिथ, सुष्वप्थ, ... सुष्वप, सुषुपि २ व, म । सुषुपे, सुषुपिमहे । सुप्यात् । ... , ते । अस्वप्स्यत, त । "रुद-"॥... । इति सन् ... ते । यङन्तात् सनि, सोषुपि ... "॥४।३। ... ात् "स्वरस्य परे"॥७।४।११०॥ ... भावे, ... सिद्ध । पुनर्द्वित्वमते तु, ... पा ... नियमात् सुपरस्य सस्य न ... य्वृ ... पति । यङ्लुपि न य्वृदित्वन् ... सोषुपिषति । सोषोपयति । इति य्वृति गुणे ह्रस्वत्वे द्वित्वे ॥४।१।६२॥ इति पूर्वस्य उत्वे, स्वप्स्यन्ती, स्वप्स्यती ।

सुप्तः २, वान् । सुप्त्वा । प्रसुप्य । दुःषुप्तः । सुषुप्तः । सुप्तिः । स्वप्ता । स्वप्तुम् ॥ २६ ॥

अन, श्वसक् प्राणने, जीवने । अनिति, "द्विर्वेऽप्यन्तेऽपि-"॥२।३।८१॥ इति णत्वे, प्राणिति, पराणिति, अनित, अनन्ति । क्ये, अन्यते, प्राण्यते । प्राण्यात् । प्राणितु । प्राणत्, प्राणीत्, प्राणिताम्, प्राणन्, प्राणः, प्राणीः । प्राण्यत । प्राणीत्, प्राणि २ ष्टाम्, पु.। प्राणि, प्राणिपाताम् । "अस्यादे-"॥४।१।६८॥ इति पूर्वस्य आः, आन, आनतु, प्राण, प्राणतुः, प्राणु, प्राणिथ, प्राणिम । प्राणे, प्राणाते, प्राणिषे । प्राण्यात् । प्राणिषीष्ट । प्राणिता २। प्राणिष्यति । प्राणिष्यत् । अनिनिषति । द्विर्वे कर्त्तव्ये णत्वशास्त्रस्यासत्त्वाद् द्विर्वे कृते पश्चाद्द्वयोर्णत्वे, प्राणिणिषति । परेस्तु वा ण, पर्यणिणिषति, पर्यनिनिषति । सन्नन्ताण्णौ ङे; "पुनरेकेषाम्"॥४।१।१०॥ इति पुनर्द्विर्वे, प्राणिणिनिषत्, अत्र "द्विर्व-"॥२।३।८१॥ इति वचनाद्, द्विर्वे कृते पश्चाद् द्वयोरेवाद्ययोर्णत्वं न तृतीयस्य, आनयति, प्राणयति । आनिनत्; प्राणिणत् । पर्याणिणत्, पर्यानिनत् । प्राणिणयिषति । प्राणन् । प्राणती । प्राणिष्यन् । प्राण्यमानम् । प्राणितवान् । प्राणानम् । प्राणि ४ ता, तुम्, तः, तवान् । अनित्वा । प्राण्य ॥ श्वस् ॥ तालव्यादि । श्वसिति, विश्वसिति, आश्वसिति; निश्वसिति, श्वसित, श्वसन्ति । श्वस्यते । श्वस्यात् । न स्वपेदिति, न विश्वसेदमित्रस्य मित्रस्यापि न विश्वसेदिति च दर्शनाददादिभ्योऽपि क्वचित् शविरित्यन्ये । श्वसितु, श्वसिहि ॥ ह्य० ॥ अश्व ११ सत्, सीत्, सिताम्, सन्, स, सी, सितम्, सित, स, सिव, सिम । अश्वस्यत ॥ अद्य० ॥ अश्व २ सीत्, सिष्टाम् । अश्वा २ सीत्, सिष्टाम् । अश्वासि, अश्वसिपाताम् । शश्वास, शश्वसतु, शश्वसिथ । शश्वसे, शश्वसिमहे । श्वस्यात् । श्वसिषीष्ट । श्वसिता । श्वसिष्यति । शिश्वसिषति । शाश्वस्यते । शाश्व २ सीति, स्ति । आश्वासयति । अशिश्वसत् । व्यशिश्वसत् । श्वस २ न्, ती । श्वसिष्य ३ न्, न्ती, ती । श्वस्यमानम् । शश्वस्वान् । शश्वसानम् । श्वसि ३ त्वा, ता, तुम् । "श्वसजप" ॥४।४।७५॥ इति वा नेटि, आश्वस्त, २ वान् ॥ २७ ॥ २८ ॥

जक्षक् भक्षहसनयो । अथ रुत् पञ्चकस्य पञ्चमो जक्षपञ्चकस्य लाद्य इत्युभय

कार्यभाक्। जक्षिति, जक्षितः; "अन्तो नो लुक्"॥४।२।९४॥ जक्षति। जक्षतु। "द्व्युक्तजक्ष"॥४।२।९३॥ इति शिदनः पुसि, अजक्षुः। जजक्ष। शतरि, जक्षत्; "शौ वा"॥४।२।९५॥ जक्षति, जक्षन्ति, कुलानि। जक्षि ३ ता, तुम, तः। शेष श्वस्वत्॥ २९॥

दरिद्राक् दुर्गतौ। दरिद्राति। "इर्दरिद्र"॥४।२।९८॥ दरिद्रित, अन्तो नो लुकि, "श्नश्चात."॥४।२।९६॥ लुकि च; दरिद्रति, दरि ६ द्रासि, द्रिथ, द्रिथ, द्रामि, द्रिव, द्रिम.। क्ये, "अशित्यस्सन्-"॥४।३।७७॥ इत्यालुकि, दरिद्र्यते। सप्त०॥ दरिद्रियात्। दरि ४ द्रातु, द्रिता, द्रतु, द्रिहि। अदरि ३ द्रात्, द्रिताम्, द्रु, अत्र "द्व्युक्त-"॥४।२।९३॥ इति पुसि, "इडेत्-"॥४।३।९४॥ इत्यालुकि, अदरि ६ द्रा, द्रितम, द्रित, द्राम्, द्रिव, द्रिम॥ अद्य०॥ "दरिद्रोऽद्यतन्यां वा" ॥४।३।७६॥ आलुक्, अदरि ३ द्रीत्, द्रिष्टाम्, द्रिषु। पक्षे, अदरिद्रा २ सीत्, सिष्टाम्॥ भाक॥ अदरि २ द्रि, द्रायि। इटि ञिटि च, अदरिद्रिपाताम्। दरिद्रा ३ चकार, बभूव, आसेत्यादि। "आतो णव-"॥४।२।१२०॥ इत्यत्र ओकारेणैव पपावित्यादिसिद्धौ औविधान दरिद्रातेर्णव आमादेशानित्यत्वार्थम्, ददरिद्रौ। अन्यथा "अशित्यस्सन्-"॥४।३।७७॥ इति आलोपे, इदं रूपं न सिद्ध्येत्॥ भाक॥ दरिद्रा ३ चक्रे, बभूवे, आहे। दरिद्र्यात्। दरिद्रिषीष्ट। दरिद्रिता २। दरिद्रिष्यति, ते। अदरिद्रिष्यत्, त। "इवृध-"॥४।४।४७॥ इति वेटि, दिदरिद्रासति, दिदरिद्रिषति। दरिद्रयति। अददरिद्रत्। णौ आलुकं नेच्छन्त्यन्ये; दरिद्रापयति। अददरिद्रपत्, अत्र लघो परेण वर्णसमुदायेन णेर्व्यवधेति पूर्वस्य सन्वद्भावात् इर्न भवति। अन्तो नो लुकि, दरिद्र ५ त, तौ, ती, ति, न्ति, कुलानि। दरिद्रिष्य २ न्, माणम्। दरिद्र्यमाणम्। दरिद्राञ्चकृवान्। शिवस्तु णवोऽन्यस्याप्यामादेशमनित्यमिच्छति। तन्मते, ददरिद्र्वानित्यपि। पष्ठ्या तु ददरिद्रुष इति भवति। केचित् क्वसौ आलोपं नेच्छन्ति, ददरिद्रावान्। दरिद्रि ५ त्वा, ता, तुम्, त, वान्। दरिद्रणीयम्॥३०॥

जागृक् निद्राक्षये। अकर्मा। जागर्ति। सकर्मा च। प्रतिजागर्ति। जागृतः; अन्तोनो लुकि, जाग्रति, जागर्षि, जागृथः, जागृथ, जागर्मि, जागृ २ वः,

मः। क्ये, "जागु. किति"॥४।३।६॥ इति गुणे, जागर्यते। जागृयात्। जाग-र्तु, जाग्रतु॥ ह्य०॥ अजाग', नानिष्टार्थ इति न्यायात् सन्निपातन्यायोऽत्र न प्रवृत्तस्तेन गुणे कृते देर्लुक् सिद्ध, अजागृताम्। "द्व्युक्त-"॥४।२।९३॥ इति पुसि, अजागरु, अजा ६ गः, गृतम्, गृत, गरम्, गृव, गृम। अजागर्यत॥ अद्य०॥ "न श्विजागृ-"॥४।३।४९॥ इति न वृद्धि., अजाग ९ रीत्, रिष्टाम्, रिषुः०। "जागुर्ञिणवि"॥४।३।५२॥ इति वृद्धौ, अजागारि। प्रत्यजागारि १० षाताम्, षत, ष्ठा', षाथाम्, ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि ष्महि। एव प्रत्यजागारिषा-तामित्याद्यपि॥ परो०॥ "जाग्रुष-"॥३।४।४९॥ इति वा आमि, जागरा ३ चकार, बभूव, आसेत्यादि। ९। आमः परोक्षालाभात्राण्णवि न वृद्धि.॥ भाक॥ जागरा ३ चक्रे, बभूवे, आहे। पक्षे; जजागार, "जागु-"॥४।३।६॥ इति गुणे, जजागरतुः, जजागरु.। अनेकस्वरत्वात् "ऋतः"॥४।४।७९॥ इतीट् निषेधाभावे, जजागरिथ। णवि, जजागर, जजागार; जजागरिम। जजागरे; प्रतिजजागरे, प्रतिजजागरिढ्वे, ध्वे। जागर्यात्। जागरिषी ३ ष्ट, ढ्वम्, ध्वम्। जागारिषीष्ट। जागरिता २; जागारिता। जागरिष्यति, ते; जागारिष्यते। जिजागरिषति। अनेकस्वरत्वान्न यङ्। अस्यापि यङित्यपरे, जाजाग्रीयते। जरिजागर्ति॥ अद्य०॥ "न श्वि-"॥४।३।४९॥ इति यङ्लुप्यपि न वृद्धौ, अजर्जागरीत्। सर्वस्माद्धा-तोः आयादिप्रत्ययरहितात् केचिद्यङमिच्छन्ति। अव्। अवाव्यते। इ, इण् वा। "स्वरादेर्द्वितीय"॥४।१।४॥ इति यद्वित्वे, "आगुण-"॥४।१।४८॥ इति आत्वे, इयायते। इक्, इङ्क् वा। अधीयायते। ईङ्च्। ईयायते। दादरिद्र्यते। एवमन्य-सर्वधातुष्वपि "जागुर्ञिणवि"॥४।३।५२॥ इति ञिणवोरेव वृद्धिनियमात् णौ गुणे, जागरयति। अजजागरत्। जाग्र ५ त्, तौ, ती ति, न्ति, कुलानि। जागर्यमाणम्। जागरि २ ष्यन्, माणम्। अस्य क्वसुर्नास्तीत्येके। गुण एवेत्यन्ये। जजागर्वान्। जजागराणम्। क्वसुकानयोर्न गुण इत्यपरे। जजागृवान्। व्यतिजजाग्राण। जागरि ५ त्वा, ता, तुम्, तः २ वान्। जागर्यम्॥ ३१॥

चकासृक् दीप्तौ। चकास्ति, चकास्त। न्लुकि, चकासति, चका ३ स्सि, स्थ'; स्सि। क्ये, चकास्यते। चकास्यात्। चकास्तु, चका २ स्ताम्, सतु; "सोधि-"॥

कार्यभाक् । जक्षिति, जक्षितः, "अन्तो नो लुक्"॥४।२।९४॥ जक्षति। जक्षतु। "द्व्युक्तजक्ष"॥४।२।९३॥ इति शिदनः पुसि, अजक्षु । जजक्ष। शतरि, जक्षत्; "शौ वा"॥४।२।९५॥ जक्षति, जक्षन्ति, कुलानि। जक्षि ३ ता, तुम, तः। शेष श्वस्वत्॥ २९ ॥

दरिद्राक् दुर्गतौ। दरिद्राति। "इर्दरिद्रः"॥४।२।९८॥ दरिद्रित., अन्तो नो लुकि, "श्नश्चात."॥४।२।९६॥ लुकि च, दरिद्रति, दरि ६ द्रासि, द्रिथ, द्रिथ, द्रामि, द्रिव., द्रिम.। क्ये, "अशित्यस्सन्-"॥४।३।७७॥ इत्यालुकि, दरिद्रयते। सप्त०॥ दरिद्रियात्। दरि ४ द्रातु, द्रिता, द्रतु, द्रिहि। अदरि ३ द्रात्, द्रिताम्, द्रु, अत्र "द्व्युक्त-"॥४।२।९३॥ इति पुसि, "इडेत्-"॥४।३।९४॥ इत्यालुकि, अदरि ६ द्रा, द्रितम्, द्रित, द्राम्, द्रिव, द्रिम॥ अद्य०॥ "दरिद्रोऽद्यतन्यां वा" ॥४।३।७६॥ आलुक्, अदरि ३ द्रीत्, द्रिष्टाम्, द्रिषु । पक्षे, अदरिद्रा २ सीत्, सिष्टाम्॥ भाक॥ अदरि २ द्रि, द्रायि। इटि जिटि च, अदरिद्रिषाताम्। दरिद्रा ३ चकार, बभूव, आसेत्यादि। "आतो णव-"॥४।२।१२०॥ इत्यत्र ओकारेणैव पपावित्यादिसिद्धौ औविधानं दरिद्रातेर्णव आमादेशानित्यत्वार्थम्, ददरिद्रौ। अन्यथा "अशित्यस्सन्-"॥४।३।७७॥ इति आलोपे, इदं रूपं न सिध्येत्॥ भाक॥ दरिद्रा ३ चक्रे, बभूवे, आहे। दरिद्यात्। दरिद्रिषीष्ट। दरिद्रिता २। दरिद्रिष्यति, ते। अदरिद्रिष्यत्, त। "इवृध-"॥४।४।४७॥ इति वेटि, दिदरिद्रासति, दिदरिद्रिषति। दरिद्रयति। अददरिद्रत्। णौ आलुकं नेच्छन्त्यन्ये, दरिद्रापयति । अददरिद्रपत्, अत्र लघो परेण वर्णसमुदायेन णेर्व्यवधेति पूर्वस्य सन्वद्भावात् इर्न भवति । अन्तो नो लुकि, दरिद्र ५ त, तौ, ती, ति, न्ति, कुलानि। दरिद्रिष्य २ न्, माणम्। दरिद्यमाणम्। दरिद्राञ्चकृवान्। शिवस्तु णवोऽन्यस्याप्यामादेशमनित्यमिच्छति। तन्मते, ददरिद्र्वानित्यपि। पष्ठ्या तु ददरिद्रुष इति भवति। केचित् क्वसौ आलोपं नेच्छन्ति, ददरिद्रावान्। दरिद्रि ५ त्वा, ता, तुम्, त, वान्। दरिद्रणीयम्॥३०॥

जागृक् निद्राक्षये। अकर्मा। जागर्ति। सकर्मा च। प्रतिजागर्ति। जागृत; अन्तोनो लुकि, जाग्रति, जागर्षि, जागृथ, जागृथ, जागर्मि, जागृ २ व.,

मः । क्ये, "जागु. किति "॥४।३।६॥ इति गुणे, जागर्यते । जागृयात् । जागर्तु, जाग्रतु ॥ ह्य० ॥ अजाग ; नानिष्टार्थे इति न्यायात् सन्निपातन्यायोऽत्र न प्रवृत्तस्तेन गुणे कृते देर्लुक् सिद्ध, अजागृताम् । "इ‍युक्त-"॥४।२।९३॥ इति पुसि, अजागरु, अजा ६ गः, गृतम्, गृत, गरम्, गृव, गृम । अजागर्यत ॥ अद्य०॥ "न श्विजागृ-"॥४।३।४९॥ इति न वृद्धि', अजाग९रीत्, रिष्टाम्, रिषुः०। "जागुर्ञिणवि"॥४।३।५२॥ इति वृद्धौ, अजागारि । प्रत्यजागारि १० पाताम्, पत, ष्ठा', पायाम्, ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, पि, ष्वहि ष्महि । एव प्रत्यजागारिषाताभित्याद्यपि ॥ परो० ॥ "जाग्रुष-"॥३।४।४९॥ इति वा आमि, जागरां३चकार, बभूव, आसेत्यादि । ९ । आम' परोक्षात्वाभावाण्णवि न वृद्धिः ॥ भाक ॥ जागरा ३ चक्रे, बभूवे, आहे । पक्षे, जजागार, "जागु' "॥४।३।६॥ इति गुणे, जजागरतु', जजागरु' । अनेकस्वरत्वात् "ऋतः"॥४।४।७९॥ इतीट् निषेधाभावे, जजागरिथ । णवि, जजागर, जजागार, जजागरिम । जजागरे, प्रतिजजागरे, प्रतिजजागरिढ्वे, ध्वे । जागर्यात्। जागरिषी ३ ष्ट; ढ्वम्, ध्वम्। जागारिषीष्ट। जागरिता २; जागारिता । जागरिष्यति, ते, जागारिष्यते । जिजागरिषति । अनेकस्वरत्वान्न यङ् । अस्यापि यङित्यपरे; जाजाग्रीयते। जरिजागर्त्ति॥ अद्य०॥ "न श्वि-"॥४।३।४९॥ इति यङ्लुप्यपि न वृद्धौ, अजर्जागरीत् । सर्वस्माद्धातोः आयादिप्रत्ययरहितात् केचिद्यङमिच्छन्ति । अव् । अवाव्यते । इ, इण् वा । "स्वरादेर्द्वितीय "॥४।१।४॥ इति यद्वित्वे, "आगुण-"॥४।१।४८॥ इति आत्वे, इयायते। इक्, इङ्क् वा । अधीयायते। ईङ्च् । ईयायते। दादरिध्रते। एवमन्यसर्वधातुष्वपि "जागुर्ञिणवि"॥४।३।५२॥ इति ञिणवोरेव वृद्धिनियमात् णौ गुणे, जागरयति । अजजागरत्। जाग्र५त्, तौ, ती ति, न्ति, कुलानि। जागर्यमाणम्। जागरि २ ष्यन्, माणम् । अस्य क्सुर्नास्तीत्येके । गुण एवेत्यन्ये । जजागर्वान् । जजागराणम् । क्सुकानयोर्न गुण इत्यपरे । जजागृवान् । व्यतिजजाग्राण । जागरि ५ त्वा, ता, तुम्, त २ वान् । जागर्यम् ॥ ३१ ॥

चकासृक् दीप्तौ। चकास्ति, चकास्त.। न्लुकि, चकासति, चका ३ रिस, स्थ.; स्मि। क्ये, चकास्यते। चकास्यात् । चकास्तु, चका २ स्ताम्, सतु, "सोधि-"॥

४।३।७२॥ इति वा सो लुकि, चका ३ स्ति, धि, स्तम्०। "व्यञ्जनादे -"॥४।३।७८॥ लुकि स्द', अचकात्, अचकास्ताम्, अचकासु, 'से. स्द्धाम्-"॥४।३।७९॥ इति सेर्लुकि स् वा रुः, अचका.। पक्षे "धुट्"॥२।१।७६॥ इति स् द्, अचकात्, अचका ५ स्तम्, स्त, सम्, स्व, स्म । अचका २ सीत्, सिष्टाम् । अचकासि, अचकासिषाताम् । "धातोरनेक-"॥३।४।४६॥ इत्यामि, चकासा २ चकार, चक्रतु' । चकासाञ्चक्रे । चकास्यात् । चकासिषीष्ट । चकासिता २ । चकासिष्यति, ते । चिचकासिषति । चकासयति । ऋदित्त्वाद् डे न ह्रस्व', अचचकासत् । चका ५ सत्, सतौ, सती, सति, सन्ति कुलानि । चकास्यमानम् । चकासिष्य- ४ न्, न्ती, ती, माणम् । चकासा २ चकृवान्, चक्राणम्। चकासि ५ त्वा, ता, तुम्, त २, वान् ॥ ३२ ॥

शासूक् अनुशिष्टौ, नियोगे। शास्ति, अनुशास्ति। "इसास -"॥४।४।११८॥ इति आस इस्, "नाम्यत-"॥२।३।१५॥ इति षः, शिष्ट शासति, शास्सि, शिष्ठ, शिष्ट, शास्मि, शिष्व', शिष्म । व्यतिशि ३ ष्टे, क्षे, ड्ढ्वे। शिष्यते । शिष्यात्। व्यतिशासीत।शास्तु, शिष्टाम्, शासतु। "शास-"॥४।२।८४॥ इति शाधौ, शाधि, शिष्टम्, शिष्ट, शासा ३ नि, व, म । व्यतिशिष्टाम् । "व्यञ्जनादे -"॥४।३।७८॥ इति दिव्लुक् सो दश्च, अशात्, अशिष्टाम्, अशासु, अशा, अशात्, अशिष्टम् । व्यतिशिष्ट । "शास्त्यसू-"॥३।४।६०॥ इति अङि, अशिष ३ त्, ताम्, न्, अशिषाम । अङि, व्यत्यशि २ षत, षेताम् । अन्वशिषत स्वयमेव । नात्मनेपदेऽङित्येके । व्यत्यशासिष्ट ॥ भाक ॥ अशासि, अशासिषाताम्, अशासि २ ध्वम्, ड्ढ्वम् । शशास, शशासतु, शशासि २ थ, म । शशासिमहे । शिष्यात् । शासिषीष्ट । शासिता । शासिष्यति । अशासिष्यत् । शिशासिषति । शेशिष्यते । शाशा २ सीति, स्ति, शाशिष्ट, शाशासति, शाशा २ सीषि, स्सि, शासि ४ ष्ट, ष्ठ, ष्व, ष्म । शाशिष्यते । हौ, शाधि॥अच० ॥ अशाशा २ सीत्, सिष्टाम् । शासयति । "उपान्त्यस्य-"॥४।२।३५॥ इत्यत्र वर्जनान्न ह्रस्व., अशशासत् । "उपान्त्यस्य"॥४।२।३५॥ इत्यत्र शासेरूदित्करण यङ्लुपि णौ ङे ह्रस्वार्थम्, अशाशसत् । अशाशासदित्यप्यन्ये । शास ५ त्, तौ, ती, ति,

न्ति कुलानि । शासिष्य ४ न्, ती, न्ती, माणम् । शिशिष्वान् । शशासानम् । ऊदित्त्वात् क्त्वि वेट्, शिष्ट्वा, शासित्वा । अनुशिष्य । वेट्त्वान्नेट्; शिष्ट, २ वान् । शिष्टिः । इकिश्तिः, शास्ति. । शासि ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥३३॥

वचक् भाषणे । अनिट् । वक्ति, वक्तः, वचन्ति, अन्तौ वचे. प्रयोग नेच्छन्त्येके; वक्षि, वक्थ., वक्थ, वच्मि, च्वः, च्मः । "यजादिवचे-"॥४।१।७९॥ इति य्वृति, उच्यते । वच्यात् । वक्तु, वक्तात्, वक्ताम्, वचन्तु, वग्धि, वचानि । अवक्, अवक्ताम्, अवचन्, अवक्, अवक्तम्, अव ४ क्त, च, च्व, च्म । "शास्त्यसू"॥३।४।६०॥ इत्यङि, "श्वयति-"॥४।३।१०३॥ इति वोच, अवोच ३ त्, ताम्, न्, अवोच., अवोचाम । अवाचि, अव ९ क्षाताम्, क्षत, क्थाः, क्षाथाम्, ग्ध्वम्, ग्ड्ढ्म्, क्षि, क्ष्वहि, क्ष्महि । "यजादिवश्-"॥४।१।७२॥ इति पूर्वस्य य्वृति, उवाच, "यजादिवचे-"॥४।१।७९॥ इति य्वृति, पश्चात् द्वित्वे च, ऊचतु, ऊचु., उवचिथ, उवक्थ, ऊचथु., ऊच, उवाच, उवच, ऊचि २ व, म । ऊचे, ऊचि २ षे, ध्वे, ऊचिमहे । उच्यात् । वक्षीष्ट । वक्ता । वक्ष्यति । अवक्ष्यत् । विवक्षति । वावच्यते । वाव १२ चीति, क्ति, क्तः, चति, चीषि, क्षि०, ह्रौ, वावग्धि ॥ अद्य० ॥ "शास्त्यसू-"॥३।४।६०॥ इत्यत्र तिव्निर्देशान्न अङ्, अवावचीदित्यादि । शेष पचिवत् । वाचयति । अवीवचत् । विवाचयिषति । वचन् । वचती । उच्यमानम् । वक्ष्य २ न्, माणम् । ऊचिवान् । ऊचानम् । उक्त., २ वान् । उक्ति. । उक्त्वा । प्रोच्य । वक्ता । वक्तुम् । घ्याणि, वाक्यम् । वाच्यमिति तु वचण् भाषणे इत्यस्य रूपम् ॥ ३४ ॥

मृजौक् शुद्धौ । "लघोः"॥४।३।४॥ इति गुणे, पश्चात् "मृजोऽस्य-"॥४।३।४२॥ ॥ इति वृद्धौ, "यजसृज-"॥२।१।८७॥ इति षे, मार्ष्टि, समार्ष्टि । एव नि, प्र, परि, पूर्वोऽपि । मृष्ट, "ऋत स्वरे वा"॥४।३।४३॥ इति वा वृद्धौ, परिमार्जन्ति, परिमृजन्ति, मार्क्षि, मृष्ट., मृष्ट, मार्ज्मि, मृज्व., मृज्मः । व्यतिमृष्टे । मृज्यते । मृज्यात् । व्यतिमार्जीत, व्यतिमृजीत । मार्ष्टु, मृष्टाम्, मार्जन्तु, मृजन्तु, मृड्ढि, मृष्ट, मृष्ट, मार्जानि । व्यतिमृष्टाम् । अमार्ट्, अमृष्टाम्, अमार्जन्, अमार्ट्, अमृ २ ष्टम्, ष्ट, अमार्जम्, अमृ २ ज्व, ज्म । व्यत्यमृष्ट । औदि-

त्वाद्वेटि, अमा ९ र्क्षीत्, र्ष्टाम्, र्क्षुः, र्क्षीः, र्ष्टम्, र्ष्ट, र्क्ष्म, र्क्ष्व, र्क्ष्म । पक्षे, अमा ९ र्जीत्, र्जिष्टाम्, र्जिषुः, र्जीः, र्जिष्टम्, र्जिष्ट, र्जिषम्, र्जिष्व, र्जिष्म। व्यत्यमृष्ट; व्यत्यमार्जिष्ट । अमार्जि, "सिजाशिष-"॥४।३।३५॥ इति कित्त्वे, अमृक्षाताम्, अमार्जिषाताम्; अमृष्ठाः अमार्जिष्ठा , अमृ २ ड्ढ्वम्, ग्ढ्ढ्वम्; अमार्जि २ ध्वम्, ड्ढ्वम्, अमृक्षि, अमार्जिषि । ममार्ज, ममृजतुः, ममार्जतुः, ममृजुः, ममार्जुः, ममार्जिथ, ममृजिम, ममार्जिम । ममृजे, ममार्जे, ममृजाते, ममार्जाते, ममृजिमहे, ममार्जिमहे । मृज्यात् । मृक्षीष्ट, मार्जिषीष्ट । मार्ष्टा, मार्जिता । मार्क्ष्यति, मार्जिष्यति । मिमार्जिषति, मिमृक्षति । मरीमृज्यते । मरी रि र् ३ मृजीति, मरी, रि, र् ३ मार्जीति, मर्, रि, री ३ मार्ष्टि । एव तिवि ९ रूपाणि । मरि गी र् ३ मृष्ट, मरि री र् ३ मृजति, मरि र् री ३ मार्जति । प्रमार्जयति । "ऋद्द-"॥४।२।३७॥ इति वा ऋ, प्रामीमृजत्, प्राममार्जत् । प्रमृज २ न्, ती । प्रमार्जन्, ती । प्रमृज्यमानम् । मार्क्ष्यन् । मार्क्ष्यमाणम् । मार्जिष्य २ न्, माणम् । वेट्त्वान्नेट्, मृष्ट २, वान् । मृष्ट्वा, मार्जित्वा । प्रमार्ज्य । मार्ष्टा, मार्जिता । मार्ष्टुम्, मार्जितुम् । मार्ष्टव्यम्, मार्जितव्यम् । मार्जनीयम् । क्यपि, मृज्यम् । घ्यणि, मार्ग्यम् ॥ ३५ ॥

विदक् ज्ञाने । "तिवां णव -"॥४।२।११७॥ इति वा णवाद्याः, वेद, विदतुः, विदु, वेत्थ, विदथु, विद, वेद, विद्व, विद्म । पक्षे वेत्ति, वित्तः, विदन्ति, वेत्सि, वित्थः, वित्थ, वेद्मि, विद्व, विद्म । "समो गम्-"॥३।३।८४॥ इति कर्मण्यसत्यात्मनेपदे । "तौ मुमो- "॥१।३।१४॥ इत्यनुस्वारानुनासिकौ, संवित्ते, संवित्ते; संविदाते, "वेत्तेर्नवा"॥४।२।११६॥ इति अन्तो वा रति, संविद्रते । पक्षे, "अनतोऽन्त-"॥४।२।११४॥ इत्यति, संविदते, संवित्से, दाथे, द्ध्वे, दे, द्वहे, द्महे । साप्ये तु परस्मैपदम्, संवेत्ति शास्त्रम् । क्ये, विद्यते । विद्यात् । संविदीत । "पञ्चम्याः कृग्"॥३।४।५२॥ इति वा आमि, विदाङ्करोतु, कित्त्वान्न गुणः, विदाङ्कु ५ रुताम्, र्वन्तु, रु, रुतम्, रुत, विदाङ्करवा ३ णि, व, म । संविदाङ्कु ६ रुताम्, र्वाताम्, र्वताम्, रुष्व, र्वाथाम्, रुध्वम्, संविदाङ्कर ३ वै, वावहै, वामहै । पक्षे । वेत्तु, वित्ताम्, विदन्तु, विद्धि, वित्तम्, वित्त, वेदा ३ नि, व, म ।

संविचाम्, संविदाताम् । त्रा रति; संविद्रताम्, सविदताम्, सवित्स्व, सवि २ दाथाम्, द्ध्वम्, सवे ३ दै, दावहै, दामहै । द्य० ॥ अवेत् । अविचाम्, "सिजुविद-"॥४।२।९२॥ इति पुसि; अविदुः । अविदन्, इत्यपि कश्चित् । "सेः सुद्याम्-"॥४।३।७९॥ इति सिवूलुक् दो वा रुश्च । अवेत; अवे', अवित्तम, अवेदम् । समवि ५ त्त, दाताम्, द्रत, दत, त्था. ॥ अद्य० ॥ अवेदीत् । अवे ३ दिष्टाम्, दिषुः, दीः । समवेदिष्ट, समवेदिषाताम् । अवेदि, अवेदि ३ पाताम्; ध्वम्, ड्ढुम् । "वेत्तेः कित्"॥३।४।५१॥ इति वा आमि, विदाञ्च १० कार, कतु', क्रुः, कर्थ, कथु', क, कर, कार, कृव, कृम । विदाम्बभू ९ व, वतुः, वु', विथ, वथुः, व, व, विव, विम । विदामा ९ स, सतु', सु, सिथ, सथु', स, स, सिव, सिम । सविदाञ्च ९ क्रे, क्राते इत्यादि । सविदाबभूव, आस वेत्यादि च । पक्षे; विवेद, विविदतुः, विविदुः, विवेदिथ, विवि २ दथु', द, विवेद, विविदि २ व, म । संविविदे, सविविदिमहे ॥ भाक ॥ विदाच ९ क्रे, क्राते, क्रिरे, कृषे, क्राथे, कृढ्वे, क्रे, कृवहे, कृमहे । विदाबभू १० वे, वाते, विरे, विषे, वाथे, विध्वे, विढ्वे, वे, विवहे, विमहे । विदामा ९ हे, साते, सिरे, सिषे, साथे, सिध्वे, से, सिवहे, सिमहे । सविदा ३ चक्रे, बभूवे, आहे इत्यादि । पक्षे, विविदे, विविदाते, विविदिध्वे । विद्यात् । वेदि २ षीष्ट; षीध्वम् । वेदिता । वेदिष्यति । "रुदविद-"॥४।३।३२॥ इति क्त्वासनोः कित्त्वे, विविदिषति । वेविद्यते । वेविदीति, वेवेत्ति, वेवित्तः, वेविदति; 'वेत्तेर्नवा"॥४।२।११६॥ इत्यत्र तिव्निर्देशाद्यङ्लुपि न रत् । व्यतिवेविदते । "समो गमृ-"॥३।३।८४॥ इत्यात्मनेपदे, संवेविते, सवेविद्राते० ॥ क्ये, वेविद्यते । द्य० ॥ अवे ७ विदीत्, वेत्, वित्ताम्, विदुः, विदीः, वेः, विदम् । अद्य० ॥ अवेवे २ दीत्, दिष्टाम् । "वेत्तेः कित्"॥३।४।५१॥ इत्यत्र तिव्निर्देशाद्यङ्लुपि आम् वा न, किन्तु "धातोरनेक-" ॥३।४।४६॥ इति नित्यं आम्, वेवेदाञ्चकार । वेदयति, निवेदयति । अवीविदत् । विवेदयिषति । सति "वा वेत्ते. क्वसु"॥५।२।२२॥ विद्वान् । विदुषी । पक्षे, विदन् । विदती । वेदिष्य ३ न्, न्ती, ती । सविदानः । विद्यमानम् । वेदिष्यमाणम् । विविद्वान् । सविविदान. । विदितः २, वान् । भावे तु, विदितमनेन । वेदि २, ता, तुम् । विदित्वा । सविद्य ॥ ३६ ॥

हनक् हिंसागत्योः। अनिट् । हन्ति, प्रतिहन्ति, प्रहन्ति, निर्हन्ति, "नेर्ङ्मा-दा-"॥२।३।७९॥ इति णि ,प्रणिहन्ति। "यमिरमि-"॥४।२।५५॥ इति न्लुकि; हत, "गमहन-"॥४।२।४४॥ इत्युपान्त्यलुकि, "हनो घ्न"॥२।१।११२॥ इति घ्नि,घ्नन्ति; "हनो घि"॥२।३।९४॥ इति णत्वनिषेधे; प्रघ्नन्ति। "क्रियाव्यतिहार-"॥३।३।२३॥ इत्यत्र हिंसार्थवर्जनात्परस्मै, व्यतिघ्नन्ति, हसि, हथः, हथ, हन्मि, हन्वः, हन्मः। "वमि वा"॥२।३।८३॥ इति वा णत्वे, प्रहण्मि, प्रहन्मि, प्रहण्व, प्रहन्वः, प्रहण्मः, प्रहन्म , अन्तर्हण्म ,अन्तर्हन्म । "आङो यम"॥३।३।८६॥ इत्यात्मने-पदे कर्मण्यसति, आहते । स्वाङ्गे कर्मणि, आहते शिरः । नेह, आहन्ति शिरः शत्रो । आघ्नाते, आघ्नते, आहसे, आघ्नाथे, आहध्वे, आघ्ने, आह २ न्वहे, न्महे, प्राहण्वहे, प्राहण्महे । क्ये, हन्यते । "हन"॥२।३।८२॥ इति णत्वे, प्रहण्यते, पराहण्यते, निर्हण्यते, अन्तर्हण्यते। हन्यात् । आघ्नीत । हन्तु, हतात्, द्, हताम्, घ्नन्तु, "शास-"॥४।२।८४॥ इति जहि, जहि, हतात् हतम्, हत, हना ३ नि, व, म । आहताम्, आघ्नाताम्, आहस्व ॥ ह्य० ॥ अहन्, अहताम्, अघ्नन्, अहन्, अहतम्, अहत॥ अद्य०॥ "अद्यतन्या वा त्व-"॥४।४।२२॥ इति वधेऽनुस्वारेत्त्वेऽप्यनेकस्वरत्वादिटि, अल्लुकः स्थानित्वेन "व्यञ्जनादेः-"॥४।३।४७॥ इति न वृद्धि, अवधीत्, अवधिष्टाम्, अवधिषु । "वात्मने"॥३।४।६३॥ आवधिष्ट, आवधि ८ षाताम्, षत, षाथाम्, ध्वम्, ड्ढ्वम्, षि०। पक्षे, "हनः सिच्"॥४।३।३८॥ इति सिच किंत्त्वान्नलुक्, "धुड्ह्रस्व-"॥४।३।७०॥ इति सिच् लुक् च, आहत, आहसाताम्, आह ८ सत, थाः, साथाम्, द्ध्वम्, ध्वम्, सि, स्वहि, स्महि ॥ भाक ॥ वा वधादेशे ञिचि, अवधि, इटि, अवधिषाताम्०॥ पक्षे ञिचि, "ञ्णिति घन्"॥४।३।१०१॥ अघानि, "स्वरग्रह-"॥३।४।६९॥ इति वा ञिटि, अघानि ९ षाताम्, षत,ष्ठा , षाथाम्,ध्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि। तत्पक्षे, अह ९ साताम्, सत इत्यादि । जघान, जघ्नतु , जघ्नु , "अडे हि-"॥४।१।३४॥ इति हो घ , जघनिथ, जघन्थ, जघ्नथु , जघ्न, जघान, जघन, जघ्निव, जघ्निम । आजघ्ने, आजघ्निमहे । आशीर्विषये, "हनो वध-"॥४।४।२१॥ इति वधे, वध्यात्, वध्यास्ताम् । आवधिषीष्ट, आवधिषीयास्ताम्०। अत्र विषय-

विज्ञानात् पूर्वमेव घधादेशे इट् सिद्धः; अन्यथा तु विहितव्याख्याने एकस्वरत्वात् इट् न स्यात्। भाक। अञाविति निषेधात् ञिविषये न वधः, घानिषीष्ट। हन्ता; आहन्ता; घानिता। "हन्तृतः-"॥४।४।४९॥ इतीटि; हनिष्यति, ते; घानिष्यते। अहनिष्यत्, त; अघानिष्यत। कर्मकर्त्तरि ञिक्यात्मनेपु प्रसेषु "णिस्नु-"॥३।४।९२॥ इति आत्मनेपदाऽकर्मकत्वाञ्ञिचो "भूषार्थ-"॥३।४।९३॥ इति क्यस्य च निषेधात् आत्मनेपदे; आहते। आवधिष्ट। आहत। आहन्ता। आहनिष्यते वा गौ. स्वयमेव; "णिस्नु-"॥३।४।९२॥ इत्यत्र ञिच्निषेधात् "भूषार्थ-"॥३।४।९३॥ इति ञिट्निषेधो न भवति पृथग्योगात्। आघानिष्ट। आघानिता। आघानिषीष्ट गौ स्वयमेव। "स्वरहन्-"॥४।१।१०४॥ इति दीर्घे, जिघांसति। "हनो घ्नीर्वधे"॥४।३।९९॥ जेघ्नीयते। वधेऽपि विकल्पेन घ्नीत्यन्ये, त्व जेघ्नीयसे, जङ्घन्यसे। घ्नि इत्यकृत्वा घ्नी इति निर्देशाद्यङ्लुप्यपि घ्नी; जेघ्नेति, जेघ्नयीति, जेघ्नीत', जेघ्नियति। क्ये, जेघ्नीयते। हौ, जेघ्नीहि। शेषं जिरथग्नोक्तवत्। अन्येतु यङ्लुपि घ्नीं नेच्छन्ति। वधादन्यत्र तु, गतौ, जङ्घन्यते। जङ्घनीति, जङ्घन्ति। "यमिरमि-"॥४।२।५५॥ इति न्लुकि; "अङे हि-"॥४।१।३४॥ इति घे, जङ्घत, जङ्घ्नति, जङ्घनीषि, जङ्घसि, जङ्घथ, जङ्घथ, जङ्घ ४ नीमि, न्मि, न्व, न्म। क्ये, जङ्घन्यते। हौ, "शासस्-"॥४।२।८४॥ इति जहौ, जहि; नेच्छन्त्यन्ये, जङ्घहि॥ ह्य०॥ अजङ्घन्, अजङ्घनीत्, अजङ्घताम्, अजङ्घ्नु, अजङ्घन्; अजङ्घत०।अद्यतन्यादौ तु पाचिवत्। येतु 'यमिरमि-"॥४।२।५५॥ इति लुगभावं क्ङिति "अहन्पञ्चम"॥४।८।१०७॥ इति हन्तेरपि दीर्घत्वं चेच्छन्ति तन्मते तसि, जङ्घान्त.। थमि, जङ्घान्थ। हौ, जङ्घाहि इत्याद्यपि भवति। "ञ्णिति घात्"॥४।३।१००॥ घातयति। अजीघतत्, अजीघतताम्। घ्नन्, "हनो घि"॥२।३।९४॥ इति न ण, प्रघ्नन्। घ्नती। आघ्नान। हन्यमानम्। हनिष्य ४ न्, ती, न्ती, माणम्। "गमहन"॥४।४।८३॥ इति वेटि, जघ्निवान्, जघन्वान्। आजघ्नान। हत, २ वान्। हत्वा। "यपि"॥४।२।५६॥ इति न्लुकि, प्रहत्य। हन्ता। हन्तुम्। हननीयम्। हन्तव्यम्। घ्यणि, घात्यम्॥ ३७॥

वशक् कान्तौ; इच्छायाम्। "यज-"॥२।१।८७॥ इति प, वष्टि; "वशेर-

यङि"॥४।१।८३॥ इति य्वृति, उष्ट, उशन्ति, वक्षि, उष्ठ, उष्ठ, वश्मि, उश्वः, उश्म । उश्यते । उश्यात् । वष्टु, उष्टात्, उष्टाम्, उशन्तु । "हो धुट्-"॥२।१।८२॥ इति धि., "यज-"॥२।१।८७॥ इति ष, "तवर्गस्य-"॥१।३।६०॥ इति ढ, "तृतीयस्तृ-"॥१।३।४९॥ इति ड, उड्ढि, वशानि । अवट्, ड्, औष्टाम्, औशन्, अवट्, ड्, औष्टम्, औष्ट, अवशम्, औश्व, औश्म । औश्यत । अवाशीत्, अवशीत्, अवाशि, अवशिषाताम् । "यजादिवश्-"॥४।१।७२॥ इति पूर्वस्य य्वृति, उवाश, ऊशतुः, ऊशुः, उवशिथ, ऊशथुः, ऊश, उवाश, उवश, ऊशि २ व, म । ऊशे; ऊशिमहे । उश्यात् । वशिषीष्ट । वशिता २ । वशिष्यति । विवशिषति । वावश्यते । वाव १२ शीति, ष्टि, ष्ट., शति, शीषि, क्षि, ष्ठ., ष्ठ, शीमि, श्मि, श्व, श्म, यङ्लुप्यपि क्ङिति परे य्वृदित्यन्ये, वाव-ष्टि, वोष्ट, वोशति । वाशयति । अवीवशत् । उशन् । उशती । वशिष्यन् । ऊशिवान् । ऊशानम् । उशित, २ वान् । "क्त्वा"॥४।३।२९॥ इति न कित्, वशित्वा । प्रोश्य । वशि २ ता, तुम् ॥ ३८ ॥

असक् भुवि, भू सत्ता । अस्ति, प्रादुरस्ति । "श्नास्त्यो"॥४।२।९०॥ इत्य-लुकि; स्त, प्रादु स्त, अनुस्त; निस्त, सन्ति, "प्रादुरुपसर्ग-"॥२।३।५८॥ इति षे, प्रादु षन्ति, अभिषन्ति, निषन्ति, विषन्ति । शिड् नान्तरेऽपि, नि षन्ति, असि, "अस्ते सि-"॥४।३।७३॥ इति सो लुक्, स्थ, स्थ, अस्मि, स्व, स्मः, प्रादु ष्म, अनुष्म । व्यतिस्ते, "प्रादु"॥२।३।५८॥ इति षे, व्यति २ षाते, षते, "अस्ते सि-"॥४।३।७३॥ इति सो लुकि, व्यतिसे, व्यति ३ षाथे, द्ध्वे, ध्वे । ह्रस्वेति, व्यति ३ हे, स्वहे, स्महे । स्यात् । षत्वे, प्रादु ष्यात्, अभिष्यात्, नि ष्यात्, स्याताम्, स्युः, स्याः, स्यातम्, स्यात, स्याम्, स्याव, स्याम । व्यति-षीत । अस्तु, स्तात्, स्ताम्, सन्तु, "शाससहन-"॥४।२।८४॥ एधि, स्तम्, स्त, असा ३ नि, व, म । व्यति ७ स्ताम्, षाताम्, षताम्, स्व, षा-थाम्, ध्वम्, द्ध्वम्, व्यत्य ३ सै, सावहै, सामहै । "स. सिज-"॥४।३।६५॥ इति ईति, आसीत, "एत्यस्ते"॥४।४।३०॥ इति वृद्धि, आस्ताम्, आसन् । माङा योगे तु न वृद्धिरट्लुक् तु भवेत्, मास्म भवन्त. सन् । आसीः, आस्तम्,

आस्त, आसम्, आस्व, आस्म । व्यत्या १० स्त, साताम्, सत, स्थाः, साथाम्, ध्वम्, द्ध्वम्, सि, स्वहि, स्महि । "अस्तिब्रुवो -"॥४।४।१॥ इति भ्वादेशे, भूयते । अभूत् । बभूव । भूयात् । भविता । भविष्यति । बुभूषति । बोभूयते । एवमशिति भुवत् । सन् । सती । विपन् ॥ ३९ ॥

यङ्लुक्च । सर्वे धातवो यङ्लुबन्ताः कित्करणाददादौ शव्प्रत्ययानर्हाः परस्मैपदिनश्च । बोभवीति, बोभोति इत्यादि । "क्रियाव्यतिहारे-"॥३।३।२३॥ इत्यात्मनेपदे "शीङोरत्"॥४।२।११५॥ इत्यत्र ङिन्निर्देशेन यङ्लुबन्तस्याग्रहणादन्तोरदभावे "अनतोऽन्त-"॥४।२।११४॥ इत्यति; "योऽनेक-"॥२।१।५६॥ इति यत्वे च, व्यतिशेश्यते । "शीङ ए:-"॥४।३।१०४॥ इत्यत्रापि ङित्त्वात्, तित्राशवा इति यङ्लुबन्तस्याग्रहणम् तेन न ए, व्यतिशेशीते । यङ्लुबन्तमात्मनेपदे न प्रयुज्यते इत्येके । भावकर्मणोरात्मनेपदे न प्रयुज्यते इत्यन्ये । यङ्लुबन्तस्य चर्करीत, चर्करीतिश्च पूर्वेषां सञ्ज्ञा । यङ्लुबन्तं छन्दस्येवेति केचित् ॥ ४० ॥

अथात्मनेपदिनः ।

इङ्क् अध्ययने । अनिट् । अधीते, अधीयाते, अत्र इय्; अधीयते, अधीषे, अधीयाथे, अधी ४ ध्वे, ये, वहे, महे । क्ये, अधीयते । अधीयीत । अधीयेत । अधीताम् । ऐवि, अध्ययै । अधीयताम् । अध्यैत, अध्यैयाताम्, इयादेशे वृद्धि; अध्यैयत, अध्यैथाः, अध्यैयाथाम्, अध्यैध्वम्, अध्यैयि, अध्यैवहि, अध्यैमहि । क्ये, अध्यैयत । "वाद्यतनीक्रिया"॥४।४।२८॥ इति वा गीङ्; अध्यगीष्ट, अध्यगी ५ षाताम्, षत, ष्ठा; ड्ढ्वम्, ढ्वम् । पक्षे वृद्धौ, अध्यैष्ट, अध्यै ५ षाताम्, षत, ष्ठाः, ड्ढ्वम्, ढ्वम् । भाक । अध्यगायि, अध्यायि, अध्यगीषाताम्, अध्यैषाताम्, शेषं कर्तृवत् । ञिटि, अध्यगायिषाताम्, अध्यायिषाताम्, अध्यगायि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम् । अध्यायि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम् । "गा परोक्षायाम्"॥४।४।२६॥ अधिजगे, अधिज ३ गाते, गिरे, गिषे । अध्ये २ षीष्ट; षीढ्वम् । अध्यायि ३ षीष्ट, षीढ्वम्, षीध्वम् । अध्येता २, अध्यायिता । अध्येष्यते २; अध्यायिष्यते । वा गीङि, अध्यगीष्यत, अध्यैष्यत । ञिटि,

अध्यगायिष्यत, अध्योयिष्यत । "सनीङश्च"॥४।४।२५॥ इति गमु, "गमोऽनात्मने" ॥४।४।५१॥ इत्यत्र निषेधात्, आत्मनेपदे नेट् । "स्वरहन्-"॥४।१।१०४॥ इति दीर्घश्च; अधिजिगांसते विद्याम् । अधिजिगां ४ स्यते, सिष्यते, समान॰, सिष्य॰ माण । आत्मनेपदाभावे तु इटि, अधिजिगमिषिता शास्त्रस्य । अधिजिगमिषु । अधिजिगमिषि २ त, तव्यम् । इह इट नेच्छन्त्येके तन्मते; अधिजिगांसते । अधिजिगांसिष्यते । अधिजिगांसिता । अधिजिगांसु । अधिजिगांसितव्यमित्या द्येव भवति । "णौ क्रीजीङ "॥४।२।१०॥ इत्यात्त्वे, "अर्त्ति "॥४।२।२१॥ इति पौ, "चल्याहारार्थेङ् "॥३।३।१०८॥ इति परस्मैपदे च, सूत्रमध्यापयति शिष्यम् । ' णौ सन्ङे वा "॥४।४।२७॥ गा ङे, अध्यजीगपत्; अध्यापिपत् । सनि, अधिजिगापयिषति, अध्यापिपयिषति । अधीयान । अध्येष्यमाण । अधीयमानम् । अधिजगान॰ । अधीत , २ वान् । अधीति॰ । अधीत्य । अध्ये २ ता, तुम् । अध्येयम् । क्विपि, अधीत् । "धारीङोऽकृच्छ्रेऽतृश्"॥५।२।२५॥ अधीयन् सिद्धान्तम् । "तृन्नुदन्त-"॥२।२।९०॥ इति न षष्ठी । "इष्टादे "॥७।१।१६८॥ इति क्तान्ताद् इनि, अधीती शास्त्रे, अत्र " व्याप्ये क्तेनः "॥ २।२।९९ ॥इति सप्तमी ॥ ४१ ॥

शीङ्क् स्वप्ने । सेट् । ' शीङ ए शिति"॥४।३।१०४॥ शेते, सशेते, अनुशेते, अतिशेते, "अधे शीङ् "॥२।२।२०॥ इत्याधारस्य कर्मत्वे, ग्राममधिशेते, शयाते, "शीङोरत्"॥४।२।११५॥ इत्यन्तो रति, शेरते, शेषे, शयाथे, शेध्वे, शये, शेवहे, शेमहे । "क्ङिति यि शय्"॥४।३।१०५॥ शय्यते । शयीत । शेताम्, शयाताम्, शेरताम्, शेष्व, शयाथाम् । अशेत, अशयाताम्, अशेरत॰ । इ, अशयि, अशयिष्ट; अशयिषाताम् । अशायि, अशयिषाताम्, अशायिषाताम्, अशयिध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, अशायि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, अशयिषि; अशायिषि । शिश्ये, शिश्याते, शिश्यि २ ढ्वे, ध्वे, शिश्यिमहे । शयिषीष्ट २, शायिषीष्ट, शायि २ षीढ्वम्, षीध्वम्, शायि २ षीढ्वम्, ध्वम् । शयिता २, शायिता । शयिष्यते २; शायिष्यते । शिशयिषते । "क्ङिति यि शय्"॥४।३।१०५॥ शाशय्यते । शेषं शयादेशे व्यञ्जनान्तत्वाद् यङन्तपचवत् । "अत"॥४।३।८२॥ इति अल्लुकि, "योऽ-

शिति"॥४।३।८०॥ इति यलुकि च; शाशयिता। अन्येतु लाक्षणिकव्यञ्जनाद् यलोपं नेच्छन्ति; शाशय्यिता। शेशेति, शेशयीति, शेशीत, शेश्यति, शेशेषि। व्यतिशेरे शीते, श्याते, श्यते। श्येश्यत्। "न डीङ्शीङ्-"॥४।३।२७॥ इत्यत्र ङिन्निर्देशाद्यङ्लुपि क्तयोः कित्त्वमेव; शेशियतः, २ वान्। यपि; संशेशीय। शेष लुपिजिवत्।"अणिगि प्राणि-"॥३।३।१०७॥ इति परस्मैपदे, मैत्र शाययति। अशीशयत्। शयानः। शयिष्यमाण.। शय्यमानम्। शिश्यानः। "न डीङ्-"॥४।३।२७॥ इति किच्चाभावे, शयितः, २ वान्। "श्लिषशीङ्-"॥५।१।९॥ इति साप्यादपि वा कर्त्तरि क्ते; अतिशयितो गुरु शिष्यः। पक्षे कर्मणि क्ते; अतिशायितो गुरुः शिष्येण। शयित्वा। उपशय्य। शयि २ ता, तुम्। शेयम् ॥४२॥

ह्नुङ्क् अपनयने; अपलापे। अनिट्। "मनयवल-"॥१।३।१५॥ इति मोऽनुनासिकानुस्वारौ, किन्ह्नुते, किंह्नुते; अपह्नुते; "श्लाघह्नु-"॥२।२।६०॥ इति चतुर्थ्याम्, चैत्राय निह्नुते, ह्नुवाते, ह्नुवते, ह्नुषे। ह्नूयते। ह्नुवीत। ह्नुताम्। अह्नुत, अह्नुवाताम्, अह्नुवत। अह्नोष्ट, अह्नोषाताम्। अह्नावि, अह्नोषाताम्, अह्नाविषाताम्। जुह्नुवे, जुह्नुवाते। ह्नोषीष्ट, ह्नाविषीष्ट। ह्नोता, ह्नाविता। ह्नोष्यते; ह्नाविष्यते। अपजुह्नूषते। जोह्नूयते। ह्नावयति। अजुह्नुवत्। ह्नुवान। ह्नूयमानम्। ह्नोष्यमाण। ह्नुत, २ वान्। ह्नुत्वा। अपह्नुत्य। ह्नो २ ता, तुम्। ह्नव्यम्। ह्नाव्यम् ॥ ४३ ॥

पूङौक् प्राणिगर्भविमोचने। सूते, सुवाते, सुवते, सूषे, सुवाथे, सूध्वे, सुवे, सूवहे, सूमहे। सूयते। सुवीत। सूताम्, सुवाताम, सुवताम्, सूष्व, सुवाथाम्, सूध्वम्। "सूतेः पञ्चम्याम्"॥४।३।१३॥ इति गुणाभावे, उवि च, सुवै, सुवावहै, सुवामहै। असूत। औदित्वाद्वेटि, असोष्ट, असविष्ट, असावि, असोषाताम, असविषाताम्। ञिटि, असाविषाताम्। सुषुवे, "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति षः, सुषुवाते, सुषुविषे। सोषीष्ट, सविषीष्ट; साविषीष्ट। सोता, सविता, साविता। सोष्यते, सविष्यते, साविष्यते। "ग्रहगुहश्च-"॥४।४।५९॥ इति नेटि, "णिस्तोरेव-"॥२।३।३७॥ इति नियमेन न षत्वे, सुसूषते। सोषूयते। सोषोति, सोषवीति, सोषूतः, सोषुवति। शेषं सूवत्। सोषवाणि, सोषवा २ व, म।

"सूते पञ्चम्याम्"॥४।३।१३॥ इत्यत्र तिव्निर्देशाद्गुणनिषेधो न भवति । सावयति । असूषवत् । णौ सनि, सुषावयिषति । सुवान. । सविष्यमाण. । सूयमानम् । सुषुवाणः । "उवर्णाद्"॥४।४।५८॥ इति किति नेट्, सूतः, २ वान् । सूति । "निर्दु सुवे-"॥२।३।५६॥ ष, नि षूतिः। दु षूतिः । सूत्वा। प्रसूय। सो २ ता, तुम् । सवि २ ता, तुम् ॥ ४४ ॥

पृचैङ्क् सम्पर्चने; मिश्रणे । पृक्ते, सपृक्ते, पृचाते, पृचते, पृक्षे, पृचाथे, पृग्ध्वे, "तृतीय-"॥१।३।४९॥ इति गः, पृचे, पृच्वहे, पृच्महे । पृच्यते । अपर्चिष्ट । पपृचे । पृचिता । सम्पर्चिष्यते। सपिपर्चिषते । परीपृच्यते। पर्पर्क्ति; पर्पृचीति । सम्पर्चयति । अपीपृचत्; अपपर्चत् । पृचानः। पर्चिष्यमाणः । पर्चि २ ता,तुम्। पर्चित्वा। संपृच्य। ऐदित्त्वात् क्तयोर्नेट्; सपृक्त, २ वान्।"ऋदुपान्त्य-" ॥५।१।४१॥ इति क्यपि, सपृच्य ॥ ४५ ॥

ईडिक् स्तुतौ । ईट्टे, ईडाते,ईडते । "ईशीडः"॥४।४।८७॥ इतीटि; ईडिषे, ईडाथे, ईडिध्वे, ईडे, ईड्वहे, ईड्महे । ईड्यते । ईडीत । ईट्टाम्, ईडाताम्, ईडताम्, ईडिष्व, ईडाथाम्, ईडिध्वम्, ईडै, ईडावहै, ईडामहै । ऐट्ट, ऐडाताम्, ऐडत, ऐट्ठाः, ऐडाथाम्, ऐड्ढ्वम्, ऐडि, ऐड्वहि, ऐड्महि । ऐडिष्ट, ऐडिषाताम्० ऐडि । ईडा ३ चक्रे, बभूव, आस । ईडिषीष्ट । ईडिता । ईडिष्यते । ऐडिष्यत । ईडिडिषते । ईडयति । ऐडिडत् । ईडान । ईडिष्यमाण । ईडाञ्चकाणः । ईडि ५ ता, तुम्, त्वा, त, २ वान् । घ्यणि, ईड्यः ॥ ४६ ॥

ईरिक् गतिकम्पनयो । ईर्त्ते, ईराते, ईरते, ईर्षे, ईराथे, ईर्ध्वे। ईर्यते । ईरीत।ईर्त्ताम्, ईराताम्, ईरताम्,ईर्ष्व, ईराथाम्, ईर्ध्वम्, ईरै।ऐर्त्त,ऐराताम्, ऐरत, ऐर्थाः । ऐरिष्ट, ऐरिषाताम्। ऐरि। ईराञ्चक्रे। ईरिषीष्ट। ईरिता। ईरिष्यते । ऐरिष्यत।ईरिरिषते । ईरयति, ते। ऐरिरत् । ईराण । ईरि ५ ता, त्वा, तुम्, त, २ वान्। घ्यणि, ईर्य ॥ ४७ ॥

ईशिक् ऐश्वर्ये । "स्मृत्यर्थ-"॥२।२।११॥ इति वा कर्मण कर्मत्वे "शेषे"॥ २।२।८१॥ इति षष्ठ्याम्, भुव ईष्टे, भुवमीष्टे, ईशाते, ईशते, "ईशीड -"॥४।४।८७॥ इतीटि, ईशिषे, ईशाथे, ईशिध्वे। ईश्यते। ईशीत। ईष्टाम्, ईशाताम्, ईशताम्

ईशिष्व, ईशिध्वम्, ईशै। ऐष्ट, ऐशाताम्, ऐशताम्, ऐष्ठाः, ऐशाथाम्। "यज-" ॥२।१।८७॥ इति षे, "तवर्ग-"॥१।३।६०॥ इति धो ढे, "तृतीय-"॥१।३।४९॥ इति डे, ऐड्ढ्वम्, ऐशि, ऐश्वहि। ऐशिष्ट, ऐशिषाताम्। ऐशि। ईशा ३ चक्रे, बभूव, आस। ईशिषीष्ट। ईशिता। ईशिष्यते। ऐशिष्यत। ईशिशिषते। ईशयति। ऐशिशत्। ईशानः। ईशिष्यमाणः। ईशाञ्चक्राणः। ईशि ५ ता, तुम्, त्वा, तः, २ वान्॥ ४८॥

वसिक् आच्छादने। वस्ते पटम्; वसाते, वसते, वस्से, "सो धि-"॥४।३।७२॥ इति वा सलुकि, वध्वे, वद्ध्वे। वस्यते। वसीत। वस्ताम्, वसाताम्, वसताम्। अवस्त, अवसाताम्, अवसत, अवस्थाः, अव २ ध्वम्, द्ध्वम्। अवसिष्ट। अवासि, अवसिषाताम्। "न शस"॥४।१।३०॥ इति न ए, ववसे, ववसाते। वसिषीष्ट। वसिष्यते। वसानः। वसिष्यमाणः। ववसानः। वसि ५ ता, तुम्, त्वा, तः, २ वान्॥ ४९॥

आङ् शासूकि इच्छायाम्। "क्वौ"॥४।४।११९॥ इत्येव सिद्धे; "आङ"॥ ४।४।१२०॥ इति वचनम्, आङः परस्य क्वावेवेति नियमार्थम्; तेन शास्तेराशो न इस्, आयुराशास्ते, आशा ९ साते, सते, स्से, साथे, ध्वे, द्ध्वे, से, स्वहे, स्महे। आशास्यते। आशासीत। आशास्ताम्, आशास्व, आशाध्वम्, आशाद्ध्वम्। आशास्त, आशासि २ ष्ट, षाताम्। आशासि। आशशासे, आशशासिषे। आशासि ३ षीष्ट, ता, ष्यते। आशिशासिषते। आशाशास्यते। आशाशा २ सीति, स्ति। आशासयति। "उपान्त्यस्य-"॥४।२।३५॥ इत्यत्र शास्तेरेव निषेधात् ह्रस्वे, आशीशसत्। अस्यापि ह्रस्वनिषेध इत्यन्ये, आशशासत्। आशासानः। आशासिष्यमाण। आशासि २ ता, तुम्। ऊदित्वात् क्त्वि वेट्; अत एवोत्तरपदान्तस्यापि क्त्वो न यप्, यपि हि इट्प्राप्तिरेव नास्ति। आशास्त्वा, आशासित्वा। यपमिच्छन्त्येके, आशास्य। वेट्त्वात् क्तयोर्नेट्, आशास्त, २ वान्। मतेनेटि; आशासितः, २ वान्॥५०॥

आसिक् उपवेशने। आस्ते, उदास्ते, उपास्ते। "कालाध्व-"॥२।२।२३॥ इति कर्मत्वे, मासमास्ते। "अधेः शीङ्-"॥२।२।२०॥ इत्याधारस्य कर्मत्वे, ग्राम-

मध्यास्ते, आसाते, आसते आस्से, आसाथे, आद्ध्वे, आध्वे; "सो धि-"॥४।३।७२॥ इति वा सलुकि, आसे, आस्वहे, आस्महे । आस्यते । आसीत, आसीयाताम्, आसीरन् । आस्ताम्, आसाताम्, आसताम् । आस्त, आसाताम्, आसत । आसिष्ट, आसिषाताम्, आसिषत । आसि । "दयाय"॥३।४।४७॥ इत्यामि; आसा३ चक्रे, बभूव, आस। पर्युपासां ३ चक्रे । आसि ३ षीष्ट, ता, ष्यते। अध्या सिसिषते। "अणिगि प्राणि-"॥३।३।१०७॥ इति परस्मैपदे, आसयत्यन्यम् । आसिसत् । आनशि, "आसीन."॥४।४।११५॥ इति निपातनादासीन; उदासीन, उपासीन, अध्यासीन । आसिष्यमाणः । आस्यमानम् । आसांचक्राण । आसित, २ वान् । आसि ३ ता, तुम्, त्वा । उपास्य ॥ ५१ ॥

णिसुकि चुम्बने । निंस्ते, णपाठात "अदुरुपसर्ग-"॥२।३।७७॥ इति णत्वे, प्रणिंस्ते; परिणिंस्ते । वा णत्वमित्यन्ये । प्रणिंस्ते, प्रनिंस्ते, निंसाते; निंसते, "नाम्यन्तरथा"॥२।३।१५॥ इत्यत्र शिटा नकारेण चान्तरेपीति प्रत्येक वाक्यपरिसमाप्तेरुभयव्यवधाने न षत्वम्, निंस्से, निंसाथे । "सो धि"॥४।३।७२॥ इति वा सोलुकि, निंध्वे, निंद्ध्वे, निंसे, निंस्वहे, निंस्महे । निंस्यते । अनिंसिष्ट, अनिंसिषाताम । निनिंसे, प्रणिनिंसे । निंसिष्यते । निनिंसिषते । नेनिंस्यते । नेनिंसीति । निंसयति । अनिनिंसत । निंसित । निंसि ३ त्वा, तुम्, तव्यम् । घ्यणि, निंस्यम् । "निंसनिक्ष-"॥२।३।८४॥ इति कृति वा णत्वे; प्रणिंसनम्, प्रनिंसनम् ॥ ५२ ॥

चक्षिक् व्यक्तायां वाचि । "संयोगस्यादौ-"॥२।१।८८॥ इति क्लुकि, आचष्टे, व्याचष्टे, प्रत्याचष्टे, आच ४ क्षाते, क्षते, क्षे, क्षाथे । क्लुकि, "तृतीय'॥ १।३।४९॥ इति षस्य डत्वे, आच ४ ड्ढ्वे, क्षे, क्ष्वहे, क्ष्महे । अशिति, "चक्षो वाचि-"॥४।४।४॥ इति क्शागूख्यागौ । आक्शायते । "शिट्याद्यस्य-"॥१।३।५९॥ इति क खत्वे, आख्शायते। आख्यायते। एवमग्रेऽपि सर्वत्र त्रीणि २ रूपाणि । आचक्षी ३ त, याताम्, रन् । आचष्टाम्, आच ७ क्षाताम्, क्ष्व, क्षाथाम्, ड्ढ्वम्, क्षै० । आचष्ट, आचक्षाताम्, आचक्षत, आच ६ ष्ठा, क्षाथाम्, ड्ढ्वम्, क्षि० । गित्वादुभयपदे, आक्शा ९ सीत्, सिष्टाम्, सिषु ०। "शास्त्यसू-"॥३।४।६०॥ इत्य-

ङि; आख्यत, आख्यताम्। आक्शास्त; आख्यत, आक्शासाताम्, आख्येताम्, आक्शासत; आख्यन्त। आक्शायि, आख्यायि, आक्शासाताम्, क. ख्ले, आख्शासाताम्; ञिटि, आक्शायिपाताम्, आख्शायिपाताम्, आख्यासाताम्, आख्यायिपाताम्। एवमग्रेऽपि कर्मणि आशीःप्रभृतौ पाड्रूप्यमवगन्तव्यम्। आक्शा २ ध्वम्, द्ध्वम्; आक्शायि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्; आख्या २ ध्वम्, द्ध्वम्; आख्यायि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्। "नवा परोक्षायाम्" ॥४।४।५॥ क्शाग्ख्यागौ; आचक्शौ; आचख्शौ; आचख्यौ। आचक्शे, आचख्शे; आचख्ये। पक्षे, आचचक्षे, आचच ३ क्षाते, क्षिरे, क्षिषे। वा ए, आक्शेयात्, आक्शायात्, आख्येयात्, आख्यात्। आक्शासीष्ट, आक्शायिषीष्ट; आख्यासीष्ट, आख्यायिषीष्ट। आक्शाता, आख्याता। आक्शास्यति, ते, आख्यास्यति, ते। आचिक्शासति, ते, आचिख्यासति, ते। आचाक्शायते; आचाख्यायते। आचा २ क्शेति, क्शाति; आचा २ ख्येति, ख्याति। शेष ञैङ्वत्। आक्शापयति, आख्यापयति। आचिक्शपत्; आचिख्यपत्। आचक्षाण। आचक्शिवान्, आचख्यिवान्। आचक्शान; आचख्यान; आचचक्षाण। क्शा ४ ता, तुम्, तः, २ वान्। ख्या ४ ता, तुम्, तः, २ वान्। क्शात्वा, ख्यात्वा। आक्शाय, आख्याय। आक्शातव्यम्, आख्यातव्यम्। आक्शेयम्, आख्येयम्। उभयत्र विषयसप्तमीविज्ञानात् प्रागादेशो ततो य.। वागर्थस्यैव क्शाग्ख्यागौ, तेन वर्जनार्थाद् घ्यणि सचक्ष्या दुर्जना, वर्जनीया इत्यर्थः। परिसञ्चक्ष्याः। क्त्वि, सञ्चक्ष्य गतः। भक्षणार्थात्तु क्त्वादौ, चक्षि २ त्वा, ता, तः। चक्ष्यम्॥ ५३ ॥

अथोभयपदिनः।

ऊर्णुग्क् आच्छादने। "वोर्णोः"॥४।३।६०॥ इति औत्त्वे, प्रोर्णौति, प्रोर्णोति, प्रोर्णुतः, प्रोर्णुवति, प्रोर्णौषि, प्रोर्णोषि, प्रोर्णुथः। प्रोर्णुते, प्रोर्णुवाते। प्रोर्णूयते। "न दिस्योः"॥४।३।६२॥ इति न औत्त्वम्, प्रौर्णोत्, प्रौर्णोः, प्रौर्णुतम्, "वोर्णुग.-"॥४।३।४६॥ इति वा वृद्धौ, "वोर्णोः"॥४।३।१९॥ इतीटो वा ङित्त्वे च, प्रौर्णावीत्, प्रौर्णवीत्, प्रौर्णुवीत्। प्रौर्णविष्ट, प्रौर्णुविष्ट। प्रौर्णावि। "गुरुना-

स्य"॥३।४।४८॥ इत्यत्रोर्णोर्विवर्जनात् आमभावे, प्रोर्णुनाव, प्रोर्णुनविथ, प्रोर्णुनुविथ; इटो वा ङित्त्वेऽपि अनित्परोक्षाया' कित्त्वाद्गुणाभावे, प्रोर्णुनुविम। प्रोर्णुनुवे। प्रोर्णूयात्। प्रोर्णविषीष्ट, प्रोर्णुविषीष्ट; प्रोर्णाविषीष्ट। एवमग्रेऽपि भावकर्मणो ३३। "इवृध-"॥४।४।४७॥ इति वेटि वा ङित्त्वे, प्रोर्णुनविष २ ति, ते; प्रोर्णुनुविष २ ति, ते, पक्षे, प्रोर्णुनूषति, ते। एवं ६॥ "अटयर्त्ति-"॥३।४।१०॥ इति यङि, प्रोर्णोनूयते। प्रौर्णोनोति, अहेरिति निषेधान्न औ.। अन्येत्विच्छन्ति, प्रोर्णोनीति, प्रौर्णोनवीति, प्रोर्णोनुत, प्रोर्णोनुवति, इत्यादिमूलप्रकृतिवत्। अद्यतन्या तु 'वोर्ण्णुगः सेटि" ॥४।३।४६॥ इत्यत्र गिन्निर्देशाद् यङ्लुपि न विकल्पेन वृद्धि', किन्तु अङित्त्वपक्षे "सिचि परस्मै-"॥४।३।४४॥ इत्यनेन नित्य वृद्धि, प्रौर्णोनावीत्। ङित्वेतु, प्रौर्णोनुवीत्।"वोर्ण्णो"॥४।२।१९॥ इत्यत्र टि अनुबन्धाभावाद्यङ्लुबन्तस्यापि ग्रहणम्।"ऋवर्णश्र्यू-"॥४।४।५७॥ इत्यत्र गिलाद्यङ्लुपि इट् स्यादेव, ऊर्णोनुवित। ऊर्णोनवि ३ त्वा, ता, तुम्, ऊर्णोनुवि ३ त्वा, ता, तुम। प्रोर्णावयति। प्रोर्णुनवत्, अत्र स्वरादित्वाद् द्वित्वे पूर्वस्य "लघो -"॥४।१।६४॥ इति न दीर्घ'। प्रोर्णुनावयिषति। "ऋवर्णश्र्यू-"॥४।४।५७॥ इति नेटि, प्रोर्णुत, २ वान्। ऊर्णुत्वा। प्रोर्णुत्य। प्रोर्णवि २ ता, तुम्। प्रोर्णुवि २ ता, तुम् ॥ ५४ ॥

अथ २० अनिटः।

ष्टुंग्क् स्तुतौ। स्तौति, "उपसर्गात्सुग्-"॥२।३।३९॥ इति षत्वे, अभिष्टौति, "यङ्तुरु-"॥४।३।६४॥ इतीति, स्तवीति, स्तुत, स्तुवन्ति, स्तौषि, स्तवीषि, स्तुथ, स्तुथ, स्तौमि, स्तवीमि, स्तुव, स्तुम। स्तुते, स्तुवाते, स्तुवते, स्तुषे, स्तुवाथे, स्तुध्वे, स्तुवे, स्तुवहे, स्तुमहे। स्तूयते। स्तूयात्। स्तुवीत। स्तौतु, स्तवीतु। स्तुताम्। अस्तौत्, अस्तवीत्, अभ्यष्टौत, अभ्यष्टवीत्। परिपूर्वस्य, "स्तुस्वञ्जश्च-"॥२।३।४९॥ इत्यड्व्यवाये वा षत्वे, पर्यष्टौत्, पर्यस्तौत्। पर्यष्टवीत्, पर्यस्तवीत्, अस्तुताम्, अस्तुवन्, अभ्यष्टुवन्, अस्तौ, अस्तवी। अस्तुत, अस्तुवाताम्, अस्तुवत, अस्तुध्वे। "धूगृसुस्तो."॥४।४।८५॥ इतीटि,

अस्तावीत्, अस्ताविषाताम्। अस्तोष्ट, अस्तोषाताम्। अस्तावि, अस्तोषाताम्, अस्ताविषाताम्। "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति षे, तुष्टाव, तुष्टुवतुः, तुष्टुवुः; "स्क्रसृ"॥४।४।८१॥ इत्यत्र स्तोर्वर्जनान्नेट्, तुष्टोथ, तुष्टुवथुः, तुष्टुव, तुष्टाव, तुष्टव, तुष्टुव, तुष्टुम। तुष्टुवे; तुष्टुध्वे; तुष्टुमहे। स्तूयात्। स्तोषीष्ट; स्ताविषीष्ट। स्तोता २; स्ताविता। स्तोष्यति, ते, स्ताविष्यते। तुष्टूषति, ते। अभितोष्टूयते। तोष्टवीति, तोष्टोति। स्तावयति। अभ्यतुष्टवत्। तुष्टावयिषति। अन्ये सन्वर्जे द्वित्वे सति उत्तरस्यापि षत्व नेच्छन्ति, अभितुस्ताव। णौ ङे, अभ्यतुस्तुवत्। अभितोस्तूयते इत्यादि। स्तुवन्। स्तुवती। स्तोष्य २ न्, माण। स्तूयमानम्। स्तुतः, २ वान्। स्तुत्वा। अभिष्टुत्य। स्तो २ ता, तुम्। तादौ वेडित्यन्ये तन्मते, स्तवि ३ ता, तुम्, तव्यम् इत्यपि। क्यपि, स्तुत्यः, अभिष्टुत्यः॥ ५५॥

ब्रूग्क् व्यक्तायां वाचि। "ब्रूगः पञ्चानाम्-"॥४।२।११८॥ इति ब्रूग आह, तिवा णवादयश्च; आह, आहतुः, आहुः, "नहाहोर्द्धतौ"॥२।१।८५॥ इति ते, आत्थ, आहथुः। पक्षे, "ब्रूतः परादिः"॥४।३।६३॥ इतीति, ब्रवीति ब्रूत, ब्रुवन्ति, ब्रवीषि, ब्रूथः, ब्रूथ, ब्रवीमि, ब्रूव, ब्रूम। ब्रूते, ब्रुवाते, ब्रुवते। ब्रूयात्। ब्रवीत्। ब्रवीतु; ब्रवाणि। ब्रूताम्। अब्रवीत्। अब्रूत। "अस्तिब्रुवो-"॥४।४।१॥ इत्यशिति वच्, "यजादिवचेः"॥४।१।७९॥ इति य्वृत्, उच्यते। "शास्त्यसू-"॥३।४।६०॥ इति अङि, "श्वयत्यसू-"॥४।३।१०३॥ इति वोच, अवोचत्। अवोचत, अवोचेताम्। अवाचि, अवक्षातामित्यादि पचिवत्। "यजादिवश्-"॥४।१।७२॥ इति पूर्वस्य य्वृति, उवाच, "यजादिवचेः-"॥४।१।७९॥ इति य्वृति द्वित्वे च, ऊचतुः, उवचिथ, उवक्थ, ऊचिम। ऊचे, ऊचिमहे। उच्यात्। वक्षीष्ट। वक्ता २। वक्ष्यति, ते। किरादित्वाञ्ञिक्यरयोरभावे कर्मकर्त्तरि, ब्रूते, अवोचत वा कथा स्वयमेव। विवक्षति, ते। वावच्यते। वाव २ चीति, क्ति॥ अथ०॥ "शास्त्यसू-"॥३।४।६०॥ इत्यत्र तिव्निर्देशान्न अङ्, अवावचीदित्यादि। वाचयति। अवीवचत्, त। ब्रुवन्। ब्रुवती। ब्रुवाणः। उच्यमानम्। वक्ष्य २ न्, माणम्। ऊचिवान्, अनूचिवान्। ऊचानः। उक्तः, २ वान्। उक्त्वा। वक्ता। वक्तुम्॥५६॥

द्विषींक् अप्रीतौ। द्वेष्टि, द्विष्टः, द्विषन्ति, द्वेक्षि, द्विष्ठः, द्विष्ठ, द्वेष्मि,

अजिह्रे: । अह्रे२ पीत, ष्टाम् । अह्रायि, अह्रेषाताम्, अह्रायिषाताम् । "भीह्री-"॥ ३।४।५०॥ इति वा आमि, जिह्रयाञ्चकार । जिह्रयाञ्चक्रे । जिह्राय, जिह्रियतु, जिह्रियु:, जिह्रेथ, जिह्रयिथ, जिह्रियिम । जिह्रिये । ह्रीयात् । ह्रेषीष्ट, ह्रायिषीष्ट । ह्रेता २; ह्रायिता । ह्रेष्यति, ते, ह्रायिष्यते । जिह्रीषति । जेह्रीयते । जेह्रयीति, जेह्रेति, जेह्रीतः, जेह्रियति । "अर्त्तिरी"॥४।२।२१॥ इति पौ, "पुस्पौ"॥४।३।३॥ इति गुणे, ह्रेपयति । अजिह्रिपत् । जिह्रेपयिषति । जिह्रिय २ त्, ती । ह्रेष्यन् । जिह्रयाचकृवान् । जिह्रीवान् । "ऋह्री-"॥४।२।७६॥ इति वा न., ह्रीणः, २ वान्; ह्रीतः, २ वान् । ह्रीत्वा । ह्रे ४ ता, तुम्, तव्यम्, यम् ॥ ६४ ॥

पृक् पालनपूरणयो. । "पृभृ-"॥४।१।५८॥ इति पूर्वस्येत्वे, व्यापिपर्त्ति, पिपृतः, पिप्रति, पिपर्षि, पिपृथ, पिपृथ, पिपर्मि, पिपृव, पिपृम । प्रियते । पिपृयात् । पिपर्तु, पिप्रतु । अपिप, अपिपृताम्, अपिपरु., अपिप । अपार्षीत् अपार्ष्टाम्, अपार्षु, अपार्षी । अपारि, अपृषाताम्, अपारिषाताम् । पपार, पप्रतु:, पप्रु, पपर्थ, "ऋत"॥४।४।७९॥ इति नेट्, "स्कसृ-"॥४।४।८१॥ इतीटि, पप्रि २ व, म । पप्रे । प्रियात् । पृषीष्ट, पारिषीष्ट । पर्त्ता २, पारिता । 'हनृत -"॥४।४।४९॥ इतीटि, परिष्यति, ते, पारिष्यते । पुपूर्षति । पेप्रीयते । परि री र् ३ परीति । पर् रि री ३ पर्त्ति, पर्पृत, पर्प्रति । पारयति । अपीपरत् । पिप्र २ त, ती । परिष्यन् । प्रियमाणम् । पपृवान् । पप्राणम् । व्यापृत, २ वान् । पर्त्ता । पर्त्तुम् । पृत्वा । व्यापृत्य । व्यापर्त्तव्यम् ॥ ६५ ॥

ऋक् गतौ । "हव -"॥४।१।१२॥ इति द्वित्वे, "पृभृ-"॥४।१।५८॥ इति पूर्वस्येत्वे, "पूर्वस्यास्वे-"॥४।१।३७॥ इतीयि, "नामिनो"॥४।३।१॥ इति गुणे, इयर्त्ति, इयृत, इयृति, इयर्षि, इयृथ, इयृथ, इयर्मि, इयृव., इयृम ।"समोगम्-"॥३।३।८४॥ इत्यात्मनेपदे, समियृते । आप्ये तु सति परस्मैपदे, समियर्त्ति मित्रम् । समियाते, समियूते, समियृषे । क्ये "क्ययङ"॥४।३।१०॥ इति गुणे, अर्यते । इयृयात् । समियूीत । इयर्तु, इयृताम्, इयूतु, इयृहि, इयराणि । समियृताम् । ऐय, ऐयृताम्, ऐयरु, ऐय, ऐयरम् । ऐयृत, समैयृत । अद्य० ॥ आरत्, आरताम् । आर्षीत्, आर्ष्टामित्यादि सर्व ऋ प्रापणे इत्यस्यैव ज्ञेयम्, पर शत्रानशो ।

इयूत्। इयूती । समियूाण । अर्यमाणम् ॥ ६६ ॥

ओहाङ्क् गतौ । "ह्व-"॥४।१।१२॥ इति द्वित्वे, "पृभृ-"॥४।१।५८॥ इति पूर्वस्येत्वे, "एषाम्-"॥४।२।९७॥ इतीत्वे च, जिहीते; उज्जिहीते, उत्पद्यते इत्यर्थः । सञ्जिहीते, जिहाते, जिहते, जिहीषे, जिहाथे, जिहीध्वे, जिहे, जिही २ वहे, महे । "ईर्व्यञ्जने-"॥४।२।९७॥ इत्यत्र हाकोऽनुवृत्तिर्न हाङः, तेनास्य क्ङिति अशिति ईत्वाभावे, हायते । जिहीत, जिहीयाताम् । जिहीताम्, जिहाताम्, जिहताम्, जिहीष्व, जिहाथाम्, जिहीध्वम्, जिहै० । अजिहीत, अजिहाताम्, अजिहत । अहास्त, अहासाताम्, अहासत, अहास्थाः । अहायि, अहासाताम्, अहायिषाताम् । सजहे, सजहिमहे । हासीष्ट, हायिषीष्ट । हाता; हायिता । हास्यते; हायिष्यते । जिहासते । जाहायते । जाहेति, जाहाति, जाहीत, जाहति । हापयति । अजीहपत् । जिहापयिषति । जिहानः । हायमानम् । जहानः । हास्यमानः । ओदित्त्वात्, "सूयत्य-"॥४।२।७०॥ इति नः; हानः, २ वान् । "स्वरात्"॥२।३।८५॥ इति णे, प्रहाण., २ वान् । हात्वा । प्रहाय । हाता । हातुम् । हानीयम् । हेयम् ॥ ६७ ॥

माङ्क् मानशब्दयोः। "पृभृ-"॥४।१।५८॥ इति पूर्वस्येत्वे,"एषाम्-"॥४।२।९७॥ इतीत्वे च, मिमीते धान्य चैत्र । "नेर्मा-"॥२।३।७९॥ इति णिः, प्रणिमिमीते; प्रमिमीते, निर्मिमीते; अनुमिमीते, मिमाते, मिमते, मिमीषे, मिमाथे, मिमीध्वे, मिमे, मिमीवहे, मिमीमहे । "ईर्व्यञ्जने-"॥४।२।९७॥ इतीत्वे, मीयते । मिमीत । मिमीताम्, मिमाताम्, मिमताम्, मिमीष्व, मिमाथाम्, मिमीध्वम्, मिमै, मिमा २ वहै, महै । अमिमीत । अटो धात्ववयवत्वेन व्यवधायकत्वाभावाण्णत्वे, प्रण्यमिमीत, अमिमाताम्, अमिमत, अमिमीथाः । अमास्त, अमासाताम्, अमासत, अमा ४ स्थाः, साथाम्, द्ध्वम्, ध्वम् । अमायि, अमासाताम्, ञिटि, अमायिषाताम्, अमा २ ध्वम्, द्ध्वम्, अमायि ३ ड्ढ्वम्, द्वम्, ध्वम् । ममे, ममाते, ममिमहे । अकित्त्वाद् "गापास्था-"॥४।३।९६॥ इति नैत्वे, मासीष्ट, मायिषीष्ट । माता; मायिता । मास्यते, मायिष्यते । "मिमी-"॥४।१।२०॥ इतीति, प्रमित्सते । "ईर्व्यञ्जने"॥४।३।९७॥ इति ई, मेमीयते । मामाति, मामेति, मामीत., माम

ति । शेष स्थास्थाने । मापयति । अमीमपत् । मिमापयिषति । मिमान ; "स्व-राद्"॥२।३।८५॥ इति कृतो नस्य णत्वे, निर्मिमाण. । मास्यमानः । मीयमानम्; निर्मीयमाणम्, प्रमीयमाणम् । ममान । किति तादौ, "दोसोमास्थ इ."॥४।४।११॥ प्रमित, २ वान् । मित्वा । प्रमाय । प्रमा २ ता, तुम् । प्रमेयम् । प्रमाणीयम् । प्रमातव्यम् । प्रमिति ॥ ९८ ॥

डुदाग्क् दाने । "ह्व "॥४।१।१२॥ इति द्वित्वे, ददाति, प्रणिददाति । "एषामी.-"॥४।२।९७॥ इत्यत्र दावर्जनाद् ईत्वाभावे, "श्नश्चात."॥४।२।९६॥ इत्या-ल्लुकि, दत्त., "अन्तो नो लुक्"॥४।२।९४॥ ददति, ददासि, दत्थ , दत्थ, ददामि, दद्वः, दद्मः । दत्ते, प्रणिदत्ते । आङ्पूर्वादफलवत्यपि, "दागोऽस्वास्य-"॥३।३।५३॥ इत्यात्मनेपदे, विद्यामादत्ते । स्वास्यप्रसारविकाशे तु परस्मै, उष्ट्रो मुखं व्याददाति, प्रसारयतीत्यर्थः । कूलं व्याददाति । विपादिका व्याददाति, विकसतीत्यर्थः । ददाते, ददते, दत्से, ददाथे, दद्ध्वे, ददे, दद्वहे, दद्महे । "ईर्व्यञ्जने"॥४।३।९७॥ दीयते । दद्यात् । ददीत । ददातु, दत्तात्, दत्ताम्, ददतु, "हौ द "॥४।१।३१॥ इत्येनं च द्वि', देहि, दत्तात्, दत्तम्, दत्त, ददानि । दत्ताम्, ददाताम्, ददताम्, दत्स्व, ददा-थाम्, दद्ध्वम्, ददै, ददा २ वहै, महै । अददात्, अदत्ताम्, "द्व्युक्त" ॥४।२।९३॥ इत्यन पुसि, अददु', अद ६ दा', त्तम्, त्त, दाम्, द्व, द्म । अदत्त, अददाताम्, अददत, अदत्था, अददाथाम्, अदद्ध्वम्, अददि, अदद्वहि । अदीयत ॥ अद्य० ॥ "पिबैति-"॥४।३।६६॥ इति सिच्लुपि, अदात्, अदाताम्, "मिविद-"॥४।२।९२॥ इत्यन. पुसि, "इडेत्"॥४।३।९४॥ इत्याल्लुकि, अदु, अदा, अदातम्, अदात, अदाम्, अदाव, अदाम । "इश्च स्थाद "॥४।३।४१॥ इति सिच कित्त्वे द इत्वे, "धुड्ह्रस्व-"॥४।३।७०॥ इति सिच्लुकि च, अदित, अदिषाताम्, अदिषत, अदि ७ था, षाथाम्, ड्ढ्वम्, ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि ॥ भाक ॥ अदायि, अदिषाताम्, अदायिषाताम्, अदि २ ड्ढ्वम्, ढ्वम्, अदायि ३ ड्ढ्वम्, ढ्वम्, ध्वम् । ददौ, ददतु, ददु, ददाथ, ददिथ, ददथु, दद, ददौ, ददिव, ददिम । ददे, ददाते, ददिध्वे, ददि-महे । क्ङिति, "गापा-"॥४।३।९६॥ इत्ये, देयात् । दासीष्ट, दायिषीष्ट, दासीध्वम्,

दायि २ षीध्वम्, षीढ्वम्। दाता २, दायिता । दास्यति, ते; दायिष्यते। अदास्यत्, त, अदायिष्यत ।"मिमी-"॥४।१।२०॥ इतीति; दित्सति, ते ।"ईर्व्यञ्जने-"॥४।३।९७॥ देदीयते । दादाति, दादेति, "श्नश्च-"॥४।२।९६॥ इत्याल्लुकि, दात्तः, ददति, दादेषि, दादासि, दात्थः, दात्थ, दादेमि, दादामि, दाद्व, दाद्मः । क्ये, दादीयते ॥ स० ॥ दाद्यात्। दादातु, दादेतु, दात्ताम्, ददतु, देहि, दात्तात्, दात्तम्, दात्त, दादानि । अदादात्, अदादेत्, अदात्ताम्, अदादुः, अदादा:, अदादेः, अदात्तम्, अदात्त, अदादाम्, अदाद्व, अदाद्म । अद्यतन्यादौ सर्वे स्थावत्, तद्दिग् लिख्यते । अदादात्, अदा २ दाताम्, दुः ॥ भाक ॥ अदादायि; ञिटि, अदादायिषाताम्, इटि, "इडेत्-"॥४।३।९४॥ इत्याल्लुकि, अदादिषाताम्। दादाञ्चकारेत्यादि । "गापा-"॥४।३।९६॥ इत्ये, दादेयात् । दादायिषीष्ट, दादिषीष्ट। दादिता २, दादायिता। दादिष्यति, ते, दादायिष्यते । दादि ६ त्वा, तुम्, ता, तः, २ वान्, तव्यम् । दादत्। दादती। एव षडपि दासञ्ज्ञा अवगन्तव्याः; विशेषस्तु स्वस्वस्थाने उक्तो, वक्ष्यते च । दापयति । अदीदपत्। शेष ण्यन्तभूवत्। दिदापयिषति । "अन्तो नो लुक्"॥४।२।९४॥ इति नो लुकि, ददत्, ददतौ। ददती स्त्री। ददत्, ददती, "शौ वा"॥४।२।९५॥ इति नो वा लुकि, ददति, ददन्ति कुलानि। एवमन्यत्रापि। ददान ।आददान। दास्य २ न्, मान । दीयमानम्। ददिवान्। ददान। "प्राद्दाग-"॥४।४।७॥ इति वा त्ते, दातुमारब्धम, प्रत्तम्। पक्षे, प्रदत्तम् । "निविस्वन्ववात्"॥४।४।८॥ इति वा त्ते, "दस्ति"॥३।२।८८॥ इति दीर्घे च, नीत्तम्, वीत्तम्, सूत्तम्, अनूत्तम्, अवत्तम्, पञ्चस्वपि दत्तमित्यर्थः। पक्षे, निदत्तमित्यादि । "स्वरादुपसर्गाद्-"॥४।४।९॥ इति त्ते, आत्त, उपात्त, प्रकर्षेण दीयते स्म प्रत्त । प्रत्तवान्। परीत्त, २ वान् । "दत्"४।४।१०॥ इति दति, दत्त, २ वान् । दत्ति । दत्त्वा । प्रदाय । दाता । दातुम् ॥ ६९ ॥

डुधाग्क् धारणे च, चाद्दाने । दधाति, श्रद्दधाति । "वा वाप्यो-" ॥३।२।१५६॥ इति अपेः पिर्वा, पिदधाति, अपिदधाति, "नेर्ङ्गा-"॥२।३।७९॥ इति णि, प्रणिदधाति । एव अभि, अव, आङ्, उपा, व्यव, वि, नि, परि, स पूर्वोऽपि । "अध-"॥२।१।७९॥ इत्यत्र धावर्जनात्तथोर्न धत्ते, धत्त, अन्न

"धागस्तयोश्च"॥२।१।७८॥ इति चतुर्थान्तस्य तथवध्वेषु पूर्वस्य ध, दधाति, दधासि, धत्थः, धत्थ, दधामि, दध्वः, दध्मः । धत्ते, अपिधत्ते; पिधत्ते, दधाते, दधते, धत्से, दधाथे, धद्ध्वे, दधे, दध्वहे, दध्महे। "ईर्व्यञ्जने-"॥४।३।९७॥ धीयते । दध्यात् । दधीत । दधातु, धत्तात्, धत्ताम्, दधतु, धेहि, धत्तात्, धत्तम्, धत्त, दधानि, दधाव, दधाम । धत्ताम्, दधाताम्, दधताम्, धत्स्व, दधाथाम्, धद्ध्वम्, दधै, दधा २ वहै, महै । अदधात्, अधत्ताम्, अदधुः, अदधाः, अधत्तम्, अधत्त, अदधाम्, अदध्व, अदध्म । अधत्त, अदधाताम्, अदधत, अधत्थाः, अदधाथाम्, अधद्ध्वम्, अदधि, अद २ ध्वहि, ध्महि ॥ अद्य० ॥ "पिबैति-"॥४।३।६६॥ इति सिज्लुपि, अधात्, अधाताम्, अधुः, अधाः, अधातम्, अधात, अधाम्, अधाव, अधाम । "इश्च-"॥४।३।४१॥ इतीत्वे, किस्त्वे, "धुड्ह्रस्व-"॥४।३।७०॥ इति सिज्लुपि, अधित, अधि९षा-ताम्, धत, धा-, धाथाम्, ढ्ढ्वम्, द्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि ॥ भाक्त ॥ अधा-यि, अधिषाताम्, अधायिषाताम्, अधि २ ढ्ढ्वम्, द्वम्; अधायि ३ ढ्ढ्वम्, द्वम्, ध्वम् । दधौ, दधतुः, दधुः, दधाथ, दधिथ, दधथुः, दध, दधौ, दधि-२ व, म । दधे, दधाते, दधिरे, दधिषे, दधाथे, दधिध्वे, दधे, दधि २ वहे, महे । "गापा"॥४।३।९६॥ इत्ये, धेयात् । धासीष्ट, धायिषीष्ट । धाता २; धायिता । धास्य ति, ते, धायिष्यते । अधास्यत्, त, अधायिष्यत । "मिमी-"॥४।१।२०॥ इतीति. धित्सति, ते । देधीयते, "ईर्व्यञ्ज-"॥४।३।९७॥ ई । दाधाति, दाधेति । "अश्च-"॥४।२।९६॥ इत्याल्लुकि, "धागस्तथोश्च"॥२।१।७८॥ इत्यत्र गिन्निर्देशात् पूर्वस्य न ध, दात्त, दाधति, दाधेषि, दाधासि, दात्थः, दात्थ, दाधेमि, दाधामि, दाध्व, दाध्म । क्ये, दाधीयते । दाध्यात् । दाधातु, दाधेतु, द्दां, धेहि । अदा-धात्, अदाधेत, अदात्ताम्, अदाधु ॥ अद्य० ॥ अदाधात्, अदाधाताम्; अदाधु. । अदाधायि, अदाधिषाताम्, अदाधायिषाताम् । दाधाञ्चकार । दाधे-यात् । दाधिषीष्ट, दाधायिषीष्ट । दाधिष्यति, ते, दाधायिष्यते, "धाग"॥४।४।१५॥ इत्यत्र गन्निर्देशान्न हिः, दाधि ५ त्वा, ता, तुम्, त., २ वान् । विदाधाय । दाधत् । धापयति, विधापयति; प्रणिधापयति । अदीधपत् । विधापयाञ्चकार ।

विदिधापयिपति। दधत्, दधती, "शौ वा"॥४।२।९५॥ दधाति, दधन्ति कुलानि। धास्यन्। धास्यन्ती, धास्यती। दधानः। धीयमानम्। धास्यमानम्, धायिष्यमाणम्। दधिवान्। दधान। "धागः"॥४।४।१५॥ इति हिः, विहित, २ वान्। पिहितम्, अपिहितम्। हित्वा। विधाय। "ऊर्याद्य-"॥३।१।२॥ इति श्रच्छब्दस्य गतिसञ्ज्ञाया यबादेशे, श्रद्धाय। हिति। धातुम्। धाता। धातव्यम्। धेयम्॥ ७०॥

डुडुभृगक् पोषणे च, चाद्धारणे। "ह्वः-"॥४।१।१२॥ इति द्विले, "पृभृ-"॥४।१।५८॥ इति पूर्वस्य इः, बिभर्त्ति, बिभृतः, बिभ्रति, बिभर्षि। बिभृते, बिभ्राते, बिभ्रते, बिभृषे, बिभ्राथे, बिभृध्वे, बिभ्रे, बिभृ २ वहे, महे। क्ये, भ्रियते। बिभृयात्। बिभ्रीत। बिभर्तु, बिभृताम्, बिभ्रतु, बिभृहि०; बिभरा ३ णि, व, म। बिभृताम्, बिभ्राताम्, बिभ्रताम्, बिभृष्व०, बिभ ३ रै, रावहै, रामहै। अबि ९ भः, भृताम्, भरुः, भः, भरम्०। अबि ९ भृत, भ्राताम्, भ्रत, भृथाः, भ्राथाम्, भृध्वम्, भ्रि, भृवहि०॥ अद्य०॥ अभार्षीत्, अभार्ष्टाम्०। "ऋवर्णात्"॥४।३।३६॥ इत्यनिट्सिजाशिषोः कित्त्वाद् गुणाभावे, "धुड्ह्रस्व-"॥४।३।७०॥ इति सिज्लुकि च, अभृत, अभृ ५ षाताम्, षत, था; ड्ढ्वम्, ढ्वम्। अभारि, अभृषाताम्, अभारिषाताम्। "भीह्री-"॥३।४।५०॥ इति वा आमि, बिभराञ्चकार। बिभराञ्चक्रे इत्यादि। पक्षे, बभार, बभ्रतुः, बभ्रुः, "स्क्रसृ-"॥४।४।८१॥ इत्यत्र भृवर्जनान्नेटि, बभर्थ, बभ्रथुः, बभ्र, बभार, बभर, बभृ २ व, म। बभ्रे, बभृमहे। भ्रियात्। भृषीष्ट, भारिषीष्ट। भर्त्ता २, भारिता। भरिष्यति, ते, भारिष्यते। बुभूर्षति, ते। "इवृध-"॥४।४।४७॥ इत्यत्र भरति ग्रहणान्नास्य सनि वेट्त्वम्। अन्येत्वस्यापि वेट, कृतगुणभरनिर्देशेन इड्भावपक्षे कित्त्वेऽपि गुण चेच्छन्ति, बिभर्षति, बिभरिषति। बेभ्रीयते। बरि रीर् ३ भरीति, बरि र् री ३ भर्त्ति। भारयति। अबीभरत्। बिभ्रत्। बिभ्रती। भ्रियमाणम्। भरिष्य २ न्, माणम्; भारिष्यमाणम्। बिभराच २ कृवान्, क्राणः। बभृवान्। बभ्राण। भृतः, २ वान्। भृत्वा। सभृत्य। भर्त्ता। भर्त्तुम्। भर्त्तव्यम्। शेष कृग्वत्॥ ७१॥

व्यञ्जन-"॥४।३।२५॥ इत्यत्र अप्व इति निषेधाद्वा न क्त्वि, किन्तु "क्त्वा" ॥४।३।२९॥ इति क्त्वाभावस्तेनात्र गुण, वेट्त्वात् क्त्यर्नेट्, धूत, २ वान् । धूतादन्यत्र, "पूदि"॥४।२।७२॥ इति न, आधून., २ वान् । देवि ३ ता, तुम्, तव्यम् । देव्यम् ॥ १ ॥

जॄष् झॄष्च् जरसि, वयोहानौ । जीर्यति । क्ये, जीर्य्यते। जीर्येत् । जीर्यतु । अजीर्यत् । अद्य० ॥ "ऋदिच्छ्वि"॥३।४।६५॥ इत्यङि, "ऋवर्णे-"॥४।३।७॥ इति गुणे, अजरत्, अजरताम्० । पक्षे, "सिचि परस्मै-"॥४।३।४४॥ इति वृद्धौ, अजारीत्, अजारिष्टाम्०। "इट् सिज-"॥४।४।३६॥ इति वेटि, "वॄत"॥४।४।३५॥ इति वा दीर्घे, "ऋवर्णात्"॥४।३।३६॥ इत्यनिट्सिजाशिषो क्त्वे च, अजरिष्ट, अजरीष्ट, अजीर्ष्ट स्वयमेव, एषु "एकधातौ-"॥ ३ । ४ । ८६ ॥ इति कर्म कर्त्तर्यात्मनेपदम्, किरादित्वाच्च, "भूषार्थ-"॥३।४।९३॥ इति न ञिचूञिट्क्या भवन्ति ॥ भाक ॥ अजारि, ञिटि, अजारिषाताम्, इटि, अजरीषाताम्, अजरिषाताम्, क्त्वे, अजीर्षाताम् ४ । एवमग्रेपि ४, ४॥ जजार, "स्कृच्छृत-" ॥४।३।८॥ इति गुणे, "जॄभ्रम-"॥४।१।२६॥ इति वैत्वे, द्वित्वाभावे च, जेरतु, जजरतु, जेरिथ, जजरिथ । जेरे, जजरे। जीर्यात् । जारिषीष्ट, जरिषीष्ट, जीर्षीष्ट । जरिता २, जरीता २, जारिता । जरिष्यति, जरीष्यति ॥ भाक ॥ जरिष्यते, जरीष्यते, जारिष्यते । "इवृध-"॥४।४।४७॥ इति वेटि, "नामिनोऽनिट्" ॥४।३।३३॥ इति क्त्वे च, जिजरिषति, जिजरीषति, जिजीर्षति। जेजीर्यते । जाजरीति, जाजर्त्ति । शेष तॄवत् । "कगे-"॥४।२।२५॥ इति ह्रस्वे, जरयति । अजीजरत्। ञिणम्परे णौ तु वा दीर्घ, अजारि, अजरि । जिजरयिषति । जीर्यन्। जीर्यमाणम्। जरिष्य २ न्, माणम्, जरीष्य २ न्, माणम्, जारिष्यमाणम्। जिजीर्वान् । जजिराणम्। क्वसौ इरि कृते द्वित्वम्। काने तु द्वित्वे कृते इर् स्वरविधित्वात्। किति "ऋवर्णश्रि-"॥४।४।५७॥ इति नेटि, "गत्यर्थाकर्मक-"॥ ५।१।११ ॥ इति वा कर्त्तरि क्ते, "ऋल्त्व-"॥४।२।६८॥ इति ने, जीर्णश्चैत्र । जीर्णं चैत्रेण वा । "ऋवर्णश्रि-"॥४।४।५७॥ इति निषेधात्, "जॄव्रश्च-"॥४।४।४१॥ इत्यत्र निरनुबन्धजॄग्रहणाच्च नास्य सानुबन्धस्येट्, जीर्त्वा । अस्यैवेच्छन्त्यन्ये,

जरित्वा, जरीत्वा । जरि ३ ता, तुम्, तव्यम्, जरी ३ ता, तुम्, तव्यम् । झॄष् । झीर्यति । अथ जॄष्वत्, नवर परोक्षायाम्; जझार, जझरिम । जझरे । क्त्वि, झीर्त्वा ॥ २ ॥ ३ ॥

चत्वारोऽनिटः ॥ शोंच् तक्षणे, तनूकरणे । "न शिति"॥४।२।२॥ इत्यात्व निषेधात् "ओतः श्ये"॥४।२।१०३॥ इति ओल्लुकि, श्यति, निश्यति, श्यत, श्यन्ति । शायते । "ट्धेघ्रा"॥४।३।६७॥ इति वा सिच्लुपि, अशात्, अशाताम्, अशुः, अशाः । पक्षे, "यमिरमि-"॥४।४।८६॥ इतीटि, सेऽन्ते च, अशासीत्, अशासिष्टाम्, अशासिषुः, अशासीः । अशायि, अशायिषाताम्, अशासाताम् । शशौ, शशतुः, शशाथ, शशिथ, शशिम । शशे, शशाते । शायात् । शासीष्ट, शायिषीष्ट । शाता २, शायिता । शास्यति, ते, शायिष्यते । शिशासति । शाशायते । शाशेति, शाशाति । "पाशा-"॥४।२।२०॥ इति ये, निशाययति । अशीशयत् । शिशाययिषति । श्यन् । शास्यन् । शशिवान् । शशानम् । क्तिक्ते, "छाशोर्वा"॥४।४।१२॥ इति वेत्वे, निशितः, २ वान्, निशातः, २ वान् । शित्वा, शात्वा । "शो व्रते"॥४।४।१३॥ नित्य इ, सशितव्रतः साधुः । शाता । शातुम् ॥ ४ ॥

दों, छोंच् छेदने । द्यति, अवद्यति, द्यत, द्यन्ति । "ईर्व्यञ्जने-"॥४।३।९७॥ ईः, दीयते । "पिबैति-"॥४।३।६६॥ इति सिच्लुपि, अदात्, अदाताम्, अदुः, अदाः । अदायि, अदायिषाताम्, अदिषाताम्, "इश्च-"॥४।३।४१॥ इति इ । ददौ । ददे, ददिमहे । "गापा-"॥४।३।९६॥ इत्ये, देयात् । दायिषीष्ट, दासीष्ट । दाता २, दायिता । दास्यति, ते, दायिष्यते । दित्सति । देदीयते । दादाति । "इडेत्-"॥४।३।९४॥ इति आलोपे, दादित, २ वान् । दापयति । द्यन् । दास्यन् । ददिवान् । ददानम् । "दोसोमास्थ इ"॥४।४।११॥ दितः, २ वान् । दित्वा । "स्वरात्-"॥४।४।९॥ इति त्त्वे, अवत्तम् । "दस्ति"॥३।२।८८॥ इति नामिनो दीर्घे, परीत्तम् । दाता । दातुम् ॥ छों ॥ अवच्छ्यति । छायते । अच्छात् । अच्छासीत् । चच्छौ । चच्छे । छायात्, अपच्छायात्, अत्र छस्य द्वित्वं लाक्षणिकम्, तेन "सयोगादेर्वा-"॥४।३।९५॥ इति न ए । छास्यति । चिच्छासति ।

चाच्छायते । णौ, छाययति । अचिच्छयत् । शेषं सर्वं शोंत्रृवत् ॥ ५ ॥ ६ ॥

षोंच् अन्तकर्मणि, विनाशे । अवस्यति, व्यवस्यति; "उपसर्गात्सुग्-" ॥२।३।३९॥ इति षत्वे, "नेर्ङ्गो-"॥२।३।७९॥ इति णि', प्रणिष्यति । क्ये, "ईर्व्यञ्जने-"॥४।३।९७॥ इति ई', अवसीयते, विषीयते, न अस्यते इत्यर्थ । अभिषीयते, अपनीयते इत्यर्थ । अड्व्यवायेऽपि ष , अभ्यष्यत् , व्यष्यत् । "ट्धेघ्रा-"॥४।३।६७॥ इति वा सिजलुपि, अवा ३ सात्, साताम्, सु. । पक्षे, अवासा ३ सीत्, सिष्टाम्, सिषु । अवासायि, अवासायिषाताम्; अवासासाताम्० । अवससौ । अवससे । अवसेयात् । सासीष्ट, सायिषीष्ट । सास्यति, ते, सायिष्यते । षपाठात् "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति ष , सिषासति । द्वित्वे निषेधादाद्यस्य न ष', अभिसिषासति । सेषीयते । सासेति, सासाति । शेष त्रैङ्वत् । "पाशा"॥४।२।२०॥ इति ये, अवसाययति । अवासीषयत् । अवसिषाययिषति । अवस्यन् । अवसास्यन् । ससिवान् । समानम् । "दोसो-" ॥४।४।११॥ इति इ', अवसितः, २ वान् । सित्वा । अवसाय । अवसा ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ ७ ॥

व्रीड्च् लज्जायाम् । व्रीड्यति । ऋफिडादित्वाल्लत्वे, व्रील्यति । व्रीड्यते । अव्री ३ डीत्, डिष्टाम्, डिषु । अव्रीडि । विव्रीड । विव्रीडे । व्रीड्यात् । व्रीडिषीष्ट । व्रीडिष्यति, ते । वेव्रीड्यते । वेव्री २ डीति, ट्टि । व्रीडयति । अविव्रिडत । व्रीड्यन् । व्रीडि ५ ता, तुम्, त्वा, त , २ वान् ॥ ८ ॥

नृतैच् नर्त्तने, नाट्ये । नृत्यति । अणपाठात् "अदुरुप"॥२।३।७७॥ इति न ण , प्रनृत्यति । क्ये, नृत्यते । अन ३ र्त्तीत्, र्तिष्टाम्, र्तिषु । अनर्त्ति, अनर्त्तिषाताम्० । ननर्त्त, ननृतिम । ननृते । नृत्यात् । 'कृतचृतनृत-"॥४।४।५०॥ इत्यसिच्सादेरादिर्वेट्, नर्त्तिषीष्ट, नृत्सीष्ट । "सिजाशिष"॥४।३।३५॥ इति कित्त्वम्, नर्त्तिता २ । नर्त्स्यति, ते, नर्त्तिष्यति, ते । निनृत्सति, निनर्त्तिषति । "नृतेर्यङि" ॥२।३।९५॥ इति णत्वप्रतिषेधे, नरीनृत्यते । नरि, री, र् ३ नर्त्ति । "ह्युक्तो-"॥४।३।१४॥ इति गुणाभावे, नरी, रि, र् ३ नृतीति । रागमे ईत नेच्छन्त्यन्ये । नर्नृत्त, नर्नृतति । अमि, अनर्नृतम् । शेष वृतूङ्वत । वेट्त्वादेव क्तयोरिडभावे सिद्धे

ऐदित्त्व यङ्लुबन्तादनेकस्वरादपीडभावार्थम्, नरीनृत्तः, २ वान्। फलवत् कर्त्तरि "अणिगि प्राणि-"॥३।३।१०७॥ इति परस्मै प्राप्तौ, "परिमुह-"॥३।३।९४॥ इत्यात्मनेपदे, नर्त्तयते नट चैत्र। "ऋदृ-"॥४।२।३७॥ इति वा ऋः, अनीनृतत्; अननर्त्तत्। नृत्यन्। नृत्यन्ती। नर्त्स्यन्; नर्त्तिष्यन्। ननृत्वान्। ननृतानम्। वेट्त्वान्नेटि, नृत्तः, २ वान्। नर्त्ति ३ ता, तुम्, त्वा। प्रनृत्य ॥ ९ ॥

कुथच् पूतिभावे, दुर्गन्धक्लेदे। कुथ्यति। कुथ्यते। अको २ थीत्, थिष्टाम्। अकोथि। चुकोथ। चुकुथे। कुथ्यात्। कोथिषीष्ट। कोथिता २। कोथिष्यति, ते। चुकुथिषति, चुकोथिषति। चोकुथ्यते। अचूकुथत्। कोथित्वा। अत्र "वौ व्यञ्जन-"॥४।३।२५॥ इति क्त्वो विकल्पेन कित्त्वेऽपि "ऋत्तृष-"॥४।३।२४॥ इत्यत्र न्युपान्त्ये इत्यस्य व्यावृत्तिबलात्, "क्त्वा"॥४।३।२९॥ इत्यनेन नित्य न कित्त्वम्, कुथितम्। कोथि २ ता, तुम् ॥ १० ॥

गुधच् परिवेष्टने। गुध्यति। जुगोध। गोधिता। गोधितुम्। "क्षुधक्लिश-" ॥४।३।३१॥ इति क्त्वः कित्त्वे, गुधित्वा। गुधितः। शेष कुथच्वत् ॥ ११ ॥

त्रयोऽनिट. ॥ राधच् वृद्धौ। स्वादिषु पठिष्यमाणस्याप्यस्येह पाठो वृद्धावेव श्यार्थ.। राध्यति, वर्द्धत इत्यर्थे। वृद्धेरन्यत्र श्नुरेव; राध्नोति, पचतीत्यर्थे। चुरादेराकृतिगणत्वात्, राधयति, आराधयति। कश्चित्तु राध, साध, संसिद्धाविति पठन् वृद्धेरन्यत्रापि राधे श्य, साधिं च धात्वन्तरमिच्छति। राध्यत्यन्नम्, आराध्यति। साध्यति ॥ १२ ॥

व्यधंच् ताडने। "शिदवित्"॥४।३।२०॥ इति श्यस्य ङित्त्वात् "ज्याव्यधः क्ङिति"॥४।१।८१॥ इति य्वृति, विध्यति। विध्यते। अव्यात्सीत्, अव्याद्धाम्, अव्यात्सु', अव्यात्सी, अव्याद्धम्, अव्याद्ध, अव्यात्सम्, अव्यात्स्व, अव्यात्स्म। अव्याधि, अव्यत्साताम्। "ज्याव्येव्यधि-"॥४।१।७१॥ इति पूर्वस्येत्वे, विव्याध, विविधतु', विविधु, विव्यधिथ, विव्यद्ध, विविधथु, विविध, विव्याध, विव्यध, विविधि २ व, म। विविधे। विध्यात्। व्यत्सीष्ट। व्यद्धा २। व्यत्स्यति। अव्यत्स्यत्। विव्यत्सति। वेविध्यते। व्यञ्जनादौ वित्ति, वेवे ३ द्धि, त्सि, ध्मि। शेपे, वेवि ९ धीति, द्ध., धति, धीषि, द्ध, द्ध, धीमि, ध्व, ध्म। हौ, वेविद्धि ॥ १३ ॥

व्यञ्जनादो विति, अवे ३ वेत्; वे, वेत्। शेपे, अवेवि ९ धीत, ध्वाम्, धु' धीं, ध्वम्, ध्व, ध, ध्व, ध्म। शेप पचिस्थाने। व्याधयति। अविव्यधत्। विध्यन्। व्यत्स्यन्। विद्ध, २ वान्। विद्ध्वा। प्रविध्य। व्यद्धा। व्यद्धुम्। व्यद्धव्यम् ॥१३॥

क्षिपच्, प्रेरणे। क्षिप्यति। अक्षेप्सीत्। चिक्षेप। क्षेप्ता। क्षिप्त'। शेप तु क्षिपंत प्रेरणे इत्यस्येव ॥ १४ ॥

तिम, तीम, ष्टिम, ष्टीमच् आर्द्रभावे। तिम्यति। क्ये, तिम्यते। अतेमीत्, अतेमिष्टाम्। अतेमि, अतेमिषाताम्। तितेम, तितिमिम। तितिमे। तिम्यात्। तेमिषीष्ट। तेमिता २। तेमिष्यति, ते। अतेमिष्यत्, त। नितेमिषति; तितिमिषति। तेतिम्यते। तेतिमीति, तेतेन्ति, तेतीन्त, तेतिमति। तेमयति। अतीतिमत्। तितेमयिषति। तिम्यन्। तिम्यन्ती। तिम्यमानम्। तेमिष्य २ न्, माणम्। तिमित, २ वान्। "वौव्य-"॥४।३।२५॥ इति क्त्वासनोर्वा कित्त्वे, तेमित्वा, तिमित्वा। प्रतिम्य। तेमि २ ता, तुम्। तितिन्वान्। तितिमानम्॥ ष्टिम् ॥ स्तिम्यति। स्तिम्यते। अस्तेमीत्। षपाठात् षत्वे, तिष्टेम, तिष्टिमिम। तिष्टिमे। स्तेमिता। स्तेमिष्यति। "णिस्तोरेव"॥२।३।३७॥ इति न षत्वे, तिस्तिमिषति, तिस्तेमिषति। तेष्टिम्यते। तेष्टेन्ति, तेष्टिमीति। स्तेमयति। अतिष्टिमत्। शेप तिम्वत्। तीम, ष्टीमौ चाप्रसिद्धत्वादल्प लिख्येते। तीम्यति। अतीमीत्। तितीम। तीमिता। स्तीम्यति। अस्तीमीत्। तिष्टीम। तिष्टीमे। स्तीमिता। स्तीमितः ॥१५॥१६॥१७॥१८॥

षिवूच् उतौ, उतिर्वानम्, तन्तुसन्तान इत्यर्थ। सीव्यति। क्ये, सीव्यते। असेवीत, असे ३ विष्टाम्, विषु, षी। असेवि, असेविषाताम्। सिषेव, सिषिवतु, सिषिवु, सिषेविथ, सिषिवथु, सिषिव, सिषेव, सिषिवि २ व, म। सिषिवे। सीव्यात्। सेविषीष्ट। सेविता। सेविष्यति। असेविष्यत्। परि, नि, वि पूर्वस्य "असोङसिवू"॥२।३।४८॥ इति षे, परिषीव्यति, निषीव्यति, विषीव्यति। अड्व्यवाये, "स्तुस्वञ्जश्च-"॥२।३।४९॥ इति वा षे, पर्यषीव्यत्, पर्यसीव्यत्, न्यषीव्यत्, न्यसीव्यत्, व्यषीव्यत्, व्यसीव्यत्, पट्स्वपि ऊतवानित्यर्थ। परिषिषेव। परिषिषेवे इत्यादि। "इवृध-"॥४।४।४७॥ इति वेटि, सुस्यूपति, सिसेविषति, अत्र "णिस्तोरेव-" ॥२।३।३७॥ इति नियमात् षाणि न षत्वम्, "वौ व्यञ्जने-"॥४।३।२५॥ इत्यत्र

अय्व इति निषेधान्न क्त्वासनोः किन्त्व च। सेपीव्यते। यङ्न्तात्सनि, सेपिविषते। लुपि, सेपिवीति, सेष्योति, सेषेति । "अमोड-"॥२।३।४८॥ इत्यत्र सिवोऽनुबन्ध-निर्देशादत्र न षत्वे, परिसेषिवीति, सेष्यूत, सेपिवति, सेष्योपि, सेपिवीपि, सेपेपि। अग्रे दिवूच्वत्। सेवयति, परिषेवयति । डे, असीषिवत् । "असोड-" ॥२।३।४८॥ इति निषेधान्न षत्वे, पर्यसीषिवत् । मा परिसीषिवत् । सिषेवयिषति । सीव्य २ न्, मानम्। सेविष्य २ न्, माणम्। "व्वो -"॥४।४।१२१॥ इति व्लुकि, सिषिवान् । सिषिवाणम् । सेवि २ ता, तुम् । ऊदित्त्वात् क्त्वि वेटि, स्यूत्वा; "क्त्वा "॥४।३।२९॥ इति किक्त्वाभावाद्गुणे, सेवित्वा । वेट्त्वान्नेटि, स्यूत, २ वान् । सेवितव्यम्। सेव्यम् । "ष्ठिव्सिवोऽनटि वा"॥४।२।११२॥ इति वा दीर्घे; सेवनम्, सीवनम् ॥ १९ ॥

ष्ठिवूच् निरसने । "ष स-"॥२।३।९८॥ इत्यत्र ष्ठिवो वर्जनान्न सः, "भ्वादे-"॥२।१।६३॥ इति दीर्घे, ष्ठीव्यति । क्ये, निष्ठीव्यते । शेष भौवादिक-ष्ठिवूवत् ॥ २० ॥

इषच् गतौ। इष्यति, अन्विष्यति, प्रेष्यति । क्ये, इष्यते। अद्य० ॥ ऐषीत्, ऐषिष्टाम्, ऐषिषु । ऐषि, ऐषिषाताम्। इयेष, ईषतु, ईषु, इयेषिथ, ईषिम। ईषे, ईषाते ।इष्यात्। एषिषीष्ट। एषिता २। एषिष्यति । प्र, एषिष्यति, "उपसर्गस्यानिण् "॥१।२।१९॥ इत्यलुकि, प्रेषिष्यति, ते । ऐषिष्यत्, त। एषिषिषति । एषयति । एष्यते । एषिषत् । इष्यन् । इष्यन्ती । इष्यमाणम् । एषिष्य २ न्, माणम् । ईषिवान् । ईषुषी । ईषाणम् । ईषित, २ वान् । एषि ३ ता, तुम्, तव्यम्। एषित्वा । प्रेष्य । घ्यणि, एष्य. । "प्रस्यैषैष्य-"॥१।२।१४॥ इत्यैत्वे, प्रैष्य । अलुकि, प्रेषणम् ॥ २१ ॥

त्रसैच् भये। "भ्रासम्लास-"॥३।४।७३॥ इति वा श्ये, त्रस्यति।पक्षे, शवि, त्रसति । क्ये, त्रस्यते ॥ अद्य० ॥ अत्र २ सीत्, सिष्टाम्, सिषु । अत्रा ३ सीत्, सिष्टाम्, सिषु । अत्रासि, अत्रसिषाताम् । तत्रास । "जृभ्रम-"॥४।१।२६॥ इति वैत्वे, त्रेसतु, त्रेसु, त्रेसिथ, त्रेसिम । त्रेसे । पक्षे, तत्रसतु, तत्रसु, तत्रसिथ, तत्रसिम । तत्रसे । त्रस्यात् । त्रसिषीष्ट । त्रसिता २ । त्रसिष्यति, ते ।

अत्रसिष्यत, त । तित्रसिषति । तात्रस्यते । तात्र २ सीति, स्ति । त्रासयति । अतित्रसत् । त्रस्यन् । त्रसन् । त्रसिष्यन् । त्रसिष्यमाणम् । त्रेसिवान्, तत्रे-स्वान् । त्रेसानम्, तत्रसानम् । त्रासि ३ ता, तुम्, त्वा । ऐदित्त्वान्नेट्, त्रस्त, २ वान् ॥ २२ ॥

षहच् शक्तौ । सह्यति । परि, नि, वि पूर्वस्य, "असोङ-"॥२।३।४८॥ इति षत्वे, परिषह्यति । सह्यते । "न श्वि-"॥४।३।४९॥ इति न वृद्धि., असहीत् । ससाह । "अनादेः-"॥४।१।२४॥ इत्येत्व, न च द्वि, सेहतुः । सहिता । सहिष्यति । सिष हिषति ॥ २३ ॥

अथ पुषादिः ।

पुषच् पुष्टौ । अकर्मकोऽय अनिट् च । पुष्यति, पुष्टो भवतीत्यर्थ । क्ये, पुष्यते । परस्मैपदे पुषादित्वादङि, अपुषत्, अपु ८ षताम्, षन्, ष., षतम्, षत, षम्, षाव, षाम । एवमग्रेऽपि । सकि, व्यत्यपु ९ क्षत, क्षाताम्, क्षन्त, क्षथा., क्षाथाम्, क्षध्वम्, क्षि, क्षावहि, क्षामहि ॥ भावे, अपोषि । पुपोष, पुपुषतु, पुपोषिथ, पुपुषिम । पुपुषे । पुष्यात् । पुक्षीष्ट, कित्त्वान्न गुण । पोष्टा । पोक्ष्यसि । अपोक्ष्यत् । पुपुक्षति । पोपुष्यते । पोपोष्टि, पोपु ३ षीति, ष्ट, षति, पोपोक्षि, पोपु ३ षीषि, ष्ठ, ष्ठ, पोपोष्मि, पोपु ३ षीमि, ष्व., ष्म । पोपुष्यात् । पोपोष्टु । अपोपोट्, अपोपुषीत्, अपोपुष्टाम्, अपोपुषु, अपोपोट्, अपोपुषी., अपोपुषम् । पोषयति । अपूपुषत् । पुष्यन् । पोक्ष्यन् । पुष्यमाणम् । पोक्ष्यमाणम् । पुष्ट, २ वान् । पुष्टि । पुष्ट्वा । प्रपुष्य । पोष्टा । पोष्टुम् । पोष्टव्यम् । पोष्यम् ॥२४॥

लुटच् विलोटने । लुट्यति । पुष्याद्यङि, अलुट २ त्, ताम् । शेष भूवादिलुटवत् ॥ २५ ॥

ष्विदाच् गात्रप्रक्षरणे, घर्मस्रुतौ । अनिट् । स्विद्यति, प्रस्विद्यति । क्ये, स्विद्यते । पुष्याद्यङि, अस्विद ३ त, ताम्, न् । अस्वेदि । सिष्वेद, सिष्वि दतु, सिष्वेदिथ । सिष्विदे । स्विद्यात् । "सिजाशिष"॥४।३।३५॥ इति कित्त्वे,

स्वित्सीष्ट । स्वेत्ता । स्वेत्स्यति । सिष्वित्सति । सेष्विद्यते । स्वेदयति । असिष्विदत् । "णिस्तोरेव-"॥२।३।३७॥ इत्यत्र वर्जनान्न षत्वे, सिस्वेदयिषति । आदित्त्वान्नेट्; स्विन्न , २ वान् । "नवा भाव-"॥४।४।७२॥ इति वा नेटि, स्विन्नमनेन । प्रस्विन्न', २ वान् । पक्षे इटि, "न डीङ्"॥४।३।२७॥ इति क्त्वाभावाद्गुणे, स्वेदितमनेन । प्रस्वेदितः, २ वान् । स्वेत्ता । स्वेत्तुम् । स्वित्त्वा । प्रस्विद्य ॥ २६ ॥

क्लिदौच् आर्द्रभावे । क्लिद्यति । क्लिद्यते । पुष्याद्यङि, अक्लिदत् । अक्लेदि । चिक्लेद । चिक्लिदे । क्लिद्यात् । औदित्त्वाद्वेटि, क्लित्सीष्ट, क्लेदिषीष्ट । क्लेत्ता; क्लेदिता । क्लेत्स्यति; क्लेदिष्यति । चिक्लित्सति, चिक्लिदिषति, चिक्लेदिषति । चेक्लिद्यते । क्लेदयति । अचिक्लिदत् । क्लिद्यन् । वेट्त्वान्नेट्, क्लिन्नः, २ वान् । क्लेत्ता । क्लेत्तुम् । क्लेदि २ ता, तुम् । वेटि, "वौ व्यञ्जन-"॥४।३।२५॥ इति वा क्त्वे च, क्लित्त्वा, क्लिदित्वा, क्लेदित्वा ॥ २७ ॥

चत्वारोऽनिट ॥ क्षुधच् बुभुक्षायाम् । क्षुध्यति । क्ये, क्षुध्यते । अङि, अक्षुध ३ त्, ताम्, न् । अक्षोधि, अक्षु ९ त्साताम्, त्सत, द्धा , त्साथाम्, द्ध्वम, द्द्ध्वम , त्सि, त्स्वहि, त्स्महि । चुक्षोध, चुक्षुधतु , चुक्षोधिथ । चुक्षुधे । क्षुध्यात् । क्षुत्सीष्ट । क्षोद्धा २ । क्षोत्स्यति । अक्षोत्स्यत । चुक्षुत्सति । चोक्षुध्यते । चोक्षोद्धि, चोक्षुधीति । क्षोधयति । अचुक्षुधत् । क्षुध्यन् । क्षुध्यमानम् । "क्षुधवसस्तेषाम्"॥४।४।४३॥ इतीटि, क्षुधित', २ वान् । "क्षुध-"॥४।४।४३॥ इतीटि, "क्षुधक्लिश"॥४।३।३१॥ इति क्त्वे च, क्षुधित्वा । क्षोधित्वा इत्यप्यन्ये । क्षोद्धा । क्षोद्धुम् ॥ २८ ॥

शुधच् शौचे, नैर्मल्ये । शुध्यति, विशुध्यति । क्ये, विशुध्यते । अङि, अशुधत । भाक । अशोधि, अशुत्साताम् । शुशोध, शुशुधतु , शुशोधिथ, शुशुधिम । शुशुधे । शुध्यात् । शुत्सीष्ट । शोद्धा । शोत्स्यति । शुशुत्सति । शोशुध्यते । शोशोद्धि, शोशुधीति । शोधयति । अशूशुधत् । शुद्ध , २ वान् । शुद्धि' । शोद्धा । शोद्धुम् । शुद्ध्वा । विशुध्य ॥ २९ ॥

क्रुधच् कोपे । "क्रुद्द्रुह-"॥२।२।२७॥ इति सम्प्रदानत्वे, मैत्राय क्रुध्यति । क्ये; क्रुध्यते । अक्रुधत् । अक्रोधि । चुक्रोध । चुक्रुधे । क्रुध्यात् । क्रुत्सीष्ट । क्रोद्धा ।

तृपौच् प्रीतौ; सौहित्ये । तृप्यति । क्ये, तृप्यते । अटि, अतृपत् । "स्पृशमृश-"॥३।४।५४॥ इति वा सिचि, अताप्सीत्; "स्पृशादि"॥४।४।११२॥ इति स्वरात्परे वा अति; अत्राप्सीत्। रणे कृतान्तमत्राप्सीत्, तृतीचक्रे इत्यर्थः। अन्तर्भूतणिगर्थोऽत्र तृपि सकर्मक.। औदित्वाद्वेटि, अतर्पीत्, अतृपताम्; अताप्ताम्, अत्राप्ताम्, अतर्पिष्टाम्। अतर्पि, "सिजाशिष-"॥४।३।३५॥ इति कित्त्वाद्, अदनागमे, अतृप्साताम्, अतर्पिषाताम् । थासि, अतृप्था· अतर्पिष्ठा । ध्वमि, अतृब्ध्वम्, अतृब्द्ध्वम्; अतर्पि २ ध्वम्, ड्ढ्वम्। ततर्प, ततृपतु, ततर्पिथ; ततृपिम। ततृपे । तृप्यात् । तृप्सीष्ट, तर्पिषीष्ट । तर्प्ता, त्रप्ता, तर्पिता । त्रप्स्यति, तर्प्स्यति, तर्पिष्यति । अत्रप्स्यत्, अतर्प्स्यत्, अतर्पिष्यत् । तितृप्सति, तितर्पिषति । तरीतृप्यते। तरीतर्ति, तरीत्रप्ति, तरीतृपीति। रिरी रू त्रय सर्वत्र। तर्तृप्त., तर्त्रप्त., तर्तृपति । तर्तृपत्। तर्पयति । तर्प्यते । अतीतृपत्, अततर्पत्। तृप्यन्। तृप्यमाणम् । ततृप्वान् । ततृपाणम् । वेट्त्वान्नेट्, तृप्त', २ वान् । तृप्त्वा, तर्पित्वा । प्रतृप्य । तर्प्ता, त्रप्ता, तर्पिता । तर्प्तुम्, त्रप्तुम्, तर्पितुम् । तर्प्तव्यम्, त्रप्तव्यम्, तर्पितव्यम् । तृप्यम् ॥ ३५ ॥

दृपौच् हर्षमोहनयो, मोहन गर्व । दृप्यति। दृप्यते। अदृपत्। अदार्प्सीत्; अद्राप्सीत्; अदर्पीत् । अदर्पि । ददर्प, ददृपतु' । ददृपे । दृप्यात् । दृप्सीष्ट, दर्पिषीष्ट । दर्प्ता, द्रप्ता, दर्पिता । दर्प्स्यति, द्रप्स्यति, दर्पिष्यति । एव क्रियातिपत्तावपि । दिदृप्सति, दिदर्पिषति । दरीदृप्यते । दरि ६ दृपीति, दर्प्ति, द्रप्ति, दृप्त., द्रप्त, दृपति । दर्पयति। अदीदृपत्, अददर्पत् । दृप्त, २ वान् । दृप्ति'। दृप्त्वा, दर्पित्वा । प्रदृप्य । दर्प्ता, द्रप्ता, दर्पिता । दर्प्तुम्, द्रप्तुम्, दर्पितुम् । दर्प्तव्यम्, द्रप्तव्यम्, दर्पितव्यम् । दृप्यम् । साधनिका तृपिवत् ॥ ३६ ॥

कुपच् कोपे। कुप्यति । कुप्यते । अकुपत्। अकोपि । चुकोप, चुकुपिम । चुकुपे । कुप्यात्। कोपिषीष्ट । कोपिता। कोपिष्यति । अकोपिष्यत्। चुकुपिषति, चुकोपिषति । चोकुप्यते । चोकोप्ति, चोकुपीति, चोकुप्त, चोकुपति । कोपयति । अचूकुपत्। "व्यञ्जनादेर्नाम्युपान्त्याद्वा" ॥ २ । ३ । ८७॥ इति वा णत्वे, प्रकुप्यमाणम्, प्रकुप्यमानम् । कुपित, २ वान् । कुपित्वा, कोपित्वा । कोपि

३ ता, तुम्, तव्यम् । कुप्यम्, कोप्यम् । प्रकोपणीयम्, प्रकोपनीयम् ॥३७॥

गुपच् व्याकुलत्वे । गुप्यति, विगुप्यति । गुप्यते । अगुपत् । अगोपि । जुगोप । जुगुपे । गुप्यात् । गोपिषीष्ट । गोपिता । गोपिष्यति । जुगुपिषति, जुगोपिषति । जोगुप्यते । अजूगुपत् । गुपितः, २ वान् । गुपित्वा, गोपित्वा । गोपितुम् ॥ ३८ ॥

लुपच् विमोहने । लुप्यति । अयं कुपच्वत्, परं "गॄलुप-"॥३।४।१२॥ इति गर्ह्यार्थाद्यङ्, लोलुप्यते ॥ ३९ ॥

लुभच् गार्ध्ये; गार्ध्यमभिकाङ्क्षा । लुभ्यति । लुभ्यते । अलुभत् । अलोभि । लुलोभ, लुलुभतु:, लुलुभिम । लुलुभे । लुभ्यात् । लोभिषीष्ट । तादौ "सहलुभ-" ॥४।४।४६॥ इति वेटि, लोब्धा, लोभिता । लोभिष्यति । लुलुभिषति, लुलोभिषति । लोलुभ्यते । लोलुभीति, लोलोब्धि । लोभयति, प्रलोभयति । अलूलुभत् । वेट्त्वान्नेट्, लुब्धः, २ वान् । वेटि, "वौ व्यञ्जन-"॥४।३।२५॥ इति वा कित्त्वे, लुब्ध्वा, लुभित्वा, लोभित्वा । लो ३ ब्धा, ब्धुम्, ब्धव्यम्, लोभि३ ता, तुम्, तव्यम् । लोभ्यम्, लुभ्यम् ॥ ४० ॥

क्षुभच् सञ्चलने, रूपान्यथात्वम् । क्षुभ्यति । अक्षुभत् । चुक्षोभ । क्षोभिता । "क्षुब्धविरिब्ध-"॥४।४।७०॥ इति क्ते निपातनात्, क्षुब्धो मन्थः । क्षुभितोऽन्यः शेषं कुपच्वत् ॥ ४१ ॥

नशौच् अदर्शने, अनुपलब्धौ । नश्यति, "नशः शः"॥२।३।७८॥ इति णत्वे, प्रणश्यति; परिणश्यति । क्ये, नश्यते ॥ अद्य० ॥ पुष्याद्यङि, "नशेर्नेश्वा-"॥४।३।१०२॥ इति वा नेशादेशे, अनेशत्, अनशत् । भाक । अनाशि । औदित्वाद्वेटि, "नशो धुटि"॥४।४।१०९॥ इति ने, अनङ् ९ क्षाताम्, क्षत, ष्ठाः, क्षाथाम्, ड्ढ्वम्, ग्ड्ढ्वम्, क्षि, क्ष्वहि, क्ष्महि । पक्षे इटि, अनशिषाताम्इत्यादि । ननाश, नेशतु, नेशु, नेशिथ, नेशथुः, नेश, ननाश, ननश, नेशिव, नेशिम । नेशे । नश्यात् । नङ्क्षीष्ट, नशिषीष्ट । नष्टा, नशिता । नङ्क्ष्यति, नशिष्यति, "नशः शः"॥२।३।७८॥ इत्यनेन षान्तस्य न णः, प्रनङ्क्ष्यति, परिनङ्क्ष्यति । शान्तस्य तु णः, प्रणशिष्यति । निनङ्क्षति, निनशिषति । नान-

श्यते । नानश्रीति, नानष्टि, नानष्टः, नानशति । णौ "चल्याहार-"॥३।३।१०८॥ इति फलवत्यपि परस्मैपदे, नाशयति । अनीनशत् । मा त्रिनीनश । "जनशोनि-' ॥४।३।२३॥ इति वा किस्वे; नष्ट्वा, नष्ट्वा, नशित्वा । प्रणश्य । वेट्त्वान्नेट्, "नो व्यञ्जनस्य-"॥४।२।४५॥ इति नलुक् च, नष्टः, २ वान्, पान्तस्य णत्वाभावे, प्रनष्टः, २ वान् । नंष्टा, नशिता । नंष्ट्री, नशित्री । नष्टुम्, नशितुम्; प्रनष्टुम्, प्रणशितुम् । नंष्टव्यम्, नशितव्यम् । नशनीयम् । क्विपि "नशो वा" ॥२।१।७०॥ इति वा गे, "यज-"॥२।१।८७॥ इति पे च; नक्, नट् ॥ ४२ ॥

भृशू, भ्रशूच् अध पतने । भृश्यति । क्ये, भृश्यते । अङि, अभृशत् । अभर्शि । बभर्श, बभ्रृशिम । बभृशे । भृश्यात् । भर्शिपीष्ट । भर्शिता । भर्शिष्यति । बिभर्शिषति । बरीभृश्यते । बरिभृशीति, बरिभर्ष्टि । रिरीरागमत्रय सर्वत्र । बरिभृष्टः, बरिभृशति । भर्शयति । अबीभृशत्; अबभर्शत् । भृश्यन् । भृश्यमानम् । भर्शिष्य २ न्, माणम् । बभृ २ श्वान्, शानम् । ऊदित्वाद्वेट्, भृष्ट्वा, भर्शित्वा । वेट्त्वान्नेट्, भृष्टः, २ वान् । भर्शि २ ता, तुम् ॥ भ्रशू ॥ भ्रश्यति । भ्रश्यते । अभ्रशत् । अभ्रशि । बभ्रश, बभ्रंशतु ; "इन्ध्य-"॥४।३। २१॥ इति न किस्त्व सयोगात्, बभ्रंशिम । बभ्रंशे । भ्रश्यात् । भ्रशिपीष्ट । भ्रशिता । भ्रशिष्यति । बिभ्रशिषति । "वञ्चस्रस-"॥४।१।५०॥ इति ध्वसिसहचरितस्य श्यादे रेव भ्रशेर्ग्रहणान्न्यागमाभावे, बाभ्रश्यते । बाभ्रशीति, बाभ्रष्टि । भ्रंशयति । अबभ्रशत् । भ्रश्यन् । भ्रश्यमानम् । भ्रंशिष्य २ न्, माणम् । बभ्र २ श्वान्, शानम् । भ्रष्ट्वा, "क्त्वा"॥४।३।२९॥ इत्यकित्त्वे, भ्रशित्वा । भ्रष्ट, २ वान् । भ्रशि २ ता, तुम् ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

कृशच् तनुत्वे । कृश्यति । अकृशत् । चकर्श । कर्शिता । चिकर्शिपति । चरीकृश्यते । चरीकृशत् । अचीकृशत्, अचकर्शत् । "अनुपसर्गा: क्षीव"॥४।२।८०॥ इति क्तयोर्निपातनात्, कृशः, २ वान् । परिकृश, २ वान् । सोपसर्गस्य तु, प्रकृशित, २ वान् । "ऋत्तृष-"॥४।३।२४॥ इति क्त्वो वा कित्त्वे, कृशित्वा, कर्शित्वा । शेप भृशूवत् ॥ ४५ ॥

त्रयोऽनिटः ॥ शुषच् शोषणे । शुष्यति । शुष्को भवतीत्यकर्मक । शुष्कं

करोतीत्यन्तर्णिगर्थविवक्षाया च सकर्मकोऽपि। क्ये, शुष्यते। अशुषत्। अशोषि; साकि, अशुक्षाताम्, ध्वमि, अशुक्षध्वम् । शुशोष, शुशोषिथ; शुशुषिम । शुशुषे। शुष्यात्। शुक्षीष्ट। शोष्टा। शोक्ष्यति। अशोक्ष्यत्। शुशुक्षति। शोशुष्यते। शोशुषीति, शोशोष्टि। शोषयति। अशूशुषत्। शुष्य २ न्, माणम्। शोक्ष्य २ न्, माणम्। शुशुष्वान्। शुशुषाणम्। "क्षैशुषि-"॥४।२।७८॥ इति कत्वे, शुष्कः, २ वान्। शुष्टिः। शुष्ट्वा। शोष्टा। शोष्टुम्। शोष्टव्यम्। शोष्यम्। शोषणीयम् ॥ ४६ ॥

दुषंच् वेकृत्ये, रूपभङ्गे। दुष्यति। क्ये, दुष्यते। अदुषत्। अदोषि। दुदोष, दुदुषतुः; दुदोषिथ। दुदुषे। दुष्यात्। दुक्षीष्ट। दोष्टा। दोक्ष्यति। अदोक्ष्यत्। दुदुक्षति। दोदुष्यते। दोदोष्टि, दोदुषीति। णौ, "ऊदुष-"॥४।२।४०॥ इति ऊत्, दूषयति चित्ते वा, चित्त दूषयति। प्रज्ञा दूषयति, दोषयति वा। चित्तसहचरितत्वात् प्रज्ञाऽपि चित्तम्। डे, अदूदुषत्। डे न ह्रस्व इत्यन्ये, अदुदूषत्। दुदूषयिषति। दुष्य २ न्, माणम्; दोक्ष्य २ न्, माणम्। दुदु २ ष्वान्, षाणम्। दुष्टः, २ वान्। दुष्टिः। दुष्ट्वा। प्रदुष्य। दोष्टा। दोष्टुम् ॥४७॥

श्लिषच् आलिङ्गने। श्लिष्यति, विश्लिष्यति; आश्लिष्यति। क्ये, श्लिष्यते। श्लिष्येत्। श्लिष्यतु। अश्लिषत्। "श्लिषः"॥३।४।५६॥ इति सकि, आश्लिक्षत कन्या चैत्रः। क्रियाव्यतिहारे, "हशिट-"॥३।४।५५॥ इति सकि, व्यत्यश्लिक्षत कन्याम्। असत्त्वाश्लेषे तु "नासत्त्वे-"॥३।४।५७॥ इति सकौ निषेधात् पुष्याद्यङि, समाश्लिषत् जतु च काष्ठं च। अश्लिषत्। आत्मनेपदे सिचि, व्यत्याश्लिष्ट। भाक। आश्लेषि। आश्लि ८ क्षाताम्, क्षन्त, क्षथाः, क्षाथाम्, क्षध्वम्, क्षि, क्षावहि, क्षामहि। असत्त्वाश्लेषे तु सिचि; आश्लि ९ क्षाताम्, क्षत, ष्ठाः, क्षाथाम्, ड्ढ्वम्, ड्ढ्वम्, क्षि, क्ष्वहि, क्ष्महि। शिश्लेष, शिश्लिषतुः, शिश्लिषुः, शिश्लेषिथ; शिश्लिषिम। शिश्लिषे, श्लिष्यात्। श्लिक्षीष्ट। श्लेष्टा। श्लेक्ष्यति। अश्लेक्ष्यत्। शिश्लिक्षति। शेश्लिष्यते। शेश्लेष्टि, शेश्लिषीति। श्लेषयति। अशिश्लिषत्। श्लिष्यन्। श्लेक्ष्यन्। शिश्लिष्वान्। शिश्लिषाणम्। श्लिष्टः, २ वान्। श्लिष्टिः। श्लिष्ट्वा। आश्लिष्य। श्लेष्टा। श्लेष्टुम्। श्लेष्टव्यम् ॥ ४८ ॥

प्लुषूच् दाहे। प्लुष्यति । क्ये, प्लुष्यते। अङि, अप्लुषत्। अप्लोषि, अप्लोषिषाताम् । शेष प्लुषू दाहे इत्यस्येव ॥ ४९ ॥

ञितृषच् पिपासायाम्। तृष्यति । क्ये, तृष्यते। अतृषत्। अतर्षि। ततर्ष, ततृषिम। ततृषे । तृष्यात् । तर्षिषीष्ट। तर्षिता। तर्षिष्यति । तितर्षिषति। तरीतृष्यते । तरि ४ तृषीति, तर्ष्टि, तृष्ट', तृषति । रि रीर ३ सर्वत्र । तर्षयति । अतीतृषत्, अततर्षत् । तृष्यन्। तर्षिष्यन् । ततृष्वान्। ततृषाणम् । तृषित, २ वान् । "ऋत्तृष-"॥४।३।२४॥ इति वा किरवे, तृषित्वा, तर्षित्वा। प्रतृष्य । तर्षि ३ ता, तुम्, तव्यम ॥ ५० ॥

तुष, हृषच्, तुष्टौ, प्रीतौ । आद्योऽनिट्, तुष्यति । अतुषत् । तुतोष । तोष्टा । तुष्ट्वा । शीत्यादित्वात्सति क्ते, तुष्ट । तुष्टि.। शेष दुषच्वत् ॥ हृष् ॥ हृष्यति । अहृषत्। जहर्ष । हर्षिता । हृषित, २ वान्। "हृषे' केश"॥४।४।७६॥ इति वा नेटि, केशाद्युद्धुषणे; हृष्टा', हृषिता' केशाः । हृष्टानि, हृषितानि लोमानि । हृष्टम, हृषित केशैर्लोमभिर्वा । हृष्ट , हृषितश्चैत्र, विस्मित इत्यर्थ । हृष्टा., हृषिता दन्ता, प्रतिहता इत्यर्थ । "क्त्वा"॥४।३।२९॥ इत्यकित्त्वे, हर्षित्वा । प्रहृष्य । ऊदिदयमिति नन्दी, हृष्ट्वा, हर्षित्वा । वेट्त्वात् क्तयोर्नेट्; हृष्ट, २ वान्। शेष तृषच्वत् ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

रुषच् रोषे । रुष्यति । क्ये, रुष्यते । अरुषत्। अरोषि । रुरोष, रुरुषिम । रुरुषे। रुष्यात् । रोषिषीष्ट। तादौ "सहलुभ-"॥४।४।४६॥ इति वेटि, रोष्टा, रोषिता। रोषिष्यति । रुरोषिषति, रुरुषिषति। रोरुष्यते।रोरुषीति, रोरोष्टि। रोषयति। अरूरुषत्। रुष्यन् । रोषिष्यन्। रोषिष्यमाण । रुरु २ ष्वान् , षाणम् । "श्वसजप-" ॥४।४।७५॥ इति वेटि, शील्यादित्वात्सति क्ते च, रुष्ट', २ वान्, रुषित , २ वान्। तादौ वेटि, रोष्टा, रोषिता। रुष्ट्वा, रोषित्वा, रुषित्वा। रोष्टुम्, रोषितुम् ॥५३॥

असूच् क्षेपणे । अस्यति; "उपसर्गादस्य-"॥३।३।२५॥ इति वाऽऽत्मनेपदे, विपर्यस्यति, ते, निरस्यति, ते, अभ्यस्यति, ते, अपास्यति, ते; "अकखादि-"॥२।३। ८०॥ इति वा णि', प्रण्यस्यति, प्रन्यस्यति । क्ये, अस्यते। पुष्याद्यङि, "श्वयत्य-" ॥४।३।१०३॥ इत्यस्थ , आस्थत, आस्थम , आस्थाम। आत्मनेपदे तु "शास्त्यस-"

॥३।४।६०॥ इत्यङि, उदास्थत, उदास्थेताम्; अपा ऽ स्थत, स्थेताम्, स्थन्त, स्थथाः, स्थेथाम्, स्यध्वम्, स्थे, स्थावहि, स्थामहि । भाक । आसि, आसिपाताम् । "अस्यादे-"॥४।१।६८॥ इति पूर्वस्यात्वे, आस, आसतुः, आसुः, आसिथ। आसे, आसाते, आसिरे, आसिपे; आसिमहे । अस्यात् । असिपीष्ट। असिता। असिष्यति । आसिष्यत् । असिसिपति, निरसिसिपति, ते । आसयति । आसिसत् । आसयाञ्चकार । ऊदित्त्वात् क्त्वि वेट्, अस्त्वा, असित्वा। निरस्य; अपास्य । वेट्त्वान्नेटि; अस्तः, २ वान् । असि ३ ता, तुम्, तव्यम् । आस्यम् । असनीयम् ॥ ५४ ॥

यसूच् प्रयत्ने । प्रयस्यति, आयस्यति, सपूर्वस्यानुपसर्गस्य च, "भ्रासभ्लास-"॥३।४।७३॥ इति वा श्ये, सयस्यति, यस्यति । पक्षे शवि, सयसति; यसति । क्ये, यस्यते । आङि, अयसत् । अयासि । ययास, येसतुः, येसुः, येसिथ, येसथु, येस, ययास, ययस, येसि २ व, म । येसे । यस्यात् । यसिषीष्ट । यसिता । यसिष्यति । यियसिषति । यायस्यते । यायस्ति, यायसीति । णौ फलवति, "अणिगि प्राणि-"॥३।३।१०७॥ इति परस्मै प्राप्तावपि, "परिमुह-"॥३।३।९४॥ इत्यात्मनेपदे, आयासयते शत्रु मैत्रः । आयीयसत । ऊदित्त्वात् क्त्वि वेट्; यस्त्वा, यसित्वा । आयस्य । आयस्तः, २ वान् । आयसि २ ता, तुम् ॥ ५५ ॥

शमू, दमूच् उपशमे। "शमसप्तकस्य-"॥४।२।१११॥ इति श्ये, दीर्घे, शाम्यति, निशाम्यति, "नेर्ङ्गा-"॥२।३।७९॥ इति णि, प्रणिशाम्यति। क्ये, शम्यते । पुष्पाद्यङि, अशमत् । अशमि, "मोऽकमि-"॥४।३।५५॥ इति न वृद्धिः । एवमग्रेऽपि । अशमिपाताम् । शशाम, शेमतुः, शेमुः, शेमिथ०, शेमिम । शेमे, शेमाते, शेमिरे, शेमिषे । शम्यात् । शमिषीष्ट । शमिता । शमिष्यति । शिशमिषति । शंशम्यते । शंशमीति, शंशन्ति, शंशान्त, शंशमति, शंशमीपि, शंशसि, शंशान्थः, शंशान्थ, शंश ४ मीमि, न्मि, न्व, न्म ॥ अद्य० ॥ "न श्वि-"॥४।३।४९॥ इति न वृद्धौ, अशंशमीत्, पुष्यादिगणनिर्देशाच्च न अङ् । शेष यङ्लुबन्तपाचिवत् । णौ, "शमोऽदर्शने"॥४।२।२८॥ इति ह्रस्वे, शमयति

रोगम्; निशमयति श्लोकान् । अशीशमत् । अशामि, अशमि । शामम् २। शमम् २। दर्शने तु, निशामय २ ति, ते रूपम् । न्यशीशमत्, त । न्यशामि । घटादेर्ह्रस्वो वा ञिणम्परे इत्येव ह्रस्वविकल्पेन सिद्धे दीर्घग्रहणं णिगुयङ् व्यवहितेऽपि णौ ञिणम्परे दीर्घत्वार्थम् । णिगन्ताण्णिगि, अशामि, अशमि । शामम् २।शमम् २। यङ्न्ताण्णिगि, अशंशामि, अशशमि। शशामम् २। शशमम् २; अत्र हि योऽसौ णौ णिर्लुप्यते, यश्च यङोऽकारस्तस्य स्थानित्वेन णेर्व्यवहितत्वाद् ह्रस्वविकल्पो न स्यात्; दीर्घग्रहणे तु, "न सन्धिङी-"॥७।४।१११॥ इति दीर्घविधौ स्थानित्वप्रतिषेधात्तद्विकल्प. सिध्यति। क्ते, "णौ दान्त-"॥४।४।७४॥ इति निपातनात्, शान्त. । पक्षे, "सेट्क्तयोः"॥४।३।८४॥ इति णेर्लुकि, शमित. । शमयित्वा । "लघोर्यपि"॥४।३।८६॥ इत्ययि, प्रशमय्य । शाम्यन् । शमिष्यन् । शेमिवान् । शेमानम् । ऊदित्त्वाद्वेट्; शान्त्वा, शमित्वा । उपशम्य । वेट्त्वान्नेट्; शान्त', २ वान् । शमि २ ता, तुम् । ये, शम्यम् ॥ दमू ॥ दाम्यति । क्ये, दम्यते । अदमत् । अदमि । ददाम, देमतु , देमिम । देमे । दम्यात् । दमिषीष्ट । दमिता । दमिष्यति । अदमिष्यत् । दिदमिषति । दन्दम्यते । दन्दमीति, दन्दन्ति, दन्दान्त., दन्दमति । णौ, "अमोऽकम्यमि-"॥४।२।२६॥ इति ह्रस्वे, "अणिगि प्राणि-"॥३।३।१०७॥ इति प्राप्तेऽपि परस्मैपदे "परिमुह-"॥३।३।९४॥ इत्यात्मनेपदे, "गतिबोध"॥२।२।५॥ इत्यणिक्कर्तु' कर्मत्वे च, दाम्यत्यश्व., दमयतेऽश्वं चैत्र । "अकख-"॥२।३।८०॥ इति णि, प्रणिदमयते । अदीदमत । अदामि, अदमि । दमयित्वा । "णौ दान्त-"॥४।४।७४॥ इति वा निपातनात्, दान्त , दमितः। दाम्यन् । दम्यमानम् । दमिष्य २ न्, माणम् । देमिवान् । देमानम् । दान्त्वा, दमित्वा । दान्त , २ वान् । दान्ति । दमि ३ ता, तुम्, तव्यम् । दम्य । शेषं शमूवत् ॥ ५६ ॥ ५७ ॥

तमूच् काङ्क्षायाम् । ताम्यति । तम्यते । अतमत् । अतमि । तताम, तेमतु । तेमे । तमिता । तान्त , २ वान् । तान्त्वा, तमित्वा । एव सर्वो दमूचूवत्; पर णिगि परस्मै, तमयति । अतीतमत् ॥ ५८ ॥

श्रमूच् खेदतपसो । श्राम्यति, विश्राम्यति, परिश्राम्यति । क्ये, श्रम्यते । अश्रमत् । "मोऽकमि-"॥४।३।५५॥ इति न वृद्धौ, अश्रमि । "विश्रमेर्वा"

॥४।३।५६॥ इति वा न वृद्धौ, व्यश्रमि, व्यश्रामि । शश्राम, शश्रमतुः, शश्रमिम । शश्रमे । श्रम्यात् । श्रमि ३ षीष्ट, ता, ष्यति । शिश्रमिषति । शंश्रम्यते। शश्रमीति, शश्रन्ति, शश्रान्तः, शश्रमति०, शश्र ३ न्मि, न्व., न्म. ॥ अद्य०॥ अशश्रमीत् । श्रमयति । अशिश्रमत् । अश्रमि, अश्रामि । श्रमयित्वा । विश्रमय्य । श्राम्यन् । श्रम्यमाणम् । श्रमिष्य २ न्, माणम् । शश्रन्वान् । शश्रमाणम् । श्रान्त्वा, श्रमित्वा । विश्रम्य । श्रान्तः, २ वान् । श्रान्ति । श्रमि ३ ता, तुम, तव्यम् । श्रम्यम् ॥ ५९ ॥

भ्रमूच् अनवस्थाने, देशान्तरगमने । "भ्रासम्लास-"॥३।४।७३॥ इति श्ये शवि च; भ्राम्यति, भ्रमति । एव वि, सं, परि पूर्वोऽपि । क्ये, भ्रम्यते । अङि, अभ्रमत् । "मोऽकमि-"॥४।३।५५॥ इति न वृद्धौ, अभ्रमि, अभ्रमिषाताम्; ध्वमि; अभ्रमि, २ ध्वम्, ड्ढ्वम् । बभ्राम, "जृभ्रम-"॥४।१।२६॥ इति वैत्वे, भ्रेमतुः, बभ्रमतुः, भ्रेमिथ, बभ्रमिथ, भ्रेमिम, बभ्रमिम । भ्रेमे, बभ्रमे । भ्रम्यात् । भ्रमि, ३ षीष्ट, ता, ष्यति । बिभ्रमिषति । बंभ्रम्यते । बभ्र ३ म्यति, मीति, न्ति, यङ्लुपि शमादिगणनिर्देशान्न दीर्घः, श्यस्तु वा भवत्येव, "भ्रासम्लास-"॥३।४।७३॥ इति प्रतिपदोक्तत्वात् ॥ अद्य० ॥ "न श्वि-"॥४।३।४९॥ इति न वृद्धौ, अबभ्रमीत् । शेष यङ्लुबन्तपचिवत् । भ्रमयति । अबिभ्रमत् । अभ्रामि, अभ्रमि । भ्राम्यन्; भ्रमन् । भ्राम्यमाणम् । भ्रमिष्यन् । भ्रमिष्यमाणम् । बभ्रन्वान्, भ्रेमिवान् । बभ्रमाणम्, भ्रेमाणम् । ऊदित्वात् क्त्वि वेट्; भ्रान्त्वा, भ्रमित्वा । परिभ्रम्य । वेट्त्वान्नेटि, भ्रान्तः, २ वान् । भ्रान्ति । भ्रमि, ३ ता, तुम, तव्यम् । भ्रम्यम् ॥ ६० ॥

क्षमौच् सहने । क्षाम्यति, क्षाम्यतः, क्षाम्यन्ति । क्ये, क्षम्यते । पुष्यादिङि, अक्षमत् । अक्षमि, औदित्त्वाद्वेटि, अक्षसाताम्, अक्षमिषाताम् । चक्षाम, चक्षमतु, चक्षमिम । चक्षमे । क्षम्यात् । क्षसीष्ट, क्षमिषीष्ट । क्षन्ता, क्षमिता । क्षस्यति, क्षमिष्यति । चिक्षसति, चिक्षमिषति । चक्षम्यते । लुपि तु क्षमौपि सहने इत्यस्येव । क्षमयति । अचिक्षमत् । अक्षामि, अक्षमि, अक्षमयिषाताम् । क्षमयाञ्चकार । क्षमयित्वा । प्रक्षमय्य । क्षमित, २ वान् । क्षाम्यन् । क्षस्यन्, क्षमि-

प्यन् । चक्षन्वान् । चक्षमाणम् । क्षान्त्वा, क्षमित्वा । क्षान्तः, २ वान् । क्षान्तिः । क्ष ३ ता, तुम्, तव्यम्; क्षमि ३ ता, तुम्, तव्यम् । क्षम्यम् । क्षमी ॥६१॥

मदैच् हर्षे । माद्यति, प्रमाद्यति, उन्माद्यति । क्ये, मद्यते । अडि, अमदत् । अमादि । ममाद, मेदतु , मेदिम । मेदे । मद्यात् । मदि ३ षीष्ट, ता, ष्यति । मिमदिषति । मामद्यते । माम ४ त्ति, दीति, च , दति ॥ ह्य० ॥ सिचि, अमा ३ म', मत्, मदी । णौ हर्षग्लपनयोर्घटादित्वात् ह्रस्वे, मदयति । अन्यत्र, प्रमादयति, उन्मादयति । मदि ४ त्वा, ता, तुम्, तव्यम् । प्रमद्य । ऐदित्वात् क्तयोर्नेटि, "रदात्-"॥४।२।६९॥ इत्यत्र मदेर्वर्जनान्न नत्वम्, मत्त', २ वान् । ये, मद्यम् । उपसर्गात्तु घ्यणि, प्रमाद्यम् ॥ ६२ ॥

क्लमूच् ग्लानौ । "भ्रासम्लास-"॥३।४।७३॥ इति वा श्ये शवि च, "ष्ठिवुक्लमू-" ॥४।२।११०॥ इति दीर्घे, क्लाम्यति, क्लामति । क्ये, क्लम्यते । अक्लमत् । अक्लमि । चक्लाम, चक्लमतु', चक्लमिम । चक्लमे । क्लम्यात् । क्लमिषीष्ट । क्लमि ? ता, ष्यति । चिक्लमिषति । चक्लम्यते । त्यादौ तु न दीर्घे , चक्ल २ न्ति, मीति, "अह्न्-"॥४।१। १०७॥ इति दीर्घे, चक्लान्त', चक्लमति०, चक्ल २ न्व', न्म । अद्य० । अचक्लमीत् इत्यादि । "ष्ठिवुक्लमू'॥४।२।११०॥ इत्यत्र ऊकारनिर्देशाद् यङ्लुपि न दीर्घ', चक्लमत् । क्लमयति । अचिक्लमत् । अक्लमि, अक्लमिषाताम् । क्लाम्यन्, क्लामन् । क्लमिष्य २ न्, माणम् । चक्लन्वान् । चक्लमानम् । ऊदित्त्वात् क्त्वि वेट्, क्लान्त्वा, क्लमित्वा । परिक्लम्य । वेट्त्वात् क्लान्त , २ वान् । क्लमि, ३ ता, तुम्, तव्यम् । क्लम्यम् ॥ ६३ ॥

त्रयो वेट ॥ मुहौच् वैचित्त्ये, अविवेके । मुह्यति । क्ये, मुह्यते । अडि, अमुहत् । अमोहि, औदित्वाद्वेटि, अमोहिषाताम्, पक्षे साकि, अमुक्षाताम् । मुमोह, मुमुहतु , मुमोहिथ, मुमुहिम । मुमुहे । मुह्यात् । मुक्षीष्ट, मोहिषीष्ट । "मुहद्रुह-" ॥२।१।८४॥ इति वा हस्य घत्वे, औदित्वाद्वेटि च, मोग्धा, मोढा, मोहिता । मोक्ष्यति, मोहिष्यति । मुमुक्षति, मुमुहिषति, मुमोहिषति । मोमुह्यते । मोमुहीति, मोमोग्धि, मोमोढि, मोमुग्ध', मोमूढ , मोमुहति, मोमुहीषि, मोमोक्षि, मोमुग्ध , मोमूढ.०, मोमुह , मोमुह्म. । हौ, मोमुग्धि, मोमूढि । ह्य० । अमो

१६ मुहीत्, मोक्, मोट्, मुग्धाम्, मूढाम्, मुहुः, मुही, मोक्, मोट्०, मुहम्, मुह्व, मुह्म। शेष पचिस्थानोक्तवत्। णौ फलवति "अणिगि प्राणि-"॥३।३।१०७॥ इति परस्मैपदापवादे "परिमुह-"॥३।३।९४॥ इत्यात्मनेपदे, परिमोहयते शत्रुम्। मोहयति। अमूमुहत्। मुह्यन्। मोक्ष्यन्; मोहिष्यन्। मुमुह्वान्। मुमुहानम्। वेट्त्वान्नेटि, मुग्धः, २ वान्, मूढः, २ वान्। मुग्धि., मूढिः। मुग्ध्वा, मूढ्वा, मोहित्वा, मुहित्वा। मोग्धा, मोढा, मोहिता। मोग्धुम्, मोढुम्, मोहितुम्। मोहनीयम्। मोह्यम् ॥ ६४ ॥

द्रुहौच् जिघांसायाम्। "क्रुद्द्रुह-"॥२।२।२७॥ इति सम्प्रदानत्वे, मैत्राय द्रुह्यति। क्ये, द्रुह्यते। अद्रुहत्। अद्रोहि। दुद्रोह, दुद्रुहिम। दुद्रुहे। द्रुह्यात्। औदित्वाद्वेटि, ध्रुक्षीष्ट, द्रोहिषीष्ट। द्रोग्धा, द्रोढा, द्रोहिता। ध्रोक्ष्यति, द्रोहिष्यति। दुध्रुक्षति, दुद्रुहिषति, दुद्रोहिषति। दोद्रुह्यते। शेष मुहौच्वत्, पर सिवि, दोध्रोक्षि। द्रोहयति। अदुद्रुहत्। द्रुह्यन्। ध्रोक्ष्यन्, द्रोहिष्यन्। "मुहद्रुह-"॥२।१।८४॥ इति वा घे, द्रुग्धः, २ वान्। द्रूढ, २ वान्। द्रुग्ध्वा, द्रूढ्वा, द्रुहित्वा, द्रोहित्वा। द्रोग्धा, द्रोढा, द्रोहिता। क्विपि, मित्र २ ध्रुक्, ध्रुट् ॥६५॥

ष्णिहौच् प्रीतौ। स्निह्यति। स्निह्यते। अस्निहत्। अस्नेहि। "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति प, सिष्णेह, सिष्णिहिम। सिष्णिहे। स्निह्यात्। स्निक्षीष्ट, स्नेहिषीष्ट। स्नेग्धा, स्नेढा, स्नेहिता। स्नेक्ष्यति, स्नेहिष्यति। पणि "णिस्तोरेव-"॥२।३।३७॥ इति नियमात् पत्वाभावे; सिस्निक्षति, सिस्निहिषति, सिस्नेहिषति। सेस्निह्यते। अग्रतो मुहौच्वत्। स्नेहयति। असिष्णिहत्। स्निग्ध., २ वान्। स्नीढ, २ वान्। स्नेग्धा, स्नेढा, स्नेहिता। स्नेग्धुम्, स्नेढुम्, स्नेहितुम्। स्निग्ध्वा, स्नीढ्वा, स्निहित्वा, स्नेहित्वा ॥ ६६ ॥

शमू, दमू, तमू, श्रमू, भ्रमू, क्षमौ, मदै, असू, यसू, प्लुषू, लुट, भृशू, भ्रंशू, क्रुश, ञितृष्, रुष, हृष, कुप, गुप, लुप, लुभ, क्लिदौ, ऋधू, गृधूचां पुष्यादित्वं नेच्छन्त्यन्ये। तन्मते पुष्याद्यङभावे सिचि, अशमीत्, अदमीत्, अश्रमीत्, अलोटीत्, अस्रोषीत्, अकोपीत्, अलोपीत्; अहर्षीदित्यादि ॥ इति पुष्यादि ॥

अथ सूयत्यादिर्नवकः ।

पूङौच् प्राणिप्रसवे । सूयते, सूयेते, सूयन्ते । क्ये, सूयते । औदित्त्वा-द्वेटि, असोष्ट, असविष्ट । सुषुवे । सोता, सविता । "ग्रहगुहश्च-"॥४।४।५९॥ इति नेटि, "णिस्तोरेव-"॥२।३।३७॥ इति नियमान्न ष, सुसूषति । "उवर्णात्" ॥४।४।५८॥ इति नेटि, सूत्वा । प्रसूय । "सूयत्यादि-"॥४।२।७०॥ इति क्तयो-स्तस्य नत्वे, सून, २ वान् । प्रसून कुसुमम् । अतएवायमप्राणिप्रसव इत्यन्ये । शेष पूङौक्वत् ॥ ६७ ॥

दूङ्च् परितापे, खेदे । दूयते । क्ये, दूयते । अदविष्ट, अदविषाताम्, अदविषत ॥ भाक ॥ अदावि, अदाविषाताम्, अदविषाताम् । दुदुवे, दुदुवाते, दुदुविरे, दुदुविषे । दविषीष्ट २; दाविषीष्ट । दविता २, दाविता । दविष्यते २, दाविष्यते । दुदूषति । दोदूयते । दोदवीति, दोदोति, दोदूत, दोदुवति । दावयति । अदूदवत् । दावित । दावयित्वा । दूयमान । दविष्यमाण । दुदु-वान । "सूयत्य-"॥४।२।७०॥ इति नत्वे; दून, २ वान् । दैत्यान् दूनवान् स । इति सकर्मकोऽप्यस्ति द्व्याश्रये । दूति । दूत्वा । दवि ३ ता, तुम्, तव्यम् । दव्य, दाव्यम् ॥ ६८ ॥

द्वावनिटौ ॥ दीङ्च् क्षये । अकर्मकोऽयम् । दीयते, उपदीयते, क्षय न गच्छतीत्यर्थ । क्ये, दीयते । "यबक्ङिति"॥४।२।७॥ इत्यात्वे, उपादास्त । दारूपस्य बहिरङ्गत्वात् दासज्ञाया अभावे, "इश्च स्था-"॥४।३।४१॥ इति त इ, अदासाताम्, अदासत, अदास्था; अदाध्वम्, अदाद्ध्वम् । अदायि, अदायिषाताम्, अदा-साताम् । "दीय् दीङ क्ङिति स्वरे"॥४।३।९३॥ उपदिदीये, उपदिदी ९ याते, यिरे, यिषे, याथे, यिध्वे, यिढ्वे, ये, यिवहे, यिमहे । दासीष्ट २, दायिषीष्ट । दाता २, दायिता । उपदास्यते २, उपदायिष्यते । "दीङः सनि"॥४।२।६॥ इति वा आत्वे, दिदासते, दिदीषते । उपदेदीयते । उपदे ४ दयीति, देति, दीत, घति । सानु-बन्धनिर्देशान्न आत्वम्, दीय् च । क्ते, उपदेदित । उपदापयति । उपादीदपत् । उपदीयमान । दास्यमान । दिदीयान । "सूयत्य-"॥४।२।७०॥ इति न, दीन, २ वान् । दीत्वा । उपदाय । दाता । दातुम् । उपदातव्यम् । अनटि, उपदानम् ॥ ६९ ॥

लींङ्च् श्लेषणे । लीयते; विलीयते; निलीयते । क्ये, लीयते । "यबक्ङिति"॥४।२।७॥ "लीङ्लिनोर्वा"॥४।२।९॥ इति वा आत्वे, व्यलेष्ट, व्यलास्त । व्यलायि, व्यलायिषाताम्, व्यलेषाताम्, व्यलासाताम् । विलिल्ये, विलि ४ ल्याते, ल्यिरे, ल्यिषे, ल्यिध्वे । विलेषीष्ट; विलासीष्ट; विलायिषीष्ट । विलेता, विलाता, विलायिता । विलेष्यते, विलास्यते, विलायिष्यते । विलिलीयते । लेलीयते । "लीङ्लिनो-"॥४।२।९॥ इत्यत्र ङिन्निर्देशाद् यङ्लुपि न आ॰, लेलयीति, लेलेति, लेलीत., लेल्यति । णौ, "लियो नोऽन्तः-"॥४।२।१५॥ इति वा ने, घृतं विलीनयति, विलाययति, अत्र वृद्धौ आय् । लिय ई ली इति ईकार प्रश्लेषादात्वे कृते नोऽन्तो न स्यात । "लो लः"॥४।२।१६॥ इति वा ले, "अर्त्तिरी-"॥४।२।२१॥ इति पौ च; घृतं विलालयति, विलापयति । स्नेहद्रव्यादन्यत्र, अयो विलाययति, विलापयति । "लीङ्लिनोर्वा"॥४।२।९॥ इत्यात्वे आत्मनेपदे च, जटाभिरालापयते; परैः स्वं पूजयतीत्यर्थः। श्येनो वर्तिकामपलापयति, अभिभवतीत्यर्थः । मायावी लोकमुल्लापयते, वञ्चयते इत्यर्थ. । एतदर्थत्रयादन्यत्र, बालमुल्लापयति, उत्क्षिपतीत्यर्थ॰ । अत्र "लीङ्लिनोर्वा"॥४।२।९॥ इत्यात्वम् । ङे, व्यलीलिनत, व्यलीलयत्; अलीललत्, व्यलीलपत । लीयमान । लेष्यमाण., लास्यमान. । लिल्यान. । लीन, २ वान् । लीत्वा । विलीय, विलाय । विले ३ ता, तुम्, तव्यम्; विला ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ ७० ॥

डीङ्च् गतौ । डीयते । क्ये, डीयते । "डीयश्वि-"॥४।४।६१॥ इति क्तयोर्नेट्, "सूयत्यादि-"॥४।२।७०॥ इति नत्वे च, डीन., २ वान् । अयमपि विहायसा गतावित्यन्ये । शेष भ्वादिडीङ्वत् ॥ ७१ ॥

इति सूयत्यादिः ।

अथ द्वादशानिटः॥ पींङ्च् पाने । मैत्रो जलं पीयते, निपीयते, आपीयते। क्ये, पीयते। अपेस्त, अपेषाताम् । अपायि, अपायिषाताम्, अपेषाताम् । पिप्ये, पिप्याते, पिप्यिरे, पिप्यिषे। पेषीष्ट, पायिषीष्ट। पेता, पायिता। पेष्यते, पायिष्यते। पिपीषते। पेपीयते। पेपेति, पेपयीति, पेपीत, पेप्यति। पाययति। अपीपयत ।

पीयमान । पेष्यमाणः । पिप्यानः । पीत॰, २ वान् । आपीय; निर्पीय । पीत्वा । पेता । पेतुम् । पयनीयम् । पेयम् ॥ ७२ ॥

ईङ्च् गतौ । ईयते, प्रतीयते, उदीयते, उपेयते । क्ये, ईयते । ऐष्ट, ऐषाताम्, ऐषत, ऐष्ठा॰, ऐषाथाम् । ध्वमि; ऐ २ ढ्वम्, ड्ढ्वम् । ऐषि, आयि, आयिषाताम, ऐषाताम्; "गुरुनाम्य-"॥३।४।४८॥ इत्यामि, अयाञ्चक्रे इत्यादि । आम नेच्छन्त्येके । ईये, ईयाते, ईयिरे । एषीष्ट २; आयिषीष्ट । एता, आयिता । एष्यते, आयिष्यते । ऐष्यत २, आयिष्यत । ईयिषते । आययति; प्रत्याययति । आयियत् । ईयमानः । एष्यमाण. । ईयान । ईत॰, २ वान् । ईत्वा । उपेय; निरीय । एता । एतुम् । एतव्यम् । उपेयम्, उपायनम ॥ ७३ ॥

प्रींङ्च् प्रीतौ । प्रीयते । क्ये, प्रीयते । अप्रेष्ट, अप्रायि, अप्रायिषाताम्, अप्रेषाताम् । "संयोगात्"॥२।१।५२॥ इतीयि, पिप्रिये, पिप्रियिमहे । प्रेषीष्ट २, प्रायिषीष्ट । प्रेता २, प्रायिता । प्रेष्यते २, प्रायिष्यते । पिप्रीषते । पेप्रीयते । पेप्रयीति, पेप्रेति, पेप्रीत॰, पेप्रियति । प्राययति । अपिप्रयत् । प्रीयमाणः । प्रेष्यमाण । पिप्रियाण । प्रीत॰, २ वान् । प्रीत्वा । प्रेता । प्रेतुम् । प्रेतव्यम् । प्रेयम् ॥७४॥

युजिंच् समाधौ, चित्तवृत्तेर्निरोधे । युज्यते । वि, नि, प्र, समन्वभि, प्राङ् पूर्वोऽपि । वियुज्यते । क्ये, युज्यते । "सिजाशिष-"४।३।३५॥ इति वा क्त्वे, अयुक्त, अयुक्षाताम्, अयु ८ क्षत, क्था, क्षाथाम्, ग्ध्वम्, ग्ड्ढ्वम्, क्षि, क्ष्वहि, क्ष्महि । अयोजि । युयुजे, युयुजिमहे । युक्षीष्ट । योक्ता । योक्ष्यते । युयुक्षते । योयुज्यते । योयुजीति, योयोक्ति । योजयति । अयूयुजत् । युज्यमान । योक्ष्यमाण । युयुजान । युक्त॰ २ वान् । "कुशलायुक्त-"॥२।२।९७॥ इति वा सप्तम्याम्, आयुक्तो देवार्चायाम्, देवार्चया वा । युक्त्वा । नियुज्य । योक्ता । योक्तुम् । क्विपि, युजमापन्ना मुनय । घ्यणि, "क्तेऽनिट"॥४।१।१११॥ इति ग, योग्यम्, प्रयोग्यम् । "निप्राद्युज-"॥४।१।११६॥ इति गत्वाभावे, नियोक्तु शक्य नियोज्यम् । प्रयोज्यम् ॥ ७५ ॥

सृजिंच् विसर्गे । सृज्यते माला चैत्र । उत्सृज्यते । उप, वि, नि, व्युत्स पूर्वोऽपि । कर्मकर्तरि, "एकधातौ-"॥३।४।८६॥ इति क्ये, सृज्यते माला स्वय-

मेव । सिचो लुम्यपि कित्त्व प्रति स्थानित्वात्, "अ' सृजि-"॥४।४।१११॥ इति न अत्; असृष्ट, असृक्षाताम्, असृक्षत, असृष्ठाः; असृ, २ ड्ढ्वम्, ग्ढ्ढ्वम्। असर्जि। ससृजे; ससृजिध्वे। सृक्षीष्ट। "अः सृजि"॥४।४।१११॥ इत्यति, स्रष्टा। स्रक्ष्यते। अस्रक्ष्यत। सिसृक्षते। सरीसृज्यते। सरि री र् ३ सृजीति, सरिस्रष्टि, सारिस्रष्ट', सरिसृजति। एव दृशवत्। सर्जयति। असमर्जत्। असीसृजत्। सिसर्जयिषति। सृष्टः, २ वान्। सृष्टि'। सृष्ट्वा। स्रष्टा। स्रष्टुम्। स्रष्टव्यम्॥ ७६॥

पदिंच् गतौ, गतिर्यान ज्ञान च। पद्यते; प्रणिपद्यते। आ, प्र, उद्, सम्, निरुपपूर्वोऽप्येवम्। क्ये, पद्यते। कर्त्तरि, "ञिच् ते पदस्तलुक् च"॥३।४।६६॥ अपादि, अपत्साताम्, अपत्सत, अपत्थाः, अपत्साथाम्, अप २ द्ध्वम्, द्ध्वम्, अप ३ त्सि, त्स्वहि, त्स्महि। भाक। अपादि। पेदे; पेदिमहे। पत्सीष्ट। पत्ता। पत्स्यते। अपत्स्यत। "रभलभ-"॥४।१।२१॥ इतीति, पित्सते। "वञ्च"॥४।१।५०॥ इति नी; पनीपद्यते। पनीप २ दीति, त्ति। उत्पादयति। उदपीपदत्। प्रत्यपादि। पद्यमान.। पत्स्यमान.। पेदान'। प्रपन्न, २ वान्। पत्त्वा। प्रपद्य। पत्ता। पत्तुम्। पत्तव्यम्। पाद्यम्॥ ७७॥

विदिंच् सत्तायाम्। विद्यते। क्ये, विद्यते। अवित्त, अवि ८ त्साताम्, त्सत, त्था., द्ध्वम्, द्द्ध्वम्, त्सि, त्स्वहि, त्स्महि। अवेदि। विविदे, विविदिषे। वित्सीष्ट। वेत्ता। वेत्स्यते। विवित्सते। वेविद्यते। वेवेत्ति, वेविदीति। वेदयति। अवीविदत्। विद्यमान। वेत्स्यमानः। "रदात्"॥४।२।६९॥ इति नः, विन्न', २ वान्। क्ते, "निर्विण्ण"॥२।३।८९॥ इति निपातनात्, निर्विण्णः प्राव्राजीत्, विरक्त इत्यर्थ.। क्तवतौ तु न ण', निर्विन्नवान्। वित्त्वा। वेत्ता। वेत्तुम्॥७८॥

खिदिंच् दैन्ये। खिद्यते, खिद्यामहे। खिद्यते। अखित्त। चिखिदे। खेत्ता। चिखित्सति। खिन्न'। एव विदिंच्वत्॥ ७८॥

युधिंच् सम्प्रहारे, हनने। युध्यते। क्ये, युध्यते। अयुद्ध, अयु ६ त्साताम्, त्सत, द्धा, द्ध्वम्, द्ध्वम्, त्सि। अयोधि। युयुधे, युयुधिमहे। युत्सीष्ट। योद्धा। योत्स्यते। युयुत्सते। योयुध्यते। योयोद्धि, योयुधीति।

"चल्याहार "॥३।३।१०८॥ इति फलवत्यपि परस्मैपदे, चैत्रः काष्ठं योधयति । अयूयुधत् । युध्यमान. । योत्स्यमानः । युयुधानः । युद्ध', २ वान् । युद्ध्वा । प्रयुध्य । योद्धा । योद्धुम् । योद्धव्यम् । योध्यम् ॥ ७९ ॥

अनो रुधिंच् कामे, काम इच्छा । अनुरुध्यते । अन्वरुद्ध । अनुरुरुधे । अनुरोद्धा । शेष युधिच्वत् । कामादन्यत्र रुधादित्वात् श्ने, अनुरुणद्धि । अनुरुन्द्धे ॥ ८० ॥

बुधिं, मनिंच् ज्ञाने । बुध्यते, अवबुध्यते, विबुध्यते, प्रतिबुध्यते । क्ये, बुध्यते । "दीपजन-' ॥३।४।६७॥ इति कर्त्तरि ते वा ञिचि, अबोधि, अबुद्ध; अत्र वर्णे सकारे परतो विधिरिति वर्णविधित्वेन सिच स्थानिवद्भावो नास्तीति सिज्लुकि आदेर्न चतुर्थ, किन्त्व तु प्रतिवर्णविधेरभावात् स्थानित्वम्, तेनात्र न गुण. । एवमन्यत्रापि । अभु २ त्साताम्, त्सत, अबुद्धा, अभु ६ त्साथाम्, द्ध्वम्, द्द्ध्वम्, त्सि, त्स्वहि, त्समहि । भाक । अबोधि । शेष कर्त्तृवत । बुबुधे, बुबुधाते, बुबुधिमहे । भुत्सीष्ट । बोद्धा । भोत्स्यते । अभोत्स्यत । "उपान्त्ये-" ॥४।३।३४॥ इति किर्त्वे, बुभुत्सते । बोबुध्यते । बोबोद्धि, बोबु ४ धीति, द्ध, धति, धीषि, बोभोत्सि, बोबु ३ द्ध', द्ध, धीमि, बोबोध्मि, बोबु २ ध्व', ध्म ॥ ह्य० ॥ अबोबुधीत्, अबो ६ भोत, बुद्धाम्; बुधु, बुधी, भो, भोत् । शेष पाचिवत् । "चल्या-"॥३।३।१०८॥ इति फलवत्यपि परस्मैपदे, बोधयति पद्मं रविः । शिष्यं धर्मं बोधयति । अबूबुधत् । बुबोधयिषति । बुध्यमान । भोत्स्यमान. । बुबुधान' । बुद्ध', २ वान् । 'ज्ञानेच्छा-'॥५।१।९२॥ इति सति क्ते, राज्ञा बुद्ध । बुद्ध्वा, अत्र क्त्वास्थानस्य ध्वस्य लाक्षणिकत्वाद्, "गडदबा-"॥२।१।७७॥ इति आदेर्न चतुर्थ । प्रबुध्य । बोद्धा । बोद्धव्यम् । बोद्धुम् । बोध्यम् ॥ मनिच् ॥ "मन्यस्य-" ॥२।२।६४॥ इत्यतिकुत्सने कर्मणि वा चतुर्थीम्, न त्वा तृणाय तृण वा मन्यते, अनुमन्यते, अवमन्यते, विमन्यते । क्ये, मन्यते । अमस्त, अमं ८ साताम्, सत, स्था., द्ध्वम्, ध्वम्, सि, स्वहि, स्महि । अमानि । मेने, मेनाते, मेनिरे, मेनिषे । मसीष्ट । मन्ता । मस्यते । मिमसते । ममन्यते । मंमन्ति, ममनीति, "यमिरमि-"॥४।२।५५॥ इति नलुकि, ममत, ममनति । मानयति । अमी-

मनत् । मन्यमान. । मस्यमानः । मेनान । मतः, २ वान् । "ज्ञानेच्छा-"॥५।२।९२॥ इति सति क्ते, राज्ञा मत । मत्वा । "यपि"॥४।२।५६॥ इति नलुकि, अवमत्य । मन्ता । मन्तुम् । मन्तव्यम् ॥ ८१ ॥ ८२ ॥

जनैचि प्रादुर्भावे, उत्पत्तौ । "जा ज्ञा-"॥४।२।१०४॥ इति, जायते । जायेत । जायताम् । अजायत । क्ये, "ये नवा"॥४।२।६२॥ इति क्डिति ये वा आत्वे; जायते, जन्यते । "दीपजन-"॥३।४।६७॥ इति वा ञिचि, "न जनवध."॥४।३।५४॥ इति वृद्ध्यभावे, अजनि, अजनिष्ट, अजनि ९ षाताम्, षत, ष्ठा, षाथाम्, ध्वम्, ड्ढ्वम्, षि, ष्वहि, ष्महि । भावे । अजनि । "गमहन-"४।२।४४॥ इत्यल्लुकि, जज्ञे, जज्ञाते, जज्ञिरे, जज्ञिषे । जनि २ षीष्ट, षीध्वम् । जनिता । जनिष्यते । अजनिष्यत । जिजनिषते । वा आत्वे, जाजायते, जञ्जन्यते । यादौ तु न जादेश, जञ्जन्ति, जञ्जनीति । "आ. खनि-"४।२।६०॥ इति नस्य आत्वे, जञ्जात. । "गमहन-"॥४।२।४४॥ इत्यल्लुकि, जञ्ज्ञति । जञ्जन्तीति वाक्ये शतरि, "जा ज्ञा-"॥४।२।१०४॥ इति जादेशे, "श्नश्चातः"॥४।२।९६॥ इत्याल्लुकि, जत्; अत्यर्थ जायमान इत्यर्थः । "कगेवनू-"॥४।२।२५॥ इति ह्रस्वे, "चल्या-"॥३।३।१०८॥ इति फलवत्यपि परस्मै, जनयति । अजीजनत् । ञिणम्परे वा दीर्घ.; अजानि, अजनि । जानम् २ । जनम् २ । जायमान । जायमानम्, जन्यमानम् । जनिष्यमाण. । जज्ञानः । ऐदित्त्वात् क्तयोर्नेटि, "गत्यर्थाकर्म-"॥५।१।११॥ इति वा कर्त्तरि क्ते, "आ खनि-"॥४।२।६०॥ इत्यात्वे; जात, २ वान् । पक्षे भावे क्ते, जातं चैत्रेण । साप्यादपि, "श्लिषशीङ्-"॥५।१।९॥ इति क्ते, अनुजात कनी चैत्र. । पक्षे कर्मणि क्ते, अनुजाता कनी चैत्रेण । विजाता वत्सं गौः । विजातो वत्सो गवा, विजात गवा । अकर्मका अपि हि सोपसर्गा सकर्मका भवन्ति । जनित्वा । "ये नवा"॥४।२।६२॥ इति वा आत्वे, प्रजाय, प्रजन्य । जनि ३ ता, तुम्, तव्यम् । जन्यम् ॥ ८३ ॥

दीपैचि दीप्तौ । दीप्यते, प्रदीप्यते । क्ये, दीप्यते । "दीपजन-"॥३।४।६७॥ इति वा ञिचि तलुकि च, अदीपि, अदीपिष्ट, अदीपि ९ षाताम्, षत० । भावे । अदीपि । दिदीपे, दिदीपाते, दिदीपिरे, दिदीपिषे ।

दीपिपीष्ट। दीपिता । दीपिष्यते । दिदीपिषते । देदीप्यते । देदी ४ पीति, ति, सः, पति । दीपयति । "भ्राजभास-"॥४।२।३६॥ इति वा ह्रस्वे, अदीदिपत्, अदिदीपत् । दीप्यमान. । दीपिष्यमाण । दिदीपान. । ऐदित्त्वान्नेटि; दीप्त, २ वान् । दीपि ३ ता, तुम्, त्वा । प्रदीप्य । दीपनीयम् । दीप्यम् ॥ ८४ ॥

तपिंच् ऐश्वर्ये वा। अनिट् । तप, धूप सन्तापे इत्यस्यैवैश्वर्येऽर्थे दिवादित्वमात्मनेपदं च वा विधीयते । तप्यते । अतप्त, अतप्साताम्। अतापि । तेपे । तप्ता। तप्स्यते। तितप्सते। तप्त ।पक्षे ऐश्वर्येऽपि भ्वादित्वात्, प्रतपति । अताप्सीत् । प्रतताप‌इत्यादि । एके तु तपिंच् ऐश्वर्ये इति धात्वन्तरं दिवादिमाहु । अन्ये तु भ्वादेरेवैश्वर्ये सन्तापे च श्यात्मनेपदे वेच्छन्ति ॥ ८५ ॥*

पूरैचि आप्यायने, वृद्धौ । पूर्यते । क्ये, पूर्यते । "दीपजन-"॥३।४।६७॥ इति वा ञिचि, अपूरि, अपूरिष्ट, अपूरिषाताम्। भावे। अपूरि। पुपूरे, पुपूराते। पूरिषीष्ट। पूरिता । पूरिष्यते । पुपूरिषते । पोपूर्यते । पोपू ४ रीति, र्ति, र्त्ते, रति । पूरयति । अपूपुरत् । "णौ दान्त-"॥४।४।७४॥ इति वा निपातनात्; पूर्ण, पूरितः। पूर्यमाण । पूरिष्यमाण । पुपूराण । ऐदित्त्वान्नेटि, पूर्ण, २ वान्। पूर्त्ति । पूरित्वा । प्रपूर्य । पूरि ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ ८६ ॥

क्लिशिच् उपतापे। क्लिश्यते, सक्लिश्यते। क्ये, क्लिश्यते। अक्लेशिष्ट, अक्लेशिषाताम् । अक्लेशि । चिक्लिशे, चिक्लिशिमहे । क्लेशिषीष्ट । क्लेशिता । क्लेशिष्यते । "वौ व्यञ्जन"॥४।३।२५॥ चिक्लिशिषते, चिक्लेशिषते। चेक्लिश्यते । चेक्लेष्टि, चेक्लिशीति । क्लेशयति। अचिक्लिशत् । "पूङ्क्लिशि-"॥४।४।४५॥ इति क्तक्तवासु वेट्, क्लिष्ट,२ वान्, क्लिशित, २ वान् । क्लिष्ट्वा, "क्षुधक्लिश-"॥४।३।३१॥ इति किस्वे, क्लिशित्वा। क्लेशि ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ ८७ ॥

काशिच् दीप्तौ । प्रकाश्यते । अकाशिष्ट । प्रकाशयति । "उपान्त्यस्य-" ॥४।२।३५॥ इति ह्रस्वे, अचीकशत्। ह्रस्वं नेच्छन्त्यन्ये, अचकाशत्। शेषं काशृङ्वत् ॥ ८८ ॥

वाशिच् शब्दे । वाश्यते पशु । अवाशिष्ट काकः । अवाशि । ववाशे ।

वाशिता । वाशिष्यते । विवाशिषते । वावश्यते । वाशयति । अवीवशत् । न ह्रस्व इत्यन्ये, अववाशत् । वाशि ४ त, ता, तुम्, त्वा ॥ ८९ ॥

इत्यात्मनेपदिनः ।

मृषीवर्जास्त्रयोऽनिट. ॥ रञ्जींच् रागे । रज्यति, रज्यते । क्ये, रज्यते । शेष रञ्जीवत् ॥ ९० ॥

शपींच् आक्रोशे । शप्यति, शप्यते । क्ये, शप्यते । शेषं भ्वादिशपीवत् ॥ ९१ ॥

मृषींच् तितिक्षायाम्; क्षमायाम् । सेट् अयम् । मृष्यति, मृष्यते । "परेर्मृषश्च" ॥३।३।१०४॥ इति फलवत्यपि परस्मैपदे; परिमृष्यति । क्ये, मृष्यते । अमर्षीत्, अमर्षि २ ष्टाम्, षु । अमर्षिष्ट, अमर्षिषाताम् । अमर्षि । ममर्ष, ममृषतु, ममृषुः, ममर्षिथ, ममृषिम । ममृषे, ममृषिमहे । मृष्यात् । मर्षिषीष्ट । मर्षिता २ । मर्षिष्यति, ते । मिमर्षिषति, ते । मरीमृष्यते । मरि री र् ३ मर्ष्टि, मरिरी र् ३ मृषीति, मर्मृ २ ष्टः, षति । मर्षयति । अमीमृषत, अममर्षत् । मृष्य २ न्, माण, मर्षिष्य २ न्, माण । ममृष्वान् । ममृषाणः । "ऋत्तृष-" ॥४।३।२४॥ इति वा किन्त्वे; मृषित्वा, मर्षित्वा । परिमृष्य । "मृष क्षान्तौ" ॥४।३।२८॥ इति क्तयोरकित्त्वे, मर्षित., २ वान् । क्षान्तेरन्यत्र भूषणादिषु किन्त्वे, मृषितः, २ वान् । मर्षि ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ ९२ ॥

णहींच् बन्धने । नह्यति, नह्यते, सनह्यति, ते, णपाठात् "अदुरुप" ॥२।३।७७॥ इति णत्वे, प्रणह्यति, ते । "वाऽवाप्यो-" ॥३।२।१५६॥ इति अपेः पिर्वा, अपिनह्यति, ते, पिनह्यति, ते । क्ये, नह्यते । "नहाहो-" ॥२।१।८५॥ इति हस्य धे, अनात्सीत्, अनाद्धाम्, अनात्सु, अनात्सी. । अनद्ध, अनत्साताम्, अनद्धा, अन २ द्ध्वम्, द्ध्वम् । अनाहि । ननाह, नेहतु, नेहु, नेहिथ, ननद्ध, नेहथु., नेह, ननाह, ननह, नेहि २ व, म । नेहे । नह्यात् । नत्सीष्ट । नद्धा २ । नत्स्यति, ते । सन्निनत्सति । नानह्यते । नान १२ हीति, द्धि, द्ध., हति, त्सि, हीषि, द्ध, द्ध, हीमि, ह्मि, ह्व, ह्म । हौ, नानद्धि ॥ ह्य० ॥

अनान १३ त, द्, हीत्, द्धाम्, हु, त, द्, ही, द्धम्, द्ध, हम्, ह्व, ह्म । शेष पचिवत् । नाहयति । अनीनहत् । नद्ध २, वान् । पिनद्धम्, अपिनद्धम् । नद्धा । संनह्य । नद्धा । नद्धुम् । नद्धव्यम् ॥ ९३ ॥

उभयपदिन ।

इति तपाचार्यश्रीदेवसुन्दरसूरिशिष्यश्रीगुणरत्नसूरिविरचिते क्रियारत्नसमुच्चये दिवादिगणः ॥

अथ स्वादिः ।

तत्रादौ धूगुद्द् वर्जा पञ्चानिट ॥ षुग्ट् अभिषवे । अभिषव, क्लेदन सन्धानाख्यम्, पीडनम थने वा । स्नानमिति चान्द्रा । "स्वादे श्नुः"॥३।४।७५॥ इति श्नौ, "उश्नो"॥४।३।२॥ इति गुणे, सुनोति, "उपसर्गात्सुग्"॥२।३।३९॥ इति षत्वे, अभिषुणोति, अन्तर्भूतणिगर्थत्वेन स्नपयतीत्यप्यर्थ । सुनुत, सुन्वन्ति, सुनोषि, सुनुथ, सुनुथ, सुनोमि । "वम्यविति वा"॥४।२।८७॥ इत्युतो वा लुकि, सुन्व, सुनुव, सुन्म, सुनुम । सुनुते, सुन्वाते, सुन्वते, सुनुषे, सुन्वाथे, सुनुध्वे, सुन्वे, सुन्वहे, सुनुवहे, सुन्महे, सुनुमहे । क्ये, सूयते, अभिषूयते । सुनुयात् । सुन्वीत । सूयेत् । सुनोतु, सुनुताम्, सुन्वन्तु, "असयोगादो"॥४।२।८६॥ इति हेर्लुकि, सुनु, सुनुतम्, सुनुत, सुनवा ३ नि, व, म । सुनुताम्, सुन्वाताम्, सुन्वताम्, सुनुष्व, सुन्वाथाम्, सुनुध्वम्, सुनवै, सुनवा २ वहै, महै । सूयताम् । अड्व्यवायेऽपि षत्वम्, अभ्यषुणोत् । असु २२ नोत्, नुताम्, न्वन्, नो, नुतम्, नुत, नवम्, नुव, न्व, नुम, न्म, नुत, न्वाताम्, न्वत, नुथा, न्वाथाम्, नुध्वम्, न्वि, नुवहि, न्वहि, नुमहि, न्महि । असूयत । एव स्वादिसर्वधातुष्वपि ४ विभक्तय ॥ अद्य० ॥ "धूगसुस्तो -"॥४।४।८५॥ इति सिचीटि, असावीत्, असा ८ विष्टाम्, विषु, विष्म । आत्मनेपदे लिडभावे, असोष्ट, असो ९ षाताम्, षत, ष्ठा., ढ्वम्, ड्ढ्वम्० । असावि । आद्दिल इत्युक्ते पूर्वस्य षत्वाभावे, उत्तरस्य तु षपाठात्, "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति

षत्वे; अभिसुषाव, सुषुवतुः, सुषुवुः, सुषविथ, सुषोथ; सुषुविम । अभिसुषुवे, सुषुविमहे । अभिषूयात् । सोषीष्ट । सोता २ । "सुगः स्यसनि" ॥२।३।६२॥ इति न षत्वे, अभिसोष्यति, ते । अभ्यसोष्यत; त । "णिस्तोरेव-" ॥२।३।३७॥ इति नियमादुत्तरस्य षत्वाभावे; सुसूषति, ते । अद्वित्व इति निषेधात् पूर्वस्यापि न षत्वे, अभिसुसूषति, ते । अभ्यसुसूषत्, त । सुसूषतेः क्विपि, सुसूः, अभिसुसूः, अत्र धातोः षाणि षत्व निषिद्धमपि परे रुत्वे षत्वस्यासत्त्वात्, "सो रुः" ॥२।१।७२॥ इति रुत्वे कृते, वर्णविधौ स्थानित्वाभावात् षणोऽभावेनानिषेधात् पुनः प्राप्तं सत्, "सुगः स्यसनि" ॥२।३।६२॥ इति पुनर्निषिध्यते, सोषूयते, अभिसोषूयते । सोषवीति, सोषोति । सावयति; अभिषावयति, अत्र प्रागुपसर्गसम्बन्धः । ण्यन्तस्य पश्चादुपसर्गसम्बन्धे तु, अभिसावयति । असूषवत् । द्वित्वे तु न षः, अभ्यसूषवत् । सुषावयिषति । सुन्वन् । सुन्वती । सुन्वानः । सोष्य २ न्, माणः । सुषुवान् । सुषुवाणः । सुतः, २ वान् । सुत्वा । अभिषुत्य । सो ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥१॥

षिग्ट् बन्धने । सिनोति, विसिनोति, सिनुतः, सिन्वन्ति । सिनुते, सिन्वाते । सीयते । असैषीत । असेष्ट । असायि । षपाठात्, "नाम्यन्त-" ॥२।३।१५॥ इति षत्वे, सिषाय, सिष्यतु, सिषयिथ, सिषेथ, सिष्यिम । सिष्ये । सीयात् । सेषीष्ट, सायिषीष्ट । सेष्यति, ते । सिषीषति, ते । सेषीयते । सेषयीति, सेषेति । साययति । असीषयत् । सिन्वन् । सेष्यन् । सिषिवान् । सिष्याणः । सितः, २ वान् । "सेर्ग्रासे-" ॥४।२।७३॥ इति क्तयोस्तस्य नत्वे, सिनो ग्रासः स्वयमेव । "प्रसितोत्सुक-" ॥२।२।४९॥ इति आधारे वा तृतीया, केशैः केशेषु वा प्रसितः । परि, नि, वि पूर्वस्य "सयसितस्य" ॥२।३।४७॥ इति षत्वे, परिषितः, निषितः, विषितः, त्रिष्वपि बद्ध इत्यर्थः । सित्वा । प्रसित्य । सेता । सेतुम् ॥ २ ॥

डुमिंग्ट् प्रक्षेपणे । मिनोति, निमिनोति, प्रक्षिपतीत्यर्थः । प्रमिनोति, प्रनिमिनोति । मिनुते । क्ये, मीयते । यबक्ङिति, "मिग्मीग-" ॥४।२।८॥ इत्यात्वे, न्यमासीत्, न्यमासिष्टाम् । न्यमास्त, न्यमासाताम् । न्यमायि । विषयव्याख्यानात् प्रागात्वे पश्चात् द्वित्वे, ममौ । धातुपारायणे तु, मिमायेति यद-

स्ति तत्तु नावबुध्यते, प्रथमादर्शलेखकदोषाद्वा सम्भवति । मिम्यतु॰, मिम्यु, वेटि, ममिथ, ममाथ, मिम्यथुः, मिम्य, ममौ, मिम्यिव, मिम्यिम । मिम्ये । मीयात् । मासीष्ट । माता, ञिटि, मायिता । मास्यति, ते, मायिष्यते । "मिमीमा-"॥४।१।२०॥ इतीति, प्रमित्सति, ते । निमेमीयते । निमेमयीति, निमेमेति, "मिग्मीग्-"॥४।२।८॥ इत्यत्रानुबन्धनिर्देशाद्यङ्लुपि न आत्वम् । निमापयति । न्यमीमपत् । मिन्वन् । मिन्वानः । मीयमानम् । मास्यन् । मास्यमानः । मिमिवान् । मिम्यानः । मितः, २ वान् । मितिः । मित्वा । प्रमाय । मा ३ ता, तुम्, तव्यम् । मानीयम् । मेयम् । मानम् ॥ ३ ॥

चिग्ट् चयने । चिनोति, चिनुते । स, प्र, उप, अव, परि, उद्, आङ्, नि पूर्वोऽप्येव, "नेर्ङ्गो"॥२।३।७९॥ इति णिः, प्रणिचिनोति । क्ये, चीयते । चिनुयात् । चिन्वीत । चिनोतु । चिनुताम् । अचिनोत् । अचिनुत । शेष पुग्ट्वत् ॥ अद्य० ॥ अचैषीत्, अचै ८ ष्टाम्, षु॰, षीः, ष्टम्, ष्ट, षम्, ष्व, ष्म । "धुट्-ह्रस्व-"॥४।३।७०॥ इति सिच्लुक् परत्वेऽपि नित्यत्वात् प्रागेव गुणे, अचेष्ट, अचेषाताम्, अचेषत, अचेष्ठा । "सो धि-"॥४।३।७२॥ इति वा सिचोलुकि, "नाम्य-"॥२।१।८०॥ इति ढे, अचे २ ढ्वम्, ड्ढ्वम् । भाक । अचायि, अचायिषाताम्, अचेषाताम्, अचायि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, अचे २ ढ्वम्, ड्ढ्वम् । सन्परोक्षयो, "चेः किर्वा"॥४।१।३६॥ चिकाय, चिचाय, चिक्यतु, चिच्यतु, चिकयिथ, चिकेथ, चिचयिथ, चिचेथ, णवि, चिकय, चिकाय, चिचय, चिचाय, चिक्यिम, चिच्यिम । चिक्ये, चिच्ये, चिक्यिमहे, चिच्यिमहे । चीयात् । चेषीष्ट, चायिषीष्ट, चेषीढ्वम्, चायि २ षीढ्वम्, षीध्वम् । चेता २, चायिता । चेष्यति, ते; चायिष्यते । चिकीषति, ते, चिचीषति, ते । चेचीयते । चेचयीति, चेचेति, चेचित, चेच्यति । क्ये, चेचीयते ॥ सप्त० ॥ चेचियात् । ह्य० ॥ अचे ४ चयीत्, चेत्, चिताम्, चयु । क्ये, अचेचीयत ॥ अद्य० ॥ अचेचायीत् । भाक । अचेचायि, अचेचायिषाताम्, अचेचयिषाताम् । चेचयाञ्चकार । भाक । चेचयाञ्चक्रे । चेचीयात् । भाक । चेचायिषीष्ट, चेचयिषीष्ट । चेचयिष्यति । भाक । चेचायिष्यते, चेचयिष्यते । अचेचयिष्यत् । भाक । अचेचायिष्यत, अचेचयिष्यत ।

णिगि, "चिस्फुरो.-"॥४।२।१२॥ इति वा आत्वे, "अर्त्तिरी"॥४।२।२१॥ इति पौ, निश्चापयति, निश्चाययति। अचीचपत्, अचीचयत्। चिचापयिषति, चिचाययिषति। चिन्वन्। चिन्वानः। चीयमानम्। चेष्यन्। चेष्यमाणः। चिचिवान्, चिकिवान्। चिच्यानः, चिक्यानः। चितः, २ वान्। चित्वा। सञ्चित्य। चेता। चेतुम्। चेतव्यम्। चेयम्, परिचेयम्। अन्येत्वेनं चुरादौ पठित्वा अस्य घटादित्वं, "चिस्फुरो.-"॥४।२।१२॥ इत्यात्वाभावं चेच्छन्ति। तन्मते, चययति। आत्वमप्यन्ये; चापयति। णिजभावे तु; चयति, चयते इत्यादि॥ ४॥

धूगट् कम्पने। धूनोति, धूनुते। क्ये, धूयते। धूनुयात्। धून्वीत। धूनोतु। धूनुताम्। अधूनोत्। अधूनुत। "धूग्सुस्तोः"॥४।४।८५॥ इतीटि, अधावीत्, अधाविष्टाम्। आत्मनेपदे तु, "धूगौदित."॥४।४।३८॥ इति वेटि, अधोष्ट, अधविष्ट। अधावि, अधाविषाताम्, अधोषाताम्, अधविषाताम्। दुधाव, दुधुवतु, दुधुवुः, दुधविथ, दुधुविम। दुधुवे। धूयात्। "धूगौदितः"॥४।४।३८॥ इति वेटि, धोषीष्ट, धविषीष्ट, धाविषीष्ट। धोता, धविता, धाविता। धोष्यति, धविष्यति, ते, धाविष्यते। दुधूषति, ते, दुधुविषति, ते। दोधूयते। दोधवीति, दोधोति। णौ, "धूग्प्रीगो.-"॥४।२।१८॥ इति ने, विधूनयति। व्यदूधुनत्। ग्निर्देशाद्यङ्लुपि णौ न नोऽन्तः। दोधावयति। धूतः, २ वान्। "उवर्णात्" ॥४।४।५८॥ इति नेट्, धूत्वा। विधूय। धोता, धविता। धोतुम्, धवितुम्। धोतव्यम्, धवितव्यम्। उदन्तोऽनिट् चायमित्येके, धुनोति, धुनुते। क्ये, धूयते। धुनुयात्। धुनोतु। अधुनोत्। अधोष्ट। अधावि। धोता। विधुतः। धुत्वा। विधुत्य इत्यादि॥ ५॥

स्तृगट् आच्छादने। स्तृणोति, स्तृणुते। क्ये, "क्ययङ"॥४।३।१०॥ इति गुणे, आस्तर्यते। अस्तार्षीत्, अस्तार्ष्टाम्, अस्तार्षुः, अस्तार्षीः। आत्मने सिजाशिषो, "सयोगादृत"॥४।४।३७॥ इति वेटि, आस्तरिष्ट, आस्तृत। "ऋवर्णात्"॥४।३।३६॥ इति सिच् कित्। "धुट्-"॥४।३।७०॥ इति लुक्, अस्तारि; ञिटि, अस्तारिषाताम्, अस्तरिषाताम्, अस्तृषाताम्। तस्तार, "सयोगाद्-" ॥४।३।९॥ इति गुणे, तस्तरतु, "ऋत."॥४।४।७९॥ इति नेटि, तस्तर्थ, तस्तरथु,

लुपि सनि "श्रवोऽनाङ्-"॥३।३।७१॥ इत्यात्मने, शोश्रूषते। णौ, श्रावयति। सनि "श्रुस्रुद्रु-"॥४।१।६१॥ इति पूर्वस्योतो वेत्वे, शिश्रावयिषति, शुश्रावयिषति। ङे, "असमानलोपे-"॥४।१।६३॥ इति सन्वद्भावे, अशिश्रवत्, अशुश्रवत्। शृण्वन्। सशृण्वान.। श्रोष्यन्। श्रोष्यमाणम्। "तत्र क्वसुकानौ-"॥५।२।२॥ इति परोक्षामात्रविषये क्वसुरेव, शुश्रुवान्, उपशुश्रुवान्। बहुलाधिकारात् कानो ऽस्मान्नास्ति। श्रुत, २ वान्। श्रुत्वा। प्रतिश्रुत्य। श्रोता। श्रोतुम्। श्रव्यम्। श्राव्यम। श्रोतव्यम्॥ ९॥

टुदुट् उपतापे। दुनोति। क्ये, दूयते। अदौषीत, अदौष्टाम्, अदौषु। अदावि, अदोषाताम्, अदाविषाताम्। दुदाव, दुदुवतु, दुदोथ, दुदविथ; दुदुविम। दुदुवे। दूयात्। दोषीष्ट, दाविषीष्ट। दोता २; दाविता २। दोष्यति, ते; दाविष्यते। "स्वरहन्-"॥४।१।१०४॥ इति दीर्घे, दुदूषति। दोदूयते। दोदवीति, दोदोति, दोदुत, दोदुवति। दावयति। अदीदवत्। दुन्वन्। दोष्यन्। दूयमानम्। दुदुवान्। दुदुवानम्। "दुगो"॥४।२।७७॥ इति नत्व ऊश्च, दून, २ वान्। दुत्वा। प्रदुत्य। दोता। दोतुम्॥ १०॥

पृट् प्रीतौ। पृणोति। क्ये, प्रियते। अशिति शेष सर्वं पृक्वत्॥११॥

शक्लृट् शक्तौ। शक्नोति, शक्नुतः, शक्नुवन्ति; अत्र उव्। शक्नुव, शक्नुम; अत्र संयोगसद्भावान्न उलुक्। क्ये, शक्यते। शक्नुयात्। शक्नोतु, शक्नुताम्, शक्नुवन्तु, शक्नुहि, संयोगान्न हेर्लुक्। अशक्नोत्। शिति शेष पुग्दृवत्। लृदित्त्वादङि, अशक ३ त, ताम्, न्। अशाकि, अश ९ क्षाताम्, क्षत, क्था, क्षाथाम्, ग्ध्वम, ग्ड्ढ्वम्, क्षि, क्ष्वहि, क्ष्महि। शशाक, शेकतु, शेकु, शेकिथ, शशक्थ, शेकथु, शेक, शशाक, शशक, शेकि २ व, म। शेके। शक्यात्। शक्षीष्ट। शक्ता २। शक्ष्यति, ते। "रभलभ-"॥४।१।२१॥ इति इत्वे, "शकोजिज्ञासायाम्"॥३।३।७३॥ इत्यात्मनेपदे च, विद्या शिक्षते, ज्ञातु शक्नुयामितीच्छतीत्यर्थ। अशिक्षिष्ट। आमादेशे, शिक्षाञ्चक्रे, अत्र धातो परस्मैपदित्वेऽपि "शको"॥३।३।७३॥ इति वचनादेव "आम कृग"॥३।३।७५॥ इत्यनेन परस्मैपद न भवति। जिज्ञासाया अन्यत्र तु परस्मै, शक्तुमिच्छति शिक्षति।

शाशक्यते । शाश २ कीति, क्ति । शेष पाचिवत् । शाकयति । अशीशकत् । शाकि २ त' वान्, । शक्नुवन् । शक्यमानम् । शक्ष्य २ न्, माणम् । शेकिवान् । शेकानम् । शक्त', २ वान् चैत्रः । "शक. कर्मणि"॥४।४।७३॥ इति कर्मणि क्ते वा नेट्, शकितः शक्तो वा घटः कर्तु चैत्रेण । कर्मणि क्तवतुर्नास्तीति नोदाह्रियते । शक्त्वा । शक्ता । शक्तुम् । शक्यम् । शकनीयम् । शक्तव्यम् ॥१२॥

राध, साधट् ससिद्धौ, फलसम्पत्तौ । राध्नोति, पचतीत्यर्थः । आराध्नोति । वि, अप, प्रति, पूर्वोऽप्येवम् । "यद्वीक्ष्ये-"॥२।२।५८॥ इति चतुर्थ्याम्, मैत्राय राध्नोति, मैत्रस्य शुभाशुभ पर्यालोचयतीत्यर्थः । राध्नुत', राध्नुवन्ति, राध्नुव', राध्नुमः । क्ये, राध्यते । हौ, राध्नुहि ॥ अद्य० ॥ अरात्सीत्, अराद्धाम्, अरात्सु, अरात्सी., अराद्धम्, अराद्ध, अरात्सम, अरात्स्व, अरात्स्म । अराधि, अरा ५ त्साताम्, त्सत, द्धा, द्ध्वम, द्ध्वम् । रराध, रराधतु', रराधु', रराधिथ, रराधिम । रराधे । वधे तु, "अवित्परोक्षा-"॥४।१।२३॥ इति एर्न च द्वि, प्रतिरेधतुः । प्रतिरेधे । राध्यात् । रात्सीष्ट । राद्धा २ । रात्स्यति, ते । "राधेर्वधे-"॥४।१।२२॥ इति इः, प्रतिरित्सति । वधादन्यत्र, आरिरात्सति । राराध्यते । रारा ४ धीति, द्धि, द्धः, धति । राधयति । अरीरधत् । राध्नुवन् । राध्यमानम् । रात्स्य २ न्, मानम् । ररा-२ ध्वान्, धानम् । राद्ध', २ वान् । राद्ध्वा । आराध्य । राद्धा । राद्धुम् । राद्धव्यम् । राध्यम् ॥ साध ॥ साध्नोति, साध्नुत', साध्नुवन्ति०, साध्नोमि, साध्नुव', साध्नुमः । क्ये, साध्यते । हौ, साध्नुहि । असात्सीत्, असाद्धाम्, असात्सु । असाधि, असात्साताम् । ससाध, ससाधतु'; ससाधिथ; ससाधिम । ससाधे । साध्यात् । सात्सीष्ट । साद्धा । सात्स्यति । सिसात्सति । सासाध्यते । साधयति । असीसधत् । सिसाधयिषति । षपाठात् "नाम्यन्त-"॥२।३।१५॥ इति षत्वमित्यन्ये । सिषात्सति । असीषधत् । सिषाधयिषति । साध्नुवन् । सात्स्यन् । साध्यमानम् । साद्धः, २ वान् । साद्ध्वा । प्रसाध्य । साद्धा । साद्धुम् । साद्धव्यम् ॥ १३ ॥ १४ ॥

ऋधूट् वृद्धौ । ऋध्नोति । "ऋत्यारुप-"॥१।२।९॥ इत्यारि, प्रार्ध्नोति; परार्ध्नोति । क्ये, ऋध्यते । अशिति शेष ऋधूच्वत् ॥ १५ ॥

अथ तुदादिगणः ।

दशानिटः ॥ तुदींत् व्यथने । "तुदादेः शः" ॥३।४।८१॥ इति शे, तस्य ङित्त्वा न्न गुणे, तुदति, तुदते । क्ये, तुद्यते । अतौत्सीत्, अतौत्ताम्, अतौत्सुः, अतौत्सी, अतौत्तम्, अतौत्त, अतौत्सम, अतौत्स्व, अतौत्स्म । "सिजाशिष" ॥४।३।३५॥ इति कित्त्वे, अतुत्त, अतु १ त्साताम्, त्सत, त्थाः, त्साथाम्, द्ध्वम्, द्ध्वम्, त्सि, त्स्वहि, त्स्महि । तुतोद, तुतुदतु, तुतोदिथ, तुतुदिव । तुतुदे । तुद्यात् । तुत्सीष्ट । तोत्ता २ । तोत्स्यति, ते । "उपान्त्ये" ॥४।३।३४॥ इति कित्त्वे, तुतुत्सति । तोतुद्यते । तोतुदीति, तोतोत्ति । तोदयति । अतूतुदत् । तुदन् । "अवर्णादश्न-" ॥२।१।११५॥ इति वाऽन्त्, तुदन्ती, तुदती स्त्री कुले वा । तुदमानः । तुद्यमानम् । तोत्स्य २ न्, मानः । तुतु २ द्वान्, दान । तुन्नः, २ वान् । तुत्त्वा । तोत्ता । तोत्तुम् । तोत्तव्यम् ॥ १ ॥

भ्रस्जींत् पाके । शे, "ग्रहव्रश्च-" ॥४।१।८४॥ इति य्वृति, 'सस्य शषौ' ॥१।३।६१॥ इति शे, "तृतीयस्तृ-" ॥१।३।४९॥ इति शस्य जे, भृज्जति, ते । अशिति, "भृज्जो भर्ज्" ॥४।४।६॥ इति वा भर्जादेशे, स्थानिवद्भावेन पूर्वेण स्वरेण सह रस्य य्वृति, भृज्यते । पक्षे भ्रस्जो य्वृति, भृज्ज्यते । एवमग्रेऽपि क्ङिति रूपद्वयस्य य्वृत् ज्ञेयम् । अभार्क्षीत्, अभार्ष्टाम्, अभार्क्षुः । अभ्राक्षीत्, अभ्राष्टाम्, अभ्राक्षुः । अभर्ष्ट, अभ्रष्ट, अभर्क्षाताम्, अभ्रक्षाताम्, अभर्ष्ठाः, अभ्रष्ठाः । सो वा लुकि "यज-" ॥२।१।८७॥ इति षत्वे, अभर्ड्ढ्वम्, अभ्रड्ढ्वम् । पक्षे, "षढो कः-" ॥२।१।६२॥ इति षः कत्वे, "नाम्यन्त-" ॥२।३।१५॥ इति सः षत्वे, "तृतीय-" ॥ ॥१।३।४९॥ इति डत्वे, को गत्वे च, अभर्ग्ढ्वम्, अभ्रग्ढ्वम् । अभर्जि, अभ्रज्जि । बभर्ज, सयोगात्कित्त्वाभावान्न य्वृति, बभर्जतु, बभर्जिथ, बभर्ष्ठ, बभर्जिम । बभर्जे । बभ्रज्ज, बभ्रज्जतु, बभ्रज्जिथ, बभ्रष्ठ, बभ्रज्जिम । बभ्रज्जे । प्रागुवत् य्वृति, भृज्यात्, भृज्ज्यात् । भर्क्षीष्ट, भ्रक्षीष्ट । भर्ष्टा, भ्रष्टा । भर्क्ष्यति, ते, भ्रक्ष्यति, ते । "इवृध-" ॥४।४।४७॥ इति वेटि, बिभर्जिषति, ते, बिभर्क्षति,

ते, बिभ्रज्जिषति, ते, बिभ्रक्षति, ते। एव रूपाणि ८। बरीभृज्यते, बरीभृज्ज्यते। "भृज्ज-"॥४।४।६॥ इत्यत्र लुप्ततिव्निर्देशाद्यङ्लुपि भर्जादेशाभावे भ्रस्ज एव ग्वृति ह्लि च, बरी रि र् ३ भृज्जीति, अत्र अग्वृद्धेनदित्युक्तेर्यङ्लुप्यपि ग्वृत् सिद्धम्। बर्भृष्टि, अत्र परे गुणे विधेये "सयोगस्यादौ-"॥२।१।८८॥ इति सलोपस्यासत्त्वेनोपान्त्याभावान्न गुणः। बर्भृ १० ष्ट', ज्जति, ज्जीषि, क्षि, ष्टः, ष्ठ, ज्जीमि, ज्ज्म, ज्ज्व', ज्ज्मः। क्ये, बर्भृज्ज्यते। हौ, बर्भृड्ढि ॥ ह्य० ॥ अबर्भृ १२ ज्जीत्, ड् ट्, ष्टाम्, ज्जु, ज्जी., ट् ड्, ष्टम्, ष्ट, ज्जम्, ज्ज्व, ज्ज्म। ॥ अद्य० ॥ अबर्भृज्जीदित्यादि। यङ्लुपि न ग्वृदित्यन्ये। बाभ्र ४ ज्जीति, ष्टि, ष्ट', ज्जति ॥ ह्य० ॥ अबाभ्रड् इत्यादि। भर्जयति, भ्रज्जयति। अबभर्जत्, अबभ्रज्जत्। भृज्जन्। भृज्जमान'। भर्क्ष्य २ न्, माण, भ्रक्ष्य २ न्, माण। बभृज्वान्, बभृज्ज्वान्। बभृजान, बभृज्जान। भ्रष्ट २, वान्। भृष्ट्वा, एषु षत्वे कृते द्वयो' सदृश रूपम्। भर्ष्टा, भ्रष्टा। भर्ष्टुम्, भ्रष्टुम्। भर्ष्टव्यम्, भ्रष्टव्यम्। घ्यणि "क्तेऽनिट-"॥४।१।१११॥ इति गत्वे, भर्ग्यम्। "तृतीयस्तृ-" ॥१।३।४९॥ इति सस्य दत्वे, भ्रद्ग्यम् ॥ २ ॥

क्षिपींत् प्रेरणे। क्षिपति, ते। आ, वि, सम्, प्र, उप, परि, उद्, नि पूर्वोऽप्येवम्। फलवत्यपि "प्रत्यभ्यते-"॥३।३।१०२॥ परस्मैपदे, प्रतिक्षिपति, अभिक्षिपति, अतिक्षिपति। क्ये, क्षिप्यते। अक्षैप्सीत, अक्षैप्ताम्, अक्षैप्सु०; अक्षैप्सम्। अक्षिप्त, अक्षि ९ प्साताम्, प्सत, प्था., प्साथाम्, ब्ध्वम, ब्द्ध्वम्, प्सि, प्स्वहि, प्स्महि। अक्षेपि। चिक्षेप, चिक्षिपतु, चिक्षिपिम। चिक्षिपे। क्षिप्यात्। क्षिप्सीष्ट। क्षेप्ता २। क्षेप्स्यति, ते। चिक्षिप्सति, ते। चेक्षिप्यते। चेक्षिपीति, चेक्षेप्ति। क्षेपयति। अचिक्षिपत्। क्षिप्तः, २ वान्। क्षिप्त्वा। प्रक्षिप्य। क्षेप्ता। क्षेप्तुम्। क्षेप्यम ॥ ३ ॥

दिशीत् अतिसर्जने, त्यागे। दिशति, ते। आ, सम्, निर्, उप, अति, प्रति, प्र, समापूर्वोऽपि। क्ये, दिश्यते। सकि, आदिक्षत्, आदिक्षताम्०। आदि ९ क्षत, क्षाताम्, क्षन्त, क्षथा, क्षाथाम्, क्षध्वम्, क्षि, क्षावहि, क्षामहि। अदेशि। दिदेश, दिदिशतु', दिदेशिथ, दिदिशिम। दिदिशे। दिश्यात। दिक्षीष्ट।

देष्टा २ । देक्ष्यति, ते । दिदिक्षति, ते । देदिश्यते । देदिशीति, देदेष्टि । देशयति । अदीदिशत् । दिशन् । दिशमानः । देक्ष्य २न्, माणः । दिदि २ श्वान्, शानः । दिष्ट, २ वान् । दिष्ट्वा । उपदिश्य । देष्टा । देष्टुम् । देष्टव्यम् ॥ ४ ॥

कृषीत् विलेखने । कृषति, ते, आकृषति, ते । कृष्यते । "स्पृश-"॥३।४।५४॥ इति वा सिचि, अकार्क्षीत् । "स्पृशादि-"॥४।४।११२॥ इति वा अ; अक्राक्षीत् । पक्षे सकि, अकृक्षत्, अकार्ष्टाम्, अक्राष्टाम्, अकृक्षाताम्, अकार्क्षुः, अक्राक्षुः, अकृक्षन् । "सिजाशिष-"॥४।३।३५॥ इति किस्वाज्ञ अ, अकृष्ट । अकृक्षत, सिचि सकि च, अकृक्षाताम् । भाक । अकर्षि । शेष कृपचूवत्, नवर कर्त्तर्यात्मनेपदमपि ॥ ५ ॥

मुच्लृंती मोक्षणे । शे "मुचादि-"॥४।४।९९॥ इति नेऽन्ते च, मुञ्चति, मुञ्चाम । मुञ्चते, मुञ्चामहे । मुच्यते । लृदित्त्वादङि, अमुचत्, अमुचताम् । अमुक्त, अमुक्षाताम् । अमोचि । मुमोच, मुमुचतु, मुमोचिथ, मुमुचिम । मुमुचे । मुच्यात् । मुक्षीष्ट । मोक्ता २ । मोक्ष्यति, ते । "अव्याप्यस्य-"॥४।१।१९॥ इति वा मोकि, मोक्षति, ते । मुमुक्षति, ते । व्याप्ये तु, मुमुक्षति वत्स चैत्र । "एकधातौ-"॥३।४।८६॥ इति ञिक्यात्मनेपदेषु प्राप्तेषु "भूपार्थ-"॥३।४।९३॥ इति ञिक्यत्मनेपदेषु प्राप्तेषु ञिक्ययोर्निषेधे, मोक्षते, मुमुक्षते । अमोक्षिष्ट, अमुमुक्षिष्ट वा वत्स स्वयमेव । मोमुच्यते । मोमुचीति, मोमोक्ति ॥ अथ० ॥ लृदनुबन्धनिर्दिष्टत्वाद् यङ्लुपि न अङ्, अमोमोचीत् । एवमन्यत्रापि । मोचयति । अमूमुचत् । मुञ्चन् । मुञ्चमान । मुच्यमानम् । मोक्ष्य २ न्, माण । मुमुच्वान् । मुमुचान । मुक्त, २ वान् । मुक्त्वा । विमुच्य । मोक्ता । मोक्तुम् । मोक्तव्यम् ॥ ६ ॥

षिचींत् क्षरणे । "मुचादि-"॥४।४।९९॥ इति ने, सिञ्चति । सोपसर्गस्य "स्थासेनि-"॥२।३।४०॥ इति द्विलेऽपि अटयपि पत्वे, अभिषिञ्चति । सिञ्चते, सिञ्चामहे । सिच्यते ॥ ह्य० ॥ असिञ्चत्, अभ्यषिञ्चत ॥ अद्य० ॥ "ह्वालिप्सिच-"॥३।४।६२॥ इत्यङि, असिचत् । "वाऽऽत्मने"॥३।४।६३॥ असिचत, असिक्त; असिक्षाथाम् । असेचि । "नाम्यन्त"॥२।३।१५॥ इति पत्वे, सिषेच, अभिषिषेच । सिषिचे, अभिषिषिचे । सिच्यात् । सिक्षीष्ट । सेक्ता ३ ।

सेक्ष्यति, ते, अभिषेक्ष्यति, ते । "णिस्तोरेव-"॥२।३।३७॥ इति नियमात् पत्ना-भावे, सिसिक्षति, ते; अभिषिषिक्षति, ते । अभ्यषिषिक्षत, त । "सिचो यङि" ॥२।३।६०॥ इति षत्वनिषेधे, सेसिच्यते, अभिसेसिच्यते । सेसिचीति, सेसेक्ति, सेसि २ क्तः, चति । सेचयति; अभिषेचयति । असीषिचत्; सोरसर्गाण्णौ, अभ्यषीषिचत् । ण्यन्तस्य पश्चादुपसर्गयोगे पूर्वस्य न षत्वम्; अभ्यसीषिचत । सिञ्चन् । सिञ्चमानः । सिच्यमानम् । सेक्ष्यन् । सेक्ष्यमाणः । सिक्तः, २ वान् । सिक्तिः । सिक्त्वा । अभिषिच्य । सेक्ता । सेक्तुम् । सेक्तव्यम् । घ्याणि, "क्तेऽनिटः-"॥४।१।१११॥ इति कत्वे, सेक्यम् ॥ ७ ॥

विद्लृती लाभे । नेऽन्ते । विन्दति, ते । विद्यते । लृदित्त्वादङि, अविदत्; अविदाम । अवित्त, अवित्साताम् । अवेदि । विवेद, विविदिम । विविदे । "वेत्ते. कित्"॥३।४।५१॥ इति वाऽस्याप्यामित्यन्ये । विदाचकार, विवेदेत्यादि । विद्यात् । वित्सीष्ट । वेत्ता, २ । वेत्स्यति, ते । विवित्सति, ते । वेविद्यते । वेविदीति, वेवेत्ति । वेदयति । अवीविदत् । विन्दन् । विन्दमानः । वेत्स्यन् । वेत्स्यमान । विद्यमानम् । "गमहन"॥४।४।८३॥ इति वेटि, विविदिवान्, विविद्वान् । विविदानः । "वित्तम्-"॥४।२।८२॥ इति निपातनात, वित्त धन प्रतीत च । अन्यत्र तु "रदात्-"॥४।२।६९॥ इति नत्वे, विन्नः, २ वान् । क्ते, "निर्विण्णः" ॥२।३।८९॥ इति निपातनात्, निर्विण्णो विरक्तः । क्तवतौ तु न ण, निर्विन्नवान् । विन्त्वा । प्रविद्य । वेत्ता । वेत्तुम् । वेत्तव्यम् । वेद्यम् ॥ ८ ॥

लुप्लृती छेदने । लुम्पति, ते, विलुम्पति, ते । लुप्यते । लृदित्त्वादङि, अलुपत । अलुप्त, अलुप्साताम् । अलोपि । लुलोप, लुलुपिम । लुलुपे । लुप्यात् । लुप्सीष्ट । लोप्ता २ । लोप्स्यति, ते । लुलुप्सति, ते । "गॄलुप्-" ॥३।४।१२॥ इति यङि, लोलुप्यते । लोलोप्ति, लोलुपीति । लोपयति । "भ्राजभास-"॥४।२।३६॥ इति वा ह्रस्वे, अलूलुपत्; अलुलोपत् । लुम्पन् । लुम्पमान । लुप्यमानम् । लोप्स्य २ न्, मानः । लुलुप्वान् । लुलुपानः । लुप्तः, २ वान् । लुप्तिः । लो ३ प्ता, प्तुम्, प्तव्यम् । लुप्त्वा । विलुप्य ॥ ९ ॥

लिपींत् उपदेहे, वृद्धौ । लिम्पति, आलिम्पति । लिम्पते । लिप्यते ।

"ह्वालिप्"॥३।४।६२॥ इत्यङि, आलिपत्। "वाऽऽत्मने"॥३।४।६३॥ अलिपत, अलिप्सत, अलिप्सा, अलिप्सातम्। अलेपि। लिलेप। लिलिपे। लिप्यात्। लिप्सीष्ट। लेप्ता २। लेप्स्यति, ते। लिलिप्सति, ते। लेलिप्यते। लेलेप्ति, लेलिपीति। लेपयति। अलीलिपत्। लिम्पन्। लिम्पमान। लिप्यमानम्। लेप्स्य २ न्, मानः। लिलिप्वान्। लिलिपान। लिप्त; २ वान्। लिप्त्वा। विलिप्य। लेप्ता। लेप्तुम्। लेप्तव्यम्। लेप्यम्॥ १०॥

कृतैत् छेदने। "मुचादि"॥४।४।९९॥ इति ने, कृन्तति, कृन्तत, कृतन्ति। कृत्यते। "कृतचृत-"॥४।४।५०॥ इत्यत्र सिचो वर्जनान्नित्यमिटि, अकर्त्तीत्, अकर्त्तिष्टाम्। अकर्त्ति, अकर्त्तिषाताम्। चकर्त्त, चकृतिम। चकृते। कृत्यात्। सादावशिति "कृतचृत"॥४।४।५०॥ इति वेटि, कृत्सीष्ट, कर्त्तिषीष्ट। कर्त्तिता २। कर्त्स्यति, ते, कर्त्तिष्यति, ते। चिकृत्सति, चिकर्तिषति। चरीकृत्यते। चरीरि २ ३ कृतीति, चर्कर्त्ति। वेट्त्वेऽप्यैदित्त्वं यङ्लुबन्तादनेकस्वरादपि क्तयोरिडभावार्थम्। चरीकृत्त, २ वान्। कर्त्तयति। अचीकृतत्; अचकर्त्तत्। कृन्तन्। कर्त्तिष्यन्, कर्त्स्यन्। चकृत्वान्। चकृतानम्। वेट्त्वान्नेटि, कृत्त, २ वान्। कर्त्तित्वा। प्रकृत्य। कर्त्ति ३ ता, तुम्, तव्यम्॥ ११॥

इति मुचादि।

मृत् प्राणत्यागे। अनिट्। शिदद्यतन्याशीःषु, "म्रियतेरद्यतन्या-"॥३।३।४२॥ इति आत्मनेपदे, "रिः शक्य-"॥४।३।११०॥ इति रौ; "धातोरिवर्ण-"॥२।१।५०॥ इतीयि; म्रियते, अनुम्रियते भर्त्तारम्, म्रियेते, म्रियन्ते, म्रियसे, म्रियेथे, म्रियध्वे, म्रिये, म्रियावहे, म्रियामहे। क्ये, म्रियते। म्रियेत। म्रियताम्। अम्रियत॥ अद्य०॥ अमृत, अमृषाताम्। अमारि, अमारिषाताम्, अमृषाताम्। शिदादेरन्यत्र परस्मैपदे, ममार, मम्रतु, मम्रु, ममर्थ, मम्रथु, मम्र, ममार, ममर, मम्रिव, मम्रिम। मम्रे। मृषीष्ट, २। मारिषीष्ट। मर्त्ता २। "हनृत-"॥४।४।४९॥ इतीटि, मरिष्यति, ते। मारिष्यते। अमरिष्यत्। मुमूर्षति। मेम्रीयते। "म्रियते-"॥३।३।४२॥ इत्यत्र तिव्निर्देशाद्यङ्लुपि परस्मैपदे;

मरी रि र् ३ मरीति, मर्मर्त्ति, मर्मृतः, मर्म्रति । कृग्वत् । मारयति । अमीमरत् । मारयांचकार । मिमारयिषति । म्रियमाणः । मरिष्य २ न्, माणम् । ममृवान् । मम्राणम् । मृतः, २ वान् । म २ र्त्ता, र्त्तुम् । मृत्वा । मृतिः । मर्त्तव्यम् ॥१२॥

कॄत् विक्षेपे । किरति, उत्किरति सूत्रधारः पुत्रिकाम् । किरामः, "अपस्किर" ॥३।३।३०॥ इत्यात्मनेपदे, "अपाच्चतुष्पाद्-" ॥४।४।९५॥ इति स्सटि, अपस्किरते वृषभो हृष्टः । अपस्किरते कुक्कुटो भक्ष्यार्थी । अपस्किरते श्वा आश्रयार्थी । "एकधातौ-" ॥३।४।८६॥ इति ञिक्यात्मनेपदेषु प्राप्तेषु "भूषार्थ-" ॥३।४।९३॥ इति क्यञ्ञ्यो: प्रतिषेधे, अवकिरते पांशुः स्वयमेव । क्ये, कीर्यते । अकारीत्, अकारिष्टाम्० । "इट्सिज-" ॥४।४।३६॥ इति वेटि, "वृतो नवा-" ॥४।४।३५॥ इति वेटो दीर्घे, अनिट्सिच "ऋवर्णात्" ॥४।३।३६॥ इति क्त्वे, अवाकीर्ष्ट, अवाकरिष्ट, अवाकरीष्ट वा पांशुः स्वयमेव । भाक । अकारि, ञिटि, अकारिषाताम्, अकीर्षाताम्, अकरीषाताम् । चकार, "स्कॄ" ॥४।३।८॥ इति गुणे, चकरतुः, चकरुः, चकरिथ । चकरे । कीर्यात् । कीर्षीष्ट, करिषीष्ट, कारिषीष्ट । करिता २, करीता २ । ञिटि, कारिता । करिष्यति, ते; कारिष्यते । "ऋस्मि-" ॥४।४।४८॥ इतीटि, चिकरिषति, चिकरीषति । चेकीर्यते । चाकर्त्ति । कारयति । अचीकरत् । चिचिकीर्वान् । चिचिकिराणम् । काने स्वरविधित्वाद् द्वित्वे कृते इर् । किति "ऋवर्णाश्वि" ॥४।४।५७॥ इति नेट्, "ऋल्वादे:-" ॥४।२।६८॥ इति ने, कीर्ण, २ वान् । कीर्त्वा । अवकीर्य । करि ३ ता, तुम्, तव्यम्; करी ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ १३ ॥

गॄत् निगरणे, भोजने । गिरति, उद्गिरति । "नवा स्वरे" ॥२।३।१०२॥ इति लत्वे, गिलति; उद्गिलति । प्रतिज्ञाया "सम -" ॥३।३।६६॥ इत्यात्मने, सङ्गिरते । "अवात्" ॥३।३।६७॥ अवगिरते । कर्मकर्त्तरि "भूषार्थ-" ॥३।४।९३॥ इति किरादित्वात् क्यञ्ञ्यो: प्रतिषेधे, निगिरते ग्रास स्वयमेव । क्ये, गीर्यते । अगारीत्, अगारिष्टाम् । न्यगीर्ष्ट, न्यगरीष्ट वा ग्रासः स्वयमेव ॥ भाक ॥ अगारि, अगारिषाताम्, अगीर्षातामित्यादि । जगार, जगरिम । जगरे । गीर्यात् । गीर्षीष्ट, गरिषीष्ट, गारिषीष्ट । गारिता २, गरीता २। गारिता । गारिष्यति, ते, गरीष्य-

ति, ते। गारिष्यते। जिगरिषति, जिगरीषति, जिगलिषति, जिगलीषति । गार्हित निगिरतीति वाक्ये "गृलुप-"॥३।४।१२॥ इति यङि, अस्वृछेनदित्युक्तेर्यङ्लुप्यपि च "ग्रो यङि"॥२।३।१०१॥ इति लत्वे, निजेगिल्यते । निजागलीति, निजागल्ति । तृवत् । निगारयति, निगालयति । न्यजीगरत्, न्यजीगलत्। गिरन्। गीर्यमाणम् । गरिष्य २ न्, माणम्; गरीष्य २ न्, माणम्। शेष कृतवत्॥१४॥

लिखत् अक्षरविन्यासे । लिखति । अव, वि, आ, उद्, सम्, परिपूर्वोऽप्येवम्। लिख्यते। लिखेत्। लिखतु । अलिखत्। अले ३ खीत्, खिष्टाम्, खिषु । अलेखि, अलेखिषाताम् । लिलेख; लिलिखिम। लिलिखे । लिख्यात्। लेखिषीष्ट । लेखिता २। लेखिष्यति, ते । लिलिखिषति, लिलेखिषति। अलिलिखिषत्, अलिलेखिषत् । लेलिख्यते। लेलिखीति, लेलेक्ति, लेलिक्तः, लेलिखति। लेखयति । क्ये, लेख्यते । अलीलिखत् । लिखन्। लिखती, लिखन्ती। लिख्यमानम् । लेखिष्य ४ न्, ती, न्ती, माणम् । लिलिख्वान् । लिलिखानम्। लिखि ३ ति, त, २ वान् । "वौ व्य-"॥४।३।२५॥ इति सन्क्त्वोर्वा किच्वे, लिखित्वा, लेखित्वा । विलिख्य । लेखि ३ ता, तुम्, तव्यम् । लेखनीयम् । लेख्यम् । लेखनम् । कुटादिरयमित्येके । लिखनीयम् । लिखनम् । लिखितव्यम् ॥ १५ ॥

ओव्रस्चौत् छेदने । "सस्य शषौ"॥१।३।६१॥ इति सस्य शो, "ग्रहव्रश्च-" ॥४।१।८४॥ इति य्वृति, वृश्चति । क्ये, वृश्च्यते । औदित्वाद्वेटि, अव्रश्चीत्, अव्रश्चिष्टाम् । अव्रश्चि, अवृश्चिषाताम् । पक्षे, अव्राक्षीत्, अव्राष्टाम् इत्यादि प्रच्छवत । वव्रश्च । सयोगादकित्त्वे न य्वृत् । वव्रश्चतु , वव्रश्चिथ । वव्रश्चे । वृश्च्यात् । व्रश्चिषीष्ट, व्रक्षीष्ट । व्रश्चिता, व्रष्टा। व्रश्चिष्यति, व्रक्ष्यति । विव्रश्चिषति, विव्रक्षति। वरीवृश्च्यते। वरि री र् ३ वृश्चीति। "सयोगस्यादौ-"॥२।१।८८॥ इति शस्य लुकि, "यज-"॥२।१।८७॥ इति चस्य च षत्वे, परे गुणे विधेये शलोपस्यासत्त्वाद् गुणाभावे, वरिवृ ३ ष्टि, ष्टः, श्चति । यङ्लुपि न य्वृदित्यन्ये । वाव्र ३ ष्टि, ष्ट, श्चति । व्रश्चयति । अववृश्चत् । वृश्चन् । व्रश्चिष्यन्, व्रक्ष्यन्। वव्रृश्च्वान् । ववृश्चानम् । वेट्त्वान्नेटि, "सूयत्य-"॥४।२।७०॥ इति नत्वे,

"क्तादेशोऽपि"॥२।१।६१॥ इति नस्यासिद्धत्वेन, सस्य लुकि चस्य कत्वे च, वृक्णः, २ वान्। पत्वे कर्तव्ये नत्वं सिद्धमेवेति धुडभावान्न "यज-"॥२।१।८७॥ इति षत्वं, "जॄव्रश्च-"॥४।४।४१॥ इति इटि, "क्त्वा"॥४।३।२९॥ इत्यकित्त्वे न य्वृत्। व्रश्चित्वा। प्रव्रश्च्य। व्रष्टा, व्रश्चिता। व्र २ ष्टुम्, ष्टव्यम्; व्रश्चि २ तुम्, तव्यम्। व्रश्चनीयम्। व्रश्च्यम्। मूलवृट्॥ १६॥

त्रयोऽनिटः॥ प्रछत् ज्ञीप्सायाम्; ज्ञीप्सा जिज्ञासा। "स्वरेभ्यः"॥१।३।३०॥ इति छस्य द्वित्वे, "ग्रहव्रश्च-"॥४।१।८४॥ इति य्वृति, पृच्छति। कर्मण्यसति, "समो गम्-"॥३।३।८४॥ इत्यात्मनेपदे, सपृच्छते। आङ्पूर्वस्य, "नुप्रच्छः"॥३।३।५४॥ आपृच्छते गुरून्। क्ये, पृच्छयते; क्यस्य सानुनासिकत्व नादृतमिति "अनुनासिके-"॥४।१।१०८॥ इति शो न भवति। "अनुनासिके च च्छ्-"४।१।१०८॥ इत्यत्र छस्य द्वि पाठात् द्वयोरपि शत्वे, "यज-"॥२।१।८७॥ इति षत्वे, "षढो:-" ॥२।१।६२॥ इति कत्वे च, अप्राक्षीत्, अप्राष्टाम्, अप्राक्षुः, अप्रा ६ क्षीः, ष्टम्, ष्ट, क्षम्, क्ष्व, क्ष्म। आप्रष्ट, आप्र ९ क्षाताम्, क्षत, ष्ठाः, क्षाथाम्, ड्ढ्वम्, ग्ड्ढ्वम्, क्षि, क्ष्वहि, क्ष्महि। अप्रच्छि, अप्रक्षाताम्। पप्रच्छ। सयोगात् कित्त्वाभावे न य्वृत्; पप्रच्छतु., पप्रच्छु, पप्रच्छिथ, पप्रष्ठ, पप्रच्छिम। आपप्रच्छे, सम्पप्रच्छिमहे। पृच्छ्यात। आप्रक्षीष्ट। प्रष्टा, आप्रष्टा। प्रक्ष्यति, आप्रक्ष्यते। "ऋस्मि-"॥४।४।४८॥ इतीटि, "रुदविद-"॥४।३।३२॥ इति सन कित्त्वे, पिपृच्छिषति, सम्पिपृच्छिषते। परीपृच्छ्यते। "लुप्यय्वृल्लेनत्"॥७।४।११२॥ इत्यत्र य्वृद्वर्जनात् यङ्लुप्यपि य्वृति, परिरी र् ३ पृच्छीति। य्वृति द्वित्वे "स्वरेभ्य" ॥१।३।३०॥ इति छस्य द्वित्वे, "अनुनासिके च-"॥४।१।१०८॥ इति छशब्दस्यापि शत्वे, उपान्त्यगुणे, "यज-"॥२।१।८७॥ इति षत्वे, परिपर्ष्टि, परि २ पृष्टः, पृच्छति। न य्वृदित्यन्ये। पाप्र ३ ष्टि, ष्ट, च्छति। णौ, प्रच्छयति। पृच्छ्यते। अपप्रच्छत्। पृच्छन्। आपृच्छमानः। पृच्छ्यमानम्। प्रक्ष्यन्। सम्प्रक्ष्यमाणः। पपृच्छ्वान्। सपपृच्छान.। पृष्ट, २ वान्। पृष्टिः। पृष्ट्वा। आपृच्छ्य। प्र ३ ष्टा, ष्टुम्, ष्टव्यम्। प्रच्छनीयम्। प्रच्छ्यम्। प्रच्छनम्॥ १७॥

सृजत् विसर्गे। सृजति, उत्सृजति। एव व्युद्; वि, समुपा, नि,

पूर्वोऽपि । सृज्यते । "अ. सृजि-"॥४।४।१११॥ इति अति, अस्राक्षीत्, अस्राष्टाम्, अस्राक्षुः, अस्राक्ष्म । असर्जि, असृक्षाताम् । सिजाशिषो किल्वान्न अत । ससर्ज, ससृजतु, "सृजिदृशि"॥४।४।७८॥ इति वेटि, सस्रष्ठ, ससर्जिथ, ससृजिम । ससृजे । सृज्यात् । सृक्षीष्ट । स्रष्टा । स्रक्ष्यति । "सृज. श्राद्धे-" ॥ ३ । ४ । ८४ ॥ इति ञिक्यात्मनेपदेषु, असर्जि, सृज्यते, स्रक्ष्यते वा माला धार्मिक । श्राद्धादन्यत्र, अस्राक्षीत्, सृजति, स्रक्ष्यति वा माला मालिक' । कर्मकर्त्तरि तु; असर्जि, सृज्यते, स्रक्ष्यते वा माला स्वयमेव । सिसृक्षति । सरीसृज्यते । सृजती, सृजन्ती स्त्री कुले वा । शेष सृजिचृवत् ॥ १८ ॥

टुमस्जोंत् शुद्धौ, शुद्ध्या स्नान ब्रुडन च लक्ष्यते । "सस्य शषौ"॥१।३।६१॥ इति शे, "तृतीयस्तृ"॥१।३।४९॥ इति शस्य जे, मज्जति, निमज्जति, उन्मज्जति । मज्ज्यते । "मस्जे स."॥४।४।११०॥ इति धुटि सस्य नत्वे, अमाङ्क्षीत्, अमाङ्क्ताम्, अमाङ्७क्षु, क्षी., क्तम्, क्त, क्ष्म्, क्ष्व, क्ष्म । अमज्जि । ममज्ज, ममज्जतु', ममज्जु, ममज्जिथ, ममङ्क्थ, ममज्जिम । ममज्जे । मज्ज्यात् । मङ्क्षीष्ट । मङ्क्ता २ । मङ्क्ष्यति, ते । मिमङ्क्षति । मामज्ज्यते । मामज्जीति, मामङ्क्ति, "नो व्यञ्जन" ॥४।२।४५॥ इति न्लुकि, मामक्त, मामज्जति । मज्जयति । अममज्जत् । मज्जन् । मज्ज्यमानम् । मङ्क्ष्यन् । ममज्ज्वान् । ममज्जानम् । "मस्जे-" ॥४।४।११०॥ इति मो ने, ओदित्त्वात् "सूयत्य-"॥४।२।७०॥ इति नत्वे, 'नो व्यञ्जन-"॥४।२।४५॥ इति न्लुकि, मग्न, २ वान् । सो नत्वे "जनशा-"॥४।३।२३॥ इति वा किल्वे, मक्त्वा, मङ्क्त्वा । म ३ ङ्क्ता, क्तुम्, क्तव्यम् । मङ्क्षी । घ्यणि, "क्तेऽनिट-"॥४।१।१११॥ इति जो गे, "तृतीयस्तृ-"॥१।३।४९॥ इति सो दे, मद्‌ग्य ॥ १९ ॥

उद्झत् उत्सर्गे। दोपान्त्य ।"तवर्गस्य"॥१।३।६०॥ इति दो जे, उज्झति। क्ये, उज्झ्यते । औज्झीत्, औज्झिष्टाम्, औज्झिषु । औज्झि, औज्झिषाताम् । "गुरुनाम्य-"॥३।४।४८॥ इत्यामि, उज्झाञ्चकार, उज्झाञ्चकृम । उज्झाञ्चक्रे । उज्झ्यात् । उज्झिषीष्ट । उज्झिता । उज्झिष्यति । उज्जिझिषति । उज्झयति । "न वदनम्"॥४।१।५॥ इति द्विर्निषेधात् झेर्द्वित्वे, औज्झिझत् । उज्झन् । उज्झती,

उज्झन्ती स्त्री कुले वा । उज्झिष्यन् । उज्झाञ्चकृवान् । उज्झाञ्चकाणम् । उज्झि ५ त, २ वान्, ता, तुम्, तव्यम् । उज्झित्वा । प्रोज्झ्य । उज्झनीयम् ॥२०॥

घुण, घूर्णत् भ्रमणे । घुणति । अघोणीत् । जुघोण । घोणिता । घुणित । ॥ घूर्ण ॥ घूर्णति । घूर्ण्यते । अघूर्णीत् । जुघूर्ण । घूर्णिता । घूर्णन् । घूर्णती, घूर्णन्ती स्त्री कुले वा । घूर्णित. ॥ २१ ॥ २२ ॥

णुदत् प्रेरणे । अनिट् । नुदति, णपाठाद् "अदुरुप-"॥२।३।७७॥ इति णत्वे, प्रणुदति । नुद्यते । अनौत्सीत् । अनोदि, अनुत्साताम् । नुनोद, नुनुदिम । नुनुदे । नुद्यात् । नुत्सीष्ट । नोत्ता । नोत्स्यति । नुनुत्सति । नोनुद्यते । नोदयति, विनोदयति । अनूनुदत् । "ऋह्री-"॥४।२।७६॥ इति वा नत्वे, नुन्न', २ वान्, नुत्त', २ वान् । नुत्त्वा । प्रणुद्य । नोत्ता । शेष तुदतिवत् । ईदिदयमित्येके । नुदति, नुदते । अनुत्त । नुनुदे । नोत्स्यति, ते ॥ २३ ॥

विधत् विधाने । विधति । विध्यते । अवेधीत् । अवेधि । विवेध । विविधे । वेधिष्यति । विविधिषति, विवेधिषति । विधित., २ वान् । विधित्वा, वेधित्वा । वेधिता ॥ २४ ॥

छुपत् स्पर्शे । छुपति । छुप्यते । "व्यञ्जनानाम्"॥४।३।४५॥ इति वृद्धौ, अच्छौप्सीत्, अच्छौप्ताम्, अच्छौ ७ प्सु., प्सी, प्तम्, प्त, प्सम्, प्स्व, प्स्म । अच्छोपि, अच्छुप्साताम्; "सिजाशिष-"॥४।३।३५॥ इति किर्त्त्वम् । चुच्छोप । चुच्छुपे । छुप्यात् । छुप्सीष्ट । छोप्ता । छोप्स्यति । चुच्छुप्सति । चोच्छुप्यते । छोपयति । अचुच्छुपत् । छुपन् । छुप्त । छोप्ता । छुप्त्वा ॥ २५ ॥

गुफ, गुम्फत् ग्रन्थने । 'मुचादि-"॥४।४।९९॥ इति ने, गुम्फति । गुफ्यते । अगोफीत् । अगोफि । जुगोफ, जुगुफतुः । जुगुफे । गुफ्यात् । गोफिषीष्ट । गोफिता । गोफिष्यति । गुफित' । "ऋत्तृष-"॥४।३।२४॥ इत्यत्र न्युपान्त्यत्र्यावृत्तिबलाद्या न कित्त्वे, किन्तु नित्य 'क्त्वा"॥४।३।२९॥ इति कित्त्वे, गोफि ३ ता, तुम्, त्वा ॥ गुम्फ ॥ "नो व्यञ्ज-"॥४।२।४५॥ इति नलुकि, गुफति । गुफ्यते । अगुम्फीत् । अगुम्फि । जुगुम्फ, जुगुम्फतु, जुगुम्फिम, अत्र सयोगान्न कित्त्वम् । जुगुम्फे । गुफ्यात । गुम्फिषीष्ट । गुम्फिता । गुम्फिष्यति । जुगुम्फिषति ।

पूर्वोऽपि । सृज्यते । "अ. सृजि-"॥४।४।१११॥ इति अति, अस्राक्षीत्, अस्राष्टाम्, अस्राक्षु, अस्राक्ष्म । असर्जि, असृक्षाताम् । सिजाशिषो. कित्वान्न अत । ससर्ज, ससृजतु, "सृजिदृशि"॥४।४।७८॥ इति वेटि, सस्रष्ठ, ससर्जिथ, ससृजिम । ससृजे । सृज्यात् । सृक्षीष्ट । स्रष्टा । स्रक्ष्यति । "सृज श्राद्धे-" ॥ ३।४।८४॥ इति ञिक्यात्मनेपदेषु, असर्जि, सृज्यते, स्रक्ष्यते वा माला धार्मिक । श्राद्धादन्यत्र, अस्राक्षीत्, सृजति, स्रक्ष्यति वा माला मालिकः । कर्मकर्त्तरि तु; असर्जि, सृज्यते, स्रक्ष्यते वा माला स्वयमेव । सिसृक्षति । सरीसृज्यते । सृजती, सृजन्ती स्त्री कुले वा । शेष सृजिंच्वत् ॥ १८ ॥

टुमस्जोंत् शुद्धौ, शुध्या स्नानं ब्रुडन च लक्ष्यते। "सस्य शषौ"॥१।३।६१॥ इति शे, "तृतीयस्तृ"॥१।३।४९॥ इति शस्य जे, मज्जति, निमज्जति, उन्मज्जति । मज्ज्यते । "मस्जे· स"॥४।४।११०॥ इति धुटि सस्य नत्वे, अमाङ्क्षीत्, अमाङ्क्ताम्, अमाङ्७क्षु', क्षी., क्तम्, क्त, क्षम्, क्ष्व, क्ष्म । अमज्जि । ममज्ज, ममज्जतु, ममज्जु, ममज्जिथ, ममङ्क्थ, ममज्जिम । ममज्जे । मज्ज्यात् । मङ्क्षीष्ट । मङ्क्ता २ । मङ्क्ष्यति, ते । मिमङ्क्षति । मामज्ज्यते । मामज्जीति, मामङ्क्ति, "नो व्यञ्जन" ॥४।२।४५॥ इति न्लुकि, मामक्त', मामज्जति । मज्जयति । अममज्जत् । मज्जन् । मज्ज्यमानम् । मङ्क्ष्यन् । ममज्ज्वान् । ममज्जानम् । "मस्जे-" ॥४।४।११०॥ इति मो ने, ओदित्त्वात् "सूयत्य-"॥४।२।७०॥ इति नत्वे, 'नो व्यञ्जन-"॥४।२।४५॥ इति न्लुकि, मग्न', २ वान् । सो नत्वे "जनशा-"॥४।३।२३॥ इति वा कित्त्वे, मक्त्वा, मङ्क्त्वा । म ३ ङ्क्ता, क्तुम्, क्तव्यम् । मङ्क्ती । घ्याणि, "क्तेऽनिट-"॥४।१।१११॥ इति जो गे, "तृतीयस्तृ-"॥१।३।४९॥ इति सो दे, मद्ग्य ॥ १९ ॥

उद्झत् उत्सर्गे । दोपान्त्य· । "तवर्गस्य"॥१।३।६०॥ इति दो जे, उज्झति । क्ये, उज्झ्यते । औज्झीत्, औज्झिष्टाम्, औज्झिषु । औज्झि, औज्झिषाताम् । "गुरुनाम्य-"॥३।४।४८॥ इत्यामि, उज्झाञ्चकार, उज्झाञ्चकृम । उज्झाञ्चक्रे । उज्झ्यात् । उज्झिषीष्ट । उज्झिता । उज्झिष्यति । उज्जिझिषति । उज्झयति । "न वदनम्'॥४।१।५॥ इति द्निषेधात् झेर्द्वित्वे, औज्झिझत् । उज्झन् । उज्झती,

उज्झन्ती स्त्री कुले वा । उज्झिष्यन् । उज्झाञ्चकृवान् । उज्झाञ्चकाणम् । उज्झि ५ त, २ वान्, ता, तुम्, तव्यम् । उज्झित्वा । प्रोज्झ्य । उज्झनीयम् ॥२०॥

घुण, घूर्णत् भ्रमणे । घुणति । अघोणीत् । जुघोण । घोणिता । घुणित । ॥ घूर्ण ॥ घूर्णति । घूर्ण्यते । अघूर्णीत् । जुघूर्ण । घूर्णिता । घूर्णन् । घूर्णती, घूर्णन्ती स्त्री कुले वा । घूर्णितः ॥ २१ ॥ २२ ॥

णुदत् प्रेरणे । अनिट् । नुदति; णपाठाद् "अदुरुप"॥२।३।७७॥ इति णत्वे, प्रणुदति । नुद्यते । अनौत्सीत् । अनोदि, अनुत्साताम् । नुनोद, नुनुदिम । नुनुदे । नुद्यात् । नुत्सीष्ट । नोत्ता । नोत्स्यति । नुनुत्सति । नोनुद्यते । नोदयति, विनोदयति । अनूनुदत् । "ऋह्री-"॥४।२।७६॥ इति वा नत्वे, नुन्न', २ वान्, नुत्त, २ वान् । नुत्त्वा । प्रणुद्य । नोद्या । शेषं तुदीत्वत् । ईदिदयमित्येके । नुदति, नुदते । अनुत्त । नुनुदे । नोत्स्यति, ते ॥ २३ ॥

विधत् विधाने । विधति । विध्यते । अवेधीत् । अवेधि । विवेध । विविधे । वेधिष्यति । विविधिषति, विवेधिषति । विधितः, २ वान् । विधित्वा, वेधित्वा । वेधिता ॥ २४ ॥

छुपत् स्पर्शे । छुपति । छुप्यते । "व्यञ्जनानाम्"॥४।३।४५॥ इति वृद्धौ, अच्छौप्सीत्, अच्छौप्ताम्, अच्छौ ७ प्सुः, प्सीः, प्तम्, प्त, प्सम्; प्स्व, प्स्म । अच्छोपि, अच्छुप्साताम्; "सिजाशिष-"॥४।३।३५॥ इति कित्त्वम् । चुच्छोप । चुच्छुपे । छुप्यात् । छुप्सीष्ट । छोप्ता । छोप्स्यति । चुच्छुप्सति । चोच्छुप्यते । छोपयति । अचुच्छुपत् । छुपन् । छुप्त । छोप्ता । छुप्त्वा ॥ २५ ॥

गुफ, गुम्फत् ग्रन्थने । "मुचादि-"॥४।४।९९॥ इति ने, गुम्फति । गुफ्यते । अगोफीत् । अगोफि । जुगोफ, जुगुफतु' । जुगुफे । गुफ्यात् । गोफिषीष्ट । गोफिता । गोफिष्यति । गुफित । "ऋत्तृप-"॥४।३।२४॥ इत्यत्र न्युपान्त्यव्यावृत्तिबलाद्वा न कित्त्वे, किन्तु नित्य 'क्त्वा"॥४।३।२९॥ इति कित्त्वे, गोफि ३ ता, तुम्, त्वा ॥ गुम्फ ॥ "नो व्यञ्ज-"॥४।२।४५॥ इति नलुकि, गुफति । गुफ्यते । अगुम्फीत् । अगुम्फि । जुगुम्फ, जुगुम्फतु, जुगुम्फिम, अत्र संयोगान्न कित्त्वम् । जुगुम्फे । गुफ्यात् । गुम्फिषीष्ट । गुम्फिता । गुम्फिष्यति । जुगुम्फिषति ।

जोगुफ्यते । गुम्फयति । अजुगुम्फत् । गुफित॰, २ वान् । "ऋत्तृप-"॥४।३।२४॥ इति वा कित्वे, गुफित्वा, गुम्फित्वा । गुम्फि ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥२६॥२७॥

शुभ, शुभत् शोभार्थे । 'मुचादि-"॥४।४।९९॥ इति ने, शुम्भति । शुभ्यते । अशोभीत् । अशोभि । शुशोभ, शुशुभिम । शुशुभे । शुभ्यात् । शोभिषीष्ट । शोभिता । शोभिष्यति । शुशुभिषति, शुशोभिषति । "न गृणा-"॥३।४।१३॥ इत्यत्र शोभतेर्वर्जनादस्य यङि, शोशुभ्यते । शोभयति । अशूशुभत् । शोभित, २ वान् । शुभित्वा, शोभित्वा । शोभि ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ शुम्भ ॥ "नो व्य-"॥४।२।४५॥ इति नलुकि, शुभति । शुभ्यते । अशुम्भीत् । अशुम्भि । शुशुम्भ, शुशुम्भिम । शुशुम्भे । शुभ्यात् । शुम्भिष्यति । शुम्भित । शुम्भित्वा । शुम्भि ३ ता, तुम्, तव्यम् । भ्वादौ शुम्भभाषणे च, चाद्धिंसायाम् । तालव्यादि. । शुम्भति; निशुम्भति । शुम्भ्यते । शुशुम्भ इत्यादि ॥ २८ ॥ २९ ॥

दृभैत् ग्रन्थे । दृभति, सदृभति । दृभ्यते । दृभेत् । दृभतु । अदृभत । अदर्भीत्, अदर्भिष्टाम् । अदर्भि । ददर्भ, ददृभतु , ददृभिम । ददृभे । दृभ्यात् । दर्भिषीष्ट । दर्भिता । दर्भिष्यति । दिदर्भिषति । दरीदृभ्यते । दर्भयति । अदीदृभत, अददर्भत् । ऐदित्त्वान्नेट्, दृब्ध, २ वान् । "क्त्वा"॥४।३।२९॥ इत्यकित्त्वे गुणे, दर्भि ४ त्वा, ता, तुम्, तव्यम् ॥ ३० ॥

स्फलत् स्फुरणे । चलन इत्येके । स्फलति, आस्फलति । स्फल्यते । आस्फालीत्, आस्फालिष्टाम् । आस्फालि, आस्फालिषाताम् । पस्फाल, पस्फलिम । पस्फले । स्फल्यात् । स्फलि ३ षीष्ट, ता, ष्यति । पिस्फलिषति । वाऽनुनासिकान्तत्वे; पस्फल्यते, पास्फल्यते । आस्फालयति । आपिस्फलत् । आस्फलित. । आस्फालनम् । स्फलि ६ त्वा, तुम्, ता, तव्यम्, त॰, २ वान् ॥ ३१ ॥

मिलत् श्लेषणे । मिलति । मिल्यते । अमेलीत्, अमेलिष्टाम् । अमेलि । मिमेल, मिमिलिम । मिमिले । मिल्यात् । मेलि ३ षीष्ट, ता, ष्यति । मिमेलिषति, मिमिलिषति । मेमिल्यते । मेलयति । अमीमिलत् । मिलित. । मिलित्वा, मेलि ४ त्वा, ता, तुम्, तव्यम् ॥ ३२ ॥

अथ त्रयोऽनिट.॥ स्पृशत् संस्पर्शे । स्पृशति । स्पृश्यते । "स्पृशमृश-"

॥३।४।५४॥ इति वा सिचि वृद्धौ, अस्पार्क्षीत्, अस्पार्ष्टाम्, अस्पार्क्षुः । "स्पृशादि"॥४।४।११२॥ इति वा अः, अस्प्राक्षीत्, अस्प्राष्टाम्, अस्प्राक्षुः । पक्षे सकि, अस्पृक्ष ४ त्, ताम्, न्, :, अस्पृक्षाम । अस्पर्शि । सिचि "सिजाशिष-"॥४।३।३५॥ इति सिजाशिषोः कित्त्वान्न अ ; अस्पृ ९ क्षाताम्, क्षत, ष्ठा, क्षाथाम्, ड्ढ्वम्, ड्ढ्वम्, क्षि, क्ष्वहि, क्ष्महि । सकि, "स्वरेऽत"॥४।३।७५॥ इत्यत्लुकि, अस्पृ ८ क्षाताम्, क्षन्त, क्षथाः, क्षाथाम्, क्षध्वम्, क्षि, क्षावहि, क्षामहि । पस्पर्श, पस्पृशतु, पस्पर्शिथ; पस्पृशिम । पस्पृशे । स्पृश्यात् । स्पृक्षीष्ट । स्पर्ष्टा २, स्प्रष्टा २ । स्पर्क्ष्यति, स्प्रक्ष्यति । पिस्पृक्षति । परीस्पृश्यते । परि, र्, री ३ स्पृशीति, परर्ष्टि, परिप्रष्टि, परर्ष्टः, परिप्रष्टः, परर्पृशति । शेष दृश्वत् । स्पर्शयति । "ऋदवर्णस्य"॥४।२।३७॥ इति वा ऋः, अपिस्पृशत्, अपस्पर्शत् । स्पृशन् । स्पृशती, स्पृशन्ती । स्पर्क्ष्यन्, स्प्रक्ष्यन् । पस्पृश्वान् । पस्पृशानम् । स्पृष्टः, २ वान् । स्पृष्टिः । स्पृक्षा । सस्पृश्य । स्पर्ष्टा, स्प्रष्टा । स्पर्ष्टुम्, स्प्रष्टुम् । स्पर्ष्टव्यम्, स्प्रष्टव्यम् । स्पर्शनीयम् । स्पर्श्यम् । क्विपि "ऋत्विग्"॥२।१.६९॥ इति स्पृक् ॥ ३३ ॥

विशत् प्रवेशने । विशति, प्रविशति । एव आङ्, सम्, उप, समा पूर्वोऽपि । "निविशः"॥३।३।२४॥ इत्यात्मने, निविशते । "वाऽभिनिविश" ॥२।२।२२॥ इत्याधारस्य कर्मत्वे, ग्राममभिनिविशते । क्ये, विश्यते । सकि, अविक्षत्, अवि ८ क्षताम्, क्षन्, क्षः, क्षतम्, क्षत, क्षम्, क्षाव, क्षाम । अवेशि, "स्वरेऽत"॥४।३।७५॥ इति अत्लुकि, अवि ८ क्षाताम्, क्षन्त, क्षथाः, क्षाथाम्, क्षध्वम्, क्षि, क्षावहि, क्षामहि । विवेश, विविशतुः, विविशिम । विविशे । विश्यात् । विक्षीष्ट । वेष्टा २ । वेक्ष्यति, ते । विविक्षति । निविविक्षते । वेविश्यते । अवेविशिष्ट । वेविशाचक्रे । वेविशिषीष्ट । वेविशिष्यते । लुपि, वेवेष्टि, वेवि-३ शीति, ष्ट, शति । प्रकृतिग्रहणाद्यङ्लुप्यपि आत्मनेपदे, निवेविष्टे ॥ ह्य० ॥ अवेवेट्, अवेवि ४ शीत्, ष्टाम्, शु, शीः; अवेवेट् ॥ अद्य० ॥ अवेवे २ शीत्, शिष्टाम् । वेविशाचकार । वेवेशिष्यति । प्रवेशयति । क्ये, प्रवेश्यते । प्राविविशत् । विशन् । विशती, विशन्ती । वेक्ष्यन् । निवेक्ष्यमाण । "गमहन-"

जोगुफ्यते । गुम्फयति । अजुगुम्फत् । गुफित', २ वान् । "ऋत्तृष-"॥४।३।२४॥ इति वा कित्वे, गुफित्वा, गुम्फित्वा । गुम्फि ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥२६॥२७॥

शुभ, शुभत् शोभार्थे । "मुचादि-"॥४।४।९९॥ इति ने, शुम्भति । शुभ्यते । अशोभीत । अशोभि । शुशोभ; शुशुभिम । शुशुभे । शुभ्यात् । शोभिषीष्ट । शोभिता । शोभिष्यति । शुशुभिषति, शुशोभिषति । "न गृणा-"॥३।४।१३॥ इत्यत्र शोभतेर्वर्जनादस्य यङि, शोशुभ्यते । शोभयति । अशूशुभत् । शोभित, २ वान् । शुभित्वा, शोभित्वा । शोभि ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ शुभ ॥ "नो व्य-"॥४।२।४५॥ इति नलुकि, शुभति । शुभ्यते । अशुम्भीत् । अशुम्भि । शुशुम्भ, शुशुम्भिम । शुशुम्भे । शुभ्यात् । शुम्भिष्यति । शुम्भित. । शुम्भित्वा । शुम्भि ३ ता, तुम्, तव्यम् । भ्वादौ शुभभाषणे च, चाद्धिंसायाम् । तालव्यादि. । शुम्भति, निशुम्भति । शुभ्यते । शुशुम्भ इत्यादि ॥ २८ ॥ २९ ॥

दृभैत् ग्रन्थे । दृभति, सदृभति । दृभ्यते । दृभेत् । दृभतु । अदृभत । अदर्भीत्, अदर्भिष्टाम् । अदर्भि । ददर्भ, ददृभतु, ददृभिम । ददृभे । दृभ्यात् । दर्भिषीष्ट । दर्भिता । दर्भिष्यति । दिदर्भिषति । दरीदृभ्यते । दर्भयति । अदीदृभत; अददर्भत् । ऐदित्त्वान्नेट्, दृब्ध, २ वान् । "क्त्वा"॥४।३।२९॥ इत्यकित्त्वे गुणे, दर्भि ४ त्वा, ता, तुम्, तव्यम् ॥ ३० ॥

स्फलत् स्फुरणे । चलन इत्येके । स्फलति, आस्फलति । स्फल्यते । आस्फालीत्, आस्फालिष्टाम् । आस्फालि, आस्फालिषाताम् । पस्फाल; पस्फलिम । पस्फले । स्फल्यात् । स्फलि ३ षीष्ट, ता, ष्यति । पिस्फालिषति । वाऽनुनासिकान्तत्वे, पस्फल्यते, पास्फल्यते । आस्फालयति । आपिस्फलत् । आस्फलित. । आस्फालनम् । स्फलि ६ त्वा, तुम्, ता, तव्यम्, त, २ वान् ॥ ३१ ॥

मिलत् श्लेषणे । मिलति । मिल्यते । अमेलीत्, अमेलिष्टाम् । अमेलि । मिमेल, मिमिलिम । मिमिले । मिल्यात् । मेलि ३ षीष्ट, ता, ष्यति । मिमेलिषति, मिमिलिषति । मेमिल्यते । मेलयति । अमीमिलत् । मिलित. । मिलित्वा, मेलि ४ त्वा, ता, तुम्, तव्यम् ॥ ३२ ॥

अथ त्रयोऽनिट. ॥ स्पृशत् संस्पर्शे । स्पृशति । स्पृश्यते । "स्पृशमृश-"

चुकुटे। कुट्यात् । कुटिषीष्ट । कुटिता २ । कुटिष्यति । "वौ व्यञ्जन-"॥४।३।२५॥ इति वा किंत्त्वेऽपि ङित्त्वाद्गुणाभावे, चुकुटिषति, प्रत्यासत्तेर्न्यायात् यत्कार्यं कुटादेर्ङिद्द्वारा प्राप्नोति तस्मिन्नेव कार्ये ङित्त्व, न आत्मनेपदादौ । तेन सन्नन्तस्यास्य ङित्त्वादात्मनेपद न भवति। चोकुट्यते। चोकुटीति, "कुटादेः-"॥४।३।१७॥ इति गणनिर्देशाद्गुणे, चोकोट्टि। उत्कोटयति। अचूकुटत्। कुटन्। कुटिष्यन्। कुट्यमानम् । चुकुट्वान् । चुकुटानम् । कुटितः, २ वान् । कुट्टिः । कुटित्वा । प्रकुट्य । कुटि ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ ३८ ॥

णूत् स्तवने । नुवति। नूयते। णपाठात् "अदुरुप-"॥२।३।७७॥ इति णत्वे, प्रणुवति। प्रणूयते। "कुटादेः-"॥४।३।१७॥ इति ङित्त्वात् "सिचि परस्मै"॥४।३।४४॥ इति वृद्ध्यभावे, अनुवीत्, अनुवि २ष्टाम्, षु. । अनावि, अनुविषाताम्, अनाविषाताम्। नुनाव, नुनु ५ वतु, वु', विथ, वथु', व । "णिद्वान्त्यो णव्" ॥४।३।५८॥ इति वा णित्त्वाद्वा न वृद्धि', नुनाव, नुनुव, नुनु २ विव, विम। नुनुवे। नूयात्। नुविषीष्ट, नाविषीष्ट । नुविता २, नाविता । नुविष्यति, ते, नाविष्यते । नुनूषति । "ग्रहगुहश्च-"॥४।४।५९॥ इति नेट्, नोनूयते । नोनवीति, नोनोति । नावयति । अनूनवत् । नुवन् । नुविष्यन् । नुनूवान् । नुनुवानम् । किति, "उवर्णात्"॥४।४।५८॥ इतीडभावे, नूत, २ वान्, प्रणूत', २ वान् । नूत्वा । अन्ये तु ङित्त्वेन कित्त्वस्य बाधनादिट्निषेधं नेच्छन्ति। नुवितः, प्रणुवित'। नुवित्वा। प्रणूय । नुवि २ ता, तुम्, तव्यम् । नुवनीयम् । नूयम् । नाव्यम् ॥ ३९ ॥

धूत् विधूनने । धुवति, निधुवति । धूयते । अधुवीत्। अधावि । दुधाव, दुधुविम । दुधुवे । धूयात् । धुवि ३ षीष्ट, ता, ष्यति । ञिटि, धावि ३ षीष्ट, ता, ष्यते । दुधूषति । दोधूयते । धावयति । अदूधुवत् । धुवन् । धुविष्यन् । धूतः, २ वान् । धूत्वा । मते नेटि, धुवितः । धुवित्वा । विधूय । धुवि ३ ता, तुम्, तव्यम् । शेष नूतवत ॥ ४० ॥

कुचत् सङ्कोचने । कुचति, सङ्कुचति । कुच्यते । अकुचीत् । अकोचि; अकुचिषाताम् । चुकोच, अह चुकुच, चुकोच, चुकुचिम । चुकुचे । कुच्यात् । कुचि ३ षीष्ट, ता, ष्यति । चुकुचिषति । चोकुच्यते । चोकुचीति, चोकोक्ति ।

॥४।४।८३॥ इति वेटि; विविशिवान्, विविश्वान् । विविशानम् । प्रविष्टः, २ वान्। विष्ट्वा । प्रविश्य । प्रवे ३ ष्टा, ष्टुम्, ष्टव्यम् ॥ ३४ ॥

मृशंत् आमर्शने, स्पर्शे । मृशति, विमृशति, परामृशति; प्रत्यवमृशति, आमृशति । क्ये, मृश्यते । अमार्क्षीत्, अम्राक्षीत्; अमृक्षत् । अमर्शि, अमृक्षाताम् । ममर्श, ममृशिम । ममृशे । मृश्यात् । मृक्षीष्ट । मर्ष्टा, म्रष्टा । मर्क्ष्यति, म्रक्ष्यति । मिमृक्षति । मरीमृश्यते । मरी, रि, र् ३ मृशीति, मर्मर्ष्टि, मर्म्रष्टि, मर्म्रष्टः, मर्मृशति । मर्शयति । अमीमृशत्, अममर्शत् । मिमर्शयिषति । मृशन् । म्रक्ष्यन्, मर्क्ष्यन् । मृष्टः, २ वान् । मृष्टिः । मृष्ट्वा । विमृश्य । मर्ष्टा, म्रष्टा । मृश्यम् । शेष स्पृशत्वत् ॥ ३५ ॥

इषत् इच्छायाम्। "गमिषद्"॥४।२।१०६॥ इति छे, इच्छति, प्रतीच्छति; अन्विच्छति, व्यतीच्छते । इष्यते।इच्छेत्। इच्छतु । ऐच्छत्। ऐष्यत। ऐषीत्, ऐषिष्टाम्, ऐषिषुः । ऐषि, ऐषिषाताम् । इयेष, ईषतु, ईषु, इयेषिथ, ईषिम । ईषे । इष्यात् । ईषिषीष्ट । तादौ "सहलुभ"॥४।४।४६॥ इति वेटि, एष्टा, एषिता। एषिष्यति । ऐषिष्यत्। एषिषिषति। एषयति। ऐषिषत्।इच्छती, इच्छन्ती । एषिष्यन् । इष्यमाणम। ईषिवान्। ईषाणम्। वेट्त्वान्नेट्, इष्टः, २ वान्। इष्टि । इष्ट्वा । "क्त्वा"॥४।३।२९॥ इत्यकित्त्वाद्गुणे, एषित्वा । प्रेष्य । ए ३ ष्टा, ष्टुम्, ष्टव्यम् । एषि ३ ता, तुम्, तव्यम् । "ऋवर्ण-"॥५।१।१७॥ इति घ्यणि, एष्य । "प्रस्यैष-"॥१।२।१४॥ इत्यैत्वे, प्रैष्य ॥ ३६ ॥

मिषत् स्पर्द्धायाम् । मिषति, उन्मिषति, निमिषति । अमेषीत् । मिमेष । मेषिता । उन्मिमिषिषति, उन्मिमेषिषति । उन्मिषितम् ॥ ३७ ॥

अथ कुटादि ।

कुटत् कौटिल्ये । कुटति, सङ्कुटति । कुट्यते । "कुटादे-"॥४।३।१७॥ इति ङित्त्वाद् गुणाभावे, अकुटीत्, अकुटिष्टाम्, अकुटिषु, ञ्णिति तु, ङित्त्वाभावाद्गुणे, अकोटि, अकुटिषाताम् । चुकोट, चुकुटतु, चुकु ४ टु, टिथ, टथु, ट, णवो वा णित्त्वाद् कुटादीनां गुणविभाषा, चुकोट, चुकुट, चुकुटि २ व, म ।

चुकुटे। कुट्यात् । कुटिषीष्ट । कुटिता २।कुटिष्यति । "वौ व्यञ्जन-"॥४।३।२५॥ इति वा कित्त्वेऽपि ङित्त्वाद्गुणाभावे, चुकुटिषति, प्रत्यासत्तेर्न्यायाद् यत्कार्यं कुटादेर्ङिद्द्वारा प्राप्नोति तस्मिन्नेव कार्ये ङित्त्वं, न आत्मनेपदादौ। तेन सन्नन्तस्यास्य ङित्त्वादात्मनेपदं न भवति। चोकुट्यते। चोकुटीति, "कुटादेः-"॥४।३।१७॥ इति गणनिर्देशाद्गुणे, चोकोट्टि। उत्कोटयति। अचूकुटत्। कुटन्। कुटिष्यन्। कुट्यमानम्। चुकुट्वान्। चुकुटानम्। कुटितः, २ वान्। कुट्टि। कुटित्वा। प्रकुट्य। कुटि ३ ता, तुम्, तव्यम्॥ ३८॥

णूत् स्तवने। नुवति। नूयते। णपाठात् "अदुरुप-"॥२।३।७७॥ इति णत्वे, प्रणुवति। प्रणूयते। "कुटादेः-"॥४।३।१७॥ इति ङित्त्वात् "सिचि परस्मै-"॥४।३।४४॥ इति वृद्ध्यभावे, अनुवीत्, अनुवि २ ष्टाम्, षुः। अनावि, अनुविषाताम्, अनाविषाताम्। नुनाव, नुनु ५ वतु, वुः, विथ, वथुः, व। "णिद्वान्त्यो णव्"॥४।३।५८॥ इति वा णित्त्वाद्वा न वृद्धिः, नुनाव, नुनुव, नुनु २ विव, विम। नुनुवे। नूयात्। नुविषीष्ट, नाविषीष्ट। नुविता २, नाविता। नुविष्यति, ते, नाविष्यते। नुनूषति। "ग्रहगुहश्च-"॥४।४।५९॥ इति नेट्, नोनूयते। नोनवीति, नोनोति। नावयति। अनूनवत्। नुवन्। नुविष्यन्। नुनूवान्। नुनुवानम्। किति; "उवर्णात्"॥४।४।५८॥ इतीडभावे, नूत, २ वान्; प्रणूत, २ वान्। नूत्वा। अन्ये तु ङित्त्वेन कित्त्वस्य बाधनादिट्निषेधं नेच्छन्ति। नुवितः, प्रणुवित। नुवित्वा। प्रणूय। नुवि ३ ता, तुम्, तव्यम्। नुवनीयम्। नूयम्। नाव्यम्॥ ३९॥

धूत् विधूनने। धुवति, निधुवति। धूयते। अधुवीत्। अधावि। दुधाव; दुधुविम। दुधुवे। धूयात्। धुवि ३ षीष्ट, ता, ष्यति। ञिटि, धावि ३ षीष्ट, ता, ष्यते। दुधूषति। दोधूयते। धावयति। अदूधुवत्। धुवन्। धुविष्यन्। धूत, २ वान्। धूत्वा। मते नेटि, धुवित। धुवित्वा। विधूय। धुवि ३ ता, तुम्, तव्यम्। शेषं नूत्वत्॥ ४०॥

कुचत् सङ्कोचने। कुचति, सङ्कुचति। कुच्यते। अकुचीत्। अकोचि, अकुचिषाताम्। चुकोच, अह चुकुच, चुकोच, चुकुचिम। चुकुचे। कुच्यात्। कुचि ३ षीष्ट, ता, ष्यति। चुकुचिषति। चोकुच्यते। चोकुचीति, चोकोक्ति।

॥४।४।८३॥ इति वेटि; विविशिवान्, विविश्वान् । विविशानम् । प्रविष्टः, २ वान् । विष्ट्वा । प्रविश्य । प्रवे ३ ष्टा, ष्टुम्, ष्टव्यम् ॥ ३४ ॥

मृशंत् आमर्शने, स्पर्शे । मृशति, विमृशति, परामृशति; प्रत्यवमृशति, आमृशति । क्ये, मृश्यते । अमार्क्षीत्, अम्राक्षीत्; अमृक्षत् । अमर्शि, अमृक्षाताम् । ममर्श, ममृशिम । ममृशे । मृश्यात् । मृक्षीष्ट । मर्ष्टा, म्रष्टा । मर्क्ष्यति, म्रक्ष्यति । मिमृक्षति । मरीमृश्यते । मरी, रि, र् ३ मृशीति, मर्मर्ष्टि, मर्म्रष्टि, मर्म्रष्टः, मर्मृशति । मर्शयति । अमीमृशत्, अममर्शत् । मिमर्शयिषति । मृशन् । म्रक्ष्यन्, मर्क्ष्यन् । मृष्ट', २ वान् । मृष्टिः । मृष्ट्वा । विमृश्य । मर्ष्टा, म्रष्टा । मृश्यम् । शेषं स्पृशत्वत् ॥ ३५ ॥

इषत् इच्छायाम् । "गमिषद्"॥४।२।१०६॥ इति छे, इच्छति; प्रतीच्छति; अन्विच्छति, व्यतीच्छते । इष्यते । इच्छेत् । इच्छतु । ऐच्छत् । ऐष्यत । ऐषीत्, ऐषिष्टाम्, ऐषिषुः । ऐषि, ऐषिषाताम् । इयेष, ईषतु, ईषु, इयेषिथ, ईषिम । ईषे । इष्यात् । ईषिषीष्ट । तादौ "सहलुभ"॥४।४।४६॥ इति वेटि, एष्टा, एषिता । एषिष्यति । ऐषिष्यत् । एषिषिषति । एषयति । ऐषिषत् । इच्छती, इच्छन्ती । एषिष्यन् । इष्यमाणम् । ईषिवान् । ईषाणम् । वेट्त्वान्नेट्; इष्ट, २ वान् । इष्टि । इष्ट्वा । "क्त्वा"॥४।३।२९॥ इत्यकित्त्वाद्गुणे, एषित्वा । प्रेष्य । ए ३ ष्टा, ष्टुम्, ष्टव्यम् । एषि ३ ता, तुम्, तव्यम् । "ऋवर्ण-"॥५।१।१७॥ इति घ्यणि, एष्य । "प्रस्यैष-"॥१।२।१४॥ इत्यैत्वे, प्रैष्य ॥ ३६ ॥

मिषत् स्पर्द्धायाम् । मिषति, उन्मिषति, निमिषति । अमेषीत् । मिमेष । मेषिता । उन्मिमिषिषति, उन्मिमेषिषति । उन्मिषितम् ॥ ३७ ॥

अथ कुटादिः ।

कुटत् कौटिल्ये । कुटति, सङ्कुटति । कुट्यते । "कुटादे-"॥४।३।१७॥ इति ङित्त्वाद् गुणाभावे, अकुटीत्, अकुटिष्टाम्, अकुटिषु, ञ्णिति तु, ङित्त्वाभावाद्गुणे, अकोटि, अकुटिषाताम् । चुकोट, चुकुटतु, चुकु ४ टुः, टिथ, टथु, ट, णवो वा णित्त्वाद् कुटादीना गुणविभाषा, चुकोट, चुकुट, चुकुटि २ व, म ।

चुकुटे। कुट्यात्। कुटिषीष्ट। कुटिता २। कुटिष्यति। "वौ व्यञ्जन-"॥४।३।२५॥ इति वा कित्त्वेऽपि ङित्त्वाद्गुणाभावे, चुकुटिषति; प्रत्यासत्तेर्न्यायात् यत्कार्यं कुटादेर्ङिद्द्वारा प्राप्नोति तस्मिन्नेव कार्ये ङित्त्व, न आत्मनेपदादौ। तेन सन्नन्तस्यास्य ङित्त्वादात्मनेपद न भवति। चोकुट्यते। चोकुटीति, "कुटादेः-"॥४।३।१७॥ इति गणनिर्देशाद्गुणे, चोकोट्टि। उत्कोटयति। अचूकुटत्। कुटन्। कुटिष्यन्। कुट्यमानम्। चुकुट्वान्। चुकुटानम्। कुटितः, २ वान्। कुट्टिः। कुटिला। प्रकुट्य। कुटि ३ ता, तुम्, तव्यम्॥ ३८॥

णूत् स्तवने। नुवति। नूयते। णपाठात् "अदुरुप-"॥२।३।७७॥ इति णत्वे, प्रणुवति। प्रणूयते। "कुटादेः-"॥४।३।१७॥ इति ङित्त्वात् "सिचि परस्मै"॥४।३।४४॥ इति वृद्ध्यभावे, अनुवीत्, अनुवि २ ष्टाम्, षुः। अनावि, अनुविपाताम्, अनाविपाताम्। नुनाव, नुनु ५ वतु, वुः, विथ, वथुः, व। "णिद्वान्त्यो णव्"॥४।३।५८॥ इति वा णित्त्वाद्वा न वृद्धिः, नुनाव, नुनुव, नुनु २ विव, विम। नुनुवे। नूयात्। नुविषीष्ट; नाविषीष्ट। नुविता २, नाविता। नुविष्यति, ते, नाविष्यते। नुनूषति। "ग्रहगुहश्च-"॥४।४।५९॥ इति नेट्, नोनूयते। नोनवीति, नोनोति। नावयति। अनूनवत्। नुवन्। नुविष्यन्। नुनूवान्। नुनुवानम्। क्तिति, "उवर्णात्"॥४।४।५८॥ इतीडभावे, नूत, २ वान्, प्रणूत, २ वान्। नूत्वा। अन्ये तु ङित्त्वेन कित्त्वस्य बाधनादिट्निषेध नेच्छन्ति। नुवित., प्रणुवित। नुवित्वा। प्रणूय। नुवि ३ ता, तुम्, तव्यम्। नुवनीयम्। नूयम्। नाव्यम्॥ ३९॥

धूत् विधूनने। धुवति, निधुवति। धूयते। अधुवीत्। अधावि। दुधाव; दुधुविम। दुधुवे। धूयात्। धुवि ३ षीष्ट, ता, ष्यति। ञिटि, धावि ३ षीष्ट, ता, ष्यते। दुधूषति। दोधूयते। धावयति। अदूधुवत्। धुवन्। धुविष्यन्। धूतः, २ वान्। धूत्वा। मते नेटि, धुवितः। धुवित्वा। विधूय। धुवि ३ ता, तुम्, तव्यम्। शेष नूत्वत्॥ ४०॥

कुचत् सङ्कोचने। कुचति, सङ्कुचति। कुच्यते। अकुचीत्। अकोचि; अकुचिपाताम्। चुकोच, अहं चुकुच, चुकोच, चुकुचिम। चुकुचे। कुच्यात्। कुचि ३ षीष्ट, ता, ष्यति। चुकुचिषति। चोकुच्यते। चोकुचीति, चोकोक्ति।

सङ्कोचयति । अचूकुचत् । कुचन् । कुचती, कुचन्ती । कुचिष्यन् । चुकुच्वान् । कुचि ६ ता, तुम्, त्वा, तः २ वान्, तव्यम् । कुचनीयम् । सङ्कुच्यम् ॥४१॥

घुटत् प्रतीघाते । घुटति, व्याघुटति, निघुटति । लज्जायाम्, व्याघुटीत् । ञ्णिति तु ङित्त्वाभावाद्गुणे, अघोटि । जुघोट, जुघुटतुः । कुटादित्वाद्गुणाभावे, घुटिता । घुटितुम् । घुटित । शेषं कुटत्वत् ॥ ४२ ॥

छुट, त्रुटत् छेदने । छुटति, विच्छुटति । छुट्यते । अच्छुटीत् । अच्छोटि, अच्छुटिषाताम् । चुच्छोट, चुच्छुटिम । चुच्छुटे । छुट्यात् । छुटि ३ षीष्ट, ता, ष्यति । चुच्छुटिषति । चोच्छुट्यते । छोटयति । अचुच्छुटत् । छुटि ६ ता, तुम्, त्वा, तः, २ वान्, तव्यम् । विच्छुट्यम् ॥ त्रुट ॥ "भ्रास-म्लास-"॥३।४।७३॥ इति वा श्ये, त्रुट्यति, त्रुटति । त्रुट्यते । अत्रुटीत, अत्रु-टिषाम् । अत्रोटि, अत्रुटिषाताम् । तुत्रोट, तुत्रुटिम । तुत्रुटे । त्रुट्यात् । त्रुटि ३ ३ षीष्ट, ता, ष्यति । तुत्रुटिषति । तोत्रुट्यते । तोत्रुटीति, तोत्रोट्टि, तोत्रु २ ट्टः, टति । त्रोटयति । अतुत्रुटत् । त्रुटन् । त्रुटती, त्रुटन्ती । त्रुटिष्यन् । तुत्रुट्वान् । तुत्रुटानम् । त्रुटित , २ वान् । त्रुटित्वा । प्रत्रुट्य । त्रुटि ३ ता, तुम्, तव्यम् । त्रुटनीयम् । त्रोट्यम् । साधनं कुटत्वत् ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

मुटत् आक्षेपप्रमर्दनयो । मुटति । मुट्यते । अमुटीत् । अमोटि । मुमोट । मुटिष्यति । मोटयति । अमूमुटत् । मुटि ४ त , ता, तुम्, त्वा । मुट प्रमर्दने । मोटति । मुटण् सचूर्णने । मोटयति ॥ ४५ ॥

स्फुटत् विकसने । स्फुटति । अस्फुटीत् । पुस्फोट । स्फुटिष्यति । पुस्फु-टिषति । पोस्फुट्यते । स्फोटयति । अपुस्फुटत् । स्फुटि ४ ता, त , तुम्, त्वा । स्फुटि विकसने । स्फोटते ॥ ४६ ॥

लुठत् सश्लेषणे । लुठति । लुठ्यते । अलु ३ ठीत्, ठिषाम्, ठिषु । अलोठि, अलुठिषाताम् । लुलोठ, लुलुठतु । लुलुठे । लुठ्यात् । लुठि ३ षीष्ट, ता, ष्यति । लुलुठिषति । लोलुठ्यते । लोलुठीति, लोलोट्टि । लोठयति । अलू-लुठत् । लुठन् । लुठती, लुठन्ती । लुठिष्यन् । लुलुट्वान् । लुलुठानम् । लुठि ५ त , ता, तुम्, त्वा, तव्यम् । निलुठ्य ॥ ४७ ॥

कृडत् घसने, भक्षणे । कृडति । अकृडीत् । अकर्डि । चकर्ड । चकृडे । कृडिष्यति । चिकृडिषति । कर्डयति । अचीकृडत्, अचकर्डत् । कृडि ६ ता, तुम्, त्वा, तः, २ वान्, तव्यम् ॥ ४८ ॥

गुडत् रक्षायाम् । गुडति हस्तिनम् । अगुडीत् । अगोडि । जुगोड । गुडिता । जुडत् बन्धने । जुडति, अजुडीत् । अजोडि । जुजोड, जुजुडे । जोडयति । जुडि ४ ता, तः, तुम्, त्वा । तुडत् तोडने, भेदे । तुडति । अतुडीत् । अतोडि । तुतोड । तोडयति । तुडि ४ ता, तुम्, त्वा, तः । गुडादीना शेष लुठतवत् ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥

स्फुरत् स्फुरणे । स्फुरति । परि, प्र, सम्, पूर्वोऽपि । "निर्नेः-"॥२।३।५३॥ इति वा पत्वे, निःष्फुरति, निःस्फुरति । "वे."॥२।३।५४॥ विष्फुरति, विस्फुरति । स्फूर्यते । अस्फुरीत्, अस्फुरिष्टाम्० । अस्फोरि, अस्फुरिषाताम् । पुस्फोर, पुस्फुरतु.; पुस्फुरिम । पुस्फुरे । स्फूर्यात् । स्फुरि ३ पीष्ट, ता, ष्यति । पुस्फुरिषति । पोस्फूर्यते । पोस्फुरीति, पोस्फोर्त्ति । "चिस्फुरोर्नवा"॥४।२।१२॥ इति वा आत्वे, स्फारयति, स्फोरयति । अपिस्फुरत्, अपुस्फुरत् । णौ यत्कृतमिति न्यायात् पूर्वस्य उ । पुस्फारयिषति, पुस्फोरयिषति । स्फुरन् । स्फुर २ ती, न्ती । स्फुरिष्यन् । पुस्फूर्वान् । स्फुरि ५ ता, तुम्, तव्यम्, तः, त्वा । विस्फूर्य । स्फुरणीयम् । स्फूर्त्ति. ॥५२॥

इति परस्मैपदिनः ।

अथ कूङ् वर्जास्त्रयोऽनिटः॥कुङ्, कूङ्त् शब्दे । कुवते । कूयते । ङित्त्वान्न गुणे, "धुट्-"॥४।३।७०॥ इति सिच्लुकि, अकुत । अकावि । चुकुवे । कुता । कुष्यते । चोकूयते । कु ५ ता, तुम्, त्वा, त , तव्यम् ॥ कूङ् ॥ कुवते । कूयते । अकुविष्ट । अकावि । चुकुवे । कुविता । किति "उवर्णात्"॥४।४।५८॥ इति नेटि, कूत., २ वान् । कुवितुम् । कूत्वा ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

इति कुटादि ।

पृङ्त व्यायामे, उद्योगे । "रिः शक्य-"॥४।३।११०॥ इति रौ, इयि च, व्याप्रियते। क्ये, व्याप्रियते । व्यापृत, व्यापृषाताम्, व्यापृषत । व्यापारि, व्यापृषाताम्, व्या-

पारिषाताम्। व्यापप्रे; व्यापप्रिमहे। व्यापृपीष्ट २; व्यापारिपीष्ट। व्यापर्त्ता २, व्यापारिता। "हनृत-"॥४।४।४९॥ इतीटि, व्यापरिष्यते २। व्यापारिष्यते। पुपूर्षते। पेप्रीयते। परि, री, र् ३ परीति, पर्पर्त्ति, परिपृतः, परिप्रति। व्यापारयति। व्यापीपरत्। व्याप्रियमाणः। परिष्यमाणः। पप्राणः। व्यापृत, २ वान्। व्यापृतिः। व्यापृत्य। पृत्वा। व्याप ३ र्त्ता, र्तुम्, र्तव्यम्। व्यापरणीयम्। व्यापार्यम् ॥५५॥

दृङ्त् आदरे। आद्रियते। क्ये, आद्रियते। आदृत, आदृषाताम्, आदृषत, आदृथाः। आदारि, आदारिषाताम्, आदृषाताम्। दद्रे, दद्राते, दद्रिरे, दद्रिषे। आदृषीष्ट, आदारिषीष्ट। आदर्त्ता, आदारिता। आदरिष्यते; आदारिष्यते। "ऋस्मि-"॥४।४।४८॥ इतीटि, दिदरिषते। देद्रीयते। दरि, री, र् ३ दरीति, दर्दर्त्ति, दर्दृत, दर्द्रति। आदारयति। आदीदरत्। आद्रियमाणः। आद्रियमाणम्। आदरिष्यमाणः। आदद्राण। आदृतः, २ वान्। दृतिः। दृत्वा। आदृत्य। आद ३ र्ता, र्तुम्, र्तव्यम्। आदरणीयम्। क्यपि, आदृत्यम् ॥५६॥

ओविजैति भयचलनयोः। उद्विजते। उद्विज्यते। "विजेरिट्"॥४।३।१८॥ इतीटो ङित्त्वान्न गुण। उदविजि ३ ष्ट, षाताम्, षत। उदवेजि। उद्विविजे, उद्विविजिमहे। उद्विजि ३ षीष्ट, ता, ष्यते। विविजिषते। उद्वेविज्यते। उद्वेविजीति, उद्वेवेक्ति। उद्वेजयति। उद्वेज्यते। उदवीविजत्। क्ते, उद्वेजितः। उद्विजमानः। उद्विज्यमानम्। उद्विजिष्यमाणम्। ऐदित्त्वात् क्तयोर्नेटि "सूयत्य-"॥४।२।७०॥ इति नत्वे, उद्विग्न, २ वान्। उद्विजि ३ ता, तुम्, तव्यम्। उद्विज्य ॥५७॥

ओलस्जैति व्रीडे। "सस्य शषौ"॥१।३।६१॥ इति शे, "तृतीय"॥१।३।४९॥ इति जे, लज्जते। लज्ज्यते। अलज्जिष्ट, अलज्जिषाताम्; अलज्जिध्वम्, ढ्वम्, अलज्जिषि। अलज्जि। ललज्जे, ललज्जिमहे। लज्जि ३ षीष्ट, ता, ष्यते। लज्जमानः। लज्ज्यमानम्। लज्जिष्यमाण। ललज्जान। ऐदित्वात् क्तयोर्नेटि, ओदित्वात् "सूयत्य-"॥४।२।७०॥ इति नत्वे, "सयोगस्यादौ-"॥२।१।८८॥ इति स्लुकि, लग्न, २ वान्। लज्जि ४ ता, त्वा, तुम्, तव्यम् ॥ ५८ ॥

ष्वजित् सङ्गे। "स्वञ्जश्च"॥२।३।४५॥ इति द्वित्वेऽपि अट्यपि षत्वे "नो व्यञ्जनस्य-"॥४।२।४५॥ इति नलुकि, परिष्वजते; अभिष्वजते। परिष्वज्यते।

अभ्यष्वजत। परि, नि, विपूर्वस्य तु, "स्तुस्वञ्जश्चाटि-"॥२।३।४९॥ इति वा षत्वे, पर्यष्वजत, पर्यस्वजत ॥ अद्य० ॥ अनुस्वारेत्त्वान्नेट्, पर नञा निर्दिष्टस्यानित्यत्वादिटि; अस्वञ्जि ५ ष्ट; पाताम्; ध्वम्, ड्ढ्वम्, षि। अस्वञ्जि। परोक्षाया त्वादेरेव षत्वे, "स्वञ्जेर्नवा"॥४।३।२२॥ इति परोक्षाया वा कित्त्वे, परिषस्वजे; परिषस्वञ्जे, अभिषस्वजे, अभिषस्वञ्जे, परिषस्वजिमहे, परिषस्वञ्जिमहे। स्वज्यात्। स्वङ्क्षीष्ट। स्वङ्क्ता। स्वङ्क्ष्यते। सिस्वङ्क्षते; अभिषिष्वङ्क्षते। अत्र "णिस्तोरेव-"॥२।३।३७॥ इति नियमे सत्यपि स्पर्द्धे पर इति न्यायात् "स्वञ्जश्च"॥२।३।४५॥ इत्यनेनैव पूर्वोत्तरयो. सकारयो. षत्वं सिद्धम्। अभिषाष्वज्यते। स्वञ्जयति। असस्वञ्जत्, अभ्यषष्वञ्जत्। स्वजमानः। सस्वजान., परिषस्वजानः। परिष्वक्तः, २ वान्। "जनशो-"॥४।३।२३॥ इति क्त्वो वा कित्त्वे, स्वक्त्वा, स्वङ्क्त्वा। परिष्वज्य। स्वङ्क्ता; परिष्व ३ ङ्क्ता, ङ्क्तुम्, ङ्क्तव्यम्। क्तौ, परिष्वक्ति. ॥ ५९ ॥

जुषैति प्रीतिसेवनयो.। जुषते। जुष्यते। अजोषिष्ट। अजोषि। जुजुषे; जुजुषिमहे। जुष्यात्। जोषि ३ षीष्ट, ता, ष्यते। जुजुषिषते, जुजोषिषते। जोजुष्यते। जोजुषीति, जोजोष्टि। जोषयति। अजूजुषत्। जुषमाण.। जोषिष्यमाण.। जुष्ट, २ वान्। ऐदित्वान्नेट्, जोषि ३ ता, तुम्, तव्यम्। जुषित्वा, जोषित्वा ॥ ६० ॥

इति श्रीतपागच्छेशश्रीदेवसुन्दरसूरिशिष्यश्रीगुणरत्नसूरिविरचिते क्रियारत्नसमुच्चये तुदादिगणः ॥

अथ रुधादिगणः ।

आदौ सप्तानिटः॥ रुधृपी आवरणे, व्याप्तौ। "रुधा स्वरात्-"॥३।४।८२॥ इति श्ने, रुणद्धि। अप, उप, सम्, वि, अव, पूर्वोऽपि। "श्नास्त्यो "॥४।२।९०॥ इति श्नोऽल्लुकि म्ना इति बहुवचनाण्णत्वापवादे ने, रुन्द्ध., अत्र "अधश्चतु-"॥२।१।७९॥ इति तो ध, "तृतीय-"॥१।३।४९॥ इति धो दः, रुन्धन्ति, रुणत्सि, रुन्द्धः, रुन्द्ध,

रुणध्मि, रुन्ध्व, रुन्ध्म । रुन्द्धे, रुन्धाते, रुन्धते, रुन्त्से, रुन्धाथे, रुन्द्ध्वे; रुन्ध्महे। रुन्ध्यात् । रुन्धीत । रुध्येत । रुणद्धु, रुन्द्धाम्, रुन्धन्तु, रुन्द्धि, रुणधानि । रुन्द्धाम्; रुन्त्स्व, रुन्द्ध्वम्। रुध्यताम् । अरुणत्, अरुन्द्धाम्, अरुन्धन्, अरुण, अरुणत् वा, अरुन्द्धम्, अरुन्द्ध, अरुणधम्, अरुन्ध्व, अरुन्ध्म । अरुन्द्ध । अरुध्यत ॥ अद्य० ॥ "ऋदिच्छ्वि-"॥३।४।६५॥ इति वा अङि, अरुधत्, अरुधताम्, अरुधन्। पक्षे, "व्यञ्जनानाम्-" ॥४।३।४५॥ इति वृद्धौ, अरौत्सीत्, 'धुट्ह्रस्वात्' ॥४।३।७०॥ इति सिज्लुकि, अरौद्धाम्, अरौत्सुः, अरौ ६ त्सी, द्धम्, द्ध, त्सम्, त्स्व, त्स्म । अरु १० द्ध, त्साताम्, त्सत, द्धा, त्साथाम्, द्ध्वम्, द्ध्वम्, त्सि, त्स्वहि, त्स्महि । अरोधि । शेष कर्तृवदेव । कर्मकर्त्तरि, "रुध" ॥३।४।८९॥ इति ञिच्निषेधे, अरुद्ध गौः स्वयमेव । रुरोध, रुरुधतुः, रुरुधुः । रुरोधिथ, रुरुधथुः, रुरुध, रुरोध, रुरुधि २ व, म । रुरुधे, रुध्यात् । रुत्सीष्ट । रोद्धा २ । रोत्स्यति, ते । रुरुत्सति, ते । रोरुध्यते । रोरुधीति, रोरोद्धि, रोरुद्धः, रोरुधति, रोरोत्सि० ॥ ह्य० ॥ अरोरोद्, त्, अरो ११ रुधीत्, रुद्धाम्, रुधुः, रोः, रुधीत्, रोत्, रुद्धम्० ॥ अद्य० ॥ अरोरो ९ धीत, धिष्टाम्० । रोधयति । अरूरुधत् । रुरोधयिषति । रुन्धन् । रुन्धान । रुन्धती । रुध्यमानम् । रोत्स्यन् । रोत्स्यमानः । रुरुध्वान् । रुरुधान । रुद्धः, २ वान् । रुद्धिः । रुद्ध्वा । सरुध्य । रोद्धा । रोद्धुम् । रोद्धव्यम् । रोध्यम । रोधनीयम् ॥ १ ॥

रिचृपी विरेचने, नि सारणे । रिणक्ति, व्यतिरिणक्ति । रिङ्क्ते । व्यतिरिच्यते । ऋदित्त्वाद्वा अङि, अरिचत्, व्यत्यरिचत् । अरैक्षीत, व्यत्यरैक्षीत् । अरिक्त, अरिक्षाताम् । अरेचि । रिरेच । रिरिचे । रिच्यात् । रिक्षीष्ट । रेक्ष्यति । रेक्ता । रेक्तुम् । रिक्त । शेष विचृपीवत ॥ २ ॥

विचृपी पृथग्भावे । विनक्ति, विङ्क्तः, विञ्चन्ति, विनक्षि, विङ्क्थः, विङ्क्थ, विनच्मि, विञ्च्व, विञ्च्म । विङ्क्ते, विञ्चाते, विञ्चते, विङ्क्षे, विञ्चाथे, विङ्ग्ध्वे, विञ्चे, विञ्च्वहे, विञ्च्महे । विच्यते । विञ्च्यात् । विञ्चीत । विनक्तु । विङ्क्ताम् । अविनक्, ग्, अविङ्क्ताम्, अविचन्, अविनक्, ग्, अविङ्क्तम्, अविङ्क्त, अविनचम्, अविञ्च्व, अविञ्च्म । अविङ्क्त । अविच्यत ॥ अद्य० ॥ ऋदित्त्वाद्वा

अडि, अविचत, अविचताम्; अविचाम । अवैक्षीत्, अवैक्ताम्, अवैक्षुः, अवैक्षीः, अवैक्तम्०; अवैक्ष्म । "धुट्-"॥४।३।७०॥ इति सिज्लुकि, अविक्त, अवि ९ क्षाताम्, क्षत, क्थाः, क्षाथाम्, ग्ध्वम्, ग्ड्ढ्वम्, क्षि, क्ष्वहि, क्ष्महि। अवेचि। विवेच, विविचतुः, विविचुः, विवेचिथ, विविचथुः, विविच, विवेच, विविचि २ व, म । विविचे, विविचाते, विविचिमहे । विच्यात् । विक्षीष्ट । वेक्ता २ । वेक्ष्यति, ते । विविक्षति, ते । वेविच्यते । वेविचीति, वेवेक्ति । वेचयति । अवीविचत् । विञ्चन् । विञ्चती । विञ्चानः । विच्यमानम् । वेक्ष्यन् । वेक्ष्यमाणः । विविच्वान् । विविचान । विक्तः, २ वान् । विक्तिः । विक्त्वा । विविच्य । वेक्ता । वेक्तुम् । वेक्तव्यम् । विवेकः ॥ ३ ॥

युजृंपी योगे । युनक्ति; निर्युनक्ति, सयुनक्ति, उत्स्वराभावादत्र परस्मैपदम् । युङ्क्तः, युञ्जन्ति, युनक्षि, युङ्क्थः, युङ्क्थ, युनज्मि, युञ्ज्वः, युञ्ज्मः । युङ्क्ते । "उत्स्वरात्"॥३।३।२६॥ इत्यात्मनेपदे, उद्युङ्क्ते, उपयुङ्क्ते, प्रयुङ्क्ते, नियुङ्क्ते, वियुङ्क्ते, अनुयुङ्क्ते सिद्धान्तम्, पर्यनुयुङ्क्ते वादिनम्, युञ्जाते, युञ्जते, युङ्क्षे, युञ्जाथे, युङ्ग्ध्वे, युञ्जे, युञ्ज्वहे, युञ्ज्महे । युज्यते । युञ्ज्यात् । युञ्जीत । युज्येत । युनक्तु, युङ्क्ताम, युञ्जन्तु, युङ्ग्धि, युङ्क्तम्, युङ्क्त, युनजानि । युङ्क्ताम्, युञ्जाताम्, युञ्जताम्, युङ्क्ष्व, युञ्जाथाम्, युङ्ग्ध्वम्, युनजै । युज्यताम् ॥ ह्य० ॥ अयुनक्, ग्, अयुङ्क्ताम्, अयुञ्जन्, अयुनक्, ग्, अयुङ्क्तम, अयुङ्क्त, अयुनजम्, अयुञ्ज्व, अयुञ्ज्म । अयुङ्क्त, प्रायु १० क्त, जाताम्, जत, क्था, जाथाम्, ग्ध्वम्, ग्ड्ढ्वम्, जि, ज्वहि, ज्महि । अयुज्यत ॥ अद्य० ॥ ऋदित्त्वाद्वा अडि, अयुजत्, अयुजताम्, अयुजन्; अयुजाम । पक्षे, अयौक्षीत्, अयौक्ताम्, अयौक्षुः, अयौक्षीः । अयुक्त, प्रायुक्त, अयु ९ क्षाताम्, क्षत, क्थाः, क्षाथाम्, ग्ध्वम्, ग्ड्ढ्वम्, क्षि, क्ष्वहि, क्ष्महि । अयोजि, प्रायोजि । युयोज, युयुजतु, युयुजुः, युयोजिथ०, युयुजिम । युयुजे । युज्यात् । युक्षीष्ट । योक्ता २ । योक्ष्यति, ते । युयुक्षति, ते । योयुज्यते । योयुजीति, योयोक्ति । योजयति । योज्यते । अयूयुजत् । युयोजयिषति । युञ्जन् । युञ्जती । युञ्जान । योक्ष्यन् । योक्ष्यमाण । युयुज्वान् । युयुजान । युक्तः, २ वान् ।

युक्तिः । युक्त्वा । प्रयुज्य । योक्ता । योक्तुम् । योक्तव्यम् । योजनीयम् । योग्यम् । घ्यणि "क्तेऽनिटः-"॥४।१।१११॥ इति गः । "निप्रात्-"॥४।१।११६॥ इति न गत्वे, नियोक्तुं शक्यः नियोज्यः । प्रयोज्यः ॥ ४ ॥

भिदूंपी विदारणे । भिनत्ति, भिन्त्तः, भिन्दन्ति, भिनत्सि, भिन्त्थः, भिन्त्थ, भिनद्मि, भिन्द्वः, भिन्द्मः । भिन्त्ते, भिन्दाते, भिन्दते, भिन्त्से, भिन्दाथे, भिन्द्ध्वे, भिन्दे, भिन्द्वहे, भिन्द्महे । भिद्यते । भिन्द्यात् । भिन्दीत । भिनत्तु, भिन्त्ताम्, भिन्दन्तु, भिन्द्धि, भिनदानि । भिन्त्ताम्, भिन्दाताम्, भिन्दताम्, भिन्त्स्व । अभिनद्, अभिन्त्ताम्, अभिन्दन्, अभिनः, अभिनत्, अभिन्त्तम्, अभिन्त्त, अभिनदम्, अभिन्द्व, अभिन्द्म । अभिन्त्त ॥ अद्य० ॥ ऋदित्त्वाद्वा अङि, अभिद ३ त्, ताम्, न्; अभिदाम । अभैत्सीत्, अभैत्ताम्, अभैत्सुः, अभैत्सीः, अभैत्तम्, अभैत्त, अभैत्सम्, अभैत्स्व, अभैत्स्म । अभित्त, अभित्साताम्, अभि ८ त्सत, त्थाः, त्साथाम्, द्ध्वम्, द्ध्वम्, त्सि, त्स्वहि, त्स्महि । अभेदि । बिभेद, बिभिदतुः, बिभेदिथ, बिभिदिम । बिभिदे, बिभिदिमहे । भिद्यात् । भित्सीष्ट । भेत्ता २ । भेत्स्यति, ते । बिभित्सति, ते । बेभिद्यते । अबेभिदिष्ट । अबेभिदि । बेभिदाचक्रे । बेभिदिषीष्ट । बेभिदिष्यते । यङन्ताण्णिगि, प्रबेभिदय्य, "लघोर्यपि"॥४।३।८६॥ इति अय् । लुपि, बेभिदीति, बेभेत्ति । क्ये, बेभिद्यते॥ सप्त०॥ बेभिद्यात् ॥ पञ्च० ॥ बेभेत्तु, बेभिदीतु ॥ ह्य० ॥ अबे १२ भिदीत्, भेत्, भित्ताम्, भिदुः, भेः, भेत्, भिदीः, भित्तम्, भित्त, भिदम्, भिद्व, भिद्म ॥ अद्य० ॥ अबेभेदीत् ॥ भवि० ॥ बेभेदिष्यते । शेषं पचिस्थानोक्तवत् । भेदयति । भेद्यते । अबीभिदत् । कर्मकर्त्तरि, "एकधातौ-"॥३।४।८६॥ इति ञिक्यात्मनेपदानि, अभेदि । भिद्यते । बिभिदे । भेत्ता, भेत्स्यते वा कुशूलः स्वयमेव । भावे तु, भिद्यते कुशूलेन । सन्नन्त । बिभित्सति, अबिभित्सीत् कुशूलं चैत्रः । बिभित्सते, अबिभित्सिष्ट कुशूलः स्वयमेव । ण्यन्त । भेदयते, अबीभिदत, भेदयिष्यते वा आसाधु मैत्री स्वयमेव । "भूषार्थ"॥३।४।९३॥ इति ञिच्ञिट्क्यनिषेधादात्मनेपदम् । ण्यन्तस्य तु 'णिस्नु-"॥३।४।९२॥ इति ञिच्निषेधात् ञिङ् भवत्येव, पृथग्योगात् । भेदिता, भेदिषीष्ट कुमैत्री स्वयमेव । भिन्दन् । भिन्दती । भिन्दानः । भिद्यमानम् ।

भेत्स्यन् । भेत्स्यमानः । बिभिद्वान् । बिभिदान. । "रदात्-"॥४।२।६९॥ इति नत्वे, भिन्न', २ वान् । भित्वा । प्रभिद्य । भेत्ता । भेत्तुम् । भेत्तव्यम् । भेदनीयम् ॥ ५॥

छिदृपी द्वैधीकरणे, अद्वैधस्य पृथक्त्वे । छिनत्ति, व्यव, परि, अव पूर्वोऽपि । आच्छिनत्ति । अत्र "अनाङ्माङ्-"॥१।३।२८॥ इति आङ्वर्जनान्नित्य छस्य द्वित्वम् । छिन्त', छिन्दन्ति । छिन्ते, छिन्दाते, छिन्दते । छिद्यते । छिन्द्यात् । छिन्दीत । छिनत्तु । ह्रौ, छिन्द्धि । छिन्ताम् । अच्छिनत्, अच्छिन्ताम्, अच्छिन्दन्, अच्छिनः, अच्छिनत् ॥ अद्य० ॥ अच्छिदत् । अच्छै ९ त्सीत्, त्ताम्, त्सुः, त्सी', त्तम्० । अच्छित्त, अच्छि ९ त्साताम्, त्सत, त्था', द्ध्वम्० । अच्छेदि । चिच्छेद, चिच्छिदतु'; चिच्छिदिम । चिच्छिदे, चिच्छिदाते, चिच्छिदिमहे । छिद्यात् । छित्सीष्ट । छेत्ता । छेत्स्यति, ते । चिच्छित्सति, ते । चेच्छिद्यते । चेच्छिदीति, चेच्छेत्ति । शेष भिदृपीवत् । छेदयति । अचिच्छिदत् । छिन्दन् । छिन्दान. । छेत्स्यन् । छेत्स्यमानः । चिच्छिद्वान् । चिच्छिदानम् । छिन्नः, २ वान् । छित्ति. । छित्त्वा । परिच्छिद्य । छेत्ता । छेत्तुम् । छेत्तव्यम् । छेद्यम् । छेदनीयम् ॥ ६ ॥

क्षुदृपी सपेषे । क्षुणत्ति, क्षुन्त , क्षुन्दन्ति । क्षुन्ते, क्षुन्दाते । क्षुद्यते । ऋदित्वाद्वा अङि, अक्षुदत् । अक्षौत्सीत्, अक्षौत्ताम्, अक्षौत्सु. । अक्षुत्त, अक्षुत्साताम् । अक्षोदि । चुक्षोद, चुक्षुदिम । चुक्षुदे । क्षुद्यात् । क्षुत्सीष्ट । क्षोत्ता । क्षोत्स्यति, ते । चुक्षुत्सति, ते । चोक्षुद्यते । चोक्षुदीति, चोक्षोत्ति । क्षोदयति । अचुक्षुदत् । क्षोत्ता । क्षोत्तुम् । क्षुण्ण , २ वान् । क्षुत्त्वा ॥ ७ ॥

इत्युभयपदिन ।

पृचैप् सम्पर्के । पृणक्ति, सपृणक्ति शाकम् । पृच्यते । "व्यञ्जनाद्दे -" ॥४।३।७८॥ इति दिवो लुकि, अपृणक् । शिति शेष भञ्जोंप्वत् ॥ अद्य० ॥- अपर्चीत् । पपर्च, पपृचुः । सर्पर्चिता । शेष पृचैङ्वत् ॥ ८ ॥

द्यावनिटौ ॥ भञ्जोंप् आमर्दने । "रुधाम्-"॥३।४।८२॥ इति श्ने, नलुकि च, भनक्ति, भङ्क्त', भञ्जन्ति, भनक्षि, भङ्क्थ , भङ्क्थ, भनज्मि, भञ्ज्व', भञ्ज्म. ।

भङ्क्ते, भञ्जाते, भञ्जते, भङ्क्षे, भञ्जाथे, भङ्ग्ध्वे, भञ्जे, भञ्ज्वहे, भञ्ज्महे । क्ये, भज्यते । भञ्ज्यात् । भञ्जीत । भनक्तु, भङ्क्ताम्, भञ्जन्तु; भङ्ग्धि, भङ्क्ताम् । अभनक्,ग्, अभङ्क्ताम्, अभञ्जन्, अभनक् । अभङ्क्त ॥ अद्य० ॥ "व्यञ्जनानाम्-"॥४।३।४५॥ इति वृद्धौ, अभाङ्क्षीत्, अभाङ्क्ताम्, अभाङ्क्षुः, अभाङ्क्षीः । "भञ्जेर्ञौ वा"॥४।२।४८॥ इति वा नलुकि, अभाजि, अभञ्जि, अभङ् १ क्षाताम्, क्षत, क्था, क्षाथाम्, ग्ध्वम्, ग्ड्ढ्वम्, क्षि, क्ष्वहि, क्ष्महि । बभञ्ज, बभञ्जतुः, बभञ्जिथ, बभङ्क्थ, बभञ्जिम । बभञ्जे । भज्यात् । भङ्क्षीष्ट । भङ्क्ता २ । भङ्क्ष्यति । बिभङ्क्षति । "जपजभ-"॥४।१।५२॥ इति मौ अन्ते, बम्भज्यते । बम्भजीति, बम्भक्ति, बम्भङ्क्त, बम्भजति । बम्भजन् । बम्भजित । भञ्जयति । अबभञ्जत् । कर्मकर्त्तरि, भञ्जयते निगड स्वयमेव । भञ्जन् । भञ्जती । भज्यमानम् । भङ्क्ष्यन् । भङ्क्ष्यती । क्त्वान्नलुकि, बभञ्जान् । बभञ्जानम् । भग्न, २ वान्; औदित्वात् "सूयत्य-"॥४।२।७०॥ इति नत्वम् । भक्ति । "जनश-"॥४।३।२३॥ इति क्त्वो वा क्त्वे, भक्त्वा, भङ्क्त्वा । भङ्क्तुम् । भङ्क्तव्यम् । भञ्जनीयम् । भङ्ग्यम् ॥ ९ ॥

भुजंप् पालनाभ्यवहारयोः, अभ्यवहारो भोजनम् । पालने तु, भुनक्ति भुवम् । भुङ्क्त, भुञ्जन्ति । भोजनादौ तु, "भुनज "३।३।३७॥ इत्यात्मनेपदे, भुङ्क्ते अन्नम्; उपभुङ्क्ते, परिभुङ्क्ते । एवमग्रेऽपि परस्मैआत्मनेपदे विभक्तव्ये । उभयपद्यमिस्येके । भुञ्जाते, भुञ्जते, भुङ्क्षे, भुङ्ग्ध्वे । क्ये, भुज्यते । भुञ्ज्यात् । भुञ्जीत । भुनक्तु, भुङ्क्ताम्, भुञ्जन्तु, भुङ्ग्धि । भुङ्क्ताम्, भुङ्क्ष्व । अभुनक्, अभुङ्क्ताम्, अभुञ्जन् । अभुङ्क्त ॥ अद्य० ॥ अभौक्षीत्, अभौक्ताम्, अभौक्षुः, अभौक्षीः । अभुक्त, अभु १ क्षाताम्, क्षत, क्था, क्षाथाम्, ग्ध्वम्, ग्ड्ढ्वम्, क्षि, क्ष्वहि, क्ष्महि । अभोजि, अभुक्षाताम् । शेष कर्तृवत् । बुभोज, बुभुजतुः, बुभुजिम । बुभुजे, बुभुजि २ ध्वे, महे । भुज्यात् । भुक्षीष्ट । भोक्ता २ । भोक्ष्यति, ते । बुभुक्षति, ते । बोभुज्यते । बोभुजीति, बोभोक्ति । "गतिबोध-"॥२।२।५॥ इत्यणिकर्तुः कर्मत्वे, "चल्याहार "॥३।३।१०८॥ इति फलवत्यपि परस्मैपदे, भोजयति चैत्र पयो मैत्र । अबूभुजत् । भुञ्जन् । भुञ्जती । भुञ्जान । भुज्यमानम् ।

भोक्ष्यन् । भोक्ष्यमाणः । बुभुज्वान् । बुभुजानः । "गत्यर्थ-"॥५।१।११॥ इति वा कर्त्तरि क्ते, भुक्तश्चैत्रः । भुक्त चैत्रेणान्नम् । भुक्तवान् । भुक्तिः । भुक्त्वा । उपभुज्य । भोक्ता । भोक्तुम् । भोक्तव्यम् । घ्यणि "क्तेऽनिट -"॥४।१।१११॥ इति गे, भोग्या भूः । "भुजो भक्ष्ये"॥४।१।११७॥ इति गत्वाभावे, भोज्यमन्नम् ॥ १० ॥

अञ्जौप् व्यक्तिम्रक्षणगतिषु । व्यक्तिः प्रकटता; म्रक्षण घृतादिसेकः । तत्र केवलस्य म्रक्षण एव वृत्तिः, सोपसर्गस्य तु शेषयोरिति विवेकः । अनक्ति, व्यनक्ति, अभ्यनक्ति, अङ्क्तः, अञ्जन्ति । क्ये, अज्यते । "सिचो ऽञ्जेः"॥४।४।८४॥ इतीट्; आञ्जीत्, आञ्जिष्टाम्, आञ्जिषुः, आञ्जीः । आञ्जि, आञ्जिषाताम् । "अनात-"॥४।१।६९॥ इति पूर्वस्यात्वे नेऽन्ते च; आनञ्ज, आनञ्जतुः, आनञ्जिथ, आनञ्जिम । आनञ्जे । अज्यात् । औदित्त्वाद्वेटि, अङ्क्षीष्ट, अञ्जिषीष्ट । अङ्क्ता, अञ्जिता । अङ्क्ष्यति, अञ्जिष्यति । "स्क्रसृ-"॥४।४।४८॥ इतीटि, अञ्जिजिषति । अञ्जयति । "न बदनम्-"॥४।१।५॥ इति नस्य द्वित्वाभावे जेर्द्वित्वे, आञ्जिजत् । व्यञ्जिजयिषति । अञ्जन् । अज्यमानम् । अङ्क्ष्यन्, अञ्जिष्यन् । कित्त्वान्नलुकि, आजिवान् । आजानम् । अक्तः, २ वान्, व्यक्तः, २ वान् । "जनश"॥४।३।२३॥ इति वा कित्त्वे; अक्त्वा, अङ्क्त्वा, इटि, अञ्जित्वा । अङ्क्ता, अञ्जिता । अङ्क्तुम्, अञ्जितुम् । अङ्क्तव्यम्, अञ्जितव्यम् । घ्यणि "क्तेऽनिटः-"४।१।१११॥ इति गे, अङ्ग्यम् ॥ ११ ॥

ओविजैप् भयचलनयोः । विनक्ति, उद्विनक्ति, विङ्क्तः, विञ्जन्ति, विनक्षि, विङ्क्थ, विङ्क्थ, विनज्मि, विञ्ज्व, विञ्ज्म । विज्यते । विञ्ज्यात् । विञ्ज्येत । विनक्तु । अविनक्, अविङ्क्ताम् ॥ अद्य० ॥ "विजेरिट्"॥४।३।१८॥ इति ङित्त्वान्न गुण । उदवि २ जीत्, जिष्टाम्, जिषुः । उदवेजि, उदविजिषाताम् । विवेज, विविजिम । विविजे । विज्यात् । विजिता । उद्विजिष्यति । उद्विजन् । उद्विजिष्यन् । शेष ओविजैतिवत् ॥ १२ ॥

द्वौ अनिटौ ॥ शिष्लृप् विशेषणे । शिनष्टि, विशिनष्टि, विशिंष्टः, निशिंषन्ति, शिनक्षि, शिंष्ठ, शिंष्ठ, शिनष्मि, शिंष्वः, शिंष्म । शिष्यते । शिंष्यात् ।

शिप्येत। शिनष्टु, शिष्टाम्, शिंपन्तु, शिण्ड्ढि, अत्र श्नस्याकारलोपो "श्नाम्-" ॥१।३।३९॥ इति वर्गान्त्ये कर्त्तव्ये "न सन्धि-"॥७।४।११ १॥ इति स्थानी न भवति। एवमन्यत्रापि। शिनपाणि। अशिनट्, अशिंष्टाम्, अशिंपन्, अशिनट्, अशिनपम्, अशिंष्व, अशिंष्म॥ अद्य०॥ लृदित्त्वादङि, अशिपत्, अशिपाम। अशेपि, "हशिट-"॥३।४।५५॥ इति सकि, अशिक्षाताम्, अशि ७ क्षन्त, क्षथा, क्षाथाम्, क्षध्वम्, क्षि, क्षावहि, क्षामहि। विशिशेष, शिशिपतु, शिशेपिथ, शिशिपिम। शिशिपे; शिशिपिमहे। शिप्यात्। शिक्षीष्ट। शेप्टा २। विशेक्ष्यति। शिशिक्षति। शेशिप्यते। शेशिपीति, शेशेप्टि, शेशि २ ष्ट, पति। शेपयति। व्यशीशिपत्। विशिंपन्। शिपती। शिप्यमाणम। शेक्ष्यन्। शिशिप्वान्। शिशिपाणम्। शिष्टः, २ वान्। शिष्टि। शिष्ट्वा। विशिप्य। शेप्टुम्। शेप्टा। शेप्टव्यम्। शेपणीयम्। शेप्यम्॥ १३॥

पिष्लृप् सचूर्णने। "जासनाट-"॥२।२।१४॥ इति वा कर्मण' कर्मत्वे, चौरस्य चौर वा पिनष्टि। हिंसार्थादन्यत्र, धाना पिनष्टि। पान्तत्वात् "अकखादि" ॥२।३।८०॥ इति न नेर्णि., प्रनिपिनष्टि, पिंष्ट', पिंपन्ति। पिप्यते। हौ, पिण्ड्ढि। अपिनड्, ट्, अपिष्टाम्, अपिंपन्॥ अद्य०॥ अपिपत, अपिपाम। अपेपि; सकि, अपिक्षाताम्। पिपेप, पिपिपिम। पिपिपे। पिप्यात्। पिक्षीष्ट। पेप्टा २। पेक्ष्यति। पिपिक्षति। पेपिप्यते। पेपिपीति, पेपेप्टि। पेपयति। अपीपिपत्। पिंपन्। पिंपती। पिप्यमाणम्। पेक्ष्यन्। पेक्ष्यन्ती, पेक्ष्यती। पिप्ट, २ वान्। पिप्टिः। पिष्ट्वा। सम्पिप्य। पेष्टा। पेप्टुम्। पेष्टव्यम्। पेपणीयम्। पेप्यम्॥ १४॥

हिसु, तृहप् हिंसायाम्। उदित्त्वान्ने, "रुधाम्-"॥३।४।८२॥ इति श्ने नलुकि च, हिनस्ति, प्रहिनस्ति, हिंस्त, हिंसन्ति, हिनस्सि, हिंस्थ, हिंस्थ, हिनस्मि, हिंस्व, हिंस्म। हिंसार्थवर्जनात् क्रियाव्यतिहारेऽपि नात्मनेपदे, व्यतिहिंसन्ति। हिंस्यते। हिंस्यात्। हिनस्तु, हिंस्ताम्, हिंसन्तु, हिन्ग्धि, हिन्धि। अत्र "हुधुट" ॥४।२।८३॥ इति हेर्धो, "सोधि वा"॥४।३।७२॥ इति सो वा लुकि, अहिनत्, द्। क्रियाव्यतिहारे तु, व्यत्यहिनत, अहिंस्ताम्, अहिंसन्, अहिन, अहिनद्; "से. स्द्वाम्-"॥४।३।७३॥ इति सिचलुकि, सो वा रुः॥ अद्य०॥ अहिं ५

सीत्, सिष्टाम्, सिषुः, सीः, सिष्टम् । अहिंसि, अहिंसिष्टाम् । जिहिंस, जिहिंसतु, जिहिंसिथ । जिहिंसे । हिंस्यात् । हिंसि ३ षीष्ट, ता, ष्यति । जिहिंसिषति । जेहिंस्यते । जेहिंसीति । हिंसयति । अजिहिंसत् । हिंसयाञ्चकार । हिंसन् । हिंसती । हिंस्यमानम् । हिंसिष्यन् । जिहिंस्वान् । जिहिंसिषुः । जिहिंसानः । हिंसि ५ त., २ वान्, त्वा, ता, तुम् । हिंसनीयम् । हिंस्यम् ॥ तृह ॥ "तृहः श्नादीत्"॥४।३।६२॥ इति विति व्यञ्जनादौ ईत, तृणेढि, तृण्ढः, तृहन्ति, तृणेक्षि; तृणेह्मि, तृह्मः । तृह्यते । तृह्यात् । तृणेढु । हौ, तृण्ढि, तृणहानि । अतृणेट्, अतृण्ढाम्, अतृहन्, अतृणेट्, अतृणहम् । अतर्हीत्, अतर्हिष्टाम् । अतर्हि, अतर्हिषाताम् । ततर्ह, ततृहिम । ततृहे । तृह्यात् । तर्हि ३ षीष्ट, ता, ष्यति । तितर्हिषति । तरीतृह्यते । तरि री र् ३ तृहीति, तर्तेढि, तर्तृढ., तर्तृहति । तर्हयति । अतीतृहत्; अततर्हत् । तृहितः, २ वान् । तर्हि ४ त्वा, ता, तुम्, तव्यम् ॥ १५ ॥ १६ ॥

अनिटौ द्वौ ॥ खिदिंप् दैन्ये । खिन्त्ते, खिन्दाते, खिन्दते । खिद्यते । खिन्दीत । खिन्त्ताम् । अखिन्त्त, अखित्त । अखेदि । चिखिदे । खेत्ता । खिन्न । शेष खिदिच्वत् ॥ १७ ॥

विदिंप् विचारणे । विन्त्ते, विन्दाते । विद्यते । अवित्त । अवेदि, अवित्साताम् । विविदे । वित्सीष्ट । वेत्ता । वेत्स्यते । विवित्सते । वेविद्यते । वित्त्वा । "ऋह्री-"॥४।२।७६॥ इति वा नत्वे, विन्नः, २ वान्, वित्त २ वान् । क्ते, "निर्विण्ण"॥२।३।८९॥ इति निपातनात्, निर्विण्णो विरक्त इत्यर्थः । क्तवतौ तु णत्वाभावे, निर्विन्नवान् । वेत्ता ॥ १८ ॥

ञिइन्धैपि दीप्तौ । इन्द्धे, "धुटो धुटि-"॥१।३।४८॥ इति वा द्लुकि, इन्धे, समिन्द्धे, तेजस्वी भवतीत्यर्थः । इन्धाते, इन्धते, इन्त्से, इन्धाथे, इन्ध्वे, इन्द्ध्वे वा । इन्धे, इन्ध्वहे, इन्ध्महे । इध्यते । इन्धीत । इन्द्धाम्, इन्धाम् वा । ऐन्द्ध, ऐन्ध वा ॥ अद्य० ॥ ऐन्धिष्ट, ऐन्धिषाताम् । "जागुष"॥३।४।४९॥ इति वा आमि, समिन्धाञ्चक्रे । पक्षे, "इन्ध्यसयोग"॥४।३।२१॥ इति कित्त्वान्नलुकि, द्विले च, समीधे, समीधिमहे । इन्धि ३ षीष्ट, ता, ष्यते । इन्दिधिषते । समि-

न्धयति । ऐन्दिधत् । ऐदित्त्वान्नेटि ञीत्त्वात्सति क्ते, समिद्धः, २ वान् । इन्धि ३ त्वा, ता, तुम् । समिध्य ॥ १९ ॥

इति तपागच्छेशश्रीदेवसुन्दरसूरिशिष्यश्रीगुणरत्नसूरिविरचिते क्रियारत्नसमुच्चये रुधादिगणः ।

अथ तनादिः ।

तनूयी विस्तारे। "कृग् तनादे-"॥३।४।८३॥ इति उ, तनोति, व्या, सम्, वि, प्राङ्, पूर्वोऽपि । तनुत , तन्वन्ति, तनोषि, तनुथः, तनुथ, तनोमि, "वम्यऽविति-"॥४।२।८७॥ इति वा उलुकि, तनुव , तन्वः, तनुमः, तन्मः। तनुते, तन्वाते, तन्वते, तनुषे, तन्वाथे, तनुध्वे, तन्वे, तनुवहे, तन्वहे, तनुमहे, तन्महे। "तन क्ये"॥४।२।६३॥ इति नस्य वा आत्वे, तायते, तन्यते । तनुयात् । तन्वीत । तनोतु । हौ, तनु । तनुताम् । अतनोत् । अमि, अतनवम् । अतनुत ॥ अद्य० ॥ "व्यञ्जनादेर्वो-"॥४।३।४७॥ इति वा वृद्धौ, अतनीत्, अतानीत्, अतनिष्टाम्, अतानिष्टाम्, "तन्भ्यो वा-"॥४।३।६८॥ इति तथासोर्वा सिचो लुप्, ण्णोश्च, न चेट् । अतत, अतनिष्ट, अतनिषाताम्, अतनिषत, अतथाः, अतनिष्ठाः, अतनि ६ षाथाम्, ड्ढ्वम्, ध्वम्, षि, ष्वहि० । अतानि। ततान, तेनतुः, तेनुः, तेनिथ, तेनथुः, तेन, ततान, ततन, तेनिव, तेनिम । तेने, तेनाते, तेनि २ ध्वे, महे । तन्यात् । तनि ७ षीष्ट; षीध्वम् । तनिता। तनिष्यति, ते । "इवृध-"॥४।४।४७॥ इति वेटि, "तनो वा"॥४।१।१०५॥ इति वा दीर्घे, तितांसति, ते, तितंसति, ते । पक्षे, तितनिषति, ते । तन्तन्यते । तन्तनीति, तन्तन्ति, "अहन्पञ्चम-"॥४।१।१०७॥ इति दीर्घे, तन्तान्तः, "यमिरमि-"॥४।२।५५॥ इत्यत्र तनादेरिति गणनिर्देशाद् यङ्लुपि नात्र अन्तलुक् । तन्तनति ॥ अद्य० ॥ अतन्तनीत्, अतन्तानीत् । अतन्तानि, अतन्तनिषाताम् । तन्तनत् । यङ्लुबन्तात्सनि, "इवृध-"॥४।४।४७॥ इति वेटि,

तन्तनिपति, तन्तांसति, तन्तसति । तानयति । अतीतनत् । तन्वन्, तन्वन्तौ । तन्वती । तन्वान । तायमानम्; तन्यमानम् । तनिष्य २ न्, माणः । तेनिवान् । तेनुषी । तेनान. । ऊदित्त्वात् क्त्वि वेटि, तनित्वा, "यमिरमि-"॥४।२।५५॥ इति नलुकि, तत्वा । "यपि"॥४।२।५६॥ इति नलुकि, वितत्य । प्रतत्य । वेट्त्वान्नेटि, तत, २ वान् । तनि ३ ता, तुम, तन्यम् । तननीयम् ॥ १ ॥

षणूयी दाने। सनोति । सनुते । क्ये "ये नवा"॥४।२।६२॥ इत्यात्वे, सायते, सन्यते ॥ अद्य० ॥ असानीत्, असनीत् । "तन्भ्यो वा "॥४।३।६८॥ इति सिज्नयोर्वा लुकि, "सनस्तत्र "॥४।३।६९॥ इति वा आत्वे, असात, असत, असनिष्ट ३, असनिषाताम्, असनिषत, असाथाः, असथाः, असनिष्ठाः ३, असनिषाथाम् । ससान, सेनतु । सेने। "ये नवा"॥४।२।६२॥ इत्यत्र अदन्तयग्रहणादिहात्वाभावे; सन्यात् । अन्यथा यि नवा इति कुर्यात् । सायादित्यप्यन्ये । सनि ४ षीष्ट, ता, ष्यति, ष्यते । "इवृध "॥४।४।४७॥ इति वेटि "णिस्तोरेव-"॥२।३।३७॥ इति नियमान्न षत्वम्, सिसनिषति, ते । पक्षे, "नाम्यन्तस्था "॥२।३।१५॥ इति षत्वे, "सनि" ॥४।२।६१॥ इत्यात्वे, सिषासति, ते । "ये नवा"॥४।२।६२॥ इति वा आत्वे, सासायते, संसन्यते । संस २ नीति, न्ति । "आ खनि-"॥४।२।६०॥ इति नस्यात्वे, ससातः, ससनति । सानयति । असीषनत् । सिषानयिषति । ऊदित्त्वात् क्त्वि वेट्; सनित्वा, पक्षे, "आ. खनि-"॥४।२।६०॥ इत्यात्वे, सात्वा । प्रसाय, प्रसन्य, प्रसत्य । वेट्त्वान्नेटि; सात', २ वान् । क्तौ, सातिः । सनि २ ता, तुम् । शेष तनूयीवत् ॥ वन, षण भक्तौ, भक्तिर्भजनम् । सनति, सनत, सनन्ति ॥ २ ॥

क्षनूग्, क्षिनूयी हिंसायाम् । "रषृवर्णात्"॥२।३।६३॥ इति नो णे, क्षणोति । क्षणुते । क्षण्यते । अक्षणीत् । अक्षत, अक्षणिष्ट, अक्षणिषाताम्, अक्षणिषत, अक्षथा, अक्षणिष्ठाः । चक्षाण, चक्षणिथ । चक्षणे । क्षण्यात् । क्षणि ४ षीष्ट, ता, ष्यति, ष्यते । चिक्षणिषति, ते । चङ्क्षण्यते । चङ्क्ष २ णीति, न्ति । क्षाणयति । अचिक्षणत् । ऊदित्त्वाद्वेटि, "यमिरमि-"॥४।२।५५॥ इति नलुकि, क्षणित्वा, क्षत्वा । वेट्त्वान्नेटि, क्षत', २ वान् । क्तौ, क्षति' । क्षणि २ ता, तुम् ॥ क्षिनू ॥ "रषृवर्ण "॥२।३।६३॥ इति नो णे, उपान्त्यगुणे

न्धयति । ऐन्दिधत् । ऐदिन्धन्नेटि ञीत्वात्मति क्ते; समिद्धः, २ वान् । इन्धि ३ त्वा, ता, तुम् । समिध्य ॥ १९ ॥

इति तपागच्छेशश्रीदेवसुन्दरसूरिशिष्यश्रीगुणरत्नसूरिविरचिते क्रियारत्नसमुच्चये रुधादिगणः ।

अथ तनादिः ।

तनूयी विस्तारे। "कृग् तनादे -"॥३।४।८३॥ इति उ, तनोति, व्या, सम्, वि, प्राङ्, पूर्वोऽपि । तनुतः, तन्वन्ति, तनोषि, तनुथः, तनुथ, तनोमि, "वम्यऽविति-"॥४।२।८७॥ इति वा उलुकि, तनुवः, तन्वः, तनुमः, तन्मः।तनुते, तन्वाते, तन्वते, तनुषे, तन्वाथे, तनुध्वे, तन्वे, तनुवहे, तन्वहे, तनुमहे, तन्महे। "तनः क्ये"॥४।२।६३॥ इति नस्य वा आत्वे, तायते, तन्यते । तनुयात् । तन्वीत । तनोतु । हौ, तनु । तनुताम् । अतनोत् । अमि, अतनवम् । अतनुत ॥ अद्य० ॥ "व्यञ्जनादेर्वो-"॥४।३।४७॥ इति वा वृद्धौ, अतनीत्, अतानीत्, अतनिष्टाम्, अतानिष्टाम्, "तन्भ्यो वा-"॥४।३।६८॥ इति तथासोर्वा सिचो लुप्, ण्णोश्च, न चेट् । अतत, अतनिष्ट, अतनिषाताम्, अतनिषत, अतथाः, अतनिष्ठाः, अतनि ६ षाथाम्, ड्ढ्वम्, ध्वम्, षि, ष्वहि० । अतानि । ततान, तेनतुः, तेनुः, तेनिथ, तेनथुः, तेन, ततान, ततन, तेनिव, तेनिम । तेने, तेनाते, तेनि २ ध्वे, महे । तन्यात् । तनि ७ षीष्ट, षीध्वम् । तनिता । तनिष्यति, ते । "इवृध-"॥४।४।४७॥ इति वेटि, "तनो वा"॥४।१।१०५॥ इति वा दीर्घे, तितांसति, ते, तितंसति, ते । पक्षे, तितनिषति, ते । तन्तन्यते । तन्तनीति, तन्तन्ति, "अहन्पञ्चम-"॥४।१।१०७॥ इति दीर्घे, तन्तान्त, "यमिरमि-"॥४।२।५५॥ इत्यत्र तनादेरिति गणनिर्देशाद् यङ्लुपि नात्र अन्तलुक् । तन्तनति ॥ अद्य० ॥ अतन्तनीत्, अतन्तानीत् । अतन्तानि, अनन्तनिषाताम् । तन्तनत् । यङ्लुबन्तात्सनि, "इवृध"॥४।४।४७॥ इति वेटि,

तन्तनिषति, तन्तांसति, तन्तसति । तानयति । अतीतनत । तन्वन्, तन्वन्तौ । तन्वती । तन्वान. । तायमानम्; तन्यमानम् । तनिष्य २ न्, माणः । तेनि· वान् । तेनुषी । तेनान । ऊदित्त्वात् क्त्वि वेटि; तनित्वा, "यमिरमि-"॥४।२।५५॥ इति नलुकि, तत्वा । "यपि"॥४।२।५६॥ इति नलुकि, वितत्य । प्रतत्य । वेट्त्वा· न्नेटि, तत', २ वान् । तनि ३ ता, तुम्, तन्यम् । तननीयम् ॥ १ ॥

षणूयी दाने। सनोति । सनुते । क्ये "ये नवा"॥४।२।६२॥ इत्याले; सायते, सन्यते ॥ अद्य०॥ असानीत्; असनीत्। "तन्भ्यो वा-"॥४।३।६८॥ इति सिज्न· योर्वा लुकि, "सनस्तत्र"॥४।३।६९॥ इति वा आत्वे, असात, असत, असनिष्ट ३, असनिषाताम्, असनिषत, असाथाः, असथाः, असनिष्ठा' ३, असनिषाथाम् । ससान, सेनतु' । सेने। "ये नवा"॥४।२।६२॥ इत्यत्र अदन्तयग्रहणादिहात्वाभावे; सन्यात् । अन्यथा यि नवा इति कुर्यात् । सायादित्यप्यन्ये । सनि ४ षीष्ट, ता, ष्यति, ष्यते। "इवृध"॥४।४।४७॥ इति वेटि "णिस्तोरेव-"॥२।३।३७॥ इति निय· मान्न षत्वम्, सिसनिषति, ते। पक्षे, "नाम्यन्तस्था"॥२।३।१५॥ इति षत्वे, "सनि" ॥४।२।६१॥ इत्यात्वे, सिषासति, ते। "ये नवा"॥४।२।६२॥ इति वा आत्वे, सासायते; संसन्यते। सस २ नीति, न्ति । "आ खनि-"॥४।२।६०॥ इति नस्यात्वे, संसात', संसनति । सानयति। असीषनत। सिषानयिषति । ऊदित्त्वात् क्त्वि वेट्; सानित्वा; पक्षे, "आ. खनि-"॥४।२।६०॥ इत्यात्वे, सात्वा । प्रसाय, प्रसन्य, प्रसत्य । वेट्· त्वान्नेटि, सात', २ वान्। क्तौ, सातिः । सनि २ ता, तुम्। शेष तनूयीवत् ॥ वन, षण भक्तौ, भक्तिर्भजनम् । सनति, सनत', सनन्ति ॥ २ ॥

क्षणूग्, क्षिणूयी हिंसायाम् । "रपृवर्णात्"॥२।३।६३॥ इति नो णे, क्षणो· ति । क्षणुते । क्षण्यते । अक्षणीत् । अक्षत, अक्षणिष्ट, अक्षणिषाताम्, अक्ष· णिषत, अक्षथा , अक्षणिष्ठाः । चक्षाण; चक्षणिथ । चक्षणे । क्षण्यात । क्षणि ४ षीष्ट, ता, ष्यति, ष्यते । चिक्षणिषति, ते । चङ्क्षण्यते । चङ्क्ष २ णीति, न्ति । क्षाणयति । अचिक्षणत । ऊदित्त्वाद्वेटि, "यमिरमि-"॥४।२।५५॥ इति नलुकि, क्षणित्वा, क्षत्वा । वेट्त्वान्नेटि, क्षतः, २ वान् । क्तौ, क्षतिः । क्षणि २ ता, तुम् ॥ क्षिणू ॥ "रपृवर्णे-"॥२।३।६३॥ इति नो णे, उपान्त्यगुणं

नेच्छन्त्येके । क्षिणोति, क्षिणुतः, क्षिण्वन्ति । क्षिणुते, क्षिण्वाते, क्षिण्वते । क्ये, क्षिण्यते । अक्षेणीत्, अक्षेणिष्टाम् । अक्षित, अक्षेणिष्ट, अक्षेणिषाताम् । अक्षेणि । चिक्षेण । चिक्षिणे । क्षिण्यात् । क्षेणि ४ षीष्ट, ता, ष्यति, ष्यते । चिक्षेणिषति, ते, चिक्षिणिषति, ते । चेक्षिण्यते । चेक्षि २ णीति, न्ति । "म्नाम्-" ॥१।३।३९॥ इति बहुवचनात् प्रागेव न, नतु णः; चेक्षीन्तः, चेक्षिणति । क्षेणयति । अचिक्षिणत् । क्षिण्वन् । क्षिण्वानः । क्षिण्वती । क्षेणि २ ष्यन्, ष्यमाण. । चिक्षिण्वान् । चिक्षिणान. । ऊदित्त्वाद्वेटि, "वौ व्यञ्जन-"॥४।३।२५॥ इति वा कित्त्वे, क्षिणित्वा, क्षेणित्वा । "यमिरमि-"॥४।२।५५॥ इति नलुकि, क्षित्वा। प्रक्षित्य । वेट्त्वान्नेटि, क्षित, २ वान् । क्षेणि ३ ता, तुम्, तव्यम । क्षेणनीयम् ॥ ३ ॥ ४ ॥

इत्युभयतोभाषा ।

वनूयि याचने । वनुते, वन्वाते । वन्यते । अवत, अवनिष्ट। अवानि, अवनिषाताम् । "न शस- ॥४।१।३०॥ इति न ए, ववने, ववनिमहे । वनि ३ षीष्ट, ता, ष्यते । विवनिषते । वंवन्यते । वंव २ नीति, न्ति, वंवान्तः, वंवनति । "कगेवनू"॥४।२।२५॥ इति ह्रस्वे, अववनयति, सवनयति । समवीवनत् । ञिणम्परे तु वा दीर्घ , समवानि, समवनि, अवानि, अवनि । सवानम् २, सवनम् २; वानम् २, वनम् २ । अनुपसर्गस्य तु, "ज्वलह्वल-"॥४।२।३२॥ इति वा ह्रस्वे, वानयति, वनयति । अवीवनत् । अत्र सूत्रे वा ह्रस्वविधानाद् ञिणम्परे इति नानूद्यते । ऊदित्वाद्वेटि, वनित्वा, वत्वा । वेट्त्वान्नेटि, वत, २ वान्। वनि २ ता, तुम् ॥ वन, षन भक्तौ । वनति । णिगि, वानयति । अनटि; सवननम् । शेषस्यापि तुल्यम् ॥ ५ ॥

मनयि बोधने । मनुते, मन्वाते, मन्वते, मनुषे, मन्वाथे, मनुध्वे, मन्वे, मनुवहे, मन्वहे, मनुमहे, मन्महे । क्ये, मन्यते। मन्वीत । मनुताम् । अमनुत। "तन्भ्यो-"॥४।३।६८॥ इति न्सिचोर्वा लुकि, नचेट् । अमत, अमनिष्ट, अमनिषाताम्, अमनिषत, अमथा, अमनिष्ठा, अमनिषाथाम् । मेने, मेनिमहे ।

मनि ३ षीष्ट, ता, ष्यते । मिमनिषते । मंमन्यते । ममनीति, ममान्ति, ममान्तः, ममनति । मानयति । अमीमनत् । मानयाचकार । मन्वान । मन्यमानम् । मनिष्यमाणः । मेनान । उदित्त्वाद्वेटि, "यमि-"॥४।२।५५॥ इति नलुकि; मत्वा, मनित्वा । अवमत्य । वेट्त्वान्नेटि, मतः, २ वान् । मनि ३ ता, तुम्, तव्यम् । मननीयम् । मान्यम् ॥ ६ ॥

इति श्रीतपाचार्यश्रीदेवसुन्दरसूरिशिष्यश्रीगुणरत्नसूरिविरचिते क्रियारत्नसमुच्चये तनादिगणः ॥

अथ क्र्यादयः ।

तत्र त्रयोऽनिटः ॥ डुक्रींग्श् द्रव्यविनिमये, द्रव्यपरिवर्त्ते । "क्र्यादेः"॥३।४।७९॥ इति श्ना, क्रीणाति, विक्रीणाति । "एषाम्-"॥४।२।९७॥ इतीत्वे, क्रीणीतः; क्रीणन्ति "श्नश्च-"॥४।२।९६॥ इत्याल्लुक्, क्रीणासि, क्रीणीथः, क्रीणीथ, क्रीणामि, क्रीणीवः, क्रीणीमः । क्रीणीते, क्रीणाते, क्रीणते, क्रीणीषे, क्रीणाथे, क्रीणीध्वे, क्रीणे, क्रीणीवहे, क्रीणीमहे । फलवतोऽन्यत्र "परिव्यवात्-"॥३।३।२७॥ इत्यात्मनेपदे, परिक्रीणीते; विक्रीणीते, अवक्रीणीते । क्ये, क्रीयते । क्रीणीयात् । क्रीणीत । क्रीयेत । क्रीणातु, क्रीणीताम्, क्रीणन्तु, क्रीणीहि । क्रीणीताम्, क्रीणीष्व, क्रीणै । क्रीयताम् । अक्रीणात् । अक्रीणीत । अक्रीयत ॥ अद्य० ॥ अक्रैषीत्, अक्रै ३ ष्टाम्, षु, षी । अक्रेष्ट, अक्रे २ ड्ढ्म, ढ्वम् । अक्रायि, अक्रायिषाताम्, अक्रेषाताम्, अक्रे २ ड्ढ्वम्, ढ्वम्; अक्रायि ३ ड्ढ्वम्, ढ्वम्, ध्वम् । चिक्राय, चिक्रियतुः, चिक्रियुः, चिक्रयिथ, चिक्रेथ, चिक्रियथुः, चिक्रिय चिक्राय, चिक्रय, चिक्रियिव, चिक्रियिम । चिक्रिये, चिक्रियाते, चिक्रियिषे, चिक्रियि २ ढ्वे, ध्वे । क्रीयात् । क्रे ५ षीष्ट, षीढ्वम्, ता, ष्यति, ष्यते । ञिटि, क्रायि ६ षीष्ट, षीढ्वम्, षीध्वम्, ता, ष्यति, ष्यते । चिक्रीषति, ते । चेक्रीयते । चेक्रयीति, चेक्रेति, चेक्रीतः, चेक्रियति । "णौ क्रीजी-"॥४।२।१०॥ इत्यात्वे, क्रापयति । अचिक्रपत् । क्रापितः ।

चिक्रापयिषति । क्रीणन् । "अवर्णादश्न.-"॥२।१।११५॥ इति श्नावर्जनान्न अन्त् । क्रीणती । क्रीणानः । क्रीयमानम् । क्रेष्यन् । क्रेष्यन्ती, क्रेष्यती । क्रेष्यमाण. । चिक्रीवान् । चिक्रियाण । क्रीतः, २ वान् । "परिक्रयणे"॥२।२।६७॥ इति करणाद्वा चतुर्थ्यां, शताय शतेन वा परिक्रीतः । क्रीत्वा । विक्रीय । क्रेता । क्रेतुम् । "क्रय्य. क्रयार्थे"॥४।३।९१॥ इति निपातनात्, क्रय्यो गौ. । क्रय्यः कम्बल, क्रयाय प्रसारित इत्यर्थ. । क्रयार्थादन्यत्र, क्रेय नो धान्यम्, नचास्ति प्रसारितम् । क्रेतव्यम् ॥ १ ॥

प्रींग्श् तृप्तिकान्त्यो'; कान्तिरभिलाषः । प्रीणाति, प्रीणीत, प्रीणन्ति, प्रीणासि० । प्रीणीते, प्रीणाते, प्रीणते० । प्रीयते । प्रीणीयात । प्रीणीत । प्रीणातु । प्रीणीताम्, प्रीणाताम्, प्रीणताम् ॥ ह्य० ॥ अप्री ९ णात्, णीताम्, णन्, णाः, णीतम्, णीत, णाम्, णीव, णीम । अप्रीणीन ॥ अद्य० ॥ अप्रैषीत्, अप्रैष्टाम् । अप्रेष्ट, अप्रेषाताम्, अप्रे २ ड्ढ्वम्, ढ्वम् । अप्रायि, अप्रायिषाताम्, अप्रेषाताम् । पिप्राय, पिप्रियतु', पिप्रियुः, पिप्रयिथ, पिप्रेथ, पिप्रियथु', पिप्रिय, पिप्राय, पिप्रय, पिप्रियि २ व, म । पिप्रिये । प्रीयात् । प्रे ४ षीष्ट, ता, ष्यति, ष्यते । ञिटि, प्रायि ३ षीष्ट, ता, ष्यते । पिप्रीषति, ते । पेप्रीयते । पेप्रयीति, पेप्रेति । "धूग्प्रीगो -"॥४।२।१८॥ इति ने, प्रीणयति । अपिप्रिणत् । गिन्निर्देशाद् यङ्लुपि न नोऽन्त., पेप्राययति । प्रीणन् । प्रीणती । प्रीणान । प्रेष्यन् । प्रेष्यमाण । पिप्रीवान् । पिप्रियाण । प्रीत, २ वान् । प्रीत्वा । अभिप्रीय । प्रे ४ ता, तुम्, तव्यम्, यम ॥ २ ॥

मीग्श् हिंसायाम् । मीनाति, मीनीते । "अदुरुप-"॥२।३।७७॥ इति णे, प्रमीणाति, प्रमीणीते । क्ये, मीयते । यबक्ङिति "मिग्मीग "॥४।२।८॥ इत्यात्वे, अमासीत्, अमास्त, अमायि । विपयव्याख्यानात् प्रागात्त्वे, पश्चाद् द्वित्वे, ममौ, मिम्यतु, मिम्यु, ममाथ, ममिथ०, मिम्यिम । मिम्ये । मीयात् । मा ४ सीष्ट, ता, स्यति, स्यते । ञिटि, मायि ३ षीष्ट, ता, ष्यते । "मिमी-"॥४।१।२०॥ इति इति, प्रमित्सति, ते । प्रमेमीयते । प्रमे २ मेति, मयीति । प्रमापयति । अमीमपत् । मीत, २ वान् । मीत्वा । प्रमाय । माता । मातुम् । मातव्यम् ॥३॥

ग्रहीश् उपादाने, स्वीकारे। "ग्रहव्रश्च-"॥४।१।८४॥ इति य्वृति, "रपृवर्ण-"॥२।३।६३॥ इति णे च, गृह्णाति, आगृह्णाति । एव वि, नि, परि, अव, अभि, उप, प्रति, अनु पूर्वोऽपि । गृह्णीत., गृह्णन्ति, गृह्णासि, गृह्णीथः, गृह्णीथ, गृह्णामि, गृह्णीवः, गृह्णीम.। गृह्णीते, गृह्णाते, गृह्णते, गृह्णीषे, गृह्णाथे, गृह्णीध्वे, गृह्णे, गृह्णीवहे, गृह्णीमहे । गृह्यते । गृह्णीयात् । गृह्णीत । गृह्णातु, गृह्णीताम्, गृह्णन्तु । "व्यञ्जनाच्छ्न-"॥३।४।८०॥ इति आनः, गृहाण; गृह्णीतम्, गृह्णीत, गृह्णानि । गृह्णीताम्, गृह्णाताम्, गृह्णताम्, गृह्णीष्व, गृह्णीथाम्, गृह्णीध्वम्, गृह्णै, गृह्णावहै, गृह्णामहै । अगृह्णात्, अगृह्णीताम्, अगृह्णन्, अगृ ४ ह्णाः, ह्णीतम्, ह्णीत, ह्णाताम् ॥ अद्य० ॥ अग्रहीत् । "न श्वि-"॥४।३।४९॥ इति न वृद्धिः, "गृह्णः-"॥४।४।३४॥ इतीटो दीर्घः, दीर्घस्य स्थानिवद्भावात् "इट ईति"॥४।३।७१॥ इति सिचो लुक्; अग्रहीष्टाम्, अग्रहीषुः, अग्रहीः, अग्रही ५ ष्टम्, ष्ट, षम्, ष्व, ष्म । अग्रहीष्ट, अग्रहीषाताम्; अग्रही २ ध्वम्, ढ्वम्; "हान्तस्था-"॥२।१।८१॥ इति वा ढः; अग्रहीड्ढ्वम्, अग्रही ३ षि, ष्वहि, ष्महि। अग्राहि, "स्वरग्रह-"॥३।४।६९॥ इति वा ञिटि, अग्राहिषाताम्। इटि तु, अग्रहीषाताम्; अग्राहि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्, अग्रही ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम्। जग्राह, जगृहतु, जगृहु, जग्रहिथ, जगृहथुः, जगृह, जग्राह, जग्रह, जगृहि २ व, म । जगृहे, जगृहाते, जगृहिध्वे, ढ्वे, जगृहिमहे । गृह्यात्। इटि, ग्रही ६ षीष्ट, षीढ्वम्, षीध्वम्, ता, ष्यति, ष्यते । ञिटि, ग्राहि ५ षीष्ट, षीढ्वम्, षीध्वम्, ता, ष्यते । "ग्रहगुहश्च-"॥४।४।५९॥ इति नेटि; जिघृक्षति, ते । जरीगृह्यते । "गृह्णः-"॥४।४।३४॥ इत्यत्र विहितविशेषणाद् यङि इटो न दीर्घ, अजरीगृहिष्ट । जरीगृहि ३ ता, तुम्, तव्यमित्यादि। लुपि तु, जरी, रि, र् ३ गृहीति । अत्र "लुप्यय्वृत्-"॥४।४।११२॥ इत्यत्र य्वृद्वर्जनाद् यङ्लुप्यपि य्वृत्सिद्धम् । जरि ११ गर्ढि, गृढ, गृहति, घर्क्षि, गृहीषि, गृढ, गृढ, गर्ह्मि, गृहीमि, गृह्व, गृह्म. । जर्गृह्यते । जरिगृह्यात्। जर्गर्ढु, जर्गृ ५ हीतु, ढाम्, हतु, ढि, हाणि । अजरी ६ घर्ट्, घर्ड्, गृढाम्, गृहु, घर्ट्, घर्ड् ॥ अद्य० ॥ अजरिगर्हीत्; "गृह्णः-"॥४।४।३४॥ इत्यत्र लुप्ततिवृनिर्देशान्न दीर्घे, अजरिग-

८ र्हिष्टाम्, र्हिषुः० । जरिगर्हांचकार । जरिगार्हिष्यति । जरिगर्हि ३ ता, तुम्, तव्यम् । जरिगृहित' । उद्ग्राहयति । अजिग्रहत् । ग्राहयाचकार, चक्रे वा णिगन्तभूवत् । जिग्राहयिषति । गृह्णन् । गृह्णती । गृह्णान. । गृह्यमाणम् । ग्रही ४ ष्यन्, ष्यन्ती, ष्यती, ष्यमाण' । जगृह्वान् । जगृहाण । गृहीतः, २ वान् । निगृहीति. । "रुदविद-"॥४।३।३२॥ इति क्त्वासनो' किन्वे, गृहीत्वा । सङ्गृह्य । ग्रही ३ ता, तुम्, तव्यम् । ग्रहणीयम् । ग्राह्यम् ॥ ४ ॥

अथ प्वादिः ।

पूग्श् पवने, पवन शुद्धि । "प्वादे-"॥४।२।१०५॥ इति ह्रस्वे, पुनाति, पुनीत', पुनन्ति० । पुनीते, पुनाते, पुनते । क्ये, पूयते ॥ अद्य० ॥ अपा २ वीत्, विष्टाम् । अपविष्ट, अपविशाताम् । अपावि, अपविषाताम्, अपाविषाताम् । पुपाव, पुपुवतु, पुपुवु', पुपविथ, पुपुवथु, पुपुव, पुपाव, पुपव, पुपुवि २, व, म । पुपुवे, पुपुवाते । पूयात् । पविषीष्ट, पाविषीष्ट, पविषीढ्वम्, ध्वम् । पविता, पाविता । पविष्यति, ते, पाविष्यते । "ग्रहगुहश्च-"॥४।४।५९॥ इति नेट्, पुपूषति, ते । पोपूयते । अचि, पोपूया । पोपोति, पोपवीति, पोपूत, अत्वादाविलधिकारात् "प्वादे -"॥४।२।१०५॥ इति न ह्रस्व, पोपुवति । क्ते, पोपुवित. । शेषे यङ्लुबन्तभूवत् । पावयति । पाव्यते । अपीपवत् । णौ सनि "ओर्जान्त-"॥४।१।६०॥ इति ओ इ', पिपावयिषति । पुनन् । पुनती । पुनान । पूयमानम् । पविष्य २ न्, माण । पवि २ ष्यन्ती, ष्यती । पुपूवान् । पुपुवान । क्तिति "उवर्णात्" ॥४।४।५८॥ इति नेट्, पूत', २ वान् । पूति । नाशे "पूदिवि "॥४।२।७२॥ इति नत्वे, पूना यवा । नाशादन्यत्र, पूत धान्यम् । पूत्वा । पवि ३ ता, तुम्, तव्यम् । ये, पव्यम् । घ्यणि, पाव्यम् । पूङ् पवने । पवते । पिपविषते ॥ ५ ॥

अथ प्वाद्यन्तर्गणो ल्वादि । लूग्श् छेदने । लुनाति । लुनीते । लूयते । अलावीत्, अलाविष्टाम् । अलविष्ट, अलवि ३ ध्वम्, ढ्वम्, ड्ढ्वम् । लुलाव, लुलविथ । लुलुवे; लुलुविध्वे, ढ्वे । लवि २ षीध्वम्, षीढ्वम् । लविष्यति, ते । "एकधातौ-"॥३।४।८६॥ इति ञिच्ञिट्क्यात्मनेपदेषु, लूयते ।

अलावि । लाविता, लविता । लाविष्यते, लविष्यते वा केदारः स्वयमेव । लुलूषति, ते । लोलूयते । सनि, लोलूयिषते । लुपि तु, लोलवीति, लोलोति ॥ अद्य० ॥ अलोलावीत्। लोलवाञ्चकार । लोलविष्यति ॥ भाक ॥ लोलाविष्यते, लोलविष्यते। लावयति। लाव्यते। अलीलवत्। णिगन्तात्कर्मकर्त्तरि; "णिस्नु-" ॥३।४।९२॥ इति ञिच्, "भूषार्थे-"॥३।४।९३॥ इति ञिट्क्यौ च निषिद्धाः । लावयते; अलीलवत वा रम्भा स्वयमेव । णिगन्तात्सनि; लीलावयिषति।लुनन्। लुनानः । लूत्वा । एवं सर्वं पूग्श्वत्; नवरं "ऋल्वादेः-"॥४।२।६८॥ इति क्त-क्तवत्वन्तस्य नत्वे, लूनः, २ वान् । लूनिः ॥ ६ ॥

धूग्श् कम्पने । प्वादित्वात् ह्रस्वे, धुनाति । धुनीते । क्ये, धूयते। धुनीयात्। धुनीत । धुनातु । धुनीताम् । अधुनात्। अधुनीत । शेष सर्वं धूग्ट्वत्; नवरं "ऋल्वादे-"॥४।२।६८॥ इति ने, धूनः, २ वान् । धूनि । धूग्ट् कम्पने । धूनोति। धूनुते । धूत् विधूनने । धुवति। धूगण् कम्पने । युजादित्वाद्वा णिचि, धूनयति । धवति। धवते ॥ ७ ॥

स्तृग्श् आच्छादने । प्वादित्वात् ह्रस्वे, स्तृणाति । वि, सम्, प्र, आङ्, नि पूर्वोऽप्येवम्। स्तृणीत , स्तृणन्ति । स्तृणीते, स्तृणाते, स्तृणते । आस्तीर्यते । व्यस्तारीत्; आस्तारीत्, आस्तारि २ ष्टाम्, षु । "इट् सिजाशिषो"॥४।४।३६॥ इति वेट्, "वृतो नवा"॥४।४।३५॥ इति वेटो दीर्घे, आस्तरिष्ट, आस्तरीष्ट, "ऋवर्णात्"॥४।३।३६॥ इति सिचः कित्त्वे, आस्तीर्ष्ट । आस्तारि, आस्तरिषाताम्, आस्तरीषाताम, आस्तीर्षाताम् । ञिटि, आस्तारिषाताम् । तस्तार, "स्कृच्छृत-"॥४।३।८॥ इति गुणे, तस्तरतु, तस्तरु, तस्तरिथ, तस्तरथुः, तस्तर, तस्तार, तस्तर, तस्तरि २ व, म । तस्तरे । स्तीर्यात् । स्तरिषीष्ट, स्तीर्षीष्ट, स्तारिषीष्ट । स्तरिता २, स्तरीता २, स्तारिता । स्तरिष्यति, ते, स्तरीष्यति, ते, स्तारिष्यते । "इवृध-"॥४।४।४७॥ इति वेटि, "नामिनोऽनिट्" ॥४।३।३३॥ इति कित्त्वे च, आतिस्तरिषति, ते, आतिस्तरीषति, ते, आतिस्तीर्षति, ते । तेस्तीर्यते । तास्तरीति, तास्तर्त्ति । विस्तारयति । "स्मृदृत्वर-" ॥४।१।६५॥ इति पूर्वस्यात्वे, व्यतस्तरत्। स्तृणन्। स्तृणानः । आतिस्तीर्वान् ।

आतिस्तिराण.। काने प्राग् द्वित्व पश्चादिर्, स्वरविधित्वात्। किति 'ऋवर्णश्वि"॥४।४।५७॥ इति नेटि, "ऋल्व-"॥४।२।६८॥ इति नत्वे, आस्तीर्णः, २ वान्। आस्तीर्णिः। स्तीर्त्वा। आस्तीर्य। स्तरि ३ ता, तुम्, तव्यम्। स्तरणीयम्। घ्यणि, आस्तार्थ ॥ ८ ॥

वृंग्श् वरणे। "प्वादेर्ह्रस्व.'॥४।२।१०५॥ वृणाति। वृणीते। क्ये, वूर्यते। अवारीत, अवारिष्टाम्। अवरिष्ट, अवरीष्ट, अवूर्ष्ट ३। अवारि, अवरिषाताम्, अवरीषाताम्, अवूर्षाताम्, अवारिषाताम्। ववार, "स्कृच्छृत-"॥४।३।८॥ इति गुणे, ववरतु। ववरे। वूर्यात्। वरिषीष्ट, वूर्षीष्ट, वारिषीष्ट। वरिता, वरीता। वारिता। वरिष्यति, ते, वरीष्यति, ते, वारिष्यते। विवरिषति, ते; विवरीषति, ते, वुवूर्षति, ते। वोवूर्यते। वावरीति, वावर्त्ति, वावूर्त्ते, वावुरति। वावुरत्। वारयति। अवीवरत। वृणन्। वृणती। वृणान'। वरिष्यन्, वरीष्यन्। वुवूर्वान्। वुवुराण। वूर्ण, २ वान्। वूर्णि। वूर्त्वा। प्रवूर्य। वरि ३ ता, तुम्, तव्यम्; वरी ३ ता, तुम, तव्यम। वरणीयम्। वार्यम्। ह्रस्वान्तोऽयमिति नन्दी ॥ ९ ॥ इत्युभयपदिन.।

अनिटौ द्वौ ॥ ज्याश् हानौ। वयोहानाविलेके। "ज्याव्यध-"॥४।१।८१॥ इति य्वृति, "दीर्घमव"॥४।१।१०३॥ इति दीर्घे, "प्वादे -"॥४।२।१०५॥ इति ह्रस्वे, जिनाति, त्यजतीत्यर्थ'। जिनीत, जिनन्ति। क्ये, जीयते। अज्या ३ सीत्, सिष्टाम्, सिषु। अज्यायि, अज्यासाताम्, अज्यायिषाताम्। "ज्याव्येव्याधि-"॥४।१।७१॥ इति पूर्वस्येत्वे, जिज्यौ, जिज्यतु, जिज्यु, "सृजिदृशि-"॥४।४।७८॥ इति वेटि, जिज्यिथ, जिज्याथ, जिज्यथु, जिज्य, जिज्यौ, जिज्यि २ व, म। जिज्ये। जीयात्। ज्यासीष्ट, ज्यायिषीष्ट। ज्याता २, ज्यायिता। ज्यास्यति, ते, ज्यायिष्यते। जिज्यासति। जेजीयते। जेजेति, जेजयीति। ज्यापयति। अजिज्यपत्। जिनन्, जिनन्तौ। जिनती। जास्यन्। जिजीवान्। जिज्यानम्। "ऋल्व-"॥४।२।६८॥ इति ने, जीनः, २ वान्। जीत्वा। "ज्यश्च यपि"॥४।१।७६॥ इति य्वृदभावे, प्रज्याय। ज्याता। ज्यातुम् ॥ १० ॥

लींश् श्लेषणे। "प्वादेर्ह्रस्व."॥४।२।१०५॥ लिनाति । क्ये, लीयते । यब-क्ङिति, "लीङ्लिनोर्वा"॥४।२।९॥ इति वा आत्वे, व्यलासीत्, व्यलैषीत्। अला-यि, अलासाताम्, अलेषाताम्; अलायिषाताम् । लिलाय, लिल्यतुः । लिल्ये । लीयात् । लासीष्ट, लेषीष्ट; लायिषीष्ट । विलास्यति, ते, विलेष्यति, ते, लायि-ष्यते । लिलीषति । लेलीयते । लुसतिवन्निर्देशात् यङ्लुपि न आ·; लेलेति, लेलयीति। णौ "लीङ्लिन.-"॥३।३।९०॥ इत्यात्मनेपदे आत्वे च, जटाभिरालापयते। आत्मानं पूजां प्रापयतीत्यर्थः । श्येनो वर्त्तिकामुल्लापयते, अभिभवतीत्यर्थः। "लोलः" ॥४।२।१६॥ इति ले, विलालयति। पक्षे, "अर्त्तिरी"॥४।२।२१॥ इति पौ, विलापय-ति। "लिय-"॥४।२।१५॥ इति ने, घृतं विलीनयति। पक्षे, "नामिन-"॥४।३।५१॥ इति वृद्धौ, घृतं विलाययति। लिनन्। लेष्यन्, लास्यन्। विलाय, विलीय। विलाता; विलेता। विलातुम्, विलेतुम्। "ऋल्व"॥४।२।६८॥ इति ने, लीनः, २ वान्॥११॥

कॄ, मॄ, शॄश् हिंसायाम् । कृणाति । अथ वक्ष्यमाणशॄश्वत्, परं परोक्षा-याम्, "स्कृच्छृत-"॥४।३।८॥ इति गुण एव कार्यः । चकार, चकरतु·, चकरु·, चकरिथ० । चकरे ॥ मॄ पुनर्वृङ्गृश्वत् ॥ शॄ ॥ प्वादेर्ह्रस्वे, वज्रं गिरीन् शृणाति, शृणीत, शृणन्ति । क्ये, शीर्यते, विशीर्यते । व्यशारीत्। व्यशारि। "इट् सिज-"॥४।४।३६॥ इति वेटि, "वृत"॥४।४।३५॥ इति इटो वा दीर्घे, व्यश-रिषाताम्, व्यशरीषाताम्, व्यशीर्षाताम्, ञिटि, व्यशारिषाताम् । विशशार; "ऋ शॄदॄप"॥४।४।२०॥ इति वा ऋ, विशश्रतु, विशश्रुः । पक्षे, "स्कृच्छृ-" ॥४।३।८॥ इति गुणे, विशशरतु, विशशरु, शशरिथ०, शशरिम, शश्रिम । शशरे, शश्रे । शीर्यात् । शरिषीष्ट, शीर्षीष्ट, शारिषीष्ट । शरिता, शरीता, शारिता । शरिष्यति, ते, शरीष्यति, ते, शारिष्यते । शिशरिषति, शिशरीषति, शिशीर्षति । शेशीर्यते । शाशरीति, शाशर्त्ति । विशारयति । व्यशीशरत् । विशश्वान्; विशश्राणम् । पक्षे, विशिशीर्वान्; विशशिराणम् । क्वानेः पूर्वं द्वित्वं पश्चादिर्, स्वरविधित्वात्। "ऋवर्णश्र्यू-"॥४।४।५७॥ इति नेटि, "ऋल्व" ॥४।२।६८॥ इति ने, शीर्णः, २ वान् । शीर्णि.। शीर्त्वा । विशीर्य । शरि ३ ता, तुम्, तव्यम्, शरी ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ १४ ॥

पॄश् पालनपूरणयो.। "प्वादेर्ह्रस्व."॥४।२।१०५॥ मेघः सरांसि पृणाति, पृणीतः, पृणन्ति । क्ये, पूर्यते ॥ अद्य० ॥ अपारीत्, अपारिष्टाम् । अपारि, अपरिषाताम्; अपरीषाताम्, अपूर्षाताम् । ञिटि, अपारिषाताम् । पपार; 'ऋः शॄदॄप्र."॥४।४।२०॥ "स्कृच्छ्र-"॥४।३।८॥ इति गुणश्च, पप्रतुः, पपरतु, पप्रुः, पपरु., पपरिथ०; पप्रिम, पपरिम । पप्रे, पपरे । पूर्यात् । परिषीष्ट, पूर्षीष्ट, पारिषीष्ट । परिता २, परीता २; पारिता । परिष्यति, ते, परीष्यति, ते, पारिष्यते । पिपरिषति, पिपरीषति, पुपूर्षति । पोपूर्यते । पापरीति, पापर्त्ति, पापूर्त्तः, पापुरति, पापरीषि, पापर्षि, पापूर्थ., पापूर्थ, पापरीमि, पापर्मि, पापूर्व, पापूर्म । क्ये, पापूर्यते । पापूर्यात् । पापरीतु । अपाप., अपापरीत्, अपापूर्त्ताम्, अपापरुः, अपाप, अपापरी. । पारयति । अपीपरत् । अस्य पूरेश्च "णौ दान्त-"॥४।४।७८॥ इति क्ते वा निपातनात्, पूर्ण । पक्षे, पारित । पृणन् । पृणती । परिष्यन्, परीष्यन् । निपपृवान् । निपप्राणम् । पक्षे, पुपूर्वान्, द्विले कृते उरि, पपुराणम् । "ऋल्व-"॥४।२।६८॥ इत्यत्र वर्जनान्नत्वाभावे, पूर्त्तः, २ वान् । पूर्त्वा । प्रपूर्य । परि ३ ता, तुम्, तव्यम्; परी ३ ता, तुम्, तव्यम् । परणीयम् । शेष तॄवत्, नवरं कर्मकर्त्तरि अद्यतन्या, अतीर्ष्टस्थाने अपूर्ष्टेति रूप ज्ञेयम् ॥ १५ ॥

दॄश् विदारणे । भय इत्यन्ये । इन्द्रोऽद्रीन् वज्रेण दृणाति । विदीर्यते । अदारीत् । ददार । "ऋ शॄदॄप्र "॥४।४।२०॥ "स्कृ-"॥४।३।८॥ इति गुणश्च, दद्रतु; ददरतु, दद्रु, ददरु । दद्रे, ददरे । दीर्यात् । दरिता, दरीता, दारिता । दरिष्यति, ते, दरीष्यति, ते, दारिष्यते । विदारयति, अवदारयति । "स्मृदॄ-"॥४।१।६५॥ इति पूर्वस्य अत्वे, अददरत् । दीर्ण, २ वान् । दीर्णि । दारिता, दरीता । शेष सर्वं स्तॄवत् ॥ १६ ॥

जॄश् वयोहानौ । "प्वादेः-"॥४।२।१०५॥ ह्रस्वे, जृणाति । जीर्यते । जृणीयात् । जृणातु । अजृणात् । णौ, जारयति । अजीजरत् । अजारि । शेष सर्वं जॄपूच्चवत्, नवर क्त्वि "जॄव्रश्च-"॥४।४।४१॥ इतीटि, जरित्वा, जरीत्वा इति स्यात् ॥ १७ ॥

गॄश् शब्दे । गृणाति । गीर्यते । अगारीत् । अगारि । जगार, "स्कृ-"

॥४।३।८॥ इति गुणे; जगरतुः । जगरे । गीर्यात् । गरिता, गरीता, गारिता । जिगीर्षति, जिगरिषति, जिगरीषति । गीर्ण, २ वान् । गीर्णि. । शेष शृश्वत्, पर "न गृणाशुभरुचः"॥३।४।१३॥ इति निषेधात् न यङ्; गार्हित गृणाति ॥१८॥

इति प्वादिर्ल्वादिश्च ।

ज्ञांश् अवबोधने । अनिट् । "जा ज्ञा-"॥४।२।१०४॥ इति जादेशे; जानाति; "एषाम्-"॥४।२।९७॥ इतीत्वे, जानीत, जानन्ति, जानासि, जानीथ, जानीथ, जानामि, जानीवः, जानीम । फलवत्कर्त्तरि, "ज्ञोऽनुपसर्गात्"॥३।३।९६॥ इत्यात्मनेपदे, धर्म जानीते ।"पदान्तरगम्ये वा"॥३।३।९९॥ स्वा गा जानीते, जानाति वा । उपसर्गात्तु, "शेषात्-"॥३।३।१००॥ इति परस्मैपदे, प्रत्यभिजानाति, अनुजानाति शिष्यम्, अवजानासि माम् । "निह्नवे ज्ञ"॥३।३।६८॥ शतमपजानीते, अपह्नुत इत्यर्थः । सप्रतेरस्मृतौ, "समो ज्ञो-"॥२।२।५१॥ इति व्याप्ये वा तृतीयायाम्; मात्रा मातर वा सञ्जानीते, अवेक्षत इत्यर्थः । नित्य शब्द प्रतिजानीते, अभ्युपगच्छतीत्यर्थ । स्मृतौ तु, मातु सञ्जानाति, स्मरतीत्यर्थ । कर्मण्यसति, "ज्ञः"॥३।३।८२॥ इत्यात्मनेपदे, "अज्ञाने ज्ञ -"॥२।२।८०॥ इति करणे षष्ठ्याम्, सर्पिषो जानीते, नात्र सर्पिर्ज्ञेयत्वेन विवक्षित, किं तर्हि प्रवृत्तौ करणत्वेन, सर्पिषा करणेन भोक्तु प्रवर्त्तत इत्यर्थः । जानाते, जानते, जानीषे, जानाथे, जानीध्वे, जाने, जानी २ वहे, महे । क्ये, ज्ञायते । जानीयात् । जानीत । जानातु; जानीहि, जानानि । जानीताम् । अजानात्, अजानीताम्, अजानन्, अजा ६ ना, नीतम्, नीत, नाम्, नीव, नीम । अजानीत । अज्ञासीत्, अज्ञासिष्टाम्, अज्ञा ७ सिषुः, सी, सिष्टम्, सिष्ट, सिषम्, सिष्व, सिष्म । अज्ञास्त, अज्ञासाताम्, अज्ञासत, अज्ञास्था, अज्ञा ६ साथाम्, ध्वम्, द्ध्वम्, सि, स्वहि, स्महि । अज्ञायि, अज्ञासाताम्, अज्ञायिषाताम् । जज्ञौ, जज्ञतु, जज्ञु, "सृजिदृशि-"॥४।४।७८॥ इति वेटि, जज्ञिथ, जज्ञाथ, जज्ञथु, जज्ञ, जज्ञौ, जज्ञि २ व, म । जज्ञे, जज्ञाते । संयोगादेर्वाशिष्ये"॥४।३।९५॥ ज्ञेयात्, ज्ञायात् । ज्ञासीष्ट, ज्ञायिषीष्ट । ज्ञाता २, ज्ञायिता । ज्ञास्यति, ते, ज्ञायिष्यते । "अननो. सन"॥३।३।७०॥ इत्यात्मनेपदे

धर्मं जिज्ञासते; अवजिज्ञासते। अनोस्तु, पुत्रमनुजिज्ञासति पाठाय। जाज्ञायते। स्यादौ तु न जा, जाज्ञाति, जाज्ञेति, जाज्ञीत, जाज्ञति। एवं यङ्लुपि त्रैङ्वत्। शतरि तु यङ्लुपि, जाज्ञातीति वाक्ये 'जा ज्ञाजन' ॥४।२।१०४॥ इति जादेशे, "श्नश्चातः"॥४।२।९६॥ इत्याल्लुकि, जत्, अस्यार्थ जानन्निसर्थः। णौ, आदेशादागम इति न्यायात् प्राग् प्वागमे पश्चात् "मारणतोषण-"॥४।२।३०॥ इति ह्रस्वे, मारणे, सञ्ज्ञपयति पशुम्। तोषणे, विज्ञपयति राजानम्। ज्ञपयति गुरुम्। निशाने, प्रज्ञपयति शस्त्रम्। अन्यत्र, ज्ञापयति, आज्ञापयति। ङे, व्यजिज्ञपत्। ञिणम्परे तु वा दीर्घे व्यज्ञापि, व्यज्ञपि, आज्ञापि। ञिटि, व्यज्ञापिपाताम्, व्यज्ञपिपाताम्, आज्ञापिपाताम्, इटि तु, व्यज्ञपयिपाताम्, आज्ञापयिपाताम्। "णौ दान्त-"॥४।४।७४॥ इति क्ते वा निपातनात्, सञ्ज्ञप्त, विज्ञप्त, प्रज्ञप्तः, आज्ञप्त, पक्षे, "सेट्क्तयोः" ॥४।३।८४॥ इति णेर्लुकि, सञ्ज्ञपित, विज्ञपित, प्रज्ञपित। आज्ञापित अत्र मारणाद्यर्थाभावान्न ह्रस्व। तेर्ग्रहादिभ्य एवेति नियमान्नेटि, ज्ञप्ति। "इवृध" ॥४।४।४७॥ इति सनि वेटि, जिज्ञपयिषति। पक्षे, "ज्ञप्याप-"॥४।१।१६॥ इति ज्ञीप् नच द्वि, ज्ञीप्सति। "इवृध-"॥४।४।४७॥ इत्यत्र ज्ञपीति कृतह्रस्वस्योपादानात्, ज्ञापेर्जिज्ञापयिषतीत्येव भवति। "लघोर्यपि"॥४।३।८६॥ इति अयि, विज्ञपय्य, आज्ञाप्य। शेष णिजन्तज्ञाणुवत्। जानन्। जानती जानान। ज्ञायमानम्। ज्ञास्यन्। ज्ञास्यती। ज्ञास्यमान। जज्ञिवान् जज्ञानः। "ज्ञानेच्छा-"॥५।२।९२॥ इति सति क्ते, ज्ञात, २ वान्। ज्ञाति। ज्ञात्वा विज्ञाय। ज्ञा ३ ता, तुम्, तव्यम्। ज्ञेयम् ॥ १९ ॥

मन्थश् विलोडने। मथ्नाति, मथ्नीत, मथ्नन्ति। मथ्यते। हौ "व्यञ्जनाच्छनहेरान"॥३।४।८०॥ मथान॥ अद्य० ॥ अमन्थीत्, अमन्थिष्टाम्। अमन्थि, अमन्थिपाताम्। ममन्थ। 'इन्ध्यस-"॥४।३।२१॥ इति किस्वाभावे, ममन्थतु, ममन्थु ममन्थिथ। ममन्थे। मथ्यात। मन्थिषीष्ट। मन्थिता। मन्थिष्यति। मिमन्थिषति मामथ्यते। मामन्थीति। 'अघोषे प्रथमो-"॥१।३।५०॥ इति थस्ते, मामन्ति मन्थयति अममन्थत्। मथ्नन्। मथ्नती। मन्थिष्यन्। किस्वान्नलुकि एत्वम्

मेथिवान् । मथितः, २ वान् । 'ऋत्तृष-"॥४।३।२४॥ इति त्क्वो वा कित्त्वे; माथित्वा, मन्थित्वा । प्रमथ्य । मन्थि ३ ता, तुम्, तव्यम् । मन्थनीयम् । मन्थ्यम् ॥ २० ॥

ग्रन्थश् सन्दर्भे, बन्धने । ग्रथ्नाति । ग्रथ्यते । हौ, ग्रथान ॥ अद्य० ॥ अग्रन्थीत्, अग्रन्थिष्टाम् । अग्रन्थि, अग्रन्थिषाताम् । जग्रन्थ । "वा श्रन्थ-" ॥४।१।२७॥ इति वा एर्नलुक् च; ग्रेथतु , जग्रन्थतु , ग्रेथु , जग्रन्थु , "स्कसृ-" ॥४।४।८१॥ इतीटि, ग्रेथिथ, जग्रन्थिथ । ग्रेथे, जग्रन्थे । ग्रथ्यात् । ग्रन्थिषीष्ट । ग्रन्थिता । ग्रन्थिष्यति । कर्मकर्त्तरि, "एकधातौ-"॥३।४।८६॥ इति ञिक्यात्मनेपदेषु, "भूषार्थे"॥३।४।९३॥ इति क्यञ्ञोरभावे, ग्रथ्नीते माला स्वयमेव । अग्रन्थिष्ट माला स्वयमेव, जग्रन्थे वा । जिग्रन्थिषति । जाग्रथ्यते । जाग्र २ थीति, चि । ग्रन्थयति । अजग्रन्थत् । ग्रथ्नन् । ग्रथ्नती । ग्रन्थिष्यन् । ग्रन्थिष्यन्ती, ग्रन्थिष्यती । जग्रथ्वान्, ग्रेथिवान् । ग्रेथानम्, जग्रथानम् । ग्रथितः, २ वान् । "ऋत्तृष-"॥४।३।२४॥ इति त्क्वो वा कित्त्वे, ग्रन्थित्वा, ग्रथित्वा । प्रग्रथ्य । ग्रन्थि ३ ता, तुम्, तव्यम् । ग्रन्थनीयम् ॥ २१ ॥

मृदश् क्षोदे । मृद्नाति, मृद्नीत , मृद्नन्ति । क्ये, मृद्यते ॥ अद्य० ॥ अमर्दीत्, अमर्दिष्टाम् । अमर्दि, अमर्दिषाताम् । ममर्द, ममृदतुः, ममृदुः, ममर्दिथ, ममृदिम । ममृदे । मृद्यात् । मर्दिषीष्ट । मर्दिता । मर्दिष्यति । मिमर्दिषति । मरीमृद्यते । मरी, रि, र् ३ मृदीति, मरी, रि, र्, मर्त्ति । मर्दयति । अमीमृदत्, अममर्दत् । ममृद्वान् । ममृदानम् । मृदितः, २ वान् । "क्षुधक्लिश"॥४।३।३१॥ इति कित्त्वे, मृदित्वा । प्रमृद्य । मर्दि ३ ता, तुम्, तव्यम् । मर्दनीयः । मर्द्यम्, मृद्यम् ॥ २२ ॥

बन्धश् बन्धने । अनिट् । बध्नाति, उपनिबध्नाति, सम्बध्नाति । एव वि, अनु, अभि, प्रति, निपूर्वोऽपि । बध्यते । हौ, बधान । "व्यञ्जनानाम्"॥४।३। ४५॥ इति वृद्धौ, "गडदबादेः-"॥२।१।७७॥ इति बस्य भे, अभान्त्सीत् । "धुड्ह्रस्व-"॥४।३।७०॥ इति सिचूलुकि भलाभावे च, अबान्द्धाम्, अभान्त्सुः, अभान्त्सीः, अबान्द्धम्, अबान्द्ध, अभान्त्सम्, अभान्त्स्व, अभान्त्स्म । अब-

घुषेर्णिजन्तस्यानेकस्वरत्वादेव इट्प्रतिषेधाभावे सिद्धेऽपि, घुषेरविशब्दे इत्यत्र विशब्दप्रतिषेधाज्ज्ञाप्यते अनित्यश्चुरादिणिजिति; तेन "महीपालवच श्रुत्वा जुघुषु पुष्यमाणवाः" ॥ स्वाभिप्राय नानाशब्दैराविष्कृतवन्त इत्यर्थः इत्यपि सिद्धम्। "चुरादिभ्यो णिच्"॥३।४।१७॥ इत्यत्र बहुवचनमाकृतिगणार्थम्; तेन नवाहयतीत्यादि सिद्धम् । अत्र चुरादौ सर्वत्र सर्वविभक्तिषु सर्ववचनविस्तरो णिगन्तभूवदुदाहार्य ॥ १ ॥

पृण् पूरणे । पारयति । क्ये, पार्यते । अपीपरत् । अपारि, अपारिषाताम्, अपारयिषाताम् । पारया ३ चकार । पार्यात् । पारयिषीष्ट, पारिषीष्ट । पारयिता २, पारिता । पारयिष्यति, ते, पारिष्यते । सनि, पिपारयिषति । णिगि, पारयति । अपीपरत् । पारयन् । पारयिष्यन् । पारित , २ वान् । पारयि ४ ता, तुम्, तव्यम्, त्वा । प्रपार्य ॥ २ ॥

पचुण् विस्तारे । नेऽन्ते । प्रपञ्चयति । ङे, प्रापपञ्चत् । शेष चुरण्वत्॥३॥

पूजण् पूजायाम् । पूजयति, पूजयत , पूजयन्ति । पूज्यते । अपूपुजत् । अपूजि, अपूजिषाताम्, अपूजयिषाताम् । पूजयाञ्चकार ३ । पूज्यात् । पूजयिषीष्ट, पूजिषीष्ट। पूजयिता २, पूजिता । पूजयिष्यति, ते, पूजिष्यते । पुपूजयिषति । णिगि णिजन्तमदृशमेव रूप ज्ञेयम्। एवमग्रेऽपि सर्वत्र। पूजयन्। पूजयिष्यन् । पूजित , २ वान् । "ज्ञानेच्छा-"॥५।२।९२॥ इति सति क्ते, "क्तयोरसद-" ॥२।२।९१॥ इति सदर्थस्य वर्जनात्प्रतिषेधाभावे "कर्त्तरि" ॥२।२।८६॥ इति षष्ठ्याम्, राज्ञा पूजित', "ज्ञानेच्छा-" ॥५।२।९२॥ इति प्रतिषेधान्नात्र षष्ठीसमास । पूजयि ४ त्वा, तुम्, ता, तव्यम् । पूज्यम् ॥ ४ ॥

गजण् शब्दे । गाजयति । अय तडण्वत् ॥ ५ ॥

तिजण् निशाने । तेजयति, उत्तेजयति । अतीतिजत् । तेजयामास॥६॥

नटण् अवस्यन्दने, भ्रशे । "जासनाट-"॥२।२।१४॥ इति वा कर्मत्वे, "शेषे"॥२।२।८१॥ इति षष्ठ्याम्, चौरस्योन्नाटयति । शेष तडण्वत् ॥७॥

चुट, छुटण् छेदने । नेऽन्ते । चुण्टयति । अचुचुण्टत्॥ छोटयति। आछोटयति । आचुच्छुटत्। आच्छोटयामास ॥ ८ ॥ ९ ॥

कुट्टण् कुत्सने च; चाच्छेदने । कुट्टयति । अचुकुट्टत् । कुट्टयामास । कुट्टयिष्यति ॥ १० ॥

मुटण् सचूर्णने । मोटयति । मोट्यते । अमूमुटत् । मोटयामास ॥११॥

लुटण् स्तेये च, चादनादरे । लुण्टयति । क्ये, लुण्ट्यते । अत्र णिलुक्स्थानिलेनोपान्त्यत्वाभावान्नलुकोऽप्रसङ्गः । अलुलुण्टत् । लुलुण्टयिषति ॥१२॥

घट्टण् चलने । घट्टयति, सङ्घट्टयति । घट्टयते । अजघट्टत् । घट्टयामास । जिघट्टयिषति ॥ १३ ॥

स्फिटण् हिंसायाम् । स्फेटयति । स्फेट्यते । अपिस्फिटत् । स्फिटण् अनादरे इत्यन्ये ॥ १४ ॥

गुठुण् वेष्टने । नेऽन्ते । गुण्ठयति । गुण्ठ्यते । अजुगुण्ठत् । क्ते, अवगुण्ठित ॥ १५ ॥

लडण् उपसेवायाम् । लाडयति । डस्य लत्वे, उपलालयति । अलीलडत् ॥ १६ ॥

ओलड्डण् उत्क्षेपे। उदित्त्वान्ने, ओलण्डयति । ओलण्ड्यते । औलण्डत्; "स्वरादे:-"॥४।१।४॥ इति द्वितीयस्य द्वित्वम् । "सेट्क्तयोः"॥४।३।८४॥ इति णेर्लुकि, ओलण्डितः, २ वान् ॥ १७ ॥

पीडण् गहने, गहन बाधा । पीडयति, उत्पीडयति । डलयोरैक्ये, पीलयति, उत्पीलयति, उपपीडयति । क्ये, पीड्यते ॥ अद्य० ॥ "भ्राजभास-" ॥४।२।३६॥ इति वा ह्रस्वे, अपीपिडत्, अपिपीडत् । अपीडि, ञिटि, अपीडिपाताम्; इटि, अपीडयिषाताम् । पीडयाञ्चकार ३ । पीड्यात् । पीडिषीष्ट; पीडयिषीष्ट। पीडयिष्यति, ते, पीडिष्यते । सनि, पिपीडयिषति । पीडयन् । पीडयन्ती । पीडयिष्यन् । पीडयाञ्चकृवान् । पीडितः,२ वान् । पीडयित्वा । प्रपीड्य। पीडयि ३ ता, तुम्, तव्यम्। पीडनीयम् । पीड्यम् ॥ १८ ॥

तडण् आघाते । ताडयति । ताड्यते । अतीतडत् । अताडि, अताडिषाताम्, अताडयिषाताम् । ताडयाञ्चकार ३ । ताड्यात् ।ताडिषीष्ट, ताडयिषीष्ट । ताडयिष्यति, ते, ताडिष्यते । तिताडयिषति । ताडितः, २ वान् । ताडयित्वा । प्रताड्य । ताडयि ३ ता, तुम्, तव्यम्। ताड्य ॥ १९ ॥

उदितः पञ्च॥ खडुण् भेदे। खण्डयति ।अचखण्डत् । खण्डयिष्यति ॥२०॥

कडुण् खण्डने च; चाह्लेदे । कण्डयति तण्डुलान् । कण्ड्यते । अचकण्डत् ॥ २१ ॥

गुडुण् वेष्टने च, चाद्रक्षणे। गुण्डयति। अवगुण्ड्यते। अजुगुण्डत॥२२॥

मडुण् भूषायाम् । मण्डयति। मण्ड्यते । अममण्डत् । मण्डयाञ्चकार ३ । मण्डयिष्यति, ते, मण्डिष्यते । कर्मकर्त्तरि, "एकधातौ-"॥३।४।८६॥ इति ञिक्यात्मनेपदेषु प्राप्तेषु ण्यन्तत्वेऽपि भूषार्थत्वेन "भूषार्थे-"॥३।४।९३॥ इति ञिक्ययोर्निषेधात्, अममण्डत् कन्यां छात्रः ।अममण्डत। मण्डयिष्यते मण्डयते वा कन्या स्वयमेव। मिमण्डयिषति ॥ २३ ॥

पिडुण् सङ्घाते । पिण्डयति । पिण्ड्यते । अपिपिण्डत् ॥ २४ ॥

ईडण् स्तुतौ। ईडयति। ईड्यते। डे, ऐडिडत्। ईडयामास ३। ईडयिष्यति, ते, ईडिष्यते । ऐडयिष्यत्, ऐडिष्यत । ईडिडयिषति । ईडित', २ वान् । ईडयि ३ त्वा, ता, तुम् ॥ २५ ॥

चूर्णण् प्रेरणे, दलने । चूर्णयति । अचुचूर्णत् ॥ २६ ॥

श्रणण् दाने। श्राणयति, विश्राणयति । विश्राण्यते । अशिश्रणत्, अशश्राणत्, "भ्राजभास-"॥४।२।३६॥ इति वा ह्रस्वः । अश्राणि, अश्राणिषाताम्, अश्राणयिषाताम् । श्राणयाञ्चकार ३ । श्राण्यात् । श्राणयिषीष्ट, श्राणिषीष्ट । श्राणयिता २, श्राणिता । श्राणयिष्यति, ते, श्राणिष्यते । विशिश्राणयिषति । श्राणयन् । श्राणयिष्यन् । विश्राणित , २ वान् । श्राणयित्वा । विश्राण्य । श्राणयि ३ ता, तुम, तव्यम् ॥ २७ ॥

चितुण् स्मृत्याम् । नेऽन्ते। चिन्तयति । चिन्त्यते । अचिचिन्तत्। अचिन्ति, अचिन्तिषाताम्, अचिन्तयिषाताम् । चिन्तयाञ्चकार ३ । चिन्त्यात्। चिन्तयिषीष्ट, चिन्तिषीष्ट । चिन्तयिता २, चिन्तिता । चिन्तयिष्यति, ते, चिन्तिष्यते। चिचिन्तयिषति । चिन्तयन् । चिन्तयिष्यन्। चिन्तयाबभूवान ३। चिन्तित, २ वान् । चिन्तयित्वा । विचिन्त्य । चिन्तयि ३ ता, तुम्, तव्यम् । चिन्त्यम् ॥ २८ ॥

कृतण् सशब्दने; ख्यातौ। "कृतः कीर्त्तिः" ॥४।४।१२२॥ कीर्त्तयति; सङ्कीर्त्तयति, परिकीर्त्तयति, कीर्त्तयतः, कीर्त्तयन्ति । कीर्त्त्यते । कृत ऋदुपदेशो डे ऋकारश्रवणार्थः, तेन "ऋद्दवर्णस्य" ॥४।२।३७॥ इति कीर्त्यादेशापवादे ऋतो वा ऋति, अचीकृतत्, अचिकीर्त्तत् । चन्द्रमतेन णिजन्तस्य कर्त्तर्यात्मनेपदे, अचीकृतत, अचिकीर्त्तत० ३ । अचीकृते, अचिकीर्त्ते । अकीर्त्ति, अकीर्त्तिपाताम्, अकीर्त्तयिषाताम् । कीर्त्तयाञ्चकार ३ । कीर्त्त्यात् । कीर्त्तयिषीष्ट, कीर्त्तिषीष्ट । कीर्त्तयिता । कीर्त्तयिष्यति । चिकीर्त्तयिषति । कीर्त्तितः, २ वान् । कीर्त्तयि ४ त्वा, ता, तुम्, तव्यम् ॥ २९ ॥

पथुण् गतौ । ने, पन्थयति; परिपन्थयति । पन्थ्यते । पर्यपपन्थत् ॥३०॥

प्रथण् प्रख्याने । प्राथयति । प्राथ्यते । "स्मृदृत्वर-" ॥४।१।६५॥ इति पूर्वस्यात्वे, अपप्रथत् । अप्राथि । प्राथयाञ्चकार । शेष श्रणण्वत् ॥ ३१ ॥

छदण् संवरणे । छादयति गृह तृणैः । छाद्यते । अचिच्छदत् । अच्छादि । चिच्छादयिषति । "णौ दान्त" ॥४।४।७४॥ इति क्ते वा निपातनात्, छन्नः; छादितः । शेष श्रणण्वत् । अदन्तोऽप्ययमित्येके । छदयति ॥ ३२ ॥

चुदण् संचोदने, नोदने । चोदयति । "य एच-" ॥५।१।२८॥ इति ये, चोद्यम् ॥ ३३ ॥

छर्दण् वमने । छर्दयति । अचछर्दत् ॥ ३४ ॥

बन्ध, बधण् संयमने । बन्धयति ॥ बधण् ॥ बाधयति । डे, अबीबधत् ॥३५॥३६॥

यमण् परिवेषणे । यामयत्यतिथीन् । अयीयमत् । यामयामास । परिवेषणादन्यत्र तु, "यमोऽपरि-" ॥४।२।२९॥ इत्यत्र णिचि च इति ह्रस्वे, यमयति; नियमयति, संयमयति । अयीयमत् । ञिणम्परे तु वा दीर्घ, अयामि, अयमि । यमयामास ॥ ३७ ॥

यन्त्रुण् सङ्कोचने । उदित्त्वान्ने; यन्त्रयति, नियन्त्रयति । न्ययन्त्रत । न्ययन्त्रि । नियन्त्रयामास ॥ ३८ ॥

क्षलण् शौचे, शौचकर्मणि । क्षालयति, प्रक्षालयति । क्षाल्यते । अचिक्षलत् । अक्षालि । क्षालयामास । क्षालितम् । क्षालयित्वा । शेष श्रणण्वत् ॥३९॥

तुलण् उन्माने । तोलयति; चुरण्वत् । तुलयतीति तु तुलाशब्दाद् "णिज्बहुलम्-"॥३।४।४२॥ इति णिजि रूपम् ॥ ४० ॥

दुलण् उत्क्षेपे । दोलयति । शेषं चुरण्वत् । अन्दोलयतीति तु रूढे; यथा प्रेङ्खोलयति; वीजयति ॥ ४१ ॥

मूलण् रोहणे । मूलयति; उन्मूलयति । पूजण्वत् ॥ ४२ ॥

बुलण् निमज्जने । बोलयति । बोल्यते । अबूबुलत् । बोलितम् । बोलयि-३ त्वा, ता, तुम् ॥ ४३ ॥

पलण् रक्षणे । पालयति । प्रतिपर्यनुपूर्वोऽपि वाच्य । अपीपलत् । अयं तडण्वत् ॥ ४४ ॥

इलण् प्रेरणे । एलयति । "उपसर्गस्यानिणु-" ॥१।२।१९॥ इत्यवर्णलोपे, प्रेलयति, परेलयति । प्रेल्यते । ड ऐलिलत । प्रेलयामास ३ । प्रेलयिष्यति ॥४५॥

सांत्वण् सामप्रयोगे । सान्त्वयति । अससान्त्वत् । अपोपदेशात् "णिस्तो-रेव-"॥२।३।३७॥ इति षत्वाभावे, सिसान्त्वयिषति । षोपदेशोऽयमित्येके । सिषा-न्त्वयिषति ॥ ४६ ॥

पुसण् अभिमर्दने । पुसयति । क्ते, उत्पुसितम् ॥ ४७ ॥

जसण् हिंसायाम् । "जासनाट-"॥२।२।१४॥ इति कर्मणो वा कर्मत्वे, चौरस्य चौर वोज्जासयति ॥ ४८ ॥

भक्षण् अदने । भक्षयति । णिगि "भक्षेर्हिंसायाम्"॥२।२।६॥ इत्यणिक्कर्तु कर्मत्वे, भक्षयति गौर्यवान् । भक्षयति गा यवान् मैत्र, अत्र यवाना प्ररोहधर्म-त्वेन हिंसाऽस्त्येव । हिंसाया अन्यत्र, "गतिबोध-"॥२।२।५॥ इति प्राप्तमपि कर्मत्व न भवतीति "हेतुकर्तृ-"॥२।२।४४॥ इति तृतीयायाम्, भक्षयति पिण्डीं शिशुना मैत्र ॥ ४९ ॥

लक्षीण् दर्शनाङ्कनयो , अङ्कन चिह्नम् । फलवत्कर्त्र्यात्मनेपदे, लक्षयते । फलवतोऽन्यत्र, लक्षयति, उपलक्षयति । लक्ष्यते । अललक्षत् ॥ ५० ॥

इतोऽर्थविशेषे आलक्षिण ।

इत पर प्राय प्रागुक्ता अप्यर्थविशेषे ये लक्षिण् पर्यन्तास्चुरादयस्ते प्रस्तूयन्ते ॥

ज्ञाण् मारणादिनियोजनेषु। "मारणतोषण-"॥४।२।३०॥ इति ह्रस्वे; मारणे, सञ्ज्ञपयति पशुम् । तोषणे, विज्ञपयति गुरुम्, ज्ञपयति । निशाने, प्रज्ञपयति शस्त्रम् । नियोजने, आज्ञापयति भृत्यम्, अत्र मारणाद्यर्थाभावान्न ह्रस्वः । उक्तार्थेभ्योऽन्यत्र तु, क्र्यादिलाच्छूना, जानाति । क्ये, विज्ञप्यते, आज्ञाप्यते । व्याजिज्ञपत्; आजिज्ञपत्। व्यज्ञपि; व्यज्ञापि, अज्ञापि। इटि, व्यज्ञपयिषाताम्, आज्ञापयिषाताम्। ञिटि, व्यज्ञपिषाताम्, व्यज्ञापिषाताम्, आज्ञापिषाताम्। विज्ञपयाञ्चकार ३; आज्ञापयाञ्चकार ३। विज्ञप्यात्; आज्ञाप्यात्। ज्ञपयिषीष्ट, ज्ञापयिषीष्ट, ज्ञपिषीष्ट, ज्ञापिषीष्ट । ज्ञपयिता, ज्ञापयिता, ज्ञपिता, ज्ञापिता । विज्ञपयिष्यति, ते, आज्ञापयिष्यति, ते । ञिटि, विज्ञपिष्यते, आज्ञापिष्यते । "इवृध-"॥४।४।४७॥ इति वेटि, जिज्ञपयिषति। पक्षे, "ज्ञप्याप-"॥४।१।१६॥ इति ज्ञीपि, ज्ञीप्सति। ज्ञापेस्तु; जिज्ञापयिषति । "णौ दान्त"॥४।४।७४॥ इति वा निपातनात्, ज्ञप्तः, २ वान्; विज्ञप्तः,२ वान्, आज्ञप्तः, २ वान्, ज्ञपितः, २ वान्; विज्ञपितः,२ वान्, आज्ञापितः,२ वान्। विज्ञपय्य। आज्ञाप्य। विज्ञपयि ३ ता, तुम्, तव्यम्, आज्ञापयि ३ ता, तुम्, तव्यम्। सञ्ज्ञपयतीत्यत्र ज्ञाण्ज्ञाशोर्णिचि णिगि च रूपसाम्येऽप्यर्थभेदोऽस्ति, एकत्र स्वार्थोऽन्यत्र प्रयोक्तृव्यापार। ज्ञाण् हि प्रथममेव स्वार्थे मारणे वर्त्तते, अन्यस्तु प्रथम मरणे ततो मारणे इत्यर्थ । एव विज्ञपयतीत्यादावपि ॥ ५१ ॥

भूण् अवकल्कने, मिश्रीकरणे । दध्नौदन भावयति । अवकल्पन इत्यन्ये । भावयति साधु समयम् । क्ये, भाव्यते॥ अद्य० ॥ अबीभवत् । अय सर्वोऽपि णिगन्तभूवत् ॥ ५२ ॥

लिगुण् चित्रीकरणे । नेऽन्ते । लिङ्गयति शब्दम्। स्त्रीपुनपुंसकलिङ्गैश्चित्रीकरोतीत्यर्थः । उल्लिङ्गयति । उदलिलिङ्गत् ॥ ५३ ॥

चर्चण् अध्ययने । चर्चयति शास्त्रम् । अचचर्चत् । अन्यत्र चर्चृपरिभाषणे इति केचित् । चर्चति ॥ ५४ ॥

चट, स्फुटण् भेदने। चाटयति, उच्चाटयति। अय तडण्वत्। णिचोऽनित्यत्वाच्चटति दोलायाम्, उच्चटति चित्रम्, विचटति ॥ स्फोटयति । स्फोट्यते । अपुस्फुटत् । आस्फोटयाञ्चकार । अर्थान्तरे तु स्फुट् विशरणे। स्फोटति। स्फुटि विकसने । स्फोटते । स्फुटत् विकसने । स्फुटति ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

अन्यत्र, गुपौ रक्षणे । गोपायति॥ धूप॥ धूपयति । अन्यत्र, धूप सन्तापे । धूपायति ॥ कुप् ॥ कोपयति । अन्यत्र, कुपच् कोपे । कुप्यति ॥ द्रागुदितौ ॥ दशु॥ दशयति । अन्यत्र, दंशं दशने। दशति ॥ बृहु ॥ बृहयति; उपबृहयति । अन्यत्र, बृहु शब्दे च । बृहति । लोकृतर्कादयः स्वार्थे णिचमुत्पादयन्ति । भासार्थश्चेति पारायणम् । भासयति दिश ; दीपयति; इन्धयति; प्रकाशयति । गणान्तरपाठस्त्वेषामात्मनेपदादिकार्यार्थे. ॥७१॥७२॥७३॥७४॥७५॥७६॥७७॥७८॥ ७९॥८०॥८१॥८२॥८३॥८४॥८५॥

इति परस्मैपदिन ।

वचिण् प्रलम्भने, मिथ्याफलाख्याने । वञ्चयते । अववञ्चत । अन्यत्र, वञ्चू गतौ । वञ्चति । इदित्त्वादेव णिजन्तादात्मनेपदे सिद्धे, "प्रलम्भे गृधिवञ्च्योः" ॥३।३।८९॥ इति तद्विधान णिगन्तादफलवत्कर्त्रर्थम् ॥ ८६ ॥

विदिण् चेतनाख्याननिवासेषु। वेदयते सुखम्, चेतयत इत्यर्थ । आवेदयते धर्मम्, आख्यातीत्यर्थः । वेदयते गृहम्, निवास करोतीत्यर्थ । विवादेऽप्यन्ये । प्रवेदयते वादिना । अन्यत्र, विदक् ज्ञाने । वेत्ति । विदिच् सत्तायाम्। विद्यते । विद्लृती लाभे । विन्दति । विन्दते । विदिप् विचारणे । विन्ते ॥ ८७ ॥

मनिण् स्तम्भे, गर्वे । मानयते, विमानयते, अपमानयते । पक्षे, मनतीति चन्द्र. ॥ ८८ ॥

भालिण् आभण्डने, निरूपणे । भालयते, निभालयते, सभालयते । अन्यत्र, भलि परिभाषणहिंसादानेषु । भलते । बभले । भलिता ॥ ८९ ॥

कुत्सिण् अवक्षेपे । कुत्सयते । अचुकुत्सत ॥ ९० ॥

लक्षिण् आलोचने । लक्षयते। अन्यत्र, लक्षीण् दर्शनाङ्कनयोः। लक्षयति, ते । णिचोऽनित्यत्वात्, लक्षते ॥ ९१ ॥

इत्यर्थविशेषे चुरादय ।

तर्जिण् सतर्जने । तर्जयते । यत्तु लक्ष्ये, तर्जयति, भर्त्सयति, निशाम-

यति, भालयति; कुत्सयति; निवेदयतीत्यादिपरस्मैपदं दृश्यते, तद् भ्वादौ राजृग्, टुभ्राजीत्यत्रात्मनेपदस्यानित्यत्वज्ञापनात् सिद्धम् ॥ ९२ ॥

त्रुटिण् छेदने। त्रोटयते रज्जुम्। डान्तोऽयमित्येके। उत्त्रोडयते तृणम्। त्रुटत् छेदने। त्रुट्यति, त्रुटति ॥ ९३ ॥

चितिण् सवेदने। चेतयते। अचीचितत ॥ ९४ ॥

गन्धिण् अर्दने। गन्धयते ॥ ९५ ॥

शमिण् आलोचने। "यमो परिवेषणे-"॥४।२।२९॥ इत्यत्र णिचि चेति वचनात् यमोऽन्येषां णिचि न ह्रस्वः। शामयते; निशामयते। न्यशीशमत। न्यशामि। "णौ दान्त-"॥४।४।७४॥ इति क्ते वा निपातनात्, शान्तः; "सेट्क्तयो-"॥४।३।८४॥ इति णेर्लुकि, शामितः। शमूच् उपशमे। शाम्यति। णिगि, "शमोऽदर्शने" ॥४।२।२८॥ इति अदर्शने; शमयति रोगम् ॥ ९६ ॥

गूरिण् उद्यमे। गूरयते, उद्गूरयते खड्गम्, आगूरयते ॥ ९७ ॥

मन्त्रिण् गुप्तभाषणे। मन्त्रयते; आमन्त्रयते, निमन्त्रयते ॥ ९८ ॥

ललिण् ईप्सायाम्। लालयते ॥ ९९ ॥

दशिण् दशने। दशयते ॥ १०० ॥

भर्त्सिण् सतर्जने। भर्त्सयते। आत्मनेपदानित्यत्वे तु, भर्त्सयतीत्यपि। अबभर्त्सत ॥ १०१ ॥

इत्यात्मनेपदिनः।

इतोऽदन्ता ॥ अदन्तत्वे हि सुखयति, रचयति इत्यत्राल्लुकः स्थानित्वाद्गुणवृद्ध्यभावः। अररचत्। असुसुखत्, अत्र समानलोपित्वात्सन्वद्भावदीर्घयोरभावः। असुसूचत्; अत्रोपान्त्यह्रस्वाभावः। अङ्कादीनां तूक्तफलाभावेऽपि पूर्वाचार्यानुरोधेनादन्तेषु पाठः। णिजभावेऽनेकस्वरत्वात् यङ्निवृत्त्यर्थ इत्येके। द्रमिलास्त्वेवप्रकाराणामदन्तत्वविधानसामर्थ्यादल्लोपाभावं मन्यन्ते। ततश्च "ञ्णिति"॥४।३।५०॥ इति वृद्धौ प्वागमे च, दु खापयति; वण्टापयति, रहापयति, अर्थापयते, सत्त्रापयते, गर्वापयते इत्याद्युदाहरन्ति, ते हि "ञ्णिति"॥४।३।५०॥ इति वृद्धिं स्वरमात्रस्येच्छन्ति ॥ १०२ ॥

अङ्कण् लक्षणे । अङ्कयति । डे "स्वरादे-"॥४।१।४॥ इति केर्द्वित्वे, आञ्चिकत् । सनि, अञ्चिकयिषति । अकुङ् लक्षणे । अङ्कते ॥ १०३ ॥

सुख, दुःखण् तत्क्रियायाम्; सुखन दुःखन च, तत्क्रिया । सुखयति । असुसुखत् । दुःखयति । अदुदुःखत् ॥ १०४ ॥

रचण् प्रतियत्ने । रचयति, विरचयति । क्ये, रच्यते । अररचत्, अररचताम्, अररचन् । अरचि । ञिटि, अरचिषाताम् । इटि, अरचयिषाताम् । रचयाञ्चकार ३ ॥ भाक ॥ रचयाञ्चक्रे ३ । रच्यात् । रचिषीष्ट; रचयिषीष्ट । रचयिता २, रचिता । रचयिष्यति, ते, रचिष्यते । रिरचयिषति । रचयन् । रचयन्ती । रच्यमानम् । रचयिष्यन् । रचिष्यमाणम्, रचयिष्यमाणम् । रचयाञ्चकृवान्, बभूवान्, आसिवान् वा ॥ भाक ॥ रचयाञ्चक्राणम्, बभूवानम्, आसान वा । रचित, २ वान् । रचयित्वा । 'ल्घ्वर्थ्यपि"॥४।३।८६॥ इति णेरयि, विरचय्य । रचयि ३ ता, तुम्, तव्यम् । रचनीयम् । रच्यम् । एव सर्वेऽप्यदन्ताः॥१०५॥

सूचण् पैशुन्ये । सूचयति । सूच्यते । अपपाठाच्च प । असुसूचत । असूचि । सूचयाञ्चकार ३ । सुसूचयिषति । "अट्यर्ति-"॥३।४।१०॥ इति यङि, सोसूच्यते । अपोपदेशाच्च पत्वम् । एव सूत्रादीनामपि । ससूच्य । सूचयित्वा ॥ १०६ ॥

भाजण् पृथक्कर्मणि । भाजयति, विभाजयति, अवभाजयति । भाज्यते । अबभाजत् । अभाजि । भाजयामास । भाजितम् । भाजयि ३ ता, तुम्, त्वा । विभाज्य ॥ १०७ ॥

सभाजण् प्रीतिसेवनयोः । प्रीतिदर्शनयोरित्यन्ये । सभाजयति । क्ये, सभाज्यते । डे, अससभाजत् । असभाजि । सभाजयामास । सभाजयिष्यति ॥१०८॥

खोटण् क्षेपे । खोटयति । डे, अचुखोटत् । डान्तोऽयमिति देवनन्दी । खोडयति । दान्त इत्यन्ये । खोदयति ॥ १०९ ॥

दण्डण् दण्डनिपातने । दण्डयति । दण्डादेर्नाम्नो णिचि, दण्डयत्यादिसिद्धौ दण्डण् प्रभृतीना पाठो यथाविधान णिचं विनाऽपि प्रयोगार्थं । अत एवादन्तत्वस्याप्यनेकस्वरत्वेन परोक्षामादेशो यङ्निवृत्त्यादि च फलम् ॥ ११० ॥

वर्णण् वर्णक्रियाविस्तारगुणवचनेषु । वर्णक्रिया वर्णनम्, वर्णकरण वा । कथ वर्णयति कविः । सुवर्णं वर्णयति । विस्तारे वर्णनेयम् । गुणवचन स्तुति, शुक्लाशुक्तिर्वा । राजानमुपवर्णयति । डे, अववर्णत् ॥ १११ ॥

कर्णण् भेदे । कर्णयति, आकर्णयति । आचकर्णत् ॥ ११२ ॥

गणण् सख्याने । गणयति, अवगणयति; परिगणयति । गण्यते । डे, "ई च गण"॥४।१।६७॥ इति पूर्वस्याले, ईति च, अजगणत्, अजीगणत्। अगाणि। गणयित्वा । प्रगणय्य । शेष रचण्वत् । अदन्तत्व च सुखादीनां णिचूसन्नियोग एवान्ते वक्ष्यते, ततोऽनित्यत्वेन णिजभावे, जगणतु, जगणियेत्यत्रानेकस्वरत्वाभावादाम् न भवति ॥ ११३ ॥ ११४ ॥

गुण, केतण् आमन्त्रणे, आमन्त्रण गूढोक्तिः। गुणयति । अजुगुणत् । अगुणि । गुणयाञ्चकार ३ । गुण्यात् । गुणयिषीष्ट, गुणिषीष्ट । गुणयिष्यति, ते; गुणिष्यते । जुगुणयिषति । एव रचण्वत् ॥ केतयति, सङ्केतयति । डे, अचिकेतत् । सङ्केतित । सङ्केत्य । अय नि.स्रावणनिमन्त्रणयोरपीत्येके ॥ ११५ ॥

पतण् गतौ वा । वा शब्दो णिजदन्तत्वयोर्युगपद्विकल्पार्थः । पतयति । डे, अपपतत् । पक्षे, पतति । "व्यञ्जनादे.-"॥४।३।४७॥ इति वा वृद्धौ, अपातीत्, अपतीत् ॥ ११६ ॥

कथण् वाक्यप्रबन्धे । कथयति, सकथयति । क्ये, कथ्यते । डे, अचकथत् । कथ अचीकथदिति । ये गणयतेरन्येषामपि च पूर्वस्य यथादर्शनमीत्त्वमिच्छन्ति तन्मते भविष्यति, प्रकृत्यन्तरं वाऽन्वेष्यम् । अकथि, अकथिषाताम्, अकथयिषाताम् । कथयाञ्चकार ३ । कथयिष्यति, ते; कथिष्यते । कथयित्वा । "लघो.-"॥४।३।८६॥ इति णेरयि, सकथय्य । एव रचण्वत् ॥ ११७ ॥

छेदण् द्वैधीकरणे । छेदयति, विच्छेदयति। छेद्यते। अचिच्छेदत्। अच्छेदि, अच्छेदिषाताम्, अच्छेदयिषाताम् । छेदयाञ्चकार। छेदयिष्यति, ते, छेदिष्यते । चिच्छेदयिषति । छेदितम्। छेदयित्वा । विच्छेद्य ॥ ११८ ॥

रूपण् रूपक्रियायाम्, रूपक्रिया राजमुद्रादिरूपस्य करणम् । रूपयति ।

रूपदर्शन वा रूपक्रिया । निरूपयति, प्ररूपयति । निरूप्यते । प्रारूपत् । प्रारूपि । प्ररूपयामास ३ । प्ररूपितः । प्ररूप्य ॥ ११९ ॥

क्षपण् प्रेरणे । क्षपयति । क्षप्यते । अचक्षपत् । अक्षपि, अक्षपिषाताम्; अक्षपयिषाताम् । क्षपयामास । क्षप्यात् । क्षपयिष्यति, ते; क्षपिष्यते । चिक्षपयिषति । क्षपितः । क्षपयित्वा ॥ १२० ॥

व्ययण् वित्तसमुत्सर्गे; त्यागे । व्यययति । व्यय्यते । ङे, अवव्ययत् । अव्ययि, अव्ययिषाताम्, अव्यययिषाताम् । व्यययामास । विव्यययिषति ॥१२१॥

सूत्रण् विमोचने; विमोचन मोचनाभावो ग्रन्थनमिति यावत् । सूत्रयति । सूत्र्यते । ङे, असुसूत्रत् । असूत्रि । सुसूत्रयिषति । "अट्यर्त्ति-"॥३।४।१०॥ इति यङि, सोसूत्र्यते ॥ १२२ ॥

मूत्रण् प्रस्रवणे । मूत्रयति । अमुमूत्रत् । "अट्यर्त्ति-"॥३।४।१०॥ इति यङि, मोमूत्र्यते ॥ १२३ ॥

पार, तीरण् कर्मसमाप्तौ । पारयति । पार्य्यते । अपपारत् । अपारि । पिपारयिषति । पारितम् ॥ तीरयति । तीर्य्यते । अतितीरत् ॥ १२४ ॥ १२५ ॥

चित्रण् चित्रक्रियाकदाचित्दृष्ट्योः । चित्रयति, आलेख्य करोति, कदाचित्पश्यति चेत्यर्थः । वैचित्र्यकरणार्थोऽय, न चित्रक्रियार्थ इत्यन्ये । चित्रयति; वैचित्र्य सम्पादयतीत्यर्थः । अचिचित्रत् । चित्रितम् ॥ १२६ ॥

छिद्रण् भेदे । छिद्रयति । ङे, अचिच्छिद्रत् ॥ १२७ ॥

मिश्रण् सपर्चने, श्लेषे । मिश्रयति । ङे, अमिमिश्रत्, अमिश्रि । मिश्रयाञ्चकार ३। मिमिश्रयिषति ॥ १२८ ॥

कलण् सङ्ख्यानगत्योः । कलयति, सङ्कलयति, आकलयति । कल्यते । ङे, अचकलत् । रचण्वत् ॥ १२९॥

शीलण् उपधारणे, अभ्यासे, परिचये वा । शीलयति, परिशीलयति । ङे, अशिशीलत् । शील समाधौ । शीलति । णिगि ङे, अशीशिलत् ॥ १३० ॥

गवेषण् मार्गणे । गवेषयति । गवेष्यते । ङे, अजगवेषत् । अगवेषि, अग-

वेपिपाताम्, अगवेपयिपाताम् । गवेपयाञ्चकार । गवेपितः । गवेपयित्वा । गवेपणम् ॥ १३१ ॥

मृषण् क्षान्तौ, तितिक्षायाम् । मृषयति । णिचोऽनित्यत्वे, मृषति । क्ये, मृष्यते । ङे, अममृषत् । अमृषि, अमृषयिपाताम्, अमृषिपाताम् । मृषयाञ्चकार । मृषयिष्यति । मिमृषयिषति । मृषितः । मृषयिता । मृषयित्वा॥१३२॥

रसण् आस्वादनस्नेहनयोः । रसयति । अररसत् । रस शब्दे । रसति । णिगि, रासयति । अरीरसत् ॥ १३३ ॥

महण् पूजायाम् । महयति । ङे, अममहत् । अमहि ॥ १३४ ॥

रहुण् गतौ । नेऽन्ते । रहयति । अदन्तत्वबलात् "अतः"॥४।३।८२॥ इति लुक् बाधित्वाऽनुपान्त्यस्याप्यतो "ञ्णिति"॥४।३।५०॥ इति वृद्धौ, "अर्त्तिरी-"॥४।२।२१॥ इति पौ, रहापयति । ङे, अररहत् ॥ १३५ ॥

स्पृहण् ईप्सायाम् । "स्पृहेर्व्याप्यं वा"॥२।२।२६॥ इति व्याप्यस्य वा सम्प्रदानत्वे, पुष्पेभ्यः पुष्पाणि वा स्पृहयति । क्ये, स्पृह्यते । स्पृहयेत् । स्पृहयतु । अस्पृहयत् ॥ अद्य० ॥ अपस्पृहत् । अस्पृहि, अस्पृहिपाताम्, अस्पृहयिपाताम् । स्पृहयाञ्चकार ३ ॥ भाक ॥ स्पृहया ३ चक्रे, बभूवे, आहे । स्पृह्यात् । स्पृहिषीष्ट, स्पृहयिषीष्ट । स्पृहयिता, २ स्पृहिता । स्पृहयिष्यति, ते, स्पृहिष्यते । पिस्पृहयिषति । अकर्मकत्वाद् "गत्यर्थ"॥५।१।११॥ इति कर्त्तरि क्ते, पुष्पेभ्यः स्पृहितो मैत्रः । पक्षे, पुष्पाणि स्पृहयति । कर्मणि क्ते, पुष्पाणि स्पृहितानि मैत्रेण । स्पृहयि ४ त्वा, ता, तुम्, तव्यम् । क्त्वो यपि, सस्पृहय्य । स्पृहणीयम् । स्पृह्यम् । "शीङ्श्रद्धा-"॥५।२।३७॥ इत्यालौ, "आमन्त-"॥४।३।८५॥ इति णेरयि, स्पृहाशीलः स्पृहयालुः॥१३६॥

रूक्षण् पारुष्ये । रूक्षयति, विरूक्षयति । ङे, अरुरूक्षत् । यपि, विरूक्ष्य । रूक्षितम् । णिजभावेऽप्यदन्तत्वार्थोऽस्य पाठः, तेनानेकस्वरत्वात् यङ् न भवति । एवं गर्विप्रभृतीनामपि ॥ १३७ ॥

इति परस्मैपदिनः ।

मृगणि अन्वेषणे । मृगयते । क्ये. मृग्यते । ङे, अममृगत, अममृगेताम् ॥ भाऊ ॥ 'अमृगि, अमृगिषाताम्. अमृगयिषाताम । मृगयाञ्चक्रे। मृगयिष्यते। मिमृगयिषते। मृगयमाणः । मृग्यमाणम् । मृगयिष्यमाण । मृगया ३ चक्राण, बभूवान, आसानो वा। मृगितः । मृगयि ४ त्वा, ता, तुम. तव्यम्। क्लो यपि, विमृगय्य ॥ १३८ ॥

अर्थणि उपयाचने । अर्थयते; प्रार्थयते । पूर्वाचार्यानुरोधाद्दन्तेष्वस्य पाठ. । एवं गर्वेरपि । केचिददन्तपाठबलादनोलुकं बाधित्वाऽनुपान्त्यस्यापि "णिणिति"॥४।३।५०॥ इति वृद्धो, "अर्त्तिरी"॥४।२।२१॥ इति पौ, अर्थापयते; गर्वापयते इत्याहु । क्ये, अर्थ्यत । ङे, आर्तिथत । आर्थि, आर्थिषाताम; आर्थयिषाताम्। अर्थयाञ्चक्रे ३ । अर्थयिष्यते । अर्तिथयिषते । अर्थित' । अर्थयित्वा । प्रार्थ्य । अर्थयि ३ ता, तुम, तव्यम् ॥ १३९ ॥

सङ्ग्रामणि युद्धे। सङ्ग्रामयते गर.। क्ये, सङ्ग्राम्यते ।असङ्ग्रामयत । ङे, अससङ्ग्रामत । अपपाठात्र प । सिसङ्ग्रामयिषते। क्त्वि, सङ्ग्रामयित्वा। सङ्ग्रामित । अथ परस्मैपदीत्येके । सङ्ग्रामयति ॥१४० ॥

गर्वाणि माने। गर्वयते। गर्व्यते। ङे, अजगर्वत। गर्व दर्पे। गर्वति॥१४१॥

गृहणि गृहणे । गृहयते । क्ये, गृह्यते। ङे, अजगृहत। यपि, सगृहय्य। क्ते, गृहितम् । गृहयालु । शेष मृगणवत् । अदन्तत्व च सुखादीनां णिचसनियोग एव द्रष्टव्यम्। ततोऽनित्यत्वेन णिजभावे, जागणतुग्रसादि सिद्धम्॥१४२॥

इत्यदन्ता समाप्ता ।

अथ युजादि ।

युजण् सम्पर्चने । 'युजादे -"॥३।४।१८॥ इति वा णिचि, योजयति । पक्षे शव्, योजति । क्ये, योज्यते, युज्यते ॥ अद्य० ॥ ङे, उपान्त्यह्रस्वे, अयूयुजत । अयोजीत, अयोजिष्टाम, अयोजिषु ।अयोजि । इटि, अयोजयिषाताम। ञिटि, णिजभावे इटि च, अयोजिषाताम, अयोजयिषत, अयोजिषत। योजयाञ्चकार । युयोज, युयुजतु, युयुजु, युयोजिथ०। योज्यात्, युज्यात्।

योजयिषीष्ट, योजिषीष्ट । योजयिता, योजिता । योजयिष्यति, ते, योजिष्यति, ते । युयोजयिषति, "वौ व्यञ्जन-"॥४।३।२५॥ इति क्त्वासनोर्वा कित्त्वे, युयोजिषति; युयुजिषति; णिजभावे यङ् भवति, योयुज्यते । योयुजीति, योयोक्ति, योयुक्त., योयुजति । णिगि, योजयति । अयूयुजत् । योजयन्; योजन् । योज्यमानम्; युज्यमानम् । योजयिष्यन्, योजिष्यन् । योजयाञ्चकृवान्; युयुज्वान् । प्रयोजितः, २ वान्, प्रयुजितः, २ वान् । योजयित्वा, योजित्वा, युजित्वा । प्रयोज्य, प्रयुज्य । योजयिता; योजिता ३ । योजनीयम् । योज्यम् । युजिंच् समाधौ । युज्यते । युजूंपी योगे । युनक्ति । युङ्क्ते । इह युजादीना नियतो णिजविकल्पः, चुरादीना तु णिजानित्य इति ॥ १४३ ॥

लीण् द्रवीकरणे । "लियो नोऽन्तः-"॥४।२।१५॥ इति नेऽन्ते, घृत विलीनयति । पक्षे, "नामिन-"॥४।३।५१॥ इति वृद्धौ, विलाययति । "लीङ्लिनोर्वा" ॥४।२।९॥ इति वाऽऽत्वमस्यापीत्येके, तन्मते "लो लः"॥४।२।१६॥ इति वा लेऽन्ते, घृत विलालयति; विलापयति । "लीङ्लिनोर्वा"॥४।२।९॥ इत्यात्मनेपदमात्व चास्यापि णिच्यपीत्येके । कस्त्वामुल्लापयते, आलापयते । णिजभावे, विलयते । क्ये, विलीन्यते, विलाय्यते । अन्यमते, विलाल्यते, विलाप्यते; विलीयते । व्यलीलिनत्, व्यलीलयत्; व्यलीललत्, व्यलीलपत् । व्यलायीत् । व्यलीनि, व्यलायि । व्यलालि, व्यलापि, व्यलायि । इटि, व्यलीनयिषाताम्; व्यलाययिषाताम्; व्यलालयिषाताम्; व्यलापयिषाताम्, व्यलयिषाताम्; ञिटि णेर्लुकि, व्यलीनिषातामित्यादि । व्यलायिषाताम् । विलीनयाञ्चकारेत्यादि । विलिलाय, विलिल्यतु०। विलिलीनयिषति, विलिलाययिषति०। विलिलयिषति । अणिचि यङि, विलेलीयते । विलेलयीति; विलेलेति, विलीनित, विलायितः; विलयितः । विलीन्य, विलाय्य, विलीय । विलीनयिता, विलायिता, विलयिता । लीङ्च् श्लेषणे । लीयते । लींश् श्लेषणे । लिनाति ॥ १४४ ॥

प्रीगण् तर्पणे । गित्त्वं णिजभावे उभयपदार्थम् । णिचि परस्मैपदे; "धूग्प्रीगो-"॥४।२।१८॥ इति नेऽन्ते, प्रीणयति । क्र्यादेरेव नमिच्छन्ति, तन्मते "नामिन-"॥४।३।५१॥ इति वृद्धौ, प्राययति । पक्षे, प्रयति, प्रयते । क्ये,

प्रीण्यते; प्राय्यते; प्रीयते । ङे, अपिप्रिणत्, अपिप्रियत् । अप्रायीत् । शेषं क्षीण्वत् ॥ १४५ ॥

धूगुण् कम्पने । "धूग्प्रीगो:-"॥४।२।१८॥ इति ने, धूनयति । नं नेच्छन्त्ये के । धावयति । पक्षे, गित्त्वादुभयपदे; धवति, धवते । शेषमशिति णिजभावे धूग्ट्वत् ॥ १४६ ॥

वृगुण् आवरणे । वारयति, निवारयति; आवारयति । पक्षे गित्त्वादुभयपदे, वरति; वरते । शेषमशिति णिजभावे वृग्ट्वत् ॥ १४७ ॥

जॄण् वयोहानौ । जारयति । णिजभावे जॄष्च्वत् ॥ १४८ ॥

मार्गण् अन्वेषणे । मार्गयति । मार्गति; विमार्गति । मार्ग्यते । अमार्गीत् । ममार्ग । ममार्गे । मार्गिष्यति । मिमार्गयिषति; मिमार्गिषति । णिजभावे यङ्; मामार्ग्यते ॥ १४९ ॥

पृचण् सपर्चने । सपर्चयति । सपर्चति । यङि, परीपृच्यते ॥ १५० ॥

रिचण् वियोजने च । चात्सपर्चने । रेचयति, विरेचयति । रेचति । व्यरीरिचत् । व्यरेचीत् ॥ १५१ ॥

वचण् भाषणे । सन्देशन इत्येके । वाचयति । वचति । क्ये, वाच्यते, वच्यते । "यजादि-"॥४।१।७९॥ इत्यत्रास्याग्रहणान्न य्वृत् । अवीवचत्; अवीवचाम । अवाचि, अवाचयिषाताम्, अवाचिषाताम् । पक्षे, अवाचीत्, अवचीत्, अवाचिष्टाम्, अवचिष्टाम्, अवाचिषु, अवचिषुः, अवाचिष्म, अवचिष्म । अवाचि, अवचिषाताम्, अवचिषत । वाचयाञ्चकार । वाचयाञ्चक्रे । पक्षे, ववाच, ववचतु; ववचिथ । ववचे । वाच्यात्, वच्यात् । वाचयिषीष्ट, वाचिषीष्ट, वचिषीष्ट । वाचयिता, वचिता । वाचयिष्यति, ते, वचिष्यति, ते । विवाचयिषति, विवचिषति । यङि, वावच्यते । वावचीति, वाव ३ क्ति, क्त, चति । वाचितम्, वचितम् । वाचयित्वा, वचित्वा ॥ १५२ ॥

अर्चिण् पूजायाम् । अर्चयति । इदित्त्वादात्मनेपदे, अर्चते ॥ अद्य० ॥ आर्चिचत् । आर्चिष्ट । आर्चि, आर्चयिषाताम्, आर्चिषाताम् । अर्चयाञ्चकार । आनर्चे । अर्चयिष्यति, अर्चिष्यते । अर्चिचयिषति; अर्चिचिषते । अर्चितः ।

अर्चयि ४ त्वा, ता, तुम्, तव्यम्; अर्चि ४ त्वा, ता, तुम्, तव्यम् ॥१५३॥

वृजैण् वर्जने । वर्जयति; परिवर्जयति, आवर्जयति । वर्जति । वर्ज्यते; वृज्यते । अववर्जत् । अवीवृजत् । अवर्जीत्, अवर्जिष्टाम् । अवर्जि, अवर्जयिपाताम्, अवर्जिपाताम् । वर्जयाञ्चकार । ववर्ज, ववृजतु', ववर्जिथ, ववृजिम । ववृजे । वर्ज्यात्, वृज्यात् । वर्जयिष्यति, वर्जिष्यति । विवर्जयिषति, विवर्जिषति । वरीवृज्यते । वरि, री, र्, ३ वर्क्ति, वरि, री, र्, ३ वृजीति । वर्जितम्; वृजितम् । वर्जयित्वा, वर्जित्वा ॥ १५४ ॥

मृजौण् शुद्धौ । "मृजोऽस्य-" ॥४।३।४२॥ इति वृद्धौ, मार्जयति, परिमार्जयति । पक्षे शवि, मार्जति । मार्ज्यते । अममार्जत् । अमीमृजत् । पक्षे औदित्त्वाद्वेटि, अमार्जीत् । अमार्क्षीत् । णिचि शेपं चुरण्वत् । णिजभावे, मृजौवत् ॥ १५५ ॥

कठुण् शोके । नेऽन्ते । कण्ठयति; उत्कण्ठयति । उत्कण्ठति प्रियाम् । उदचकण्ठत् । उदकण्ठीत् । कठुङ् शोके । कण्ठते, उत्कण्ठते ॥ १५६ ॥

ग्रन्थण् सन्दर्भे, बन्धने । ग्रन्थयति । ग्रन्थते । शेप ग्रन्थशूवत् ॥१५७॥

अर्दिण् हिंसायाम् । अर्दयति । णिजभावे इदित्त्वादात्मनेपदे, अर्दते । ङे, आर्दिदत् । आर्दिष्ट । परस्मैपदयमित्येके । अर्दति । आर्दीत् ॥ १५८ ॥

वदिण् भापणे । सदेशन इत्यन्ये । वादयति, सवादयति । पक्षे इदित्त्वादात्मनेपदे, वदते । क्ये, वद्यते । अस्य यजादित्वाभावान्न वृत ॥१५९॥

छदण् अपवारणे । छादयति । छदति । प्रच्छादयति । प्रच्छदति शय्याम् । उच्छादयति । उच्छदति ॥ १६० ॥

आङ. सदण् गतौ । आङ परः सद् गतावर्थे युजादि' । आसादयति । आसीदति । आसदतीत्येके । आङोऽन्यत्र, सीदति । गतेरन्यत्रासीदति ॥१६१॥

मानण् पूजायाम् । मानयति । मानति ॥ १६२ ॥

तपिण् दाहे । तापयति । इदित्वादात्मनेपदे, तपते ॥ १६३ ॥

तृपण् प्रीणने । सदीपन इत्येके । तर्पयति । तर्पति । क्ते, तर्पितम्, तृपितम् ॥ १६४ ॥

आप्लृण् लम्भने, प्राप्तौ । आपयति, प्रापयति । आपति । आपिपत् । लृदित्त्वादङि; आपत् । आपयिष्यति; आपिष्यति । क्ते, आपितम् । "व्याप्तो." ॥४।३।८७॥ इति यपि णेर्वाऽय् अस्यापीत्येके, प्रापय्य, प्राप्य ॥ १६५ ॥

ईरण् क्षेपे, प्रेरणे । गतावित्येके । ईरयति, प्रेरयति । ईरति । ऐरिरत् । ऐरीत् । ईरयिष्यति, ईरिष्यति ॥ १६६ ॥

मृषिण् तितिक्षायाम् । मर्षयति । पक्षे इदित्त्वादात्मनेपदे, मर्षते । अमीमृषत्; अममर्षत् । अमर्षिष्ट । अमर्षि, अमर्षयिषाताम्, अमर्षिषाताम् । मर्षयामास । ममृषे । मर्षयिष्यति, मर्षिष्यते । मिमर्षयिषति, मिमर्षिषते । मरीमृष्यते । अर्चि, अर्दि, तर्पि, वर्दि, मृषय' परस्मैपदिन इति भीमसेनीया ॥१६७॥

शिषण् असर्वोपयोगे, अनुपयुक्तत्वे । शेषयति, शेषति ॥ १६८ ॥

विपूर्वोऽतिशये, उत्कर्षे । शिषिरतिशये युजादिः । विशेषयति । विशेष्यते । व्यशीशिषत् । विशेषयामास । क्ते, विशेषितः । पक्षे, विशेषति । क्ये, विशिष्यते । सिचि, व्यशेषीत् । विशिशेष । विशिशिषे । विशेषिष्यति । विशिषित. । विशिष्य ॥ १६९ ॥

धृषण् प्रसहने; अभिभवे । धर्षयति । धर्षति । अदीधृषत्; अदधर्षत् । अधर्षीत् । "न डीङ्-"॥४।३।२७॥ इति सेट्क्तयोः कित्त्वाभावे, धर्षित, २ वान् । यपि, प्रधृष्यम् । धर्षित्वा ॥ १७० ॥

हिसुण् हिंसायाम् । हिंसयति । हिंसति ॥ १७१ ॥

गर्हण् विनिन्दने । गर्हयति । गर्हति ॥ १७२ ॥

षहण् मर्षणे । साहयति । सहति भार धौरेय ॥ १७३ ॥

"बहुलमेतन्निदर्शनम्" । यदेतद्भ्वत्यादिधातुपरिगणन तद्बाहुल्येन निदर्शनत्वेन ज्ञेयम् ॥ तेनात्रापठिता अपि क्षविप्रभृतयो लौकिका., स्तम्भूप्रभृतय, सौत्राश्चुलुम्पादयश्च वाक्यकरणीया धातव उदाहार्या. ॥ विक्षवन्ते दिवि ग्रहा; विच्छायीभवन्तीत्यर्थ । उपक्षपयति प्रावृट्, आसन्नीभवतीत्यर्थ । उत्तम्नाति, निरकुम्नाति ।

निधान दोलयन्नेष प्रेङ्खोलयति मे मन ।
पवनो वीजयन्नाशा ममाशामुच्चुलुम्पति ॥ १ ॥

तावत्खरः प्रखरमुच्छलयाञ्चकार । यद्वा । भूवादिगणाष्टकोक्ताः स्वार्थे णिजन्ता अपि बहुलं भवन्ति । चुरादिपाठस्तु निदर्शनार्थः ॥ यदाहु ॥ "निवृत्तप्रेषणाद्धातोः प्राकृतेऽर्थे णिजिष्यते"। रामो राज्यमकारयद्, अकरोदित्यर्थः। रञ्जयति वस्त्रम्; रजतीत्यर्थः । भेदयति भूलान्, भिनत्तीत्यर्थः । तापयति, वाचयति, वाहयति, घातयति, तपति, वक्ति, वहति, हन्तीत्यर्थः । प्रयोज्यव्यापारेऽपि प्रयोक्तृव्यापारानुप्रवेशो णिगं विनाऽपि बुद्ध्यारोपाद्बहुलं भवति । जजान गर्भं मघवा; इन्द्रोऽजीजनदित्यर्थः । एकं द्वादशधा जज्ञे; जनितमित्यर्थः । षड्भिर्हलैः कृषति, कर्षयतीत्यर्थः ।

वान्ति पर्णशुषो वाता वान्ति पर्णमुचोऽपरे ।
वान्ति पर्णरुहोऽप्यन्ये ततो देवः प्रवर्षति ॥ १ ॥

अथवा णिज्बहुलमित्येव सिद्धे सूत्रमूत्रच्छिद्रान्धादय उदाहरणार्थाः, तेनादन्तेष्वनुक्ता अपि बहुलं द्रष्टव्यास्तेन, स्कन्ध समाहारे । स्कन्धयति । ऊष च्छुरणे । ऊषयति । स्फुट प्रकटभावे । स्फुटयति । वस निवासे । वसयतीत्यादयोऽपि भवन्ति । तथा । तडित् खचयतीवाशाः । पांशुर्दिशां मुखमतुच्छयदुत्थितोऽद्रेः ॥ ओजयत्योजः ॥१७४॥

विस्मृत्याऽवज्ञया वाऽपि भूवादिषु नवस्वपि ।
धातवो नोचिरे येऽत्र ज्ञेयाः पारायणात्तु ते ॥ १ ॥

इति तपाचार्यश्रीदेवसुन्दरसूरिशिष्यश्रीगुणरत्नसूरिविरचिते क्रियारत्नसमुच्चये चुरादिगणः ।

एवमुक्ता नवादिभवा गणजा धातवः ।

अथ सौत्रा उच्यन्ते केचन ।

"धातोः कण्ड्वादेर्यक्"॥३।४।८॥ द्विविधाः कण्ड्वादयः, धातवो नामानि च । कण्ड्वादिभ्यो धातुभ्यः स्वार्थे यक् स्यात् । कण्डूग् गात्रविकर्षणे । कण्डूयति, कण्डूयते । महीङ् वृद्धौ पूजायाञ्च । महीयते । हृणीङ् रोषलज्जयोः । हृणीयते । मन्तु रोषवैमनस्ययोः । मन्तूयति । वल्गु माधुर्यपूजयोः । वल्गूयति । असु मानसोपतापे । अ-

सूयति । अन्ये तु, असूट् दोषाविष्कृतौ रोगे । असूयते इत्याहुः ॥ वेट्, लाट्, वेट्, लाट् एते धौर्त्ये, पूर्वभावे, स्वप्ने च । आद्ययोर्डे आत्मनेपदार्थः । लिट् अल्पार्थे कुत्सायां च । लिट्यति । लोट् दीप्तौ । उरस् ऐश्वर्ये । उरस्यति । इरस्, इरज् ईर्ष्यार्थौ । तिरस् प्रसिद्धार्थे । दुवस् परितापपरिचरणयोः । भिषज् चिकित्सायाम् । भिषज्यति । भिष्णज् उपसेवायाम् । एला, केला, खेला, विलासार्थाः । केलायति । मेधा आशुग्रहणे । मगध परिवेष्टने । मगध्यति । "अतः"॥४।३।८२॥ इत्यल्लुक् । इषुध् शरधौ रणे । कुरुर क्षेपे । सुख, दुःख, तत्क्रियायाम् । सुख्यति; दुःख्यति । तरण प्रसिद्धार्थे । गद्गद वाक्यस्खलने । गद्गद्यति । गद्गदड् इत्येके । गद्गद्यते । भरण गतौ । तुरण त्वरायाम् । पुरण गतौ । भुरण धारणपोषणयुद्धेषु । भुरण्यति । चुरण मतिचौर्ययोः । भरण प्रसिद्धार्थे । भरण्यति । तन्तस, पम्पस दुःखार्थौ । अरर आराकर्मणि । समर युद्धे । समर्यति । सपर पूजायाम् । सपर्यति । अनुक्तार्थत्वात् शेषा नोक्ताः ॥ क्ये, कण्डूय्यते ॥ अद्य० ॥ अकण्डूयीत् । अकण्डूयिष्ट । "अतः"॥४।३।८२॥ इत्यल्लुकि, "योऽशिति"॥४।३।८०॥ इति यलुकि, अभिषजीत् । अकण्डूयि । अभिषजि । अत्राल्लुकः स्थानित्वान्न वृद्धिः । कण्डूयाञ्चकार, चक्रे वा । भिषजाञ्चकार । कण्डूयिता । भिषजिता । "क्यो वा"॥४।३।८१॥ इत्यत्र यकोऽपि लुगित्यन्ये । भिषजिता, भिषज्यिता । "कण्ड्वादेस्तृतीयः"॥४।१।९॥ इति तृतीयस्य द्वित्वे, कण्डूयियिषति, ते । असूयियिषति । णिगि, कण्डूययति । ङे, अकण्डूयियत् । अत्र "अतः"॥४।३।८२॥ इत्यनेन विषयेऽप्यकारलोपात् "स्वरस्य"॥७।४।११०॥ इति स्थानित्वाभावात् यि इत्यस्य द्वित्वं नतु य इत्यस्य । एवमासूयियत् । कण्डूयि ३ त्वा, ता, तुम् ॥ इति कण्ड्वादि ॥ १ ॥

अन्दोलण्, प्रेङ्खोलण् अन्दोलने ॥ वीजण् वीजने । एते त्रयोऽप्यदन्ताः । बहुलवचनात् स्वार्थे णिचि, अन्दोलयति । क्ये, अन्दोल्यते । ङे, आन्दुदोलत् । प्रेङ्खोलयति । वीजयति । वीज्यते । अवीजयत् । राजहंसैरवीज्यत । ङे, अविवीजत् ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥

रिखिर्लिखे समानार्थे । रेखति चित्रकृत् । रिख्यते । अरेखीत् । अशिति सर्वं लिखित् वत् ॥ ५ ॥

चुलुम्प इति सौत्रः । चुलुम्पति, उच्चुलुम्पति । चुलुम्पाञ्चकार ॥ ६ ॥

स्तम्भू, स्तुम्भू स्तम्भे। "स्तम्भूस्तुम्भूस्कम्भूस्कुम्भूस्को. श्ना च"॥३।४।७८॥ इति श्नाश्नू। शित्त्वाद् ङित्त्वे नो लुकि; स्तभ्नाति, स्तभ्नोति। उपसर्गाद्, "अङप्रतिस्तब्ध-"॥२।३।४१॥ इति षत्वे, विष्टभ्नाति, प्रतिष्टभ्नोति । "उदः स्था-"॥१।३।४४॥ इति स्लुकि, उत्तभ्नाति; उत्तभ्नोति पताकाम् । "अवाच्चाश्रयोर्जाविदूरे" ॥२।३।४२॥ इति द्विलेऽप्यट्यपि षत्वे, आश्रये, दुर्गमवष्टभ्नाति, अवष्टभ्नोति । और्जित्ये, अहो वृषलोऽवष्टभ्नाति । अवष्टभ्नोति रिपु शूर. । अविदूरेऽनतिविप्रकृष्टे, अवष्टभ्नोति शरत्, आसन्नीभवतीत्यर्थः । क्ये, स्तभ्यते, अवष्टभ्यते। हौ, उत्तभान, उत्तभ्नुहि । व्यष्टभ्नात्, प्रत्यष्टभ्नात्, अवाष्टभ्नात्। "ऋदिच्छ्वि-" ॥३।४।६५॥ इति वा अङि, अस्तभत्, अस्तम्भीत्; अवाष्टभत्, अवाष्टम्भीत् । अस्तम्भि, अस्तम्भिषाताम् । तस्तम्भ, अवतष्टम्भ, प्रतितष्टम्भ । स्तम्भिष्यति; अवष्टम्भिष्यति । तिस्तम्भिषति, अभितिष्टम्भिषति । तास्तम्यते; प्रतिताष्टम्यते; अवताष्टम्यते। स्तम्भयति, अवष्टम्भयति । ङे तु निषेधान्न ष., अवातस्तम्भत्; प्रत्यतस्तम्भत्, अतस्तम्भत्। स्तभ्नन्, स्तम्भ्वन् । ऊदित्त्वात् क्त्वि वेट्; स्तब्ध्वा, स्तम्भित्वा; अत्र "क्त्वा"॥४।३।२९॥ इति न क्त्वा कित् । दुर्गमवष्टभ्यास्ते । वेट्त्वान्नेट्, स्तब्धः, २ वान्; प्रतिस्तब्धः, निस्तब्ध', अवष्टब्ध', २ वान् । "अवाच्च-"॥२।३।४२॥ इत्यत्र चोऽनुक्तसमुच्चयार्थः, तेनोपष्टब्ध', उपष्टम्भ इत्यादावुपादपि षो भवति । उपावादित्यकृत्वा चकारेण सूचनमनित्यार्थम्; तेनोपस्तब्ध इत्यपि भवति । स्तम्भिता, अवष्टम्भिता ॥ स्तुम्भू ॥ श्नाश्नू । स्तुभ्नाति, स्तुभ्नोति । क्ये, स्तुभ्यते । अस्तुम्भीत् । तुस्तुम्भ । तुस्तुम्भे । अपपाठान्न षः ॥ ७ ॥ ८ ॥

स्कम्भू, स्कुम्भू बन्धने ।स्कभ्नाति, स्कभ्नोति । वेः "स्कभ्न"॥२।३।५५॥ इति षत्वे, विष्कभ्नाति, अत्र क्षुभ्नादित्वाण्णत्वाभाव । "स्कभ्न"॥२।३।५५॥ इति श्नानिर्देशात् सश्नो षो मा भूत्; विस्कभ्नोति, विष्कभ्नीत, विस्कभ्नुत', विष्कभ्नन्ति, विस्कभ्नुवन्ति। विष्कभ्यते। हौ, विष्कभाण; विस्कभ्नुहि ॥ द्य० ॥ द्विलेऽप्यट्यपीत्यधिकारस्य निवृत्तत्वात् षत्वाभावे, व्यस्कभ्नात्, व्यस्कभ्नोत् ॥ अद्य० ॥

व्यस्कम्भीत् । विचस्कम्भ । विष्कम्भिता । विष्कम्भिष्यति । विचिस्कम्भिषति । विचास्कम्यते । विचास्कम्भीति । विष्कम्भयति । व्यचस्कम्भत् । ऊदित्त्वादिटि, स्कब्ध्वा; स्कम्भित्वा । विष्कभ्य । वेट्त्वान्नेटि, विष्कब्धः, २ वान् । विष्कम्भि ३ ता, तुम्, तव्यम् ॥ स्कुम्भू ॥ स्कुभ्नाति, स्कुभ्नोति । अस्कुम्भीत् ॥१॥१०॥

लुल कम्पने । लोलति । लुल्यते । लुलितम्, धुतमित्यर्थः ॥ ११ ॥

इति श्रीतपाचार्यश्रीदेवसुन्दरसूरिशिष्यश्रीगुणरत्नसूरिविरचिते क्रियारत्नसमुच्चये सौत्रा धातवः ॥

अथ नामधातवः ।

"द्वितीयायाः काम्य"॥३।४।२२॥ इति वा, पुत्रमिच्छति पुत्रकाम्यति । स्त्रीकाम्यति । वस्तुकाम्यति । "चजः कगम्-'॥२।१।८६॥ इति कत्वे, वाक्काम्यति, गोधुक्काम्यति, राट्काम्यति । अनडुत्काम्यति, अत्र 'स्रसुध्वंस्-"॥२।१।६८॥ इति हो दः । "उः पदान्ते-"॥२।१।११८॥ इति व उत्वे, धुकाम्यति । श्रेयस्काम्यति; तेजस्काम्यति; अत्र "रोः काम्ये"॥२।३।७॥ इति स । हविष्काम्यति, सर्पिष्काम्यति; धनुष्काम्यति, "नामिनस्तयोः-"॥२।३।८॥ इति ष । अव्ययस्य वर्जनात्सपयोरभावे, अधःकाम्यति, वहिःकाम्यति । रोरभावे रेफस्य तु न सःषो वा । वाःकाम्यति, गीःकाम्यति, धूःकाम्यति । राजकाम्यति, गुणिकाम्यति, एतत्काम्यति, अदस्काम्यति, इदङ्काम्यति, किंकाम्यति, भवत्काम्यति । त्वत्काम्यति, मत्काम्यति, "त्वमौ प्रत्ययोत्तर-"॥२।१।११॥ इति मान्तयोस्त्वमौ । युवां युष्मान्वेच्छति युष्मत्काम्यति, अस्मत्काम्यति, स्वःकाम्यति, स्वस्तिकाम्यति । "सर्वादयोऽस्यादौ"॥३।२।६१॥ इति पुंवत्त्वे, सर्वामिच्छति सर्वकाम्यति, भवत्काम्यति, एककाम्यति । एवं क्यन्यापि पुंवत्त्वं ज्ञेयम् । काम्यनैव कर्मण उक्तत्वादात्मनेपदं भावे, पुत्रकाम्यते, धनकाम्यते । अत्र "योऽशिति"॥४।३।८०॥ इति यस्य न लुक्, धातोर्व्यञ्जनात्परस्य योऽभावात् ॥ अद्य० ॥ अपुत्रका ३ म्यीत्, म्यिष्टाम्, म्यिषु । भावे, अपुत्रकाम्यि ॥ परो० ॥ पुत्रकाम्या ३ चकार, बभूव, आम वा । चकारमियेष, चक्रा

स्याश्चकार; काम्यस्यादन्तत्वादाम् सिद्धः । पुत्रकाम्यात् । पुत्रकाम्यिष्यति । णिगि, घटकाम्ययति । ङे, "अन्यस्य"॥४।१।८॥ इति प्रथमादारभ्य यथेच्छ द्वित्वे; अजघटकाम्यत्; अघटटकाम्यत्; अघटचकाम्यत्, अघटकामम्यत् । एव अपुपुत्रकाम्यत्; अपुतत्रकाम्यत्•; अत्र सस्वरस्य काम्यस्य फल समानलोपात् न सन्वद्भावः । पुत्रकाम्यन् । पुत्रकाम्यि ५ त्वा, ता, तुम्, त', २ वान् । पक्षे तु वाक्य सिद्धम् ॥ इति काम्यः ॥ १ ॥

"अमाव्ययात् क्यन् च"॥३।४।२३॥ इति क्यन्, चात्काम्यश्च, तेन क्यना काम्यो न बाध्यते । पक्षे च वाक्यमपि । पुत्रमिच्छति, "क्यनि"॥४।३।११२॥ इति ईकारे, पुत्रीयति, पुत्री ८ यत., यन्ति, यसि० । द्रविणीयति । खट्वीयति । मालीयति । "दीर्घश्च्वि-"॥४।३।१०८॥ इति दीर्घे, निधीयति । दधीयति । अग्नीयति । औषधीयति । पट्व्यति । वस्तूयति । दात्रीयति । "ऋतो री "॥४।३।१०९॥ पित्रीयति । मात्रीयति । भ्रात्रीयति । स्वस्रीयति । रायमिच्छति रैयति । गव्यति । नाव्यति; "य्यक्ये"॥१।२।२५॥ इति ओदौतोरवावौ । गार्ग्यमिच्छति, "आपत्यस्य क्यच्व्यो." ॥२।४।९१॥ इति यलोपे, गार्गीयति । वात्सीयति । विद्वांसमिच्छति विद्वस्यति । राजीयति, अत्र "न क्ये"॥१।१।२२॥ इति पदान्ते; "नाम्नो नो-"॥२।१।९१॥ इत्यत्र असत्पर इत्यधिकारस्यानागमनात् क्यविधौ नलुक. सत्त्वात् "क्यनि"॥४।३।११२॥ इति ईकार सिद्धः । शमीयति । पथीयति । अहर्यति; अत्र "रो लुप्यरि" ॥२।१।७५॥ इति रः । "नाम सिद्-"॥१।१।२१॥ इत्यत्र अयिति प्रतिषेधेन पदान्ताभावात् क्रमेण उलगलकलाद्यभावे, दिवमिच्छति दिव्यति, दृश्यति, वाच्यति । समिधमिच्छति समिध्यति । गोदुह्यति । योषिस्यति । महत्यति । तद्यति । यद्यति । एतद्यति । अदस्यति । भवत्यति । त्वद्यति । मद्यति । युष्मद्यति । अस्मद्यति । चतुर इच्छति चतुर्यति । अनुडुह्यति । गीर्यति । धूर्यति, "भ्वादे -"॥२।१।६३॥ इति दीर्घ । नेत्यन्ये, गिर्यति, धुर्यति । एव क्यङ्यपि । पुस्यति । सर्पिष्यति । अर्चिष्यति । धनुष्यति । "क्षुत्तृड्गर्द्धेऽशनाय-"॥४।३।११३॥ इति निपातनात्, अशनमुदक धनमिच्छति अशनायति, उदन्यति, धनायति । क्षुत्तृड्गर्द्धेभ्योऽन्यत्र तु, अशनीयति, उदकीयति, धनीयति दातुम् ।

मैथुनतृष्णाया, "वृषाश्वाद्-"॥४।३।११४॥ इति रसेऽन्ते, वृषमिच्छति वृषस्यति गौः । अश्वस्यति वडवा । वृषस्याश्वस्यशब्दौ मैथुनेच्छापर्यायौ मनुष्यादावपि प्रयुज्येते । लक्ष्मण सा वृषस्यन्ती । त साऽश्वस्यति । मैथुनादन्यत्र, वृषीयति, अश्वीयति ब्राह्मणी । दध्याद्यदनतृष्णाया "अस्र-"॥४।३।११५॥ इति असि रसेऽन्ते च; दध्यस्यति, दधिस्यति । रस इति द्विसकारनिर्देशान्नात्र षत्वम् । मध्वस्यति, मधुस्यति । क्षीररसति । लवणरसति । दधिरयतीत्यादि प्रयोगदृष्टे प्रसिद्धस्यैव 'नाम्यन्तस्था-"॥२।३।१५॥ इति षत्वस्य निषेधो नत्वप्रसिद्धस्य, तेन सर्पिष्प्यतीत्यादावागमसकारस्य, "सस्य शषौ"॥१।३।६१॥ इत्यनेन षत्व सिद्धम् । पय इच्छति, क्यनि, 'नाम सिद्-"॥१।१।२१॥ इति नियमेन पदसंज्ञाकार्याणां व्यावर्त्तितत्वात्; पयसस्यति । चर्मणस्यति । रसेऽन्ते तु व्यञ्जनादित्वात्पदसञ्ज्ञाया, पयस्स्यति । चर्मस्यति । मान्ताव्ययनिषेधात् इदमिच्छति, किमिच्छति, स्वस्तीच्छति, स्वरिच्छतीति वाक्यमेव । अत्र प्रतिनियतकर्मसम्बन्धे हि कर्मान्तराऽयोगादकर्मकत्वम्, तेन भावे आत्मनेपदम् । पुत्रीय्यते । अशनाय्यते । समिध्यते, समिध्यते, अत्र 'क्यो वा"॥४।३।८१॥ इति व्यञ्जनान्तात् क्यस्य वा लुक् । एवमग्रेऽप्याशिषि ज्ञेयम् ॥ स० ॥ पुत्रीयेत् । समिध्येत् ॥ पं० ॥ पुत्रीयतु, समिध्यतु ॥ ह्य० ॥ महापुत्रमैच्छत् अमहापुत्रीयत् । असमिध्यत् । इन्द्र, ऐश्वर्य, ओषध वा ऐच्छत् ऐन्द्रीयत्, ऐश्वर्यायत, ओषधीयत् । उस्रा गा ऐच्छत् औस्रीयत् । विषयमैच्छत्, अडागमे, "सयसितस्य"॥२।३।४७॥ इत्यनेन षत्वाप्राप्तौ, व्यसयीयत् ॥ अद्य० ॥ अपुत्रीयीत्, अपुत्रीयिष्टाम् । असमिधीत्, असमिध्यीत् । भावे, अपुत्रीयि, असमिधि, असमिध्यि ॥ परो० ॥ पुत्रीयाञ्चकार । कीयाञ्चकार, क्यन सस्वरत्वेनात्राम् सिद्ध । समिधाञ्चकार, समिध्याञ्चकार । पुत्रीयात । समिध्यात्, समिध्यात् । पुत्रीयिता । पटमेष्टा पटीयिता । समिधिता, समिध्यिता । पुत्रीयिष्यति । समिधिष्यति, अत्लुक स्थानित्वान्न गुणः । समिध्यिष्यति । अपुत्रीयिष्यत् । सनि "अन्यस्य"॥४।१।८॥ इति प्रथमादेर्द्वित्वे, पुपुत्रीयिषति, पुतित्रीयिषति, पुत्रीयियिषति, पुत्रीयिषिषति । एव सिसमिधिषति, सिसमिध्यिषति । इन्दिद्रीयिषति, अत्र नकारस्य सयोगादित्वाद् "न बदनम्"

॥४।१।५॥ इति न द्वित्वम् । आजिह्रायकीयिषति । णिगि, पुत्रीययति । समिधयति; समिध्ययति । ङे, अपुपुत्रीयत्, अपुतित्रीयत्, अपुत्रीयियत्, अत्र "अतः"॥४।३। ८२॥ इत्यनेन विषयेऽप्यकारलोपात् परनिमित्तत्वाभावात्, "स्वरस्य-"॥७।४।११०॥ इति स्थानित्वाभावात् यि इत्यस्य द्वित्वं नतु य इत्यस्य । एवं क्यङ्डादिष्वापि ज्ञेया साधनिका । पुत्रीययाञ्चकारेत्यादि । पुत्रीयन् । पुत्रीयि ५ त्वा, ता, तुम्, तः, २ वान् । समिध्यन् । समिधि ५ त्वा, ता, तुम्, त, २ वान् । समिध्यि ५ त्वा, ता, तुम्, त, २ वान् । एवमन्योदाहरणेष्वापि सर्वं वाच्यम् ॥ "आधाराच्चोपमान-"॥३।४।२४॥ इति आचारक्यनि तु, पुत्रमिवाचरति मन्यते पुत्रीयति शिष्यम् । पित्रीयति श्वशुरम् । "ऋतो री"॥४।३।१०९॥ इति रीः, मात्रीयति परदारान् । शत्रूयति बन्धून् । पायसीयति कदन्नम् । वस्त्रीयति कम्बलम् । कर्मण्यात्मनेपदम्, पुत्रीय्यते गुरुणा शिष्य । स्वजनीय्यते परः साधुना । सनि तु, अशिश्वीयिषति, अश्वीयियिषति, अश्वीयिषिषति । कथं ॐ नमः पार्श्वनाथाय विश्वचिन्तामणीयते इति चतुर्थ्यन्तम् । उच्यते । चिन्तामणिमिवात्मानमाचरन् चिन्तामणीयन् तस्मै; अत्र वृत्तावन्तर्भावान्न कर्मणः पृथग् प्रयोग, क्विप्प्रस्थाने वक्ष्यमाणपरमतप्रयोगे इव । एवं अलीयते इत्यादिप्रयोगेष्वपि ज्ञेयम् । आधारादपि क्यन् । प्रासाद इवाचरति व्यवहरति प्रासादीयति कुट्याम् । सौधीयति कुटीरे । खट्वीयति भूमौ । क्ये, प्रासादीय्यते ॥ ह्य० ॥ प्रासादीयत् । प्रासिसादीयिषति । "न प्रादि-"॥३।३।४॥ इत्यनेन प्रादेरुत्तर एव धातुरिति तस्याडागमो द्विर्वचनं च भवत । सौधीयित्वा । प्रासादीय्य गत. । शेषं प्राग्वत् ॥ इति क्यन् ॥ २ ॥

"कर्तुः क्विप्"॥३।४।२५॥ अश्व इवाचरति अश्वति । गर्दभति । पुत्रति । कलत्रति । दरिद्रति कृपण । अर्कति विधुः । मालाति सर्पः । अरयति भ्राता । नारयति पुमान् । रिपवति । विधवति । चधवति । भ्रातरति, एषु गुण । रायति । गवति । नावति । गोधुग्, मधुलिड् वा इवाचरति गोदोहति, मधुलेहति, अत्रोपान्त्यगुणः । नाम्नो धातुत्वेऽप्युपान्त्यस्य धातुनिष्पन्नत्वाभावाद्गुणाभावे; अनडुहति । गिरति । पुरति । "रो लुप्यरि" ॥२।१।७५॥ इति रत्वे, अहरति । राजेवाचरति राजनति, अस्य क्विपो व्यञ्जनादित्व-

किस्त्वपिस्त्वफल नेष्यते, तेन "नाम सिद्-"॥१।१।२१॥ इति पदसञ्ज्ञाया अभावान्नात्र न लोप. । प्रागुदर्शितेपु अरयतीत्यादिपु गुण. । अयमिवाचरति इदमति । किमतीत्यादौ "अहन्पञ्चम-"॥४।१।१०७॥ इति न दीर्घश्च । अन्ये तु क्विपः किस्त्वाद्दीर्घमिच्छन्ति, इदामति । कीमति । कम्, कामति । शम्, शामतीत्यादि । गल्भ क्लीब होडाश्च डित् । ङित्त्वादात्मनेपदम् । गल्भ इवाचरति गल्भते, प्रगल्भते । क्लीबते । होडते । होडो मूर्ध्ने । भावे, अश्व्यते एडकेन । गर्दभ्यते किशोरेण । "दीर्घश्च्वि-"॥४।३।१०८॥ इति दीर्घे, अरीयते बन्धुना । विधूयते मुखेन । "रिः शक्य "॥४।३।११०॥ इति रित्वे; पित्रियते श्वशुरेण । "य्यक्ये"॥१।२।२५॥ इति क्यवर्जनादवादेशाभावे, गोयते रासभ्या, अत्र "आत्सन्ध्यक्षरस्य"॥४।२।१॥ इति न आ, गव्यतीति क्यन्नन्तप्रयोगे आत्वादर्शनात् । "न क्ये"॥१।१।२२॥ इत्यत्र क्यस्याग्रहणात्पदान्ताभावान्नस्य लुगभावे, राजन्यते सेवकेन । अश्वेत् । अश्वतु । आश्वत् ॥ अद्य० ॥ आश्वीत्, आश्विष्टाम्, आश्विषु, आश्वी । एव अगर्दभीत्, अगर्दभिष्टाम्० । अमालामीत् । अवादेशे कृते "व्यञ्जनादेर्वोपान्त्य-" ॥४।३।४७॥ इति वा वृद्धौ, अगावीत्, अगवीत् । वि· पक्षी, स इवाचारीत् अवायीत्, अवयीत्, अयादेशे पश्चात् वृद्धि. । भावे, आश्वि । अमालायि । अगावि ॥ प० ॥ प्राच पूर्वस्माद्विधिरित्याश्रयणे, "स्वरस्य परे "॥७।४।११०॥ इति अल्लुक स्थानित्वेन "धातोरनेक-"॥३।४।४६॥ इत्यामि, अश्वाञ्चकार ३ । हंसाञ्चकार । गल्भाञ्चक्रे, प्रगल्भाञ्चक्रे । द्वित्वेऽपि च कृते वृद्धौ, जुगाव, जुगवतु, जुगविम । कश्चित्तु प्रत्ययान्तादेकस्वरादप्यामादेशमिच्छति । गवाञ्चकार ३ । स्वाञ्चकारेत्यादि । भावे, अश्वाञ्चक्रे । जुगवे । अश्व्यात् । गव्यात् । राजन्यात् । अश्विषीष्ट । अश्विता । अश्विष्यति । गविष्यति । आश्विष्यत् । अगविष्यत् । श्वेर्द्वित्वे, अशिश्विषति, अश्विषिषति । एव जिहसिषति । जुगविषति । अश्वन्तं प्रयुङ्क्ते अश्वयति । ङे, आशश्वत्; अत्र श्वद्वित्वम् । गावयति । अजूगवत् । उरुरिवाचरतीति क्विल्लोपे णौ, उरावयति । ङे, औरिरवत् । द्वित्वे कृते पूर्वस्य "लघो -"॥४।१।६४॥ इति न दीर्घ स्वरादित्वात् । अश्वन् । अश्वन्ती । अश्वत् । अश्विष्यन् । अश्वि ६ त्वा, ता, तुम्, त, २ वान्, तव्यम् । गवित । एके तु

कर्तुः सम्बन्धिन उपमानात् द्वितीयान्तात् क्विप्क्यङाविच्छन्ति, अश्वमिवात्मानमाचरति गर्दभ. अश्वति । श्येनमिवात्मानमाचरति काक श्येनायते । तन्मतसग्रहार्थं "कर्तु·"॥३।४।२५॥ इति षष्ठी व्याख्येया, "द्वितीयायाः-"॥३।४।२३॥ इति चानुवर्त्तनीयम् ॥ इति क्विप् ॥ ३ ॥

"क्यङ्"॥३।४।२६॥ इति आचारे क्यङि, पुरुष इवाचरति पुरुषायते स्त्री । राजायते । श्येनायते काक. । भारायते नेपथ्यम् । सन्ध्यायतेऽलक्तकः । गार्ग्य इवाचरति गार्गायते । वात्सायते, अत्र "आपत्यस्य क्यच्च्व्योः"॥२।४।९१॥ इति यञो लोप. । चिन्तामणीयते । वाञ्छीयते । ग्रामणीयते । प्रभूयते सेवकः । विधूयते । पित्रीयते । भ्रात्रीयते । रैयते । गव्यते । नाव्यते । दधृष्यते । मित्रद्रुह्यते । मरुत्यते । जलमुच्यते । भिषज्यते । सम्राज्यते । दिव्यते । तद्यते । यद्यते । एतद्यते । इदम्यते । किम्यते । भवत्यते । त्वद्यते सुतस्ते । मद्यते मङ्गल· । "सो वा लुक्-"॥३।४।२७॥ इति वा सलोप, सरायते, सरस्यते । चन्द्रमायते, चन्द्रमस्यते । विद्वायते, विद्वस्यते । पय इवाचरति पयायते, पयस्यते । "ओजोऽप्सरसः"॥३।४।२८॥ इति नित्य सलोपे, ओज इवाचरति ओजायते, ओजस्वीवाचरतीत्यर्थ । ओज शब्दस्य तद्वति वृत्तिः । अप्सरायते । ओजस्यते । अप्सरस्यते इत्यप्यन्ये । "क्यङ्मानिपित्तद्धिते"॥३।२।५०॥ इति पुंस्त्वे, युवतिरिवाचरति युवायते । तरुणी, तरुणायते । श्येनी, श्येतायते । एनी, एतायते । एव हरिण्यादयोऽपि । तत्र श्येनी शुभ्रा । एनी कर्बुरा, शुभ्रा वा । हरिणी नीला । भरिणी पाटला धूसरा घृतवर्णा वा । रोहिणी रक्ता । एव पट्वी, पट्वयते । "तद्धिताककोपान्त्य-"३।२।५४॥ इति न पुंवत्; धार्मिकायते । एकिकायते । पाचिकायते । पाठिकायते । कारिकायते । एकादशीयते । चतुर्थीयते । पञ्चमीयते । "तद्धितः स्वरवृद्धिहेतुः"॥३।२।५५॥ इति न पुंस्त्वम्; माहेश्वरीयते । सौगतीयते । रक्ते तु स्यात्, कौङ्कुमायते । "स्वाङ्गान्ङीर्जातिश्चामानिनि"॥३।२।५६॥ इति पुंवद्भावाभाव', चारुकेशीयते । सुगात्रीयते । वानरीयते । ब्राह्मणीयते ॥ भाक ॥ पुरुषाय्यते कुटिलाभिः । राजाय्यते ॥ ह्यस्त० ॥ उत्सुक इवाचरत् औत्सुकायत ॥ अद्य० ॥ औत्सुकायिष्ट । दृषदिवाचारीत् अदृषदिष्ट, अदृषयिष्ट, अत्र "क्यो वा"॥४।३।८१॥ इति क्यङो वा लुक् ॥ भाक ॥ अद-

पदि, अदपायि। क इवाचचार कायाञ्चक्रे, अत्र क्यङः सस्वरत्वेन आम् सिद्ध'। दपदिपीष्ट, दपयिपीष्ट । स्वरान्ताच्च क्यटो न लुक् । पटायिता । दपदिष्यते; दपयिष्यते । सनि, पुपुरुपायिषते, पुरुरुपायिषते; पुरुपिपायिषते, पुरुपायियिषते, पुरुपायिपिषते । एव जिह्मायिषते । शिश्येनायिषते । उत्सुसुकायिषते । उत्सु-कायि ५ तः, त्वा, तुम, ता, तव्यम् ॥ शेष क्यन्वत्॥ इति आचारक्यङ्॥४॥

"च्व्यर्थे भृशादे· स्तो."॥३।४।२९॥ इति च्व्यर्थे वा क्यङ्, स्तो. सम्भवे लुक् च। अभृशो भृशोभवति भृशायते । शीघ्रायते । उन्मनायते । वेहायते गौ'। सश्वायते, विस्मापकीभवतीत्यर्थ । अनोजस्वी ओजस्वी भवति ओजायते; अत्र तद्वद्वृत्तेरेव च्व्यर्थ इति, धर्ममात्रवृत्तेर्न भवति; अनोज ओजोभवति । पक्षे तु च्वि, भृशीभवति । भृश, उत्सुक, शीघ्र, चपल, पण्डित, आणुर, कणुर, फेन, शुचि, नील, हरित, मन्द, मद्र, भद्र, सश्वत्, तृपत्, रेफत्, रेहत्, वेहत्, वर्चस्, ओजस्, उन्मनस्, सुमनस्, दुर्मनस्, अभिमनस् ॥ ह्यस्त० ॥ अनभिमना अभिमना अभवत् अभ्यमनायत । औत्सुकायत ॥ अद्य० ॥ अभ्यमनायिष्ट । अभिमिमनायिषते; अभिमनिनायिषते, अभिमनायियिषते, अभिमनायिपिषते । णौ, अभिमनाययति । ङे, अभ्यममनायत, अभ्यमनना-यत्, अभ्यमनायियत्, अत्र विषयेऽप्यल्लोपात् परनिमित्तत्वाभावेनाल्लुक स्था नित्वाभावात् यिद्धित्वम्। क्त्वि, अभिमनाय्य गत.॥ इति च्व्यर्थक्यङ् ॥ ५ ॥

"डाचूलोहितादिभ्य ·"॥३।४।३०॥ इति क्यङ् । डाचन्त, अपटत् पटत् भवति पटपटायति, पटपटायते। "क्यङ्षो नवा"॥३।३।४३॥ इति वाऽऽत्मनेपदम्। अत्र "अव्यक्तानुकरणादनेकस्वरात्कृभ्वस्तिनानितौ द्विश्च"॥७।२।१४५॥ इति डाच् द्वित्व च, "डाच्यादौ"॥७।२।१४९॥ इति पूर्वस्य तो लुक् च। एव दमदमा, घटघटा, झणझणा, मदमदा, छमछमा, कमत्मा, वणवणा, फरफरा इत्यादय.। अलोहितो लोहितो भवति लोहितायति, ते । लोहित, जिह्म, श्याम, धूम, चर्मन्, हर्ष, गर्व, सुख, दु ख, मूर्च्छा, निद्रा, कृपा, करुणा, धूमादीना स्वतन्त्रार्थवृत्ती ना च्व्यर्थाभावात् तद्वद्वृत्तिभ्य एव प्रत्ययो भवति। अधूमवान् धूमवान् भवति धूमायति, ते । बहुवचनमाकृतिगणार्थम्, तेनामृतं यस्य विषायतीति सिद्धम्।

तथा लम्ब, शोभा, लीला, शब्द, विभ्रमादयोऽपि शब्दा ज्ञेया। तत्र च शोभादयस्तद्वति वर्त्तमाना एवावगन्तव्याः; तेन लम्बायमान, शोभायमानमित्यादि सिद्धम् ॥ इति क्यङ् ॥ ६ ॥

"कष्टकक्षकृच्छ्रसत्रगहनाय पापे क्रमणे"॥३।४।३१॥ कष्टादिभ्यश्चतुर्थ्यन्तेभ्यः पापवृत्तिभ्यः क्रमणेऽर्थे वा क्यङ् । कष्टाय कर्मणे क्रामति प्रवर्त्तते कष्टायते। कक्षायते। कृच्छ्रायते। सत्रायते। गहनायते। "रोमन्थाद्याप्यादुच्चर्वणे"॥३।४।३२॥ रोमन्थमुच्चर्वयति रोमन्थायते गौ; उद्गीर्य चर्वयतीत्यर्थः। "फेनोष्मवाष्पधूमा-"॥ ॥३।४।३३॥ फेनमुद्वमति फेनायते। ऊष्मायते। 'न क्ये"॥१।१।२२॥ इति पदत्वान्नलोप । बाष्पायते। धूमायते। "सुखादेरनुभवे"॥३।४।३४॥ सुखमनुभवति सुखायते। दुःखायते। सुख, दुःख, तृप्र, कृच्छ्र, अस्र, आस्र, अलीक, करण, कृपण, सोढ, प्रतीप। 'शब्दादेः कृतौ वा"॥३।४।३५॥ शब्दं करोति शब्दायते। वैरायते। कलहायते। "शब्दादेः कृतौ वा"॥३।४।३५॥ इत्यत्र वाशब्दो व्यवस्थितविभाषार्थः; तेन पक्षे यथादर्शनं णिजपि। शब्दयति। वैरयति। वाऽधिकारस्तु वाक्यार्थम्। शब्द, वैर, कलह, अभ्र, वेग, युद्ध, अभ्र, कण्व, मम, मेघ, अट, अट्टा, अटाट्या, सीका, सोटा, कोटा, पोटा, प्रुष्वा, सुदिन, दुर्दिन, नीहार ॥ इति क्रमणाद्यर्थक्यङ् ॥ ७ ॥

"तपसः क्यन्"३।४।३६॥ इति करणेऽर्थे क्यन्। तपः करोति तपस्यति यती; अत्र व्रतार्थस्तपःशब्दः। सन्तापार्थे तु, शत्रूणां तपः करोति तपस्यति शत्रून्। णिगि "अतः"॥४।३।८२॥ इत्यल्लुकि, "क्यो वा"॥४।३।८१॥ इति वा क्यलुकि, तपस्ययति, तपसयति, अत्राल्लुकः स्थानित्वाच्चान्त्यस्वरादिलोप. ॥अद्य०॥ ङे, अततपस्यत्, अतपपस्यत्, अतपसस्यत्; अत्र "अन्यस्य"॥४।१।८॥ इति तृतीयावयवस्य द्वित्वेऽदन्तक्यनः फलम्। क्यलुकि तु, अततपसत्, अतपपसत्, अतपसिसत्, अत्राल्लुको न स्थानित्वम्। "नमोवरिवश्चित्रङोऽर्चासेवाश्चर्ये"॥३।४।३७॥ नमः करोति नमस्यति देवान्। वरिवस् अव्ययः। वरिवः करोति वरिवस्यति गुरुम्। चित्रं करोति चित्रीयते। कस्य चित्रीयते न धीरित्यकर्मकः। चित्रमाश्चर्यं करोति जनस्येति विवक्षायां चित्रीयते जनमिति सकर्मकः। ङ आत्मनेपदार्थः।

आश्चर्यादन्यत्र तु, चित्रं करोति; आलेख्यमित्यर्थः ॥ भाक ॥ नमस्यते देवः । नमस्यते, अत्र "क्यो वा"॥४।३।८१॥ इति वा क्यलुक् । अनम ४ स्यीत्, सीत्; स्यिष्टाम्, सिष्टाम् । नमस्याञ्चकार ३, नमसाञ्चकार ३ । नमस्यि ४ त, त्वा, ता, तुम्; नमसि ४ त, त्वा, ता, तुम् । इति करणाद्यर्थक्यन् ॥८॥

अथ णिङ् ॥ "अङ्गान्निरसने णिङ्"॥३।४।३८॥ हस्तौ निरस्यति हस्तयते । पादयते । ग्रीवयते । "पुच्छादुत्परिव्यसने"॥३।४।३९॥ पुच्छमुदस्यति उत्पुच्छयते । पर्यस्यते परिपुच्छयते । व्यस्यति विपुच्छयते । अस्यति पुच्छयते । "भाण्डात्समाचितौ"॥३।४।४०॥ समाचयन समा परिणा च द्योत्यते। भाण्डानि समाचिनोति सम्भाण्डयते; परिभाण्डयते । "चीवरात्परिधानार्जने"॥ ३।४।४१॥ चीवरं परिधत्ते परिचीवरयते । चीवरमर्जयति चीवरयते । क्ये, हस्त्यते । पाद्यते ॥ ९ ॥

अथ णिच् ॥ "णिज्बहुलं नाम्नः कृगादिषु"॥३।४।४२॥ मुण्डं करोति मुण्डयति छात्रम् । एवं मिश्रयत्योदनम् । श्लक्ष्णयति वस्त्रम् । लवणयति सूपम् । "सम्प्रोन्नेः सङ्कीर्णप्रकाशाधिकसमीपे"॥७।१।१२५॥ इति प्राक् प्रकाशेऽर्थे कटप्रत्यये प्रकटं, तं करोति प्रकटयति स्वाभिप्रायम् । प्रमाणयति साक्षिणम् । कृतार्थयति । छिद्रं करोति छिद्रयति । कर्णयति । दण्डयति । अन्धयति । अङ्कयति । व्याकरणस्य सूत्रं करोति व्याकरणं सूत्रयति । प्रत्यये उत्पन्ने व्याकरणसूत्रयो सम्बन्धो निवर्त्तते । सूत्रयति । क्रियासम्बन्धात्तु द्वितीयैव नतु षष्ठी । एवं द्वारस्योद्घाटं करोति द्वारमुद्घाटयति । पर्यन्तयति कृत्स्नम् । चिह्नयति दृष्टचरम् । सवर्गयति बन्धून् । खट्वयति दारु । पाप्मिनामुल्लाघं करोति पाप्मिनं उल्लाघयति । त्रिलोकीं तिलकयतीत्याद्यपि द्रष्टव्यम् । पटुमाचष्टे करोति वा "नामिनोऽकलि-"॥४।३।५१॥ इति वृद्धौ अन्त्यस्वरलोपे, पटयति । पट्वीमाचष्टे करोति वा "जातिश्च णि-"॥३।२।५१॥ इति पुंवत्त्वे वृद्धौ अन्त्यस्वरलोपे च, पटयति । एवं लघुं लघ्वीं वा लघयति । एवं सुखिनं सुखयति । दुःखिनं दुःखयति । [illegible] । वार्त्तयति । एवं प्रियं प्रापयति । स्थिरं स्थापयति । स्फि[illegible]ते । [illegible] । गुरुं गरयति । बहुलं बंहयति । तृप्रं त्रपयति । दीर्घं [illegible] वृद्ध[illegible] ते । "प्रियस्थिर-

रिफरोरुगुरुबहुलतृप्रदीर्घवृद्धवृन्दारकस्येमनि च प्रास्थास्फावरगरबंहत्रपद्राघवर्षवृन्दम्" ॥७।४।३८॥ इत्यनेन प्राद्यादेशाः। एव "पृथुमृदुभृशकृशदृढपरिवृढस्य ऋतो रः" ॥७।४।३९॥, प्रथयति, म्रदयति, भ्रशयति, क्रशयति, द्रढयति। द्रढयित्वा। परिद्रढय्य गत.। परिव्रढयति। पृथ्वीं, प्रथयति। मृद्वीं, म्रदयति; पुवद्भावः। स्थूलदूरयुवह्रस्वक्षिप्रक्षुद्रस्यान्तस्थादेर्लुग् गुणश्च नामिनः स्थूलमाचष्टे करोति वा स्थवयति। एव दूर, दवयति। युवान, यवयति। ह्रस्व, ह्रसयति। क्षिप्र, क्षेपयति। क्षुद्र, क्षोदयति। स्रग्विणमाचष्टे स्रजयति। एव ओजस्विन, ओजयति। गोमन्त, गवयति। त्वग्वन्त, त्वचयति। कुमुद्वन्त, कुमुदयति। अत्र "विन्मतोर्णीष्ठियसौ लुप्"॥७।४।३२॥ इति विन्मतोर्लुप्। कर्तृमन्तमाचष्टे करयति। कर्त्तारमाचष्टे करयति। पयस्विन, पययति। वसुमन्त, वसयति, एषु पूर्वेण विन्मत्वोर्लुपि पश्चात् "त्र्यन्त्यस्वरादेः"॥७।४।४३॥ इति तृशब्दस्यान्त्यस्वरस्य च लुक्। एवं सक्रामन्तं करोति सक्रामयति। मातर, भ्रातर वाऽऽचष्टे मातयति, भ्रातयति, इत्यत्र त्वव्युत्पन्नत्वात् तृशब्दस्य न लोपः। स्त्रीमाचष्टे स्त्राययति। रै, राययति। गो, गवयति। नौ, नावयति। गिर्, गिरयति। पुर्, पुरयति। एषु "नैकस्वरस्य" ॥७।४।४४॥ इति न अन्त्यस्वरादिलोपः। "अल्पयूनो कन् वा"॥७।४।३३॥ अल्प युवान वाऽऽचष्टे कनयति। पक्षे, अल्पयति; यवयति। प्रशस्यमाचष्टे करोति वा श्रयति, "प्रशस्यस्य श्र"॥७।४।३४॥ एव वृद्ध, ज्ययति; "वृद्धस्य च ज्य" ॥७।४।३५॥ बाढ साधयति; अन्तिक नेदयति, "बाढान्तिकयोः साधनेदौ" ॥७।४।३७॥ बहुमाचष्टे करोति वा भूययति, "बहोर्णीष्ठे भूय्"॥७।४।४०॥ चिरमाचष्टे विलम्बते वा चिरयति दूत.। वृक्षमाचष्टे रोपयति वा वृक्षयति। कृत गृह्णाति कृतयति। एव वर्णयति। त्वां मा वाऽऽचष्टे त्वदयति,मदयति; अत्र नित्यत्वादन्त्यस्वरादिलोपात् प्रागेव अदं विश्लेष्य त्वमादेशौ, पश्चादपि अन्त्यस्वरादिलोपो न, लोपात्स्वरादेश इति न्यायात् लुगस्येत्येव प्रवर्त्तते। तस्मिन्नपि कृते न "नैकस्वरस्य"॥७।४।४४॥ इति निषेधात्। "ञ्णिति"॥४।३।५०॥ इति वृद्धिरपि न, अधातुत्वात्। युवा युष्मान् वाऽऽचष्टे युष्मयति। एवं अस्मयति। त्वच गृह्णाति त्वचयति। त्वचशब्दोऽदन्तस्त्वक्पर्याय.। व्यञ्जनान्तस्य तु "ञ्णिति"

॥४।३।५०॥ इति वृद्धौ त्वाचयतीति रूपं स्यात्, तच्चानिष्टमिति न कृतम् । अत्र व्यञ्जनान्तं त्वक्शब्दं परित्यज्य स्वरान्तपाठेन ज्ञाप्यते नाम्नोऽप्यतोऽन्त्यस्योपान्त्यस्य च; अतो "ञ्णिति"॥४।३।५०॥ इति सूत्रेण वृद्धिर्भवतीत्युत्पलमत स्वस्यापि क्वचित्समनमस्तीति । यथा त्वा मा वाऽऽचष्टे, अत्र परत्वात्पूर्वमन्त्यस्वरादिलोपे त्वमादेशेऽन्त्यस्वराकारस्य वृद्धौ प्वागमे, त्वापयति, मापयतीति । ननु कथं कारापयति, वन्दापयति, कथापयति, लेखापयतीत्यादि । उच्यते । महाकविप्रयुक्ता एते प्रयोगाः क्वापि न दृश्यन्ते । यदि च क्वचन सन्ति तत्रैव समर्थनीयाः । करणं कारस्तमनुयुङ्क्ते; त्वं कुरुष्वेति प्रेरयतीत्यर्थः । उत्पलमतेन अतो "ञ्णिति"॥४।३।५०॥ इति वृद्धौ प्वागमे; भूत्वेन कारापयति । एवं वन्दापयतीत्यादिष्वपि । रूपं दर्शयति रूपयति । रूपं निध्यायति निरूपयति । लोमान्यनुमार्ष्टि अनुलोमयति । तूस्तानि विहन्ति उद्धन्ति वा वितूस्तयति, उत्तूस्तयति केशान्; विजटीकरोतीत्यर्थः । वस्त्रं वस्त्रेण वा समाच्छादयति संवस्त्रयति । वस्त्रं परिदधाति परिवस्त्रयति । तृणानि उत्प्लुत्य शातयति उत्तृणयति । हस्तिनाऽतिक्रामति अतिहस्तयति । एवमत्यश्वयति । वर्मणा संनह्यति संवर्मयति । तुलां रोपयति तुलयति कनकम् । वीणया उपगायति उपवीणयति । सेनयाऽभियाति "स्थासेनि-"॥२।३।४०॥ इति षत्वे, अभिषेणयति । चूर्णैरवध्वंसयति अवकिरति वा अवचूर्णयति । वास्या छिनत्ति वासयति । एवं परशुना परशयति । असिना असयति । श्लोकैरुपस्तौति उपश्लोकयति । हस्तेनापक्षिपति अपहस्तयति । अश्वेन संयुनक्ति समश्वयति । गन्धेनार्चयति गन्धयति । एवं पुष्पयति । बलेन सहते बलयति । शीलेनाचरति शीलयति । एवं सामयति । सान्त्वयति । छन्दसा उपचरति उपमन्त्रयते वा उपच्छन्दयति । पाशेन संयच्छति संपाशयति । पाशं पाशाद्वा विमोचयति विपाशयति । शूरो भवति शूरयति । वीरं उत्सहते वीरयति । कूलमुल्लङ्घयति उत्कूलयति । कूलं प्रतीपं गच्छति प्रतिकूलयति । कूलमनुगच्छति अनुकूलयति । लोष्टानवमर्दयति अवलोष्टयति । पुत्रं सूते पुत्रयतीत्यादि । अत्रोत्पुच्छयते इत्यादाविव, विपाशयति संपाशयतीत्यादौ यत्रैक-

शब्देन नानाक्रियार्थानामभिधान तत्र युक्तौ विविधोपसर्गप्रयोग, यत्र त्वेक एव क्रियार्थस्तत्र स न युक्तः; श्येनायते इत्यादिवत् अतिहस्तयतीत्यादौ तु णिच. करोत्याचष्टेऽतिक्रामतीत्याद्यनेकार्थत्वात्सन्देहे तद्व्यक्तये युक्त उपसर्गप्रयोगः ॥ भाक ॥ मुण्ड्यते, प्रकट्यते इत्यादि ॥ ह्यस्त० ॥ अभ्यर्पेणयत् ॥ अद्य० ॥ अमुमुण्डत् । "अन्यस्य"॥४।१।८॥ इति यथेच्छं द्वित्वे, अपप्रकटत्; अप्रचकटत्; अप्रकटिटत् । स्वापमकरोत् असस्वापत् । नाम्नोपि "स्वपेर्यङ्डे च"॥४।१।८०॥ इति य्वृतमिच्छन्त्यन्ये । असुषुपत् । अर्यमाख्यत् आरर्यत; अत्रान्त्यस्वरलोप । "स्वरादेः-"॥४।१।४॥ इति र्यद्वित्वे कार्ये स्थानिनिमित्तापेक्ष्यापि प्राग्विधिरिष्यते । शूर माला वाऽऽख्यत् अशुशूरत्; अममालत । दृपदमाख्यत् अददृपत् । राजानमतिक्रान्तवान् अत्यरराजत् । लोमान्यनुमृष्टवान् अन्वलुलोमत् । स्वामिनमाख्यत् असस्वामत् । तादृशमाख्यत् अततादत् । मातरमाख्यत् अममातत् । कलिं हलिं वाऽग्रहीत् अचकलत, अजहलत्; एषु समानलोपान्न सन्वद्भावः । कलिहलिवर्जेनान्नाम्नोऽपि वृद्धि. स्यात्; तेन वास्या परिछिन्नवान् पर्यवीवसत् । स्वादु कृतवान् असिस्वदत् । पटु लघु कपिं हरिं वाऽऽख्यत्; अपीपटत्, अलीलघत्, अचीकपत; अजीहरत्, अत्रेकारोकारयो. पूर्वमेव वृद्धौ कृतायामन्त्यस्वरादिलोपे समानलोपाभावात् "उपान्त्यस्यासमान"॥४।२।३५॥ इति यथासम्भवमुपान्त्यह्रस्वो 'असमानलोपे सन्वद्-"॥४।१।६३॥ इति सन्वद्भावश्च सिद्ध । अन्ये तु नाम्नो वृद्धिमनिच्छन्त उइकारयोरेव लोपमिच्छन्त समानलोपित्वात्सन्वद्भावाभावेऽपपटत्, अललघत्, अचकपत् इत्याद्येवाहु । इ उ वाऽऽख्यत्; वृद्धौ "स्वरादे-"॥४।१।४॥ इति द्वितीयस्य द्वित्वे च, आयियत्, आविवत् । ओतुमाख्यत्; स्वरलोपस्य स्थानित्वेन तु द्वित्वे, औतुतत् । गोनौर्यद्वा गोसहिता नौ. गोनौ, "मयूरव्यसकं-"॥३।१।११६॥ इति मध्यपदलोपी समास, तामाख्यत्, "त्र्यन्त्यस्वर-"॥७।४।४३॥ इति औलोपे, अजूगुनत् । औत' स्थानित्वेनोपान्त्यत्वाभावान्न ह्रस्व इति केचित् । अजुगोनत् । वहे क्ते ऊढ, तमाख्यत्, औजढत्, अत्र परे द्वित्वे "हो धुट्पदान्ते"॥२।१।८२॥ इत्यस्यासत्त्वे तदाश्रितत्वात् "अधश्चतुर्थात्तथोर्धः"॥२।१।७९॥ इत्यस्याप्यसत्त्वे ढत्वधत्वयोरसत्त्वात्, अन्त्यस्वरादिलोपस्य च

द्वित्वे स्थानित्वादकारेण सह "नाम्नो द्वितीय-"॥४।१।७॥ इत्यनेन ढेति द्विर्वचनम्; एवमूढिमाख्यत् औजिढत्। केचित्तु अन्त्यस्वरादिलोपस्य स्थानित्वमनिच्छन्तो ढि इति द्वित्वे, ऊढमूढिं वाख्यत् औजिढदिति मन्यन्ते ॥ भाक॥ अमुण्डि। ञिटि, अमुण्डिपाताम् । इटि, अमुण्डयिपाताम्; अमुण्डि २ ध्वम्, इढ्वम्; अमुण्डयि ३ ध्वम्, ढ्वम्, इढ्वम् । एवं अप्रकटि । अकलि । अहलि । अपटि । अलघि । अकपि । अहरि। अगोनि । कर्मकर्त्तरि; अमुमुण्डत स्वयमेव पोत.॥ परोक्षा ॥ मुण्डया ३, चकार, बभूव, आस वा । प्रकट दृपदं पटुं कलिं लघुं कपिं चाचख्यौ चकार वा प्रकटयाञ्चकार ३; दृपदयाञ्चकार ३; पटयाञ्चकार ३; कलयाञ्चकार ३; लघयाञ्चकार ३; कपयाञ्चकार ३ ॥ भाक ॥ मुण्डयाञ्चक्रे ३; बभूवे; आहे इत्यादि ॥ आशी॰ ॥ मुण्ड्यात्; दृप्यात्; पट्यादित्यादि॥ भाक ॥॰ इटि, मुण्डयिषीष्ट। ञिटि, मुण्डिषीष्ट। एव दृपयिषीष्ट, दृपिषीष्टेत्यादि ॥ श्वस्त॰॥ मुण्डयिता; दृपयिता, पटयिता ॥ भाक ॥ मुण्डयिता; मुण्डिता ॥ भविष्य॰ ॥ मुण्डयिष्यति, दृपयिष्यति, पटयिष्यतीत्यादि॥ भाक॥ मुण्डयिष्यते, मुण्डिष्यते । दृपयिष्यते, दृपिष्यते । पटयिष्यते; पटिष्यते । एवमन्येऽप्युदाहार्या ॥ सनि, मुमुण्डयिषति। शुशूरयिषति। स्वापञ्चिकीर्षति सिष्वापयिषति, अत्र "स्वपो णावु" ॥४।१।६२॥ इति न पूर्वस्य उ णेर्घञा व्यवधानात् । इ उ चाख्यातुमिच्छति आयियियिषति, आविवयिषति । उतु उड्ड चाख्यातुमिच्छति उतुतयिषति, उड्डडयिषति, अत्रान्त्यस्वरलोपस्य स्थानित्वेन तुड्ड द्वित्वम् । प्रकट कर्तुमिच्छति पिप्रकटयिषति, प्रचिकटयिषतीत्यादि । एव कवल धवल च कर्तुमिच्छति चिकवलयिषति, दिधवलयिषति । सेनयाऽभियातुमिच्छति अभिषिषेणयिषति । अभ्यषिषेणयिषीत् । णिगि तु मुण्डयन्त पटयन्त वा प्रयुङ्क्ते णेर्लुकि मुण्डयति पटयतीत्याद्येव प्राग्वत् । मुण्डयित्वा । सप्रत्ययस्य धातुत्वात् यबभावे, प्रकटयि ४ त्वा, ता, तुम्, तव्यम् । "सेट्क्तयो"॥४।३।८४॥ इति णेर्लुकि, प्रकटित, २ वान् ॥

"व्रताद्भुजितन्निवृत्त्यो."॥३।४।४३॥ पय एव मया भोक्तव्यमिति व्रतं करोति गृह्णाति वा पयोव्रतयति। सावद्यान्नं मया न भोक्तव्यमिति व्रत करोति गृह्णाति वा

सावधान व्रतयति । "सत्यार्थवेदस्याः"॥३।४।४४॥ सत्यमाचष्टे करोति वा सत्यापयति । एवमर्थापयति; वेदापयति ।"श्वेताश्वाश्वतरगालोडिताह्वरकस्याश्वतरेतकलुक्" ॥३।४।४५॥ श्वेताश्वमाचष्टे करोति वा; श्वेताश्वेनाऽतिक्रामति वा श्वेतयति । एवमश्वयति । गालोडित गोदोहन विलोडन वा, तदाचष्टे करोति वा गालोडयति । एवमाह्वरयति; आह्वरक कुटिलं वाक्य, कुटिलः पुरुषो वा ॥ अद्य० ॥ डे, अवव्रतत् । विषयेऽप्यतो लोपस्य परनिमित्तत्वाभावेन स्थानित्वाभावे तु तिद्वित्वे; अव्रातितत् । अससत्यपत् । असातित्यपत् । ओणेरदित्करणज्ञापकात्पूर्व उपान्त्यह्रस्वे पश्चाद् द्वित्वे, असत्यपिपत् । अर्तीथपत् । उपान्त्यह्रस्वे द्वित्वे च; अर्थपिपत् । एव अविवेदपत्; अशिश्वेतत्; आशश्वत् ॥ परोक्षा ॥ अर्थापयां ३ चकार; बभूव, आस वा । अर्थाप्यात् । अर्थापयिष्यति । अर्तिथापयिषति; अर्थापिपयिषति; अर्थापयियिषति; अर्थापयिषिपति । एवं सिसत्यापयिषति । णिगि, अर्थापयतीत्याद्येव मूलप्रकृतिवत् । अर्थापित. । अर्थापयित्वा । अर्थापयिता ॥

इति श्रीमत्तपाचार्यश्रीदेवसुन्दरसूरिशिष्यश्रीगुणरत्नसूरिविरचिते क्रियारत्नसमुच्चये नामधातव ॥



॥ अर्हम् ॥

अथ गुरुपर्वक्रमवर्णनाधिकारः ।

अनन्तं तज्ज्ञानं स हि निरुपमो दोषविलयो
नतिः शक्रादीनामहमहमिकापूर्वमिह सा ।
विसंवादातीतं तदपि च वचो दैवतगणे
न यस्मादन्यस्मिन् स जयतितरां वीरजिनपः ॥ १ ॥

जयति विजितदोषः श्रीसुधर्मा गणेशो (१)
जनितजनकजायाचौरबोधोऽथ जम्बूः (२) ।
प्रभवविभुरथो यश्चौर्यलब्धत्रिरत्नो (३)
मखगतजिनबुद्धः सूरिशय्यम्भवोऽतः (४) ॥ २ ॥

यशोभद्रः सूरिस्तदनु समभूद्विश्वविदितः (५)
ततः सूरिः ख्यातोऽजनि जगति सम्भूतिविजयः ।
तथा भद्राद्बाहूरचितवरनिर्युक्तिततिको
वराहाऽमर्त्योऽस्य ह्यशिवमहरद्यः स्तवनतः (६) ॥ ३ ॥

योगीन्द्रः स्थूलभद्रोऽभूदथान्त्यः श्रुतकेवली ।
सिंहं स्वं दर्शयामास भगिनीविस्मयाय यः (७) ॥ ४ ॥

तस्मान्महागिरिरभूज्जिनकल्पिकल्पः
श्रीसम्प्रतेर्नरपतेश्च गुरुः सुहस्ती (८) ।
शिष्योत्तमावथ सुहस्तिविभोरभूतां
श्रीसुस्थितस्थविरसुप्रतिबद्धसूरी ॥ ५ ॥

तदा च सूरिमन्त्रस्य ध्याता ज्ञानचतुष्कवान् ।
सर्वज्ञदृष्टद्रव्याणां कोट्यंशमवलोकते ॥ ६ ॥

तेन तौ कौटिकौ ख्यातौ ततोऽभूत्कौटिको गणः (९) ।
तत्रेन्द्रदिन्न (१०) दिन्नर्षी (११) सूरिः सिंहगिरिस्ततः (१२) ॥ ७ ॥

जातिस्मृतिर्जृम्भकदत्तविद्ये श्रीसङ्घवात्सल्यमनीहता च ।
यस्मिन्नतुल्यान्यभवस्ततोऽभूद् विभुः स वज्रो दशपूर्ववेदी (१३) ॥ ८ ॥
श्रीवज्रशाखाधुरिवज्रसेना (१४) न्नागेन्द्रचन्द्रादिकुलप्रसूतिः (१५) ।
चान्द्रे कुले पूर्वगतश्रुताढ्य. सामन्तभद्रो विपिनादिवासी (१६) ॥ ९ ॥
ततोऽपि वृद्धोऽजनि देवसूरि· (१७) प्रद्योतनः सूरिरथो शमाढ्यः (१८)।
श्रीमानदेवोऽथ पदस्य काले यदसयोर्वीक्ष्य रमागिरौ द्वे ॥ १० ॥
भ्रष्टोऽद्य ही भवितेति खिन्ने गुरौ विधिज्ञः किल योऽभ्यगृह्णात् ।
भक्ताङ्गिभक्तिं विकृतीश्च सर्वा आजन्म भोक्ष्ये न हि सर्वथेति ॥ ११ ॥
पद्माजयादिदेवीभिर्नतो नड्डूलपू स्थितः ।
शाकम्भरीपुरे मारिं जह्रे शान्तिस्तवाच्च य· (१९) ॥ १२ ॥

त्रिभिर्विशेषकम् ।

भक्तामराद्यद्भुतकाव्यसिद्धि श्रीमानतुङ्गोऽथ बहुप्रसिद्धिः (२०) ।
श्रीवीरसूरि (२१) र्जयदेव (२२) देवानन्दौ (२३) क्रमेण प्रभुविक्रमश्च (२४) ॥१३॥
नरसिंहपुरे बोधिताहिंसकयक्षोऽथ सूरिनरसिंहः (२५) ।
नागहृदतीर्थकृते क्षपणकजेता समुद्रोऽथ (२६)॥ १४ ॥
ख्यातः श्रीहरिभद्रमित्रमभवत् श्रीमानदेवस्ततो
मान्द्याद्विस्मृतसूरिमन्त्रमिह यो लेभेऽम्बिकाया मुखात् (२७) ।
तस्मात् श्रीविबुधप्रभोऽजनि (२८) जयानन्दस्ततः सयमी (२९)
भव्याम्भोजरवी रविप्रभगुरुर्जज्ञेऽथ विज्ञेश्वरः (३०) ॥ १५ ॥
सरस्वतीकण्ठसुवर्णभूषणख्यातिर्यशोदेवयतीश्वरोऽमुतः (३१) ।
प्रद्युम्नसूरिर्जिनशासनाम्बरप्रद्योतनैकद्युमणिस्ततोऽभवत् (३२) ॥ १६ ॥
श्रीमानदेवोऽप्युपधानवाचकग्रन्थप्रणेताऽजनि विश्वपावक. (३३) ।
वादे जिते गोपगिरीशपूजितः सत्स्वर्णसिद्धिर्विमलेन्दुरप्यत (३४) ॥१७॥
युगाङ्कनन्दप्रमिते ९९४ गतेऽब्दे श्रीविक्रमार्कात्सह सङ्घलोकैः ।
पूर्वावनीतो विहरन् धरायामुद्द्योतनः सूरिरथार्बुदाधः ॥ १८ ॥

आगत्य टेलीपुरसीमसंस्थपथ्यासमासन्नवृहद्वटाधः ।
शुभे मुहूर्त्ते स्वपदेऽष्टसूरीनतिष्ठिपत्नौवकुलोदयाय ॥ १९ ॥
॥ युग्मम् ॥

ततो गणोऽय वटगच्छसंज्ञोऽप्यभूद् वृहद्गच्छ इति प्रसिद्धः (३५) ।
श्रीसर्वदेवो विदितोऽतिभूरिप्रशस्यशिष्य. प्रथमोऽत्र सूरि. (३६)॥ २० ॥
रूपश्रीविरुदख्यातो देवसूरिस्ततोऽभवत (३७)।
श्रीसर्वदेवसूरीन्द्रः पुनरासीद्गुणोदधिः (३८) ॥ २१ ॥
तस्माद्यशोभद्रयतीशचन्द्रः श्रीनेमिचन्द्रश्च विनिद्रभद्रः (३९) ।
ततोऽजनि श्रीमुनिचन्द्रसूरि· प्रज्ञापराभूतसुपर्वसूरि ॥ २२ ॥
नित्य पपौ काञ्जिकमेकमम्भस्तत्याज सर्वा विकृतीश्च सम्यग् ।
जिगाय यो भावरिपूंश्च सोऽयं श्लाघ्यो न केषा मुनिचन्द्रसूरिः (४०) ॥२३॥
तस्याभवन्नजितदेवमुनीन्द्रवादि-
श्रीदेवसूरिवृषभप्रमुखा विनेया· (४१) ।
आद्यादभूद्विजयसिंहगुरुर्गरीयान्
निस्सङ्गतादिकगुणैरनिश वरीयान् (४२) ॥ २४ ॥
तत· शतार्थिक ख्यातः श्रीसोमप्रभसूरिराट् ।
सूरि· श्रीमणिरत्नश्च भारत्यास्तनयाविव (४३)॥ २५ ॥
मणिरत्नगुरो शिष्या श्रीजगच्चन्द्रसूरय ।
सिद्धान्तवाचनोद्भूतवैराग्यरमवार्द्धय ॥ २६ ॥
विद्योश्चैत्रगणाम्भोधौ तपोज्ञानक्रियानिधे· ।
वाचकानामलङ्कारात् देवभद्रगणीश्वरात् ॥ २७ ॥
चारित्रमुपसम्पद्य यावज्जीवमभिग्रहात् ।
आचामाम्लतपस्तेनुस्तपागच्छस्ततोऽभवत् (४४) ॥ २८ ॥
त्रिभिर्विशेषकम् ।

तत्पट्टोदयभूधरे शशिरवी वागीश्वरीमन्दिरे
सेनान्यौ वृषभूपतेः शमरमाकर्णावतंसावुभौ ।

श्रीदेवेन्द्रमुनीश्वरोऽमलमना आद्यो द्वितीयः पुनः
सूरीशो विजयेन्दुरुत्तमगुणः सेव्यावभूता सताम् (४५) ॥ २९ ॥
श्रीदेवेन्द्रगुरोः शिष्यौ तमस्तोमैकभेदकौ ।
महाप्रभावजायेता जम्बूद्वीपरवी इव ॥ ३० ॥
विद्यानन्दमुनीन्दुरादिम इह प्रह्लादने पत्तने
यस्याचार्यपदेऽमुचन् दिविषदो गन्धोदकं मण्डपात् ।
दुष्टस्त्रीदमनः सुशास्त्ररचनः श्रीधर्मघोषः पुनः
पाथोधिप्रकटीकृताद्भुतमणिःश्रीगोमुखोद्बोधकृत् (४६) ॥३१॥
॥ तदा च ॥
योगी कश्चन शिष्यवृन्दकलितोऽवन्त्यां स्थितो गर्वभृ-
ज्ज्ञानासिद्धिबहुप्रसिद्धिहृतहृद्भूपप्रजाऽभ्यर्चितः ।
तत्र स्थातुमयं न जैनयतिना दत्ते कदाऽपि क्वचि-
च्चेदागच्छति कोऽपि साधुरिह यस्तं प्रत्यसौ मत्सरात् ॥ ३२ ॥
आसन्नोऽप्यथ दूरगोऽपि सहसा सौवप्रभावोद्धुरो
हुङ्कारात्तृणतन्तुधूलिकणिकाक्षेपात्तथा स्वाङ्कतः ।
मार्जारान्नकुलोन्दुराहिसरटान् गोधावृकान् वृश्चिकान्
फेरण्डप्रभृतींश्च मुञ्चतितमां लक्षादिसङ्ख्यान् क्षणात् ॥३३॥
॥ युग्मम् ॥
अन्याश्चापि विभीषिकाः प्रकटयत्युच्चैः स नानाविधा-
स्तद् दृष्ट्वा भयविप्लुतांश्छलयति क्षुल्लान् स पापः क्षणात् ।
साधुः कोऽपि न तत्र तिष्ठति ततः श्रीधर्मघोषोऽन्यदा
सूरिस्तत्र समीयिवान् बहुपरीवारो विहारक्रमात् ॥ ३४ ॥
साधूनध्वनि सङ्गतान् स सहसा दृष्ट्वाऽथ दुष्टो रुषा
दन्तैर्दष्टरदच्छदोऽवददऽदः श्वेताम्बराः किंधराः ।
शून्यास्ते सकलाऽपरा यदिह भोः प्राप्ता विशङ्का हठात्
दृष्टोऽहं यदि नो, श्रुतोऽपि किमु रे नात्र स्थितो नन्वहम् ॥ ३५ ॥

वाहुभ्यां जलधिं तराणि यदि वा त शोषयाणि क्षणा-
दाकाश विपुलं प्रयाणि खगवद्रात्रौ च कुर्या दिनम् ।
शेषाहिं दृढयोगपट्टतुलया बध्नानि सोत्रामने
फूत्कृत्यापि गिरीन् नयानि गगने वायूरजोवद् रयात् ॥ ३६ ॥
॥ युग्मम् ॥

भो भो यात पलाय्य दृष्टिपथतो मां माऽवमन्ध्वं हठा-
न्नो चेत्स्थेयमिह स्थिरैर्भवनि यत्तदृश्यता सम्प्रति ।
व्याहार्षुर्मुनयो मुधाऽऽत्मनि मद धत्से विधत्से न किं
क्षान्तिं ब्रूम इदं हिताय भवतो जानासि चेत्किंचन ॥ ३७ ॥

नोचेद्यत्तनु रोचते प्रकुरु तत् तावत् स्थिता स्मो वय
योगिन्नुच्छलितोऽपि यन्न चणको भाण्ड प्रभेत्तु क्षमः ।
क्रुद्धस्तद्वचसा विधाय विकृतं वक्त्रं स भीत्यावह
दन्तान् स्थूलतरानदीदृशदधो जान्वग्रजाग्रन्मुखान् ॥ ३८ ॥

किं नो भीषयसे तृणाय न वयं मन्यामहे त्वादृशं
व्याहृत्येति भयोज्झिता मुनिवरास्तत्पातसंसूचनीम् ।
उद्वीर्य्य स्वकफोणिमुन्नततरा जग्मुस्तत श्रीगुरो-
रभ्यर्णे जगदुश्च तद्गुरुरथो प्रोवाच सर्वान् यतीन् ॥ ३९ ॥

चेद्योगीह बिभीषिका विकुरुते माभैष्ट तन्नो मनाक्
ञाताऽहं वरिवर्त्मि योऽथ वसतौ दीपागमे लक्षश ।
शून्याख्या अतिवक्रतुण्डनखरा अन्यान्यदेहोद्भवा
कल्लोला इव वारिधेर्दशदिगुद्भूता प्रसस्रु क्षणात् ॥ ४० ॥

अङ्गारोहणवस्त्रपात्रवलकम्तम्भादनैकादरान्
दृष्ट्वा तान् वसतेर्बहिश्च परितं श्वानौतुसर्पध्वनीन् ।
श्रुत्वा रौद्रतमान् प्रकम्प्रतनवो भीतेर्भरात्साधवो-
ऽन्योन्याह्वानपराश्च नालमभवन् स्थातु प्रनष्टु तथा ॥ ४१ ॥

वस्त्रच्छन्नमुखे घटे प्रथमतः सज्जीकृते श्रीगुरु-
र्दत्त्वा हस्तमथाजपद्गतभयो यावत्स तावच्छठ ।

सर्वाङ्गेऽप्युदितं व्यथासमुदय हर्तुं विषोद्धु प्रणि-
हेतु वाऽप्यसहस्ततोऽनुगजनानूचे म्रिये भो म्रिये॥ ४२ ॥
धिग् मामनात्मज्ञमदीर्घदर्शिनं येनाभिमानादपमानितो गुरुः ।
क्वाणुः क मेरुः क सर. क सागर' काह हहा कैष च सर्वसिद्धिभृत् ॥ ४३ ॥
भीतः सोऽविकलं निज विलसित सहत्य पीडावशा-
दाक्रन्दश्च कणश्च तत्र वसतौ गत्वा मुखात्ताङ्गुलि. ।
ऊचेऽज्ञानवशाद्यदत्र विहितं तत्क्षम्यता क्षम्यता
नातो वो विदधामि किञ्चिदशुभ साक्षी जनोऽत्राखिल. ॥४४॥
निरीक्ष्य दीनं स्वपदोर्विलीन त योगिराज सुममाधिभाजम् ।
चकार शान्त' प्रभुधर्मघोष पुण्यप्रभायाश्च बभूव पोषः (४६) ॥ ४५ ॥
श्रीसोमप्रभसूरयो ऽजनिषतार्थैकादशाङ्गीस्फुर-
त्सूत्रार्था किल कार्त्तिके समधिके कृत्वा चतुर्मासकम् ।
अन्याचार्यगणे निषेधति भृश ये भीमपल्या ययु
र्भङ्ग भाविनमेक्ष्य मन्त्रनिवह नालुर्गुरुभ्यश्च ये (४७) ॥ ४६ ॥
तेषा विनेया वरभागधेयाश्चत्वार आसन् स्वगुणैरमेया. ।
चतुर्गतिभ्योऽसुमता सुखेनोद्धाराय धर्मस्य वपूंषि किं नु ॥ ४७ ॥
श्रीविमलप्रभसूरि श्रीपरमानन्दसूरिगुरुराज. ।
वचनातिगयतनावान् सूरि . श्रीपद्मतिलकगुरु' ॥ ४८ ॥
श्रीसोमतिलकाख्याश्च सूरयो यद्यशोऽर्णवे ।
ज्योत्स्ना जल ग्रहाः फेनपिण्डा वेलावलिर्दिश'॥ ४९ ॥
॥ युग्मम् ॥
विश्वख्याततपागणाधिपतय सार्वत्रिकख्यातय
सद्वैराग्यपयोधयस्त्रिजगतीदीव्यद्गुणश्रेणय' ।
आसन् ग्रन्थकृत. सदागमभृतश्चारित्रलक्ष्मीवृत'
सद्भाग्याभ्यधिकाश्च सोमतिलका' सूरीशवृन्दारकाः (४८) ॥५०॥
तेषा शिष्यास्त्रय ख्याता अभूवन्नद्भुतैर्गुणै ।
ज्ञानदर्शनचारित्रत्रयी मूर्त्तिमती किल ॥ ५१ ॥

बाहुभ्या जलधिं तराणि यदि वा त शोषयाणि क्षणा-
दाकाश विपुल प्रयाणि खगवद्रात्रौ च कुर्यां दिनम् ।
शेषाहिं दृढयोगपट्टतुलया बध्नानि सोत्रासने
फूत्कृत्यापि गिरीन् नयानि गगने वायूरजोवद् रयात् ॥ ३६ ॥
॥ युग्मम् ॥

भो भो यात पलाय्य दृष्टिपथतो मा माऽत्रमन्ध्व हठा-
न्नो चेत्स्थेयमिह स्थिरैर्भवति यत्तद्दृश्यता सम्प्रति ।
व्याहार्षुर्मुनयो मुधाऽऽत्मनि मद धत्से विधत्से न किं
क्षान्तिं ब्रूम इदं हिताय भवतो जानासि चेत्किंचन ॥ ३७ ॥
नोचेयन्नु रोचते प्रकुरु तत् तावत् स्थिता स्मो वयं
योगिन्नुच्छलितोऽपि यन्न चणको भाण्ड प्रभेत्तु क्षम' ।
क्रुद्धस्तद्वचसा विधाय विकृत वक्त्र स भीत्यावह
दन्तान् स्थूलतरानदीदृशदथो जान्वग्रजाग्रन्मुखान् ॥ ३८ ॥
किं नो भीषयसे तृणाय न वय मन्यामहे त्वादृश
व्याहृत्येति भयोज्झिता मुनिवरास्तत्पातसमूचनीम् ।
उद्दीर्य्य स्वकफोणिमुन्नततरा जग्मुस्तत श्रीगुरो-
रभ्यर्णे जगदुश्च तद्गुरुरथो प्रोवाच सर्वान् यतीन् ॥ ३९ ॥
चेद्योगीह बिभीषिका विकुरुते माभैष्ट तद्भो मनाक्
त्राताऽह वरिवर्त्मि वोऽथ वसतौ दोषागमे लक्षश ।
शूच्याख्या अतिवक्रतुण्डनखरा अन्यान्यदेहोद्भगा
कल्लोला इव वारिधेर्दशदिगुद्भूता प्रसस्रु क्षणात् ॥ ४० ॥
अङ्गारोहणवस्त्रपात्रवलकस्तम्भादनैकादरान्
दृष्ट्वा तान् वसतेर्बहिश्च परित श्वानौतुसर्पध्वनीन् ।
श्रुत्वा रौद्रतमान् प्रकम्प्रतनवो भीतेर्भरात्साधवो-
ऽन्योन्याह्वानपराश्च नालमभवन् स्थातु प्रनष्टु तथा ॥ ४१ ॥
वस्त्रच्छन्नमुखे घटे प्रथमत सज्जीकृते श्रीगुरु-
र्दत्त्वा हस्तमथाजपद्गतभयो यावत्स तावच्छठ ।

सर्वाङ्गेऽभ्युदित व्यथासमुदय हर्तुं विपोढु प्रणि-
ह्नोतु वाऽप्यसहस्ततोऽनुगजनानूचे म्रिये भो म्रिये॥ ४२ ॥
धिग् मामनात्मज्ञमदीर्घदर्शिन येनाभिमानादपमानितो गुरुः।
क्वाणुः क्व मेरुः क्व सरः क्व सागर' क्वाह् हहा कैप च सर्वसिद्धिभृत्॥ ४३॥
भीतः सोऽविकल निज विलसितं सहृत्य पीडावशा-
दाक्रन्दश्च क्षणश्च तत्र वसतौ गत्वा मुखात्ताङ्गुलिः।
ऊचेऽज्ञानवशाद्यदत्र विहितं तत्क्षम्यता क्षम्यता
नातो वो विदधामि किञ्चिदशुभ साक्षी जनोऽत्राखिलः ॥४४॥
निरीक्ष्य दीन स्वपदोर्विलीन त योगिराज सुसमाधिभाजम्।
चकार शान्त प्रभुधर्मघोप' पुण्यप्रभायाश्च बभूव पोपः (४६) ॥ ४५ ॥
श्रीसोमप्रभसूरयो ऽजनिपताथैकादशाङ्गीस्फुर-
त्सूत्रार्थाः किल कार्त्तिके समधिके कृत्वा चतुर्मासकम्।
अन्याचार्यगणे निपेधति भृश ये भीमपल्ल्या ययु
र्भङ्गभाविनमेक्ष्य मन्त्रनिवह नालुर्गुरुभ्यश्च ये (४७) ॥ ४६ ॥
तेषा विनेया वरभागधेयाश्चत्वार आसन् स्वगुणैरमेया.।
चतुर्गतिभ्योऽसुमता सुखेनोद्धाराय धर्मस्य वपूंपि किं नु ॥ ४७ ॥
श्रीविमलप्रभसूरि' श्रीपरमानन्दसूरिगुरुराजः।
वचनातिगयतनावान् सूरि श्रीपद्मतिलकगुरु ॥ ४८ ॥
श्रीसोमतिलकाख्याश्च सूरयो यद्यशोऽर्णवे ।
ज्योत्स्ना जल ग्रहा. फेनपिण्डा वेलावलिर्दिश.॥ ४९ ॥
॥ युग्मम् ॥
विश्वख्याततपागणाधिपतय सार्वत्रिकख्यातयः
सद्वैराग्यपयोधयस्त्रिजगतीदीव्यद्गुणश्रेणय ।
आसन् ग्रन्थकृत सदागमभृतश्चारित्रलक्ष्मीवृत.
सद्भाग्याभ्यधिकाश्च सोमतिलका सूरीशवृन्दारकाः (४८) ॥५०॥
तेषा शिष्यास्त्रय ख्याता अभूवन्नद्भुतैर्गुणै.।
ज्ञानदर्शनचारित्रत्रयी मूर्त्तिमती किल ॥ ५१ ॥

सक्षुब्धसागरगभीररवेण नित्यमावर्जिताखिलजगज्जनमानसालि. ।
श्रीचन्द्रशेखरगुरुर्गरिमैकधाम विद्याविलासवसतिः प्रथमो बभूव ॥ ५२ ॥

भव्यप्राणिशिवश्रियो' परिणये सांवत्सराधीश्वराः
गाम्भीर्यादिगुणैर्निजैरुदधिवक्त्रेनाप्यलब्धान्तराः ।
ते ऽजायन्त यतीश्वरायिह जयानन्दा द्वितीया. क्रमात्
येषां देवतया करेण निहतो भ्राताऽनुमेने व्रतम् ॥ ५३ ॥

वैराग्य विमल शमोऽतिविशदः शास्त्रज्ञता चाद्भुता
सिद्धान्तैकरुचिर्मनोहरतरा भव्योपकार पर' ।
चारित्र त्रिजगत्यनुत्तरतम भाग्य ह्यसाधारण
येषां श्रीयुतदेवसुन्दरवरा ख्यातास्तृतीयास्तु ते ॥ ५४ ॥

एकद्वित्रिमुख्यैर्गुणैः कृतमदा देहेऽपि गेहेऽपि ये
नो मान्ति प्रचुरा नरा जगति ते सन्तु प्रकामं परे ।
ये सर्वेषु गुणेषु सत्स्वपि मद कुर्वन्ति नो कर्हिचित्
तेऽमी श्रीयुतदेवसुन्दरवरा' सन्त्येक एवावनौ ॥ ५५ ॥

न यन्निन्दास्तुती कर्तुं शक्येते खलसज्जनैः ।
असद्भावेन दोषाणां गुणाना चाप्रमाणत (४९)॥ ५६ ॥

तच्छिष्या सूरय' पञ्च मेरुपञ्चकसन्निभा. ।
सुवर्णभरविख्याता विधन्ते गरिमास्पदम् ॥ ५७ ॥

यद्वैराग्यमखण्डितं बहुविध नित्यं तपो यत्पर
बाहुश्रुत्यमुदारविस्मयकरं यच्च शान्त मनः ।
योऽन्यो वाऽप्यभवद्गुणो गुरुवरे श्रीज्ञानत सागरे
तत्सर्वं नहि वीक्ष्यते गणिगणेऽन्यस्मिन् कदाऽपि क्वचित् ॥५८॥

दाक्षिण्यैकपयोधयश्चतुरसचेतश्चमत्कृद्गुणा
सिद्धान्तार्णवगाहनैकरसिका उत्सर्गमार्गाध्वगाः ।
प्रागल्भ्यप्रवरास्तपोविधिरताः सन्मत्युदाराशयाः
आसन् श्रीकुलमण्डनाह्वयगुरूत्तमा द्वितीया इमे ॥ ५९ ॥

भूतभाविभवत्सूरिक्रमरेणुकणोपमः ।
सूरि. श्रीगुणरत्नाह्वस्तृतीयः समजायत ॥ ६० ॥
श्रीसोमसुन्दर इति प्रथिताभिधाना· सौभाग्यभाग्यविशदाः क्षमया प्रधानाः ।
तुर्याः सुधामधुरिमाञ्चितवाग्विलासा. सूरीश्वरा गणिगुणैः कृतनित्यवासाः ॥६१॥
श्रीसाधुरत्नाश्च ततो मुनीन्द्रास्तदद्भुत यत्सुगुणा यदीयाः ।
नान्यत्र सन्तोऽपि जगज्जनाना सर्वत्र कर्णातिथयो भवन्ति ॥६२॥

काले षड्रसपूर्व १४६६ वत्सरमिते श्रीविक्रमार्काद्गते
गुर्वादेशवशाद्विमृश्य च सदा स्वान्योपकारं परम् ।
ग्रन्थ श्रीगुणरत्नसूरिरतनोत्प्रज्ञाविहीनोऽप्यमुं
निर्हेतूपकृतिप्रधानजननै· शोध्यस्त्वय धीधनैः ॥ ६३ ॥
प्रत्यक्षरं गणनया ग्रन्थमान विनिश्चितम् ।
षट्पञ्चाशच्छतान्येकपष्ट्याधिकान्यनुष्टुभाम् ॥ ६४ ॥
वाछासङ्घपतेरियद्रविभोर्मान्यस्य धन्यः सुतः
शश्वद्दानविधिर्विवेकजलधिश्चातुर्य्यलक्ष्मीनिधिः ।
अन्यस्त्रीविरतः सुधर्मनिरतो भक्त· श्रुतेऽलेखयत्
साधुर्वीसलसञ्ज्ञितो दश वरा अस्य प्रतीरादिमाः ॥ ६५ ॥
श्रीमत्सङ्घनृपस्य वासवगणैर्नम्यक्रमाम्भोरुहो
विश्वास्थानजुषो बिभर्त्ति हि नभो नीलातपत्र सदा ।
तारामौक्तिकशोभि यावदमलं मेरु च दण्डं विधि-
स्तावन्नन्दतु शास्त्रमेतदनिशं सम्प्रेक्ष्यमाण बुधै· ॥ ६६ ॥

इति तपाचार्यश्रीदेवसुन्दरसूरिशिष्यश्रीगुणरत्नसूरिविरचिते
श्रीहैमव्याकरणानुसारिणि क्रियारत्नसमुच्चये
श्रीगुरुपर्वक्रमवर्णनाधिकारः ।

अथ ग्रन्थस्य बीजकम्।

दशविभक्तिविभागः ॥ भू १ पा २ घ्रा ३ ध्मा ४ ष्ठां ५ म्ना ६ दाम् ७ जि, ज्रि ९ क्षिं १० इ, दु, द्रु, शु, स्रु १५ सुं १६ स्मृ १७ सृ १८ ऋ १९ तॄ २० ध्रै २१ दैव् २२ ध्यैं २३ ग्लैं, म्लैं, द्रैं, ध्रै २७ कैं, गैं, रैं ३० पैं ३१ रिखु, इखु, वल्ग, रिगु, तगु, लिगु ३७ शिघु ३८ लघु ३९ शुच ४० कुञ्च ४१ लुञ्च ४२ अर्च ४३ अञ्चू ४४ वञ्चू, चञ्चू ४६ लाछु ४७ वाछु ४८ मुर्च्छा ४९ व्रज ५० अज ५१ अर्ज ५२ एजृ ५३ ट्वोस्फुर्जा ५४ कूज ५५ गुजु ५६ तर्ज ५७ गर्ज ५८ त्यज ५९ षञ्ज ६० कटे ६१ शट ६२ खिट ६३ णट ६४ लुट ६५ अट, पट, कट ६८ लुट्ठ ६९ स्फट, स्फुट्ट ७१ रट ७२ पठ ७३ हठ ७४ क्रीडृ ७५ लड ७६ अद्ड् ७७ रण, भण, कण, क्वण ८१ ओणृ ८२ चितै ८३ अत ८४ च्युतृ, चुतृ, श्चुतृ, श्च्युतृ ८८ अतु ८९ कित ९० खाद्द ९१ गद ९२ अदु ९३ इदु ९४ णिदु ९५ टुनदु ९६ क्रदु ९७ स्कन्दृ सर्वधातूना वेट्त्वमत ९८ षिधू ९९ ध्वन, स्वन १०१ गुपौ १०२ तप, धूप १०४ लप, जल्प १०६ जप १०७ सृप्लृ १०८ चुप १०९ चुबु ११० चमू, जिमू ११२ क्रमू ११३ यमू ११४ णम ११५ अम ११६ गम्लृ ११७ ईर्ष्य ११८ चर ११९ दल, ञिफला १२१ मील १२२ मूल १२३ फल १२४ फुल्ल १२५ वेल्ल, खेल, स्खल १२८ गल, चर्ब १३० गर्व १३१ ष्ठिवु १३२ जीव १३३ अव १३४ दृशृ १३५ दश १३६ घुषृ १३७ तूष १३८ लुष १३९ कृष १४० भष १४१ विषू, वृषू १४३ मृषू १४४ उषू, प्लुषू १४६ घृषू १४७ पुष १४८ भूष १४९ रस १५० लस १५१ हसे १५२ शसू १५३ दह १५४ वृहु १५५ अर्ह, मह १५७ उक्ष १५८ रक्ष १५९ तक्षौ १६० काक्षु १६१ ॥ इति परस्मैपदिन. ॥ गाङ् १६२ ष्मिङ् १६३ डीङ् १६४ कुङ् १६५ च्युंङ्, प्रुङ्, प्लुङ् १६८ पूङ् १६९ मेङ् १७० देङ्, त्रैङ् १७२ लोकृङ् १७३ रेकृङ्, शकुङ् १७५ चाकि १७६ ढौकृङ्, त्रौकृङ्, टीकृङ्, लघुङ् १८० श्लाघृङ् १८१ लोचृङ् १८२ पचुङ् १८३ भ्राजि १८४ ऋजि १८५ भृजैङ् १८६ तिजि १८७ चेष्टि १८८ वेष्टि १८९ कठुङ् १९० पिठुङ् १९१

खडुड् १९२ भडुड् १९३ हेडृड् १९४ हिडुड् १९५ घुणि, घूर्णि १९७ पणि १९८ यतैङ् १९९ नाथृङ् २०० ग्रथुङ् २०१ वदुङ् २०२ स्पदुङ् २०३ मुदि २०४ ददि २०५ हृदिं २०६ ष्वदि, स्वादि २०८ कुर्दि २०९ ह्लादेङ् २१० पर्दि २११ एधि २१२ स्पर्द्धि २१३ बाधृङ् २१४ दधि २१५ बधि २१६ पनि २१७ मानि २१८ टुवेपृङ्, कपुङ् २२० त्रपौषि २२१ गुपि २२२ लबुङ् २२३ कबृङ् २२४ लभुङ् २२५ ष्टभुङ् २२६ जृभुङ् २२७ रभि २२८ डुलभिष् २२९ क्षमौषि २३० कमूङ् २३१ अयि २३२ दयि २३३ ऊयैङ् २३४ स्फायैङ्, ओप्यायैङ् २३६ तायृङ् २३७ वलि २३८ कलि २३९ तेवृङ्, देवृङ् २४१ षेवृङ्, सेवृङ् २४३ काशृङ् २४४ भाषि २४५ एपृङ् २४६ हेषृङ् २४७ कासृङ् २४८ भासि २४९ आङः शसुङ् २५० ग्रसूङ् २५१ ईहि २५२ गर्हि २५३ द्राहृङ् २५४ ऊहि २५५ गाहौङ् २५६ धुक्षि २५७ शिक्षि २५८ भिक्षि २५९ दीक्षि २६० ईक्षि २६१॥ इत्यात्मनेपदिन॰ ॥ श्रिग् २६२ णींग् २६३ हृग् २६४ भृग् २६५ धृग् २६६ डुकृग् २६७ डुयाचृग् २६८ डुपचींष् २६९ राजृग्, टुभ्राजि २७१ आत्मनेपदानित्यत्व, भर्जी २७२ रञ्जी २७३ बुधृग् २७४ खनूग् २७५ दानी २७६ शानी २७७ शपीं २७८ धावूग् २७९ लपी २८० चपी २८१ गुहौग् २८२ म्लक्षी २८३ ॥ इत्युभयपदिन॰ ॥ द्युति २८४ रुचि २८५ शुभि २८६ क्षुभि २८७ स्रम्भूङ् २८८ भ्रशूङ्, स्रसूङ् २९० ध्वसूङ् २९१ वृतूङ् २९२ स्यन्दौङ् २९३ वृधूङ् २९४ शृधूङ् २९५ कृपौङ् २९६॥ इति द्युतादिः ॥ ज्वल २९७ कुच २९८ पत्ल २९९ मथे ३०० पद्ल ३०१ शद्ल ३०२ बुध ३०३ टुवमू ३०४ भ्रमू ३०५ क्षर ३०६ चल ३०७ शल ३०८ क्रुश ३०९ कस ३१० रुह ३११ रमि ३१२ षहि ३१३ इति ज्वलादि॰ ॥ यजी ३१४ वेंग् ३१५ व्येंग् ३१६ ह्वेंग् ३१७ टुवपीं ३१८ वहीं ३१९ ट्वोश्वि ३२० वद ३२१ वस ३२२ ॥ इति यजादि ॥ घटिष् ३२३ व्यथिष् ३२४ प्रथिष् ३२५ म्रदुङ् ३२६ जित्वरिष् ३२७ स्मृ ३२८ दृ ३२९ लगे ३३० ष्टगे, स्थगे ३३२ णट ३३३ मदै ३३४ ध्वन ३३५ चल ३३६ ह्वल ३३७ ज्वल ३३८ ॥ इति भ्वादिगण ॥

अद, प्साक् २ भाक् ३ याक् ४ वाक् ५ ष्णाक् ६ द्राक् ७ पाक् ८ लाक् ९

राक् १० दांनृक् ११ ख्याक् १२ माक् १३ इक् १४ इण्क् १५ युक् १६ तुक् १७ युङ् १८ णुक् १९ क्ष्णुक् २० स्नुक् २१ टुक्षु, रु, कुंक् २४ रुदृक् २५ ञिष्वपंक् २६ अन, श्वसक् २८ जक्षक् २९ दरिद्राक् ३० जागृक् सर्वधातुभ्यो यङ्डिति मतं; ३१ चकासृक् ३२ शासूक् ३३ वचक् ३४ मृजौक् ३५ विदक् ३६ हनक् ३७ वशक् ३८ असक् ३९ यङ्लुक् ४० ॥ अथात्मनेपदिनः ॥ इङ्क् ४१ शीङ्क् ४२ ह्नुङ्क् ४३ पूङौक् ४४ पृचैङ्क् ४५ ईडिक् ४६ ईरिक् ४७ ईशिक् ४८ वसिक् ४९ आङ. शासूकि ५० आसिक् ५१ णिसुकिं ५२ चक्षिक् ५३ ॥ अथोभयपदिनः ॥ ऊर्णुगूक् ५४ ष्टुग्क् ५५ ब्रूग्क् ५६ द्विषींक् ५७ दुहींक् ५८ दिहींक् ५९ लिहींक् ६० ॥ अथ ह्वादयः ॥ हुक् ६१ ओहाक् ६२ ञिभींक् ६३ ह्रींक् ६४ पृक् ६५ ऋक् ६६ ओहाङ्क् ६७ मांङ्क् ६८ डुदाग्क् ६९ डुधाग्क् ७० डुभृंग्क् ७१ णिजृकी ७२ विजृकी ७३ विप्लृकी ७४ ॥ इत्यदादिगणः ॥

दिवूच् १ जॄष्, झॄष्च् ३ शोंच् ४ दों, छोंच् ६ षोंच् ७ व्रीङ्च् ८ नृतैच् ९ कुथच् १० गुधच् ११ राधच् १२ व्यधच् १३ क्षिपच् १४ तिम, तीम, ष्टिम, ष्टीमच् १८ षिवूच् १९ ष्ठिवूच् २० इष्च् २१ त्रसैच् २२ पहच् २३ ॥ अथ पुषादिः॥ पुषच् २४ लुटच् २५ ष्विदाच् २६ क्लिदौच् २७ क्षुधच् २८ शुधंच् २९ क्रुधच्, ३० षिधूच् ३१ ऋधूच् ३२ गृधूच् ३३ रधौच् ३४ तृपौच् ३५ दृपौच् ३६ कुपच् ३७ गुपच् ३८ लुपच् ३९ लुभच् ४० क्षुभच् ४१ नशौच् ४२ भृशू, भ्रशूच् ४४ कृशच् ४५ शुषच् ४६ दुषच् ४७ श्लिषच् ४८ प्लुषूच् ४९ ञितृषच् ५० तुप, हृषच् ५२ रुषच् ५३ असूच् ५४ यसूच् ५५ शमू, दमूच् ५७ तमूच् ५८ श्रमूच् ५९ भ्रमूच् ६० क्षमौच् ६१ मदैच् ६२ क्लमूच् ६३ मुहौच् ६४ द्रुहौच् ६५ ष्णिहौच् ६६॥ इति पुषादिः॥ षूङौच् ६७ दूङ्च् ६८ दीङ्च् ६९ लीङ्च् ७० डीङ्च् ७१ ॥ इति सूयत्यादि ॥ पींङ्च् ७२ ईङ्च् ७३ प्रींङ्च् ७४ युजिंच् ७५ सृजिंच् ७६ पदिंच् ७७ विदिंच् ७८ खिदिंच् ७९ युधिंच् ८० अनो रुधिंच् ८१ बुधिं, मनिंच् ८३ जनैचि ८४ दीपैचि ८५ तपिंच् ८६ पूरैचि ८७ क्लिशिच् ८८ काशिच् ८९ वाशिच् ९० रञ्जींच् ९१ शपींच् ९२ मृषींच् ९३ णहींच् ९४॥ इति दिवादिगणः ॥

पुगृट् १ पिंगृट् २ डुमिंगृट् ३ चिंगृट् ४ घूगृट् ५ स्तृंगृट् ६ वृगृट् ७ ॥ इत्युभयपदिनः ॥ हिंट् ८ श्रुट् ९ टुदुट् १० पृट् ११ शक्लट् १२ राध, साधट् १४ ऋधूट् १५ आप्लट् १६ तृपट् १७ दम्भूट् १८ धिवुट् १९ टिधिट् २० अशौटि २१ ॥ इति स्वादिगणः ॥

तुदींत् १ भ्रस्जींत् २ क्षिपींत् ३ दिशींत् ४ कृषींत् ५ मुच्लृती ६ पिचींत् ७ विद्लृती ८ लुप्लृती ९ लिपींत् १० कृतैत् ११ ॥ इति मुचादिः ॥ मृत् १२ कृत् १३ गृत् १४ लिखत १५ ओव्रस्चौत् १६ प्रछत् १७ सृजत् १८ टुमस्जोंत १९ उद्झत् २० घुण, घूर्णत् २२ णुदत् २३ विधत् २४ छुपत् २५ गुफ, गुफत २७ शुभ, शुंभत् २९ दृभैत् ३० स्फलत् ३१ मिलत् ३२ स्पृशत् ३३ विशत ३४ मृशत् ३५ इषत् ३६ मिषत् ३७ ॥ अथ कुटादि ॥ कुटत् ३८ णूत् ३९ धूत् ४० कुचत् ४१ घुटत् ४२ छुट, त्रुटत् ४४ मुटत् ४५ स्फुटत् ४६ लुठत् ४७ कुडत् ४८ गुडत्, जुडत्, तुडत्, ५१ स्फुरत् ५२ ॥ इति परस्मैपदिनः ॥ कुंङ्, कूङ्त् ५४ ॥ इति कुटादि ॥ पृङ्त् ५५ दृङ्त् ५६ ओविजैति ५७ ओलस्जैति ५८ ष्वजित् ५९ जुषैति ६० ॥ इति तुदादिगणः ॥

रुधृपी १ रिचृपी २ विचृपी ३ युजृपी ४ भिदृपी ५ छिदृपी ६ क्षुदृपी ७ ॥ इत्युभयपदिनः ॥ पृचैप् ८ भञ्जोंप् ९ भुजप् १० अञ्जौप् ११ ओविजैप् १२ शिष्लृप् १३ पिष्लृप् १४ हिंसु, तृहप् १६ खिदिंप् १७ विदिंप् १८ ञिइन्धैपि १९ ॥ इति रुधादिगण ॥

तनूयी १ षणूयी २ क्षनूग्, क्षिनूयी ४ ॥ इत्युभयपदिन ॥ वनूयि ५ मनूयि ६ इति तनादिगण. ॥

डुक्रींग्श् १ प्रींग्श् २ मीग्श् ३ ग्रहीश् ४ ॥ अथ प्वादि ॥ पूग्श् ५ । ॥ अथ ल्वादि ॥ लूग्श् ६ धूग्श् ७ स्तृग्श् ८ वृग्श् ९ ॥ इत्युभयपदिनः ॥ ज्याश् १० लीश् ११ कॄ, मॄ, शॄश् १४ पॄश् १५ दॄश् १६ जॄश् १७ गॄश् १८ इति प्वादिल्वादिः । ज्ञाश् १९ मन्थश् २० ग्रन्थश् २१ मृदश् २२ बन्धश् २३ क्षुभश् २४ क्लिशौश् २५ अशश् २६ मुषश् २७ पुषश् २८ कुषश् २९ वृङ्श् ३० ॥ इति क्र्यादिगणः ॥

४१

राक् १० दाबृक् ११ ख्याक् १२ माक् १३ इक् १४ इण्क् १५ पुक् १६ तुक् १७ युक् १८ णुक् १९ क्ष्णुक् २० स्नुक् २१ टुक्षु, रु, कुक् २४ रुदृक् २५ ञिष्वपंक् २६ अन, श्वसक् २८ जक्षक् २९ दरिद्राक् ३० जागृक् सर्वधातुभ्यो यङ्डिति मत, ३१ चकासृक् ३२ शासूक् ३३ वचक् ३४ मृजौक् ३५ विदक् ३६ हनक् ३७ वशक् ३८ असक् ३९ यङ्लुक् ४० ॥ अथात्मनेपदिन. ॥ इङ्क् ४१ शीङ्क् ४२ ह्नुङ्क् ४३ पूङौक् ४४ पृचैङ्क् ४५ ईडिक् ४६ ईरिक् ४७ ईशिक् ४८ वसिक् ४९ आङः शासूकि ५० आसिक् ५१ णिसुकिं ५२ चक्षिक् ५३ ॥ अथोभयपदिनः ॥ ऊर्णुगृक् ५४ ष्टुग्क् ५५ ब्रूगृक् ५६ द्विषींक् ५७ दुहींक् ५८ दिहींक् ५९ लिहींक् ६० ॥ अथ ह्वादयः ॥ हुक् ६१ ओहाक् ६२ ञिभींक् ६३ ह्रींक् ६४ पृक् ६५ ऋक् ६६ ओहाङ्क् ६७ माङ्क् ६८ डुदागृक् ६९ डुधागृक् ७० डुडुभृंगृक् ७१ णिजृंकी ७२ विजृंकी ७३ विष्लृकी ७४ ॥ इत्यदादिगणः ॥

दिवूच् १ जृष्, झृष्च् ३ शोंच् ४ दों, छोंच् ६ षोंच् ७ व्रीङ्च् ८ नृतैच् ९ कुथच् १० गुधच् ११ राधच् १२ व्यधच् १३ क्षिपच् १४ तिम, तीम, ष्टिम, ष्टीमच् १८ षिवूच् १९ ष्ठिवूच् २० इषच् २१ त्रसैच् २२ पहच् २३ ॥ अथ पुषादिः॥ पुषच् २४ लुटच् २५ ष्विदाच् २६ क्लिदौच् २७ क्षुधच् २८ शुधच् २९ कुधच्, ३० षिधूच् ३१ ऋधूच् ३२ गृधुच् ३३ रधौच् ३४ तृपौच् ३५ दृपौच् ३६ कुपच् ३७ गुपच् ३८ लुपच् ३९ लुभच् ४० क्षुभच् ४१ नशौच् ४२ भृशू, भ्रंशूच् ४४ कृशच् ४५ शुषच् ४६ दुषच् ४७ श्लिषच् ४८ प्लुषूच् ४९ ञितृषच् ५० तुष, हृषच् ५२ रुषच् ५३ असूच् ५४ यसूच् ५५ शमू, दमूच् ५७ तमूच् ५८ श्रमूच् ५९ भ्रमूच् ६० क्षमौच् ६१ मदैच् ६२ क्लमूच् ६३ मुहौच् ६४ द्रुहौच् ६५ ष्णिहौच् ६६ ॥ इति पुषादि ॥ पूङौच् ६७ दूङ्च् ६८ दींङ्च् ६९ लींङ्च् ७० डीङ्च् ७१ ॥ इति सूयत्यादि ॥ पींङ्च् ७२ ईङ्च् ७३ प्रींङ्च् ७४ युजिच् ७५ सृजिच् ७६ पदिंच् ७७ विदिंच् ७८ खिदिंच् ७९ युधिंच् ८० अनो रुधिंच् ८१ बुधिं, मनिंच् ८३ जनैचि ८४ दीपैचि ८५ तपिंच् ८६ पूरैचि ८७ क्लिशिच् ८८ काशिच् ८९ वाशिच् ९० रञ्जींच् ९१ शपींच् ९२ मृषींच् ९३ णहींच् ९४॥ इति दिवादिगण. ॥

षुगृट् १ षिंगृट् २ डुमिंगृट् ३ चिंगृट् ४ घूगृट् ५ स्तृंगृट् ६ वृगृट् ७ ॥इत्युभयपदिनः॥ हिंट्८ श्रुट्९ टुदुट्१० पृट्११ शक्लृट् १२ राधं, साधट् १४ ऋधूट् १५ आप्लृट् १६ तृपट् १७ दम्भूट् १८ धिवुट् १९ ष्टिघिट् २० अशौटि २१ ॥ इति स्वादिगणः ॥

तुदींत् १ भ्रस्जींत् २ क्षिपींत् ३ दिशींत् ४ कृषींत् ५ मुच्लृंती ६ षिचींत् ७ विद्लृती ८ लुप्लृती ९ लिपींत् १० कृतैत् ११ ॥ इति मुचादिः ॥ मृत् १२ कृत् १३ गृत् १४ लिखत् १५ ओव्रस्चौत् १६ प्रछत् १७ सृजत् १८ टुमस्जोंत १९ उद्झत् २० घुण, घूर्णत् २२ णुदत् २३ विधत् २४ छुपत् २५ गुफ, गुफत २७ शुभ, शुभत् २९ दृभैत् ३० स्फलत् ३१ मिलत् ३२ स्पृशत् ३३ विशत ३४ मृशत् ३५ इषत् ३६ मिषत् ३७ ॥ अथ कुटादिः ॥ कुटत् ३८ णूत् ३९ धूत् ४० कुचत् ४१ घुटत् ४२ छुट, त्रुटत् ४४ मुटत् ४५ स्फुटत् ४६ लुठत् ४७ कृडत् ४८ गुडत, जुडत, तुडत, ५१ स्फुरत् ५२ ॥ इति परस्मैपदिनः ॥ कुङ्, कूङ्त् ५४॥ इति कुटादिः॥ पृङ्त् ५५ दृङ्त् ५६ ओविजैति ५७ ओल-स्जैति ५८ ष्वंजित् ५९ जुषैति ६०॥ इति तुदादिगणः ॥

रुधूंपी १ रिचूंपी २ विचूंपी ३ युजूंपी ४ भिदूंपी ५ छिदूंपी ६ क्षुदूंपी ७ ॥ इत्युभयपदिनः ॥ पृचैप् ८ भञ्जोंप् ९ भुजप् १० अञ्जौप् ११ ओविजैप् १२ शिप्लृप् १३ पिप्लृंप् १४ हिंसु, तृहप् १६ खिदिंप् १७ विदिप् १८ ञिइन्धैपि १९ ॥ इति रुधादिगण. ॥

तनूयी १ षणूयी २ क्षनूग्, क्षिनूयी ४ ॥ इत्युभयपदिनः॥ वनूयि ५ मनू-यि ६ इति तनादिगण ॥

डुक्रींग्श् १ प्रींग्श् २ मींग्श् ३ ग्रहीश् ४ ॥ अथ प्वादि. ॥ पूग्श् ५। ॥अथ ल्वादि ॥ लूग्श् ६ धूग्श् ७ स्तृग्श् ८ वृग्श् ९॥ इत्युभयपदिन. ॥ ज्याश् १० लींश् ११ कृ, मृ, शृश् १४ पृश् १५ दृश् १६ जृश् १७ गृश् १८ इति प्वादिर्ल्वादि । ज्ञाश् १९ मन्थश् २० ग्रन्थश् २१ मृदश् २२ बन्धश् २३ क्षु-भश् २४ क्लिशौश् २५ अशश् २६ मुषश् २७ पुषश् २८ कुषश् २९ वृङ्श् ३० ॥ इति क्र्यादिगणः ॥

चुरण् १ पृण् २ पचुण् ३ पूजण् ४ गजण् ५ तिजण् ६ नटण् ७ चुट्ट, छुटण् ९ कुट्टण् १० मुटण् ११ लुटण् १२ घट्टण् १३ स्फिटण् १४ गुठुण् १५ लडण् १६ ओलडुण् १७ पीडण् १८ तडण् १९ खडुण् २० कडुण् २१ गुडुण् २२ मडुण् २३ पिडुण् २४ ईडण् २५ चूर्णण् २६ श्रणण् २७ चितुण् २८ कृतण् २९ पथुण् ३० प्रथण् ३१ छदण् ३२ चुदण् ३३ छर्दण् ३४ बन्ध, बधण् ३६ यमण् ३७ यत्रुण् ३८ क्षलण् ३९ तुलण् ४० दुलण् ४१ मूलण् ४२ बुलण् ४३ पलण् ४४ इलण् ४५ सात्वण् ४६ पुंसण् ४७ जसण् ४८ भक्षण् ४९ लक्षीण् ५० ॥ इतोऽर्थविशेषे आलक्षिणः ॥ ज्ञाण् ५१ भूण् ५२ लिगुण् ५३ चर्चण् ५४ चट, स्फुटण् ५६ घटण् ५७ हन्त्यर्थाः ५८ यतण् ५९ निर्यतण् ६० प्वदण् ६१ आस्वदण् ६२ मुदण् ६३ कृपण् ६४ चरण् ६५ धुपूण् ६६ भूप, तसुण् ६८ त्रसण् ६९ अर्हण् ७० लोकृ, तर्क, लघु, लोचृ, अजु, पिजु, भजु, लुट, वृत, वृध, गुप, धूप, कुप, दशु, वृहुण् ८५ ॥ इति परस्मैपादिन. ॥ वञ्चिण् ८६ विदिण् ८७ मनिण् ८८ भलिण् ८९ कुत्सिण् ९० लक्षिण् ९१ तर्जिण् ९२ त्रुटिण् ९३ चितिण् ९४ गान्धिण् ९५ शमिण् ९६ गूरिण् ९७ मन्त्रिण् ९८ लालिण् ९९ दशिण् १०० भर्त्सिण् १ ॥ इत्यात्मनेपदिनः ॥ इतोऽदन्ता ॥ अदन्तवृद्धिप्वागममत अङ्कण् २ सुख, दुःखण् ४ रचण् ५ सूचण् ६ भाजण् ७ सभाजण् ८ खोटण् ९ दण्डण् १० वर्णण् ११ कर्णण् १२ गणण् १३ गुणण्, केतण् १५ पतण् १६ कथण् १७ छेदण् १८ रूपण् १९ क्षपण् २० व्ययण् २१ सूत्रण् २२ मूत्रण् २३ पारण्, तीरण् २५ चित्रण् २६ छिद्रण् २७ मिश्रण् २८ कलण् २९ शीलण् ३० गवेषण् ३१ मृपण् ३२ रसण् ३३ महण् ३४ रहुण् ३५ स्पृहण् ३६ रुक्षण् ३७ ॥ इति परस्मैपदिन' ॥ मृगणि ३८ अर्थणि ३९ सङ्ग्रामणि ४० गर्वणि ४१ गृहणि ४२ ॥ इत्यदन्ता ॥ अथ युजादि ॥ युजण् ४३ लीण् ४४ प्रीगण् ४५ धूगण् ४६ वृगण् ४७ जूण् ४८ मार्गण् ४९ पृचण् ५० रिचण् ५१ वचण् ५२ अर्चिण् ५३ वृजैण् ५४ मृजौण् ५५ कठुण् ५६ ग्रन्थण् ५७ अर्दिण् ५८ वदिण् ५९ छदण् ६० आङ. सदण् ६१ मानण् ६२ तपिण् ६३ तृपण् ६४ आप्लृण् ६५ ईरण्

६६ मृषिण् ६७ शिपण् ६८ विपूर्वः ६९ धूपण् ७० हिसुण् ७१ गर्हण् ७२ पद्दण् ७३ बहुल ७४, एव १७४ ॥ चुरादिगणः ॥

एव नवगणजा धातवः सर्वे ८१६ ॥

अथ सौत्राः ॥ कण्ड्वादयः १ अन्दोलण्, प्रेङ्खोलण्, वीजण् ४ रिखि. ५ चुलुम्प ६ स्तम्भू ७ स्तुम्भू ८ स्कम्भू ९ स्कुम्भू १० लुल ११ ।

अथ नामधातव. । काम्यः १ क्यन् २ क्विप् ३ आचारक्यङ् ४ च्व्यर्थ-क्यङ् ५ क्यङ्ष् ६ क्रमणाद्यर्थक्यङ् ७ करणाद्यर्थक्यन् ८ णिङ् ९ णिच् १० णिजन्तविभक्तय· । प्रशस्तिः ॥

इति सम्पूर्णोऽयं क्रियारत्नसमुच्चयो नाम ग्रन्थः सबीजकम् ।

ग्रन्थमानम् ५७७८ ॥



चुरण् १ पृण् २ पञ्चुण् ३ पूजण् ४ गजण् ५ तिजण् ६ नटण् ७ चुड्, छुटण् ९ कुट्टण् १० मुटण् ११ लुटण् १२ घट्टण् १३ स्फिटण् १४ गुठुण् १५ लडण् १६ ओलडुण् १७ पीडण् १८ तडण् १९ खडुण् २० कडुण् २१ गुडुण् २२ मडुण् २३ पिडुण् २४ ईडण् २५ चूर्णण् २६ श्रणण् २७ चितुण् २८ कृतण् २९ पथुण् ३० प्रथण् ३१ छदण् ३२ चुदण् ३३ छर्दण् ३४ बन्ध, बधण् ३६ यमण् ३७ यत्रुण् ३८ क्षलण् ३९ तुलण् ४० दुलण् ४१ मूलण् ४२ भुलण् ४३ पलण् ४४ इलण् ४५ सात्वण् ४६ पुंसण् ४७ जसण् ४८ भक्षण् ४९ लक्षीण् ५० ॥ इतोऽर्थविशेषे आलक्षिणः ॥ ज्ञाण् ५१ भूण् ५२ लिगुण् ५३ चर्चण् ५४ चट, स्फुटण् ५६ घटण् ५७ हन्त्यर्थाः ५८ यतण् ५९ निर्यतण् ६० प्वदण् ६१ आस्वदण् ६२ मुदण् ६३ कृपण् ६४ चरण् ६५ घुपृण् ६६ भूप, तसुण् ६८ त्रसण् ६९ अर्हण् ७० लोकृ, तर्क, लघु, लोचृ, अजु, पिजु, भजु, लुट, वृत, वृध, गुप, धूप, कुप, दशु, बृहुण् ८५ ॥ इति परस्मैपदिनः ॥ वञ्चिण् ८६ विदिण् ८७ मनिण् ८८ भलिण् ८९ कुत्सिण् ९० लक्षिण् ९१ तर्जिण् ९२ त्रुटिण् ९३ चितिण् ९४ गान्धिण् ९५ शमिण् ९६ गूरिण् ९७ मन्त्रिण् ९८ लालिण् ९९ दशिण् १०० भर्त्सिण् १ ॥ इत्यात्मनेपदिनः ॥ इतोऽदन्ता. ॥ अदन्तवृद्धिप्वागममत अङ्कण् २ सुख, दुःखण् ४ रचण् ५ सूचण् ६ भाजण् ७ सभाजण् ८ खोटण् ९ दण्डण् १० वर्णण् ११ कर्णण् १२ गणण् १३ गुणण्, केतण् १५ पतण् १६ कथण् १७ छेदण् १८ रूपण् १९ क्षपण् २० व्ययण् २१ सूत्रण् २२ मूत्रण् २३ पारण्, तीरण् २५ चित्रण् २६ छिद्रण् २७ मिश्रण् २८ कलण् २९ शीलण् ३० गवे-षण् ३१ मृषण् ३२ रसण् ३३ सट्टण् ३४ रहुण् ३५ स्पृहण् ३६ रुक्षण् ३७ ॥ इति परस्मैपदिन ॥ मृगणि ३८ अर्थणि ३९ सङ्ग्रामणि ४० गर्वणि ४१ गृहणि ४२ ॥ इत्यदन्ता ॥ अथ युजादि ॥ युजण् ४३ लीण् ४४ प्रीगृण् ४५ धूगृण् ४६ वृगृण् ४७ जूण् ४८ मार्गण् ४९ पृचण् ५० रिचण् ५१ वचण् ५२ अर्चिण् ५३ वृजैण् ५४ मृजौण् ५५ कठुण् ५६ ग्रन्थण् ५७ अर्दिण् ५८ वदिण् ५९ छदण् ६० आङ सदण् ६१ मानण् ६२ तपिण् ६३ तपण् ६४ आप्लृण् ६५ ईरण

६६ मृपिण् ६७ शिपण् ६८ विपूर्वः ६९ धूपण् ७० हिसुण् ७१ गर्हण् ७२ पहण् ७३ वहुल ७४, एवं १७४ ॥ चुरादिगणः ॥

एव नवगणजा धातवः सर्वे ८१६ ॥

अथ सौत्राः ॥ कण्ड्वादयः १ अन्दोलण्, प्रेङ्खोलण्, वीजण् ४ रिखिः ५ चुलुम्प ६ स्तम्भू ७ स्तुम्भू ८ स्कम्भू ९ स्कुम्भू १० लुल ११ ।

अथ नामधातवः । काम्य १ क्यन् २ क्विप् ३ आचारक्यङ् ४ च्व्यर्थ-क्यङ् ५ क्यङ्ष् ६ क्रमणाद्यर्थक्यङ् ७ करणाद्यर्थक्यन् ८ णिङ् ९ णिच् १० णिजन्तविभक्तयः । प्रशस्तिः ॥

इति सम्पूर्णोऽयं क्रियारत्नसमुच्चयो नाम ग्रन्थः सबीजकम् ।

ग्रन्थमानम् ५७७८ ॥





अथ क्रियारत्नसमुच्चयस्थधातूनां सूची ।

॥ इति ॥



शुद्धिपत्रम् ।

पृष्ठम्	पङ्क्तिः	अशुद्धम्	शुद्धम्
८	१५	लुनिही	लुनीहि
,,	२०	-वायम-	-व वयम
१०	२	युगान्तम-	युगान्तःप्र-
११	३	अहनम्	जघान
१३	११	धातोवु-	धातावु-
१५	१३	अमोक्ष्यत्	अभोक्ष्यत
,,	१४	पासिष्यत्	पासिष्यत
,,	२३	-राभ्य-	-रभ्य
१८	१०	विचिक्रियरे	निचिक्रियिरे
१९	२१	व्याति-	व्यति-
२७	७	विवक्षिते	विवक्षते
२९	४	वोभूय-	बोभूय-
३५	१३	पिपीप्यते	पेपीप्यते
३७	७	-भावत्	-भावात्
,,	१९	मास्थिपते	मास्थिपत
,,	२६	पत्वे	इत्वे
३९	४	तास्थीव	तास्थाव
,,	,,	तास्थीम	तास्थाम
,,	९	अतास्थीताम्	अतास्थाताम्
४०	४	पदस्मै	परस्मै-
,,	७	अत्रा-	असा-
४१	२२	विजिगि-	विजिगिप-
४४	५	ई:	इ:
,,	११	द्रुद्रोथ	दुद्रोथ
४५	११	सर्पात्, ९	सर्पा९त्,
,,	१९	आशीर्येव	आशीर्ये च
४७	२६	सिच्लुर्	सिच्लुक्
५०	२७	तातर्यिते	तातीर्यते
५१	२७	इश्व	इश्च-
५३	२	-वर्जना-	वर्जनात्-
५५	१०	क्त्विाम्न लु	क्त्विाम्नलु-
५६	४	न लुक्	नलुक्
,,	९	-म्न लुकि	-म्नलुकि
,,	१७	उदित्वात्	ऊदित्त्वात्
६०	१९	-वर्णयोः	वरणयोः
६१	६	-मतेन	मते न
,,	१८	-ऋदित्-	-ॠदित्-
६२	१४	ठिप्ठम्	ठिप्टम्
,,	,,	ठिप्ठ	ठिप्ट
६४	११	आणिता	ओणिता
,,	१५	डीयश्वै-	डीयश्व्यै
६६	१७	स्कन्दत्	स्कन्दन्
७२	७	भ्रिणम् प-	भ्रिणमुप-
,,	१२	ऊदित्वात्	ऊदित्त्वात्
७३	८	ऊदित्वात	ऊदित्त्वात्
,,	२३	ननमी-	ननर्मी-
७४	२	माणीनमत्	माणीणमत्
,,	२८	क्त्वे-	क्त्वे
७४	२६	कित्वे	कित्वे
७५	१५	छ.	च्छः
७७	८	चरति समा-	चरतिसमा-
,,	१४	मफुल्ला	मफुल्ता
,,	१७	मफुल्ल-	मफुल्त
८०	८	दर्निप्यते	दर्निप्यते
८१	७	दंदभे	दर्दभे
८२	१६	उदित्वान	[illegible]

पृष्ठम्	पङ्क्तिः	अशुद्धम्	शुद्धम्
,,	२०	,,	,,
,,	२३	,,	,,
,,	,,	फित्वम्	क्रित्वम्
,,	२७	ऊदित्वात	ऊदित्त्वात्
८३	५	ऊदित्वात्	ऊदित्त्वात्
,,	२४	,,	,,
८६	२२	डीट् च	डीट्च्
८७	१३	फित्वे	फित्त्वे
,,	१८	फित्वा	फित्त्वा-
९०	२०	गिध	गृधि
९४	२१	फित्वे	क्रित्त्वे
९५	८	हदि	हर्दि
९९	२७	धुर्गोदितः	धूर्गोदितः
१०९	८	विभ्रीपते	वेभ्रीयते
१११	८	निणर्यति	निर्णयति
१११	१५	ऋमता	ऋमता
११६	१८	जृभ्रम	जृभ्रम
,,	२४	जृभ्रम	जृभ्रम-
१२१	१६	द्वम्	ढ्ढवम्
१२२	१२	-सास्रम्भी-	-सास्रम्रभी
१२३	१४	-पीष्ट	-पिष्ट
१२४	११	द्ध्वम्,	न्ध्ध्वम्,
,,	,,	ढ्ध्वम्,रिस	नृढ्ध्वम्,रिस
,,	१२	स्यन्ता	स्यन्त्ता
,,	१६	न्त.	न्त.
१२५	९	शृध्वा	शृध्वा
१२६	१०	श्यो	श्यौ
१२८	२१	न शम-	न शस-
१३१	२	आरुरुहत	आरूरुहत
१३२	२४	ईपाथे	ईजाथे
१३८	२४	वासार्थे	वासार्था-
१४३	२३	पपृच्छ्य	प्रपृच्छ्य
१४४	२७	वाऽन्त्	वाऽन्त
१४५	११	स्नात्	स्नान्
,,	२६	व्यात्यलात्	व्यत्यलात
१५०	१७	क्ष्णूतः	क्ष्णुतः
१५३	१९	-ताम्	-ताम्
१५६	१३	नाम्यत-	नाम्यन्त-
,,	२४	शासि	शाधि
,,	२४	ष्ट' ष्ट	ष्टः ष्ठ
१५८	१८	वेतिम	वेत्सि
१६१	२१	थमि	थसि
१६८	११	णिष्ठुक्रि	णिष्ठुक्रि
१६९	१०	आर्यात्	आर्यायात्
,,	१३	आच	आचा
,,	२२	मोर्णुवति	मोर्णुन्वति
१७०	७	मौर्णोनोति	मोर्णोनोति
,,	२१	स्तूयात	स्तुयात्
१७१	२	अस्तात्रिपाताम्	अस्ताविष्टाम्
,	१५	ब्रवीत्	ब्रुवीत
१७३	१३	अदिक्षाथाम्	अधिक्षाथाम्
१७५	१३	विभिया	विभया
,,	१६	विभिर्या	विभर्या
,,	१७	विभियाँ	विभयाँ
२४९	२	तन्त	तित-
,,	२	तन्ता	तिता
,,	२	तन्त-	तित-
२५१	११	विक्रीणाति	विक्रीणीते
२६४	१९	वरिष्याति	वरिष्यते
,,	२०	वरीष्यती	वरीष्यते
२६५	१५	अचूचुरत्	अचूचुरंत
३१५	१०	सबीजकम्	सबीजक